मूल्य : साठ रुपये (60.00)

संस्करण 1985
राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 द्वारा प्रकाशित

DUSRA BHUTNATH (Novel) by Vishwambhar Nath Upadhyaya

दूसरा भूतनाथ

विश्वंभर नाथ उपाध्याय



राजपाल एण्ड सन्ज

दूसरा भूतनाथ
के
संघर्षधर्मा
साथी
जनबंधुओं
को

भूमिका

भूतनाथ, श्री देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों का एक ऐयार था। वह एक प्रतीक है, प्रतिमा, मिथक और आज के यथार्थ के तिलिस्म में फंसे हुए करोड़ों छले-ठगे लोगों के लिए वह पुनर्जीवित, रूपान्तरित जन-जासूस है, इन्कलाबी-ऐयार'''।

'''मुझे जहां तक याद है (सपने और आभास बाद में पूरी तरह याद नहीं रहते''') मैं पिछले कई वर्षों से, विकलांग-स्वतंत्रता के बाद के 'विकास' और नई संरचनाओं (स्ट्रक्चर्स) की असंगतियों और अत्याचारों, समूह के साथ उच्चवर्गीय ठगी और पिण्डहारीपन को देखता, सहता और उससे मुक्ति के विकल्प के विषय में सोचता आ रहा हूं'''मैंने पाया कि नवनिर्मित दस्यु-समाज में परिवर्तन के कोमल, विधिसम्मत, सुन्दर, संवाद और तर्क के विकल्प फेल होते गए हैं और हमें लगा है कि असामाजिक हिंसा को सामाजिक हिंसा में बदलने के अलावा इस चकाचौंधक मगर खतरनाक तिलिस्म (निज़ाम) की तोड़ का अन्य कोई विकल्प रहने ही नहीं दिया गया है।

ऐसे में भूतनाथ अचानक, एक रात, अवचेतन के किसी कुएं से मेरे चेतन अस्तित्व पर कमंद लगाकर, नकाब डाले हुए, कंधे पर झोला सजाए और हाथ में जादुई खांड़ा पकड़े खड़ा होकर कहने लगा'''ह: ह: ह: ह:, तिलिस्म अपनी टूट का रहस्य अपने भीतर छिपाए रखता है। दारोगा के पास लाल किताब है, उसमें इस व्यवस्था के विचित्र लोक से निकलने का विकल्प है। व्यूह का भेद लो और किसी कमज़ोर स्थान से शुरू हो जाओ '''ऐयार बनो, शत्रु से प्रतिद्वन्द्विता स्वीकार करो, छल का छल से, बल का बल से, रहस्य का रहस्य से और संघर्ष-शक्ति का संघ-शक्ति से जवाब दो'''शुभारम्भ करो''' यह मत सोचो कि तुम ही विजय-किरीट पहनोगे'''निष्काम कर्म करो, फल तो संयोग और संघर्ष की उपयुक्तता पर निर्भर है'''अरे नींव तो डालो'''आगे के लोग आगे का काम करेंगे'''।"

मैंने स्वप्नाभास में अपने भूतनाथ से कहा—"साथी'''तुम स्वयं पुन: अवतार क्यों नहीं लेते'''तुम्हारे बिना इस तिलिस्म को कौन तुड़वा सकता है ''तुम तो अमर हो'''गदाधरसिंह'''तुमने इतनी वारदातें की हैं'''इतना बुरा और भला किया है'''कि तुम भूत होकर तर नहीं सकते'''तुम खुद क्यों नहीं आ जाते, उस विस्मृति के अंधेरे से'''तुम इस शताब्दी की शुरुआत में आए थे। अब देखो, सदी के अन्त में तुम्हारी कितनी जरूरत है'' इस नए तिलिस्म में तो कोटि-कोटि जन बन्दी बने, चकित-भ्रमित, भूखे प्यासे, आहत और प्रवंचित घिसट रहे हैं ' कोई दरवाजा मिल ही नहीं रहा''' क्या तुम्हें इनसे दिली हमदर्दी नहीं? तुम तो यार आदमी थे, कोरे ऐयार नहीं, तुमने रिश्ते निभाए, तुम बुराई से बच नहीं सके पर उसकी असुन्दरता ने तुम्हें कोंचा और अपने को अच्छा सिद्ध करने की तुमने (बुरा करके भी) कोशिश की'''तुम रोचक अन्त-विरोधों और अपराध-भाव के बावजूद अन्त में अच्छाई पा गए'''लेकिन वह तुम्हारी व्यक्तिगत विजय थी'''शताब्दी का अन्त तुमसे दूसरी चुनौती की मांग करता है'''

इसलिए दूसरे भूतनाथ बनकर आ जाओ···और दांव दिखाओ दुश्मनों को, करतब करो, विस्मित और विमूढ़ करो···उन्हें मारो···ओ ओ।"

और फिर भूतनाथ ने मुझे माध्यम बना लिया !

···कला भी तिलिस्म है। किशोरमति, मस्तिष्क के संयंत्र में अधिक तथ्य (डेटा) न भरने वाले कोमल मानस के लोग कला को साध्य मानते हैं। वह सचमुच उनके लिए साध्य है भी क्योंकि शिशु खिलौने के रूप में खो जाता है किन्तु वयस्क-बुद्धि कला-कौशल के जादू से मोहित होकर भी वशीभूत होकर नहीं रह जाती। वह उसके प्रयोजन, प्रेरणा और अर्थनिधि को खोजती है। अतएव भूतनाथ एक लीला भी है, रहस्य के स्पर्श से राज तक पहुंचाने का दांव भी है। कला कार्यनीति होती है, रणनीति तो कथ्य में धंसती है।

भूतनाथ, पुराने ढंग के तिलिस्मों को तुड़वाने में कामयाब हुआ मगर वह आधुनिक तिलिस्म के खिलाफ भिड़न्त में मारा गया···त्रासदी हो गई···यह होना ही था···लेकिन भूतनाथ का भूत उससे भी अधिक पुरअसर है···वह सिरों पर सवार हो-होकर सबको अपने रास्ते पर लाएगा···ला रहा है। नाउम्मीदी तो खुदीपरस्त व्यक्तिवादियों का रोग है, इतिहासबोधहीन (रुग्णमति वालों का···यदि व्यक्ति समष्टि) का अंग है तो वह मर कर भी औरों में पुनर्जीवित होता है···क्रान्ति इसी अर्थ में सनातन होती है···पीढ़ियां खलास हो जाती हैं, तब कहीं जाकर युग और व्यवस्था बदलती है···पांच हज़ार साल बाद सामंतवाद बदला···फिर पूंजीवाद और उसका तथाकथित जनतंत्र तुरन्त कैसे बदल सकता है···लोग लोग हैं, उनकी समझ में जनतांत्रिक जादुई व्यवस्था का भेद आ जाए और वे उठ खड़े हों तो उछाल (लीप) से उद्धार हो सकता है···अन्यथा नींव के पत्थर बनते चलो···।

मेरे उपन्यासों में···'रीछ' का मोहन, 'पक्षधर' का जनार्दन, 'जाग मच्छन्दर गोरख आया' का गोरखनाथ और अब इस 'दूसरा भूतनाथ' में एक ही चेतना के विभिन्न रूपाकार रचे गए हैं। घटनाओं से भी अधिक महत्त्व पात्रों की मनोभौतिकी, चेतना और चरित्र का है।

···मानव चेतना (consciousness) को जो यांत्रिक दृष्टि से देखते हैं, उन्हें आश्चर्य होगा ही कि कोई लेखक एक विधा से दूसरी विधा की ओर क्यों जाता है? इसी प्रकार का एक जड़ तर्क विशेषज्ञता का है जो पारद-सी तरल, समुद्र-सी गम्भीर, गगनोपम उच्च मानव चेतना को एक सांचे या ढांचे या वर्गीकरण में बांधना चाहता है। ऐसी तर्कशीलता भी एक प्रकार की व्यवस्थावादी जड़ता है और संकुचित-विशेषज्ञता, विशेष-अज्ञता।

मानव-चेतना लम्बे सामाजिक-विकास के दौरान इतनी विकसित हो चुकी है कि वह विविधायामी हुए बिना चैन ही नहीं लेती क्योंकि वह अपनी कर्त्तृत्व शक्ति को आजमाती है कि वह क्या कर सकती है।

इस द्वन्द्व में चेतना यह शक्ति उपजाती है कि वह चिंतक-सर्जक या लेखक-आलोचक आदि के बने बनाए बंधन तोड़ दे और व्यक्तित्व, विधा या विषय का बंधुआ न रहकर स्वचेतस् या प्रचेतस हो जाए। यह भी व्यवस्था और व्यवस्थित बिम्ब (इमेज) से मुक्ति है। मोक्ष, तापों-शापों से ही नहीं, प्रचलित द्वैतवादी जाड्य से भी आवश्यक है···निःशेष जाड्यापहा···(सरस्वती) !

अपनी निरन्तर गतिशील भूमिका की चिन्ता न कर, येनकेन प्रकारेण बनाए हुए बिम्ब (इमेज) के अंदेशे में दुबले होने वाले लोग और लेखक, दरअसल अपनी ही प्रतिमा

के पुजारी हैं जबकि ज़रूरत लगातार, अगली रचना द्वारा अपने पूर्वनिर्मित विग्रह को तोड़ने की है।

अत: 'जाग मच्छन्दर गोरख आया' से 'दूसरा भूतनाथ' व्यंजना में नहीं, ब्यौरे और तानेबाने में भिन्न प्रकार का उपन्यास है, तेवर और त्वेष में भी।

मैं यकीनन राजपाल एण्ड सन्ज़ के कर्त्ताधर्त्ताओं के प्रति धन्यवादी हूं कि वह 'दूसरा भूतनाथ' जैसे विशाल उपन्यास को प्रकाशित कर रहे हैं और यह भी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के शताब्दी वर्ष में!

रक्षाबंधन, 30-8-1985
"गया प्रयाग"
सात ह पच्चीस,
जवाहर नगर, जयपुर-4

विश्वम्भर नाथ उपाध्याय

"देख दीपा, अगर तू दूध नहीं पीती तो मैं भी नहीं पीऊंगा"—इतना कहकर चिरंजीव छोटे बच्चे की तरह 'ऊं'''ऊं' करने लगा। दीपा यों युवती हो रही थी, तो भी वह झपट कर उठी और अपने भाई के सिर को गोद में लेकर इस तरह बैठ गई जैसे वह मां हो और चिरंजीव उसका पुत्र। दीपा उसके कान में 'फू' करके चिरंजीव को थपकियां देने लगी—

"दूध पी ले मुन्ना
पहन सुथन्ना
पाटी ले ले हाथ में
लाठी ले ले साथ में
काजल लगा काला
तेरी मास का निकल गया दिवाला
पाठशाला जा
पंडित जी को भगा
'''दूध पी ले मुन्ना'''।"

इस तरह न जाने क्या गाते और पैर के अंगूठे से ताल देते हुए दीपा ने जब दूध का गिलास चिरंजीव के मुंह से लगाया तो वह एक सांस में सचमुच पी गया। फिर उसने जिद कर दीपा को दूध पिलाया और उसका मुंह पोंछने जब आगे बढ़ा तो दोनों ने इतने जोर का ठहाका लगाया कि घर के बाहर के कमरे में लेटे हुए उसके माता-पिता ने भुनभुनाना शुरू कर दिया—"इतने सयाने हो गए दोनों, पढ़े-लिखे भी हैं, पर इनको अकल नहीं आती।"

"अजी, निगुरे हैं, निरलज्ज। मैं तो कहूं कि अब इनके कहीं विवाह रचाओ, नहीं तो तुम्हारी नाक कट जाएगी बिरादरी में। अरे, क्या अहीर जाति में माए बच्चे नहीं जनती जो इन धीगरों के लिए दूल्हा-दुलहिन नहीं मिलेंगे? इस रोज-रोज की किच्-किच् से मेरा पीछा छुड़ाओ।"

"अरी, तू क्या बकै है? मेरा मुन्ना भोला है और दीपा तो तुलसी माता की तरह है, भली और सुगन्ध छोड़ने वाली। मुझे तो अचरज है, चौधराइन, कि अहीरों में ऐसी लड़की ने कैसे जनम ले लिया? यह भाई-बहिन की जोड़ी, कन्हैया और सुभद्रा की जोड़ी है। हंसने दे, रूठने-मनाने दे, यह तो बच्चों का खेल है। इसमें दोष क्या है, मैं भी तो सुनूं?"

चौधराइन पास लगी चारपाई से उठकर चौधरी के पास आई और स्वर को रहस्यमय बनाते हुए बोली—"अहीर में अकल नहीं होती। दीपा सत्तरह-अट्ठारह की हो गई, चिरंजीव बाईस-तेईस का। दोनों कालेज जाते हैं तो बाजार में खराब लोग बोली मारते हैं। ये दोनों इतने अनाड़ी हैं कि भाई-बहिन का सनेह और चुहल हर जगह छलकती है। लोग कहते हैं कि ये सगे भाई-बहिन नहीं हैं, दूर के होंगे और आपस में सगाई-सम्बन्ध कर लेंगे।"

चौधरी चकित थे। वह चारपाई पर उठकर बैठ गए। चौधराइन के पास

खिसककर बोले—"तुम चुप रहो चौधराइन। तुम समझती हो, मैं दीपा के लिए लड़का नहीं देख रहा हूं पर इस अहीर जाति मे उसके काबिल लड़का है कहां? मुझे तो न जाने कब से रात मे नींद नही आती है। किसी से मुंह खोलकर कह भी नही सकता! जिससे जिकिर करो, कहता है, मेरे लड़के या भाई भतीजे से कर दो। ऊंह, कहां दीपा, मेरी गंगा और कहां ये नाले-भरखे।"

दीपा और चिरंजीव की चुहल और अट्टहासों की पृष्ठभूमि में बहुत देर चौधरी और चौधराइन अपनी बेटी-बेटे के विषय मे बातें करते रहे। आखिर कोई रास्ता न पाकर चौधराइन कहने लगी—"इससे तो अच्छा था, हम गांव में ठीक थे। इस पढ़ाई-लिखाई से तो बिना पढ़े-लिखे भले, विवाह तो समय पर हो जाते हैं। मैंने तो बहुत कहा पर तुम्हें तो बेटे-बेटी को साहब बनाना था अब भुगतो। चिन्ता में घुलो रात दिन और ये धींगरे विवाह को तैयार भी तो नही होते। कहते हैं, एम० ए० करके नौकरी लग जाए, तब विवाह करेंगे। तब तक तो ये अधबूढ़े हो जाएंगे और हम इसी उधेड़बुन में मर जाएंगे। हाय, दीपा का विवाह हो जाता तो उसके हाथ पीले कर चैन से मरती। हे भगवान, क्या होगा?"

और चौधराइन सिसकने लगी। चौधरी कुछ नही बोले। फिर दोनों कब सो गए, कुछ पता नहीं चला। उधर भाई-बहिन लगातार बतिया रहे थे और बीच-बीच में पढ़ने मे तल्लीन हो जाते थे।

इटावा नगर के छिपैटी मुहल्ले का विस्तार काफी है और उसका एक सिरा, यमुना के खारों तक चला गया है। चौधरी बलीराम, ग्राम जुआ, तहसील औरय्या के रहने वाले थे जो फफूंद कस्बे से बाबरपुर—अजीतमल जाने वाली सड़क पर सेंगर नदी के पुल के पास सड़क से कुछ दूर बसा हुआ है। जुआ में अहीरों की तगड़ी जमात है, जहां बलीराम अहीर के अन्य दो लड़के साधोराम और माधौराम, अपनी गृहस्थी के साथ रहते है और खेती करने के अलावा, गाय-भैंसे पालते हैं और दूध-घी बेचते हैं। दो बहिनों के विवाह हो चुके हैं पर दीपा और चिरंजीव ने, जुआ की प्राइमरी-पाठशाला में खूब मन लगा कर पढ़ा था। शिक्षकों ने उन्हें आगे पढ़ाने की सलाह दी। चौधरी बलीराम के एक रिश्तेदार, छिपैटी मे गाय-भैंस पालने और दूध-दही-घी का रोजगार करते थे। उनके पास एक पुराना कच्चा-पक्का लम्बा-चौड़ा घर भी था, जिसमे दो-तीन कमरे, एक आंगन और रसोई-नहाने की कोठरी आदि बलीराम को मामूली किराए पर दे दी गई थ।

बलीराम के निवास का भाग, बिलकुल यमुना नदी के खारों से लगा हुआ था। ये खार सौ-सौ फीट से भी अधिक गहरे हैं, ऊंचे-नीचे, कहीं चौड़े, कहीं संकरे, कहीं उथले, कहीं गहरे, एक दूसरे से कहीं अलग, कहीं जुड़े। इन खड्डों का एक सिलसिला है। ये घटते-बढ़ते रहते है पर मिटते कभी नहीं है। किसी विराट रोटी मे फटी दरारों से ये दिखाई पड़ते हैं। इनमे तेज हवा चलने पर इस तरह आवाज होती है जैसे कोई बोल रहा हो। रात के अंधेरे में, हवा की चाल पर ये खड्ड कभी तो गाते हैं, कभी रोते हैं, कभी डराते हैं जैसे कोई किसी को धमका रहा हो। खड्ड कभी सीटी-सी बजाते हैं, कभी सन्नाटे को अपनी सांय-सांय से गाढ़ा करते हैं। कभी कोई मनचला शौकीन जब शाम या रात को, खारों में जाकर किसी ऊंची जगह पर बैठ कर बांसुरी बजाता है तो वातावरण अलौकिक-सा हो जाता है जैसे किसी अन्य लोक से ध्वनि आ रही हो। एक अजीब टीस

उठती है और एक सम्मोहन छा जाता है। बजते हुए रेडियो के गानों के नेपथ्य में बांसुरी की टेर जो समां बांधती है, उसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है, कहा नहीं जा सकता।

"अरे दीपा, तू बांसुरी सुन रही है या पढ़ रही है ? तेरा ध्यान कहां है ? रात के सन्नाटे में बांसुरी का स्वर···बड़ा रोमानी है न ? अब तेरे लिए दूल्हा ढूंढ़ना पड़ेगा··· ह ह ह ह।"

"चल, चुप रह, चु···प्···प रह। सुनने दे। यह कौन बजा रहा है···इस स्वर में कुछ और ही प्रभाव है···।"

दीपा उस हृदय से निकलने वाले दर्द भरे स्वर में पूरी तरह खो गई। किताब उसके सामने थी, जिसे वह अपने तकिए पर रखे हुए थी। बालों की लट को बार-बार मुंह पर गिरने से बचाने के लिए वह हाथ से उन्हें पकड़ कर पीछे कर देती, कभी सिर को झटका देकर घुंघराले केशों की अलक को मोड़ देती, कभी बाल उसके मुख को ढंक लेते और उसकी मिची आंखें बांसुरी की धुन में तन्मय दिखाई देतीं।

चिरंजीव हंसा, हंसता रहा। वह दीपा का मजाक बना रहा था पर दीपा बेसुध थी। जब हंसने का कोई असर न हुआ तो चिरंजीव ने कागज की गोली बनाकर, ताक कर अपनी चारपाई से दीपा की ओर फेंकी तो वह चौंक उठी और झुंझला कर बोली—"क्या है ?"

"क्या नहीं है ? वाह मेरी लाड़ो, तू तो अपना होश ही खो बैठी। अरी, यह एम० ए० का प्रथम वर्ष है और राजनीति शास्त्र कठिन विषय है। तुझे क्या अच्छे अंक नहीं लाने हैं ?"

"लाने हैं। तू तो मुझसे फिसड्डी है। तू पढ़, मैं कम पढ़कर भी तुझसे अच्छे नम्बर ले आऊंगी।"

लेकिन यह कहने पर भी दीपा के कान बांसुरी की ध्वनि पर ही लगे थे। वह बोल तो रही थी, भाई को बना भी रही थी पर सुन सिर्फ उस स्वर को रही थी, जिसमें वादक अपने भूखे-प्यासे प्राणों को उंडेल रहा था और मधुर गीत बजा रहा था—"हरि बिन परत न चैना, दरसन बिन तरफत नैना।" वह अलापों पर अलापें ले रहा था और जब जी भर कर स्वर को आरोह दे लेता तो सम पर आ जाता और तान तोड़ देता और फिर शुरू हो जाता।

दीपा की तन्मयता देखकर फिर चिरंजीव चुप रह गया। उसने अपनी सुन्दर बहिन को जैसे पहली बार देखा कि वह उससे दूर चली गई है। वह दूर जा सकती है इसी पर उसे ताज्जुब हो रहा था। वह भाई से इतनी घुली-मिली थी, सारे घर की, भाई-भौजाइयों, संबंधियों-अभ्यागतों की इतनी लाड़ली थी कि उसकी कोई पृथक सत्ता है, यह कभी अहसास ही नहीं होता था। चिरंजीव आंखें चुराकर उसे देख लेता और पढ़ने के बहाने किताब पर नजर डाल कर सोचने लगता कि अब दीपा युवती हो गई है। अब इसको, इसके घर पहुंचाना ही होगा।

और चिरंजीव ने जैसे प्रथम बार देखा कि दीपा सचमुच आकर्षक है। उसका दूधिया रंग, चम्पई चमक, नाक नक्श ऐसे जैसे किसी चित्रकार ने बनाए हों और दूध-घी का स्वस्थ शरीर। वह अहीर की लड़की थी, खूब परिश्रम करती थी। रूप के प्रति एकदम लापरवाह होकर घर का सारा काम देखती। गांव में तो दूध भी दुह लेती थी। सारा घर गोबर से लीप डालती। दौड़-दौड़कर पानी भर लाती, गिलहरी-सी नीम पर

चढकर दातौन तोड लाती। मैदान मे दौड लगाती...।

दीपा न काम से थकती, न पढाई से और भाई से लाड़ की लड़ाई में तो अद्वितीय थी। काम करते-पढते चिरजीव को नौचकर या टहोका मार कर भाग जाना और छिप जाना। भाई उसे मारने के लिए खोजता और न मिलने पर गरजता, "अब की बार मैं इस दीपा की बच्ची को मार डालूगा, अम्मा। रोक लो इसे। मैं इससे बड़ा हू कि नही पर यह मेरी कुछ कद्र ही नही करती ।"

"अपने डोकर से कहो, मैं तो इस चिबिल्ली से हार गई...और तू कहां का राम है, तू भी उसे चिढाता है, अब भुगत। ढूढ़ ले, यही कही छिपी होगी और मार दे दो हाथ, सीधी हो जाएगी कुलच्छिनी।"

मा मन-ही-मन हसती पर ऊपर से गुस्साती, काम में लग जाती। चिरंजीव पिता से फरियाद करता—"पापा, रोको इस बदरी को, नही तो मैं इसका भुरता बना दूगा... ओ दीपा, ओ चोरनी, कहा जाकर छिप गई, निकल बाहर, फिर मैं तुझे बताता हू।"

काका चौधरी बडी-बडी मूछो मे मुस्कराते मगर ऊपर से दोनो को डांटते। दीपा को खोजते-खोजते चिरजीव तग आ जाता। एक बार तो वह घर के कुएं में, रस्सी बांधकर उतर गई थी। बडा कोलाहल मचा था। पुलिस मे खो जाने की रपट की धमकी देने पर कम्बख्त चिल्लाई थी कि मैं यहां हूं, कुए मे, रस्सी ऊपर खीचो। सारा घर और पड़ोसी सन्न रह गए थे। उसके बाद जो हसी हुई, वह क्या कभी थमने वाली थी?

चिरजीव के मन मे दीपा की भोली-भाली छवियाँ-शैतानियों के रूपाकार चल रहे थे और वह उनमे खोकर किताब को बिल्कुल भूल गया था। उसके मुख पर बहिन के प्रति ऐसा कोमल और अपनत्व का भाव था कि चिरजीव का चेहरा पवित्र लग रहा था पर दीपा यह जानकर भी चुपचाप उठी और उसने भाई की किताब खीच ली। उसे कुछ पता नही चला।

चिरजीव, दीपा की बाललीला मे इतना डूबा हुआ था कि उसे कुछ भान नही रहा। तब दीपा कही से नौसादर ले आई और चिरजीव के पास, पैर साधकर पहुंच गई। उसकी नाक के नीचे नौसादर लगाते ही जो छीकें शुरू हुई तो चिरजीव परेशान हो गया। पिता-माता जग न जाए, इसलिए वह तौलिए मे छीकें लेता तो भी जब-तब आवाज निकल ही पडती, आ·· क छी, और ऊपर से दीपा के ठहाके। अन्ततः पिता-माता जग ही गए और चौधरी ने गांव की भाषा में जो डांटना शुरू किया तो दोनो भाई-बहिन ने बत्ती बुभा दी और अपनी-अपनी चारपाइयो पर, चद्दरे मे मुह छिपा कर जो हसे तो जैसे भूचाल ही आ गया।

चौधराइन चिल्लाई, "दीपा उठो और चलो यहां मेरे पास चारपाई पर सोने के लिए। हो गई बहुत पढाई। नास जाए, यह अंगरेजी की पढाई। इनको न कोई हया है, न सरम, कैसे ही हो कर रहे है। चलो दीपा...अच्छा, मैं तुझे बताती हूं...।"

चौधराइन भन्ना कर उठी और जब तक दीपा सम्हले या हसी पर काबू पाए, चौधराइन ने उसका झोंटा पकडा और उसे खीचते हुए, अपने कमरे के पास के दालान मे बिछी एक चारपाई पर लाकर डाल दिया और उसे सो जाने की हिदायत की। इससे दीपा की हसी और अधिक बढ गई, उधर भाई भी हहरा उठा, ह ह ह ह... चौधरी-चौधराइन भी हसने लगे।

दूर खदरों मे किसी एक खार की चोटी पर बासुरी बज रही थी, 'हरि बिन परत न चैना, दरसन को तरपत नैना।'

दूसरे दिन दस बजे, चिरंजीव और दीपा कालेज के लिए साइकिलों पर निकले। चिरंजीव ने सादा बुदशर्ट और पतलून पहनी थी पर उसकी कद-काठी अच्छी थी। जंच रहा था। वह प्रायः सिर झुकाकर सोचता हुआ चलता था जबकि चपल दीपा इस तरह चलती जैसे वह चुनौती दे रही हो, सबको तुच्छ समझती हो। उसकी चाल में एक शानदार अकड़ थी और वह अक्सर खिल्ली उड़ाती हुई नजर से लोगों और चीजों को देखती थी। पर बाहर वह अपना चिचिल्लापन छोड़ देती थी। जीभ का काम वह अपनी बड़ी-बड़ी, झील-सी गहरी और मजाक बनाती हुई आखों से लेती थी। वह कुछ इस तरह देखती थी गोया वह प्रभावित नहीं हुई है और जो भी है जाना हुआ और जीर्ण है।

दीपा ने एक ही रंग का पंजाबी सूट पहना था, पजामा और कुर्ता। आस्मानी रंग उस पर फबता था और आस्मानी दुपट्टे के बीच उसका मुख चन्द्रमा-सा अलग चमक उठता था। उसने बड़ी अदा से साईकिल उठायी और भाई के बगल में चलने लगी। छिपैंटी की गलियां, गन्दी और सकरी थी, अतः दोनों ने सोचा, पैदल चलेंगे और गली या सड़क चौड़ाने पर साईकिल पर चढ़ेंगे।

दीपा नजरों से भाई को चिढ़ाती मगर एकदम चुपचाप चल रही थी। चिरंजीव उसके भाव को समझ कर उसे डांटता, "पगली, गंभीर होकर चल, नहीं तो टाग तोड़ लेगी। यह छिपैंटी की गली है, दिल्ली का इंडिया गेट नहीं जो बौरा कर चला जा सके।" दीपा ने बात पकड़ ली और धीरे से बोली—"भाई साहब, आप मुझे इंडिया गेट कब दिखाने ले चल रहे हैं? आई थिंक आई डिजर्व इट नाऊ, आई हैव पास्ड माई बी० ए० विद फ्लाइंग कलर्स—मैं समझती हूं, मेरा हक है कि आप मुझे दिल्ली ले चलें, मैंने बी० ए० में खूब अंक पाए हैं।"

चिरंजीव ने कहा, "ठीक है, तू पढ़ने में तेज है पर यदि तू पन्द्रह दिन गंभीर रह, सायलेंट एण्ड सोफिस्टीकेटिड, शांत-परिष्कृत रहे तो मैं तुझे दिल्ली दिखा सकता हूं।"

दीपा ने उसे इस तरह देखा जैसे वह कोई बावला आदमी हो और बेसिर पैर की बात कर रहा हो। चिरंजीव हसने लगा और उसने उसे इस तरह के हावभाव का प्रदर्शन बन्द करने के लिए घूसा दिखाया तो दीपा ने मुह बनाया। दोनों हसने लगे।

मुख्य सड़क पर आकर दोनों साइकिलों पर सवार हो गए। इटावा में यही एक लम्बी सड़क है जिसके एक सिरे पर, आगरा रोड पर, कालेज है और दूसरी तरफ मध्य-प्रदेश की ओर जाने वाले सिरे पर टिकिसी महादेव का ऊंचा मन्दिर है, जहा महाकवि देव की प्रतिमा लगने की प्रस्तावना बन रही है। इसी सड़क के दोनों ओर बाजार है। बीच-बीच चौराहे है, जिनमें इस्लामिया स्कूल वाले चौराहे पर एक सड़क एक ओर तो पूर्व औरय्या-कानपुर की ओर जाती है और दूसरी ओर वह आगे आगरा रोड में मिल जाती है।

इटावा का बाजार यों लम्बा है पर बड़े शहरों की तुलना मे कस्बे का बाजार-सा लगता है। देहाती और नगर के लोगों के मिश्रण में देहाती रग अधिक दीखता है या फिर चितकबरा हो जाता है, जिसमें नागरिक परिष्कृति, सलीके के कपड़ों, बोलचाल में नफासत और चालढाल में शहरी चमक के साथ-साथ ग्रामीण फटेहालपन मगर स्वास्थ्य की दृढ़ता और उजड्डता को अलग-अलग पहचाना जा सकता है। छोटे दुकानदारों के मालिकों के मुखों पर एक दीनता और असहायता झलकती है। और बड़ी दुकान वालों

के चेहरों पर, आत्मतृप्ति और "परवाह नहीं" का भाव। बोलचाल में भी खड़ी बोली और इटाविया कन्नौजी बोली का मिश्रण साफ सुनाई पड़ता है। परिष्कृत व्यक्तियों के मुख से भी कन्नौजी बोली के टुकड़े अपने आप निकल पड़ते हैं।

बाजार मे परम्परागत धनी दूकानदारों के अलावा नए धनी-धोरी बढ़ रहे हैं। नए-नए ढग के फैशन और उपयोगिताओं की दूकानें खुल रही है तो दूसरी ओर छोटे दूकानदार उजडते से लग रहे है। छोटो की सख्या ही ज्यादा है जो सम्मान और संपत्ति के भूखे हैं, बडो को तो सब हासिल है। ग्राहकों में भी यही भेद है। गरीब किसान, मजदूर और छोटा वेतन भोगी आतंकित होकर बाजार को देखता है, गुजरते साहबनुमा लोगो-लुगाइयों को जबकि सम्पन्न लोगो की भौहें भारी और मन भरा जान पड़ता है।

छिपंटी से इस्लामियां कालेज वाले चौराहे के पूर्व, दिन मे भीड़ हो जाती है। इक्के-तागो की वजह से जगह अधिक घिर जाती है क्योंकि सड़कें संकरी हैं और सड़क का कायदा-कानून यहा माना नही जाता अतः लोग चिल्ला कर रास्ता बनाते हैं—"हटना भाई, बचके दादा, सम्हल के पहलवान, देखना चाचा, बचना बहिनजी···अबे, देखकर नही चलता, आखें है या बटनें···तागे का हुक घुस गया तो बिल्लौर पहुच जाएगा···ए रिक्शेवाले, ठहर जा, तूने धक्का कैसे दिया···" —इस तरह की कांय-कांय और शोर चलता रहता है मगर कमाल यह है कि ट्रैफिक-सिपाही के बिना, जनता आपस में जब-तब झड़पकर भी, घोर भीड़ मे भी आवागमन जारी रखती है। तो क्या ट्रैफिक पुलिस के कारण गड़बडी होती है?

धक्कम-धुक्का में भी दीपा की साइकिल का लिहाज भीड़ अधिक करती है, यह दीपा ने देखा है जबकि भाई की परवाह समूह अधिक नही करता। दीपा ने समाज मे बसी नारी के प्रति इस आदर की भावना को पहचाना और उसके चेहरे पर एक जनश्रद्धा का भाव आया। जनसाधारण मे से किसी को यह फुरसत ही नहीं थी कि वह उसकी कुदृष्टि और कुबोल का निशाना बने पर वह जब भीड से बचती हुई इस्लामियां कालेज के चौराहे पर आई तो पहली बोली लगी—"आसमानी रंग गोरे गुलाबी रंग पर खिलता है।"

"वाह, क्या नज़ारा है!"

दीपा ने बिना इधर-उधर नजर फेंके समझ लिया कि कालेज के किशोर है। वह मुस्कराहट को दबाकर साइकिल पर और भी अकड़कर बैठ गई और उसने अपनी नापसंदगी जाहिर करने के लिए पैडल पर जोर से पैर मारा मगर इससे संयोगवश चेन उतर गई। दीपा ने भाई की तरफ देखा। भाई ने उसे बायी तरफ आकर, साइड लेकर चेन ठीक करने का इशारा किया। दीपा उतरकर, बायी ओर चौराहे से कुछ पूर्व एक ओर खड़ी हो गई और झुककर साइकिल की चेन ठीक करने लगी। चिरंजीव निगरानी करने लगा कि कोई उसके पास नही आ जाए। वह बोली मारने वालों को खाऊ दृष्टि से घूर रहा था।

इस्लामियां कालेज वाले चौराहे पर मैनपुरी तम्बाकू की दूकान पर चार-पाच बहुत तगड़े आदमी खड़े थे। उनमे एक तो आधुनिक वेशभूषा में था जो शायद वकील था। काला लबादा कंधे पर पडा था, शेष तीन इस तरह दीपा के झुकाव की मुद्रा पर विभोर थे, जैसे वे चित्रकार हों और उस छवि को मन मे टाच रहे हों।

उन तिलंगों ने धोती और कुरते पहन रखे थे और सिर पर साफे थे, जो इस तरह बाधे थे कि चेहरे कुछ छिप रहे थे क्योंकि साफों की पूछ उन्होंने गले में डाल रखी

थी और वे छाती में मुंह धंसाए हुए, कुछ दीपा की ओर सरककर सलाह करने लगे।

"हुम् !"

"हुम् !"

"हुम् !"

बस इस 'हुंकार' का विनिमय हुआ और फिर कुछ नहीं हुआ। जाहिर था कि इस हुंकार को किसी ने सुना नहीं था। यहां तक कि वकील साहब ने भी नहीं क्योंकि वह तम्बाकू वाले की दुकान पर खड़े किसी और को कोई कानून की धारा या दफा समझाने लगे थे और उन्हें आशा थी कि वह आसामी फंस जाएगा। वह हर एक को इस तरह देख रहे थे जैसे वह उन्हीं के पास मुकदमें के लिए आ रहा है। ये मनुष्यों को सिर्फ मुवक्किल मानते थे और दुनिया को अदालत।

दीपा चेन चढ़ाकर फिर चल पड़ी थी और भाई ने उसके पीछे साइकिल कर ली थी। इधर-उधर देखकर दोनों ने व्यस्त चौराहे को पार किया और वे तेजी से, बिना कोई चिंता किए लाल बहादुरशास्त्री की मूर्ति के पास आकर रुके। यह बुत रेलवे स्टेशन के चौराहे के पास है। शास्त्री जी छोटे से मगर भले लग रहे थे।

दीपा को अपनी पीठ पर किसी की गड़ी नजर की चिपक महसूस रही थी यों वहां कोई भी नहीं था। सब अपने में मग्न आ जा रहे थे। सामने ही स्टेशन था, इसलिए यात्रियों में जो एक यात्रीपन होता है, वही उनमें था। दीपा ने पीछे देखा तो उधर भी कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था। वह हैरान हुई और उसने अनायास, हाथ पीछे कर अपनी पीठ से कुछ छुड़ाया मगर वहां कुछ भी नहीं था। कुदृष्टि चिपक जाती है, छुड़ाए नहीं छूटती।

"क्या है ?"—चिरंजीव ने पूछा।

"पता नहीं, कुछ चिपका-सा लगा।"

"तुम्हारा वहम है। पीठ पर क्या चिपक सकता है ?"

"कह नहीं सकती, तुम्हारा क्या ख्याल है ?"

"तेरा सिर, चल, कालेज को देर हो रही है।"

"चल तो रही हूं, पर कुछ था जरूर, क्या था, कुछ अनुमान लगा सकते हो ?"

"हां, क्यों नहीं। तेरा मगज निकलकर तेरी पीठ पर चिपक गया है।"

दीपा ने कोई प्रतिक्रिया प्रकट नहीं की। वह गभीर थी। यह देखकर चिरंजीव को आश्चर्य हुआ। यह मुंहज़ोर तो किसी टिप्पणी को नहीं टाला करती। आज क्या बात है जो इसने बात नहीं काटी ?

"दीपा, क्या बात है, तुझे आशंका है कुछ ? किस तरह की ?"

दीपा एक बार सिहरी। उसका शरीर एक बार कांपा और फिर स्थिर हो गया। वह खुद भी साफ-साफ कुछ समझ नहीं पा रही थी कि क्या बात है। शरीर में भय के कम्पन्न की एक तरंग क्यों तैर गई ? पर प्रकट तो कुछ नहीं हो रहा था। शायद यह किशोर मन की कल्पना हो। दीपा ने कंधे उचकाए और उस आशंका को बलपूर्वक दबा कर हंसने लगी।

"ए भाई, क्या सोच रहा है ?"

"तू बता न, सोच तो तू रही है।"

"मैं, बताऊं ?"

"हां, हां, बता, मुझे कुछ अनहोनी-सी लग रही है।"

"अनहोनी ? क्या मतलब ?···अच्छा याद आया। मैंने चौराहे पर देखा कि तुम्हें वे तीन लोग घूर रहे थे। शायद तुम्हारे विवाह के लिए तुम्हारा चौखटा परख रहे हों।"

चिरंजीव की चिंता छट गई, और वह हंसने लगा।

कालेज मे दिन शांति से बीत गया। बल्कि दोनों ने ढर्रे की पढाई देखकर ऊब से कक्षाएं काटीं। सब कुछ साधारण और रोज-बरोज का था। कक्षाओं के बाद, अंतराल मे, कालेज की प्रबन्ध समिति बनाम कालेज, प्राचार्य और प्राध्यापक, छात्रों के चुनाव की राजनीति, सत्ताधारी दल के नेताओ और विपक्ष की राजनीति की बातों में वही जाना-पहचाना ढब था। ऊब कर दीपा पुस्तकालय पहुंची। भाई अपनी कक्षा में था या कहीं और व्यस्त था।

पुस्तकालय में उसे किशोरियों की एक टोली मिली। सबने बड़े ध्यान से दीपा का वेष देखा और कहा—"दीपा। तूने सुना, कल भूगर्भ विज्ञानी डॉ० अलैक्जेंडर ने कहा है कि जल्दी ही भूकम्प आने वाला है।"

दीपा डर गई, बोली, "सच ? कब ?"

"अरी आज ही तो आएगा, हाय ! तू तो कुछ भी नहीं जानती···आसमान पहन कर, धरती की हलचल की कल्पना नही कर सकती···ह ह ह ह।"

दीपा सहेलियों के विनोद को जब समझी तो वह भी हंसने लगी जिससे उसके मुख की लाली बढ गई। एक सहेली ने दीपा के कान के पास मुंह ले जाकर कहा, "दीपा, तू जगमगा रही है, हम पतंगों से जल रहे हैं"—और यह कहकर उसने कान की लव को चूम लिया। दीपा उसे पकड़ने दौड़ी तो वह भाग ली। सहेलियां हंसते-हंसते दोहरी हो गईं। दीपा सरला को पकड़कर ले आई और भ्रकुटि चढाकर बोली—

"यह बहुत विकिड है, दुष्ट, इसे इसकी हरकत पर सजा मिलनी चाहिए।"

"चलो सब, मैं चाय पिलाती हूं। यह सजा सही पर दीपा, तू सच मान, तू आज गज़ब ढा रही है।"

लज्जा और रूपगर्व से लाल हो-होकर भी दीपा को पीठ पर किसी की बुरी नजर के चिपकाव का अहसास नही भूला। वह बीच-बीच में बेचैन हो जाती मगर फिर सहेलियों के विनोद पर हंसने लगती। वह आशंका को जितना ही अपने पर्स में बन्द करती, उतनी ही वह सिर उठाकर उसे डराती थी।

शाम को चार-साढे चार बजे, खेल के मैदान मे हॉकी का एक मैच देखने दोनों भाई-बहिन जम गए। खेल मे तीव्रता थी, इसलिए समय का पता नही चला। सूरज डूबते ही चिरंजीव ने टोका कि अब चलना है, पापा-मम्मी चिंतित हो रहे होंगे। दीपा उठकर, कुछ सोचकर बोली—"हम अबकी बार, दूसरी तरफ से चलेंगे।"

"क्यों, क्या बात है ?"

"बात कुछ नही है, मेरा मन है।"

"तो चल, दूसरी सड़क से निकल चलेंगे पर तू चल तो सही।"

दोनों साइकिलें लेकर रोज की राह छोड़कर, गलियों से गुजरते हुए और जब तब गप्प लगाते हुए आगे बढ़ते रहे। कहीं उतर पड़ते, कहीं साइकिल पर चलते। चिरंजीव के मन में कुछ खटका-सा था कि दीपा राजमार्ग से क्यों नही लौटी ? इन गंदी, तंग गलियों से गुजरने की क्या तुक है, पर वह कुछ बोला नहीं।

अन्धेरा छाने लगा था। गोधूलि रात की ओर सरक रही थी। घरों में मंद

रोशनी निकालने वाले, मुरझाए बिजली के बल्ब जल रहे थे पर उस रुग्ण प्रकाश से अंधेरा और अधिक डरावना लग रहा था।

अंततः दोनों अपने घर की सीमा में आ गए तो चिरंजीव ने बेफिक्री की सांस ली पर दीपा वैसी ही सहमी-सहमी रही। वह घर के भीतर घुसने के लिए बेताब-सी जान पड़ रही थी। आखिरी मोड़ काट कर जब दोनों अपने निवास की गली में मुड़े तो उन्होंने देखा कि वे ही तीनों आदमी उस मोड़ के पास खड़े हैं और जैसे उन्ही का इन्तजार कर रहे है।

दीपा को काटो तो खून नहीं। वह डर कर रुक गई और उसने भाई की बांह को संकेत से दबाया। चिरंजीव कुछ न समझा पर अजनबी तिलंगों को देखकर वह समझा कि दीपा इन्हीं को देखकर सहमी है। दोनों ने बिना रुके घर की तरफ साइकिलें बढ़ाईं।

"हुम् !"
"हुम् !"
"हुम् !"

2

अमावस्या की रात थी। एक लम्बे कद मगर मंजे हुए अस्थूल शरीर का आदमी धोती और कुरता पहने हुए, विचारो मे खोया हुआ टिकिसी के महादेव के मंदिर की ओर जा रहा था। शीत अभी शुरू ही हो रहा था, इससे मौसम मे थोड़ी-सी सरदी थी। लम्बे आदमी ने कंधे पर पड़े अलवान से ऊपर का भाग ढक लिया और सिर पर की खद्दर की टोपी को कुछ कस लिया।

वह चौंक-चौंककर इधर-उधर देख लेता था जैसे उसे किसी की प्रतीक्षा हो। वह टिकिसी के महादेव की स्थापना के विषय मे सोचने लगा। उसने कल्पना मे देखा कि महाराष्ट्र की एक सेना, एक सेनापति की कमान में आ रही है। तब इस मन्दिर की जगह कुछ भी नहीं था पर इस देवता की मान्यता अवश्य थी और लोग यहा मनौती मनाने आया करते थे।

पेशवा के उस सेनापति, सिंधिया (शिन्दे) या होल्कर, जो भी हो, ने इस देवता के बारे में सुना। उसने मनौती मांगी कि यदि उसने फर्रुखाबाद के नवाब को युद्ध मे हरा दिया, विजय मिल गई तो वह इस स्थान पर एक बड़ा मन्दिर बनवा देगा। और वह सेनापति युद्ध में जीत गया। नवाब से चौथ वसूल कर और बहुतों को लूट कर उसने टिकिसी या त्रिकुटी के इस महादेव की स्थापना की। कितना ऊंचा मंदिर है। सीढिया चढ़ते-चढ़ते थक जाते हैं, फिसलकर गिरो तो हड्डियां चूर।

इतना ऊंचा मन्दिर क्यों बनवाया ? कही यह मन्दिर मराठी सेना की टेकरी तो नही थी, जहां से मध्यप्रदेश (अब) की ओर जाने वाले मार्गो का निरीक्षण हो सके ?

लम्बा आदमी आगे बढ़कर मन्दिर के अहाते में पहुंचा। ऊंचा मन्दिर लगभग सुनसान-सा था। जब तब एक दो दर्शनार्थी आते तो घंटे बजाते और फिर शून्य सनकने लगता। वह सिर झुकाकर सीढिया चढने लगा। अहाते में महाकवि देव की मूर्ति लगने वाली थी पर अभी लगी नहीं थी। मूर्ति पर काम चल रहा था। महाकवि धराशायी

थे और शायद वह राधाकृष्ण के नित्य विलास की मधुर लीला के दृश्यों में मग्न थे, शांत और निर्द्वन्द्व ।

लम्बे आदमी ने एक उच्छ्वास छोडा और फिर सीढ़ियां लांघने लगा । वह ऊपर पहुंचकर मंदिर की ओर नही गया, मंदिर के पीछे की छत पर चला गया। छत के किनारे जाकर वह ग्वालियर-भिंड आदि को जाने वाली सड़क को गौर से देखने लगा जो अब सूनी थी । जंगल मे कई पगडडिया जा रही थी पर उन पर तो किसी के होने का प्रश्न ही नही था । उसकी दृष्टि फिर दाईं ओर के खण्डहर पर पडी और वह चौंक उठा, "यही वह खण्डहर होना चाहिए"—वह बडबडाया और अंधेरे में उस खण्डहर हुए पुराने ठिकाणें को घूरने लगा । उसने सोचा, मराठा सेनापति इसी ठिकाणें पर रहता होगा। यह गुप्त और सुरक्षित स्थान है । इधर से कोई बड़ी सेना भी इटावा पर हमला नही कर सकती क्योंकि नगर और टिकिसी के महादेव के बीच एक तंग रास्ते से जाया जा सकता है जो पहाडी को काट कर बनाया गया है ।

उसने यह भी सोचा कि ठिकाणें से कोई सुरंग भी महादेव के मंदिर मे आने के लिए बनाई गई होगी ताकि महिलायें और बच्चे जब चाहें, सुविधा से पूजा के लिए मंदिर मे आ सकें और आक्रमण की दशा मे मंदिर के लोग, पास के दुर्गनुमा निवास में शरण ले सकें ।

यह सब सोचते हुए उस व्यक्ति को ऐसा आभास हुआ कि मराठी पगड़ियां बांधे हुए सेनापति और सवार उसी की ओर बढते आ रहे हैं। उनके चेहरों पर दाढ़ियां हैं, ऊबड-खाबड और विकट । सारे ससार को तिनका समझने वाली उन योद्धाओं की कठोर मुख-मुद्राएं उसके मन मे साकार हो गईं और उसे लगा कि वह उन्हें उस अंधेरे के बावजूद साफ-साफ देख रहा है ।

वह काल को लाघ कर अब उन मराठो के सामने खड़ा था और उनको सुन रहा था···एक दरबार लगा है । रात मे मशालो की रोशनी है और एक मुच्छड मुचंड सरदार सिंहासन पर बैठा है जिसे तख्त पर रख दिया गया है। दोनों तरफ चंवरधारी है, तीनों तरफ अगरक्षको की ठोस पंक्ति है । सामने हाथ बाधे—उप सेनापति और सैनिक खड़े हैं । एक उत्तर भारत का व्यक्ति हाथ जोड कर कहता है, "महाराज। वीरशिरोमणि, हम भयभीत हैं । एक ओर नवाब और बादशाह लूटते है, दूसरी तरफ अंग्रेज का दबाव है, आप रक्षा करें । आप दिल्ली का सिंहासन छीनकर प्रजा को अभय दें ।"

"हम पेशवा के सैनिक है, देश और धर्म के सेवक । जो संगठित होगा, जिएगा, जीतेगा । हम कहा-कहा रक्षा करेंगे ? देश बडा है, साधन और सेनाएं सीमित । फर्रुखाबाद के नवाब को हमने युद्ध में हराया पर उसकी जगह लेने कोई भारतीय संगठित समुदाय नही आया । संकेत समझ गए न ?"

"समझ गया, महासेनापति, परन्तु···।"

सेनापति बिगड़ उठा । क्रोध से उसकी आंखें लाल हो गईं । वह गरजकर बोला, "इसे बाहर फेंक दो, यह 'परन्तु' से पीड़ित है । मैं भय और संशय को प्रजा मे सह नही सकता ।"

उत्तर भारतीय वह व्यक्ति कांपा । वह आर्तनाद करने लगा पर फिर कुछ सोचते हुए अकड़ कर बोला, "आप स्वामी कार्तिकेय हैं, मैं प्रजा को संगठित करूंगा और आपकी अगली यात्रा पर संगठित समुदाय को श्रीमन्त के सम्मुख पेश करूंगा ।"

श्रीमन्त सेनापति प्रसन्न होकर हसा, "हः हः हः ह···अब आया मार्ग पर ।

कलियुग में संघशक्ति ही औषधि है, संघः शक्ति कलौयुगे, जा भाग जा, हः हः हः हः।"

श्रीमन्त का अट्टहास उस लम्बे आदमी को चकित कर गया। उसके मन में कौंधा कि क्या आज की स्थिति का निदान इस संदेश में छिपा है, क्या···इतिहास वर्तमान को नया विकल्प बता रहा है···क्या···?

वह सिहर कर, सोचता हुआ, मंदिर की ओर बढ़ा। उसने अलमान से कुछ अपना मुह ढंक लिया और झुक कर देवाधिदेव को प्रणाम किया। काफी देर तक वह शिव-शम्भु के कृतित्व पर सोचता रहा कि इनकी पूजा और प्रेरणाग्रहण इसीलिए तो होता है, क्योंकि शिव—संसार के प्रत्येक प्राणी की कल्याण-चिन्ता करते हैं। उनके लिए विष पी लेते हैं और पतन को अवश्यम्भावी समझ कर सबको मार डालते हैं, पुनः सृष्टि करते हैं और सृष्टि की प्रक्रिया सामान्य देख कर आनन्द से लास्य करने लगते हैं।

···यह मन ही तो महादेव है। यही विकृत होकर भस्मासुर बनता है, यही रावण, यही त्रिपुरासुर। लम्बा आदमी पुनः प्रणाम कर, इस क्षण उठे—ज्ञान और प्रेरणा को गठियाता हुआ, प्रसाद लेकर नीचे उतरने को हुआ। तभी प्रधान पुजारी ने उस लम्बे व्यक्ति को बुलाया। वह विस्मित होकर पुजारी की ओर देखने लगा।

पुजारी उठ बैठा और उस लम्बे आदमी को एक तरफ ले जाकर पूछा—"आपका परिचय?"

"आप आदेश दें ''परि ''चय, मैं तो एक साधारण नागरिक हूं।"

"नहीं, आप साधारण होने पर भी —साधारण नहीं हैं। आप में कुछ ऐसा है जो असाधारण है। आपकी चितवनि, आपकी भृकुटि के बीच बनती हुई त्रिकुटी, यही सब है, बहुत कुछ है भक्त। आप कौन हैं?"

"क्या आप इस स्थान के विषय में सब जानते हैं, जैसे यह खण्डहर, क्या इस मंदिर से जुड़ा हुआ था?"

"जुड़ा हुआ था? अरे जुड़ा हुआ है। पर आप क्या इतिहास लिख रहे हैं?"

"नहीं, इतिहास बना रहा हूं।"

"वही तो, वही तो। तब आप परिचय क्यों नहीं देते?"

"कभी दूंगा। अभी परिचय देने से मैं संकट में पड सकता हूं।"

"परन्तु आप कोई संकेत नाम तो बता सकते हैं। आप पुनः मिलें तो क्या कहूंगा?"

"गदाधरसिंह।"

"ग···दा···ध···र सिंह···गदाधरसिंह तो देवकीनंदन खत्री के उपन्यासों के एक ऐय्यार का नाम था जो भूतनाथ कहा जाता था। आपने भी क्या नाम चुना है? आप रहस्यमय हैं?"

"बिल्कुल नहीं, नाम कोई तो रखना ही है, काम चलाने के लिए। काम मुख्य है, नाम गौण।"

"फिलहाल क्या कर रहे हैं?"

"पत्रकार हूं। अंग्रेजी-हिन्दी भाषाओं के कुछ पत्रों का सवाद-प्रेषक हूं।"

"भूतनाथ नाम से लिखते हैं न? मैंने आपकी रपटें पढ़ी हैं। वही भूतनाथ है न?"

"भूतनाथ तो एक मिथक है, एक हवा है, एक भूत है जो किसी पर सवार हो सकता है, वही भूतनाथ है···मैं भूतकाल से प्रेरणा लेता हू, इसलिए भी भूतनाथ हूं। इस

अर्थ में अनेक भूतनाथ हैं। इसमें कोई रहस्य कहा है ? भूतनाथ एक सटीक नाम है, बस।"

"नही, भूतनाथ एक नाम नही है जैसे मैं मात्र पुजारी नहीं हूं। भूतनाथ एक चरित्र है जो अपराध-भाव से पीडित है और उस अपराध भाव—'गिल्ट काम्प्लैक्स' से पीछा छुड़ाने के लिए वह इस जन्म मे, कुछ ऐसा करना चाहता है जो व्यापक हित से संवधित हो, ठीक है न ?"

"आश्चर्य है, पुजारी जी। पर अब मेरे चकित होने की बारी है। आपका परिचय क्या है ?"

"मैं भी एक भूत हू···हः हः हः हः हः।"

भूतनाथ पुजारी के स्वर को तोल रहा था। उसे सदेह हुआ कि यह कही खुफिया पुलिस का कोई भेदिया न हो। परन्तु पुजारी ने उसके असमंजस को समझ लिया—

"भूतनाथ, आपके समय मे एक जगन्नाथ ज्योतिषी हुआ करता था, मैं वही हूं। हम मिलकर उस जन्म मे ऐय्यारी किया करते थे।"

"लेकिन यहा आप क्यों छिपे हैं ?"

पुजारी ने भूतनाथ का हाथ पकडा और वह उसे अपनी कोठरी में ले गया जो सीढियो के नीचे, अहाते में एक ओर बनी थी। वह बाहर से तो जराजीर्ण थी पर भीतर से मजबूत और निवास योग्य थी। एक तख्त पर बाघम्बर पड़ा था और सामने कुछ कुर्सियां और एक सोफा था, एक टेबिल। पुजारी ने एक अल्मारी से कुछ कागज निकाले और उनमे से एक उसे पकड़ा दिया।

भूतनाथ देर तक उस कागज को बार-बार पढता रहा और जब उसे विश्वास हो गया तो बोला—"····तो आप पुराने क्रान्तिकारी है और अभी भी आपके समकालीन सामाजिक-क्रान्तिकारियों से सम्बन्ध हैं ?"

"यह मैं अपने मुंह से कैसे कहूं ? आप उस सुरंग के विषय में क्यों पूछ रहे थे ? क्या आप सचमुच इतिहास पर लिख रहे है ?"

"सचमुच। मैं एक पत्रकार हूं, बस, पर भूतनाथ की तरह यकीनन अपराध-भाव से पीडित रहता हू। मैं दुर्बल भी हूं मन से, मैं आवेश मे आकर कुछ का कुछ कर जाता हू। फिर पश्चाताप करता हूं। फिर उसे भगाने के लिए साहसिक कर्म करता हूं। मुझमें धनुप के दोनो चाप मिलते हैं। मैं इससे बहुत परेशान हूं।"

"भूतनाथ, मैं भी मनुष्य हू। अब तो शिथिलगात्र हू, परामर्श दे सकता हूं, बस। किन्तु मैं जानता हू कि तुम महत्कार्य करोगे। तुम एक ऐसी बुनियाद डाल सकते हो, जिससे आगे चलकर बहुत बडी शक्ति, बहुत बडी अग्नि की लपट उठेगी।···तुम्हें अभी भी विश्वास नही हो रहा है न ? लो, यह पत्र भी पढो जो आज ही आया है।"

भूतनाथ ने उस पत्र को भी ध्यान से पढा और पहली बार उसकी भौं पर जो तनाव था, दूर हुआ। उसने जेब से एक पत्र निकाला और पुजारी को दे दिया। यह पत्र उसी व्यक्ति का था, जिसने पुजारी को लिखा था कि भूतनाथ अमुक दिन आएगा। उसे आप स्वयं पहचान लेंगे। उसे विश्वास में लें और विश्वास दें। उससे बहुत आशायें हैं पर वह सदा स्थिर चित्त व्यक्ति नही है। जो बड़े और खतरनाक काम करता है, वह एक आवेश, एक तनाव में करता है फिर उस तनाव को उतारने, अपने मानसिक संयम को सहज बनाने के लिए वह ठीक पूर्व कार्य से उलटा कार्य कर सकता है। अतएव, उसके भटकावों से भ्रम में न पड़कर, उसे सदा लाइन पर लाने का काम आपका है, जगन्नाथ

ज्योतिषी का, जिसका भूतनाथ आदर करता था, पूर्वजन्म में।

पत्र पढ़कर भूतनाथ हो-हो कर हंसने लगा। अब उसके खिंचे चेहरे की शिराएं ढीली हो गईं, और वह एक सामान्य व्यक्ति की तरह कोमल और सरल लगने लगा था। पुजारी ने उसकी दोनों मुद्राओं का अंतर समझा। ओह, यह सचमुच भूतनाथ है, भृकुटि चढ़ने पर—भयंकर दुष्कर्मा और प्रेम में, प्रतीति में भोला भूतनाथ, आशुतोष शिव।

पुजारी जी खूब हंसे और भूतनाथ को पास बिछे बाघम्बर पर बिठाकर कहीं एक ओर चले गये। कुछ समय बाद वह आए और एक मानचित्र भूतनाथ को दिया। भूतनाथ उस नक्शे को देखता रहा पर वह कुछ भी नहीं समझ सका।

"गुरु, मैं एक पत्रकार हूं, भूगोलवेत्ता नहीं। मैं इस नक्शे में यह तो समझ गया कि यह टिकिसी के महादेव का मंदिर है, यह रहा खण्डहर पर सुरंग कहां है, कहां से शुरू होती है?"

"मैं बताता हूं। देख रहे हो, खंडहर और मन्दिर के बीच अब पक्की सड़क बन गई है। उसी के नीचे है।"

"लेकिन सड़क और मन्दिर के बीच तो गहरी खाई है।"

"तो क्या हुआ। सुरंग खाई के नीचे-नीचे गई है और उसका इधर से सिरा···"

"इधर से सिरा···इसे तो मैं नहीं जानता। खुदाई करनी होगी।"

"खुदाई खण्डहर में हो सकती है, उधर के सिरे पर। यदि सुरंग ठीक हुई तो·· तो···तो · इधर के सिरे पर आकर उसे खोद कर रास्ता पाया जा सकता है।"

"इस काल-रात्रि में चलोगे सुरंग के उस सिरे पर या दिन में?"

"दिन में तो पुलिस को शक हो जाएगा न?"

"शक तो रात में भी होगा। पुलिस इसी अहाते में पड़ी रहती है। छोटी-सी चौकी है। पांच-सात सिपाही रहते हैं।"

"उसकी चिंता नहीं क्योंकि वे खण्डहर में नहीं जा सकते। फिर हमें तो सिर्फ वह जगह देखनी है, जहां से सुरंग शुरू होती है। बाद का काम बाद में।"

"तो फिर चलो ऐय्यारी करें। यह टार्च है। अंधेरा है अमावस्या का, काले कम्बल ओढ लो, कोई हथियार है पास में? मान लो, पुलिस—पीछे लग गई तो उसे खदेड़ना तो पड़ेगा न।"

"आप चिंता न करें, आखिर मैं भूतनाथ हूं। पांच क्या पच्चीस सिपाही हमें छू नहीं सकते। फिर हमें तो बचना है, मारना नहीं है, और आप इधर की भूमि से खूब परिचित हैं?"

"भलीभांति, हम यदि घिर गए तो उन्हें चरका देकर निकल सकते हैं। सिर पर आ गए तो उन्हें घायल कर सकते हैं, बस।"

"ठीक है।"

पुजारी ने देखा कि भूतनाथ की भृकुटि फिर कस गई। अब वह कोमल और सरल व्यक्ति न रहकर कोई दुष्कर्मा व्यक्ति लगने लगा था।

दोनों ने कम्बल ओढ़े और एक-एक कर, आगे पीछे, निकल गए। पुलिस के सिपाही भोजन और मनोरंजन में थे। वह सोच भी नहीं सकते थे कि आसपास कुछ हो रहा है।

पुजारी और भूतनाथ एक लम्बा चक्कर काटकर, टहलते हुए से, धीरे-धीरे बिना प्रकाश किए पास के खण्डहर में घुस गए। सांप-बिच्छुओं को भगाने के लिए उन्होंने

हाथ में लाठिया ले ली थी, जिन्हें वे ठोकते-बजाते हुए चल रहे थे। आड़ में आ जाने पर उन्होंने टार्च जलाई।

भूतनाथ ने देखा कि मराठों का यह निवास, भीतर से अभी भी रहने योग्य है। कई छतें साबुत है और दीवालें दृढ़ है। कई जगह छतें तोड़कर पानी घुस गया है, जिससे फर्श खराब हो गया है, पर लम्बे कक्षों में एक-दो जगह छत टूटने और पानी आने पर भी बहुत-सी जगह ठीक है।

पुजारी ने भीतर पहुंचने पर कई मोटी मोमबत्तियां निकाली और उन्हें आलों पर रखकर जला दिया। भूतनाथ खुश हो गया।

"वाह। आप तो सचमुच जगन्नाथ ज्योतिषी की तरह विचारशील, धैर्यवान् और दूरदर्शी है। मुझमे तो बहुत उतावलापन है।"

"तुम भूतनाथ हो न। तुम्हें अपने पर विश्वास है। मैं वृद्ध और दुर्बल हो गया हूं। फिर जगन्नाथ ज्योतिषी भूतनाथ का मुकाबला कैसे कर सकता है?"

पुजारी ठठाकर हसे। भूतनाथ अत्यन्त कल्पनाशील था। उसे लगा कि सचमुच वह भूतनाथ है और जगन्नाथ ज्योतिषी के पास खड़ा है। फिर वह इसे कल्पना समझ कर हसने लगा। क्या हर्ज है, हम भूत से प्रेरणा लें? कोई हर्ज नहीं है, एक चुहल सही, एक रहस्य का आनंद रहेगा, आत्मविश्वास बढ़ेगा। किसी भाव का आरोपण, यदि वह सच्चा है तो व्यक्ति को उस भाव के अनुरूप गढ़ देता है। क्या पता, मैं भूतनाथ ही तो नहीं हूं।

भूतनाथ फिर हसा। पुजारी जी उसे अपने से लड़ते देखकर खिसक गए थे और वे जगह-जगह ठोक कर, नक्शा देख-देख कर सुरग का पता लगा रहे थे। काफी समय बीत गया।

बाहर रात आकाश पर सितारे चमका रही थी।

अंतत पुजारी जी ने भूतनाथ को इशारे से बुलाया और वहा खोदने को कहा। भूतनाथ ने अपने कधे पर पड़े एक झोले से शिकारी चाकू निकाला और देर तक वह जगह खोदता रहा। कुछ समय बाद उसका चाकू पत्थर से टकराया। पत्थर को साफ करने पर देखा गया कि वह सुरंग के मुह पर रखा है। उसे चारो तरफ से स्वच्छ किया गया और उसकी किनारी काट कर उसे दोनो ने उठाया तो नीचे सुरग की गध का तीखा भभका उठा। दोनो अलग हट गए।

कुछ क्षणो बाद, उस सुरंग से एक काला, लम्बा नाग सर्राता हुआ निकला। पुजारी ने टार्च उस पर डाली तो वह चौंध से घबराकर पूंछ के बल खड़ा हो गया और फुफकारने लगा। इतना लम्बा और इतना पुराना नाग था वह कि उसके सिर पर जटायें-सी उग आई थी। पुजारी ने भूतनाथ को इशारा किया कि मारना मत। इसे कब्जे में करो, अन्यथा बदला लेगा।

भूतनाथ ने पीछे से जाकर भुजंग का फन लाठी से दबाया और फिर उस पर कम्बल फेंक दिया। नाग क्रोध मे कम्बल को काटता और विष फेंकता रहा पर निकल नहीं पाया। पुजारी ने इधर-उधर देखा कि कोई घडा मिल जाये तो नाग को मारना नहीं पड़ेगा। घडा तो नहीं मिला पर भूतनाथ ने कम्बल मे ही लपेटकर नाग को पकड़ लिया और पुजारी से कहा कि वह इसे मन्दिर में चलकर, वहां घड़े मे उतार देगा। फिर जोर से हंसने लगा कि यदि पुलिस ने घेरा तो नाग-देवता रक्षा करेंगे।

काफी देर वहां ठहरने के बावजूद फिर कोई सर्प नहीं निकला। तब पुजारी ने

वह पत्थर अकेले ही सुरंग पर सरकाया और चलने का संकेत किया।

फड़फड़ाकर चमगादड़ उड़े और उल्लू बोले। रात्रि किसी रंगरेजिन की तरह एक पर एक काली साड़ियां निकाल रही थी। दूर पास के पोखर में, कोई टिटहरी रह-रहकर चीख उठती थी। चारों तरफ नीरवता थी। मन्दिर बन्द हो गया था पर उसके भीतर जलते दीये के कारण, उस घनघोर तमस में मन्दिर का गर्भगृह, असत्य के बीच सत्य सा आलोकित था।

दो परछाइयां, बीच में दूरी बनाए हुए, धीरे-धीरे मन्दिर की ओर बढ रही थी। कहीं कुछ नही हुआ किन्तु पुलिस-चौकी के आगे एक सिपाही पहरा दे रहा था। उसके हाथ मे बन्दूक थी और वह उनींदा होने पर भी खड़े होकर पहरा दे रहा था। वह सोच रहा था कि कोई ट्रक गुजरे तो कुछ रिश्वत मिले। इस जंगल में, शहर से दूर पड़े हैं, हथेली चिकनी हो तो कुछ'''सांत्वना मिले। वह हिसाब लगा रहा था कि औसतन बीस-पच्चीस ट्रक तो इटावा से मध्यप्रदेश को आते-जाते ही हैं। कभी उनकी संख्या पचास तक पहुंच जाती है। ट्रक वाले ना-नुकर तो करते हैं पर दस रुपये तक दे देते हैं। कुछ काम बन जाता है। आज कोई ट्रक आ ही नहीं रहा है।'''यह छाया सी क्या है'''
"कौन'''वहीं खड़े रहो'''वर्ना गोली मार दूंगा।"

पुलिस के सिपाही की नींद उचट गई। रिश्वत के डौल की आशा से उसके बदन में रक्त का संचार बढ़ गया और वह बंदूक हाथ मे कस कर पुजारी जी की तरफ लपका'''"कौन है'''बोलता क्यों नहीं?।"

"मैं पुजारी हूं, भाई' क्या पूरन है ड्यूटी पर?"

"पालागों महाराज।'''अरे आप इतनी रात में कहां भटक रहे है? और कोई साथ है क्या?"

"आशीर्वाद! कोई नही है। आज अमावस्या है न, साधना कर रहा था। तबीयत घबराई तो एक चक्कर लगाने चला गया था। आज भैरव की कालरात्रि है भोले।"

पूरन हरिजन था। पुजारी उसकी ओर बढ़ते गए ताकि भूतनाथ को निकलने का अवसर मिल जाए।

"पुजारी महाराज, रात बड़ी विकट है।'''रेल सी सनसना रही है।"

"वाह पूरन भगत। तुम तो कवियों की तरह बोल रहे हो। क्यों न हो, यहां महाकवि देव की मूर्ति पड़ी हुई है। उसी का असर होगा।"

पूरन और पुजारी पास खड़े-खड़े गप्पें लड़ाने लगे। भूतनाथ नागराज को कम्बल मे लपेटे हुए सकुशल गुजर गया। जब पुजारी ने यह समझ लिया तब उसने पूरन से विदा ली और उसे सावधान होकर पहरा देने का उपदेश देकर वह अपने निवास की ओर बढ़े। पूरन पुनः बन्दूक जमीन पर टिकाकर, किसी ट्रक से मिलने वाली आमदनी के स्वप्न में डूब गया।

भूतनाथ ने पुजारी से घड़ा मगाकर, उस पर एक ढक्कन रखवाया फिर पुजारी को कमरे से बाहर कर, बिजली की रोशनी मे, उसने टटोल कर नागराज की पूंछ की ओर से कम्बल खोला। फिर बिजली की गति से तख्त पर चढकर नाग को एक झटका दिया पर इतना नहीं कि उसके गुरिया टूट जाएं। दूसरे हाथ के डण्डे मे नाग का मुख नीचे से ऊपर नहीं उठने दिया। नाग क्रोध से डण्डे पर फन मारता रहा। काला-काला जहर उससे लिपट गया पर एक दो झटकों के बाद, डण्डे के सहारे भूतनाथ ने थके

और बेवस सर्प को, ढक्कन सरकाकर, बड़े से घड़े में उतार दिया और ढक्कन बन्द कर दिया। पुजारी बाहर से भूतनाथ की चतुराई और निर्भयता देखकर दंग रह गया।

"भूतनाथ! यह सब कहां सीखा? कमाल है! तुलसीदास ने सच कहा है, "राम ते अधिक राम कर नामा। नाम मे बडी शक्ति है। एक बार भी तुम्हारा हाथ नही कापा, माथे पर पसीना नही आया। यह जान पड़ा कि तुम सर्प नहीं, कोई रस्सी हाथ मे लिए हो, तुम सचमुच भूतनाथ तो नही हो?"

भूतनाथ धीरे से हसा। पूरन भगत का डर था। फिर उसने पुजारी को बुलाकर किवाड बन्द कर दिए। उसने पुजारी से कहा कि यह नाग बहुत बूढा हो गया है। नया होता तो इतनी सरलता से वश मे नही आता पर यह बहुत जहरीला है। इसके विषदन्त तोडने होगे जो दिन मे ही सम्भव है। इस नाग को विषहीन कर आप निकुटी के महादेव बाबा की मूर्ति के आस-पास लपेट कर भक्तों की संख्या बढ़ा सकते हैं। संभव है, रात-रानी, चमेली-गुलाब के फूलो की गन्ध से यह स्वयं ही शिवलिंग के चक्कर काटने लगे और फण खडा कर दर्शनार्थियो को डराये। मजा आ जाएगा, पुजारी जी। पर यह वर्षों अंधेरे मे रहा है अतएव इसे प्रकाश मे क्रम-क्रम से लाना होगा। फिलहाल तो आप कोई मेढक ढूंढें, ताकि इसका डिनर हो जाए। बेचारा भूखा होगा।

"तुम्ही कोई मेढक पकडो। पोखर के पास बहुत हैं। मैं पूरन को सम्हाले रहूंगा। उसे सन्देह न हो, तब ठीक रहेगा।"

भूतनाथ पुनः इधर-उधर भटक कर एक मेंढक खोज लाया और उसे ढक्कन उठाकर नाग-कुम्भ मे सरका दिया। उसने शोर तो बहुत किया पर क्या कर सकता था। दोनो को आश्चर्य हुआ कि मेढक को कैसे ज्ञान हो गया कि वह साँप के चंगुल मे फंसने जा रहा है।

देर तक, भूतनाथ पुजारी से परामर्श करता रहा और कार्यक्रम तय होने के बाद उसने कावा काटकर इटावा शहर को जाने वाली सड़क को पकड़ लिया। रात का अन्त हो रहा था पर सवेरा होने मे अभी देर थी।

भूतनाथ के मन मे घटना की उत्तेजना गुजर जाने के बाद पुनः शिथिलता आ गई, थकावट ने भी घेरा। सरदी बढ गई थी। उसने अलवान को कसा और लड़खड़ाता चल दिया। उसे इस बात पर विस्मय हो रहा था कि इतनी रोमाचक घटना के बाद, तुरन्त मेरी चेतना दूसरे ध्रुव पर पहुच कर क्लान्त क्यों हो रही है? एक साथ मिला, एक नया और सुरक्षित अड्डा बन गया · जगन्नाथ ज्योतिषी का किस्सा उसने देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासो मे पढा था ··भूतनाथ मुस्कराने लगा। यह पुजारी किसी जमाने मे क्रान्तिकारियो का साथी था। फरार होकर पार्टी के बिखर जाने के बाद यहां पुजारी बनकर पडा रहा। बहुत गहरा निकला। भरोसे का आदमी है अन्यथा इसे विश्वास मे लेने का प्रश्न मेरे पास नही आता। इसका मतलब है कि इसका पुराना रिकार्ड उन्हे कही मिल गया होगा और इससे सम्पर्क किया होगा। मजा यह है कि न उसने अपना पूरा ब्यौरा बताया, न मैंने। यही ठीक है। कब कौन क्या करने लगे, क्या ठिकाना है। पूरा विवरण न रहने से बचाव तो हो सकता है। मैं तो अखबारो में रपट छपाते समय सिर्फ उस अखबार का ही पता देता हूं, निवास का नही। और निवास का क्या ठीक है? इस समय कहा जाऊ ··लेकिन मेरी डाक तो आई होगी अखबार के पते पर···उसे सुबह ले लेना है ··इस वक्त तो कहीं सोने को मिल जाए, यों स्वप्न मे नागराज अपना फण हिलाएगे पर वह तो अब शिव के कण्ठहार बन गए···नाग निश्चय ही पुराना है। उसके

माथे पर गोपद का चिह्न है···असली नाग है···काट लेता तो···भूतनाथ के शरीर में कम्पन की एक लहर दौड़ गई···।

···छिपैंटी ही सुरक्षित है। सारों की तरफ के मकानों में कौन आता है··· भूतनाथ अपने में खोया हुआ छिपैंटी मुहल्ले की गलियों में घुस गया। शैतान की आंत सी उन गलियों में घूमता हुआ वह खड्डों के पास वाली गली में गया। वहां दीपा और चिरंजीव के निवास के पास ही एक छोटा सा देवी का मन्दिर था और उसके पास कुछ छोटे-छोटे कमरे बने हुए थे।

भूतनाथ नीद और वदन की टूटन पर काबू पाता एक कमरे की ओर बढ़ा और उसने धीरे से किवाड़ थपथपाए। सांकल खुली। भूतनाथ को सामने पाकर उस मकान और मन्दिर का मालिक रामप्रसाद प्रसन्न हो गया—"आइए मालिक। बहुत समय बाद दर्शन दिए।"

"मालिक नही, मित्र कहो, मेरा नाम गदाधरसिंह है।"

"मित्तर नही, मेरे लिए तो आप भगवान हैं, मेरा जो कुछ है, सब आपकी दौलत। मैं तो जेल में होता या मारा जाता। आपने बचाया···पधारिए।"

"भाई, मैं सोऊंगा, तुम चौकसी रखना।"

"धन्यभाग, जरूर चौकसी करूंगा। आप आराम से सोइए।"

3

दीपा तीन तिलंगों की उस भेदभरी हुंकार को सुनकर जीवन में पहली बार दबी थी। उसका चहकना और शरारत करना बन्द था। वह चुपचाप काम कर रही थी। उसने कपड़े बदलकर बिना कुछ कहे चाय बनाई और भाई की टेबुल पर प्याला रख गई। माता-पिता दीपा को दविश में देखकर मौन थे। उन्हें आशा थी कि अभी जो होगा, जाहिर हो जाएगा क्योंकि ये दोनों भाई-बहिन चुप रहने वाले नही हैं लेकिन अनबोलापन जारी रहा। तब मां को यह अजीब लगा कि इनकी बोलती बन्द कैसे हो गई। उसने दीपा को पुकारा। पहले तो उसने पुकार की उपेक्षा की पर बाद मे वह आई और मा के पास खड़ी होकर धरती को अंगूठे से कुरेदने लगी। उसके मुख पर एक तमतमाहट थी जैसे उससे किसी ने कुछ कह दिया हो—"क्या बात है, बेबी?"

चौधराइन कभी-कभी बेबी कहकर आधुनिकता ले आती थी। 'बेबी' सम्बोधन से दीपा अधिक खुश रहा करती थी। उसे 'बिट्टो', 'बिटिया' से 'बेबी' अधिक नया लगता था।

"कुछ नही मम्मी, मैं···मैं सोचती हूं, प्राइवेट इम्तहान दे दूं। मैं कालेज नही जाना चाहती।"

"अरे, क्या हो गया, बेटी? हम यादव हैं। इटावा-जसवन्तनगर में किसकी मजाल है जो तेरी तरफ देखे, क्या हुआ?"

"हुआ तो कुछ नही है···कुछ भी नही। पर मैं कालेज जाना ही नही चाहती। पढाई तो कुछ होती नही वहां, जब देखो तब चुनाव, तनाव और लट्ठ-छुरावाजी। मैं··· कालेज में ही पढ़ना है तो मैं इटावा में नही, आगरा···आगरा नही, आगरा, कानपुर,

अच्छा तो इलाहाबाद रहेगा, इलाहाबाद में पढ़ूंगी।"

चौधराइन ने चौधरी की तरफ देखा। चौधरी दीपा में इस एकाएक तब्दीली पर हैरान थे। वह अपने मे गुम रहने के बाद बोले—"बेटी, हम इतने अमीर नही हैं जो एक और जगह, किसी बड़े शहर मे तुझे लेकर रहें···।"

"आप मुझे होस्टल मे भर्ती करा दें। मैं एम० ए० मे हूं। मैं कुछ अपने आप भी कर सकती हू, ट्यूशन कर सकती हू, किताब लिख सकती हूं, पार्ट-टाइम जाब कर सकती हू। लेकिन मैं यहा या तो प्राइवेट पढ़ूंगी या नही पढ़ूंगी।"

दीपा का गला भर आया। वह सिसकने लगी। भाई भी पास आ गया। वह भी हैरान था, "आखिर कुछ पता भी तो चले। तुझे कौन खाए जा रहा है ? बात तो बता," चिरंजीव ने कहा।

"बस कह दिया। हर बात क्या बताई जाती है ? एक वातावरण होता है, एक सभ्यता होती है, यहा तो बाहर निकलते वक्त डर लगता है ··कि···कोई···यह पुरानी तीर्थनगरी, इच्छा पूरी करने वाली इष्टिकापुरी नहीं है, अनिष्टकापुरी है।"

चिरंजीव समझ गया कि दीपा पर उस 'हुम्' का असर है जो मिथ्या भी नही है पर पहली बार मे ही इतना डर जाना किसी यादव को कैसे गंवारा हो सकता था। तन कर बोला,"दीपा, तू चिन्ता न कर, आज देख लेंगे। आज तैयारी के साथ चलेंगे।"

"मैं तमाशा नही बनना चाहती। मैं कोई छीन-झपट की वस्तु नही हूं। मैं इस इटावा को नगर मानती ही नही ··यह तो 'इटावा मार दे धावा' है।"

"सो तो ठीक है पर नगर छोटे से बडा बनता है। बिगडाव से बनाव भी आता है। इतना गया-बीता भी नही है, इतना छोटा भी नही है इटावा। फिर यही सोच लें तो सब एक ही शहर मे एकत्रित हो जाएंगे···और हमारी हालत भी तो ऐसी नहीं है कि हममें से एक कलकत्ता पढे, एक बम्बई। इटावा में रहकर बहुत से खर्चों से बचा जा सकता है। गाव से गल्ला, घी लकडी, दूध सभी कुछ आ जाता है। कम किराए का मकान है, बिजली-पानी है और···फिर···।"

दीपा रूठकर वहा से चली गई और अपने कमरे को भडाम से बन्द कर लिया। तीनों एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। चौधरी को चिरंजीव ने दिन की उस घटना का कुछ विवरण दिया। चौधराइन बहुत चिंतित हुई—"बेटी की चिंता गलत नही है। यहा कुछ भी हो सकता है। हाय, अब क्या किया जाए ? क्या साधो-माधो को गांव से बुला लें ? पर वहा खेती और जानवरो को कौन देखेगा ? हाय राम, यह तो कभी सोचा ही नहीं था कि यह भी हो सकता है। अखबारो में रोज ऐसी खबरें छपती है, लेकिन हम समझते थे कि कही होता होगा · यह तो हमारे सिर पर ही तलवार लटक गई।"

तीनों एक भंवर मे घूमते रहे परन्तु कोई उपाय न सूझा। अन्त मे तै हुआ कि एक-दो बार सामना करके देखा जाए। बाद मे जरूरी हुआ तो बेबी को या तो आगरा भेज देंगे या इलाहाबाद या फिर गांव रवाना कर देंगे। विवाह की भी जल्दी करनी चाहिए। उनके मन घिरे हुए चूहों की तरह चक्कर काट रहे थे पर कोई रास्ता नही मिलता था।

बहुत समझाने के बाद दीपा ने खाना खाया और बिना किसी छेडछाड या लाड-प्यार दिखाए वह अपने कमरे मे चली गई। उसका ध्यान तो कहीं और था पर निगाह गली किनाव पर जमी हुई थी। उसने किवाड़ बन्द कर लिए थे पर खिडकी खोल रखी थी।

नियत समय पर, लगभग नौ बजे रात खारों में, उसी दिशा से बांसुरी बज उठी। दीपा वेणु-वादन में मग्न हो गई। भय और माधुरी के दो सिरों की मिलावट से कभी तो उसे व्याकुलता होती, कभी वह भय को निराधार मानकर पुलक महसूसती। वह देर तक तरंगों में तैरती रही। अन्ततः उसके हृदय में ऐसा गुबार-सा उठा कि वह रोने लगी।

रोने से कुछ शांति मिली। तब जिज्ञासा हुई कि यह कौन है जो इस तरह बेचैन होकर वेणु बजाता है? मैं क्यों इतनी अधीर हो जाती हूं? उसने कृष्ण की बांसुरी पर गोपों की किशोरियों के उन्माद के बखान सुने थे। उसके मन मे विचार उठा, 'कही यह मेरा···नही नहीं·· मैं भी क्या सोच जाती हूं। उन तिलंगों की हुंकार रोम-रोम में न छाई होती तो मैं आज इस बांसुरी के बजैया को जरूर देखती···कौन होगा यह व्यक्ति? ···भाई को लेकर जाऊं क्या और वहीं कहीं वे तिलंगे मिल गए तो···रहा भी नहीं जाता, क्या करूं?

चिरजीव की भी नींद गायब थी। पढ़ाई भी नहीं हो रही थी। उसने सरक कर दीपा के कमरे के किवाड़ों के छेद में से देखा वह रो रही है। घबरा कर उसने किवाड़ खटखटाए। दीपा चुप रह गई पर उसने किवाड़ नहीं खोले।

"दीपा, जरा किवाड़ खोल।"

"नही खोलूंगी, सो जाइए आप।"

"अरे, बड़े आदर से बोल रही है आज। खोल दे, मैं कुछ कहूंगा नहीं।"

"कह दिया न, नहीं खोलूंगी।"

हताश चिरजीव अपनी जगह लौट आया और चिढ़कर अपना मन किताब से कुछ उतारने में लगाने लगा। बांसुरी बज रही थी।

जब दीपा से किसी तरह नहीं रहा गया तो वह उठकर कपड़े पहनने लगी और एक शाल से अपने को ढंककर, किवाड़ खोलकर, भाई के पास आकर खड़ी हो गई— "भाई, प्लीज मेरे साथ चलो। मैं पागल हो जाऊंगी इस तरह।"

"कहां? इतनी रात गए? तू तो पागल हो ही गई है, आगे क्या होगी?"

पर दीपा के चेहरे की दीनता और गिड़गिड़ाहट भाप कर चिरजीव उठ बैठा। उसने जल्दी-जल्दी पतलून मे पैर डाले और उसमे चाकू दबाकर तथा हाथ मे एक वधी लाठी लेकर वह उसके साथ हो गया। उसने सोचा, जरा टहल लेगी तो इसका माथा ठीक हो जाएगा। बेचारी आशंकाओं से त्रस्त है। चिरजीव इस पर चकित था कि कहा तो यह तीन अजनबियों की हुंकार पर इतनी डरी हुई थी और कहा इस समय बाहर जाने का आग्रह कर रही है।

बिना आहट किए और जली हुई बिजली छोड़कर, सोए हुए माता-पिता को बिना जगाए, बाहर के किवाड़ बन्द कर दोनों भाई-बहिन गली मे आ गए। बाहर आते ही काली रात मे एक कंपकपी छूटी पर शीतल हवा के झकोरे ने रक्त मे घुमड़ती भय-जनित लहरों को भगा दिया।

"किधर चलें? चल, देवी के मन्दिर के चबूतरे पर खड़े हो लेते है।"

"नहीं, यह बांसुरी जहां बज रही है, वहां चलो।"

चिरंजीव खीझ उठा। यह क्या बिल्कुल पागल हो गई है? क्या यह सम्मोहित है? चिरंजीव ने दीपा का हाथ पकड़ा तो उसने झटक दिया और बिना उसकी परवाह किए वह बांसुरी के स्वर के स्रोत की ओर इस तरह बढ़ी जैसे कोई खींच रहा हो। लाचार

होकर हल्ला मचाने से पता नही दीपा पर क्या बीते, यह सोचकर चिरंजीव भपट कर दीपा के साथ हो गया। पर दीपा को जैसे तन-बदन का होश ही नही था। वह तेजी के साथ, जैसे बहुत हडबडी मे हो, भागी जा रही थी

छिपेंटी की खड्डों से लगी गली पार कर जब दोनों बाहर आए तो लगा कि बासुरी पास नही, कहीं दूर बज रही है और वहां इतनी रात गए जाना खतरनाक होगा लेकिन दीपा तो जैसे इस सब हिसाब से परे पहुंच गई थी। चिरंजीव ने अब हस्तक्षेप उचित समझा और दीपा को पकड़कर डांटा—"यह बांसुरी यहां पास नही है पगली, बहुत दूर है। रात मे स्वर बहुत लम्बा जाता है। चलो, बहुत हुआ। अब लौट चलो। कही ये तीन तिलगे मिल गए तो गजब हो जाएगा।"

दीपा निरुपाय हो गई। दबा हुआ भय पुनः लौट आया और वह वही जम गई। भाई ने समझाया कि अगर बासुरी सुननी ही है तो दूर से सुननी चाहिए। दूर से ही वह अधिक मधुर लगती है। उस देवी के मन्दिर के ऊंचे चबूतरे पर चलकर बैठेंगे। घर सामने रहेगा। चिंता नही रहेगी और शौक भी पूरा हो जाएगा।

दीपा ने एक विवश दृष्टि भाई पर डाली। भाई उससे बिंध गया। उसके यादव-रक्त ने बल खाया। क्या वह अपनी बहिन की सरल इच्छा का पालन नही कर सकता? तो भी उसने साहस से समझ को तरजीह दी और वह दीपा को लगभग खीचते हुए लौटा लाया और घर के पास के देवी के चबूतरे पर दीपा को बिठाकर, इधर-उधर देखता हुआ, अपनी सास पर काबू पाने लगा।

देर तक वेणु-वादन सुनती हुई दीपा अन्त मे रोने लगी और भाई के समझाने पर भटके मे उठकर घर की तरफ भागी। भाई भी उठा और दोनो किवाड खोल-बन्द कर, अपनी-अपनी जगह सोने का उपक्रम करने लगे।

दूसरे दिन कोई घटना नही घटी। दोनों कालेज गए और मुख्य सड़क से ही लौटे। तीसरे-चौथे दिन भी यही रहा। बात आई गई हो गई।

रविवार को लगभग चार बजे दिन में अचानक बासुरी फिर बज उठी। चिरजीव ने दीपा को छेड़ा—"लो दीपा। तुम फैन हो न बांसुरी की? वह हरिप्रसाद चौरसिया आज दिन मे ही बजा रहा है, सुनो।"

बासुरी पर शाम का राग इतने मुग्धकारी भाव से बज रहा था कि चिरजीव के मन मे भी लोभ जगा कि दीपा की आसक्ति गलत नही है। उसका मन भी खिंच रहा है। दीपा ने अर्थभरी दृष्टि से भाई की तरफ देखा तो भाई बोला, "चलोगी?"

दीपा ने प्रसन्नता में आखें झपका दी।

चिरजीव और दीपा इतनी तेजी से चले कि उन्होंने यह नही देखा कि उनके पीछे, काफी दूरी रखते हुए दो व्यक्ति चल रहे है। रात तो थी नही जो डर होता, अतः दोनों भाई-बहिन उल्लास में उडते जा रहे थे।

मुख्य सडक पर चलते रहने के बाद, संगीत के स्वर की ओर बढने के लिए दोनो ने खारी की ओर रुख किया। सडक पीछे छूट गई। दोनों ने देखा कि त्रिकुटी महादेव और छिपेंटी के मध्य, दाईं तरफ के टीलो में से एक पर एक व्यक्ति बैठा है, जिसके आगे गहरा गड्ढा है और उस तक पहुंचने के लिए पीछे की तरफ से जाना होगा।

दोनो स्वर के जादू से बधे, मोहित हिरन-हिरनी से कब लम्बा चक्कर लेकर, झाड-भंगाड़, काटे और कंकड से घायल वहां पहुंच गए, यह तब ज्ञात हुआ जब वे वादक के पीछे जा पहुचे। उन्हें वादक ने भी आते देखा था। पास पहुचने पर भी उसने बजाना

बन्द नहीं किया, न उसके ध्यान में अवरोध आया। दोनों पीछे ही एक पत्थर पर बैठ गए। यों ये खार पथरीले नहीं हैं, मिट्टी के हैं जो बहुत मजबूत भी नहीं है।

बांसुरी बज रही थी और आसपास, ऊंट से उठे खारों के नोकदार शिखर जैसे संगीत में बेसुध और अचल हो गए थे। हवा स्वरों के आरोह-अवरोह को आंचल में बांध-बांधकर जाती और चारों तरफ बांट आती और लौटकर कतारों में आती और फिर स्वर-विस्तारण करके धन्य हो उठती। स्वच्छ शरदकालीन आकाश निर्निमेष इस दृश्य को पी रहा था। सूरज, जैसे स्वर की शीतलता से तेज खोता जा रहा था।

सूर्यास्त के पूर्व जब गोधूलि के रंग आकाश पर रंगोली करने लगे तब दीपा की बांह पर भाई ने हाथ रखा पर दीपा ने उसका हाथ हटा दिया। वह किसी भी कीमत पर इस राग के बीच उठकर जाने को तैयार नहीं थी।

सूर्यास्त हो जाने और धुंधलका फैलते देखकर अधीर चिरंजीव ने दीपा की बांह पकड़ी और उठकर खड़ा हो गया। अब दीपा लाचार थी। यह भी उठ बैठी पर वादक की ओर देख रही थी कि यह कैसा व्यक्ति है जो अभ्यागतों की उपस्थिति की भी परवाह नहीं करता। दीपा की भावना समझकर चिरंजीव ने वादक को आवाज दी—"क्षमा कीजिएगा "क्या आप एक क्षण के लिए बजाना बन्द करेंगे ?"

राग थम गया। वास्तविकता जो स्थगित थी, वापस आ गई। वादक भी खड़ा हो गया और पास आकर दोनों को इस तरह देखने लगा जैसे वे किसी अन्य लोक के जीव हों और बिना बात उसकी साधना में बाधा डालने आ गए हों। वह अभी भी राग और भाव की गिरफ्त से बाहर नहीं आ पाया था और उसके मुख पर एक अलौकिक छवि छाई हुई थी।

"आ···आ···प ?"

"जी, हम, आपके वादन पर मुग्ध होकर अनाहूत यहां तक चले आए। क्षमा करें। आपकी तन्मयता टूट गई पर अब विलम्ब हो रहा है···सच तो यह है कि हम दो-तीन दिन पूर्व जब आप रात में बजा रहे थे, तब, रात में ही आ रहे थे पर यह स्थान निरापद नहीं है, इससे लौट गए। आज दिन में बांसुरी बजी और हम आ गए। मुझसे अधिक मेरी यह बहिन दीपा आपकी फैन है।"

"दीप्तिमयी या दीपावली ?"

यह कहकर वादक इतनी आत्मीय हंसी हंसा कि दीपा के कण-कण में ज्योति-सी जग गई। वह अवाक् थी और बड़ी-बड़ी पलकें उठाए वादक के मनोहर व्यक्तित्व को मन में उतार रही थी। उसे चुप देखकर भाई ने हंसकर कहा—"दीपाली, दीपावली भी कह सकते हैं।"

"दीपाली ! दीप की बहिन, दीप-माता, दीपों की अवली, अनन्त दीपावली !"

वादक अपनी बात पर जी खोल कर हंसा। उसकी हंसी में रात की लय थी, जैसे हंसी में भी वह अलाप ले रहा हो। दीपा ने इस विशेषता को पहचाना और उसने पहली बार कलाकार को देखा। बाल घुंघराले, गौर वर्ण, मस्तक भव्य और अधरों का सुघड़ कटाव। आंखें ऐसी जैसे वे कहीं और की खोज-खबर में हों, भाव की एक-एक हलचल को बतलाता-बोलता मुखड़ा।

"आपका परिचय ?"

"परिचय और मेरा ?"

कलाकार फिर वही संगीतात्मक हंसी हंसा।

"मैं एक कलाकार हूं, बस !"

"यह तो ठीक है पर यहां इस शहर में ऐसे कलाकार कभी दिखे नहीं।···अच्छा, आपको आपत्ति न हो तो आप हमारे निवास पर पधारें। हम दोनों तो आपकी कला के दीवाने हो गए हैं।"

"निवास ? आप कहां रहते हैं ?"

"अधिक दूर नहीं, इसी छिपैंटी मुहल्ले में। आपको सार प्रिय है न, हमारा घर सारों के पास ही है, सटा हुआ, सच, आप हमें अपने प्रशंसकों को अनुगृहीत कीजिए।"

"आज का अभ्यास तो हो गया। कोई हानि नहीं। देखता हूं, आप सचमुच कला-प्रेमी है पर आपको कष्ट होगा।"

"कष्ट ? हम तो इसे सूखे-ऊबे जीवन में अमृत-वर्षा समझेंगे। आप तो बोलते भी इस तरह हैं जैसे गा रहे हो।"—चिरजीव ने कहा।

तीनों ने ठहाका लगाया। कलाकार प्रसन्न था पर संकोच नहीं छोड़ पा रहा था।

"किन्तु दीपाली जी, आप तो कुछ नहीं कह रही हैं। आपके भाई बड़े अच्छे वक्ता हैं।"

दीपा फिर भी नहीं बोली। वह सिर्फ अपलक कलाकार को मन में सहेज रही थी। उसकी आसक्त दृष्टि से कलाकार को रोमांच हो रहा था। अंततः वह तैयार हो गया। दीपा के नेत्रों की कशिश की उपेक्षा असम्भव थी।

तीनों एक साथ टीले से उतरने लगे। अब तक पूरी तरह अंधेरा हो गया था और कुछ तारे कौतुकी बच्चों से घूरने लगे थे।

कलाकार ने बताया कि वह मूलतः तो इसी प्रान्त का है, लखनऊ का, पर अब तो बड़ौदा में रहता है और एक बड़ी कम्पनी में अच्छे वेतन पर काम करता है। कम्पनी को उसकी वादनकला से यश मिला है, इसलिए उसे प्रतियोगिताओं और संगीत सभाओं में जाने की सुविधा दी गई है यों वह खिलाड़ी भी है पर वादनकला में मन अधिक लगता है। यहां इटावा में एक सम्बन्धी है, मां की तरफ के। उन्होंने, मामा ने, मुझे बचपन में बड़ा स्नेह दिया है। वह यहां अपना रोजगार करते हैं, साधारण ही है, पर काम चल जाता है। उनके आग्रह पर आया हूं और ग्वालियर में होने वाली संगीत सभा में प्रदर्शन करना चाहता हूं।"

"तानसेन की समाधि पर ?"

"हां, वही। उसी के लिए अभ्यास करता रहता हूं।"

"किन्तु आपके वादन में इतनी वेदना क्यों है ? गाते-बजाते तो और भी हैं। वे शास्त्रीय शुद्धता में बेजोड़ भी होते हैं पर उनकी कला में प्राण नहीं होते।"

"मैं लगभग अनाथ था बचपन में। नाना-मामा ने पाला। मैंने दुःख देखा है, वह मुझमें जज्ब होता रहा है; अब वह नहीं है, तब भी वही है। सुख तो अतिथि होता है, दुःख अभिन्न हृदय होता है। जब अपना दुःख नहीं रहता, तब दूसरों का दुःख अपना हो जाता है। वह गायन-वादन में भी अपनी हाजिरी भरता है।"

दीपा का हृदय भर आया और उसने छलकते आंसू पोंछे। कलाकार ने देख लिया। वह कट कर रह गया।

"मैंने आपको दुःख पहुचाया दीपाली देवी, आपका हृदय तो कुसुमादपि कोमल है।"

कलाकार ने दोनों कान पकड़े। दीपा हंसने लगी पर आंसू उमड़ते रहे। वह प्रथम बार बोली—"श्रीमन्, आपका शुभ नाम क्या है?"

"वेणीमाधव, पर इस वेणु के कारण लोग वेणु माधव कहने लगे।"

"मुझे तो आपका मूल नाम ही प्रिय लगा।"

कलाकार इस उक्ति का मर्म खोजता रहा। अचानक वेणी और वेणु के भेद पर उसका ध्यान गया। वह प्रीति से हंसा—

"देवी की सूक्ष्मता का कायल हो गया। लालित्य की रक्षा तो आप ही कर सकती हैं न। क्या बारीकी है। और फिर वेणी मे वेणु की ध्वनि आधी से अधिक आ जाती है।"

कलाकार फिर हंसा और दीपा की प्रशंसा करने लगा।

'आप कवि भी हैं न?"

"नही, एकदम नही। मेरी कला में मौन रहना पड़ता है।"

"नही, आप वाणी माधव भी हैं अन्यथा जरा-सी बात की चतुराई पर इतनी प्रशंसा।"

"वाह, क्या बात कही है। मैं तो मूर्ख बन गया आपके भोले से लगने वाले प्रश्न पर'''वाह! दीपाली जी, कवि मैं नहीं आप हैं। आपको कवि हृदय मिला है, अवश्य मिला है, कहिए लिखती है न?"

"अजी, यह तो राजनीति शास्त्र पढ़ती है। यह कविता क्या जाने, पर इसका स्वभाव ज़रूर कवि का है, बहुत मूडी है, मन की करती है। यही तो उस आधी रात को मुझे खींचे ला रही थी जब आप यहां बजा रहे थे। इसकी हालत देखते आप, यह आपकी बांसुरी पर नागिन की तरह झूम रही थी, पगली।"

दीपा ने भाई को मुंह चिढ़ाया। तीनों हंसने लगे। कलाकार सचमुच प्रमुदित था। उसके अन्तःकरण में दीपा की मुग्ध आंखें चिपक गई थीं।

तीनों बेखबर, भाव में बहते हुए आ रहे थे। वे अभी मुख्य सड़क से कुछ दूर थे। तभी एक कंकड़ तेजी से आता हुआ उनके पास गिरा। तीनों चौंक कर इधर-उधर देखने लगे पर कुछ दिखाई न पड़ा। फिर एक कंकड़ पास आया। उसके बाद एक और। अब यह स्पष्ट था कि कोई शरारत कर रहा है या उसके इरादे खतरनाक हैं।

चिरजीव चिल्लाया, "कौन है, कंकड़ कौन फेंक रहा है?"

"हुम्!"

"हुम्!"

दीपा को अपना दिल बैठता-सा लगा। उसने घबराकर कलाकार से कहा कि कुछ अपराधी उसके पीछे पड़े है। हमें भाग कर सामने की सड़क पर पहुंच जाना चाहिए। वहा कोई आने जाने वाले तो मिलेंगे।

तीनों ने दौड़ लगाई मगर इधर-उधर से उछल कर दो तिलंगो ने चाकू निकाल कर उन्हें घेर लिया। दीपा इतनी जोर से 'बचाओ', 'बचाओ' कहकर चीखी और उस चीख मे ऐसी विवशता और वेदना थी कि कोई सहृदय होता तो उसका हृदय फट जाता परन्तु वे तो संवेदना से परे थे।

दोनों तरफ रामपुरिया चाकू तने थे और दीपा, कलाकार और चिरंजीव के बीच

आकर भिंच गई थी। वह दोनों को जकड़े हुए थी। एक क्षण की स्तब्धता के बाद चिरंजीव ने साहस कर पूछा—"क्या चाहते हो ?"

"इस कलोर बछेड़ी को।"

भाई ने तुरन्त अपना चाकू खींचा और वह कहने वाले पर टूट पड़ा। उसने एक भारी गाली दी और चिल्लाया—"नीच ! यह चौधरी बलीराम की पुत्री है। मैं तुझे कलोर दिलाता हूं।"

कलाकार को न जाने क्या हुआ, उसने ताक कर बांसुरी दूसरे बदमाश के हाथ में मारी। उसका चाकू उस अप्रत्याशित चोट में गिर गया। कलाकार क्षणांश में उससे भिड़ गया। क्योंकि दोनों तिलंगे नीचे से आए थे अतः चिरंजीव और कलाकार को ऊंचे पर होने का लाभ मिला। चिरंजीव के चाकू को बदमाश ने अपने चाकू पर लेना चाहा किन्तु बचाते-बचाते भी वह चोट खा गया। उधर कलाकार ने दूसरे दुष्ट को दोहत्थी से मारना शुरू कर दिया था। जो हाथ बांसुरी बजाते थे वे मुक्केबाजी में भी निपुण होंगे, यह सचमुच हैरत की बात थी।

दीपा की वातावरण को चीखने वाली चीख बार-बार निकल रही थी। वह जानती थी कि बदमाशों को प्रतिहार की आशंका नहीं थी पर वे किसी भी क्षण सम्हल कर भाई और कलाकार पर हावी हो सकते थे।

गदाधरसिंह समय मिलते ही पुजारी जी से मिलने जाया करता था। आज कई दिनों बाद वह आ पाया था और स्वभाववश, किसी आंतरिक गांठ को सुलझाता जा रहा था। दीपा की पहली चीख तो वह आत्म-विस्मृति में सुन नहीं पाया, यों उसे किसी का 'बचाओ' शब्द सुनाई अवश्य पड़ा था। वह समझा, कोई खेल होगा। शाम की शुरुआत में राहजनी कौन मूर्ख करेगा ?

दूसरी बार के आर्तनाद पर उसका शरीर यों उछला कि वह कब वहां पहुंचा, कब उसने अपना दुशाला फेंका और कब उसने चाकुओं पर कब्जा करने के बाद घूंसे चलाए, इतने कि वे दोनों स्वयं, 'बचाओ', 'बचाओ', चिल्लाने लगे।

तभी तीसरा हुंकारी हाथ में रिवाल्वर लिए उदित हुआ। उसने लोहे जैसी भारी आवाज में कहा, "आप लोग हमारे आदमियों को छोड़ हाथ उठा लीजिए, नहीं तो···नहीं तो आपके बाजे बज जाएंगे।"

गदाधर ने हाथ उठा दिए और उन तीनों को भी ऐसा ही करने का संकेत किया। दोनों पिटे हुए बदमाश, गालियां बकते हुए चिरंजीव और कलाकार पर पिल पड़े। तीसरा उन्हें गन से कवर किए हुए था। भूतनाथ ने कहा—"भाई, इन्हें मारते क्यों हो ? ये सभ्य और भले इंसान हैं। आप चाहते क्या हैं ?"

"हम इस कलोर बछेड़ी को चाहते हैं, यह हमारे सरदार की सवारी है। इस पर बहुत समय से नजर थी, आज कब्जे में आई है।"

"जरूर-जरूर, ले जाइए पर उन्हें तो छोड़िए या उन्हें भी ले जाना चाहते हैं ?"

"नहीं, हम इस ईन्धन का क्या करेंगे ? चलो जी, पकड़ो कबूतरी को।"

भूतनाथ की शीतलता पर कलाकार, दीपा और चिरंजीव को आश्चर्य था पर किसी अज्ञात प्रेरणा से तीनों ने उसका नेतृत्व स्वीकार कर लिया था क्योंकि वह उपकारी था और उसके हाथ वे देख चुके थे। वह कोई देवदूत-सा जान पड़ा था। तीनों देख रहे थे कि उपकारी आगन्तुक की निगाह गन पर जमी हुई थी। वे समझ रहे थे कि वह

गन को रास्ते से हटाना चाहता है अतः जब दोनों बदमाश मारपीट छोड़कर दीपा की ओर बढ़े तो किसी ने रोका नहीं, सब चित्रवत् खड़े रहे।

तीसरे ने गन का रुख नीचे किया ही था कि चीते की तरह उछल कर भूतनाथ ने गन वाले हाथ पर प्रहार किया। गन सनसनाती हुई नीचे खड्ड में चली गई। अब सब सरल था।

भूतनाथ के हाथ ही नहीं, पैर भी चलते थे। कलाकार और भाई-बहिन विस्मित थे कि एक व्यक्ति एक साथ तीन-तीन को किस तरह मार सकता है। उसकी चोट सर्वदा मर्मांग पर पड़ती थी और एक भी प्रहार व्यर्थ नहीं जा रहा था।

भूतनाथ ने हांफते-गिड़गिड़ाते बदमाशों को कमर से रस्सी निकाल कर बांध दिया और चाकू लेकर बोला—"अब बको, तुम्हारे सरदार का नाम क्या है?"

"वह हमें मार डालेगा, हम नाम नहीं बता सकते।"

"तुम्हें मरना तो यहां भी है, वहां भी। तब कुछ अच्छा काम करके मरो।"

"आप हमें छोड़ दें, हम कभी इस लड़की पर हमला नहीं करेंगे, तो हम नाम बता सकते हैं।"

"तुम्हें वह मार डालेगा।"

"हमारी जान बचे तो हम पुलिस के गवाह बनने को तैयार हैं।"

"तो बोलो।"

"उसका नाम करनसिंह गूजर है, करना गूजर कहलाता है। वह करौली की तरफ का बागी है।"

"ठीक है, मैं जानता हूं। आप एक-एक को पकड़ लें"—भूतनाथ ने कलाकार और चिरंजीव से कहा। तीनों को बांधकर भूतनाथ सड़क पर बिना लाए, कावा काट कर टिकिसी के महादेव के मन्दिर की ओर ले गया। वह दीपा को ढांढ़स बंधाता रहा कि वह अब कतई न डरे।

चक्कर खाकर मन्दिर तक लाने में काफी देर लग गई थी। भूतनाथ ने दीपा को तो शिवदर्शन के लिए भेज दिया और कलाकार तथा चिरंजीव के साथ वह उन तीनों डाकुओं को पुजारी जी के कमरे पर ले गया। उन्हें पास के उस कमरे में बन्द किया गया, जिसमें नागराज घड़े में विश्राम कर रहे थे पर पैरों की हलचल पाकर जब वह फुफकराए तो तीनों अपराधियों को लगा, अब मृत्यु निश्चित है। वे कांप रहे थे।

उन्हें बन्द कर भूतनाथ, कलाकार और चिरंजीव को पुजारी के कमरे में ले गया और किसी को भेजकर पुजारी को बुलाया गया। दीपा भी आ गई। सबका परिचय हुआ पर भूतनाथ ने अपना परिचय नहीं दिया, न किसी का उससे कुछ पूछने का साहस हुआ।

दीपा, कलाकार और चिरंजीव स्तब्ध थे। उन्हें भूतनाथ कोई रुद्रलोक का गण जान पड़ रहा था, वीरभद्र-सा बली और चतुर।

पुजारी ने भी उसके विषय में कुछ नहीं बताया, सिर्फ यह कहा कि अब तो आप लोग खारों को संगीत नहीं सुनाया करेंगे? इस पर हंसी हुई। तीनों को कहा गया, जो हुआ है, उसे वे भूल जाएं। अब वे पूर्णतया सुरक्षित हैं पर किसी को इस घटना के विषय में कुछ न कहें। यदि इनसे (भूतनाथ) कुछ काम हो, कोई संकट आ जाए तो यहीं आकर सूचना और पता छोड़ जाएं।

तीनों को चायपान करा के सस्नेह विदा कर दिया गया। जिज्ञासा शांत न होने

से वे एक अजीब अपूर्ण भावना से लबालब थे। अंततः धन्यवाद किसे दें ? उपकारी तो नाम भी नही बताता। खैर, इसमें भी कुछ रहस्य होगा, यह जानकर तीनों चुपचाप महादेव के दर्शन कर वापस हो गए। रास्ते भर कोई किसी से नही बोला।

अपने तीन तिलगों को ढूढ़ते, रात में कुछ डकैत और आए। भूतनाथ ने उनको कहा कि उन्हे छोड़ा जा सकता है बशर्ते कि वे कभी किसी नारी पर कुदृष्टि न डालें और यह कि वे अपने सरदार करना गूजर से उसे मिलवा दें। गंगाजली उठाकर सबने शपथ ली और दूसरी-तीसरी रात को करना गूजर, पुलिस की वर्दी में मगर नि.शस्त्र पुजारी जी की बैठक में आया। भूतनाथ भडका—"तुम गूजर होकर नू क्यों खाते हो ?"

"भूल हो गई मेरे आदमियो से, ठाकुर ! आप पुराने खानदानी ठाकुर ही होगे वर्ना ऐसी सतजुगी बातें अब कौन करता है ? बताइए, मैं क्या सेवा करूं ? आपने मेरे लोगो को पुलिस से बचाया और उन्हे सबक सिखाया···और अभी तो उन दईमारो को मैं मारूगा ··आप हुकुम करे ठाकुर।"

"मैं ठाकुर-वाकुर नही, मैं एक पत्रकार हूं। मै चाहता हूं, मैं तुम्हारे साथ रहू, तुम्हारे काम करने का तरीका देखू और बिना तुम्हारी खोज बताए पत्रों में लिखू, तुम्हारी अच्छी बातो की तारीफ करूं।"

गूजर अधिक पढ़ा-लिखा नही था पर साहसी था। वह चकित था, ऐसा भी कोई आदमी हो सकता है ?

"पर, आपको हमारे साथ बहुत तकलीफ होगी साहिब। हम लोग जंगली जानवरो की जिनगी जीते है। आप वैसे ही हमारा किस्सा सुन लें और लिख दें। जंगलो मे भटक कर क्या करेंगे ? हर वखत पुलिस की दपेट रहती है, आप मारे भी जा सकते हैं, आ···प···।"

"उसकी परवाह न करे। आप अपना काम करें, मुझे शुभचिंतक समझे। पुलिस मेरे पीछे भी पडी रहती है।"

"क्या ? आपने क्या किया है ?"

"इसे छोडो चौधरी ··तो बात पक्की रही···मैं जब चाहूंगा चल दूंगा तुम्हारे गिरोह से···ठीक है ?"

"बिलकुल ठीक। कौल पक्का। मुझमे गूजर का बीज है, फरक नही आ सकता। ···जय दुर्गे की, जय माता की।"

"जय माता की, जय जय···तो चौधरी चलो, अपने आदमी सम्हाल लो।"

करना गूजर को नागदेव के कक्ष की ओर ले जाया गया। पुजारी और भूतनाथ ने बन्दियो के बंधन खोल दिए। वे तीनो सरदार के पैरों पर गिर पड़े। गूजर ने उन्हे अभय कहा मगर साथ ही दो-दो हाथ भी रसीद कर दिए—"तुम उस कन्या को खराब करना चाहते थे न ?"

"सरदार, खता माफ हो। हमने जो कुछ किया, आपके लिए किया। पांसे उलटे पड़ गए। अब कान पकड़ते है, ऐसा नही करेंगे, सौगन्ध देवी की।"

अचानक करना का ध्यान सर्प की फुस्कार की ओर गया। घबरा कर बोला, "साहिब, यह क्या है ?"

"साक्षात् महादेव का गण"—पुजारी जी ने हसते हुए कहा—"यह नागराज, शिवभक्त है ! शिव की पिंडी से लिपटा रहता है। देखना चाहते हो ?"

सरदार हाथ जोड़ने लगा। भूतनाथ ने ढक्कन उठाया। नागराज फनफना कर

उठे और फण निकालकर खड़े हो गए। सरदार और डाकू पीछे खिसके—"यह तो भयानक नाग है, साहिब," सरदार डर गया, "मैंने तो बहुत देखे हैं पर ऐसा कभी नहीं देखा।"

सरदार ने नाग को प्रणाम किया और एक सौ एक रुपए निकाल कर नीचे रख दिए। "नाग देवता, हमारी रक्षा करना। हम पापी हैं पर पापियों ने हमें पापी बनाया है। हम मन के बुरे नहीं हैं पर हमारे लिए कोई रास्ता छोड़ा ही नहीं गया। छमा परभू। छमा।"

सरदार अपने आदमियों को लेकर चलने को हुआ। उसने भूतनाथ की ओर आतंकित दृष्टि से देखा और नीची निगाह कर बोला—"हमारा गिरोह इस समय धौलपुर के खारों की तरफ है, साहिब। यू० पी० पुलिस की दाब है। आप धौलपुर आ जाएं तो हम बुला लेंगे'''साहिब बुरा न मानें तो हम आपका नाम जानना चाहते हैं।"

"भूतनाथ।"

गूजर विस्मय से जड़ीभूत हाथ जोड़ता चला गया।

4

भूतनाथ जब कुछ दिनों बाद 'जनधर्म' दैनिक के कार्यालय पहुंचा तो उसके मालिक के साहबजादे किसी रिक्शेवाले को फटकार रहे थे कि वह बख्शीश क्यों नहीं ले रहा है? साहबजादे यों तो सम्पन्न बाप के बेटे और 'जनधर्म' दैनिक के संचालक थे मगर विचारों में सशस्त्र-क्रान्ति के उग्र समर्थक थे। नाम भी ज्वालामुख था जो उनके बेलगाम-तेजतर्रार वक्तव्यों को सुनकर जनता ने रख दिया था, यों उनका असली नाम प्रवीण पाण्डय था।

"जब मैं तुझे दस रुपए दे रहा हूं तो तू लेता क्यो नही? देश में जो रुपया है, उस पर सबका बराबर हक है।"

"सो तो ठीक है मालिक, पै हम तो गरीब रिक्शावाले है, मेहनत दो रुपए की भई, आप उस नवाबगंज चौराहे से तो आए है। दस रुपए किस बात के ले लें? साहिब, ऐसा पैसा हमें पचता नही है, हमारे भी बालबच्चे हैं।"

"अबे, तू बड़ी उल्टी खोपड़ी का आदमी है। जब मैं दस रुपये दे रहा हूं तो तू मना क्यों करता है?"

"साब, आदत बिगड़ जैहै, औरू का। बड़े आदमिन को का भरोसो? आज दस रुपए दे दें, कल मुफ्त में रिक्शा ले जाएं, मांगो तो मारें।"

भूतनाथ ठठाकर हंसा और उसने ज्वालामुख को चिढाया—"लीजिए क्रान्तिकारी जी, अब आम-आदमी से पाला पड़ा है। कितना ईमानदार है।"

"पाजी है, कुछ समझता ही नहीं है। अबे लेता है रुपये या तुझे दो हाथ लगाऊं?" ज्वालामुख ऊपरी क्रोध दिखाने लगा। वह भीड को प्रभावित करने के लिए सदा व्याकुल रहता था।

"ले ले भाई और जाकर दूध पी ले। तू भी क्या कहेगा, किसी रईसजादे से पाला पड़ा था"—भूतनाथ मुस्कराते हुए बोला।

"कामरेड, तुम मुझे रईसजादा कह रहे हो। मैं रईसजादा हूं ? कमाल है, मैं प्रेस में, आफिस में, मजदूरों की तरह चौदह-चौदह घण्टे काम करता हूं और आप मुझे रईसजादा कह रहे हैं। हद हो गई नासमझी की।"

ज्वालामुख के चेहरे पर लपटें उठने लगी थी। बात टालने के लिए भूतनाथ ने रिक्शेवाले को, ज्वाला के हाथ से रुपये लेकर दे दिए और उसके कंधे को थपथपा कर सड़क पर नहीं, कार्यालय मे बहस करने का इशारा किया पर ज्वाला तो ज्वाला था, जैसा नाम, वैसा काम, वह अड़ गया।

"नहीं, बहस सडक पर होनी चाहिए ताकि आम जनता सुन कर खुद निर्णय करे।"

"बिल्कुल ठाक, कामरेड प्रवीन ज्वालामुख, बिल्कुल ठीक। बहस सड़क पर ही होनी चाहिए। हो जाए आज।" —मजा लेते हुए ज्वाला के एक परिचित स्थानीय डाक्टर श्याम मेहरोत्रा ने कहा और ज्वाला और भूतनाथ की बहस के रोमांच की कल्पना मे मग्न होकर रिक्शे पर चढ़कर जम गया—"ए रिक्शेवाले। मैं तुझे दस रुपये और दूंगा। तू इस बहस की अध्यक्षता करेगा और हम सब पर निर्णय देगा। ठीक है कामरेड ?"

"तुम नौटंकी करना चाहते हो सड़क पर, हम बहस करना चाहते हैं।" ज्वाला जल कर बोला।

"नौटंकी तुम कर रहे हो, क्रान्तिकारी जी, जो दो रुपए के बदले रिक्शेवाले पर रौब डालने के लिए उसे दस रुपए दे रहे हो।" डॉ० श्याम को बुरा लगा।

"मैं तुम्हारी तरह मरीजों का शोषण नहीं करता, मेहरोत्रा। तुम साले मरीजों की टट्टी-पेशाब की जांच में भी ज्यादा वसूलते हो। मैं एक ईमानदार पत्रकार हूं।"

"रहने दो, प्रवीन साहब ! पत्रकार सबसे अधिक बेईमान कौम है प्यारे। पत्रकार का कोई धरम नहीं। वह ईमानदार होता तो देश में अब तक क्रान्ति हो जाती। 'जनधर्म' नाम रख लेने से, जनता के प्रति पत्रकार-धर्म का निर्वाह नहीं हो जाता। तुम हमारे दोस्त हो, मैं पोल नहीं खोलना चाहता···हां, डाक्टर तो बुरे हैं और तुम ?"

ज्वाला फूस की आग की तरह लपका। भूतनाथ बीच में आ गया तो उसी पर पिल पड़ा—"आप एक प्रतिक्रियावादी और क्रान्तिकारी के द्वन्द्व में बाधक हैं कामरेड गदाधरसिंह। आप बीच से हट जाइए। मैं इस बनिया को देखता हूं। यह साला 'जनधर्म' को गाली देता है, मेरी पोल खोलना चाहता है ?"

भूतनाथ ने वात्सल्य से ज्वाला के कंधे थपथपाए और रुकने का इशारा किया। उसका हाथ भी पकड़ लिया। मेहरोत्रा को भी गुस्सा आ गया—"सड़क पर बहस करेंगे। हमला करेंगे। दोस्तों की बेइज्जती करेंगे। जो विरोध में बोले, उसका मुंह बन्द कर देंगे। मैं पूछता हूं कि 'जनधर्म' का मालिक तू है या तेरे ये कम्पोजीटर या प्रिंटर हैं, नौकर और चपरासी हैं ? साले, संवाददाताओं को पैसा नहीं देता, प्रेस के कर्मचारियों को वेतन वही जो और जगह मिलता है। तू क्रान्तिकारी है तो अपने मजदूरों को भागीदार क्यों नहीं बना लेता ? रिक्शेवाले को दस रुपए देकर दिखाता है कि तू गरीबों का हमदर्द है और मजदूरों-क्लर्कों-कॉलम लेखकों की कमाई खाता है···और बताऊं ?"

ज्वाला घायल सांप की तरह बल खा रहा था। भूतनाथ ने अब उसे कसकर पकड़ लिया था और वह उसे प्यार से समझा रहा था। वह डा० श्याम मेहरोत्रा को भी रोक रहा था पर अब तो ठन चुकी थी।

नीरस जीवन संघर्ष में घिसते पुर्जों की तरह आम लोगों का ऐसे ही दृश्य मजेदार

लगते हैं। फौरन मजमा इकट्ठा हो जाता है। मुफ्त का मनोरंजन रोज-ब-रोज कहां मिल पाता है? प्रेस के मजदूर और बाबू वगैरह भी आ गए—"देख श्याम, कल का 'जनधर्म' देखना, तेरी ऐसी की तैसी न कर दू तो मेरा नाम प्रवीन नहीं।"

"ज्वालामुखी कह बावले। तू विक्षिप्त है। तू 'जनधर्म' में मेरी क्या दुर्गति करेगा? तेरे प्रतिद्वन्द्वी 'लोकहित' में मैं तेरा वारा का न्यारा कल कराऊंगा। तूने कितने रुपयों का 'ब्लैकमेल' किया है? तेरा पेपर कोई पेपर है? साले, पीतपत्रकारिता करता है और अकड़ता है। बताऊं तू किस तरह भले लोगों को आतंकित कर रुपया वसूल करता है?" —डॉ० श्याम मेहरोत्रा ताव में आ गया था। वह बिफर गया—

"तू इन्कलाब की बकवास मे इस शहर को सता रहा है और उसे बिजनेस में भुना रहा है। तू कभी नक्सलपंथी बना था। तू अकड़ा रहा पर तेरे पिताश्री ने माफी मांग ली कि पागल बच्चा है तब पुलिस ने छोड़ा और तुझे शर्म भी नहीं आती? आ, हमला कर, मैं आज सड़क पर ही तेरा इलाज करता हूं।"

ज्वाला गुस्से में अपने होंठ चबा रहा था। उसे जवाब देते नही बना तो गालियां देने लगा—"साले तुझे देख लूगा, बनिया, तेरी यह हिम्मत। मैं तेरा ढांचा ढीला कर दूगा। तू मुझे, मेरे पत्र को बदनाम करता है। मैं तेरे पर मानहानि का दावा करूंगा।"

"अबे जा पाखण्डी, परजीवी बाम्हन, जा भीख मांग जो तेरी जाति का पेशा है। तेरा मान हो तो हानि होगी। जा, कर देना दावा···धिक्कार है तुझे, आडम्बरी कहीं का।"

मजमा बढता देख और झगड़े की आशंका बढ़ने पर चौराहे से पुलिस आ गई और उसने मामले को रफा-दफा किया। भूतनाथ ज्वाला को कार्यालय में ले आया, श्याम को उसके परिचित पकड़ ले गए। भीड़ ने ज़ोर का ठहाका मारा। एक बोला—"अब खिसक लो यारो, खेल खतम, पैसा हजम·· भई वाह, मजा आ गया।"

"ये बड़े आदमी कभी-कभी आपस में लड़ते हैं। इनमें जमकर हो जाए तो सारी छुपी असलियत सामने आ जाए।"

"हमारे लिए तो ये दोनों ही खून पीने वाले हैं, एक दवा बेचकर एक खबर बेचकर, सब साले चोर हैं।"

भूतनाथ जनप्रतिक्रिया को बड़े गौर से सुन रहा था। आज़ादी के पहले लोगों में अखबार वालों पर कितनी श्रद्धा थी और आज कितनी नफरत है।

'जनधर्म' के कार्यालय में बड़े बाबू ने भूतनाथ को एक गोपनीय पत्र दिया। पत्र मुख्यमंत्री के व्यक्तिगत-सचिव का था जिसमें बस इतना लिखा था कि गदाधरसिंह को पत्र पाते ही, लखनऊ आकर उस सचिव से सम्पर्क करना है। एक और पत्र महत्त्वपूर्ण था, जिसमें किसी के हस्ताक्षर नहीं थे और घसीट में लिखा गया था। उसमें भूतनाथ को करौली में कैलादेवी के मेले में बुलाया गया था।

भूतनाथ ने ज्वाला को सांत्वना दी कि वह एक जिम्मेदार सम्पादक है। उसे किसी उत्तेजना मे नही आना चाहिए। अराजकता, अशांति, साम्प्रदायिक हिंसा, दस्युता और भ्रष्टाचार की बाढ़ पर अंकुश लगाने के लिए 'जनधर्म' की साख और सुरक्षा आवश्यक है। जाहिर है कि पूंजीवादी-व्यवस्था और सत्ता में रहते 'जनधर्म' को अपने अस्तित्व के लिए कई गलत काम करने पड़ते हैं पर सवाल उसकी जनवादी भूमिका का है। समाचारपत्र ही जनता के कान और आंखें हैं। अभी प्रत्येक प्रतिष्ठान में काम करने

वालों को भागीदार बनाने का समय नही आया है। यह पहल ऊपर से हो, तब होगा। 'जनधर्म' के पास है क्या ? किसी तरह काम चल रहा है अतः अभी डॉ० श्याम मेहरोत्रा की चुनौती पर कुछ करने की जरूरत नही है। बाद में देखेंगे। अभी तो जो हो सके, वही करते रहना है और 'जनधर्म' काफी करता आ रहा है, अपनी सीमाओं के बावजूद। सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया बहुत लम्बी होती है। बहुत समय तक, बहुतो को, उसकी तैयारी के लिए तिल-तिलकर मरना पडता है तब वह माहौल बनता है, जिसमे जनता सब कुछ अपने हाथ मे ले लेती है। अभी तो राष्ट्रवाद ही पूरी तरह नही आ पाया, उसी मे बडी बाधाए है, जनवाद तो जहा-तहां अंचलों में पनप रहा है। उतावलेपन और उग्रता से काम बिगड सकता है। उसके लिए मुहल्ले से लेकर ऊपर तक, प्रत्येक स्तर पर जनसगठन करना होगा और · ।"

ज्वाला भूतनाथ की इज्जत करता था। उससे डरता भी था क्योंकि उसके विचारो और भावनाओ से ही नही, उसकी कारगुजारियों मे भी थोडा-बहुत परिचित था। भूतनाथ ने उसे दो-चार बार साहसिक काम भी सौंपे थे पर ज्वाला के ताना-शाह रुख से वह उस पर अधिक यकीन नही करता था। पता नही, कब उत्तेजित होकर सारा राज फाश कर दे। ज्वाला किसी भी प्रतिपक्षी बात को बर्दाश्त नही कर पाता था। इसलिए लोग उसे बकवाने के लिए, कही भी छेड़ देते थे। फिर वह घटो तेजी से बोलता रहता था। इससे उसका एक खास प्रकार का आतक भी हो गया था। उसके सामने, उसकी विचारधारा के विरुद्ध कोई बोल नही सकता था। वह बात करते-करते आघात पर उतर आता था। भूतनाथ इस वजह से उसे कच्चा रगरूट मानता था और उससे उलझना नही था।

रात की गाडी से गदाधरसिंह लखनऊ के लिए रवाना हो गया। लखनऊ जाकर ह एक दैनिक पत्र 'जागृति' के अतिथिगृह में ठहरा और ठीक दस बजे मुख्यमंत्री के चिव के पास पहुच गया। सचिव ने उसे भेजे गए पत्र को उससे लेकर पढा और मुख्य-त्री जी से सम्पर्क किया। मुख्यमत्री ने सब काम छोडकर उसे तुरन्त बुला लिया।

मुख्यमत्री 1980 के चुनाव के बाद केन्द्र के सकेत और समर्थन से मुख्यमंत्री बने और प्रान्त मे कुछ ऐसा करना चाहते थे कि वह अमर हो जाएं, उनके दल पर जो नेक प्रकार के दोषारोपण हो रहे थे, वे दूर हो और एक ईमानदार, दृढ़ और निर्मल ासक तथा जनप्रिय नेता के रूप मे उनकी छवि बन जाए।

मुख्यमत्री राजनाथसिह एक रियासती वंश से निकले थे। उन्हे कोई कमी नही अतः वे गौरव चाहते थे, बस। उनमे आदर्शप्रियता थी और आश्चर्य यह था कि वह तृत-राजनीति मे चल कैसे रहे थे। शायद इसीलिए कि सत्ताधारी दल के बडे नेता नते थे कि बिगडाव की बाढ मे निर्णायक पद पर यदि अच्छा आदमी हो तो जन आशा बनी रहती है कि सब ठीक हो सकता है और यथास्थिति जारी रह सकती है।

एक बडे, सुसज्जित कक्ष में, बडे-बडे सोफो के बीच, एक अत्यन्त भव्य सोफे पर, मंत्री जी बैठे थे। सामने सोफे की बराबरी का टेबिल था और उस पर कुछ कागज-पड़े हुए थे। दूरभाष भी रखा हुआ था। आसपास अतिविशिष्ट कुछ नेता और नुमा लोग बैठे थे। दीवारो पर गांधीजी, पंडित नेहरू और इन्दिरा गांधी के चित्र । कालीन और पर्दों का एक ही रंग था। यहां तक कि टेबुल का रंग भी वही था। मुख्यमंत्री राजनाथसिंह रेशमी खद्दर की धोती-कुरता पहने हुए थे। कुरते पर

नेहरू जाकेट थी और सिर पर कश्मीरी टोपी थी जो ठाकुर राजनार्यसिंह को खूब फब रही थी।

मुख्यमंत्री अधेड़ उम्र के थे पर वह आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी थे। उनके मुख पर राजसी गरिमा थी जो यह गारंटी देती थी कि यह व्यक्ति निम्नस्तर पर नहीं उतर सकता और अवसर आए तो अपनी आन-बान के लिए लोभ छोड़ सकता है। वह लोकप्रिय इतने थे कि अपनी काफी भूमि उन्होंने अपने किसानों को दे डाली थी, इसलिए त्याग में भी वह अग्रणी मान लिए गए थे और तुच्छता से वह चिढ़ते थे। वह जन्मतः बड़े थे और कर्मतः भी बड़े ही रहना चाहते थे। बड़े बने रहने के लिए वह बड़े-बड़े काम कर दिखाना चाहते थे। स्वभाव और बड़प्पन की वजह से, वंश और चित्तवृत्ति के कारण लोग उन्हें 'राजा' कहा करते थे और वह इस सम्बोधन की रक्षा करने के लिए तत्पर थे।

गदाधरसिंह ने अपने दुशाले को कंधों पर लपेटा और बड़े अदब से राजा साहब के दरबार में प्रवेश कर थोड़ा-सा सिर झुकाकर खड़ा हो गया। राजा राजनार्यसिंह ने सिर से पैर तक राजसी दृष्टि से उसे तौला और पास बैठे सचिव के कान में कुछ कहा। सचिव बाअदब सिर हिलाकर उठा और गदाधरसिंह को संकेत से एक दूसरे कमरे में ले गया जो मुख्यमंत्री का व्यक्तिगत कक्ष था जहां गोपनीय चर्चा हुआ करती थी।

कुछ पत्र-पत्रिकाएं भूतनाथ को देकर और प्रतीक्षा करने के लिए कहकर सचिव चला गया। एक क्षण बाद एक नौकर काफी का प्याला ले आया और पूछने लगा और क्या सेवा की जाए? भूतनाथ ने उसे जाने का संकेत किया और अखबारों में डूब गया।

दो-तीन घंटे बीत गए पर मुख्यमंत्री नहीं आ पाए। वह उपस्थित लोगों से बात करके किसी काम से बाहर चले गए लेकिन भूतनाथ से कहलवा गए कि वह इन्तजार करे।

भूतनाथ को राजेन्द्र मिश्र के उपन्यास—'दारूल्शफा' की याद आई और वह मुस्कराने लगा। उसने सोचा कि जो इस उपन्यास में है, उससे ज्यादा और क्या जाना जा सकता है? इतने बिगड़े हुए राजतंत्र के बावजूद यह सब चल कैसे रहा है? जनता इसे कैसे सहन कर रही है? हर आदमी यहां सम्पर्क साधकों के जरिये आता है, काम बनाने के लिए न जाने क्या-क्या करता है। कितनों के काम बनते है? उन्हीं के जो या तो किसी के सम्बन्धी है, या जिनके पास जनमत जुटाने का प्रभाव है, जो पैसे वाले है या जो और कुछ न कर पाने पर नेताओं और साहबों के चमचे है जो उन्हें धन, उन्नति या आमोद-प्रमोद जुटाते हैं। धर्म और योग का धंधा करने वाले भी काम बना ले जाते है, यह प्रभावहीन सम्पर्क वंचित, जनसाधारण क्या करे…"

सब अपना या अपने प्रभाव बढाने की कामधेनु संस्थाओं का काम बनाने के लिए पागल है। इस प्रतियोगिता में साधनों का क्या महत्त्व हो सकता है? कुछ का काम सिफारिश से ही चल जाता है। वे अपने को शुद्ध मान लेते है लेकिन अधिकतर लोग गलत तरीके अपनाकर ही काम बना पाते है। वे चाहते नहीं पर मजबूरी मे यही सब करना पड़ता है। यह तंत्र ही ऐसा है। इसमे यही करना पड़ेगा। इसे तोड़ना ही होगा, कोई अन्य विकल्प है ही नहीं पर इसे बदलने का बोध कितने लोगों मे हैं?

भूतनाथ को एक बुद्धिजीवी का दिलचस्प फिकरा स्मरण हो आया। वह एक सरकारी कालेज में प्रवक्ता था। बहस मे वह बोला, सवाल तबदीली का नहीं, तबादले का है और यह कह वह सनकी हंसी हंसा था। वह तबादले के लिए परेशान था और

रुपये देकर अंततः अपना स्थानान्तरण करा ही ले गया था। उसने इस व्यवस्था का मूल-मंत्र बताया था—"पार्टी फण्ड के नाम से पैसा दो और जो चाहे हासिल कर लो। पैसा न हो तो वोट-बैंक बनाओ—वोट बनाओ और मजे करो।

···भूतनाथ को बेचैनी होने लगी लेकिन वह भी तो काम से आया था। वह इन्तजार कब तक करता रहे। उसने 'माया','रविवार','इंडिया टुडे' जैसी पत्रिकाओं को उलटा-पलटा, सबमे व्यवस्था को नंगा किया गया था। बड़े-बड़े भेद खोले गए थे किन्तु यह कहीं नहीं था कि इन पत्रिकाओं के मालिकों के ये उद्योग-धंधे किस तरह चल रहे हैं ? सर्वत्र प्रहार परिधि पर था, मूल पर चोट किसी में भी नहीं थी। क्या यह भी जनता को मूर्ख बनाने का व्यवसाय नहीं है ? जो पत्रिकाएं और पत्र, बड़े लोगों की मिल्कियतें हैं, वे यह कैसे छाप सकते हैं कि पूंजी पर समाज का कब्जा हो जाए ? और 'समाजवाद' को संविधान में जगह देने वाली सरकार बोलने-लिखने की आजादी के नाम पर इस पत्र-पत्रिका व्यवसाय को मनमानियां करने दे रही है। क्या यह लोकमानस की लूटपाट नहीं है ? यह तो साफ-साफ कानून सम्मत तस्करी और डकैती है ? डकैत तो बेचारे बहुत साधारण हैं। चारों तरफ फैली अरबों-खरबों लोगों को लूटने वाली डकैती के सामने कुछ थोड़े से लुटेरों की हिंसा बच्चों की हरकत नहीं तो और क्या है ? काश ! यह बात यह जड़ समाज समझ जाए पर कैसे समझेगा ? यह तो बार-बार धोखा खाने पर भी, काम बन जाने की उम्मीद में, निजी स्वार्थपूर्ति के कुचक्र में, पूरे समाज के अधिकतर दुःखी लोगों की मुक्ति के कार्य की ओर से आंखें बन्द किए हुए है···।

···अभी बहुत देर है। सरदार भगतसिंह ने बहरों को सुनाने के लिए बम-विस्फोट किया था। क्या बम-विस्फोटों का सिलसिला इन बहरों को, विधि सम्मत वधिकों के खिलाफ खड़ा कर सकता है या उन्हें कानून और व्यवस्था के नाम पर, उन्हें आतंकवादी कहकर समाप्त कर दिया जाता रहेगा ?

···अभी विलम्ब है। भूतनाथ किसी आंतरिक बेचैनी में कमरे से बाहर आया और सचिव के पास जाकर बोला कि वह जा रहा है।

सचिव ने उसे हाथ जोड़कर पुनः उसी निजी कक्ष में बिठा दिया और सूचना दी कि मुख्यमंत्री आ रहे हैं और उन्होंने कहा है कि आपको रोका जाए।

"मैं मुख्यमंत्री का नौकर नहीं हूं। मेरा समय उनसे कम कीमती नहीं है।"

"मेरी नौकरी चली जाएगी, गदाधरसिंह जी। आप नहीं जानते, आप कितने महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। इस कक्ष में हर एक को नहीं बैठाया जाता, न सचिव इस तरह चिरौरी करते हैं, हर एक की।"

"सचिव और साहबों को प्रत्येक नागरिक की चिरौरी करनी चाहिए। आपकी सरकार नागरिकों के मत से बनी है और आप 'पब्लिक सर्वेण्ट'—जनसेवक नामधारी जीव हैं।"

सचिव अधिकारप्रिय था पर सरकार की गरज थी अतः तम्बाकू की पीक की तरह प्रतिवाद को निगल गया। भूतनाथ हसने लगा और पुनः बैठ गया।

"राजा साहब पन्द्रह मिनट में आ रहे हैं और आपका दोपहर का भोजन उनके साथ होगा। इससे अधिक इज्जत-अफजाई और क्या हो सकती है ?"

"मैं इसमें कोई प्रतिष्ठा नहीं मानता। मुख्यमंत्री प्रजा का प्रथम सेवक है।"

"आप बजा फरमाते हैं, सिंह साहब, लेकिन मुख्यमंत्री राज्य की शक्ति और प्रतिष्ठा का भी प्रतीक है, वह राजा की जगह पर है।"

भूतनाथ सचिव की दास-चेतना पर हंसने लगा, "अच्छा, ठीक है सेक्रेट्री जी, मैं प्रतीक्षा करूंगा पर पन्द्रह मिनट के बाद चल दूंगा।"

"ठीक है।"

सचिव चिंतित होकर अपनी सीट पर गया और दूरभाष पर मुख्यमंत्री को सारा हाल सुना दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह तुरत आ रहे हैं और वह आ भी गए।

उनके कक्ष में घुसते ही राजसी आतंक फैल गया। सुरक्षा-अधिकारियों के शंका प्रकट करने पर मुख्यमंत्री ने उन्हें इशारे से बाहर चले जाने को कहा और एकदम एकांत कर भूतनाथ से कहा—"गदाधरसिंह जी। मैं विलम्ब के लिए क्षमा चाहता हूं। अपने देश में ऐसे ही होता है। यहां समय का मूल्य कोई समझता नहीं है। जनकार्य के लिए जाइये तो जनता घेर लेगी। उसे कुछ तसल्ली तो देनी ही पड़ती है···अरे भोजन का समय हो गया···ऐसा करते हैं···घर चलते हैं, वहीं बातें कर लेंगे···आप···आप तो घर के ही आदमी है न···आइए घर ही चलते हैं। यहां तो सरकारी अमला कुछ करने नहीं देगा।"

मुख्यमंत्री के बंगले में, भोजन की मेज पर एक दीर्घ मौन के बाद बातचीत शुरू हुई।

"गदाधरसिंह जी, आप जानते हैं कि इस प्रान्त के डाकुओं ने मुझे चुनौती दी है। आप कुछ कर सकते हैं?"

"मैं तो पत्रकार हूं। खोज-रपटें लिखता हूं। गवेषणा के लिए मुझे सब तरह के लोगों से सम्पर्क साधना पड़ता है। खतरा भी उठाना पड़ता है पर मेरा धंधा ही यह है।"

"आप भेद दीजिए। आप कहें तो खुफिया विभाग में आपको पद दिया जा सकता है। आपकी बड़ी तारीफ सुनी है।"

"इतनी पुलिस है, सशस्त्र पुलिस भी है। फिर भी डकैत जनजीवन को आतंकित कर रहे हैं। बिना पुलिस से मिली भगत के यह कैसे हो सकता है?"

"यही तो···यही तो। धंधा डाकुओं का भी है और पुलिस का भी···सभी धंधे में लगे हैं।"

"परन्तु नेक अफसर भी तो हैं, उन्हें मोर्चे पर लगा सकते हैं।"

"वह सब हम करेंगे। बड़ी बदनामी हो रही है। निर्दोष और निरीह जन मारे जा रहे हैं। चुनाव पर इसका असर पड़ता है। मैंने प्रतिज्ञा की है···कि मैं या तो इस दस्युदल का उन्मूलन करूंगा या···यह पद छोड़ दूंगा।"

"आपके पद छोड़ देने से तो कोई कमजोर मुख्यमंत्री आ जाएगा। तब क्या होगा?"

"जो हो, केन्द्र के नेता जानें। मैं कोई पेशेवर नेता नहीं हूं। राजनीति मेरे लिए लोक-कल्याण का साधन है। मेरे दल में खींचतान है। केन्द्र के बल पर हम कुर्सी पर हैं, अन्यथा खिलाफ गुट मुझे इस पद पर नहीं रहने देगा। कांग्रेस पार्टी परस्पर विरोधी व्यक्तियों और टोलियों में बंटी है। जातिवाद भी है···आप···आप तो···आपकी फाइल मेरे पास आई है···आपका असली नाम क्या है?"

"गदाधरसिंह।"

"नहीं, आपका वह जो मसनूई नाम है। भूतनाथ।···क्या नाम रखा है आपने·· आप सचमुच भूतनाथ ही हैं। आप अगर डाकू-उन्मूलन कार्य में मदद करें, भेद दें तो

आपको कानून की पकड़ से बाहर रखा जा सकता है वर्ना आपका पुलिस-रिकार्ड बहुत भयंकर है···आप क्या है ?"

"एक पत्रकार, बस। आप चाहें तो मुझे गिरफ्तार कर सकते है।"

"पर, आप जेलों से भाग चुके है···मैं जानता हूं, आपके डकैतों से ही नही··· इन्कलाबियों से भी संबंध हैं···आप चाहते क्या है ?"

"मैं चाहता हूं कि जो यह विधि-सम्मत डकैती है, उसे बंद किया जाए। तब ये छोटे-मोटे डकैत खुद ही पैदा नही होंगे। दस्यु···तो।"

"मैं समझता हू। सिस्टम को, व्यवस्था को, हम बदलने के पक्ष में है पर धीरे-धीरे। हम सुधार मानते है, क्रान्ति असंभव है यहा, इस देश मे। हम विधिसम्मत दस्युओं को नियंत्रित करेंगे, पूजीपतियों, ठेकेदारो, अफसरो-तस्करों सभी को। पर···आप जानते हैं कि यह कितना मुश्किल काम है · आप ऐसा करें, आप पुलिस के सर्वोच्च अधिकारी से मिल लें, वह सब प्रबन्ध कर देंगे। मैंने उनसे कह दिया है।"

"नही···माफ करें···मैं सिर्फ आपको सूचना दूगा, वह भी तब, जब मैं चाहूंगा। पुलिस का अपना रवैया होता है। वे मुझे अपने एजेन्ट की तरह चलाएंगे और उससे मैं अविश्वसनीय हो जाऊंगा। आप मुझे कोई कोड नम्बर बता दें, मैं या तो फोन कर दूंगा या···।"

"मैं आपको व्यक्तिगत नम्बर दिए देता हू। पुलिस आपको पकड़ भी ले गलती या गुस्से से तो आप चिंता न करें। कभी आपकी हिफाजत के लिए भी यह जरूरी होगा, कभी 'अडर वर्ल्ड'—अपराधियों को आश्वस्त करने के लिए भी यह करना पड़ सकता है।···आई० जी० इन्सपेक्टर जनरल को तो बताना ही पड़ेगा। वही 'डील' करते हैं पर वह और किसी को नही बतायेंगे···ठीक है ? ···आपके खर्च के लिए···?"

"मुझे कुछ नही चाहिए। मैं खोज-रपटों के जरिए काफी कमा लेता हूं। मेरा खर्च ही क्या है···फिर यह तो जनकल्याण का काम है।"

"यह तो है पर फिर भी कुछ तो होना चाहिए।"

"कुछ भी नहीं। आप उधर से अपना ध्यान हटा लीजिए। कृपया।"

"ठीक है, आप जानें। जरूरत पड़े तो संकोच न करें, चाहे जितना खर्च करना पड़े, करें, ठीक है ?"

"ठीक है, कोड नाम से भूतनाथ नाम बुरा नही है···बल्कि अच्छा है···आपके भूतनाथ नाम से एक पत्र दे दिया जाएगा। आप जिस पुलिस-अफसर को दिखायेंगे, वह आपकी सुनेगा, मानेगा। ठीक है ?"

"ठीक है। आज की मुलाकात रिकार्ड पर नही आनी चाहिए।"

"लिख देंगे कि मुख्यमन्त्री एक भूत से मिला था।···हः हः हः हः।"

मुख्यमंत्री प्रसन्न थे। उन्होंने बड़े दर्द से कहा कि एक कवि को इस गन्दी राजनीति में जोत दिया गया है पर अब यह चुनौती है। भूतनाथ के अनुरोध पर राजा राजनारायणसिंह ने कविताएं भी सुनाईं। राजा की आंतरिक शुचिता और मानवीय संवेदना को देखकर भूतनाथ को आश्चर्य हुआ। ऐसा आदमी इस दलदल में कैसे आ गया ? एक विवश दुःख की अनुभूति के साथ बैठक समाप्त हुई। राजा ने विनोद किया, "तो भूतनाथ, अपने नाम को सार्थक करना है। मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न भी है, बारह करोड़ जनता की ओर से दायित्व का भी। मैं आपकी फाइल अल्मारी में बन्द कर देता हूं ताकि पुलिस आपके विरुद्ध कुछ न कर सके। आप निश्चिन्त होकर दस्यु-उन्मूलन या

समर्पण, जो भी सम्भव हो, करायें। यदि मैं इस पद पर रहा तो मैं आपके लिए बहुत कुछ करूंगा'''अच्छा जयहिन्द।"
"जयहिन्द!"

5

कैला देवी के लक्खी—लाख लोगों के—मेले में आज भीड़ का कोई अन्त नहीं था। करौली-हिण्डौन-भरतपुर-अलवर क्षेत्र के ही नहीं, राजस्थान के बाहर के उत्तर प्रदेश से और न जाने कहां-कहां से परिवार के परिवार आए हुए थे। देवी की जय और लगातार गीतों से, हारे-थके समूह के रक्त की मंदता, तीव्रता में बदल रही थी। जनोत्साह से इस उजाड़, अविकसित, सूखे-भूखड़ इलाके में सजीवता छलक उठी थी। मेले के पहले यहां कैसी उदासी रहती है जैसे कोई गमी हो गई हो और इक्का-दुक्का लोग, किसी के बिछुड़ जाने से रंज में डूबे इधर-उधर बैठे ऊंघ रहे हों। और अब जनगंगा से यह सूखा विजन वन कैसा स्फूर्ति से उफन रहा है।

'''जनता कितनी फटेहाल है, कितनी गरीब, कितनी पिछड़ी हुई, मगर विश्वास और परम्परागत संस्कार ने क्या जोश पनपाया है! इस क्षेत्र में न पानी है, न अच्छी सड़कें, न कारखाने, न उद्योग धंधे। जो है, एकदम नाकाफी है। न भूतपूर्व राजा को परवाह है, न अन्य किसी को। यहां का नेतृत्व दुर्बल है, कोई बड़ा नेता नहीं है जो अपने प्रभाव से बड़े स्तर पर विकास कार्य करा देता। सबको अपनी-अपनी पड़ी है। जो मार ले, वही मीर है। अरबों रुपया बाहर से आ रहा है, राजस्थान नहर बन रही है, कारखाने लग रहे हैं मगर करौली से कैलादेवी तक की सड़क ठीक नहीं हो पा रही है। सरकार का मतलब है, कुछ प्रभावशाली मंत्रियों का प्रभाव और संसाधनों पर अधिकार। करौली-हिंडौन-भरतपुर-धौलपुर का व्रजभाषी क्षेत्र उपेक्षित है'''देवी तेरा ही सहारा है।

कैलादेवी पौराणिक काल की शक्ति है। इसका महात्म्य न जाने कब से जनमानस में बसा हुआ है। लोग समझते हैं कि देवी मां है। वह जीवों को पालती है और दुष्टों का संहार करती है। वह ममता में कोमल और क्रोध में भयंकर है। वह जगतजननी है, माया है, वासना है, लालित्य है, सौन्दर्य, शांति, ज्ञान, आनन्द, तेज, पराक्रम, वैभव, विलास, आग, तूफान, सब वही है। उससे कुछ भी मांगा और पाया जा सकता है। मां है न, वह सन्तान के उत्पातों को भी क्षमा कर देती है, बुरे-भले, कुरूप-सुरूप, गरीब-अमीर, सब उसके बालक हैं। उसका दरबार सच्चा है। भाव में सत्यता है, गहराई है, तो सब मिलेगा।

यह भावना लोक-मानस में इतनी बद्धमूल है कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से हिली नहीं है और अधिक दृढ़ हुई है, दृढ़तर होती जा रही है क्योंकि मैया, देवी मैया के जैसा न कोई सर्वशक्ति सम्पन्न है, न कोई इतना ममतालु है, न इतना उदार है, न इतनी विविधता है किसी में। कोई भी भाव हो, देवी माता उसकी पूर्ति के लिए सन्नद्ध है, बस मां के प्रति निष्ठा हो, मन से। आत्मा से मांगो, मुराद पूरी होगी। फिर भक्त स्वयं ही मां के मेले में आएगा, बलि चढ़ायेगा, गीत गायेगा।

यों तो कैलादेवी, करौली के यादव क्षत्रिय राजकुल की कुलशक्ति है पर

उसका असली रूप तो जनमानस मे है। वह उसे अपनी सगी मां की तरह प्यार करता है और डरता भी है क्योकि वह साधारण मा थोड़े ही है। वह तो अनन्त शक्तियों की महाराणी है। वह जो चाहे कर सकती है। वह सबकी है, सर्वमय है, सबसे परे है। उसका वर्णन सम्भव नही है। क्या कोई अपनी मां का बखान कर सकता है? वह तो अनुभूत होती है। प्रेम मे उसे केवल अनुभव किया जा सकता है। उसके लिए बस हृदय उमड़ता है कि उस पर सब न्योछावर कर दें, अपने को ही बलि पर चढ़ा दें···मां के लिए जब उसके कोई बेटा-बेटी कुछ लाते है तब वह कितनी प्रसन्न होती है। वह क्या कुछ लेती है? नही, वह तो लाई हुई वस्तु को उन्ही मे बांट देती है पर उसे सन्तोष और सुख इसमे मिलता है कि उसकी आत्मा के अश, उसकी सन्तान, उसके जिगर के टुकड़े, आखो के नूर उसको प्रेम करते है···।

भूतनाथ डबडबायी आखो से भारतीय जनता के सामूहिक मन की थाह ले रहा था। इस कठोर और निर्दय संसार और समाज में, पौराणिको ने कितना बड़ा मानसिक आश्रय दिया है सर्वसाधारण को। उसे तो सभी ठगते है, उसे दबाते है, अत्याचार करते है। उसके मूल्य पर बड़े लोग मौज करते रहे है, आज भी वही है। ऐसे में जनसाधारण तो हताश ही हो जाता, जीने का अवलम्ब ही क्या रह जाता यदि मां न होती?

"बोल देवी मैय्या की जय।"

"जय।"

"बोल सिंहों वाली की जै।"

"जय।"

"बोल पापनाशिनी की जै।"

"जय, जय।"

"बोल जगदम्बा माता की जै।"

"जय, जय, जय।"

हजारों लाखों कंठो से निकली जै-जैकार से वातावरण गूंज रहा था और जहां-तहा आवेश मे लोग झूम रहे थे। बहुत समय से, मन मे परत-दर-परत सुख-दुख की तरगें जो अवचेतन के गर्तो मे एकत्र हो गई थी, निकल नही पाई थी, वे सब आज इस उत्साह के क्षण मुक्त हो रही थी। मुक्ति का पंडित अर्थ कुछ भी लें, जनमानस की मुक्ति का तो एक ही मतलब है कि वह अवचेतन से मुक्त होता है, कुछ समय के लिए। जिन पर भूत रहता है, उनका भूत यही उतरता है। भूत भय का हो, अतृप्त वासना का, वैर-प्रतिशोध का, किसी का भी हो, भूत तो हर एक पर सवार है, वह कहा उतरेगा? वह तो माता के मन्दिर मे, इसी मेले में, हर वर्ष उतरता है। वह उतरता है, तभी तो लाखों लोग मानसिक रोग से बच जाते हैं अन्यथा पागल हो जाते या आत्महत्या कर लेते··· कितना सहते है ये लोग···।

भूतनाथ का कलेजा कटने लगा। अंधविश्वास तो है ही यह। विश्वास का अर्थ ही अधविश्वास है। विवेक तो सचेत कर देता है। विश्वास बाढ पैदा करता है। वह भावुक बनाता है और भावुकता में कितना आनन्द और अहं विसर्जन होता है! विवेक तो तटस्थ करता है, वेग को ठण्डाता है, भाव गरमी देता है, लपटें उठाता है, जोर मारता है। तभी तो भाव से भगवान है, भगवती है···सब भाव से ही है न? फिर तो देवी तब तक है जब तक यह भाव है और भाव तब तक है, जब तक हृदय है···भूतनाथ अपने अनुचिन्तन पर मुस्कराया···खूब··· लम्बा चक्कर है···क्या-क्या सोचा होगा, देवताओं,

ईश्वर और ब्रह्म के निर्माताओं ने, कमाल है। वे जनमनोविज्ञान के विशेषज्ञ थे और उन्हें इसी दृष्टि से समझा जाना चाहिए···विश्वासों का अध्ययन हो, मात्र खण्डन से वह रक्तबीज की तरह बढ़ेगा। विश्वास प्रतिवाद नहीं सहता, बोध से वह सिमटता है, सीमित होता है···तो बोध···मगर यह मुझे घूर कौन रहा है···क्या करना गूजर का कोई अदमी है ?

"आपको किसकी तलाश है ?"

"यही मैं पूछना चाहता था आपसे। छिमा करें, आपके ध्यान में विघन पड़ा।"

भूतनाथ ने गौर से उस आदमी को देखा। वह तगड़ा और गुस्ताख था मगर भक्त के वेष में था। वह हाथ जोड़कर कहने लगा—"आज रात में सरदार नरबलि देगा, आप यहीं रहें। उस समय देवी मैया की मूर्ति के पास आ जाएं।"

भूतनाथ ने आसपास, भय से, सूक्ष्म दृष्टि से ताका, फिर भीड़ में सबको अपने-अपने ध्यान मे मग्न देखकर मुस्कराया—"मगर, मैं नरबलि को जंगली काम मानता हूं। बकरे की बलि से काम नहीं चल सकता क्या ?···फिर पुलिस है, बाहर सशस्त्र पुलिस का घेरा है।"

"आप देखते जाइए साहिब, मुझे भूल गए क्या ? मैं उन तीन तिलंगों में से एक हूं जिसे आपने तन तानने के कारण सबसे अधिक मारा था। बांह में अभी भी दर्द हो रहा है।"

यह कहकर वह प्रसन्नता से हहराया और फिर कहने लगा—"मेरा नाम लंगुरा बीर है यहा साहिब, और उन दोनों के नाम हैं तिरसूल और सिंहा।"

भूतनाथ हंसा। बड़े चालाक हैं ये डाकू। क्या-क्या नाम रखे हैं। कोई पकड़ नहीं सकता।

"हम तीनों आपके चेले बन गए हैं साहिब। आपने हमें बचाया जो था। सरदार ने आपकी सेवा के लिए हम तीनों को तैं कर दिया है। जंगल में भी हम तीनों आपकी देखभाल करेंगे।"

"कैसी देखभाल करोगे ? बदला तो न लोगे मारपीट का ?"

लंगुरा ने कान पकड़े और बोला—"भगवती की सौगन्ध बाबू साहिब, जो हमारे मन में खोट हो। हम नरक में गिरें, हमारी सात साख नस जाएं जो हम दगा करें। हम जानते हैं, आपको विश्वास नहीं होगा पर हम जान लड़ाएंगे आपके लिए। आप देखेंगे, हम क्या हैं ? वह तो तब मति फिर गई थी, भगवती मैया कुपित थी न ?"

"कैसे ?"

"अरे ! आप नहीं जानते ? हम तीनों ने बलि देने की प्रतिज्ञा की थी पर पिछले मेले में हम बलि नहीं दे सके सो मैया ने दिमाग उलटा दिया।"

भूतनाथ हंसा। वह कुछ सोचता रहा।

"सरदार से कहो, बकरे की बलि दें अन्यथा मैं उसके साथ कहीं नहीं जाऊंगा। और भी बागी हैं, किसी और को देखेंगे।"

"अरे···यह क्या कह रहे हैं हुजूर, हमारे बीच तो खुसफुस हो गई है कि साहिब हमारे फोटू छपाएगा, हमारे बारे में लिखेगा, हमारी बहादुरी के किस्से कहेगा। हमारे को राह भी दिखाएगा···पर आप तो रूठ गए मालिक···।"

"लेकिन मेरी शर्त सुन ली न तुमने। मुझे सरदार से मिलवा दो।"

"यह नहीं हो सकता, साहिब। देख नहीं रहे, हल्ला मचा हुआ है कि बागी करन

आज आधी रात को बलि देगा। पुलिस में दम हो तो पकड़ ले उसे।"

"अच्छा ? ऐसी चुनौती है ?"

"जी हां। यही तो मजा है सरकार। आज फैसला हो जाएगा। ठाकुर मानसिंह के गिरोह के ठाकुर बागी समझते है कि वे ही बड़े बागी है। आज गूजरो की शान की परख होगी बाबू जी आप बढ़िया मौके पर आए हैं। कड़ी निगरानी होगी आज·· आप देखेंगे।"

"लेकिन, मैं नरबलि कैसे देख सकता हूं। यह तो बर्बरता है।"

"मालिक, हम बागी है, देवी के भगत है। नरबलि के बिना देवी मां पूरी तरह वरदान नही देती। ये कैलादेवी, काली माता का रूप है न, बस, इसी से। अन्नपूर्णा का मन्दिर यह थोड़े ही है जो आटे के बकरे को बलि से काम चल जाता।"

"अरे, तू तो बडा होशियार है। लंगुरा वीर जो ठहरा। ठीक है। मैं आऊंगा। अब तू जा, खिसिक जा। चारो तरफ पुलिस के भेदिए, सादा वस्त्रों मे होगे।"

"तो रात के ठीक बारह बजे।"

"मेरा सदेश कह देना। हो सके तो मनुष्य की हत्या से बचा जाए···।"

"बाबू जी साहिब। उस नर की बलि नहीं होगी जो धोखा है। भगवती की बलि के लिए जानवर ही चुना गया है।"

"अच्छा ? तब तो ठीक है, आऊंगा।"

दिन मे भूतनाथ मेले में घूमता रहा। वह मौका देखने के लिए मन्दिर भी गया। बडी डरावनी जगह पर मन्दिर बना है। सामने का प्राकृतिक खार बहुत गहरा है और दूर तक चला गया है जैसे यमराज मुह फाडे लेटा हो। आसपास ऊंचे टीले है जो अरावली पर्वत की श्रेणियो के हिस्से हैं। देवी की मूर्ति मनोहर नहीं है, बडी भयंकर आखें है। काली-कात्यायनी की बहिन सी है कैलादेवी···कैला शब्द भी विचित्र है, क+इला तो नहीं है इस नाम के मूल मे ?···यही होगा। क, कौल शब्द का अश है, इला तो देवी के सहस्र नामो मे से एक है।

देवी कैला स्वतंत्र है। इला भी स्वतंत्र थी। कोई नियम, मर्यादा, पुण्य-अपुण्य नही मानती और सब कुछ मानती है। इसीलिए सब प्रकार के, डाकू से पण्डित तक, तस्कर से तर्कशास्त्री तक, चोर से साहू तक, सब देवी में अपनी भक्ति रख सकते है। शक्ति, मूल्य-निरपेक्ष होती है न ··वह तो प्राकृतिक ऊर्जा का ही नाम है। ऊर्जा का प्रयोग कौन करता है, इस पर सब निर्भर है। यह प्रकृति की उपासना है जो कबीलाई है। बाद मे आर्यों ने स्वीकार कर लिया होगा पर आदिम हिंसा और मूल्य-मर्यादा की अवहेलना का रवैया देवी-पूजा से जुडा रहा है। दोनों को साफ देखा जा सकता है।

···भीड़ के धक्के मे आबालवृद्ध-वनिता पंक्तिबद्ध देवी के गर्भगृह में जाते हैं और पूजा कर वापस आते है। आर्यपद्धति से अर्चना हो रही है। ब्राह्मण, वेद-पुराणो के मत्र-श्लोक पढ रहे हैं। दुर्गा सप्तशती का अखण्ड पाठ जारी है।

बलि का निषेध हो गया है अतः देवी की मूर्ति के बाहर भैरव जी के छोटे से, एकान्त मे बने मठ मे छुरा चलती है और लुकछुप कर बकरे भी कट जाते है। भैरव के मन्दिर की ओर पुलिस नहीं है। पुलिस वाले भी तो भैरव का वाहन हैं, इसलिए भैरूजी को सब कुछ करने की स्वतन्त्रता है। क्या लचक है हिन्दू धर्म मे, वाह ! प्रत्येक मनः-स्थिति के लिए एक-एक देवता है। सचारी भाव तैंतीस नहीं, तैंतीस करोड़ होते हैं और उतने ही देवी-देवता हैं। मनुष्य कितना बड़ा रचनाकार है। पट्ठे ने अपने मन को

मूर्तियों में ढाल लिया है। मानसी स्पन्दन ही शिल्पायित कर दिए गए हैं। देवी पवित्र है, कल्याणी है, शुद्ध सात्विक है तो भैरूंजी भयानक हैं, अशुद्ध होकर भी शुद्ध हैं, नियमातीत होकर भी शास्ता हैं। देवी चेतन की प्रतीक है, भैरव अवचेतन के। भैरव के बिना देवी अधूरी है। भैरव नहीं है तो ललिता कैसे रह सकती है?

पुलिस ने देवी के मन्दिर में गर्भ गृह के बाहर अड्डा जमाया हुआ है। उसके बाद बाहर एक घेरा है, उसके बाद पुलिस की टुकड़ियां तैयार है पर भैरव की मठिया एकदम अरक्षित है ··भूतनाथ ने सोचा, भैरव ही कल्याण करेंगे अपने वाहनों का···कुत्ते, शिकारी जानवर, चोर-डाकू ही तो भैरव के वाहन हैं।

भूतनाथ पुलिस की असतर्कता और असावधानी देखकर मुस्कराया। उसने मन्दिर पर अन्तिम दृष्टि डाली और ढलती शाम में भक्तों की लीला देखने चल पड़ा। कुछ चना-चबेना खरीद कर उसे टुटकते हुए उसका ध्यान विदेशियों की एक टोली ने खींचा, जो धड़ाधड़ फोटो खींच रही थी। विदेशियों में बहुत से थे पर दो-चार बहुत मुखर थे। उन में दो सुन्दरियां चहक रही थी। उनके लिए सब एक कौतुक था, विस्मय-जनक था, समझ से परे था। उनके सवालों का कोई जवाब देने वाला नहीं था। वे बार-बार अंग्रेजी कपड़े पहनने वालों से पूछती पर उत्तरों से निराशा मिलती। उनकी कुछ समझ मे नहीं आ रहा था। उन्हें अजीब लग रहा था।

जहां भजन हो रहे थे, वहां वह टोली खड़ी थी। उन्हें देखकर गायकों और नर्तकों में जोश आ गया था।

"व्हाट इज बीइंग संग? हू कैन टैल अज? इज देयर एनीबडी हू कैन एक्सप्लेन द मीनिंग—क्या गाया जा रहा है, कोई अर्थ बता सकता है?" कहकर एक सुन्दरी ने चारों तरफ देखा। कोई नही बोला। भूतनाथ ने अंगरेजी में समझाया तो वह सुन्दरी उससे परिचय पूछने लगी। पर भूतनाथ ने पलट कर उसका परिचय पूछा।

"मेरा नाम रोज़ी है, इसका नाम मैरी। यह राबर्ट है··· यह स्टेनबेक।" इस तरह बताती गई। अन्त में रोजी ने भूतनाथ का नाम पूछा। उसने मजाक किया—

"मेरा नाम सिंह है।"

"यानी, देवी का सिंह, लायन आफ गौडैस कैला? इज नाट इट?"

"हां, यही, मैं देवी का सिंह हूं।"

पूरी टोली हसने लगी। रोज़ी और मैरी ने भूतनाथ को घेरा।

"मिस्टर लायन आफ गौडैस! टैल अज सम वंडरफुल थिंग, टैल अज सम मिरैकिल। वी हैव हर्ड दैट दिस गौडैस इज मिराकुलस—कोई विस्मयजनक बात बताइए, कोई चमत्कार। हमने सुना है कि यह देवी चमत्कारक है।"

भूतनाथ ने कुछ सोचा और रोज़ी और मैरी से धीमे से कहा कि आज आधी रात को कुछ डाकू पुलिस का सामना करेंगे। यह आपके लिए रोमांचक होगा लेकिन आप किसी से कहें नहीं। आधी रात को मन्दिर में पहुंच जाएं। तब चमत्कार होगा।

दोनों सुन्दरियों ने आश्चर्य से आंखें गोल-गोल घुमाई और पूछने लगी कि क्या वे यह रहस्य अपने साथियों को बता दें? भूतनाथ ने बताया कि वे यह कर सकती है मगर वे कहीं कहें नहीं। रोजी और मैरी ने भूतनाथ को शाम के भोजन का निमन्त्रण दिया। उसने दिल्लगी मे स्वीकार कर लिया।

अमरीकी विदेशियों का कुछ दूरी पर शिविर था। वहां भूतनाथ सबके आकर्षण का विषय बन गया। लम्बी वार्ता के बाद रात भीगने पर अमरीकियों ने डिब्बेबंद नाना

प्रकार के खाद्य पदार्थ टेबिल पर लगाए और बढ़िया मादक पेय भी परोसा।

भूतनाथ ने भैरव को धन्यवाद देकर डटकर भोजन किया और वह देवी और भैरव के पौराणिक किस्से सुनाता रहा। रोजी ने भूतनाथ को एक फिल्म भी दिखाई और बताया कि उसकी टोली, मेले पर एक लघु फिल्म बनाना चाहती है, जिसकी चरम सीमा, रात बारह बजे होगी, जब डाकू पुलिस से भिड़ेंगे···वाह ! मजा आ जाएगा।

"वट मिस्टर लायन आफ गोडेस, इट मे बी डेन्जरस—लेकिन यह खतरनाक हो सकता है, ए देवी के सिंह !"

"नहीं, आप अपनी फिल्म शूट करें पर अपनी जगह पर रहें, वहां, जहां पुलिस का घेरा है। मैं इन्तजाम करा दूंगा।"

तालियां बजा-बजाकर रोजी और उसकी टोली ने हर्षनाद किया। डिनर देर रात तक चलता रहा।

कुछ विश्राम करके भूतनाथ दस-साढ़े दस बजे के करीब विदेशी टोली के साथ मन्दिर पहुंचा। वहां विशाल कीर्तन चल रहा था। मेले में उतनी भीड़ तो नहीं थी पर बहुत आदमी थे। लोग भोजन-भजन में तल्लीन थे। कुछ आराम कर रहे थे, कुछ गा-बजा रहे थे। शीत में भी, जगह-जगह आग जला कर लोग रात काट रहे थे। मंदिर में भी काफी लोग थे पर दिन का रेलमपेल नहीं था।

विदेशियों ने अपने कैमरे सम्हाल लिए थे और प्रकाश की कमी को दूर करने के लिए गैस की लालटेनें जला ली थी। क्योंकि कैलादेवी के मंदिर में बिजली का प्रबन्ध नहीं था अत. पुलिस के बन्दोबस्त में भी रोशनी का इन्तजाम था पर मंदिर के आसपास रोशनी मंद थी और दूरी पर तो अन्धकार ही था जिसे मंद रोशनी डरावना बना रही थी।

पुलिस के सिपाही चार-चार कदमों पर बंदूक लिए खड़े थे और गर्भ-गृह के सामने तो उसका पूरा घेरा बहुत सख्त था। डी.एस.पी., थानेदार, सहायक थानेदार, हवलदार और सिपाही मुस्तैद खड़े थे। पुलिस ने प्रचार नहीं किया था कि उसे चुनौती दी गई है पर कुछ लोगों को पता चल ही गया था, इसलिए बार-बार डंडे चलाने पर भी लोग घुमड़ आते थे और कीर्तन में शामिल होने की जिद करते थे।

भूतनाथ शंकित था। किस तरह गूजर सरदार इस घेरे को तोड़ सकता है ?

वह चिंता में बाहर निकल आया और बाहर खड्ड के किनारे खड़े होकर दृश्य देखने लगा। वह बार-बार घड़ी देख रहा था। उसने अपने सैनिक बैग को कंधे पर कस रखा था। ताकि वह जब चाहे, भाग सके।

उसका हृदय कीर्तन के बाजों की तरह बज रहा था। कभी तो वह कौतुक से हलका होकर मंजीरों की तरह खनकता, कभी आशंका से ढोलक की धमक सा धंसने लगता, कभी वह कीर्तनियों की अलाप सा ऊपर उछलता और कभी वह लय में धड़कने लगता। उसके रोम खड़े होते और गिर जाते। वह उत्कंठा और रोमांच में तैर रहा था।

उसने अंधकार और जहां-तहां प्रकाश की झिलमिलाहट मे मंदिर को किसी रहस्य की निधि की तरह देखा। खार किसी गूढ जानकारी में मुंह बाए बिरा रहा था। उसने न जाने क्या-क्या देखा था, इसलिए वह मुद्रा न बदल कर यथावत् अपने में व्यवस्थित था यो खड्डे में नीचे कभी कोई जानवर-सा चलता-फिरता लगता था। कभी यहां सिंह और बाघ घूमा करते थे। अब तो यहां लोग रहने लगे है। तब तो रात में सिर्फ

देवी और उसके सिंह रह जाते होंगे।

आकाश के तारे भी आज अधिक उत्सुक से प्रतीत होते थे। वे टकटकी लगाए, भूतनाथ को कुछ समझा-सा रहे थे कि वे जानते हैं कि क्या होने जा रहा है। तारों के समान घटनाओं का कोई साक्षी नहीं होता। काश, वे बोलते होते! पर, सुना है कि वे बोलते हैं, कोई सुनने वाला हो तो उनसे नीरव संवाद हो सकता है। योगी, यती, बैरागी उनसे ही तो संदेश लेते हैं। वे प्रकृति के डाकिए हैं"'भूतनाथ अपनी कल्पना पर मन ही मन हंसने लगा।

ठीक पौने बारह बजे, मंदिर के ठीक विपरीत कुछ दूर गोली चली और एक आदमी की चीख उस कालनिशा को चीर गई। पुलिस उधर भागी यों इस हरकत को ध्यान बंटाने वाली चाल समझ कर काफी सिपाही और अफसर गर्भ-गृह पर डटे रहे। अजीब भगदड़ मची। गोली फिर चली, कई गोलियां चलती रहीं, हाहाकार मच गया। लोगबाग भागने लगे। चिल्लाहट और भागदौड़ में कई कुचल गए। अब पुलिस के सिपाही मन्दिर छोड़कर घटनास्थल की ओर भागे। गोलियां चलाने वाले एक जगह न रुक कर भाग-भाग कर गोलियां चलाने लगे पर यह पता नहीं चल रहा था कि लोग मर रहे हैं या हवाई फायर हो रहे हैं। फिर दो-चार शिविरों और रावटियों में आग लगा दी गई। धू-धू कर छोटे-छोटे तम्बू जलने लगे। अब मन्दिर की पुलिस के सामने वहां रुके रहना व्यर्थ हो गया था। मेले के लोगों की जान बचाने का सवाल था। थोड़ी देर में वहां थोड़े ही सिपाही रहने दिए गए पर डी. एस. पी. वहां से नहीं हटा। उसने मेले में डाकुओं से निबटने के लिए शेष अफसरों को अधिक से अधिक पुलिस के साथ भेज दिया। सशस्त्र पुलिस भी सारे मेले में बिखेर दी गई।

ठीक बारह बजे भैरव के मन्दिर की छत पर लेटे हुए गूजर सरदार ने धीरे से छलांग लगाई और उसके पीछे इधर-उधर पांच-सात बागियों ने उसे कवर किया। सरदार ने बिना आवाज किए, रोशनी में बिना आए हुए, सरक कर निशाना लिया और डी. एस. पी. की चीख से ही लगा कि दस्युओं ने हमला कर दिया है। डी. एस. पी. के गिरते ही पुलिस का हौसला पस्त हो गया। कोई आदेश देने वाला भी नहीं था। वे अन्धाधुन्ध गोली चलाने लगे पर बीच में कीर्तन करने वाले भी तो थे। डाकू भीड़ में घुसते तो उन्हें जगह मिल जाती और उनकी रक्षा भी समूह के कारण हो रही थी।

"डी. एस. पी. साहब घायल हैं, मारे नहीं गए है। पुलिस के सिपाहियों से कोई बैर नहीं है। हम पूजा करने आए हैं, डकैती करने नहीं। पुलिस डी. एस. पी. को लेकर चली जाए, नहीं तो खून खराबा होगा।"

सरदार का एक साथी गरज रहा था।

पुलिस ने अफसर को सम्हाला और सिपाही पीछे हटने लगे। डर के कारण भीड़ गिरते-पड़ते एक-दूसरे को धकियाते-हथियाते दरवाजे की तरफ, अगल-बगल जिधर जगह मिली, भागती रही और भक्तों के वेष में उन्हीं के साथ भागते, रुकते, पुनः भागते, छिपते हुए बागी ताक-ताक कर निशाना लेते लेकिन वे मार नहीं घायल कर रहे थे और मार से अधिक दहशत फैला रहे थे।

पुलिस की व्यवस्था भंग हो गई थी, इसलिए जो जिसकी समझ में आ रहा था, कर रहा था। भूतनाथ को ताज्जुब था कि पुलिस के सिपाही, छोटे थानेदार और हवलदार भाग क्यों रहे है? क्या"'इन्हें गूजर बागियों ने रिश्वत दे दी है अन्यथा डी. एस. पी. के गिरने के बाद भी वे यदि अपना घेरा न तोड़ते तो थोड़े से डाकू क्या कर सकते

थे ''लेकिन भूतनाथ का यह अन्दाज भी गलत निकला। पुलिस में सभी तरह के व्यक्ति होते हैं। एक हवलदार जान पर खेल ही गया। उसने थोड़े से अपने अधीन सिपाहियों को डाटा और लेट कर मोर्चा ले लिया। एक साथ फायर हुआ और कुछ कीर्तनिएं तथा एक-दो बागी गिर गए। चीख-पुकार में सरदार ने देखा कि अब जीतना कठिन है। उस हथगोले का पिन दांत से काटा, और हवलदार की टोली पर धर फेंका।

इतनी ज़ोर का विस्फोट हुआ कि समझा गया किसी ने बम फेंक दिया है हवलदार की टोली के परखचे उड़ गए। गर्भ-गृह के सामने की जगह अब कोई नहीं था विदेशी टोली, फिल्म भूलकर न जाने कब की भाग चुकी थी यो कुछ फोटो वे ले चुके थे। मुमकिन है, उनमें भी कोई घायल हो गया हो।

करना गूजर ने जल्दी-जल्दी देवी पर छत्र चढ़ाया, रुपये-पैसे अर्पित किए और एक बकरे का धड़ अलग कर दिया। रक्त से गर्भ-गृह लाल हो गया। खून की धारा बह उठी। देवी का एक प्रचण्ड जैंकारा उठा और खील-बताशे फेंकते हुए बागी भैरव के मन्दिर की ओर सरक गए। वे अपने घायलों को भी उठा ले गए। कुछ बागी मन्दिर के दरवाजे के पास, आड़ से गोलियां चलाते रहे ताकि कोई भीतर न घुस सके। खेल खत्म हो रहा था।

भूतनाथ भैरव के मन्दिर की ओर आ चुका था। शायद उधर से ही बागी जंगल में उतरेंगे। तब तक लंगुरा वीर उसकी बगल में पहुंच कर, इशारा कर चुका था। वह उत्तेजना से हांफ रहा था—"भागिए बाबू साहब, हथियारबन्द पुलिस फिर मन्दिर को घेर रही है, भागिए, मेरे पीछे। आपको मैं पुलिस की गोली से बचाऊंगा।"

बागियों की दौड़ भी अद्भुत थी। वे बारहसिंघों की तरह भाग रहे थे। दो-चार काफी घायलों को, तगड़े डाकू अपने ऊपर लादे हुए थे। उनकी गति मन्द थी पर फिर भी वे भाग रहे थे। पीछे पुलिस थी और वह फायर करती आ रही थी। भूतनाथ को कवर किए हुए लंगुरा वीर, तिरसूल और सिंहा और जल्दी दौड़ने के लिए भूतनाथ से कह रहे थे।

बाहर जंगल ही जंगल था। सरदार के संकेत पर अचानक लौट कर बागियों ने झाड़ियों-पेड़ों और गड्ढों की शरण लेकर पीछा करती पुलिस पर गोलियों और छर्रों की बाढ़ दागी और एक-दो हथगोले भी फेंक दिए। इस अप्रत्याशित मार से पुलिस के लोग जमीन पर लेट गए और मनमानी बौछारें करने लगे क्योंकि निशाने पर कोई भी नहीं था।

सरदार के पुन: संकेत पर, घायलों को ढोने वाले बागियों को बढ़ते चले जाना था। वह भूतनाथ के साथ काफी साथियों को भगा ले गया, कुछ बागी जो दौड़ने में निपुण थे, पुलिस को धोखा देने और उन्हें वहीं रोक रहने के लिए रह गए। मोर्चा कुछ दांत हांते ही वे भी विहारी हो लिए।

वे खारों-खन्दकों में उतर गए और अब पुलिस की पहुंच के परे थे। पैर कांटों से छलनी हो गए थे पर जान पर आने पर कांटों-कीलों की कौन परवाह करता है। एक वहशी उत्तेजना में सब उड़े जा रहे थे। एक गहरे खार में उतर जाने पर सबको रोका गया और गिना गया कि कौन पीछे छूट गया। कुल तीस आदमी थे जिनमें चार लापता थे। सरदार ने कहा, "वे भी इधर-उधर होकर अड्डे पर आ लगेंगे और मारे गए तो स्वर्ग जाएंगे। इससे बढ़िया मौत और क्या हो सकती है?"

कठिनाई घायलों की थी जिन्हें आराम से लिटा दिया गया था और यह सोचा

जा रहा था कि अब क्या किया जाए।

मन्दिर से भागने की दक्षिण दिशा में, छः मील पर एक गूजरों के गांव में लौट कर ठहरने की बात तै हुई थी सो वहीं चल कर घायलों का उपचार होगा, यह कहा गया और दौड़ फिर शुरू हो गई।

गूजरों की बस्ती में कैसे पहुंचे, भूतनाथ को इस पर विस्मय हो रहा था। वह पसीने से तर था और शरीर कांटों से क्षत-विक्षत। चौधरी गूजर के घर में एक बड़ी-सी पशुशाला थी। उसमें एक भाग ठहरने योग्य था। उसमें धान का पुआल बिछा हुआ था। उस पर सब बागी इस तरह गिर गए जैसे वे अचेत हो रहे हों। सब बन्दूकें और कारतूस की पेटियां उतार कर लम्बलेट हो गए। भूतनाथ भी अपनी बगुर्गी को सिरहाने रखकर धराशाई हो गया और जोरों से सांस लेने लगा।

सांस सध जाने पर सरदार के संकेत पर दो-चार बागी छत पर मोर्चा लेने चले गए और शेष आंखें मूंद कर थकावट की समाधि मे लीन होने लगे लेकिन एक तो कांटे कसक रहे थे, दूसरे इतनी कसरत के बाद भूख भी परेशान करने लगी थी। थोड़ी देर बाद घर का मालिक चौधरी गूजर, साग-परांठा और गरम दूध लाया। उस पर भूखे डाकू बाघ की तरह टूट पड़े। भूतनाथ ने भी हाथ साफ किए।

अब कुछ चैन आया। सरदार ने घर के मुखिया से डाक्टर के बारे में पूछा। बताया गया कि गांव में एक गूजर डाक्टर है। वह गोलियां निकाल सकता है। वह जो नहीं कर पाएगा, उसके लिए जीप में डालकर अधिक घायल बागियों को पास के बड़े कस्बे में भेजा जा सकेगा। वहां अपनी जाति के बड़े डाक्टर की दूकान है। वहां सब ठीक हो जाएगा, सरदार चिन्ता न करें।

अब सब प्रबन्ध हो जाने पर बागियों में बतकही शुरू हो रही थी। कुछ हंसने भी लगे थे। घायलों को ले जाया जा चुका था। सरदार ने भूतनाथ से पूछा, "साहिब, आप क्या सोच रहे हैं?"

"आप लोगों ने तो ठाकुर बागियों को भी मात दे दी लेकिन मैंने एक ऐसा दृश्य देखा कि हंसी आ रही है।"

सबने उत्सुकता प्रकट की तो भूतनाथ ने कहा—"कैला देवी पर एक वायस-चांसलर, विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय, कुछ प्रोफेसरों के साथ बकरे की बलि देने आए थे ताकि वे स्थायी रूप से कुलपति हो जाएं···उनसे तो बागी अच्छे हैं।"

एक जोर का हर्षनाद हुआ। बागी लोभी बुद्धिजीवियों का मजाक बनाते रहे। फिर सो गए।

6

"ए समोलना, वे बाइयां कहां हैं, हाजिर करो, मैं कोई फालतू नहीं हूं। कब तक इस गांव में कुढ़ते रहें···वो नमकहराम, मिजाजी कहां जाकर मर गया···ओफ्फो, क्या मुसीबत है!"

"मेम साहिब। बस बाई लोग आने ही वाले हैं···बस आय गए जे लो साब···जो आए, अरे, बाई सा इतै कूं आइयो···हां इतै क···हम्बे···जे रही मेम साब कच्छ वारी।"

"ए समोखन, तुझे कितनी बार कहा कि तू मुझे कच्छ-मच्छ वाली मत कह कर। मैं जैसलमेर के राजवंश की राजकुमारी हूं। मेरा नाम राजकुमारी…तू चाहे तो प्रिंसेज भी कह सकता है…प्रिंसेज सौभाग्यलक्ष्मी बालूवाला…कह न।"

"परसन्सेज सु…भाग लच्छमी वालूवारी…हः हः हः हः कैसी रही।"

"ईडियट कहीं का, प्रिंसेज यानी राजकुमारी…रहने दे प्रिंसेज…तू राजकुमारी ही कहा कर, राजकुमारी सौभाग्यलक्ष्मी बालूवाला।"

"राजकुमारी सुभागलच्छमी वालूवाली…नहीं वाला, बालूवाला…वाह।"

"चलेगा। बट तू है पक्का ईडियट।"

"वाह ! ईडियट, कितनो चोखो नाम रख दीन्हों बाई जी ने मेरो, लेकिन… सा यह बंट बंट क्यो लगाय दीन्हो ?"

"अबे, 'बट' माने लेकिन, किन्तु, परन्तु, सचमुच ईडियट है।"

"जा ईडियट माने कहा है बाई सा ?"

"ईडियट माने बहुत वाइज, बुद्धिमान, होशियार,…गधा कहीं का।"

समोखन के मुंह पर मतिभ्रम के भाव देखकर सब खिलखिलाए। इस बीच द… बरस से लेकर पच्चीस बरस तक की लड़कियां आकर, आदर के साथ राजकुमा… सौभाग्यलक्ष्मी बालूवाला के सामने आकर बैठ गई थी जिन्हें वह नजरों से नाप रह… थी। उसका एजेंट या दलाल मिजाजी लाल आकर एक तरफ बैठ गया था।

"मिजाजी लाल ! इनके गार्जियन—पेरेण्ट्स यानी अभिभावक पिता-चाचा-भाई, जो भी हों, क्यों नही आए इनके साथ ?"

"बाई साहिब, वे सरमाते हैं। आप पसन्द कर लें, जिन्हें पसन्द करेंगी, उनके सरपरस्त आपसे बिजनेस तै करने आएंगे ?"

"ये सब इसी गांव की हैं ?"

"नहीं, ये न एक गाव की हैं, न एक जाति की…ये…छोड़िए साहिब, आपतो …आप तो पसन्द कर लें, फिर सब बता देंगे।"

"बट…लेकिन, हमें इनका पूरा डिटेल चाहिए न, नहीं तो बाद में ये गाव का आदमी वावेला मचाता है। हम चाहेगा कि पसन्द आ जाने वाली लड़कियां पढ़ें, लिखें, मेम बनें और मौज करें, बस, हम लोग यही चाहता है। बिजनैस नहीं करता, सोशल-सर्विस—सामाजिक सेवा करता है, कुछ समझा समोखन, द ईडियट ?"

"कुछ भी नहीं समझ पायो…मेम साहिब…पै मतलब जही है ना कै आप इन कन्यान कू चोला बदल देउगी, च्यो ठाक है न ?"

"वाह ! एकदम ठीक, करेक्ट…तो हम इनका चोला बदल देंगे। ये बहुत सुख रहेंगी, यहां तो ये बेचारियां सड़ रही है। अच्छा बोलो लड़कियो…अच्छा-अच्छा अंग्रेजी कपरा पहनोगी ?"

कुछ ने सिर हिलाया, कुछ रोने लगी।

"अरे, रोती क्यों हो ? मिजाजी, इस बक्से में कई नाप के कपड़े हैं, दूसरे में जेवर। इन्हें भीतर ले चलो, मैं पहनाती हूं।"

"अजी मेम साहिब, जा ई जगै पै पहनाइए देव, का हरज है ?"

"यू ईडियट। शटअप !"

"जे का है मेम साहिब ?"

सब हंसने लगे पर रोती हुई लड़कियां और अधिक रोने लगी।

"अरी चुप्प है जाव लाली। का गरे पै आरो चल रह्यो है? ···या रोय लेव, सासुरें जाय रही हो न? रोवो···जे खुशी के आंसू हैं न, कोई हरज नाहिं।"

"यू शट अप समोखन, आई मीन, तुम बेवकूफ हो, चुप रहो, तुम सेना का मनोबल गिरा रहे हो, दिस इज डिमारलाइजेशन, यू शट अप।"

समोखन पर बौखलाहट आई और गई। वह माथे पर हाथ फेरने लगा। अबकी बार वे कन्याएं भी मुस्कराई जो उदास थीं या कम रो रही थी। मेम साहब ने स्नेह से कन्याओं को लेकर घर के भीतर जाने की जल्दी दिखाई। मिजाजी प्रबन्ध करने लगा। समोखन सबको हंसाने के लिए मिजाजी के कुछ कहने पर बोला—"यू सट अप इडीआट।"

ज़ोर का ठहाका लगा। समोखन अपनी पीठ पर अपना हाथ मारकर अपनी तारीफ करने लगा, "वाह मिस्टर समोखन लाल, परिन्स आफ धौलपुर, यू सट अप मिस्टर मजाजोमल्ल!"

राजकुमारी बालूवाला भी हो-होकर हंसने लगी। समोखन स्वाभाविक विदूषक था और बड़े काम का आदमी था।

"मिस्टर समोखन, तुम्हारा यह नाम तो बिगड़ा हुआ-सा है, तुम्हारा शुद्ध नाम क्या है?"

"सुद्ध, अजी मेम साब, सुद्ध नाम तो परिन्स सममोहनलाल था, मोहन तो कन्हैया जू को नाम है न ··हम कुंअर कन्हैया हैं। का कहं···गरीब की जोरू, सबकी भौजाई, सो सम्मोहन से समोखन बनाय दीन्हों···डाढ़ी जारिन ने···मरी परें इन अमीरन पै, कालिका विनको डिनर में चोट जाए···हूं।"

"तो मिस्टर मोहन, तुम कुंअर कन्हैया हो?" मिजाजी ने व्यंग्य किया।

"हां, हां, क्यों नहीं, तिहारी आंखिन में मोतियाबिन्द है गओ का? टिपत नाहिं? अरे, दिखात होतो तुम्हें तो हमें कुंअर सा न बनाय लेते।"

मिजाजी समोखन को मारने दौड़ा। वह दांत निकालता भागा। लड़कियों का ध्यान बंट जाने से, उनकी चिंता और आशंका कम हो रही थी।

मेम साहब ने एक लड़की को भीतर पास बुलाया और उसे नंगा हो जाने को कहा। वह सिकुड़ कर रोने लगी पर कोई बचने की सूरत न देख रम्भाती गाय की तरह उसने शरीर से लापरवाह होकर अपने को नंगा कर दिया। मेम साब उसके एक-एक अंग को यों टटोल रही थी, जैसे वह कोई जानवर हो और पशु मेले में बिकने आया हो।

जो कन्याएं किशोरियां थीं, जवान हो रही थी, उनकी तो विशेष छान-बीन हुई। मेम साहब इस मामले में डाक्टरों से भी अधिक तटस्थ और विशेषज्ञ थीं। उसने किशोरियों की लज्जा का भी कोई ख्याल नहीं किया। उसने बड़ी बेशर्मी से बेलाग होकर सवाल पूछे, जिनके जवाब मे किशोरियां रोने लगीं।

"अरे, यह टिसुआ क्यों बहाती हो?···जो रोएगी, सयानी होकर भी, उसे कलकत्ता, बम्बई की सैर कैसे मिलेगी? उसे पढ़ाया कैसे जाएगा? रोज नए-नए कपड़े, जेवर, रुपये कैसे मिलेंगे? रोओ मत, खुश रहो, खुश रहो · अब हँसो···हँसो।"

हंसी की जगह खीसें ही मिली।

सबको रेशमी कपड़े और कुछ बनावटी सोने के सस्ते गहने पहनाए गए। लड़कियों के बाल बांधे गए। मुख और दांत स्वच्छ कराए गए और उन्हें खाने को भी दिया गया। सब कुछ हो जाने तक समोखन उन्हें अपनी मंड़ैती से हंसाता रहा ताकि

उदासी पास न फटके। इस व्यापार में उदासी और निराशा से बढ़कर और कोई बुरी चीज नहीं। अनपढ़ मगर मिट्टी की गंध, नमक और स्वस्थता के कारण कन्याओं का सौन्दर्य चमक उठा। उनमे सुन्दरता कम मगर लावण्य काफी था, ऐसे नमकीन चेहरे, सिर्फ इसी देश मे मिलते है, जिन पर विदेशी वलि-वलि जाते है।

रात भीग रही थी और हवा मे कोड़े मारने का अन्दाज था। समोखन सी-सी करता हुआ बोला,"मेम साव, हमे भी कोई कम्मर-वम्मर मिल जाए, दुसूता ही सही तो अपना भी सिंगार हो जाए।

समोखन की तरफ मेम साहब ने एक पुराना कम्बल फेंक दिया, जिसे चूमकर उसने उसे ओढ़ा और बहू की तरह घूंघट निकाल कर वह उसे उठाकर, आंख मारता हुआ कहने लगा—"मिजाजी। मोहिं सरम आय रही है।"

हंसी की बौछार मे मिजाजी ने उसका कम्बल छीनने की कोशिश की तो वह उसे लपेट कर चिल्लाया—"ए कन्हैया। बचा, जे दूसासन, मेरो चीर-हरन कर रह्यौ है।"

मेम साहब ने आंखें तरेरी कि समोखन अब चुप रहे। अब असली बात होगी। मेम साहब ने मर्मभरी दृष्टि से मिजाजीलाल को देखा तो वह उठकर जाने लगा। समोखन के विनोद जारी रहे।

कुछ समय बाद, एक लकदक सूट मे सजा अधेड़ और खल्वाट व्यक्ति भूतनाथ के साथ, मिजाजी को आगे किए हुए आया। उसके आने पर मेम साहब अदब से खड़ी हो गई।

भूतनाथ और उस साहब को चारपाई पर बैठाया गया। वहां कुर्सियां नहीं थी। चारपाइयां साधारण सी थी पर मजबूत थी। उन्होने ऐसे साहब लोग कभी नहीं देखे थे। अपने ऊपर बिठाने से उन्हें अपना बोझिल जीवन सार्थक लगा। एक दूसरे से कहने लगी—

"बहिना। आराम से, लचक लाकर इन साहब लोगों को बिठाना। ऐसे पाहुन रोज यहा आते है ?"

"हम्बे।"

"और आदर से इनके श्रीमुख से निकली सजी-बजी बातों पर चरराहट के साथ हुंकारी देना।"

"हम्बे।"

"और इनके बैठने से जो गुतगुती लगे तो अधिक चरर-मरर मत करना।"

"हम्बे।"

'और'''और"

"यू शट अप।"

दोनों चारपाइयां चरमरा कर आनन्दित हो गईं। वे अपने को सुहागिन समझ रही थीं और कमजोरी के बावजूद उन्हें झेल रही थीं।

सूट-बूटधारी साहब ने सज्जित कन्याओं का जायजा लिया और उनमे से चार किशोरियों को चुना।

"तुम्हारा क्या नाम है ?"

"लानी।"

"बढ़िया नाम है और तुम्हारा ?"

"कुसुमा।"

"वाह ! तुम्हारा नाम भी स्वीट है, मीठा और तुम्हारा ?"

"सलोनी।"

"गुड, वैरी गुड और तुम्हारा ?"

"राधा।"

"वैरी गुड'''ये नाम ही चलेंगे। इनसे अच्छे नाम कहां मिलेंगे ? मेम साहब बाडी इक्जाम—शरीर-परीक्षा हो गई ?"

"यस सर।"

"तो और सब गर्ल्स को विदा करो और चुनी हुई गर्ल्स के गार्जियन्स को बुलाओ।

मिजाजी ने चार चुनी हुई किशोरियों को छोड़कर, और सबको गहने-कपड़े सहित विदा कर दिया। उनकी बेवस दृष्टि देखकर भूतनाथ का कलेजा मुंह को आया। उसने थूक निगला। गुस्से में उसकी मुट्ठियां बन्ध गईं मगर उसने अपने मन की मुश्कें कसीं और निढाल हो गया।

साहब ने गैरचुनी कन्याओं को दो-दो—चार-चार रुपये भी दिए।

मिजाजी लाल उन्हें लेकर अंधकार में अदृश्य हो गया और थोड़ी देर बाद वह चार आदमियों के साथ वापस हुआ। समोखन साहब लोगों के लिए चाय-पानी में जुटा हुआ था। गांव की चाय देखकर साहब और मेम ने मुंह बनाया और मिजाजी से बोतल खोलने का संकेत किया।

मिजाजी ने कीमती ह्विस्की की बोतल एक झोले से निकाली और छः गिलास भरे। भूतनाथ ने संकेत से शराब पीने से मना कर दिया। इसलिए चार अभिभावकों और मेम साहब तथा साहब को जाम पेश किए गए। पर वे चारों तो सिर हिलाने लगे। तब समोखन चहका—"अरे कद्दू-सा सिर हिलाय रहे हो। पी जाव, गड़प्प कर लेव, जे अमरित है। नासपीटो, ठर्रा पीते-पीते उमिर गुजर गई अब जा अंगूरी को देख के खोपड़ा हिलाय रहे हो ?"

चारों ने मुस्करा के एक-दूसरे को देखा और एक साथ गिलास चढ़ा गए। साहब लोग तो घूंट-घूंट पी रहे थे। समोखन बोला—"साहिब, जा समोखन ससुर ने अंगूरी कबू नाहिं चखी'''अरे मिजाजीलाल जी, एक गिलास हमकू हूं फरमाय देव।"

साहब हंसा। उसके इशारे पर समोखन को भी ह्विस्की मिली। वह बिना पानी मिलाये ही गटक गया और आंखें गोल-गोल घुमाता हुआ होंठ चाटने लगा।

"तो अब बिजनिस की बात हो जाए ?"

"हां, जरूर, पर अभी बैग में एक बोतल और है। गार्जियन्स अभी मूड में नहीं आए। कुछ काजू-वाजू निकालो न, मिजाजीलाल।"

एक-एक दौर और हुआ और नमकीन और काजू कुटकते हुए साहब गम्भीर हो गया।

"देखिए। हम पब्लिक की सेवा करते हैं। हमारी एक संस्था है, 'लोकहित-कारिणी'। हम धनी लोगों से चन्दा लेकर गरीबों की लड़कियों को पढ़ाते-लिखाते हैं। उन्हें काम में लगा देते हैं। उन पर मुसीबत आ जाए तो उन्हें बचाते हैं। आप जब मिलना चाहें, तब अपनी लड़कियों से मिल सकते हैं। उनके साथ रह सकते हैं पर जब

तक ट्रेनिंग न हो जाए तब तक आप उनसे नहीं मिल सकते। आपने इतनी अच्छी संतान पैदा की है, उसे पाला पोसा है, इस कारण आपको प्रत्येक लड़की के लिए पांच-पांच हजार रुपया दिया जाएगा—।" साहब ने प्रस्ताव किया।

चारों चुप थे। वे लड़कियों की ट्रेनिंग का अर्थ समझते थे लेकिन फटेहाली में थे कर्ज और बुरी आदतों के शिकार थे। उनके घर रहन रखे हुए थे। घर में और लड़के-लड़कियां थीं। मरता क्या न करता। लड़कियों की कीमत बढ़वाने की सोचने लगे।

गले में एक घरघराहट हुई। कफ ने कंठावरोध किया। उसे साफ कर एक बोला—"खता माफ हो साब, हम···आप···आपके पहले एक और साहब आए थे। वे···आठ हजार दे रहे थे · हम लाचार मां-बाप हैं साब ··और बाल-बच्चे हैं···हम अपने दिल का टुकड़ा आपको सौंप रहे हैं···कुछ और मिल जाए···।"

"ठीक है मिजाजी, इन्हें दस-दस हजार दे दो और इनसे सर्टीफिकेट बनवा लो कि ये अपनी मरजी से अपनी लड़कियों को, लोकहितकारणी संस्था को दे रहे हैं, ओ. के. ?"

इतना कहकर नशे में मस्त, लापरवाह साहब बहादुर मेम साहब का हाथ पकड़ कर उठ खड़े हुए। फिर रुक कर उन चारों कन्याओं को पास बुलाकर उन्हें टटोलने लगे। बोले—"राधा, तुम्हारी आंखों में बहुत अटरैक्शन है, बहुत कशिश। तुम सच-मुच राधा हो।"

राधा के लज्जा से होंठ फड़कने लगे। उसने आती रुलाई को कस कर रोका और सिर झुका कर खड़ी रही जैसे कसाई के सामने गाय कांप रही हो।

भूतनाथ की भ्रकुटि कमान-सी तनी और फिर उतर गई। उसे घोर शीत में भी पसीना आ गया था।

रंगीन दुशालों से लड़कियों को आवृत कर मिजाजी और समोखन ने उन्हें गांव के एक तरफ खड़ी कार तक पहुंचाया। उनके पिता हाथ में रुपये लिए उन्हें यों देख रहे थे गोया उनका जिगर काट कर उसकी जगह रुपये भर दिए गए हों।

वह बिकी हुई बेबस नजर भूतनाथ के रेशे-रेशे में बिंध गई। पर, वह भी लाचार था। वह रोकता भी तो क्या लड़कियों की बिक्री बंद हो सकती थी।

तथापि, उसने आत्मग्लानि के आवेश में मन-ही-मन एक निर्णय लिया और कन्याओं के साथ पीछे की सीट पर जाकर बैठ गया। आगे की सीट पर साहब मेम साहब की कमर में हाथ डाले हुए कार को हांक रहा था।

समोखन और मिजाजी ने साहब को सलाम किया जो शान के साथ मुंह में कीमती सिगरेट लगाए हुए फुक-फुक कर रहा था और मेम साहब ने नशे में उसके कंधे पर अपना भार छोड़ दिया था।

आस-पास किसी पेड़ से उल्लू बोला था और मेंढक किसी सर्प के मुंह में पड़ कर बुरी तरह चीत्कार कर रहा था।

भूतनाथ को लगा, उसका रक्त किसी ने सिरिंज लगाकर खींच लिया है और वह निर्बलता में पास बैठी कन्याओं के सिर पर, असहाय हाथ फेर रहा था जो सहमी हुई चिड़ियों की तरह एक-दूसरे से लिपटी बैठी हुई थीं। उन्होंने दिल को दिल की राहत के प्राकृतिक नियम से भूतनाथ का वात्सल्य भाव पहचान लिया था और वे उसे इस तरह जकड़े हुई थीं कि कोई उन्हें बलात् छीन कर अलग न कर दे।

किसी बृहत्तर उद्देश्य के लिए तात्कालिक उत्तेजना की दशा में धैर्य रखना कितना कठिन है, भूतनाथ ने सोचा। वह ऐसे समय, सनक भरे विनोद से काम लेकर बढ़ते हुए रक्तचाप को उतारा करता था। वह जब स्थिति के दबाव को और अधिक न सह सका तो उसने साहब बहादुर से पूछा, "सेठ। अब इनका क्या होगा ?"

"आप देखेंगे मिस्टर कि ये खुश रहेंगीं। आप मेम साहब को देख रहे हैं। यही इनका मॉडल है। इन्हें 'लोकहितकारिणी' में सघन ट्रेनिंग दी जाएगी, बम्बई में, जी हां। ये फर्राटे की अंगरेजी, हिन्दी और कई भाषाएं बोलेंगीं। जो सुस्त होंगी, सीख न सकेंगी, उन्हें बम्बई में हमारी 'क्यूपिड' नाम की संस्था सम्हाल लेगी, 'क्यूपिड' माने कामदेव।"

साहब खिलखिलाया। लाड़ में मेम साहब ने उसकी पसलियों में घूंसा मारा।

"ओ, यू आर वेरी नॉटी—तुम बहुत नटखट हो।"

"इन्हें ट्रेनिंग कौन देगा ?"

"मसलन्, राधा को आज मैं ही ट्रेनिंग दे दूंगा। आप चाहें तो आप किसी को ट्रेन कर सकते हैं···कुसुमा दिलचस्प है न मिस्टर···क्या नाम है आपका···हां, मिस्टर गदाधरसिंह।"

साहब फिर हंसा और मेम साहब को गुदगुदाने लगा। मेम साहब हरसिंगार की तरह हंसी के फूल बरसाने लगी, खि, खि, खि !"

भूतनाथ का हाथ पीछे से साहब की गरदन की तरफ बढ़ा परन्तु लौट आया। उससे कोई फायदा नहीं था। साहब को शक न हो जाए, इसलिए उसने हाथ पुनः बढ़ाकर साहब की पीठ थपथपाई, "माफ करें। मुझे अलग रखें, मजाक से भी···वैसे आप बहुत जिन्दादिल आदमी हैं।"

"आदमी ? मिस्टर, मैं आपका दोस्त हूं।"

"हां, हां दोस्त।"

"आप बहुत रिजर्व्ड नेचर, बहुत गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति हैं। इस जरा से जीवन में गंभीर होने लायक कोई चीज है क्या ?"

"हां जीवन जरा-सा ही है, यकीनन, अब जरा-सा रह गया है।"

"क्या मतलब ' कहीं इरादे तो नहीं बदल रहे हैं ? लड़कियों के प्रति हमदर्दी बढ़ रही है क्या ? ···तभी आप इतने सीरियस है, गम्भीर और गूढ़।"

"नहीं सेठ। कोरी सहानुभूति से क्या होता है ?"

"तो एक्टिव हो जाइए न। कुसुमा न सही, लाली, सलोनी सही···ये सब बालिग हैं जनाब, कोई जुर्म नहीं बनता···या राधा पर नजर है ?"

साहब खिलखिलाया। भूतनाथ के पेट में गोला-सा उठा, उसका जी मिचलाया। कहीं कै न हो जाए। उसने खिड़की खोलकर थूका और कहा, "नहीं सेठ, मैं दूसरी तरह का व्यक्ति हूं।"

"वो तो मैं देख रहा हूं।"

"नहीं, अभी तो आप देखेंगे···नहीं नहीं···आप देख ही रहे हैं।"

"अजी, हम क्या देखेंगे ? हम बहुतों को देख चुके है। आपको भी देखेंगे। आज तक कोई ऐसा मिला नहीं जो जर, जमीन, जोरू से खुश न होता हो और आप···कोई प्रिंस हैं क्या ? मन मर गया या कुव्वत ही नहीं है ?"

मेम और सेठ साहब, दोनों कानफाड़ू अट्टहास में मस्त हो गए, इतने कि दुर्घटना

पर फैलती है। डकैतों, तस्करों और नारी-व्यवसायियों में ही नहीं, अन्य जहां जो गड़बड़ चल रही थी, वहा और अब तक ऐसे निडर और निर्लज्जों में भी डर घुसने लगा कि यह भूतनाथ नाम का पत्रकार तो विलक्षण है पर यह है कौन ?

राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के पुलिस महानिरीक्षकों की बैठक हुई, जिसमे भूतनाथ की करना गूजर के साथ सांठगांठ साबित हो गई। लेकिन उत्तर प्रदेश के महानिरीक्षक ने, भूतनाथ का इस्तेमाल किया जाए, इस बात पर बल दिया और उसके इस्तेमाल के लिए जरूरी था कि उसे गिरफ्तार कर लिया जाए ताकि डकैतों के गिरोह समझ लें कि पुलिस उसकी दुश्मन है और वे भूतनाथ को अपनाएं। एक अधिकारी बोला—"आपने गौर किया होगा कि भूतनाथ की रपट में डकैतों को अपराधी, विकृत और बर्बर कहा गया है लेकिन सारा दायित्व, सरकार और समाज व्यवस्था, सोशल आर्डर पर डाला गया है। सीधा अनुपात बना लिया गया है कि यदि ऐसी सत्ता, समाज और व्यवस्था होगी तो ऐसे ही दस्यु जनमेंगे और ये दस्यु जंगल में ही नहीं, जंगल के डाकू तो बहुत 'बेचारे' हैं, कम हानिकर है, बड़े और खतरनाक दस्यु तो शिक्षा, व्यवसाय, नौकरशाही — नेतृत्व में सभी जगह हैं। उसने कहा है कि इन विधि-सम्मत या कानून के भीतर चालाकी से, कानून को तोड़ने वाले दस्युओं के विरुद्ध जब तक व्यापक पैमाने पर कार्यवाही नही होती तब तक दस्यु-उन्मूलन का सपना देखना बेकार है··· भूतनाथ इस दस्यु समाज को ही उलटना-पुलटना चाहता है।"

"लेकिन वह तो पुलिस, न्याय-सेना सभी को डाकू मानता है। जब सभी डाकू हैं उसकी निगाह मे तो डाकू, डाकू को कैसे पकड़ सकते है ?"

'नहीं, वह यह कहीं नही कहता अपनी रपटों में कि सब डाकू हैं। वह कहता है जो अभी तक डाकू नहीं है, जिन्हें डाकू बनने से घृणा है, जिनमें अब भी मनुष्यता है, चेतना है वे अपने-अपने क्षेत्र के डकैतो, तस्करों, अपराधियों के विरुद्ध खड़े हों, उन्हें एक्सपोज करें और यदि वे ऐसा नही करते तो वे एक भ्रष्ट-व्यवस्था के हमदर्द होने से डाकुओं को डाकू होने दे रहे हैं, इसलिए वे भी अपराधी हैं।"

तीनों अधिकारी हंसने लगे।

"यह ठीक है कि सब जगह डाकू हैं पर अधिकतर लोग, हर क्षेत्र में अभी भी भले है। फिर जो डाकू हैं और कानून की गिरफ्त से बाहर हैं, उनका हम क्या कर सकते हैं ? इसलिए, पुलिस-अधिकारी यही कर सकते है कि जो कानून तोड़ता हुआ साबित हो जाए, उसे सजा दिलाएं। हम समाज-दार्शनिक या सोशल-फिलोस्फर नहीं है, न इन्कलाबी हैं, हम कानून और व्यवस्था के स्थापक हैं···यह भूतनाथ सपने देख रहा है या यह आदमी न होकर भूत है या उस पर किसी पवित्रात्मा—किसी परफैक्शनिस्ट—किसी पूर्ण शुद्धतावादी का भूत सवार है, हनुमान जी उसकी रक्षा करें।"

जोर का अट्टहास हुआ। तीनों मोटे-तगड़े आदमी थे। उनके महाहास्य से टेबुल पर कांच का शीशा थरथराने लगा।

"···तो क्या किया जाए ?"

"साफ है कि इस पगले भूतनाथ की हमें जरूरत है। इसे कुछ वक्त के लिए डकैतों के साथ साठगांठ का आरोप लगाकर बन्द कर देना चाहिए। इसका खूब प्रचार कर दिया जाए। फिर उसे चुपचाप छोड़ दिया जाए और उसे कह दिया जाए कि बरखुरदार एक रपट अखबार को और एक हमें भेजते चलो। डाकुओं की गतिविधियों की रपट देना रहे तो हम उसे माफ कर देंगे···ठीक है ?"

निर्णय के अनुसार भूतनाथ को इटावा से दिल्ली आते समय, सरे आम, गिरफ्तार कर लिया गया और इटावा की जेल में, ऊंचे क्लास में रखकर उसकी आवभगत का प्रबन्ध कर दिया गया। उसकी लिखी रपटें भी जेल के भीतर पहुंच चुकी थीं और वह काफी प्रसिद्ध हो गया था। डकैतों में रहने के कारण लोग उसे रहस्यमय और साहसी समझकर एक आतंकमिश्रित आदर की दृष्टि से देखने लगे थे। भूतनाथ को इस दृष्टि से एक पुलक तो महसूस होती थी पर लोगों की सरलता पर हंसी अधिक आती थी।

जेल के अधिकारियों से सिपाही तक, सभी जानते थे कि भूतनाथ अपराधी नहीं है बल्कि अपराधियों के भीतर घुसकर, उनकी टोह लेता है। वह उनसे दिली सहानुभूति भी रखता है। उन्हें पकड़वाता नहीं है न पुलिस का वह मुखबिर है। वह एक हमदर्द पत्रकार है जो बागियों को प्रसिद्धि दिला रहा है, उनकी वीरता और बेचारगी का यश गा रहा है।

भूमिगत-अपराधी-जगत् के लिए ऐसा व्यक्ति बहुत उपयोगी था क्योंकि अधिकतर बड़े लोग बागियों और अपराधियों से घृणा करते हैं, उन्हें नीची निगाह से देखते हैं जबकि भूतनाथ उन्हें किसी बेबसी में बिगड़े हुए बच्चों की तरह देखता है। यही नुक्ता उसकी रपटों में बार-बार उभरता था और यह कि बागियों की निर्दयताओं और विकृतियों को भी भूतनाथ शैतान बच्चों की हरकतें मानता था। इस रुख से भूतनाथ जेल में बड़े अपराधियों का हीरो बन गया।

इटावा की जेल में उसे सबसे दिलचस्प ठाकुर और गैरठाकुरों की प्रतिद्वन्द्विता लगी। ठाकुर डकैत, गैर ठाकुरों को असभ्य, स्तरहीन और छोटी जाति-पांति का मानते थे। उनकी नजर में उनका कोई स्टैंनडरड (स्टेन्डर्ड) नहीं है। वे अन्य जातियों के बागियों को देखकर बड़प्पन से मुस्कराते जैसे वे नीच हों और उन्हें बागी कहना ही बेमानी है। बागी तो केवल ठाकुर-बाम्हन ही हो सकता है।

चामिल (चम्बल) पार के एक मल्लाह डकैत में भूतनाथ ने अधिक रुचि दिखाई। उसने उसके सामने ऊंची जाति के बागियों के झूठे बड़प्पन की निन्दा की और बताया कि वह किसी ठाकुर-बाह्मन बागी का नहीं बल्कि करना गूजर के गिरोह में रहा है।

"साहब, आप समझते हैं। मेरा नाम कालिया-कल्लू मलाह है—काला भुजंग हूं न, इसीसे···मालिक, आपको पुलिस भी मानती है। आप मदद कर दें तो मैं आपको क्वांरी मलाहिन के गिरोह की सैर करा सकता हूं। क्वांरी का नाम सुना है न?"

फिर स्वर को अत्यन्त धीमा कर कालिया कहता गया—"साहब, ठाकुर बीरसिंह-धीरसिंह से उसकी दुश्मनी है। उनसे चलती है। आप मुझे इस जेल से निकलवा दें तो मैं आपको ऐसे मजे कराऊंगा कि आप कभी भूल न सकेंगे···।"

"कैसे मजे?"

"अरे साहब, यह क्वांरी है न, बहुत मजेदार औरत है। आपने कहीं ऐसी मादा देखी ही नहीं होगी। हां मालिक, एक बार उसकी नजर पर आदमी चढ़ जाए तो उसे बादशाह बनाकर रखती है।"

"लेकिन वह तो क्वांरी है न?"

"साहब, आप भी रहे पूरे भोले बालम ही। अरे हम मलाहों में, ऊंची जाति वालों जैसा नाटक नहीं चलता। जो जिसके जी में आ गया, खुले आम करता है। औरत और मर्द का मन हो तो मलाह और किसी की परवाह नहीं करता, न जाति की न बिरादरी की, न और किसी की···आपने पुरानों में पढ़ा होगा, व्यास जी एक मलाहिन के

बेटे थे। पारासर नाम के एक ऋषी महाराज उसकी बादल की घटा जैसी छवि पर टें बोल गए। कहने लगे···छोड़िए···बड़ों की बातें हैं और साहब, वो इतनी सुन्दर थी कि···दिल्ली के राजा सांतनू उस पर आसिक हो गए और उसी से इन ठाकुरों का वंश चला। ये ठाकुर हमे नीच कहते हैं पर ये व्यास मल्लाह की औलाद है।"

भूतनाथ हहरा कर हसने लगा, "अरे कालूराम, तू तो बहुत ज्ञानी है।"

"मालिक, गियान-धियान, सब पर तो इन ऊंची जाति वालों ने कब्जा कर लिया। हम नाव चलाते हैं और मछलियां पकड़ते हैं, टोकरियां बनाते हैं, खेती भी कर लेते है। हम गरीब है नीच है। हमारी कोई परतिष्ठा नही है साहब। हमारे बालक इनकी सेवा करें, हमारी औरतें इनकी रखैलें बनें···मालिक, देखना आप, इन पर व्यास मल्लाह का सराप लगेगा। मल्लाह की संतानें है ये ठाकुर, इसलिए हम से ये बैर मानते है और हमे नीचा दिखाने मे ये अपनी सान समझते हैं···पर, हमारी क्वांरी मलाहो की नाक ऊंची करेगी ··वह चम्बल के पार जो क्वारी नदी है न, उसी पर उसका नाम है, क्वारी, कितना प्यारा नाम है और वह सच में क्वांरी है। वह किसी से ब्याह नही करती, बस जो नजर मे जंच गया, उसे परेमी बना लेती है···मालिक वो आपको देखते ही आप पर आसिक हो जाएगी···आपने ऐसी सांवली-सलौनी आज तक न देखी होगी।"

भूतनाथ कालिया की वर्णन-शक्ति पर मुग्ध हो गया—"तू सचमुच वेदव्यास का वंशज है। वह तुम्हारी सत्यवती का ही पुत्र था। तू तो वर्णन में उससे भी चतुर है, वाह !"

"साहब। जब क्वारी पतलून और फौजी कमीज पहन कर, अपने भौर काले बालों मे रिबन और फूल लगाकर, काजल या सुरमे से, आंखों की कोरें बढा कर, छाती उभार कर, बन्दूक हाथ मे लेकर खड़ी होती है तो मालिक, मेरे मन की मछलिया उछलने लगती हैं पर वो तो घमंडिन है, उसका इस्टेन्डरड इतना ऊंचा है साहब कि हम से तो वो 'कालिया कालिया' कहकर नौकर का काम लेती है। हमने उसके लिए जान लड़ा दी साहब, पर उसने भर आख एक बार भी नही देखा।"

"बड़ी जालिम है।"

"अरे, नही मालिक। उसने कहा है कि जो बीरसिंह-धीरसिंह के गिरोह को हराने और उनके सिर काट कर ले थाने में आगे रहेगा, 'क्वांरी' उसे बरेगी। उसे परमानेंट कर देगी।"

"ये परमानेंट करना क्या है ?"

"अरे, आप नही जानते ? वह सहजादी सुभाव की है न। किसी परेमी को ज्यादा नही पालती, भगा देती है और गुस्ताखी करने पर गोली मार देती है···बड़ी चण्डी है साहब ··और फिर मुक्का फाड़ कर हसती है, गालियां देकर मजा लेती है—"साला मर गया, बेवकूफी कर रहा था क्वारी के साथ। वो समझता था, वह मुझे रखे हुए है। अरे क्वारी मरदुओं को रखती है और मन भर जाने पर 'दन्न' और सब खेल खतम'···कमाल की वैम्पर है। उससे डर भी लगता है और उसकी तरफ मन भी खिचता है। उसे खुश करने के लिए गिरोह का हर आदमी जान की बाजी लगाए रहता है मगर उसकी एक ही रट है कि बीरसिंह-धीरसिंह के सिर लाओ।"

"देखो कालूराम, तुझे कालराम कहूं, कहना तो कृष्ण चाहिए, कृष्ण से ही तो काला बना है पर तुम वह नही पाओगे, इससे तुम्हें कालराम कहेंगे, मंजूर है ?"

"सागुर कालिया तो कालिया ही रहेंगे, किसन कहो, या कालू या करिया कहो।

रहने दें बाबूजी, कालिया ही भले। उसमें प्यार है। क्वांरी जब कालिया कहती है तब दिल ऐसे उमंगता है जैसे कोई पोखरा, पानी बरसने पर···हाय, उसके मुख से कालिया की पुकार कब सुनने को मिलेगी···और मालिक एक बात और है। कालिया, गढ़ मांडौ के राजा जम्बै का राजकुमार था, सेनापति भी, हां मालिक, तो वो जो करिंघा, कालिया था न, उसने महोबा के दस्सराज-बच्छराज पर चढ़ाई कर दीन्हीं, क्वांरी के गिरोह की तरह, रात के अंधेरे में। उसने दस्सराज-बच्छराज को मार डाला और रानी देवै का नौलखा हार छीन लिया। हाथी पचसावत को भी, वो जबर ज्वान कालिया हांक ले गया और दस्सराज की रंडी को भी ले गया साहब। मांडौ में वह हाथी पर चढ़ता था और दरबार में बेसवा को नचाता था। उसके मजे हो गए थे, मालिक, उस कालिया के। मैं उसी कालिया का औतार हूं, बाबूजी। पर क्वांरी नहीं मानती। वो कहती है कि तू जमराज के कलुआ कुत्ते का औतार है···।"

कालिया मुंह फाड़ कर हंसा। उसके काले मुंह में सफेद दूध से दांत चमक रहे थे। वह सचमुच बहुत तगड़ा था, राक्षस जैसा पर हथकड़ी-बेड़ी में लाचार था। उस पर कई कत्लों के आरोप थे जो सही थे। वह क्वांरी के इशारे पर मनुष्यों को मछलियों की तरह मार डालता था। भूतनाथ उसके भोलेपन और भयंकरता को ताकता रह गया।

"तो तू कालिया ही रहेगा? तू अवतार है आल्हा-ऊदल के पिता के हत्यारे करिंघा का?"

"हां महाराज, पर वो कमबख्त क्वांरी मानती नहीं है।"

"अरे, वह भी मानेगी। अवतार जब तू है ही तो सभी मानेंगे···अच्छा, अगर तुझे छोड़ दिया जाए तो तू क्या-क्या करेगा?"

"एक तो आपको क्वांरी से मिलाऊंगा। दो, मैं बीरसिंह-धीरसिंह के मूड़ काटकर क्वांरी के पैरों में डाल दूंगा और तीन, क्वांरी के पैर दबाऊंगा, हः हः हः हः हः।"

'क्वांरी के अलावा क्या तू कुछ और नहीं सोच सकता?"

"नहीं", कालिया कान पकड़ कर कहने लगा, "नहीं, क्वांरी की सोभा आंखों में ऐसी बसी है साहब कि बस उसी की लौ लगी है। ये जिनगानी तो उसी के लिए अर्पन है, मालिक। दूसरे जन्म में भी उसी का पीछा करूंगा, उसे पाकर ही मेरी आतमा सान्त और सुखी होगी साहब, मैं चौरासी लाख जोनियों में भी उसके लिए भटकने को तैयार हू।"

भूतनाथ सिर झुका कर सोचने लगा यो कालिया की बातों का रस उसे बांधे हुए था···ओह, कैसी बर्बर आसक्ति है। क्या एकाग्रता है···घोर बदसूरती में ही घोर खूबसूरती पलती है···नाटकीयता क्या वही होती है, जहां दो अतियां मिलती हैं? आदमी को किताबें कितनी जानकारी देती हैं, पर बदले में वे उससे यह भावना की ऊर्जा छीन लेती हैं। इसलिए अति पढ़े-लिखों के जीवन और कला में विवेक व्याप्त हो जाता है मगर यह ताप, यह ज्वार, यह तूफान गायब हो जाता है और यदि यह नहीं है तो उस ठंडे, बेजान-ज्ञान को तो छुआ नहीं जा सकता। उसे छूना जैसे लाश को छूना है, लचक-रहित तख्ते-सा जकड़ा शव। निस्संग ज्ञानमुद्रा और शव में क्या अन्तर है···जबकि यह कालिया, क्वांरी के ध्यान से ही टेसू के फूल की तरह खिल जाता है, ज्ञानी और गंवार में कौन रंजन के गुण रखता है? निश्चय ही गंवार ज्यादा दिलचस्प होता है, उसमें प्रबल जीवनतरंग होती है···तो क्या मैं मानव-मन की भौतिकी का अध्ययन कर रहा हूं··· मनोभौतिकी-साइको-फिजिक्स—खूब, मैं मात्र पत्रकार नहीं, मनोभौतिकी का जिज्ञासु हूं और इस सभ्यता-संस्कृति से विचलित (डीविएंट) गिरोहों में जाकर उनकी जीवन-

तरगों का आकलन कर रहा हूं···क्या मेरे द्वारा कोई मनोभौतिकी नाम से नयी विज्ञान-शाखा शुरू होने जा रही है, जिसमें सभ्यों और असभ्यों या व्यवस्थितों और विचलितों की तुलनाओं के आंकड़े या ब्यौरे हों ? क्या कोई सामान्य निष्कर्ष निकल सकता है, मनुष्य के मानसिकलोक के विषय में ?

"अरे, बाबू साहब। आप तो फिर अपने में गड़ागप्प हो गए···जो बहुत बु बीमारी है साहब, जाय है गई ताको कुंडा बैठ जाए···ताके बतासे कुत्ता खाय जाएं·· आप सुन रहे है न साहब,···अरे, अपने तहखाने से बाहर निकलिए मालिक, वां रह फम गए ?···"

भूतनाथ के होठों पर आत्मीय मुस्कान नाची और उसकी बन्द पलकें पखुरियों की तरह धीरे-धीरे खुलीं। उस पर एक चमक थी, जैसे उसने गहरा सत्य देख लिया हो, जैसे वह एक नयी राह पा गया हो और कुछ नया पा जाने से चेहरे पर जो अलौकिक छवि आ जाती है, जैसे कोई किरणजाल पड़ रहा हो उसके मुख पर, ऐसा हो गया उसका चेहरा···कालिया विस्मित होकर देख रहा था। उसकी बकबक बन्द हो गई।

भूतनाथ ने कालिया के कंधे थपथपाए और उसके सिर पर हाथ फेर कर एक तरफ चल पड़ा। कालिया ने सोचा, साहब को यह क्या हो गया, अभी कुछ देर पहले तो इसका माथा ठीक था···जान पड़ता है, क्वारी के ध्यान में है और फिर कालिया हो-हो करने लगा, हः ह ह ह.।

भूतनाथ अपनी जगह आकर अपनी दिनचर्या में लगा। फिर सो गया। रात में वह अनुमति लेकर जेलर से मिला और लम्बी बातचीत के बाद कइयों को फोन खटकते रहे। ऊब भरी प्रक्रिया के बाद जेलर के पास ऊपरी अफसरों से भेजा गया एक मौखिक आदेश आया, कहा गया कि लिखकर बाद में भेजा जाएगा।

आधी रात के कुछ पहले एक भारी भरकम जेल-कर्मचारी कालिया मल्लाह की कोठरी में पहुंचा और प्यारभरी गाली देकर उसे पास बुलाया और कहा कि वह अभी जेल के फाटक पर चले, एक लम्बू उसका इन्तजार कर रहा है। कालिया को लगा जैसे वह उड़ने लगा हो। हथकड़ियां-बेड़ियां निकाल दी गईं। वह कोठरी में ही उमग से इतनी जोर से उछला कि उसका सिर छत से टकरा गया। आंखों के आगे लाल लाल तिनके-से उड़ने लगे। कर्मचारी ने उसे फिर गालियां दीं, "अंधा, ऊपर छत नीची है, यह भी नहीं सूझता ? पागल हो गया क्या छूट की खुसी में, पर तू जमराज का भैंसा है, साले तुझे छोड़ा नहीं जा रहा है, तुझे जिबह किया जाएगा, समझा ? तू बलि का बकरा है कालिया, चल अब। सिर दुःख रहा है, हः हः हः हः। कितना गधा है, खोपड़ी फोड़ ली तूने, च-च-च-चल अब।"

भूतनाथ और कालिया कब जेल के फाटक से छोड़े गए, कब उनका सफर का सामान उन्हें मिला, उनके थैलों में क्या, किसने रखा, कब कपड़े बदले गए, कब कैसे वे इटावा की सड़कों पर चले और कब, किस तरफ पैदल चलते हुए सवेरा हो गया, यह समझ से परे हो गया था। वे बस भागमभाग किसी तरह पुलिस के जाल से छूटी मछलियों की तरह दौड़ रहे थे। छोड़ने वालों ने भूतनाथ को सावधान कर दिया था कि साधारण अधिकारी और सिपाही, ऊपरी अफसरों से उसकी पहचान और प्रतीति रमेन्द्रनाथ को नहीं जानते, न उन्हें बताया जा सकता है। और कालिया को भी जेल से

भागा हुआ ही दिखाया जाना है। इसलिए उन दोनों को पुलिस से डरना चाहिए अन्यथा वे यदि जिन्दा रहे, पुलिस की गोली से बच गए तो फिर लौट कर हवालातों और जेलों में शंट होते रहेंगे।

भूतनाथ के मन में रेलवे डिब्बों और इंजिनों की शंटिंग उभरी, वह मुस्कराने लगा।

भूतनाथ और कालिया इटावा से लखना की ओर, खेतों में से भागे थे ताकि पुलिस का टंटा न रहे तो भी गश्त से लौटे या किसी और काम से आते-जाते सिपाहियों का डर था। यों तो अब कालिया जैसा दानव भूतनाथ के साथ था, पर भिड़ने से आदमी नजर में आ जाता है और चल रहे काम में बाधा पड़ती है। भूतनाथ झंझटों से मिलने वाली ऊब और व्यर्थता को बहुत दु:खद मानता था ' कहीं कोई लफड़ा न हो जाए'''।

लखना कस्बे में पहुंच कर आराम और तैयारी के लिए भूतनाथ अपने एक परिचित के घर गया। वहां दिन-भर वे दोनों खा-पीकर सोते रहे। शाम को कपड़े-लत्तों, अस्त्र-शस्त्रों की संहाल की गई। भूतनाथ के जानकार ने कालिया के लिए भी एक बन्दूक का प्रबन्ध कर दिया और कारतूसों का भी। रामपुरिया चाकू, ईन्धन और आदमी, दोनों को काटने में कारगर कुल्हाड़ियां भी झोलों में रख ली गईं, टार्चें और सुई-डोरे भी!

तीर्थयात्रियों के वेष में, धर्मप्राण-भारतीय जनता के बीच विचरण सबसे सरल होता है, सहज और आदरास्पद। कालिया चेला, नौकर, रक्षक, सब कुछ और भूतनाथ गुरु-पथप्रदर्शक-ज्ञानी और हर हालत में हर बात के लिए उत्तरदायी। यात्री बनकर चलने में यह भी आराम है कि सामान लाद कर चलने में कोई आपत्ति नहीं करता—

"आप कहां जा रहे हैं?"

"अभी वैजनाथधाम, वैसे चारधाम की यात्रा है। चरैवेति चरैवेति'''जीवन तो पानी का बुदबुद है, भाई।"

लोग गद्गद् हो जाते हैं। चूंकि वे घर-धरती के खूंटे से बद्ध होते हैं, इससे वे ऐसे पुण्य-कमाऊ सपूतों को बड़ी हसरत से ताकते रह जाते हैं। काश, उन्हें भी कभी पुण्ययात्रा का अवसर मिल पाता।

निर्विघ्न दोनों गुरु-चेला चकरनगर आ लगे और वहां उन्होंने फिर एक परिचित के यहां डेरा डाला। यह पाण्डवकाल की एकचक्रानगरी अब चकरनगर है, मगर है सच में चक्करनगर। यहां से दस्यु क्षेत्र में प्रवेश होता है और सभ्य-क्षेत्र में भी। यह दोनों क्षेत्रों को जोड़ने वाला उपनगर है। यह तीर्थ भी है क्योंकि यहां पाण्डवों ने बकासुर को मारा था'''अजी, असुर तो सुरों की दी गई उपाधि होगी। असुर नाम तब अनार्यों या दस्युओं को दिया जाता था। दस्यु लूटते और आर्य व्यवस्था को नहीं मानते थे'''तो बकासुर भी कालिया का पूर्वज रहा होगा। भूतनाथ को कौतुक सूझा—"प्रिय शिष्य, कालनाथ।"

"जी गुरुजी?"

"कालनाथ। तुमने जिज्ञासा भी नहीं की कि इस एकचक्रानगरी का महात्म्य क्या है?"

"गुरु! मैं सब जानता हूं। यहां की महिमा तो मैं ही जानता हू, गुरुदेव। यहां छंटे हुए बदमाश रहते है।"

"चेला। भाषा ठीक करो। तुझे इतना सिखाता हूं, भूल जाता है, कष्ट भोगेगा तेरा चोला।"

देती है, वह बुद्धि को चकराती है, तभी उसके पास बसा उपनगर चकरनगर कहलाता है।

घाट पर, दोनों किनारे कुछ झोपड़ियों और एक-दो छोटी-मोटी पत्थरी कोठरियों को छोड़कर सारा किनारा सुनसान है। नावें नदी के किनारे बंधी जल में हवा से हिलती हुई सपनें ले रही हैं। हवा रह-रहकर चलती है जैसे वह भी किसी षड्यंत्र में हो। जब-तब जलपंछी चिहुंकते हैं, कभी मछली की उछाल के स्वर सन्नाते वातावरण में सेंध लगाते हैं और फिर उस पर थिगड़ी लगाकर बन्द कर देते हैं।

भूतनाथ को दोनों छायापुरुष वहीं छोड़ नदी पार करने के लिए उथला स्थान ढूंढने चले गए।

भूतनाथ घाट से कुछ दूर जाकर चम्बल के किनारे झुककर पानी अंजुरी में लेता है और उसे मुंह में डालता है। कलेजे तक ठण्ड की लकीर बनती चली जाती है। वह चारों तरफ सतर्क मुद्रा में देख रहा है—

'''तो यह है चर्मण्वती। इसका पानी रक्त को उत्तेजित करता है, उसे तीखा बनाता है। जिसके भीतर चम्बल का जल उसके अन्तःकरण को सींचता है, उसमें दुस्साहस की उपज होती है'''उधर दह में चम्बल कैसी हौंक रही है, कसा 'हाक्हाक्' शब्द करती है या 'वाक्वाक्' कहती है। चामिल के तटवर्तियों की बोली के पीछे जो हहर सुनाई पड़ती है, क्या यह नदी का नाद है और उधर पत्थर से कूदते पानी की कल-कल ध्वनि कैसी क्रीड़ामयी है जैसे ऊधमी बच्चों की किलकिलाहट के पीछे भागती मां हो'''यह नदी नहीं, कोई जीवित सत्ता है जो नदी बन गई है पर सजीवता लुप्त नहीं हुई है'''यह अशरण-शरण, अदृश्य सरिता-सत्ता है कोई, जो यहां आने पर सभी को अभय दे देती है'''इसकी इस गोदी में जो आ गया, वह भय से मुक्त हो गया'''दिल्ली से, तुर्कों से हारकर तोमर आए, भदौरिया आए, पठानों-मुगलों के मारे हुए ठठ्ठ के ठठ्ठ पीछे हटते हुए शूरमाओं ने इसके अंचलों में सिर छिपाया। अंग्रेजों के जमाने में बागियों ने इसी की गोद में अड्डे बनाए और सत्ता को चुनौती दी।

'''इसकी लहरों मे तलवारों की छपाछप सुनाई पड़ती है। इसकी गति में सेना की तेज चाल है, यह किसी दीवानी फौज की तरह दौड़ती है। इतना रक्त पीने पर भी इसमें कितनी उज्ज्वलता है। इसने कभी किसी का घमण्ड भरा अधिकार नहीं माना'''कैसी शून्य मे—चंद्रहास-सी चलती जा रही है, गतिमन्त, घुमावोंभरी, मदोन्मत्त और अनूठी'''भूतनाथ चम्बल का साक्षात्कार कर रहा था। वह उसे अन्धकार के समुद में पतली शुभ्र दीपनागिन-सी लगी।

"गुरुदेव! उतार मिल गया, आप फिर सोच-विचार के भंवर में पड़ गए। यह चामिल का भंवर है साहब, इसमें जो गया, गया काम से, बस डूबते-उतराते रहो'''चलिए, चामिल मैया ने मारग दे दिया।"

तीनों छाया-मानव बांसों के सहारे भय और शीत-आतंकित उस अंधेरे मे चम्बल को पार कर रहे थे।

8

रोज़ी और मैरी की वृत्तचित्र मण्डली, कैला देवी की उस रात की दु.साहसी-दुर्घटना को भूल नही सकी। रात मे रोजी जब आंखें मूदती तब उसे बड़ी-बड़ी मूछों और लाल-लाल आंखो वाला गूजर डाकू दिखाई देता और घायल, तड़पता डी. एस. पी.। उसकी टोली के कई साथी तो भाग लिए थे लेकिन रोज़ी और मैरी यह जानकर कि भारतीय डाकू भी उनसे कुछ न कहेंगे, एक कोने में दुबक कर, कुछ छायाचित्र लेने मे कामयाब हो गई थी। वह उनकी अमूल्य उपलब्धि थी, जिसे वे गर्व से दिखाया करती थी और जिनके निगेटिव उन्होने छुपा कर रखे थे ताकि कोई और उनसे फोटो विकसित न कर सके।

रोज़ी और मैरी के लिए तो यह खेल था, एक रोमाच, एक हद तक डालरो की कमाई भी थी, लेकिन उनकी टोली मे ऐसे भी साथी थे, जो भारत में राजनैतिक रोमाच के लिए आए थे लेकिन वे अपने गूढ उद्देश्य को स्वयं अपने से भी छुपाए हुए थे। वे रोज़ी, मैरी और उनकी बराबरी के युवकों के प्राकृतिक-उत्साह में साथ देते और उनके ऊधमों और कौतुकों मे ऐसे घुल-मिल जाते जैसे वे सिर्फ फिल्में उतारने और जन-जीवन को देखने आए है। उनकी टोली मे दो व्यक्ति वृहत्तर और गूढतर रोमाच के प्रेमी थे—मिस्टर शेपट्सबरी और डाक्टर स्टेनबेक। डाक्टर स्टेनबेक फिल्मकला के विशेषज्ञ और इस टोली के सहायक इचार्ज थे, मिस्टर शेपट्सबरी इंचार्ज। युवक मिस्टर राबर्ट और मिस्टर ब्रोगले, रोज़ी और मैरी के मित्र माने जाते थे और बचपनी—कौतूहल और क्रीड़ा मे लड़कियो को भी हराते थे। वे सदैव किसी खेल, किसी 'फन' की जुगड़ में रहते थे और उनके अट्टहासो से लडकियों और महिलाओ मे स्फूर्ति और आनद बना रहता था। वे ऊब की छाया पड़ने के पहले कुछ न कुछ विनोद की सामग्री जुटाते रहते थे।

रोज़ी-मैरी टोली के एक-दो व्यक्ति उस गूजर डाकू के काण्ड में घायल हो गए थे, जिसको उन्होने "नेवर माइण्ड"—परवाह नही, के मन से लिया था। अमरीका के लोगो मे साहस और उत्साह के लिए कीमत देने, कष्ट उठाने की प्रवृत्ति है, रोने-बिलबिलाने का कायर रुख कम है। वे खतरो से खेलने को अपनी उन्नति और वर्चस्व की कुंजी मानते है।

करौली से यह टोली भरतपुर आई और घायलों को वहा से दिल्ली रवाना कर धौलपुर जा पहुची। जिनसे बातें हुई, उन सबने एक स्वर से कुछ बागियों के नाम लिए, जगजीतसिंह उर्फ जगा, आगरा-बटेश्वर क्षेत्र मे सक्रिय है, दलपतसिंह उर्फ दल्ला, मुरैना-शिवपुरी क्षेत्र मे, अहीर दलाराम उर्फ नेताजी, मैनपुरी-इटावा क्षेत्र मे और दस्यु सुंदरी क्वारी या कुआरी जो दुश्मनों और पुलिस के लिए आरी (काठ चीरने की आरी) है, चम्बल-क्वारी-नदी क्षेत्र मे चकरनगर और थाना सहमों (म० प्र०) के बीच विचरती है। वैसे, डाकुओं और हवा के झोंकों का कोई ठिकाना नही होता। वे कब कहा पहुच जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। वे कही भी मिल सकते हैं, राजधानी के किसी होटल मे, किसी कालेज मे, किसी राजनेता के बैठक-कक्ष मे, किसी तीर्थ-स्थल मे पाप उतारते हुए"'गरज कि बागियो की चलनशीलता अद्भुत होती है। तो भी वे घूम-फिर कर, धावे मारकर या पुलिस के घेरे को काटकर, अपने मुख्य क्षेत्र में आते ही हैं क्योकि वहां

उन्हें, प्राय: अपनी जाति के लोगों अथवा उपकृतों द्वारा शरण और सामग्री मिलती है।

रोज़ी और मैरी के मन में क्वांरी, जिसे वे मुख-सुख के लिए मिस कैरी कहने लगी थीं, का सबसे ज्यादा असर था। कोई औरत, डकैती में भी, डाकुओं और पुलिस को छका सकती है, यह बात उन्हें चकित करती थी। किस तरह वह मिस कैरी बंदूक का बोझ लेकर भागती होगी, पुलिस या प्रतिद्वन्द्वी डाकुओं के पछियाये जाने पर वह क्या करती होगी, इसकी वे कल्पना करतीं, किस तरह खतरनाक मर्दों के बीच वह उन पर अपना आतंक जमाती होगी, किस तरह, किनसे वह रोमांस करती होगी, कैसे हथियार और धन एकत्र करती होगी··· किस तरह रहती होगी?

फिल्म-टोली अनिश्चय में थी। इटावा आकर उसे बताया गया कि चकरनगर में क्वांरी के एजेन्ट आते-जाते रहते हैं। माल की सप्लाई वहीं से होती है। इसलिए वे या तो चकरनगर जाएं या फिर भिण्ड पहुंचें और वहां से टोह लें कि क्वांरी का गिरोह किधर है। बताने वालों ने यह बताया कि किसी बीचमानी या मध्यस्थ के बिना किसी बागी के चक्कर में पड़ना अमंगलमय है, कुछ भी हो सकता है और क्वांरी को तो अकारण हिंसा के बिना नींद ही नहीं आती। वह निशाने का अभ्यास चीज़ों और चिड़ियों पर नहीं, मनुष्यों पर करती है। वह ममता और मनुष्यता को रोग मानती है। वह रक्त से नाखून रंगती है और काली की तरह आदमी की हड्डी के गुरियों की माला पहनती है। वह गोली और गाली में सभी डकैतों को पीछे छोड़ चुकी है। वह कामिनी और कसाइन है, औरत नहीं, हुस्न और आफत की परकाष्ठा है।

रोज़ी-मैरी-राबर्ट और बोसले की चौगुटी मिस कैरी के विषय में फैली जन-श्रुतियों से सम्मोहित थी और वे लोग किसी भी मूल्य पर इस राबिनहुड की छवि को कैमरे में कैद करना चाहते थे। टोली जानती थी कि अमरीकी पत्रिकाओं में मिस कैरी के रेखाचित्रों और उनके साहसिक-कृत्यों के वर्णन लाखों डालर लायेंगे। रोमांच की तृष्णा और मनमानी मुद्रा का डौल, दोनों हाथों में लड्डू टोली ने किसी भी तरह मिस कैरी के गिरोह को खोजने की ठान ली।

चकरनगर में उन्हें एक सर्वोवयी बाबानुमा सज्जन मिले जो बागियों का आत्म-समर्पण करा चुके थे। उनके बाल घने मगर सफेद थे जिन्हें वह ऋषियों सदृश जटाओं की तरह डाले रहते थे। उनकी सफेद बेतरतीब दाढ़ी थी, जिसके बीच उनकी करुणा और वात्सल्य से भरी-भरी आंखें, बड़े भोलेपन से चमकती थीं। वह माला फेरते रहते, पीताम्बर पहनते, वैष्णवी तिलक लगाते और संसार की नश्वरता और मनुष्यता का बखान करते रहते थे। चकरनगर की जनता उनका आदर करती थी और उन्हें "सन्तजी" कहती थी। वे पढ़ेलिखे भी थे और संस्कारी भी।

रोज़ी की टोली ने उनके फोटो लिए और उनसे मिस कैरी से मिलाने की मिन्नत की। सन्तजी गंभीर हो गए, बोले, "आय डू नॉट एडवाइज़ यू··· मैं आपको सलाह नहीं देता, दिज इज डेंजरस, यह खतरनाक है।"

"बट वी प्लीज्ड सर। वी आर प्रिपेयर्ड टू टेक रिस्क। वी हैव कम फार दिस परपज···आप प्रसन्न हों श्रीमन्। हम खतरा उठाने के लिए तैयार हैं, इसीलिए आये हैं।"

"आय नो, आय नो··· बट शी इज नॉट ए ह्यूमन बीग, वस शी वाज़···शी इज नाव अ टाइग्रेस, अ लायनेस, शी इज टेरीबिल, शी इज़ वेरी क्रुअल, अनप्रोडिक्टेबिल एण्ड डर्टी इन टंग··· वह मानवी नहीं है, कभी थी। अब वह एक बाघिन है, एक शेरनी। वह भयंकर है। वह निर्दय, अनिश्चित और बोलने में बहुत गंदी है।"

"नेवर माइण्ड सर। वी नो, इफ यू ट्राय, वी विल वी सेफ। वी आर रेडी टू पे फार दिस ट्रविल···चिंता नहीं। हम जानते हैं कि यदि आप प्रयत्न करें तो हम सुरक्षित रहेंगे। हम आपकी तकलीफ के लिए धन देंगे।"

सन्तजी ने बहुत समझाया पर टोली आग्रह पर जमी रही। उसने सन्तजी के सर्वोदयी आश्रम के लिए चंदा देने की पेशकश की और कहा कि यदि मिस कैरी से भेंट करा दी गई तो वे अमरीका जाकर देखेंगे कि सन्तजी के आश्रम को नियमित रूप से डालर भेजे जाते रहें। फिलहाल, एक हजार डालर देने के लिए वे प्रस्तुत थे। सन्तजी के आश्रम की हालत खस्ता थी। सोचा, क्या बुरा है? आश्रम की इमारत बनेगी, बालक पढ़ेंगे, सर्वोदय की पुस्तकें छपेंगी, गांधी-विनोवा का काम होगा। अपने को तो कुछ चाहिए नहीं···और हर्ज भी क्या है? ये शौकीन विदेशी हैं, सम्पन्न हैं, वहां यांत्रिक जीवन है, बोर होते हैं, रोमांच के लिए आए हैं। फोटो लेंगे और बेचेंगे, बागियों की दास्तानें लिखेंगे, और क्या करेंगे? · कोई हानि नहीं है। सब नाप-तौल कर बाबा ने कहा—"यः, इफ यू आर सो इसिस्टेण्ट, आय विल सी वट यू कंट्रीव्यूट फर्स्ट फार अवर इस्टीट्यूशन, दैट सर्वस द काज आफ पीपुल। यू नो, इट इज आय हू परसुएडिड द रिबेल्स टू सरेंडर।"

"ओ, गुड, वैरी गुड, यस, थैंक्स सर। वी गिव हियर एण्ड नाव वन थावजेंड डालर्स एण्ड द रैस्ट वी विल सी लेटर। यस, वी प्रामिस, सर, टू कंट्रीव्यूट रैगुलरली··· वट सर, कैन यू अरेंज अवर इटरव्यू विद द अदर बेंडिट्स, सॉरी, रिबेल्स?"

सन्तजी अमरीकी व्यापारी मनोवृत्ति देखकर हसने लगे। ये बड़े चालाक हैं। इतने चंदे में सभी बागियों के फोटो और साक्षात्कार चाहते हैं। बोले—"वी विल सी लेटर।"···बाबा की निर्मल आंखों में बच्चों जैसी शरारत कौंध गई। अमरीकी समझ गए कि बुड्ढा चालाक है। वह इतने कम धन में सारे बागियों से नहीं मिलवायेगा।

"सर। एक्सक्यूज अज़। आय थिंक, देअर इज सम मिस अडरस्टैंडिंग···वी आर नॉट ग्रीडी ऑर बिजनैसमैन वट वी हैव नो रैडी कैश विद अज़ ''वट, दैट इज़ आल रायट —फर्स्ट वी गुड मीट मिस कैरी, द रैस्ट वी विल सी।"

"यस, वी विल सी लेटर।"

दोनों एक साथ भेदभरी हंसी हंसे और कार्यक्रम पर काफी समय तक बतियाते रहे। तै पाया कि बाबा का पत्र लेकर, एक विश्वसनीय पथप्रदर्शक टोली के साथ जाए और मिस कैरी के अड्डे तक विदेशियों को पहुंचा दे। यह भी तै पाया कि मिस कैरी, पूरी टोली के इतने लोगों से शंकित हो जाएगी। इसलिए चुने हुए चार-छः व्यक्ति ही जाएं, शेष टोली आस-पास के ऐतिहासिक स्थल देखें या दिल्ली हो आए।

क्वारी से मिलने रोजी- मैरी-रावर्ट-ब्रोगले-शेफ्ट्सबरी और डाक्टर स्टेनबेक को चुना गया। शेफ्ट्सबरी डाक्टर का काम भी जानता था। घायल होने की हालत में वह काम आ सकता था। शेफ्ट्सबरी और डा० स्टेनबेक अधेड़ मगर चंगे थे। सभी बहुत उत्साहित थे। वे दिन भर दौड़भाग कर समान जुटाते रहे।

" क्वारी नदी के ऊपर बसे—विरौनाबाग के दाईं ओर के घनघोर वन में बने शिवालय का आकार बड़ा नहीं है पर उसके पार्श्व में कई कोठरियां हैं, जिनमें एक में भूतनाथ बैठा, मोमबत्ती की रोशनी में अपनी रपट लिख रहा है। घंटे दो घंटे तक वह दत्तचित्र अपना कार्य करता रहा। उसके बाद उसने थकावट महसूस की और वह कोठरी

के वाहर आकर, शिवालय की ऊंची चबूतरी पर चढ़कर खड़ा हो गया। उसे जमीन के नीचे, कुछ दूर मंद स्वरों में, जब तब हलचल-सी सुनाई पड़ती थी जैसे नीचे कोई आ-जा रहा है, वातचीत जारी है पर साफ-साफ कुछ समझ मे नहीं आ रहा था।

जगल हवा के झोंको में झूम रहा था और उससे 'सन् सन्' की आवाज़ आ-आ कर नीरवता को प्रगाढ़ कर रही थी। नीचे नदी में कोई जानवर पानी पीने आया होगा, उसकी पगचाप और पानी पीने की लप् लप् सुनाई पड़ रही थी···यदि जानवर ऊपर आकर उस पर टूट पड़े तो ?·· भूतनाथ ने दोशाले के भीतर अपनी गन को सहलाया और फिर वेफिक्र होकर प्रकृति के साथ तन्मय होने लगा।

उसे लगा कि प्रकृति भी एक ही दृश्य, एक ही अनुभव को वार-वार सामने लाती है। इतने दिनों-रातों में, शीतकाल के इस मौसम में, वन की प्रकृति को उसने अपनाया है पर उसने क्या दिया ? एक जड़ सन् सन् और क्या ? लेकिन नहीं, जरा सी गड़वड होने पर, ज़रा सा संतुलन भंग होने पर यह जंगल कितनी विविधताएं वख्शता है, ध्वनियों के कितने सरगम वनते हैं। उसके मन में आया कि एक फायर करे पर यह वर्जित है। क्वारी के गिरोह के आस-पास पुलिस का घेरा है···कुछ दिनों से पुलिस इधर नहीं है··· क्वांरी ने कुछ किया होगा, रिश्वत दो होगी या पुलिस टुकड़ी का नायक कोई ठाकुर-विरोधी, पिछड़ी जाति का होगा, कोई कुर्मी-काछी-मल्लाह-गूजर-अहीर-जाट। अजीव है, डकैतों में भी कितना विकट जाति-द्वेष है। पुलिस में जिस जाति के लोग है, वे अपनी-अपनी जाति के नामी डकैतों को वचाते हैं, कुछ तो हथियार भी देते है···यह देश विचित्र है, जाति और धर्म से यह कब ऊपर उठेगा···?

तभी पत्ते चरमराए और भूतनाथ ने झुकाई देकर पीछे खिसक कर शिवालय की आड ली और रिवाल्वर हाथ में कस लिया।

"साहब। ओ, साहव बहादुर।"

कालिया का स्वर सुनकर भूतनाथ वाहर निकल आया। कालिया पूरी उमंग में था। उसने पुलिस की वर्दी पहन रखी थी। बंदूक कंधे पर थी और उसकी वट पकड़े हुए वह सैनिक-सा जंच रहा था। कंधे पर हैड कांस्टेबिल के सफेद फीते लगे हुए थे—

"अरे वाह ! हवलदार कालिया। कहां की तैयार है ?"

"आप साथ चलेंगे ?"

"और आए क्यों है ? पर कुछ पता तो चले।"

"यह सब वही वताएगी। आपको वह बुला रही है। सच। उसी ने कहा है कि आप अपने साहब, अपने गुरु को ले आओ, बहुत तारीफ करते हो। देखें, उसमें कितना दम है, शहरी स्यार है या जंगल के लायक नर बाघ ? हः हःहःहः···साहव, बुरा न मानें, चाहे वह किसी भी तरह, कुछ भी कहे, पर चलें। वह वहुत बुरा वोलती है कभी-कभी। उसे मीठा तो सुहाता ही नहीं, न मीठा खाना, न वोलना, तीखी मिरच है···बुरा लगे तो मत चलिए · और हां, ये जो आप अपने में गोता लगाते हैं, उसे वो विल्कुल नहीं पसंद करेगी, खुले रहिए, खरे और खुले, तव खुस रहेगी···तो आइए···यह गन जेव मे डाल लीजिए···आपकी रच्छा मेरे जिम्मे है न।"

भूतनाथ चुपचाप कालिया के पीछे चल पड़ा पर कालिया लगातार अपनी आराध्या क्वांरी वागिन के वारे मे वोल रहा था। वह कभी अघाता ही नहीं था उसकी तारीफ से, एकदम मोहित था।

हनुमान मंदिर के पीछे एक पगडंडी पकड़कर नदी के ऊपर-ऊपर ऊंचाई पर,

जगल के किनारे काफी देर चलते-चलते अचानक एक जगह कालिया रुका और उसने नदी की तरफ नीचे उतरने की कोशिश की। उतार पर भूतनाथ का हाथ पकड़कर एक गड्ढे में दोनों खड़े हो गए। वह काफी गहरा गड्ढा था और झाड़ियों और घास-फूस से ढका हुआ था। उस गड्ढे में एक किनारे एक खोह थी जो इस तरह छुपी थी कि नाजानकार उसे खोज ही नहीं सकता था। उस खोह के ऊपर एक भारी पत्थर था।

कालिया ने बंदूक रखकर उस पत्थर को हटाया। वह भी हांफने लगा पर उसने उसे हटा दिया।

खोह में ऊपर को चढ़ने की सीढ़ियां बनी हुई थीं जो जर्जर हालत में थीं। कुछ ऊपर जाकर एक दरवाजा-सा मिला जहां हथियारबंद काले, तगड़े मल्लाह खड़े थे। उन्हें संकेत से बताकर कालिया खोह के कमरे में गया तो दंग रह गया। एक लम्बी-चौड़ी सनद-सी थी जो लगभग 50 फीट लम्बी और बीस-पच्चीस फीट चौड़ी थी। उसमें एक जाजम बिछी हुई थी और पेट्रोमैक्सें जल रही थीं। खोह प्राकृतिक थी पर क्वांरी ने उसे काट-छांटकर, पत्थर के दरवाजे, लोहे के किवाड़ और नदी की ओर उतरने के लिए सीढ़ियों का निर्माण कराया था।

तीस-चालीस डाकू, कुछ पुलिस वर्दी में, कुछ सादे धोती-कोट और सिर पर अंगोछों में थे और झुण्डों में बैठे बतिया रहे थे, कोई प्रबंध में इधर-उधर आ-जा रहे थे। कोई खाना-पीना कर रहा था, कोई हथियार ठीक करने में लगा था। कोई हड़बड़ी, कोई घबराहट, कोई उलझन नहीं थी, जैसे सब पूर्व निश्चित था और एक बंधी लय पर काम और आराम हो रहा था। जब तब नदी की तरफ से भी डाकू आ-जा रहे थे। शायद नाव से सामान आ रहा था। नाव खोह के पास आकर लग जाती थी क्योंकि यहां नदी में काफी पानी था यों क्वांरी नदी छोटी-सी है और बरसात के बाद पानी की धार सिर्फ पेंदे में रह जाती है।

एक दृष्टि में सब भांप कर भूतनाथ ने कालिया की तरफ देखा। कालिया ने उसे चुप रहने का संकेत किया। भूतनाथ को चेले ने एक तरफ दरी पर बिठा दिया और वह भी पास ही बैठ गया।

थोड़ी देर में न जाने किधर से, चार व्यक्ति प्रकट हुए। आगे एक कैदी था, जिसके हाथ पीठ पर बंधे हुए थे और कमर में रस्सी थी जिसे दो व्यक्ति इधर-उधर पकड़े हुए थे और बंदूक की नलियां उसकी पीठ से लगाए थे। उनके पीछे, कुछ दूरी पर, लाठी की तरह हल्की स्टेनगन लिए और कारतूसों की पेटी को दुपट्टे की तरह डाले, क्वांरी सामने आई। उसका कद सामान्य था, वह न दुबली थी न मोटी। वह पुलिस सुपरिन्टेण्डेन्ट की वर्दी में थी और उसके कंधे पर बैज चमक रहे थे। उसकी वर्दी पर लोहा किया हुआ था जबकि अन्य कई डकैतों की वर्दियों पर लोहा नहीं था। हुआ भी होगा तो इस जिंदगी में क्रीज रह भी कैसे सकती है?

क्वांरी साधारण-सी लगी। भूतनाथ सांस रोके उसे देख रहा था और कालिया निगाह तोड़ रहा था कि उसकी नजर न लग जाए। भूतनाथ मुस्कराया। क्वांरी बड़े गरूर से किसी बेगम-बहादुर की तरह चल रही थी। अकड़ के कारण उसका उभार, मोटी वर्दी में भी दीख रहा था, जिससे कालिया समाधि की दशा में पहुंच रहा था। उस की शान पर मर गई थी और वह अपलक नेत्रों से क्वांरी के कटिप्रदेश को काट पर लट्टू हो रहा था।

क्वांरी पर अब लालटेन की रोशनी पड़ी। भूतनाथ ने देखा कि उसके नक्श

तीखे हैं। आंखें बड़ी नही पर पलकें, अधर का कटाव, अलसी के फूल-सी छोटी नाक, सुडौल ठुड्डी और भरे कपोल—क्वांरी असुंदर नही थी पर कालिया ने जो वर्णन किया था, उसकी तुलना में वह औसत से बस कुछ बेहतर युवती थी तो भी उसमें एक छवि थी और यौन-अपील उससे भी अधिक थी। उसके मुख पर सबको तुच्छ समझने का भाव था और अकड़ में वह मोर को मात देती थी।

सब लोग संभ्रम में उठ बैठे, घनश्याम करिंधा तो साष्टांग दण्डवत् करने लगा पर भूतनाथ बैठा रहा। क्वांरी ने यह देखा पर कुछ कहा नही। हाथ के संकेत पर सब बैठ गए। खोह के बीच में, दीवाल से सटाकर सरदारनी की बैठक के लिए एक आसन-सा था, उस पर बिछावन भी था, सादा मगर साफ। उस पर क्वांरी बैठ गई और उस के सामने दरी के नीचे कैदी को खड़ा कर दिया गया।

अब क्वांरी की भृकुटी टेढ़ी हुई और वह कैदी को वेधती दृष्टि से कुछ देर देखकर बोली—"तेरा क्या नाम है ?"

"लालसिंह।"

"लालसिंह, तू किस गांव का है ?"

"गांव लेमही का।"

"तू वीरसिंहा-धीरसिंहा का भेद देगा या मरेगा ?"

क्वांरी बाघिन की तरह उठी और उसने लालसिंह की पसलियों पर स्टेनगन की नली से कठोर प्रहार किया। वह बिलबिला गया, दुहरा हो गया।

"बताता है कि तेरी ठुकराई तेरी···में घुसेड़ दूं ?"

"मैं नही जानता, क्वारी।"

क्वारी गुस्से से कापने लगी। उसने दांत पीसे और चाकू निकालकर उसकी पीठ मे एक-डेढ़ इंच घुसेड़ दिया। असह्य दृश्य था। लालसिंह दर्द से घायल पशु की तरह गरगराया, रक्त झरने लगा।

"बता—वीरसिंहा-धीरसिंहा—वे कुत्ते कहां हैं ? मैं उन्हें लेंड़ी बना दूंगी, बताता है कि तेरी ठकुराई···।"

"मुझे मार डालो···गोली मार दो···मैं जानता ही नही तो क्या बताऊं···मैं बस इतना जानता हूं कि त्योहार पर वे दोनों लेमही आते है।"

"हां, बोला न···अब बोल बहिन···इस समय कहा हैं···साले, नही बताएगा तो तेरे घाव में नमक डाला जाएगा, बता उगल जल्दी।"

"नही, नही, ऐसा मत करना···बताता हूं। वे दोनों नटो के पुरवा मे पड़े रहते हैं, उधर पुलिस का डर नही रहता।"

लालसिंह के जबड़े पर क्वांरी ने एक झापड़ रसीद कर कहा—"अगर यह खबर झूठी निकली तो लालसिंहा, तेरी बोटी काट-काटकर क्वांरी की मछलियों को खिला दूंगी।"··

लालसिंह कांपने लगा।

"जाओ, इसे वहीं बन्द कर दो और पहरा दो। छूट गया तो तुम्हारी भी यही गति होगी। इसके घाव की मरहमपट्टी कर दो। तो भी सड़ जाए तो सड़ने दो···जाओ!"

क्वारी ने इतनी जोर से 'जाओ' कहा कि उसके अनुगामी भयभीत हो गए।

उनके चले जाने पर क्वांरी ने पहली बार अपने साथियों को देखा। वे उस नजर को पहचानते थे। वे उसके सामने दो-दो तीन की लाइन मे खड़े हो गए। कालिया भी भाग

कर एक पंक्ति में लग गया। क्वांरी का उस समय का चहेता सोना मल्लाह, खांस-खखार कर बोला—"रानी ! गुस्सा न करो। पहले आदमी जाए कि नटों के पुरवा में वे टकुट्ठे कुत्ते हैं या नहीं, साले नटनियों···में दबे होंगे। अगर वे हुए तो रेड करेंगे, नहीं तो फिर सुराग मिलने पर···।"

"उस पकड़ का क्या हुआ ?"

"पकड़ कब्जे में है। कल परसों तक बनिया रुपया दे जाएगा। उसका आदमी आया था। पचास हजार मांगे थे, तीस हजार मिल जाएंगे—उस बनिये के बच्चे के लिए।"

"तीस हजार क्यों ? पचास हजार क्यों नहीं, वह साला बनिया समझता है, हमें उसके मौडा पर दया आ जाएगी···मैं उसे काटकर उसका कलेजा खा जाऊंगी···पचास हजार से एक कौड़ी कम नहीं।"

"रानी···रानी।"

"रानी, रानी···मैं दोबारा नहीं बोलती, यह भूल गए क्या ? परसों शाम तक अगर पचास हजार नहीं आए तो उस बकरे की देवी को बलि दी जाएगी। मेरी दुर्गा प्यासी है, उसे नरबलि चाहिए।"

"ठीक है"—बुझे स्वर मे सोना मल्लाह बोला।

"तुम पिघल रहे हो, सोवरनसिंह। तुम—तुम—तुम्हें···।"

"रानी, कुछ न कहें। मैं परसों रात मे या तो पचास हजार वसूल लूंगा या अपने हाथ से उस बक्काल के मौड़े का मूड काली की माला मे पहना दूंगा।"

क्वारी तालियां बजाकर ऐसे हंसी जैसे खिलौने मिलने पर बच्चा हंसता है।

"ठीक है, नटपुरा किसी को भेजो और अब मैं···अब···।"

कालिया ने कहा—"रानी जू। आपसे मिलने, दूर से मेरे गुरु, मेरे साहब पधारे हैं। इन्होंने मुझे इटावा की जेल से छुड़ाया है। ये मेरे मालिक हैं, गुरु हैं, माई-बाप हैं।"

पहली बार क्वारी के मुख पर नारी सुलभ मीठी हंसी की चांदनी बिखरी। आंखों मे एक मधुर लज्जा की झलक आई और गई। उसने कालिया को कुछ संकेत किया, फिर अचानक उसकी भ्रकुटि तन गई। वह नागिन की तरह फुफकारने लगी। कालिया घबराया—"रानी जू···अब क्या हो गया ?"

"तुम्हारा साहब मेरे आने पर उठकर खड़ा नहीं हुआ···मैं ऐसे घमण्डी साहबों से नहीं मिलती !"

हाथ जोड़कर कालिया कांपता हुआ कहने लगा—"सरदार। ये तो भोले···बालम, अरे नहीं, भोले बाबा है, ये क्या जानें एक सरदार के यहां क्या होता है, सब सीख लेंगे रानी जू···आप मौका तो दीजिए···मुलाकात कीजिए···ये आपके नाम और काम को सारी दुनिया में चमका देंगे, सरदार कुमारी साहिबा।"

"अरे कालिया। इटावा की जेल से तो तू बोलना सीख गया रे···अच्छा, अच्छा, मैं तेरे भोले बालम से मिलूंगी।"

क्वांरी खिलखिलाकर हंसी। उसकी चमकीली बत्तीसी से आग और गन्दगी की जगह अब चांदनी के फूल निकल रहे थे और वह चुभने वाली चुम्बकीय-दृष्टि से भूतनाथ को देख रही थी। भूतनाथ इस दृष्टि का सामना नहीं करना चाहता था। उसने भद्रता से सिर नीचा कर लिया, तब क्वारी फिर ताली पीटकर हंसी—"कालिया, तेरा साहब तो साहब नहीं, मेम साहब है।"

विजयी उल्लास से हहराती नदी की तरह क्वांरी स्टेनगन हाथ में लिए, सोना को साथ लेकर खोह में कहीं विलीन हो गई।

भूतनाथ उसे जादू की प्रतिमा की तरह देखता रह गया।

कुछ क्षण बाद कालिया, भूतनाथ को लेकर खोह के उसी स्थान पर गया, जहां से क्वांरी गायब हुई थी। वहां दरअसल, नीचे की ओर जाने की सीढ़ियां बनी थी जो भूगर्भ में बने, खोह के धरातल के नीचे, कमरे तक पहुंचती थी। कमरे में लोहे के पल्ले का किवाड़ था जो पत्थरों में फसे कुंडों से सधा हुआ था और काफी मजबूत था। भूतनाथ ने देखा, ऐसे एक-दो कमरे भूगर्भ में और होंगे, भले ही उनमें किवाड़ हों या न हों। यह भी सम्भव है कि इन कमरानुमा खोहों का सिलसिला लम्बा हो···क्वांरी ने दिखाया तो देखेंगे।

"खट् खट् खट्"—कालिया ने संकेत किया।

किवाड़ खुल गया। फूलदार चटख लाल रंग की सारी, लाल रंग की ही चोली और लाल मखमल की जूती पहने, कंधों पर लहराते काले बालों और कपड़ों मे बहुत कीमती हिना इत्र डाले हुए आंखों में काजल की पतली कोर आंजे, होंठों पर लाल गाढ़ा लिपस्टिक लगाए, आलस में अंगड़ाई लेती हुई क्वांरी ने मुस्कराते, दांतों के मोती दिखाते हुए भूतनाथ का स्वागत किया, जरा-सा सिर हिलाकर और नजर में हल्की-सी लाज लाकर जैसे कोई प्रेयसी, प्रेमी का स्वागत करती है, गद्‌गद् होकर नहीं, मान रखकर।

"कालिया। तू अपने 'भोले बालम' से पूछकर कुछ पीने को ला।"

भूतनाथ को संकेत से क्वारी ने बेतरतीब सजे कमरे में एक पत्थर के आसन पर बिठाया जिस पर कम्बल पड़ा था। पास ही क्वांरी का तख्त था, जिस पर गुदगुदे कपड़े थे, नीचे दरी, गद्दा, गद्दे पर रेशमी चदरा और गुलगुले तकिए·· लग रहा था कि यह सब आज ही भूतनाथ के स्वागत में निकालकर बिछाया गया है। जो हो, क्वांरी अंततः एक नारी थी, उसने नारीत्व के प्रदर्शन के लिए शैय्या के पास, एक गुलदस्ता भी रखा था, जिसमें जंगली फूल थे, टिकिटी पर पानी का जग और गिलास था, नीचे एक बाल्टी थी पीतल की, चमचमा रही थी।

"आप जरा अपना मुंह तो दिखाइए"—इतना कहकर क्वारी भूतनाथ के पास आई और उसने भूतनाथ के होंठों पर हाथ रखा। भूतनाथ को बिजली का सा झटका लगा और भूतनाथ ने मुंह फेर लिया और कहा—"माफ करें, बात क्या है?"

"अरे, मैं तो यह देख रही थी कि अपने साहब के मुंह मे जीभ भी है या नहीं··· यू आपकी आंखें सब कुछ कहती रहती हैं···इन आंखों का आप क्या लेंगे?"

"मतलब?"

"ये आंखें, ये चितवन, हमारा पीछा करेंगी। पुलिस और ठाकुरों की परवाह नहीं, वे रोज पीछा करते हैं, पर ये आंखें···आपने कहां पाईं···इनके लाख रुपये दे सकती हूं ··इन्हें निकालकर अपने पास रखूंगी—हः हः हः हः हः।"

भूतनाथ भी हंसे बिना नहीं रह सका। हंसने पर उसका चेहरा भी मुलायम हुआ।

"तो आप हंसते भी हैं, ···अच्छा, आपको किस नाम से पुकारा जाता है···यू आपका नाम लेने से हम बच सकते हैं···।" क्वारी के चेहरे पर चिकनापन बढ़ रहा था और वह आनन्दित थी।

"मेरा नाम गदाधरसिंह है और मैं एक पत्रकार हूं···आपका नाम सुना था।

मेरी दो बहिनें हैं, दो भाई, सब मुझसे छोटे। हमारा गांव रामपुरा जो अब मल्लाहों का पुरवा कहलाता है, बड़ी जाति वाले, उसे रामपुरा भी नहीं कहना चाहते, ठाकुरों के गाव लमही के पास है। बीच में नदी है 'अरगोनी', जिसमे घाट पर लोगों को पार उतारकर, मछली मारकर और खेती-पाती, छोटी-मोटी चीजें बना-बेचकर हमारी जाति-जमात के लोग गुजर-बसर करते हैं—आप गरीब के दुखो को सोच भी नही सकते—मुझे गाव के स्कूल में प्राइमरी तक किसी तरह पढ़ाया गया···नाम भर का समझें—सुबह शाम घर का ढेर सा काम—लेकिन मैं किताब पढ़ने लगी थी और मौका मिलता तो मैं पढ़-लिखकर अपने नरक से बच सकती थी···पर, ये ऊंची जाति के लोग, इतने नीच और निरदई होते है कि इनके लड़के और ये खुद टोंट मारते—"यह मल्लाहिन मेम बनेगी, वाह···तब नाव कौन चलाएगा···मछलिया कौन बेचेगा···हमारी थकावट कौन उतारेगा ?··· आप, एक बच्ची के दिल पर क्या बीती होगी, उसकी कल्पना कर सकते हैं ?"

भूतनाथ ने हामी भरी और अब बयान शुरू हो गया था। उसने उठकर एक गिलास बनाकर क्वारी को दिया, जिसे वह उस ताव में पूरा गटक गई और मुंह पोछकर एक गश में शुरू हो गई। भूतनाथ उसकी बगल छोड़कर उसके सामने अपनी आसंदी रखकर बैठ गया। यों वह उसका हाथ जब तब थपथपा देता था, जिससे क्वारी के नेत्रों में आसू छलक उठते थे—"मैं सावली थी पर अरगोनी मैया का पानी, खुली हवा और मछली-चावल, दूध-दही का शरीर। मैं मुश्किल से तेरह-चौदह बरस की हुंगी। मैं मना करती रही, रोती रही लेकिन हमारे इन मूरख मल्लाहों ने मेरा एक अधेड़-भद्दे खबीस मलाह से विवाह कर दिया—वहा बचपन में ही विवाह कर देते हैं और मुझे एक कुत्ते के गले बाध दिया गया। बात-बात पर मेरा गरब और मेरी इज्जत तोड़ी गई, वहा था ही क्या, न रूप, न मरजाद, न धन, न घर ··कुछ नहीं, सिर्फ एक जिल्लत थी, ख्वारी, बदफेली बस। मेरी देह के साथ उस जानवर ने जो बदी की, उसका क्या बयान करूं साहब···?"

क्वारी ने बताया कि वह कमजोर था और अपनी नपुंसकता छिपाने के लिए, मुझे नीचा दिखाने के लिए उसने गाव के लड़कों और बड़े-बूढ़ों को, रुपए ले-लेकर घर को रंडीखाना बनाना चाहा···मुझसे सहन नहीं हुआ···ऐसी हालत में मैं क्या करती··· मेरा दिमाग उलट गया और मैंने उसके सिर पर पत्थर मार कर भाग जाना ही ठीक समझा···लेकिन जिस नारी की मरजाद को बचाने के लिए मैं भागी, उस कूकर का सिर फोड़ा, उसी नारी होने न होने की सजा मुझे मिली और अभी भी मिल रही है।"

भूतनाथ ने क्वारी का गिलास फिर भर दिया और स्वयं भी थोड़ा-थोड़ा साथ दिया। क्वारी फिर पूरा गिलास गटागट चढ़ा गई और कहती गई—"मैं आपको क्या कहूं ··यह नाम (भोला बालम) आपको मंजूर नहीं। मैं उसके··आपके लायक नहीं रही···लेकिन, मैं आपको भाई तो बना सकती हूं ?"

"यकीनन ! मदाधरसिंह को आप आज से भाई कह सकती हैं। मैं भाई का दायित्व जानता हूं, आपको बहिन मानता हूं, आप न निबाहें, आप नरक से गुजरी हैं पर मैं निबाहूंगा, निश्चय ही।"

यह सुनकर क्वारी जो रोई तो जैसे भूकम्प आ गया। भूतनाथ उसके अश्रु-प्रवाह को सुनाता रहा और दिलासा देता रहा।

"···मैं भाग कर मलाहपुर पहुंची। उसके पहले ही पुलिस वहां पहुंच चुकी थी। उसने मुझे पकड़ा और थाने में थानेदार, हवलदार और सिपाहियों ने मुझ पर

इतना जुलुम किया कि मैं बीमार हो गई और मेरा इलाज अस्पताल में हुआ'''लेकिन मैं जिस मिट्टी की बनी हूं, वह पथरीली है और जो पानी पिया है, वह बहुत तीखा है, चामिल का पानी और बुन्देल खण्ड की माटी'''कितना अच्छा होता, मैं मर जाती पर मैं बच गई और जिस तरह खाद लगने से गुलाब और सुरख होता है, वैसे ही उस गंदगी से मेरी काया में नई ताकत आ गई और ऐसा मद आया मेरी आंखों में, ऐसी लाली गालों पर'''मेरे गालों में अब भी गड्ढे पड़ते हैं पर तब'''मैं शीशे में मुह देखती तो अपने पर मरने को जी चाहता, सच्ची, मैं बहुत-बहुत रूप से लद गई थी, खट्टे आम की तरह फरी थी मैं'''और यही मेरे लिए सराप हो गया।

"अस्पताल में नियम से भोजन और देखरेख के बाद मैं मुस्टंडी हो गई और मैं जब गाव आई, तो मुझे देखकर सातों जाति के लोग बौरा गए। सहेलियां कहती—तू तो फूल सी खिली है फुलवा और मुझे फुलवा ही कहा जाने लगा, पर नहीं, मुझे वह नाम पसन्द नही था। फुलवा तो महोवे के ऊदल की रानी का नाम था, कहां फुलवा रानी, कहां मैं मलाहिन। नही औरत तो नदी होती है बाबू साहब। लोग आते हैं, उसमें अपनी गन्दगी डालते है और अगर वह सच मे नदी है, उसके उद्गम अच्छत (अक्षत) है तो वह गन्दगी को भी गंगा की तरह सोख जाती है और पावन जल से जमाने को सींचती हुई, उनकी प्यासें बुझाती हुई, उनके सारे काम बनाती हुई, किलकती-गाती हुई, मस्त वेग में झनती चली जाती है। गदाधर भाई, मैं फुलवारी नही, जो फूल मसल देने पर उजड़ जाए, मैं नदी हूं और सदा क्वांरी हूं, इसीलिए क्वांरी हूं और क्वांरी ही रहूंगी। मुझे मेरा मर्द मिला ही कहां जो सुहागिन बनती, इसलिए मेरा नाम क्वांरी है, फुलवा नही।"

"किन्तु फुलवा'''फुलवा नाम सुन्दर था न, कैसा मुंह-सा भर जाता है फूलों से फुलवा।"

"अभी भी बहुत से मुझे फुलवा ही बोलते हैं लेकिन मैं जो करने जा रही हूं, उसके बाद मुझे फुलवा-फूलन नहीं कहेंगे, कंटीली कहेंगे, काली कसाइन, हां, वे यही कहेंगे। अब मैं नाम की भी कोमलता बर्दाश्त नही कर सकती। औरत कोमल होकर ही तो ठगी जाती है, उसे कठोर और निरदय होना होगा।

"'''तो फिर हुआ यह कि मेरे रूप की सुगन्ध ठाकुरों तक पहुंच गई। रोज का आना-जाना था। गांव में झगड़े-टण्टे होते है पर नाते-रिश्ते नही टूटते। हमारे मलाह ठाकुरों के यहां काम करते थे। अभी भी कुछ कर रहे है, करेंगे ही, जब तक उनकी हालत नही सुधरती'''मल्लाहों की औरतें ठाकुरों के घरों में सेवा करती हैं, उनकी रखैलें भी बन जाती हैं'''क्या करेंगे सुनकर, बड़ी दुरगत है छोटे और गरीबों की'''खैर, ठाकुरों के मनचलों-जवानों ने मुझे देखा और इसी वीरसिंहा और धीरसिंहा की नेतागीरी में मुझे एक रात खेतों से पकड़ लिया गया और वे मुझे खेतों में बने अड्डे पर रखते और दिन-रात मेरी देह गोड़ते'''मैं जब तक उन सुअरों को मार नही डालूंगी तब तक मैं आपे में नहीं हूं।'''मुझसे आज तक किसी ने प्रेम नही किया, सिर्फ मेरी देह कौओं-कुत्तों की तरह नोंची'''आप अब तक कहां थे, भाई ?"

और क्वांरी बुक्का फाड़ कर रोई और अपना सिर, छाती और मर्माग पीटते-नोंचते हुए चीखी—"मैं फुलवा नही, उसकी चुड़ैल हूं। मैं इन ठाकुरों का खून पीऊंगी''' मेरे साथ अट्ठारह ठाकुरों ने बलात्कार किया है, छत्तीस को न मारा तो मेरा नाम क्वारी नहीं'''शराब का नशा तो मुझे होता ही नही, सिर्फ रक्त मेरे लिए मादक है

लाल-लाल रक्त ! हः हः हः हः हः मैं रक्त की प्यासी हूं"'मैं फूलवा नहीं, राक्छसी हूं, राक्छसी।"

क्वारी ने टेबिल पर रखी आधी से अधिक भरी ह्विस्की की बोतल उठाई और मुह से लगाकर, बिना पानी मिलाए, नीट पीने लगी जैसे कोई प्यासा वन्य पशु पानी पर टूटता है। भूतनाथ ने उसे रोका पर वह नहीं मानी। तब उसने जोर देकर बोतल क्वारी के मुह से निकाली और प्यार भरे क्रोध से कहा—"यह क्या करती हैं ? आप अचेत हो जाएंगी। यह बहुत तेज़ है।"

"मैं होश में नहीं रहना चाहती"'मेरे फूल जिन्होने मसले हैं, जिन्होने मुझे रौंदा है, एक नारी को, उन कुत्तों को मारे बिना मैं होश मे नहीं आ सकती। मुझे रोको मत, तुम भी पुरुष हो, नाम से ठाकुर लगते हो, तुमने भी किसी नारी के फूल तोड़े होंगे'''।"

"क्या पागल हो गई हो ? मैं कोई ठाकुर-वाकुर नहीं, मैं जाति से परे हूं, सिर्फ एक मनुष्य हूं और मैंने किसी नारी को नहीं छला।"

"'''तभी तुम भाई बने, नहीं तो मुझे भोगते'''हर पुरुष मुझे कुतिया समझता है और मुझे सिर्फ कुत्ते की तरह देखता है'''आप भाई'''माफ करना आप अलग से हैं। आप पुरुष जाति में कहां से पैदा हो गए'''नहीं, आप मर्द नहीं हो सकते, आप किसी दूसरी योनि की कोई भटकती आत्मा हैं'''बोलिए, आप कौन हैं, देवता, फरिश्ते'''कौन हैं आप'''आप बताते क्यों नहीं'' यहां क्या लेने आए हैं आप ' इस कुम्भीपाक नरक में क्यों अपने को लथेड रहे हैं ?

"आप जानना चाहते हैं कि आदमी डाकू क्यों बनता है ? सीधी बात है, सह जाए तो साधू, न सह पाए तो डाकू, और मर्द तो डाकू होता ही है। जो कुछ नहीं कर पाता, वह अपनी औरत के साथ डाकू का बर्ताव करता है। उसका जोर कहीं तो दिखे। कहीं न दिखा पाया तो बेचारी घर वाली पर रौब दिखलाएगा। औरत डाकू क्यों नहीं बनती, यह सवाल है, यह नहीं कि औरत डाकू कैसे बनती है'''अब समझ में आ गया न भोले'''या'''नहीं मेरे भोले भाई।"

और इतना कहकर क्वांरी उत्तेजना में लड़खड़ा कर, भूतनाथ के पैरों पर गिर पड़ी और पायल हिरनी की तरह पुनः रोने लगी'''आपने मुझे बहिन कहा है, अब आप मेरे गवाह, मेरे जज, मेरे वकील बनें'''बनेंगे न ? मैं अब आपको छोड़ूंगी नहीं'''मेरा इन्तजार पुलिस या ठाकुरों की कोई गोली कर रही है। पर मरने की मुझे चिंता नहीं। मैं सिर्फ नारी-जाति का, इस पुरुष जाति से, पुरुषों में इन कुत्ता-पुरुषों से बदला लेना चाहती हूं'' मेरे भोले भिराता, तुम भी मुझे दगा तो नहीं दोगे ?"

आवेश में क्वारी उठी और दुर्गा की मूर्ति, जिसे वह हमेशा गले में पहने रहती थी, उसे सामने कर कहने लगी—"रखो इस मूर्ति पर हाथ। कसम खाओ। यह पुरुष की परीच्छा है, आखिरी बार'''तुमने धोखा दिया तो फिर सिर्फ ठाकुरों को नहीं, पुरुष को, चाहे वह कोई भी हो, गोली मार दिया करूंगी। मैं पुरुष नाम के पापी को इस धरती पर नहीं रहने दूंगी तब'''कसम खाओ।"

भूतनाथ ने दुर्गा के पैरों पर हाथ रखा और गहन तल से निकलते हुए स्वर से कहा—"फूलवा। दुर्गा माता की शपथ, मैं तुम्हारे साथ न्याय करूंगा लेकिन तुम भाई की बात का मान देना।"

"मैं जानती हूं तुम क्या सलाह दोगे। कातिल होने पर साहस की चोटों पर

चढ़ना पड़ता है न, सो, अति साहसी को सब सूझ जाता है। मैंने तुम्हें देखकर ही समझ लिया था कि तुम मनुष्य हो, मनुष्य के वेश मे कूकर-सूकर नहीं···या तुम सज्जन भूत हो और मैं दुर्जन चुड़ैल···हः हः हः हः कैसी रही · तो मैं · मानूगी भाई का उपदेश··· पर बदला ले लेने पर, उसके पहले नहीं, और तुमने जिद की तो तुम्हें पुरुषों का समर्थक मानकर गोली से उड़ा दूगी, बाद में भले ही मुझे आत्म-हत्या करनी पड़े।

"और जो तुमने देखा है कि मैं इन अपनी बिरादरी, अपनी जाति के मलाहों से भी नफरत करती हू, वो इसलिए कि इनमें से एक ने भी मेरी मरजाद के लिए पहल नही की···एक था ··उससे मैं प्रेम भी करने लगी थी, एक और भी था, पर उन्हें इन ठाकुरों ने मार डाला और मुझे रखैल बनाने के लिए एक को तो मेरे गिरोह के ही एक ने गोली से उड़ा दिया···ये मलाह, ये भी तो पुरुष हैं, ये मेरे लोभ में, मेरे साहस से, मेरे समरथ होने से बंध गए हैं। इन्हें धन और मान भी तो दिलवाया है मैंने, सिर ऊंचा हुआ है नीच जातियों का, इसलिए ये साथ दे रहे हैं। तो भी इनमें किसी का भरोसा नहीं, कब दगा दे जाएं···मेरा साथ सिर्फ मेरी नफरत दे रही है। जो औरत घिरना से नही जी सकती, वह गाय बकरी बनकर जीती है और उस पर सांड़ और बकरे चढ़ते हैं और उसे काट कर लोग खा जाते हैं; उसे खूब दुहने और बच्चे निकाल लेने के बाद···मैं नफरत के कारण औरत बन चुकी हूं···मैं इन सबसे नफरत करती हूं—आक्ख थू !"

अपने ही विष से क्वारी निढाल होने लगी। उसने उत्तेजना के लिए फिर बोतल की ओर हाथ उठाया पर भूतनाथ ने मना कर दिया और उसे सोने के लिए कहा। अपनी पूछ को काटने वाली नागिन की तरह क्वांरी ऐंठती रही···उमड़ती रही और अन्त में शिथिल होकर गिर गई। भूतनाथ काफी समय तक उसे बच्चे की तरह थपकियां देता रहा। वह कुछ समय तक अपने ज़हर में उबलती-ऐंठती रहकर अंततः सो गई तथापि भूतनाथ वहीं उसकी स्वप्नहीन प्रगाढ़ निद्रा में उसके आकुंचित मस्तक पर पड़ी लटों को अलग करता रहा और उसके आंसुओं के चिह्न मिटाता रहा। वह सो जाने के बाद निरीह और दयनीय लग रही थी।

फिर धीरे से अपने को उससे अलग कर, उसके सिर के नीचे तकिया लगाकर तथा कम्बल से उसे ढक कर भूतनाथ ने पेट्रोमैक्स की बत्ती को कम किया और किवाड खोलकर बाहर आया। उसने देखा कि कालिया, उसकी देहरी पर मुडासा लगाए, एक कम्बल लपेटे आदिवाराह सा घुड़क रहा है और उसने बन्दूक को प्रेयसी की तरह लपेट रखा है।

भूतनाथ कालिया की वफादारी देखकर मुग्ध हुआ, पर उसे जगाना जरूरी था क्योंकि क्वांरी किवाड़ बन्द नही कर सकती और गिरोह का क्या ठिकाना, कोई सोते में उसे मार डाले तो ? किवाड़ बन्द करना जरूरी था। भूतनाथ ने कालिया को जगाया और चुप रहने का इशारा कर, धीमे स्वरों में समस्या समझाई। कालिया जब समझा तब उसने किवाड़ों को बाहर से ही बन्द कर उसमे ताला लगाया और चाबी कांख में दबाकर बोला, "चलिए साहब, आपको आपके मन्दिर में छोड़ दूं ?"

"अब नींद तो आ नही सकती कालराम। तुम तो सो लो और फिर यह जगह तुम्हें छोड़नी नही चाहिए।"

"नही नही गुरु, रानी मुझे कच्चा खा जाएगी यदि मैं आपको पहुंचाने नहीं गया। वैसे आपको यही सो जाना चाहिए था साहब···अब तो आपको 'भाई' मान चुकी हैं···अब···काहे का डर···आप तो अब उसके साथ ही रहा करें, साहब।"

लाल-लाल रक्त ! हः हः हः हः हः मैं रक्त की प्यासी हूं···मैं फुलवा नहीं, राक्छसी हू, राक्छसी।"

क्वारी ने टेबिल पर रखी आधी से अधिक भरी ह्विस्की की बोतल उठाई और मुह से लगाकर, बिना पानी मिलाए, नीट पीने लगी जैसे कोई प्यासा वन्य पशु पानी पर टूटता है। भूतनाथ ने उसे रोका पर वह नही मानी। तब उसने जोर देकर बोतल क्वारी के मुह से निकाली और प्यार भरे क्रोध से कहा—"यह क्या करती हैं ? आप अचेत हो जाएगी। यह बहुत तेज है।"

"मैं होश में नही रहना चाहती···मेरे फूल जिन्होने मसले हैं, जिन्होंने मुझे रौंदा है, एक नारी को, उन कुत्तों को मारे बिना मैं होश मे नहीं आ सकती। मुझे रोको मत, तुम भी पुरुष हो, नाम से ठाकुर लगते हो, तुमने भी किसी नारी के फूल तोड़े होंगे···।"

"क्या पागल हो गई हो ? मैं कोई ठाकुर-वाकुर नही, मैं जाति से परे हू, सिर्फ एक मनुष्य हू और मैंने किसी नारी को नही छला।"

"···तभी तुम भाई बने, नहीं तो मुझे भोगते···हर पुरुष मुझे कुतिया समझता है और मुझे सिर्फ कुत्ते की तरह देखता है···आप भाई···माफ करना आप अलग से हैं। आप पुरुष जाति में कहां से पैदा हो गए···नहीं, आप मर्द नहीं हो सकते, आप किसी दूसरी योनि की कोई भटकती आत्मा है···बोलिए, आप कौन है, देवता, फरिश्ते···कौन हैं आप···आप बताते क्यों नही·· यहा क्या लेने आए हैं आप · इस कुम्भीपाक नरक में क्यो अपने को लथेड़ रहे हैं ?

"आप जानना चाहते है कि आदमी डाकू क्यो बनता है ? सीधी बात है, सह जाए तो साधू, न सह पाए तो डाकू, और मर्द तो डाकू होता ही है। जो कुछ नहीं कर पाता, वह अपनी औरत के साथ डाकू का वर्ताव करता है। उसका जोर कही तो दिखे। कही न दिखा पाया तो बेचारी घर वाली पर रौब दिखलाएगा। औरत डाकू क्यो नही बनती, यह सवाल है, यह नही कि औरत डाकू कैसे बनती है···अब समझ मे आ गया न भोले···बा···नही मेरे भोले भाई।"

और इतना कहकर क्वांरी उत्तेजना मे लड़खड़ा कर, भूतनाथ के पैरों पर गिर पडी और घायल हंसिनी की तरह पुनः रोने लगी···आपने मुझे बहिन कहा है, अब आप मेरे गवाह, मेरे जज, मेरे वकील बनें···बनेंगे न ? मैं अब आपको छोडूंगी नहीं···मेरा इन्तजार पुलिस या ठाकुरो की कोई गोली कर रही है। पर मरने की मुझे चिंता नहीं। मैं सिर्फ नारी-जाति का, इस पुरुष जाति से, पुरुषों मे इन कुत्ता-पुरुषों से बदला लेना चाहती हूं·· मेरे भोले भिराता, तुम भी मुझे दगा तो नहीं दोगे ?"

आवेश में क्वारी उठी और दुर्गा की मूर्ति, जिसे वह हमेशा गले मे पहने रहती थी, उसे सामने कर कहने लगी—"रखो इस मूर्ति पर हाथ। कसम खाओ। यह पुरुष की परीच्छा है, आखिरी बार···तुमने धोखा दिया तो फिर सिर्फ ठाकुरों को नहो, पुरुष को, चाहे वह कोई भी हो, गोली मार दिया करूंगी। मैं पुरुष नाम के पापी को इस धरती पर नहीं रहने दूंगी तब···कसम खाओ।"

भूतनाथ ने दुर्गा के पैरों पर हाथ रखा और गहन तल से निकलते हुए स्वर से कहा—"फुलवा। दुर्गा माता की शपथ, मैं तुम्हारे साथ न्याय करूंगा लेकिन तुम भाई की बात को मान देना।"

"मैं जानती हूं तुम क्या सलाह दोगे। कातिल होने पर साहस की चोटी पर

चढ़ना पड़ता है न, सो, अति साहसी को सब सूझ जाता है। मैंने तुम्हें देखकर ही समझ लिया था कि तुम मनुष्य हो, मनुष्य के वेश मे कूकर-सूकर नही···या तुम सज्जन भूत हो और मैं दुर्जन चुड़ैल···हः हः हः हः कैसी रही · तो मैं · मानूगी भाई का उपदेश··· पर बदला ले लेने पर, उसके पहले नही, और तुमने जिद की तो तुम्हें पुरुषों का समर्थक मानकर गोली से उड़ा दूगी, बाद मे भले ही मुझे आत्म-हत्या करनी पड़े।

"और जो तुमने देखा है कि मैं इन अपनी बिरादरी, अपनी जाति के मलाहों से भी नफरत करती हूं, वो इसलिए कि इनमें से एक ने भी मेरी मरजाद के लिए पहल नही की···एक था ··उससे मैं प्रेम भी करने लगी थी, एक और भी था, पर उन्हें इन ठाकुरों ने मार डाला और मुझे रखैल बनाने के लिए एक को तो मेरे गिरोह के ही एक ने गोली से उड़ा दिया···ये मलाह, ये भी तो पुरुष है, ये मेरे लोभ में, मेरे साहस से, मेरे समरथ होने से बंध गए हैं। इन्हें धन और मान भी तो दिलवाया है मैंने, सिर ऊंचा हुआ है नीच जातियों का, इसलिए ये साथ दे रहे हैं। तो भी इनमें किसी का भरोसा नहीं, कब दगा दे जाएं···मेरा साथ सिर्फ मेरी नफरत दे रही है। जो औरत घिरना से नही जी सकती, वह गाय बकरी बनकर जीती है और उस पर सांड़ और बकरे चढ़ते हैं और उसे काट कर लोग खा जाते है; उसे खूब दुहने और बच्चे निकाल लेने के बाद···मैं नफरत के कारण औरत बन चुकी हूं···मैं इन सबसे नफरत करती हूं—आक्ख थू!"

अपने ही विष से क्वांरी निढाल होने लगी। उसने उत्तेजना के लिए फिर बोतल की ओर हाथ उठाया.पर भूतनाथ ने मना कर दिया और उसे सोने के लिए कहा। अपनी पूंछ को काटने वाली नागिन की तरह क्वांरी ऐंठती रही···उमड़ती रही और अन्त में शिथिल होकर गिर गई। भूतनाथ काफी समय तक उसे बच्चे की तरह थपकियां देता रहा। वह कुछ समय तक अपने ज़हर में उबलती-ऐंठती रहकर अंततः सो गई तथापि भूतनाथ वही उसकी स्वप्नहीन प्रगाढ़ निद्रा में उसके आंकुचित मस्तक पर पड़ी लटों को अलग करता रहा और उसके आंसुओं के चिह्न मिटाता रहा। वह सो जाने के बाद निरीह और दयनीय लग रही थी।

फिर धीरे से अपने को उससे अलग कर, उसके सिर के नीचे तकिया लगाकर तथा कम्बल से उसे ढक कर भूतनाथ ने पेट्रोमैक्स की बत्ती को कम किया और किवाड़ खोलकर बाहर आया। उसने देखा कि कालिया, उसकी देहरी पर मुडासा लगाए, एक कम्बल लपेटे आदिवाराह सा घुड़क रहा है और उसने बन्दूक को प्रेयसी की तरह लपेट रखा है।

भूतनाथ कालिया की वफादारी देखकर मुग्ध हुआ, पर उसे जगाना जरूरी था क्योंकि क्वांरी किवाड बन्द नही कर सकती और गिरोह का क्या ठिकाना, कोई सोते में उसे मार डाले तो? किवाड़ बन्द करना जरूरी था। भूतनाथ ने कालिया को जगाया और चुप रहने का इशारा कर, धीमे स्वरों में समस्या समझाई। कालिया जब समझा तब उसने किवाड़ों को बाहर से ही बन्द कर उसमें ताला लगाया और चाबी कांख मे दबाकर बोला, "चलिए साहब, आपको आपके मन्दिर में छोड़ दू?"

"अब नींद तो आ नहीं सकती कालराम। तुम तो सो लो और फिर यह जगह तुम्हें छोड़नी नही चाहिए।"

"नही नहीं गुरु, रानी मुझे कच्चा खा जाएगी यदि मैं आपको पहुंचाने नहीं गया। वैसे आपको यही सो जाना चाहिए था साहब···अब तो आपको 'भाई' मान चुकी है···अब···काहे का डर···आप तो अब उसके साथ ही रहा करें, साहब।"

लाल-लाल रक्त ! हः हः हः हः हः मैं रक्त की प्यासी हूं···मैं फुलवा नहीं, राक्छसी हूं, राक्छसी।"

बवारी ने टेबिल पर रखी आधी से अधिक भरी ह्विस्की की बोतल उठाई और मुंह से लगाकर, बिना पानी मिलाए, नीट पीने लगी जैसे कोई प्यासा वन्य पशु पानी पर टूटता है। भूतनाथ ने उसे रोका पर वह नहीं मानी। तब उसने जोर देकर बोतल बवारी के मुंह से निकाली और प्यार भरे क्रोध से कहा—"यह क्या करती हैं? आप अचेत हो जाएंगी। यह बहुत तेज़ है।"

"मैं होश में नहीं रहना चाहती···मेरे फूल जिन्होंने मसले हैं, जिन्होंने मुझे रौंदा है, एक नारी को, उन कुत्तों को मारे बिना मैं होश में नहीं आ सकती। मुझे रोको मत, तुम भी पुरुष हो, नाम से ठाकुर लगते हो, तुमने भी किसी नारी के फूल तोड़े होंगे···।"

"क्या पागल हो गई हो? मैं कोई ठाकुर-चाकुर नहीं, मैं जाति से परे हूं, सिर्फ एक मनुष्य हूं और मैंने किसी नारी को नहीं छला।"

"···तभी तुम भाई बने, नहीं तो मुझे भोगते···हर पुरुष मुझे कुतिया समझता है और मुझे सिर्फ कुत्ते की तरह देखता है···आप भाई···माफ करना आप अलग से हैं। आप पुरुष जाति में कहां से पैदा हो गए···नहीं, आप मर्द नहीं हो सकते, आप किसी दूसरी योनि की कोई भटकती आत्मा हैं···बोलिए, आप कौन हैं, देवता, फरिश्ते···कौन हैं आप···आप बताते क्यों नहीं·· यहां क्या लेने आए हैं आप · इस कुम्भीपाक नरक में क्यों अपने को लथेड़ रहे हैं?

"आप जानना चाहते हैं कि आदमी डाकू क्यों बनता है? सीधी बात है, सह जाए तो साधू, न सह पाए तो डाकू, और मर्द तो डाकू होता ही है। जो कुछ नहीं कर पाता, वह अपनी औरत के साथ डाकू का बर्ताव करता है। उसका जोर कहीं तो दिखे। कहीं न दिखा पाया तो बेचारी घर वाली पर रौब दिखलाएगा। औरत डाकू क्यों नहीं बनती, यह सवाल है, यह नहीं कि औरत डाकू कैसे बनती है···अब समझ में आ गया न भोले···वा···नहीं मेरे भोले भाई।"

और इतना कहकर बवारी उत्तेजना में लड़खड़ा कर, भूतनाथ के पैरों पर गिर पड़ी और घायल हंसिनी की तरह पुनः रोने लगी···आपने मुझे बहिन कहा है, अब आप मेरे गवाह, मेरे जज, मेरे वकील बनें···बनेंगे न? मैं अब आपको छोड़ूंगी नहीं···मेरा इन्तजार पुलिस या ठाकुरों की कोई गोली कर रही है। पर मरने की मुझे चिंता नहीं। मैं सिर्फ नारी-जाति का, इस पुरुष जाति से, पुरुषों में इन कुत्ता-पुरुषों से बदला लेना चाहती हूं·· मेरे भोले भिराता, तुम भी मुझे दगा तो नहीं दोगे?"

आवेश में बवारी उठी और दुर्गा की मूर्ति, जिसे वह हमेशा गले में पहने रहती थी, उसे सामने कर कहने लगी—"रखो इस मूर्ति पर हाथ। कसम खाओ। यह पुरुष की परीच्छा है, आखिरी बार···तुमने धोखा दिया तो फिर सिर्फ ठाकुरों को नहीं, पुरुष को, चाहे वह कोई भी हो, गोली मार दिया करूंगी। मैं पुरुष नाम के पापी को इस धरती पर नहीं रहने दूंगी तब···कसम खाओ।"

भूतनाथ ने दुर्गा के पैरों पर हाथ रखा और गहन तल से निकलते हुए स्वर से कहा—"फुलवा। दुर्गा माता की शपथ, मैं तुम्हारे साथ न्याय करूंगा लेकिन तुम भाई की बात को मान देना।"

"मैं जानती हूं तुम क्या सलाह दोगे। कातिल होने पर साहस की चोटी पर

चढ़ना पड़ता है न, सो, अति साहसी को सब सूझ जाता है। मैंने तुम्हें देखकर ही समझ लिया था कि तुम मनुष्य हो, मनुष्य के वेश में कूकर-सूकर नहीं···या तुम सज्जन भूत हो और मैं दुर्जन चुड़ैल···हः हः हः हः कैसी रही··· तो मैं··· मानूंगी भाई का उपदेश··· पर बदला ले लेने पर, उसके पहले नहीं, और तुमने जिद की तो तुम्हें पुरुषों का समर्थक मानकर गोली से उड़ा दूंगी, बाद में भले ही मुझे आत्म-हत्या करनी पड़े।

"और जो तुमने देखा है कि मैं इन अपनी बिरादरी, अपनी जाति के मलाहों से भी नफरत करती हूं, वो इसलिए कि इनमें से एक ने भी मेरी मरजाद के लिए पहल नहीं की···एक था···उनसे मैं प्रेम भी करने लगी थी, एक और भी था, पर उन्हें इन ठाकुरों ने मार डाला और मुझे रखैल बनाने के लिए एक को तो मेरे गिरोह के ही एक ने गोली से उड़ा दिया···ये मलाह, ये भी तो पुरुष हैं, ये मेरे लोभ में, मेरे साहस से, मेरे समरथ होने से बंध गए हैं। इन्हें धन और मान भी तो दिलवाया है मैंने, सिर ऊंचा हुआ है नीच जातियों का, इसलिए ये साथ दे रहे हैं। सो भी इनमें किसी का भरोसा नहीं, कब दगा दे जाएं···मेरा साथ सिर्फ मेरी नफरत दे रही है। जो औरत घिरना से नहीं जी सकती, वह गाय बकरी बनकर जीती है और उस पर सांड़ और बकरे चढ़ते हैं और उसे काट कर लोग खा जाते हैं, उसे सब दुहने और बच्चे निकाल लेने के बाद···मैं नफरत के कारण औरत बन चुकी हूं···मैं इन सबसे नफरत करती हूं—आखरा थू!"

अपने ही विष से कवारी निढाल होने लगी। उसने उत्तेजना के लिए फिर बोतल की ओर हाथ उठाया पर भूतनाथ ने मना कर दिया और उसे सोने के लिए कहा। अपनी पूंछ को काटने वाली नागिन की तरह कवारी ऐंठती रही···उमड़ती रही और अन्त में शिथिल होकर गिर गई। भूतनाथ काफी समय तक उसे बच्चे की तरह थपकियां देता रहा। वह कुछ समय तक अपने जहर में उबलती-ऐंठती रहकर अंततः सो गई तथापि भूतनाथ वहीं उसकी स्वप्नहीन प्रगाढ़ निद्रा में उसके आकुंचित मस्तक पर पड़ी लटों को अलग करता रहा और उसके आंसुओं के चिह्न मिटाता रहा। वह सो जाने के बाद निरीह और दयनीय लग रही थी।

फिर धीरे से अपने को उससे अलग कर, उसके सिर के नीचे तकिया लगाकर तथा कम्बल से उसे ढक कर भूतनाथ ने पेट्रोमैक्स की बत्ती को कम किया और किवाड़ खोलकर बाहर आया। उसने देखा कि कालिया, उसकी देहरी पर मुड़ासा लगाए, एक कम्बल लपेटे आदियाराह सा धुड़क रहा है और उसने बन्दूक को प्रेयसी की तरह लपेट रखा है।

भूतनाथ कालिया की वफादारी देखकर मुग्ध हुआ, पर उसे जगाना जरूरी था क्योंकि कवारी किवाड़ बन्द नहीं कर सकती और गिरोह का क्या ठिकाना, कोई सोते में उसे मार डाले तो? किवाड़ बन्द करना जरूरी था। भूतनाथ ने कालिया को जगाया और चुप रहने का इशारा कर, धीमे स्वरों में समस्या समझाई। कालिया जब समझा तब उसने किवाड़ों को बाहर से ही बन्द कर उसमें ताला लगाया और चाबी कांख में दबाकर बोला, "चलिए साहब, आपको आपके मन्दिर में छोड़ दूं?"

"अब नींद तो आ नहीं सकती कालराम। तुम तो सो लो और फिर यह जगह तुम्हें छोड़नी नहीं चाहिए।"

"नहीं नहीं गुरु, रानी मुझे कच्चा खा जाएगी यदि मैं आपको पहुंचाने नहीं गया। वैसे आपको यहीं सो जाना चाहिए था साहब···अब तो आपको 'भाई' मान चुकी हैं···अब···काहे का डर···आप तो अब उसके साथ ही रहा करें, साहब।"

"क्यों, क्या तुम यहां सब सुनते रहे हो ?"

"अरे···आप भी क्या नशे में हैं या बहिन की तरह पागल हैं ? किसने नहीं सुना है उसके दुख को···सब सुनते रहे हैं। वह क्या धीरे बोलती है ? किसी से डरती है ? वह हमारी रानी है साहब ··और सब तो सुनकर गए लेकिन साहब, सोबरनसिंह, सोना मलाह बहुत दुःखी हैं। रानी ने यह क्यों कहा कि वह किसी पर भरोसा नहीं करती ?"

भूतनाथ मुस्कराया और आगे रास्ता बनाते-दिखाते कालिया की पीठ में एक कोंच लगाकर कहा—"तू बहुत दुष्ट है, कालिया। तभी तुझे क्वारी रगड़ती है मज़ाक में।"

"अरे साहब वह क्या रगड़ेगी···मुझे ? वो तो मुझे ही उससे कुचलवाने में मज़ा आता है। उतनी देर तक मैं उसके भीतर तो रहता हूं न, बस हंसी सुख की याद कर मैं फिकिर नहीं करता कि वह मेरे साथ क्या कर रही है या क्या कह रही है···क्यों साहब, है न जोरदार औरत···आपने ऐसी कोई और देखी है ?"

"वह हृदय से फुलवा है कालिया, एक कोमल खुशबू से तरबतर फूल···लेकिन उसके साथ ज़्यादती हुई है, बहुत हुई है। वह उसी विष में अपने को तल रही है। उसके भीतर एक शूर-वीर भाव है। मैंने सचमुच, इतनी बहादुर औरत नहीं देखी···कमाल है।"

"मैं जानता था, आपकी अन्त में यही राय बनेगी। आपने उसका ऊपरी हाव-भाव देखा, उसके भीतर का भाव ऊपर वाले नाटक से बिल्कुल उलटा है। वह भीतर से रस की क्यारी है गुरुजी···हाय, कालिया, तू बड़ा अभागा है !"

भूतनाथ बड़ी ज़ोर से हंसा। वे अब शिवालय के पास आ गए थे।

"तू निराश मत हो कालराम। तू महाकाल है न···देख यह शिव है, इसी का उग्र रूप रुद्र है, पार्वती माता का उग्र रूप रुद्राणी। तो सुन, तुझे रहस्य बताता हूं। मैं यहां रुद्र-रुद्राणी के पास रहता हूं। मुझे सवेरे सपने में शिव के एक गण ने बताया कि कालिया—कालराम, रुद्रगणों में से एक का अवतार है और फुलवा में साक्षात् रुद्राणी का तेज है।"

"सच गुरु जी ? आप मुझे बना तो नहीं रहे हैं ?"

"कतई नहीं। तू मेरा भी तो भगत है, मैं तुझे कैसे बना सकता हूं ? रुद्राणी के काम तो रुद्र का गण ही आएगा न। देखना, अंत में क्वांरी तेरा मज़ाक बनाना बंद कर, तुझे अपना लेगी।"

"सच गुरु जी ? ···हाय ऐसा हो जाए तो कालिया की सद्‌गति हो जाए !"

"सद्‌गति की बात मत करो कालराम, वह तो मरने के बाद होती है। तेरा तो संगम और सत्संगति होगी क्वांरी के साथ।"

"साहब। आप मुझे चढ़ा रहे हैं। यह तो हो ही नहीं सकता।"

"यह होगा, अब तू जा, मैं आज शिव-पार्वती से पुनः प्रार्थना करूंगा कि वे क्वारी को तेरी ओर झुकाएं।"

"सच्ची गुरुजी ? वाह। मैं आपका सेवक तो हूं ही, दास बन जाऊंगा, कसम घाटवाले बाबा की, आप रानी को बस ज़रा-सा मेरी तरफ झुका दें।"

"अरे, तू कल से देखना क्या होता है। मैं तेरी सिफारिश कर चुका हूं।"

"सच ? तो काम बन गया···मैं ज़रा भोला बाबा के पैर छू लूं। वे आपको आज

सवेरे सपना जरूर देंगे, बोल भोलाबाबा, भोलाबाबा की जै, बम बम बमक बम बम···भोले !"

भूतनाथ हंसता हुआ अपनी कोठरी में गया और मोमबत्ती जलाकर रपट पूरी करने लगा। आज फुलवा बागिन का चरित्र रपट में ऐसा खुला, ऐसा खिला कि कब भोर हो गई, उषा की लाली फैल गई, पौ फट गई, भूतनाथ को तन्मयता में यह ज्ञात ही नहीं हो सका। उसके अक्षर-अक्षर में फुलवा रिस रही थी और प्रत्येक शब्द और वाक्य में उसके चरित्र की गंध भर रही थी। उसने आज फुलवा डकैतिन के रहस्य को ही नहीं पाया था, स्वयं फुलवा को भी वह प्राप्त कर सका था। उसकी निर्मल आत्मा उसके विभिन्न आयामों और तरंगों में साक्षात्कारित हो गई थी और उस सब में एक बहिन की ममता महक उठी थी।

रात भर के तनाव के बाद अब भूतनाथ को आलस्य आया। उसने सोचा कि प्रातःकाल क्वांरी नदी के किनारे की वायु को फेफड़ों में भरकर, तब वह सोएगा। अब दिन में तो गिरोह कहीं जाएगा नहीं, वह चैन से दोपहर तक सो सकेगा।

भूतनाथ क्वांरी नदी के किनारे आकर उसकी बालू में बहती धार की ओर बढ़ा। वहां बालू ही बालू थी और धारा के समानांतर टहलने का सुख वर्णनातीत था। वह पानी में स्वर्ण समोते सूर्योदय को देखता रह गया। जंगल में···पक्षियों का सजीव कलरव, उनकी उड़ान और फुदक, पानी की धारा या गड्ढों में, इधर-उधर देख-देखकर उनका जलपान, दूर वन्य पशुओं की मन्द होती आवाजें, हवा की किलोलें, नदी के सुनहले चांदी मढ़े प्रवाह के मोड़ और जलगति के हावभाव, सब कुछ—अद्भुत था। भूतनाथ प्रकृति के साथ हिलमिल कर ऐसा खोया कि उसे तन-बदन का होश ही नहीं रहा।

भूतनाथ को इस मुद्रा में उधर आती अमरीकी फिल्म टोली की रोजी और मेरी ने सबसे पहले भांपा। वे टोली को पीछे छोड़कर दौड़ती हुई आईं। उनके निकट आने पर, उनकी चहक से भूतनाथ प्रकृति से यथार्थ में वापस हुआ। वह रोजी-मेरी को प्रातः की रमणीयता में पहले तो भ्रम समझा और आंखें विस्फारित कर यों देखने लगा, गोया भ्रम और सत्य का अन्तर नहीं समझ पा रहा है। दोनों समझ गईं, बोलीं, "मिस्टर गदाधरसिंह, वी आर रियली ह्यिर, यस, रियली !"

"ह्वाट ?"

दोनों खिल-खिलकर हंसने लगीं।

10

चिरंजीव यादव, भूतनाथ के दिए हुए दस्तावेज को बण्डी की भीतरी जेब में दबाए, टिकिसी के महादेव-मन्दिर की ओर लपका जा रहा था। दीपा बार-बार उससे धीरे चलने को कहती, लेकिन वह रक्त की त्वरा से फिर तेज हो जाता था। दीपा ने उधर से ध्यान हटाकर आकाश की ओर देखा, सूरज, दुर्ग-भिलाई लोह संयन्त्र की धमन-भट्टी की तरह लाल-सुर्ख हो रहा था और उससे किरणों की शहतीरें निकल-निकल कर, आसमान की पट्टी पर रेंग रही थीं। दीपा को इस बिम्ब में आनन्द आया। वह दुर्ग-

भिलाई का लोहा-इस्पात का संयन्त्र देख चुकी थी। गलते लोहे की भट्टियों से बाहर आती शहतीरें ऐसी ही तो होती हैं। सूरज एक धमनभट्टी नही तो और क्या है···हम भी तो जनता की भट्टी गरम करने जा रहे हैं, अपनी विद्युत धाराओं से! राजनीतिशास्त्र ने यही तो सिखाया है कि विचारधारा से अपनी बिजलिया बढ़ाओ और उस विद्युत-प्रवाह से जनभट्टी को धधकाओ···।

···पता नही, भूतनाथ भाई कहां होगे, क्या नाम है और क्या काम है! मैं तो उन्हे मनुष्य-योनि का मानती ही नही। उस लम्बी आकृति और इस्पाती काया मे कोई उच्चतर आत्मा आ बसी है, इसी से उसे अपनी कोई चिंता नही, रात-दिन देश और समाज · क्या उसी ने ठेका ले रखा है समाज के परिवर्तन का? हां ले रखा है। गाधी ने भी तो स्वय अपने को राजनीति के लिए नियुक्त कर लिया था···लेकिन भूतनाथ तो शाति-अहिंसा से हृदय-परिवर्तन के उसूल को संभव नही मानता। वह कहता है कि अपवाद छोडकर कोई बताए कि किसी भूपति या उद्योगपति का दिल बदला हो और उसने अपनी पूजी और सम्पत्ति को जन-धन के रूप में मान लिया हो? वह कहता है कि सर्वोदयी, ग्रामदान कराते है, भूमिदान पर उद्योगों में श्रमिकों की साझेदारी के लिए सेठोंलालाओं को क्यो प्रेरित नही करते? वह कहता है कि नौकरशाही की जगह नई जनप्रतिबद्ध लोक सेवा क्यों शुरू नही की जाती? उसके बिना जन-शोषण कैसे रुकेगा? वह कहता है जनादर्शों पर, राजनैतिक दल एक क्यो नही होते, अपनी ढपली अपना राग क्यों अलापते और जनगण का विभाजन करते हैं?

···स्पष्ट और अश्लील उपभोग पर अंकुश क्यों नहीं लगता? जो शिक्षक पढ़ाता नही है, जो कर्मचारी काम नही करता, जो सिपाही जन-रक्षा न कर रिश्वत खाता है, जो अधिकारी देखरेख नही करता, जो नेता या दल जनता को मूर्ख बनाता है, वह मजे क्यो कर रहा है? आतक नेता-पुलिस-तस्कर-ठेकेदार-व्यापारी-उद्योगपति और अफसरों का क्यो है, जनता का आतक क्यों नही है? जनसेवक कहलाने वाले रक्तदोहनकर्ता जन-भय से भयभीत क्यो नही हैं? धन उनका, पद उनके, सेवा उनकी, पुलिस उनकी, चोर उनका, साहू उनका···और सब सहे जा रहे है। क्या हममें इंसानियत के अणु-परमाणु बुझ गए है? हम भड़कते क्यों नहीं हैं? ये वामपथी राजनैतिक दल, प्रचार और सभा-सम्मेलनो के अलावा और क्या कर रहे है? ये जनकष्ट निवारण के लिए लड़ते क्यो नही हैं? सिफारिशो-रिश्वतो का रास्ता क्यों अपनाते है? जनता इनका साथ क्यो नही देती? जनता का काम कराने के लिए गाव-गाव जाकर कितने वामपंथी सक्रिय हैं···जन-क्राति के समर्थक इन साम्प्रदायवादियों से टकराते क्यों नही···वह कहता है—

"दीपा, तुम चल नही रही, रुककर यह क्या सोच रही हो···ओह, शायद तुम्हारे मन में, 'वह कहता है' चल रहा होगा। भूतनाथ का भूत तुम्हारी खोपड़ी मे पैठ गया है···।"

"भाई, यह सच है। मैं उसकी भक्त बन चुकी हूं। मेरा रक्षक भी तो वह है न? वह कहता है···।"

"अरे, 'वह कहता है'···फिर शुरू हो गया। मैं कहता हूं जल्दी चलो, विलम्ब हो रहा है।"

चिरजीव ने छाती पर सुरक्षित भूतनाथ के दस्तावेज पर हाथ फेरा और दीपा का हाथ पकड़ कर समझाने लगा—"देख, तू हमेशा एक पटरी पर चलती है। अब तेरे सिर में भूतनाथ और हृदय मे—कलाकार, बस और कोई नही सूझता तुझे? मेरा

अहसान नहीं मानती। यदि मैं उस दिन तुझे बांसुरी सुनाने नहीं ले जाता तो तेरी दोनों से कैसे भेंट होती? अरे, मुझे भी माना कर, जब देखो, उन्हीं दोनों के ध्यान में डूबी रहती है। तेरे कलाकार का कोई पत्र आया है क्या?"

"हां, आया है, बंबई में उसका प्रदर्शन है। मुझे बुलाया है।"

"और मुझे?"

"तुझे भी आने को कहा है।"

"यानी, मैं 'भी' मैं हूं और तू 'ही' है। दरअसल उसने तुझे बुलाया है, मुझे तो रीति-नीति वश लिख दिया है ताकि मैं तेरे जाने का विरोध नहीं करूं...मैं क्यों रोकूंगा तुझे...तू उसकी दीवानी है न, जा और उसकी बांसुरी पर झूम। तू गोपी है और वह वेणुमाधव, हः ह हः हः।"

दीपा भाई को मारने दौड़ी। वह आगे भागा, दीपा उसके पीछे। दीपा ने दो-चार कंकड़ उठाकर भाई की पीठ में मारे। वह हंसता हुआ आगे उड़ा जा रहा था। दीपा पिछड़ गई थी पर दौड़ रही थी।

मंदिर के बाहर पुजारी जी प्रसन्न मुद्रा में यह दृश्य देखकर अलौकिक आनन्द ले रहे थे। पास आने पर उन्होंने स्नेह से झिड़का—"चिरंजीव, तूने बेटी दीपा से जरूर कुछ कह दिया है, देखो कितनी नाराज है यह। बिटिया, मैं इस दुष्ट को पकड़े हुए हूं। तू आ और जमा तो इसके दो-चार धौल। यह तुझे चिढ़ाता है न?"

दीपा हांफती हुई आई और उसने पीछे से आकर भाई की पीठ में दो-चार विनोदी मुक्के जड़े और उसे कुतकुताने लगी। चिरंजीव हंसने लगा। "अरी, छोड़, यह क्या कर रही है?"

"वही जो तू चाहता है। वादा कर कि अब वैसी बात नहीं कहेगा और मुझे बम्बई जाने देगा, बोल या और कुतकुती लगाऊं?"

"अच्छा गोपी...।"

"फिर गोपी"—दीपा फिर भाई को मारने लगी। चिरंजीव चिल्लाया—"पुजारी जी, बचाइए इस आतता-हननी से।"

सब हंसने लगे और कोठरी की ओर बढ़े।

धीरे-धीरे, इधर-उधर से अनेक प्रकार के स्थान-स्थान से लोग आए और पुजारी जी की कोठरी की ओर बढ़ते रहे। फिर वहां से एक स्वयंसेवक उन्हें सभाभवन ले जाता जो मन्दिर के नीचे बना हुआ था। वहां हरि-हर-कीर्तन चालू था और वातावरण पूरी तरह धार्मिक था। माइक पर घोषणा हो रही थी कि आज शिवरात्रि के उपलक्ष्य में भगवान शंकर की कथा और कीर्तन होगा। भक्तगण शांति से सभाभवन में विराजें और बड़े पुजारी जी से पुराण कथा सुनें।

वयोवृद्ध पुजारी जी महाराज, पौराणिक शिव-महात्म्य बखानने लगे। देवताओं में शिवपूजा पर यद्यपि ब्राह्मणों ने अधिकार कर रुद्र-शिव को ब्राह्मण देवमण्डल में शामिल कर लिया, उनके साथ ब्रह्मा-विष्णु-वेद-पुराण-यक्ष-याग-गायत्री आदि आर्य मंत्र जोड़ दिए पर रुद्र-शिव पूरी तरह वर्ण-धर्म में विन्यस्त नहीं हो सके क्योंकि भूत-प्रेत-गण-वृषभ-हाथी का चर्म, भंग-बूटी, विकट नृत्य नग्नता, श्मशान सेवन, कपाल माला, रुधिर-भस्म आदि की भीषणता और वर्णसमाज की मर्यादा का अतिक्रमण अर्थात् चोर-दस्यु, दुराचारी-दुष्ट, दरिद्र आदि पर भी आशुतोष रूप में कृपा करना—यह सब रुद्र-शिव को ब्राह्मण धर्म के बाहर करता है और साफ लगता है कि रुद्र-शिव यूथ (कबीला) के

देवता थे, जिनकी महिमा या जनप्रभाव देखकर ब्राह्मणों ने वेदकाल, वेदान्त और पौराणिक अवधि मे अपना लिया और जिन वर्ण-धर्म विरोधी प्रवृत्तियों का अनुमोदन असभव था, उन्हें शिव की योग-लीलाएं मान समाधान कर दिया गया। तभी वे 'महादेव' कहलाए।

देवों मे महादेव के मन्दिर से अच्छी जगह सर्वजन कल्याण की योजना के लिए क्या हो सकती थी क्योंकि वहां सभी जातियों, धर्मों के व्यक्ति आ सकते थे। शिव तो जनरूप है, जन ही शिव है और अपना यह जन कैसा है ? इस जन के पास न वस्त्र है, न भोजन, न निवास, जो है, सब रूखा-सूखा। गावों में जाओ, देखो, अंडरवियर या घुटन्ना डाटे हुए है, वदन नगा, सिर पर बोझ है। खेतों में काम हो रहा है। वह सज-बज कर हो सकता है क्या ?

"ये नगे-उघारे, अनपढ, काले-कलूटे, अस्वच्छ और असुन्दर उग्र और फक्कड"'पर मन के सच्चे, सीधों से सीधे, टेढ़ों से महा टेढ़े, भोले और भले, ये जो भारत के गरीब-गुरबा हैं, अल्पहारा, सर्वहारा हैं, ये ही तो महादेव के गण हैं। पुराणों में कथाकारों ने वास्तविकता को मिथक दे दिए हैं। मिथक के भीतर सत्य पैठा है। उसे खोलो भक्तो। रुद्र-शिव-पुराण कथा का कोई वृत्त ले लें, सब में जन-सत्य छिपा हुआ है।

"तो जनता, दरिद्र जनता को, गावगली के प्रकृति-पुत्रों को, पुराणों मे, रुद्रगण ठीक ही कहा गया है। जब तक सब ठीक चलता है, राज्य व्यापार, शिक्षा, प्रबन्ध, रीति-नीति, सब ठीक चलता है, सहने योग्य होता है तो यह जनगण अपने व्रत-उत्सवों, अपने शादी-विवाहों, खेती-खलिहानों, फाग और आल्हा मे मग्न रहता है, व्यस्त और मस्त, प्रसन्न और सन्तुष्ट, पर लोक पर संकट आ जाए तो यह जन रुद्र होकर ताडव करता है और जो दक्ष हैं, चतुर हैं, जिन्होंने अपने और अपने वर्ग के लिए जनगण को फुसला कर लूट लिया है और यक्ष में जनगण को भाग नहीं दे रहे हैं तो यही भोला भारतीय जनगण क्रांति कर देता है। यही दक्षयक्ष विध्वंस की कथा का मर्म है !"

पुजारी जी तरह-तरह से रुद्र शिव की पुराण कथा से ऐसे-ऐसे इन्कलाबी मतलब निकालते रहे कि श्रोतागण इसमें बह गए। रह-रह कर शिव की विचित्र लीला और परम विचित्र व्याख्या से दीपा और चिरंजीव को चमत्कार अनुभव हुआ"

"देखा ! पुराण का भी राजनैतिक प्रयोग हो सकता है, क्या राजनैतिक बोध है पुजारी जी महाराज का ! पुराना क्रान्तिकारी है न"'भूतनाथ भाई सब बता गए हैं"'यह पुजारी बड़ा गहरा है दीपा,"'हां"'यह क्रान्तिदृष्टा ऋषि है। ऋषि जो होते थे न पुराने, वे बाद के ब्राह्मणों की तरह रूढ़िवादी और वर्णवादी नहीं होते थे"'वे मानव मात्र के लिए क्रान्तिकारी विधि से सोचते थे। मुनि भी स्वतन्त्र मति के थे"'ये जो बाद में चर्च बना, मठ बना, महन्त बना, इस पेशेवर पुरोहित और पंडित समुदाय ने भेदभाव से जकड़ा व्यवस्था को, नाश हो इन पेटू पंडितों का"'।"

दोनों हंसने लगे। दीपा ने कहा, "भाई ने यह लक्षित किया होगा कि ये पंडित उदारता मे भी अपनी वर्ण-श्रेष्ठता बनाए रखते हैं। हमें अहीर मानते हैं, गोप-ग्वाला, मगर हमें अहीर बनाए रखकर कहेंगे कि तुम कृष्ण के पालनहार हो। यानी, हम कृष्ण को पालें, उसके लिए अपने राजा को मारें और फिर उससे इतना प्रेम करने पर भी रहे, वही नीच के नीच"'मैं इन पंडितों की तोंद फाड़ूंगी"'पर, कृष्ण तो सच्चा था न, उसने राजाओं का राजा होने पर भी, अहीरों का मान रखने के लिए मोरपंख नहीं छोड़े"'।"

"और न बांसुरी।" चिरंजीव बोला।

चिरंजीव ने दीपा को चिढ़ाया। दीपा ने भाई को बकोटा भरा। वह दर्द से सी-सी करने लगा। कथा की जनवादी व्याख्या चल रही थी, बीच-बीच में कीर्तन और जय-जयकार होने लगता था।

नगर इटावा, मंदिर से दूर था। जनगण खिसकने लगे, बाल-वृद्ध, वनिता-मण्डल के चले जाने और गिने-चुने लोगों के रह जाने के बाद पुजारी जी ने कहा कि अब कुछ देश-चर्चा हो जाए। आसन से उतर कर पुजारी जी नीचे आ बैठे और घिर-घूमकर सब बैठ गए। सर्दी के कारण किवाड़ बन्द कर दिए गए और एक अध-बंद द्वार पर दो स्वयंसेवकों को जमा दिया गया ताकि वे देख-सुन कर किसी को प्रवेश दें।

बिना किसी औपचारिकता के पुजारी के इशारे पर चिरंजीव ने भूतनाथ का दस्तावेज पेश किया। उसकी प्रस्तावना में मुख्य बिंदु यह था कि 9 सितम्बर 1928 ई० को, सबसे पहले क्रान्तिकारियों ने, वर्गहीन समाज की स्थापना को भारतीय राजनैतिक-स्वतन्त्रता के लक्ष्य के साथ जोड़ा था और समाजवाद को जनगण की मुक्ति के लिए माना था। आप यशपाल की 'सिंहावलोकन' किताब में इसे विस्तार से देख सकते हैं।

यह ठीक है कि देश में संगठित वामपंथी अर्थात् समाजवादी-साम्यवादी दल हैं और यह भी कि उन्हें रहना है। किसी भी राजनैतिक शून्य की दशा में, वे राज्यव्यवस्था पर अधिकार कर उसे चला सकते हैं, समाज को नया रचाव दे सकते हैं पर वे जहां तहां ही प्रभाव रखते हैं। अपनी कमजोरी से शासक दल ने साम्राज्यवादियों के साथ समझौता किया और देश की एकता के लिए न लड़कर, मुस्लिम फिरकापरस्तों, लीगियों का एक होकर विरोध न कर, उनसे मिलकर देश को विभाजित कराया और देशभक्त होने का गर्व भी शासकदल करता है।

'1857 से 1947 तक क्रान्तिकारी परम्परा की राजनीति न केवल साम्राज्यवाद के विरुद्ध थी, बल्कि वह हर प्रकार के साम्प्रदायवादी, जातिवादी पृथकतावाद के विरुद्ध भी थी और विद्रोह में वह विश्वासों को बाधक नहीं होने देती थी।

आज दुहरा खतरा है। शासक दल भीतर से न धर्म निरपेक्ष है, न अंधविश्वास विरोधी है। वह सर्ववर्गसमभाव और सर्वधर्मसमभाव पर चल रहा है पर मतपत्र या वोट के लिए एक धर्म, एक जमात को दूसरे धर्म और जमात से लड़ाता है। जनगण तो अभी भी अंधविश्वासों को ही धर्म मानता है, उसकी चित्तवृत्ति वैज्ञानिक नहीं है, न शासक वर्ग की, न शासित की। अतः वह धर्म के मामले में बहुत तीक्ष्ण और आत्म-सजग है। जरा-सी छेड़छाड़ पर एक धर्म के लोग, वर्ग भेद भूलकर, दूसरे धर्म वालों पर पिल पड़ते हैं। इसे शासक वर्ग बढ़ावा देता है, क्योंकि वर्गों और धर्मों यानी सम्प्रदायों को प्रभावहीन बनाकर नहीं, उन्हें उखाड़ कर नहीं, उनमें संतुलन स्थापित कर यानी बन्दर बांट कर, वह यथास्थिति बनाए हुए है।

अतः शासन पर सम्पन्न मध्यवर्ग के नेताओं की जगह, समाजवादी साम्यवादी दृष्टि के लोग जाएं, संसद में वर्गानुरूप प्रतिनिधित्व हो। तब कानून से भी बदलाव हो सकता है अन्यथा आधे-अधूरे भूमि सुधार होंगे, नौकरशाही बिना रिश्वत के कोई काम न करेगी और सबल-निर्बल, शोषक-शोषित की खाइयां पट नहीं सकेंगी। वर्गानुरूप संसद का गठन हो जाए तो पहला कानून यह बने कि भूमि और पूंजी पर, सम्पत्ति पर, सबका अधिकार है और वह कुछ वर्गों के पास नहीं रहने दी जाएगी। वर्गों या पेशों के हिसाब से जब प्रतिनिधि चुने जाएंगे तो साफ है कि गरीब वर्ग के लोग अधिक आएंगे

और इस तरह, शांतिमय विधि से मूल परिवर्तन हो सकता है।

सर्ववर्गीय प्रतिनिधित्व, जनगण के साथ धोखाधड़ी है।

यह बात वर्गीय समाज के समर्थक, अल्पपूंजी वाले यानी पेंती-बूर्ज्वा मनोदशा के जो नेतागण हैं, मध्यपंथी कांग्रेस-लोकदल-जनतापार्टी जैसे—न वाम, न दक्षिण ध्रुव के दल, नहीं होने देंगे, न भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, स्वतंत्र पार्टी जैसे दक्षिण पंथी दल इसे होने देंगे। इसलिए जनगण को, वर्गीय-प्रतिनिधित्व वाली संसद बनाने के विकल्प के लिए समझाया जाना चाहिए।

लेकिन जनगण की मुक्ति के विषय में यदि हम गम्भीर हैं, अल्पसम्पत्तिशाली, आत्मतुष्ट मानसिकता से ऊपर उठ सकते हैं, त्याग कर सकते हैं, लड़ सकते हैं, जनगण को संगठित करने में धीरज और श्रम लगा सकते हैं, जनकार्य को जनयोग या जनयज्ञ या इबादत मान सकते हैं तो सशस्त्र संघर्ष की तैयारी भी साथ-साथ होनी चाहिए क्योंकि जनमुक्ति के विकल्पों में परस्पर पूरकता है। शांतिपूर्ण तरीका विफल हो तो दूसरे विकल्प के लिए हमें तैयार रहना होगा। उसके बिना असहायता आ जाएगी।

इसके सिवा, आज जनविरोधी सरकार जनरक्षा में असफल हो रही है। राज-नेता, पुलिस और अपराधी की ऐसी एकता कभी नहीं थी, पर अब यह है। इसके सिवा संगठित वामपंथी दल के लोग, प्रचार, प्रस्ताव, विचार और सभा-सम्मेलनों में फंसे रहते हैं। यह भी जरूरी है। यह वे करते रहें पर वे जनता का जो जीवनसंघर्ष है, जो रोज-ब-रोज के काम हैं, उसमें वामपंथी राजनैतिक दल के लोग मदद नहीं करते अतः उन्हें जन-समर्थन नहीं मिलता।

अतएव, रक्षा और कार्यसिद्धि, जीवन-संघर्ष के—ये दो मोर्चे हैं। इनकी पूर्ति के लिए, ग्राम-ग्राम, मुहल्ले-मुहल्ले में, गली-गली में, 'जनगण' समितियां, संक्षेप में 'गण-समिति' बनें और समिति के गण अपने जिम्मे जनसमूह को एक परिवार मानकर, उनकी खैर-खबर लें, उनका अलगाव दूर करें, उनकी बुराइयों—बुरी आदतों, बुरे रीति-रिवाजों, फूट-लूट और काट-कपट के विरुद्ध लड़ें और दूसरी तरफ उनकी कार्य-सिद्धि के लिए, शासन और व्यवस्था पर दबाव डाल कर, सही ढंग के काम कराएं, गलत कामों के लिए जनता का भी विरोध करें। इस तरह, गणसमिति के सदस्य जन-विश्वास प्राप्त कर सकते हैं और जनराजनीति शब्द से कर्म की ओर चल सकती है।

स्वभावतः गणसमितियां लोकरंजन और सुधार का भी काम कर सकती हैं, ताकि वे सांस्कृतिक-क्रान्ति की भी माध्यम बन जाएं, मगर राजनैतिक-आर्थिक-सांस्कृतिक-शैक्षणिक संघर्ष साथ-साथ चले।

इसलिए हमारा बोध और विचार यह है कि सारा देश, फिर सारा विश्व, छोटे-छोटे संघर्षशील संगठनों से प्रेरित-प्रभावित हो और गणसमिति के जो सदस्य हों, उनकी लगातार ट्रेनिंग हो, वैसे संघर्ष स्वयं अपने में सबसे बड़ा सबक है और उसकी अवधि में उसकी प्रक्रिया में ग्राम-ग्राम-समूह-कस्बा-नगर-महानगर आदि की गण समितियों में स्वतः कार्य समन्वय होने लगेगा।

उदाहरण के लिए कोई जनकार्य लें, जैसे, इस समय चकबन्दी हो रही है। किसान की जड़ और जीविका उसकी जमीन है। नौकरशाही, किसानों को बीस साला बन्दोबस्त के नाम पर लूटती है। खाते-खतौनी के इन्तखाब आठ आने, एक रुपये की जगह दस-दस बीस रुपयों में मिलते हैं। लूट के लिए पटवारी-कानूनगो-तहसीलदार-एस. डी. ओ. और पुलिस सब एक हैं, सिर्फ किसान, अपनी तंगदिली और तंगनजरी

से पिछड़ेपन के कारण, कलह और द्वेष से विभाजित है। वह अशिक्षित और रूढ़िवादी है अतः जड़ भी होता है लेकिन ये अंतर्विरोध प्राकृतिक नहीं हैं, किसानों को सामन्ती व्यवस्था ने ऐसा ही बना दिया है। इसलिए उनकी जड़ता और कलह आदि से न घबराकर चकबन्दी जैसे कार्य को लेकर, किसानों को नौकरशाही के विरुद्ध खड़ा करना चाहिए।

यदि लखनऊ में या जिलाधीशों के दफ्तरों के सामने हजारों-लाखों किसानों का प्रदर्शन हो और यदि वे तो भी न सुनें, तो किसान राजधानी को घेर सकते हैं और सत्ता को विवश कर सकते हैं। लाखों के आगे न पुलिस काम करती है, न सेना। वे भी किसानों के ही बेटे तो हैं, लेकिन यह तब होगा जब गांव-गांव, जनाधार हमारे संग, कमजोर और छोटे किसानों के चक बनवाने में, रात-दिन उनके साथ रहकर, सरकारी अमले से लड़ें। नहीं मानें तो जनता उन्हें सबक सिखा सकती है। इस सबक सिखाने से ही क्रान्ति शुरू होती है जो सरकारी दमन से तीव्र होती जाती है।

इसका मतलब यह नहीं है कि मध्यपंथी सरकार, जनहित में जो योजना बनाती है तो उसका विरोध किया जाए। चकबंदी ढंग से हो तो किसानों को लाभ हो सकता है पर सामंती-पूंजीवादी सरकार का सत्य यह है कि यह अमल में, व्यवहार में अच्छी योजना को, जनता की लूट का साधन बना देती है। इसलिए अंतिम लक्ष्य तो इस सारे तंत्र को ही बदलना होगा पर उसके लिए जनगण सक्रिय तो हो। मात्र विचारधारा का प्रचार तो जनता को चिढ़ाता है। वह कहती है, सब राजनैतिक दल व्यवहार में एक जैसे हैं, सिर्फ विचार अलग-अलग हैं। यह छाप छूटनी चाहिए। जनमानस की शुद्ध श्रद्धा, प्रेम और समर्थन मिलना चाहिए।

इसी तरह दहेज, रिश्वतखोरी, बेईमानी से किया गया संग्रह, कामचोरी, भ्रष्टाचार, दुराचार, कदाचार वगैरह के खिलाफ नारा भी लगे, प्रदर्शन भी हो और सरकार निर्णय न ले तो समाज की ओर से गण प्रहार करें। प्रहार का रूप, गुनाह के अनुसार ही हो, यानी सामाजिक बहिष्कार से लेकर शारीरिक दण्ड तक, सब प्रकार का दण्ड समाज गुनहगारों को दे जो पहले आलोचना से शुरू हो और प्रदर्शन और प्रहार तक जाए।

इसी तरह संस्थाओं के गुनाहों के विरुद्ध लड़ाई छिड़े, चाहे वह राशन की दूकान हो या शिक्षालय हो।

राजनैतिक दल, इस सामाजिक-सांस्कृतिक क्रान्ति का काम नहीं कर रहे हैं, इसलिए गणसमितियां यह काम करें तब परिवर्तन की नींव पड़ सकती है।

सब स्तब्ध थे क्योंकि भूतनाथ के दस्तावेज या थीसिस में औपचारिकता या नारात्मक संघर्ष ही नहीं था, उसमें जनप्रवंचकों से सशस्त्र भिड़न्त का सुझाव भी छिपा हुआ था और यही कठिन काम था। अखबारों में लिख देना और मंच से बक देना सरल था, पर बिल्ली का मुंह कौन पकड़े, यह सवाल था।

सर्वमौन देखकर पुजारी जी विहंसे—"मैं जानता हूं कि भूतनाथ की थीसिस इन्कलाबी है, उसमें लड़ाई शब्द तक सीमित नहीं है। सब डर रहे हैं, अगुवा कौन हो, यह सब देख रहे हैं पर मैं आपको अनुभव की बात बताता हूं। जब चारों तरफ जड़ता हो, निराशा, चवाव और बचाव हो, तब कोई एक काम, जो हो सके, हाथ में लेकर शुरू हो जाना चाहिए। सवाल यह है कि ऐसी कौन-सी जनसमस्या हाथ में ली जाए?"

"दहेज की।"—दीपा तुरन्त बोल उठी।

"चकबंदी।"—एक किसान बोला।

और इस तरह, शांतिमय विधि से मूल परिवर्तन हो सकता है।

सर्ववर्गीय प्रतिनिधित्व, जनगण के साथ धोखाधड़ी है।

यह बात वर्गीय समाज के समर्थक, अल्पपूंजी वाले यानी पेंती-बूर्ज्वा मनोदशा के जो नेतागण हैं, मध्यपथी कांग्रेस-लोकदल-जनतापार्टी जैसे—न वाम, न दक्षिण ध्रुव के दल, नहीं होने देंगे, न भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, स्वतंत्र पार्टी जैसे दक्षिण पंथी दल इसे होने देंगे। इसलिए जनगण को, वर्गीय-प्रतिनिधित्व वाली संसद बनाने के विकल्प के लिए समझाया जाना चाहिए।

लेकिन जनगण की मुक्ति के विषय में यदि हम गम्भीर हैं, अल्पसम्पत्तिशाली, आत्मतुष्ट मानसिकता से ऊपर उठ सकते हैं, त्याग कर सकते हैं, लड़ सकते हैं, जनगण को संगठित करने में धीरज और श्रम लगा सकते हैं, जनकार्य को जनयोग या जनयज्ञ या इबादत मान सकते हैं तो सशस्त्र संघर्ष की तैयारी भी साथ-साथ होनी चाहिए क्योंकि जनमुक्ति के विकल्पों में परस्पर पूरकता है। शांतिपूर्ण तरीका विफल हो तो दूसरे विकल्प के लिए हमें तैयार रहना होगा। उसके बिना असहायता आ जाएगी।

इसके सिवा, आज जनविरोधी सरकार जनरक्षा में असफल हो रही है। राजनेता, पुलिस और अपराधी की ऐसी एकता कभी नहीं थी, पर अब यह है। इसके सिवा संगठित वामपंथी दल के लोग, प्रचार, प्रस्ताव, विचार और सभा-सम्मेलनों में फंसे रहते हैं। यह भी जरूरी है। यह वे करते रहें पर वे जनता का जो जीवनसंघर्ष है, जो रोज-ब-रोज के काम हैं, उसमें वामपंथी राजनैतिक दल के लोग मदद नहीं करते अतः उन्हें जन-समर्थन नहीं मिलता।

अतएव, रक्षा और कार्यसिद्धि, जीवन-संघर्ष के—ये दो मोर्चे हैं। इनकी पूर्ति के लिए, ग्राम-ग्राम, मुहल्ले-मुहल्ले में, गली-गली में, 'जनगण' समितियां, संक्षेप में 'गण-समिति' बनें और समिति के गण अपने जिम्मे जनसमूह को एक परिवार मानकर, उनकी खैर-खबर लें, उनका अलगाव दूर करें, उनकी बुराइयों—बुरी आदतों, बुरे रीति-रिवाजों, फूट-लूट और काट-कपट के विरुद्ध लड़ें और दूसरी तरफ उनकी कार्य-सिद्धि के लिए, शासन और व्यवस्था पर दबाव डाल कर, सही ढंग के काम कराएं, गलत कामों के लिए जनता का भी विरोध करें। इस तरह, गणसमिति के सदस्य जन-विश्वास प्राप्त कर सकते हैं और जनराजनीति शब्द से कर्म की ओर चल सकती है।

स्वभावतः गणसमितियां लोकरंजन और सुधार का भी काम कर सकती हैं, ताकि ये सांस्कृतिक-क्रान्ति की भी माध्यम बन जाएं, मगर राजनैतिक-आर्थिक-सांस्कृतिक-शैक्षणिक संघर्ष साथ-साथ चले।

इसलिए हमारा बोध और विचार यह है कि सारा देश, फिर सारा विश्व, छोटे-छोटे संघर्षशील संगठनों से प्रेरित-प्रभावित हो और गणसमिति के जो सदस्य हों, उनकी लगातार ट्रेनिंग हो, वैसे संघर्ष स्वयं अपने में सबसे बड़ा सबक है और उसकी अवधि में उसकी प्रक्रिया में ग्राम-ग्राम-समूह-कस्वा-नगर-महानगर आदि की गण समितियों में स्वतः कार्य समन्वय होने लगेगा।

उदाहरण के लिए कोई जनकार्य लें, जैसे, इस समय चकबन्दी हो रही है। किसान की जड़ और जीविका उसकी जमीन है। नौकरशाही, किसानों को बीस साला बन्दोबस्त के नाम पर लूटती है। खाते-खतौनी के इन्तखाब आठ आने, एक रुपये की जगह दस-दस बीस रुपयों में मिलते हैं। लूट के लिए पटवारी-कानूनगो-तहसीलदार-एस. डी. ओ. और पुलिस सब एक हैं, सिर्फ किसान, अपनी तंगदिली और तंगनजरी

से पिछड़ेपन के कारण, कलह और द्वेष से विभाजित है। वह अशिक्षित और रूढ़िवादी है अतः जड़ भी होता है लेकिन ये अंतर्विरोध प्राकृतिक नहीं हैं, किसानों को सामन्ती व्यवस्था ने ऐसा ही बना दिया है। इसलिए उनको जड़ता और कलह आदि से न घबराकर चकबन्दी जैसे कार्य को लेकर, किसानों को नौकरशाही के विरुद्ध खड़ा करना चाहिए।

यदि लखनऊ में या जिलाधीशों के दफ्तरों के सामने हजारों-लाखों किसानों का प्रदर्शन हो और यदि वे तो भी न सुनें, तो किसान राजधानी को घेर सकते हैं और सत्ता को विवश कर सकते हैं। लाखों के आगे न पुलिस काम करती है, न सेना। वे भी किसानों के ही बेटे तो हैं, लेकिन यह तब होगा जब गांव-गांव, जनपक्षधर हमारे गण, कमजोर और छोटे किसानों के चक बनवाने में, रात-दिन उनके साथ रहकर, सरकारी अमले से लड़ें। नहीं मानें तो जनता उन्हें सबक सिखा सकती है। इस सबक सिखाने से ही क्रान्ति शुरू होती है जो सरकारी दमन से तीव्र होती जाती है।

इसका मतलब यह नहीं है कि मध्यपंथी सरकार, जनहित में जो योजना चलाती है तो उसका विरोध किया जाए। चकबंदी ढंग से हो तो किसानों को लाभ हो सकता है पर सामंती-पूंजीवादी सरकार का सत्य यह है कि वह अमल में, व्यवहार में अच्छी योजना को, जनता की लूट का साधन बना देती है। इसलिए अंतिम लक्ष्य तो इस सारे तंत्र को ही बदलना होगा पर उसके लिए जनगण सक्रिय तो हों। मात्र विचारधारा का प्रचार तो जनता को चिढ़ाता है। वह कहती है, सब राजनैतिक दल व्यवहार में एक जैसे हैं, सिर्फ विचार अलग-अलग हैं। यह छाप छूटनी चाहिए। जनमानस की शुद्ध श्रद्धा, प्रेम और समर्थन मिलना चाहिए।

इसी तरह दहेज, रिश्वतखोरी, बेईमानी से किया गया संग्रह, कामचोरी, भ्रष्टाचार, दुराचार, कदाचार वगैरह के खिलाफ नारा भी लगे, प्रदर्शन भी हो और सरकार निर्णय न ले तो समाज की ओर से गण प्रहार करें। प्रहार का रूप, गुनाह के अनुसार हो, यानी सामाजिक बहिष्कार से लेकर शारीरिक दण्ड तक, सब प्रकार का दण्ड समाज गुनहगारों को दें जो पहले आलोचना से शुरू हो और प्रदर्शन और प्रहार तक जाए।

इसी तरह संस्थाओं के गुनाहों के विरुद्ध लड़ाई छिड़े, चाहे वह राशन की दूकान हो या शिक्षालय हो।

राजनैतिक दल, इस सामाजिक-सांस्कृतिक क्रान्ति का काम नहीं कर रहे हैं, इसलिए गणसमितियां यह काम करें तब परिवर्तन की नींव पड़ सकती है।

सब स्तब्ध थे क्योंकि भूतनाथ के दस्तावेज या थीसिस में औपचारिकता या नारात्मक संघर्ष ही नहीं था, उसमें जनप्रवंचकों से सशस्त्र भिड़न्त का सुझाव भी छिपा हुआ था और यही कठिन काम था। अखबारों में लिख देना और मंच से बक देना सरल था, पर बिल्ली का मुंह कौन पकड़े, यह सवाल था।

सर्वमौन देखकर पुजारी जी विहंसे—"मैं जानता हूं कि भूतनाथ की थीसिस इन्कलाबी है, उसमें लड़ाई शब्द तक सीमित नहीं है। सब डर रहे हैं, अगुवा कौन हो, यह सब देख रहे हैं पर मैं आपको अनुभव की बात बताता हूं। जब चारों तरफ जड़ता हो, निराशा, चबाव और बचाव हो, तब कोई एक काम, जो हो सके, हाथ में लेकर शुरू हो जाना चाहिए। सवाल यह है कि ऐसी कौन-सी जनसमस्या हाथ मे ली जाए?"

"दहेज की।"—दीपा तुरन्त बोल उठी।

"चकबंदी।"—एक किसान बोला।

"राशन की दूकानों पर चौकसी, मिट्टी का तेल, सस्ता कपड़ा, चीनी, गल्ला, सब जन-जरूरियात यहीं से पूरी होती है। हमारे गण, जहां से सामान चलता है, यानी जिस कारखाने से जिस सरकारी या सेठ के गोदाम से, जहां से भी सामान चले, उसके साथ हमारे गण चलें और अपने सामने राशन जनता को बांटें—यह सीधी आवश्यकताओं की पूर्ति की लड़ाई है"—चिरंजीव ने बताया।

"मेरी समझ से हम गांवों में चकबन्दी और शहरों-कस्बों में राशन-वितरण का काम अपने हाथ में लें। उस सिलसिले में जनता को ठगने वाले ठगों को ठोंकें। तब आप देखेंगे, पूरे जिले में, जिले-जिलों में अपने-आप गण उभर आएंगे"—इटावा की साम्यवादी पार्टी के सचिव अतिबल दुबे ने कहा।

कामरेड अतिबल का 'अतिबल' नाम तो जनता का दिया हुआ है क्योंकि कामरेड अतिबल ने अपनी जवानी में पार्टी को जमींदारों से लड़ाया था और सालूपुर के जमींदार को मारकर, उसका घर फुंकवा दिया था। तब से श्री सदानन्द दुबे, साथी अतिबल दुबे हो गए।

पुजारी जी ने प्रौढ़ उम्र के कामरेड अतिबल दुबे की वीरगाथा सुनाई। पर अतिबल, पार्टी के भीतर के मतभेदों-निष्क्रियता और बिखराव से जले बैठे थे।

"सब व्यक्तिवादी हो गए। ये पुजारी जी भी तो पुराने क्रांतिकारी हैं, पुराण पढ़ रहे हैं और माल-मलीदा उड़ा रहे हैं। वर्गशत्रु के वध की जगह, व्याख्या कर रहे हैं। अरे, मैं तो तैयार हूं पर कोई साथ तो दे। कामरेडों का हाल यह है कि साले, मजदूरों के काम को कैरियर बना कर मज़े कर रहे हैं। ससुर अतिबल कहा करें, नाम के अतिबल, न बल, न अति, कुछ भी नहीं···और भाई यह भूतनाथ क्या चीज है? यह भी अतिबल की तरह उपनाम होगा या वास्तव में कोई भूत है यह?"

"इस बात को छोड़ो कामरेड अतिबल, कोई हो, हमें विचार से मतलब है। उसके विचार से तो सहमति है न?" पुजारी ने पूछा।

"विचार और कार्यक्रम, यह थीसिस कोई नयी नहीं है पर यह सही है और इस समय यही एक विकल्प है, यह मैं मानता हूं पर कोई मुझे पांच सच्चे साथी दे दे तो मैं एक बार, मरने के पहले, गणों से इन बेईमानों को मजा चखा सकता हूं।"

दीपा और चिरंजीव ने हाथ उठाए।

"बिटिया! तुम दहेज विरोधी काम की संगठक बनो। हां, चिरंजीव यादव ठीक है।" अतिबल ने सुझाया।

सबने समर्थन किया। दीपा को काम मिल गया।

दस हाथ और उठे। इनमें छोटेलाल ग्राम अहेरीपुर के, बिसेसुरदयाल ग्राम अधासी के, कालीचरन और रामनाथ फफून्द और कंचोसी के, सहदेव तिवारी बढ़िन के, विश्वनाथ भटेले बिरारी के, श्याम दीक्षित बकेवर के, बदलू काछी बाबरपुर के और ईश्वरनारायण दसरौरा के थे। और भी कई नाम जुड़े, पत्रकारों-प्राध्यापकों-लेखकों-कवियों-कलाकारों ने जनमत बनाने का वचन दिया।

"लेकिन शांतिपूर्ण सत्याग्रह आन्दोलन-आलोचन, यह सब तो हो जाएगा, लेखन-रपटें वगैरह भी, पर बिल्ली का मुंह कौन पकड़ेगा?" अतिबल ने चिंता प्रकट की।

"आप इसकी चिन्ता न करें, कामरेड अतिबल। कम्यूनिस्टों के मुकाबले कोई प्रोपेगेंडा नहीं कर सकता, न एजीटेशन में कोई उनकी बराबरी कर सकता है। आप वैधानिक मार्ग पर चलते हुए यही करें। शेष और करेंगे।"

"लेकिन गणों के ऊपर कोई वीरभद्र, कोई गणेश, स्वामिकार्तिकेय तो हों।"

"आप हिन्दू देवताओं के नाम ले रहे हैं, कोई हमारा भी तो हीरो चुनें।"

जनाब रहमतअली खां चहके तो सब हंसने लगे। रहमत साहब, बुनकरों-जुलाहों की यूनियन के सेक्रेटरी थे।

"ज़रूर-ज़रूर, कोई सोहराब, कोई रुस्तम?"

सब खुश हुए। पर कोई नाम उभर नहीं रहा था। अन्त में पुजारी ने सुझाया—"मेरी राय यह है कि यह विषय उठाया ही न जाए। जब सब बराबर हैं तब गणेश या वीरभद्र या रुस्तम क्यों, किसी श्रद्धेय के नाम पर नाम रख लो। और आवश्यकता पड़ेगी, तब ऐसा होता चलेगा। अभी तो चकबंदी और राशन के मोर्चों पर मुहिम शुरू हो।"

अतिबल पुराना पापी था। समझ गया कि प्रहारकों के नाम खोलना मुसीबत मोल लेना है। गण-समितियों की सूचियों में भी जनपक्षधरों के नाम नहीं लिखे जा सकते। वे आएंगे, काम करेंगे और लुप्त हो जाएंगे ताकि स्थानीय शांति और कानून के ढंग से काम करने वालों की पकड़-धकड़ न हो और यदि होगी तो देखा जाएगा। अतिबल को सोचते देखकर पुजारी जी हंसे। अघासी के बिसेसुर ने कहा—"जब बच्चा होने को होगा, तब दाई भी मिल जाएगी।"

कहावत गंवारू थी पर सटीक थी। सबने आनन्द लिया।

अतिबल दुबे ने पुनः पूछा—"मध्यवर्ग, निम्न मध्य वर्ग, सभी तो अपनी-अपनी तरक्की के काम में लगे हैं। इतने ब्योरे का काम, रात-दिन कौन करेगा? लोग घरघुस्सू हो गए हैं, बिलों से निकलते नहीं, रेडियो-दूरदर्शन से चिपके रहते हैं। आएंगे भी तो जाने की जल्दी मचाते हैं। आलस-उन्माद-उन्मत्तता-मनोरंजन और नींद में, परिवार-बाजी में, चाहे जितना समय चला जाए, पर सार्वजनिक काम के लिए फुरसत किसे है?"

"सब कुछ इस पर है कि हम संघर्ष और सेवा से जनमानस को खींच सकते हैं या नहीं? जनमानस की मंदता तो संघर्ष की मंदता का नतीजा है। अखबारों-पत्रिकाओं के विरुद्ध भी प्रदर्शन हों ताकि वे जनहित के समाचार छापें, सत्ताधीशों को कवर न करते रहें···और फिर समाचार बनेंगे, तब छपेंगे भी। दूसरा यह है कि जनअसंतोष बहुत है, उसे भुनाना है, और यह कि जहां ज़रूरत होगी, वहां फुलटायम वर्कर—स्थायी कार्यकर्त्ता दिए जाएंगे। सुरक्षित टोली, जहां ज़रूरत होगी, हस्तक्षेप करेगी।"

"पर स्थायी कार्यकर्त्ताओं को वेतन कौन देगा?"

"आप जनता के जीवन-संघर्ष में भूमिका अदा करिए तो वही जनता अपने हित संरक्षकों को पालेगी भी···बाहर से भी मदद दी जाएगी।"

अतिबल का मोहभंग हो चुका था तो भी वह पुराना पापी था। उसने सोचा, देखा जाएगा। नहीं होगा तो इस प्रयोग में हानि भी क्या है? इससे कुछ बिगड़ने वाला तो है नहीं। इसलिए दीपक की आखिरी लौ की तरह भभककर बोला—"जोश और दृढ़ मनोबल से काम हो। नवयुवक-नवयुवतियां आगे आएं। सुबह-शाम, छुट्टियों में समय दें और मौके पर सभी लड़ें। एक बार कोई बड़ा एक्शन हो जाए तो फिज़ा बदल सकती है। मैं आपको यह बता सकता हूं कि जिले में कौन-कौन सी. ओ. या कंसोलीडेशन आफीसर रिश्वत खाते हैं, सभी किसान जानते हैं कि काली भेड़ें कौन हैं पर सब अपने-अपने चक ठीक कराने के चक्कर में स्वयं रिश्वतें दे रहे हैं। मेरे पास रहमत साहब भी जानते हैं कि भ्रष्ट अधिकारियों की एक सूची है।"

"उसकी एक बार और जाच हो और जिन नामों के विषय मे कोई सन्देह न हो, उन्हें गण-समिति की तरफ से चेतावनी पत्र भेज दिए जाएं और समय दे दिया जाए··· फिर भी न मानें तो उनके विरुद्ध संघर्ष हो।"

सभी के चेहरे उत्साह से खिल गए। चिरंजीव-अतिबल-श्याम दीक्षित-पुजारी-रहमत वगैरह रात में बहुत समय तक मुहल्लावार गण-समितियो की सूचिया बनाते रहे। दीपा ने भी नारी-मोर्चा बना लिया।

अन्त मे थककर सब चुपचाप घर गए।

11

जिला इटावा के दिबियापुर-फफूद के सी ओ. हरशरनलाल को पहला चेतावनी पत्र, गणसमितियों की ब्लाक-स्तर की समिति की ओर से मिला। उस पर किसी व्यक्ति के हस्ताक्षर नही थे। वह चेतावनी इस प्रकार थी :

"हरशरनलाल, सी. ओ. दिबियापुर-फफूद परिमण्डल को चेतावनी दी जाती है कि वह किसानों के आपसी झगडों को सुलझाने की जगह, कभी एक पक्ष से, कभी तो दोनों पक्षो से घूस लेते हैं और फिर भी ऊपर से रौब जमाते हैं, किसानों के स्वाभिमान को आहत करते हैं। उन्होने जो रुपया अब तक लिया है यदि वह उन्होने पन्द्रह दिन के भीतर किसानो को नही लौटाया और किसानों के मतभेद सुलझाने समझाने के लिए, समाधान-समितियां नही बनाई, चको के बंटवारे मे मनमानी की तो उनके विरुद्ध आज से सोलहवें दिन किसानों का विशाल प्रदर्शन होगा और उस दिन जो अधिकारी ईमानदारी से काम कर रहे हैं, उनकी प्रशंसा भी की जाएगी और भ्रष्टों की निन्दा। —गणसमिति, फफूद"

हरशरनलाल के नाम के पूर्व शिष्टाचार में भी 'श्री' नहीं जोड़ा गया। इस बात को हरशरन ने लक्ष्य किया और नोटिस पढ़कर तावोपेच खाने लगा। उसने उन पेम्फलेटों को फाड़कर फेंक दिया और पुलिस को एक प्रति भेज कर सुरक्षा का प्रबन्ध कर लिया।

ग्राम जुआ के साधव-माधव अहीर, भूतपूर्व मुखिया रेवतीरमन, अघासी के विश्वेश्वरदयालु, भरौपुर के पन्नालाल दुबे, श्रीराम काछी, केशमपुर के पहलवान बनैतसिंह, फफूद के सरदार करतारसिंह खालसा, अछल्दा के नौदीप चौधरी, गुनौली के 'मामा' शंकर, कटरा के अल्ला वरस खा, गरज कि पूरे ग्राम परिमण्डल में लोग चेतावनी की गूजो से सक्रिय हो गए और सोलहवें दिन दिबियापुर में सी. ओ. को, पुलिस ने कही ले जाकर छुपाया, तब जान बची। दिबियापुर थाने का दरोगा, संयोगवश कुछ ईमानदार था। उसने सी. ओ. को सावधान किया—

"यह जिला इटावा है श्रीमन्, यहा डाकू बागी कहलाते हैं। कभी किसी सरकार को उन्होने नही माना। और यहां किसान भी कम बागी नही है। यह गणसमिति दरअस्ल, गन-समिति है···वे आपको छोड़ेंगे नही। रिश्वत लेना उतना बुरा नही, जितना जरूरत से ज्यादा लेना, कमजोर को दुहना और निगाह में आ जाना···आप तबादला करा लीजिए सर, पुलिस आम खलकत का सामना नही कर सकती। गदर हो जाएगा··· आप···रुपया लौटा दीजिए।"

सी. ओ. हरशरनलाल को असमंजस में देखकर दरोगा ने दिलासा दिया—"उफनते दूध में पानी डालिए सर। ये इटाविए, आप जहां भी तबादले पर जाएंगे, पीछा करेंगे। इनके डकैतों से भी रिश्ते हैं। किसी डाकू से कह दिया तो आपके परिवार में पकड़ भी हो सकती है यानी किसी लड़के को पकड़ ले जाएंगे और फिर दाम मांगेंगे… मैं उन किसानों को बुलवाए देता हूं चुपचाप। किसी क्लर्क से कहिए, वह मामला शान्त कर देगा फिर जो करिए, संभल के करिए और किसानों के सामने मौन बने रहिए।"

हरशरनलाल को इसमें अपमान लगा और वह छुट्टी पर चला गया और कानपुर के ग्वालटोली मुहल्ले में, अपने एक सम्बन्धी के यहां जा छिपा। इन्हों ने कचहरी-कार्यालय के असंतुष्ट बाबुओं को मिलाकर उसका पता पूछ लिया और उसे मजा चखाने के लिए मारते खां, दादानुमा जवानों का अग्रगामी गुट भेज दिया गया। इस गुट के जवान, लठैती-फौजदारी के पुराने अनुभवी, ग्राम जुआ के प्रौढ़ उम्र के रेवतीरमन उर्फ मुखिया की कमान में—फफूंद और दिबियापुर सड़क की एक पुलिया पर एकत्र हुए और दिबियापुर से रेल से चलने का निश्चय हुआ। वारदात के बाद बसों से या सीधे-सादे होकर लौटा जा सकेगा। मुखिया ने बीड़ी सुलगा कर होंठ तिरछे किए और बहुत समय बाद, मारपीट द्वारा सार्वजनिक सेवा का कार्य मिलने से आंखें चमकाते हुए बोले—"साधव-माधव-बिसेसुर, अपने-अपने फरसे यहीं तेज कर लो। पुलिया पर रगड़ो, धार तेज हो जाएगी। वहां शहर में सिकिलीगर कहां ढूंढेंगे?"

"मेरी राय है कि सी. ओ. साहब को गंगा स्नान करा दिया जाए। फरसों-भालों से तो हम पकड़े जाएंगे।"

"कुछ रंग भी दिखाना चाहिए। आखिर यह पहली इन्कलाबी वारदात है जो सबकी तरफ से होगी। श्रीगणेश ही फीका रहा तो आगे क्या होगा?"

"ग्वालटोली, कानपुर में है मुखिया। वहां रंग नहीं, ढंग से काम होना चाहिए।"

"रंग से आतंक जमता है, हमने जुआ का बाजार लुटवाया था तब क्या हमें पैसे का लोभ था?"

"वाह मुखिया! आपमें भी शेर बबर का कलेजा है। दिन-दहाड़े आपने जुआ का बाजार लुटवा लिया था। अब तो आप बूढ़े हो रहे हैं… लेकिन तब आपकी क्या देह थी…।" साधव अहीर ने कहा।

"क्या कहा? बूढ़े हो गए? तू पच्चीस साल का है, हम पचपन, साठ के, आ पंजा लड़ा। अबे उम्र से क्या होता है? भीष्म पितामह की उम्र क्या थी? द्रोणाचार्य की? हम ब्राह्मण हैं, हम गुरु द्रोणाचार्य के ही वंशज हैं, हमारा गोत्र भारद्वाज है।"

सबने अट्टहास किया पर वे लाठी में जड़े लोहे के फरसे रगड़ते रहे और धार देखते रहे। माधो ने मजाक का सिलसिला चालू रखा—"अरे मुखिया! भीष्म-द्रोणाचारज का तो नाम है। लड़ाई तो यादवों ने लड़ी दोनों ओर। एक ओर हमारे कन्हैया थे, दूसरी ओर उनकी नारायनी यादवों की सेना।"

"तुम्हारी यह बात जायज है चौधरी। अहीर इतना बेअकल होता है कि दोनों तरफ लड़ सकता है और जान भी दे सकता है।"

पंडित बिसेसुर की इस बात पर साधव-माधव, दोनों लट्ठ लेकर उन पर दौड़े। मुखिया ने बीच-बचाव किया। सब आनन्द में विभोर हो गए। मुखिया ने [illegible] किया—"अबे बिसेसुर मर गया तो अहीरों पर सराप पड़ेगा। उसकी बात

की लातें। जो बिसेसुर की बात का बुरा माने, वह कोई अहीर ही हो सकता है।"

इस मजाक पर साधव-माधव भी हंसने लगे।

"वाह चचा! इधर की भी और उधर की भी। तभी तो आपको गन्नेस चुना गया है।"

मुखिया ने मूछों पर ताव दिया पर नाम बिगाड़ने पर बिसेसुर ने व्यंग्य किया—"तुम रहे गंवार के गंवार, गणेश को गन्नेस कह रहे हो…ठीक कहा है पुरखों ने—

जो अहीर पिंगल पढ़े, तऊ तीन गुन हीन।

पढ़िवो, लिखिवो, बैठिवो, लओ बिधाता छीन।"

अबकी बार साधव-माधव ने बिसेसुर पंडित को पकड़ लिया और दिल्लगी में उसे उठाकर पानी में लटका दिया। वह चिल्लाया, "मुखिया, इस द्रोणाचार्य के वंशज को अहीरों से बचाओ।" यादव युवक इससे और भी चिढ़े और बिसेसुर को गोता लगा ही दिया गया।

"अच्छा महाराज बिसेसुर, बोलो, अब तो हमें अहीर नहीं कहोगे?"

"बचाओ, बचाओ…नहीं कहेंगे। भैया छोड़ो मुझे, तुम भगवान कृष्ण के वंश के हो, तुम्हें ब्राह्मण हत्या शोभा नहीं देती।"

बिसेसुर को उमड़ती हंसी के बीच छोड़ दिया गया। वह भी हंस-हंसकर अपने कपड़े निचोड़ने लगा।

"यादव नरेश। लाओ, अपना अंगोछा तो दो, यार, मार डाला होता जमदूतों ने, डुबकी खिला दी।"

"अब चलोगे या यहीं धमाचौकड़ी होती रहेगी? आज ही रात तक कानपुर पहुंचना है। दिन में उस हरसरना की सूंघ लेनी है। उसके लिए बिसेसुर को भेजेंगे और शाम को दस बजे के पहले गणों की चोट होगी। ठीक है?"

"मैं बहुत गुस्सैल हूं, चाचा। हरसरना को देखते ही…।" बिसेसुर अकड़ कर बोला।

"भौंकने लगोगे…। चचा, आपकी अकिल भी बुढ़ाय गई। इस बक्कू पंडित को जासूसी के लिए भेज रहे हो? यह तो नौटंकी का नक्काल है।"

बिसेसुर गुस्सा गया। उसकी छोटी कबूतरी आंखें सुर्ख हो गईं और दुबला-पतला, तांत सा शरीर, तनतना गया। कहने लगा—

"अच्छा…अहीर…नहीं यादव नरेश। तो रही हमारी तुम्हारी…आप सब यहीं रहो, मैं, अकेला ही उसे ठिकाने लगा कर लौटता हूं। तुम दिबियापुर में तब तक मौज से भुरभुरा चबाना।"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं।" चचा बोले—"तो ऐसा करें, पहले बिसेसुर को ही भेजकर इनके हुनर को आजमा लें, क्यों, क्या राय है?"

"चू चू चू चचा। सठियाय गए आप भी…यह ठठरी इसमें ढेढ़ हड्डी है और इसके सीपी जैसे पेट में बात पचती नहीं। यह वहां पकड़ा गया तो गणों का सब भेद खोल देगा। इसे तो साथ से आना भी बुरा हुआ, राम-राम।"—यादवों ने मज़ाक किया।

"तो रही हमारी तुम्हारी…लो, मैं अकेला जा रहा हूं और अपनी अलग क्रान्तिकारी कार्रवाई करूंगा। अरे हम पार्टी के मुस्तकिल मेम्बर हैं, पंडित विश्वेश्वरदयालु। हमारी हड्डी-हड्डी काट के देख लो, कभी भेद न बताएंगे और तुम। तुम जो खट्टे

आम से फले-फूले हो, मठा पीकर मोटे हो गए हो, तो समझते हो कृष्ण-बलराम हो गए ?"

"महाराज, आप तो सचमुच बिगड़ गए। अरे, हमारी क्या औकात जो आपकी बराबरी करें। पर, आपकी मुड़ी रगड़ने की तबीयत हो रही है, महाराज। बातों में तो आप सारे इलाके को छका रहे हो।"

एक-दूसरे को छेड़ते, पैदल ही सब कंधों पर फरशे और लाठियां रखे दिबिया-पुर की ओर चल पड़े। पीछे से एक प्राइवेट बस आई। मुखिया ने इशारा किया। बस रुक गई। लट्ठ-फरशे देखकर बस वाले की क्या हिम्मत जो बस न रोके। उसने सहम कर चचा से कहा कि पीछे से छत पर जम जाओ, दादा। सब बस की छत पर डट गए। बिसेसुर और यादवों की नोक-झोंक जारी रही। चचा ऊंघने लगे तो यादवों ने डांटा—"बिसेसुर महाराज की जीभ निकाल कर तांत से बस के किनारे बांध देते हैं चचा। नहीं तो आपकी ऊंघ उचट जाएगी।"

"तुम उसे काट के भी फेंक दो तो भी इसकी जीभ चलती रहेगी,"—गुनौली वाले शंकर मामा ने कहा।

कानपुर पहुंच कर, रात में, गांव के एक कानपुर में रहने वाले आदमी के यहां डेरा डाला गया और सवेरे ग्वाल टोली जाकर हरशरनलाल सी. ओ. की सूंघ ली गई। वह उसी पते पर मिल गया। सूंघ लेने अल्लाबख्श भेजे गए। वे अछल्दा कस्बे के थे। उन पर कोई शक नहीं कर सकता था। उम्र में भी प्रौढ़ थे मगर मजबूत मेवाती थे। गाड़ी चलाते थे और आल्हा गाते थे। चौकस और चतुर थे।

"आप कहां से आए हैं ?" हरशरन ने पूछा।

"हुजूर, मुरादगंज से। मेरे एक रिश्तेदार फफून्द में हैं, मौलाबख्श, उनका चक खराब हो गया, बन्दापरवर। हम हर खिदमत के लिए तैयार हैं मगर चक ठीक हो जाए तो बालबच्चों की परवरिश हो जाएगी, वर्ना कुनबा बरबाद हो जाएगा, माईबाप।"

"क्या कर सकते हैं आप ?"

"हुजूर जो फरमाएं। हम गरीब हैं लेकिन जमीन ही जान है मौला की।"

"कितना कर सकते हो ? हमें वह चक याद है। एक लाख का होगा, जमीन काफी है, उस पर दरख्त भी हैं। पांच-सात की सोचो तो गौर करेंगे।"

"हुजूर, इतना कहां कर पाएंगे ? तीन-पांच करके कुछ हो सकता है।"

हरशरनलाल खां साहब की हाजिरजवाबी पर मुस्कराया। सोचकर कहा—"साथ लाए हो ?"

"साथ कहां हुजूर, दिन में किसी ड्योढ़ी पे सव्दा करेंगे, तब होगा। आप अगर गंगाजी के किनारे घाट पर मिल जाएं मालिक, तो कोई खतरा न रहेगा।"

"आप ठीक कहते हैं। यहां तीन-पांच करना उचित नहीं···तीन या पांच ?"

"तीन ही बहुत है हुजूर के लिए। पांच तो बर्दाश्त के बाहर हो जाएंगे।"

"ठीक है। शाम को पांच बजे ?"

"दुरुस्त है हुजूर, बल्कि कुछ और वक्त बीतने पे, यही छः-साढ़े छः बजे, कुछ झुटपुटा हो जाए तो बेफिक्री रहेगी। मैं भी वहीं सरसैया घाट से बस के अड्डे की तरफ निकल जाऊंगा, हुजूर। रात में रुकने की जगह नहीं है।"

"तो साढ़े छः बजे सरसैया घाट पर, हनुमान जी के मंदिर के सामने।"

"इंशाअल्लाह ! हुजूर की तरक्की हो, इकबाल बुलन्द हो, आमीन।"

सलाम ठोक कर अल्लाबख्श खां नीचे उतरकर फिर वापस गए और पूछने लगे—"हुजूर वाला अकेले ही तशरीफ लाएंगे या और भी साहबान साथ होंगे ? यह इसलिए कि उनके चाय-नाश्ते का इन्तजाम भी तैयार रखूं।"

"नहीं, अकेला रहूंगा। तीन-पांच में कोई दीगर चार-बीस करने लगा तो मुश्किल होगी, मियां।"

"आपने लाख रुपये की बात कही है, मालिक। जमाना नाजुक है। मुहब्बत और इबादत में दूसरों की सोहबत नहीं बनती।"

दोनों मुस्कराते हुए विदा हुए। खां साहब अल्लाह को दुआ दे रहे थे कि मरदूद मान गया और अकेला ही आ रिया है। तो भी वह पुलिस को ला सकता है और हम सब गिरफ्तार हो सकते हैं लेकिन क्यों ? वह पुलिस लाया तो हम रूपोश हो सकते हैं। फिर देखेंगे शैतान को ''।

खां साहब ने लौटकर किस्सा बताया तो मुखिया रेवती रमन ने कहा—"वो मारा। वाह चचा। आप तो ताला सैय्यद के औतार हैं। खूब'''मगर चचा। कहीं वह पुलिस को साथ न ले आए। आखिर अफसर है।"

"तो पुलिस उसी को पकड़ेगी। तीन हजार यहां कहां है। जो भी रुपये हों, उसे देना और पुलिस से कहना कि यह रिश्वत ले रहा है"—साधव-माधव ने सुझाया। बिसेसुर ने मुंह बनाया—"यादवराज। तुम रहे वही'''भैंस का मट्ठा ऐसा ही असर करता है। पुलिस तब पकडेगी जब पहले रपट करो कि खां साहब रिश्वत देने जा रहे हैं। सो भी तब जब पुलिस तैयार हो जाए।"

"वाह पंडित बिसेसुर दयालु, वाह ! क्या नुक्ता है।" मुखिया ने तारीफ की।

"वाह रे हम। वाह हम। ए माधव-साधवराव, अब मानते हो कि तुम अहीर''' थारे बाप रे यादव हो।"

इसी के बीच तै पाया कि सिर्फ खां साहब तीस रुपये लेकर जाएं मगर घाट के एक तरफ जरा एकांत में हरसरना को ले आएं फिर वह बिगड़ेगा तो खां साहब भी ताला सैय्यद की तरह तन जाएं। फिर हम देख लेंगे।

शाम को गणसमिति के सदस्य खरामे-खरामे टहलते हुए सरसैया घाट पर पहुंच कर इधर-उधर बिखर गए और इन्तजारी शुरू हो गई।

सरसैया घाट पर सुबह भीड़ होती है। शाम को उतनी नहीं। तो भी दर्शनार्थी आरती और पूजा के लिए आते ही हैं। शंकर मामा के सुझाव पर गणों में से सिर्फ दो ने लाठियां काटकर फरशों को छोटा कर अलवानों-चद्दरों को ओढ़कर, उन्हें भीतर छिपा लिया था, शेष पर सादा लाठियां थीं, जिनमें दो-तीन के सिरों पर लोहे के गूले भी थे। लोहा सिरे पर हो तो एक चोट में ही खोपड़ी के कब्जे खुल जाते हैं। साधव-माधव ने निहत्थे रहना ही काफी समझा। उनका कहना था कि वे हाथों से ही हरशरना के गले की चिरैया दबा देंगे, टें बोल जाएगा। आखिर वे कृष्ण के वंशज हैं। कृष्ण भी निहत्थे ही थे महाभारत में।

हरशरनलाल ने सहायक सी. ओ. और फिर सी. ओ. के पद पर रहकर काफी रकम एकत्र कर ली थी। वह किसानों के प्रदर्शन से सहम तो गया था पर उसमें पद की ऐंठ बहुत ज्यादा थी।'''साले, ये देहाती बुज, उसका क्या कर लेंगे ? इनमें से एक-एक का चक न खराब किया तो मेरा नाम हरशरनलाल नहीं और पता भी न चलने दूंगा'''ये समझते क्या हैं ? आजकल कौन रिश्वत नहीं लेता ? नेता चुनाव के

नाम पर, पार्टी फण्ड के नाम पर लेता है, आयकर अधिकारी, पुलिस का क्या कहना··· वह दिबियापुर थाने का थानेदार बड़ा पाक-साफ बनता था। साला, लाखों के वारे-न्यारे करता है और नसीहत दे रहा था हमें···अरे, अब तो जज भी रुपए लेते हैं। इटावा की नुमायश में उनकी मेमसाहबान खरीददारी किसके बल-बूते पर करती है? जजों को *कितनी तनख्वाह मिलती है और तहसीलदारों, परमनाहाकिमों की तो चांदी है*···और यहां तो खतरा भी नहीं है। खूब, सरसैया घाट पर किया गया पाप गंगा माता के जिम्मे जाएगा, हः हः हः हः। तीन हजार रुपये क्या बुरे हैं? मौला का चक वैसे भी ठीक बनाना था क्योंकि वह अल्पसंख्यक है। सरकार मुसलमानों और हरिजनों के साथ रियायत करना चाहती है। वह अल्लाबख्श पहले दिखाई नहीं पड़ा फफूंद में ··मौला का रिश्तेदार होगा। *मुसलमान है, डर गए कि कहीं चक न उलट-पुलट हो जाए*···।

सी. ओ. साहब ने साढ़े पांच बजे पांव बाहर निकाले। वह सूट-बूट में जंच रहे थे और सिगार फूंक रहे थे। सोचा मोटरसाइकल से चलें तो उधर से आने में जल्दी होगी मगर फिर इरादा बदल दिया। शोर होगा और लोग चौंककर घूरने लगेंगे कि कोई खास आदमी है। जैन्टलमैन बनकर जाना निरापद रहेगा। ऐसे मामलों में जितने ही सहज और साधारण रहो, अच्छा रहता है। फिर भी यह धुकधुकी-सी क्यों हो रही है दिल में? क्या कोई चालाकी या डर तो नहीं है वहां जाने में···मैं कोई छोटा अफसर तो हूं नहीं जो इन मामूली बातों से दिल कांप जाए?···तीन हजार हाथ लग जाएं तो इस पड़ोस की सिन्धिन को गहना बनवा दूंगा। रोज कान खाती है कि साहब, अस्मत लेते हो तो गांठ भी खोला करो। रुपए तो सब बैंक में हैं, वो भी दूसरों के नाम से। कल रात बहुत जिद कर रही थी कि पहले मेरे लिए गहने-कपड़े ले दो·· यह अल्लाबख्श, अल्लाह के फज्ल से ही आया है। इसका अर्थ है, ईश्वर अनुकूल है···हनुमान जी के लिए कुछ फूल-पत्ती मेवा-मिठाई लेनी चाहिए ताकि कोई गड़बड़ न हो जाए, लेकिन गड़बड़ क्या हो सकती है?

साढ़े छः बजते-बजते धुंधलका छा गया और सी. ओ. साहब इत्मीनान से एक रिक्शे से उतर कर एक हाथ में फूल-पत्ती लिए हुए हनुमान के एक छोटे से मंदिर की ओर बढ़े। फूल-मिठाई चढ़ाकर प्रसाद लिया और लड्डू का टुकड़ा मुंह में डालकर बाहर मुड़े तो अल्लाबख्श दिखाई पड़ा।

"हुजूर, सलाम बजा लाता हूं। थोड़ा इधर तशरीफ ले आए, एक गुजारिश है। सब दुरुस्त है, मालिक की मेहरबानी है। खुदा पाक है, परवरदिगार है और अपने बन्दों की परवाह करता है···थोड़ी सी तकलीफ और हुजूर, वह देखिए उधर शोर नहीं है ··हां, हां, बस वही जगह उम्दा है···कानपुर कितना बड़ा शहर है, मालिक। कितने बड़े-बड़े कारखाने हैं···आप सिफारिश कर दें तो मेरा एक नालायक बेटा है। खेती के काम को *दहकानी धंधा समझता है। पड़ा-पड़ा खाता है और गज़लें कहता है* माई बाप। उसको नौकरी लग जाए तो मालिक, तीन-पांच का सात-आठ भी क्या चीज है···हां, हुजूर यह तो हाथ का मैल है और जिंदगानी एक पानी का बबूला है। बड़े-बड़े आए और दफा हो गए···बस बीस कदम और इधर, गंगा जी की तरफ, इस झुरमुट में, हां हां, बस यहीं···बस दस कदम की तो बात है···हुजूर तो सिफारिश कर देंगे न?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, लेकिन सात-नौ याद रहेगा न?"

"अजी साहब, आप तो शर्मिंदा कर रहे हैं। लड़के की नौकरी लग जाए और चक

बन जाए, फसल निकल जाए तो हुजूर पौ बारह भी हो सकती है'' जी हां'''आप तो हंस रहे हैं साहब बहादुर'''ये गंगा है न, हम मुसलमान हैं तो क्या हुआ'''यह पाक नदी है इसकी कसम खाता हूं हुजूर, पौ-बारह समझें, बस आप कारखाने में बच्चे को चिपकवा दें। अब आप खुद गौर कर लें कि यह जगह तो तै हो गई। काम बना, यहां आ गए और पौ बारह'' हुजूर देखें, अंधेरा हो रहा है और आसपास कोई नहीं है। फलक गवाह है और यह थोड़े से मुकद्दस सितारे''' ए गरदिशे अफ़लाक तू गवाह हैं। मुसलमान का कौल है साहब'''बस ' आ गए हुजूर'''बस जरा इधर गंगा की तरफ रख ले लें हुजूर और इन्हें गिन लें ''हां मालिक।"

थोड़े से रुपए और सादे कड़कदार कागज एक मजबूत लिफाफे में बंद थे। साहब ने उसे खोलने के लिए जैसे ही नजर नीचे की, अल्लाबख्श का सधा हुआ भारी हाथ, लोहे की तरह सी. ओ. की गुद्दी पर पड़ा। तब तक गणसमिति के सदस्य आसपास आने लगे थे। हरशरन के मुंह पर हाथ रखकर दो-तीन गणों ने उसे उठाया और गंगा के झाऊ-झाड़ों में पटक कर उसकी मरम्मत करने लगे। वह धीरे-धीरे हाय-हाय कर रहा था पर मुंह पर अंगोछा कसा हुआ था। मुंह के भीतर गणों ने दस-दस के वे तीन नोट भी ठूंस दिए थे।

"मरम्मत हो गई अब इसे मत मारो। मर जाएगा। पूछ तो लो कि यह किसानों का रुपया लौटाएगा या फिर हाथ थकाने पड़ेंगे इसकी गंदी ठठरी पर?"'''मुखिया ने कहा।

साहब के मुंह से अंगोछा हटा लिया गया। उसे संभलने का मौका दिया गया। सांस सधने और बोलने की स्थिति आने पर उसने कहा —"मुझे छोड़ दो, मैं रुपया लौटा दूंगा।"

"तुम्हारा भरोसा कौन करे? तुम्हें हम कहीं बन्द रखेंगे, रुपया मिल जाने पर छोड़ देंगे। तुम्हें छोड़ दिया तो तुम हमारे खिलाफ रपट भी कर सकते हो।"

"हम कुछ नहीं करेंगे, हमारी जान बख्श दो, हमारे बच्चों का क्या होगा?"

"लेकिन आपने रिश्वत लेकर कितनों के बच्चे बरबाद किए हैं? फिर भी हम आपको एक और मौका दे सकते हैं।"

सी. ओ. ने देखा कि वे सब मुंह पर ढाटा बांधे हुए थे और वह किसी को पहचान नहीं सकता था। इसका भी क्या पता कि अल्लाबख्श कौन था, कहां का था? मौला का नाम लेकर ये बदमाश हमें बेवकूफ बना रहे हैं। संभव है, मौला से इस अल्लाबख्श नामधारी आदमी की दुश्मनी हो और यही क्या पता कि यह मुसलमान भी है या नहीं है'''बुरे फंस गए'''दरोगा ठीक कह रहा था।

"या तो मौका दीजिए या मार डालिए—दो ही तरीके हैं। खत्म कर देना ज्यादा बेहतर है। इस शैतान का क्या ठीक है कि क्या करेगा?"—अल्लाबख्श मुखिया से मशवरा कर रहा था।

"मैं भी हाथ गर्म कर लूं। सर्दी बढ़ रही है गंगा के किनारे"—बिसेसुर ने कहा और अपने सूखे-हठीले हाथों और लातों से सी. ओ. को मारने लगा। और भी जुट गए।

"नरेशो! अब हाथ दिखाओ और इसे इस की गन्दी काया से मुक्त कर हरि-हर की शरण कर दो और सद्गति के लिए पत्थर बांध कर जल प्रवाह कर दो और जल्दी करो।"

साधव-माधव ने सी. ओ. के गले की चिरैया दवाई। हिच्च हिच्च हुई और सी. ओ. साहब मौत के दफ्तर दाखिल हो गए। पत्थर जल्दी-जल्दी कमर में बांधकर टांग खीच कर जानवर की तरह हरशरण को गंगा में फेंक दिया और बस सब इधर-उधर बिखर कर निकल भागे।

चक्कर काटकर वे सब सरसैया घाट के उल्टी तरफ चल कर एक जगह रुके और अल्लाबख्श को कपड़े सौंपकर उन सबों ने जल्दी-जल्दी स्नान किया, ताकि एक कीड़े की सफाई के बाद की गंदगी धुल जाए यों न फरसे चले थे, न लाठियां। रक्त की एक बूंद भी नहीं बही थी। साधव-माधव के हाथों मे कितनी ताकत है!

कपड़े पहनकर और भीगे लंगोटों—अंडरवियरों को झोलों में दबाए गण, रिक्शे कर बस स्टेशन आए और कुछ खाना-दाना कर कानपुर, औरैया—बाबरपुर के रास्ते से वापस हो गए।

उन सबको आदेश था कि वे अलग-अलग होकर मेहमानी खाने रिश्तेदारियों में चले जाएं और सूचित करने पर ही घर लौटें ताकि यदि लाश पकड़ी जाए और जांच शुरू हो तो किसी को शक न हो। यों कत्ल कानपुर में हुआ था, इसलिए खतरा कम था तथापि उस अफसर का क्षेत्र यही था, इसलिए पुलिस तफतीश तो करेगी ही।

कानपुर, औरैया, दिबियापुर के ही नहीं, राजधानी के अखबारों में भी समाचार छपा कि सी. ओ. हरशरनलाल, रिश्वतखोरी के खिलाफ प्रदर्शन का शिकार हुआ। फिर भी उसने किसानों के रुपए नही लौटाए और वह इसलिए मारा गया। पुलिस ने उन किसानों को गिरफ्तार कर लिया पर सबूत कुछ था नही और वे किसान बेकसूर थे, पुलिस यह बात जानती थी तो भी अपनी खाल बचाने के लिए उनमें से एक-दो के विरुद्ध केस बना दिया गया। चूंकि पुलिस को एक भी गवाह नही मिला और पेशेवर गवाह जिरह मे कट गए, इसलिए वे जमानत पर छोड दिए गए।

पहली बार इस इलाके में···एकता दिखाई पड़ी अन्यथा आपस में फौजदारी यहां वीरता और रौब गालिब करने की तरकीब मानी जाती है। गांव-गाव, उस जोश मे गण-समितियों का चुपचाप गठन हो गया और जिन किसानों पर केस चल रहा था, उनकी मदद की गई।

चकबंदी के सरकारी अमले का रुख बिल्कुल बदल गया। किसानों के झगड़ों के लिए नवनियुक्त सी. ओ. ने समाधान समितियां कायम कर दी और चकों के निर्माण में धांधली को रोक दिया गया। उलटे अब जन-आतंक से सरकारी अहलकार डरने लगे। वे बात-बात पर किसानों से सलाह लेते और फसल करते। समाधान-समितियों में ईमानदार, निष्पक्ष बुजुर्गवार लोग रखे गए, जिनमें एक सदस्य गणसमिति का जरूर रखा जाता था ताकि आपसी विग्रह को यथासभव शांत किया जा सके। अफसरों ने इसी मे भलाई समझी कि···चक, गाव के पढ़े-लिखे लोगों को बैठाकर, उनके सामने बनाए जाएं और जहां सहमति न हो, वहां अफसर निर्णय लें।

बिजली की तरह एक मुह से दूसरे मुह यह खबर सारे जनपद मे फैल गई। अत-एव, अन्य चकबंदी के कार्यालयो पर भी जन-दबाव बढ़ा। जनता को जिन अधिकारियों की ईमानदारी पर शक था, उन्हें तुरन्त बदल दिया गया। विधायक भी अपने-अपने क्षेत्रो मे चक्कर काटने लगे। जनता मे गणो की साख बढ़ गई।

पुजारी जी ने रहमत, अतिबल, श्याम दीक्षित तथा अन्य सभी अच्छे कार्यकर्त्ताओं की बैठक बुलाई। पुनर्विचार में दीपा और चिरंजीव भी शामिल हुए। श्याम दीक्षित

ने कहा कि जनसंगठन सेवा की भावना से होना चाहिए ताकि वह झटके झेल सके। स्वतः स्फूर्त्त ढग से आने वाले लोग सरकार या समाज विरोधी तत्वों के प्रबल प्रहार से भाग सकते है। उस समय संगठन का ढाचा बना रहे, इसके लिए कम से कम कुछ गांवो के ऊपर एक अपना प्रशिक्षित गणपति हो। तब सिलसिला नही टूटेगा। एक जाएगा तो चार साथ आएगे और इससे सब लाइन पर रहेंगे।

देर रात तक ब्योरेवार विचार होता रहा और पूरे जिले के लिए संगठन कार्यकर्त्ता नियुक्त किए गए। इस काम मे सगठित दलों ने भी मदद की, विशेषकर वामपंथी दलो ने। सवाल फिर भी यह रहा कि उनको निश्चित पारिश्रमिक कैसे दिया जाए?

बहुत विचार-विमर्श के बाद भी इस बिन्दु पर निर्णय नही हो सका। सबने पुजारी जी की ओर देखा। वह चुपचाप उठे और पुराने गहनों का एक डिब्बा लेकर लौटे। उन्होंने उसे जिला-हाई-कमाण्ड-समिति को सौंपा, जिसके सदस्य अतिबल, रहमतखां, श्याम दीक्षित और अन्य लोग थे।

"यह मन्दिर की चढौती तो नही है?"

"हो भी, तो यह गणपति की कमाई है न, सो जनगण के काम आए, यह क्या देवाधिदेव नही चाहेगे? आप निःसकोच इसे गलवाकर बेचकर क्षेत्रीय गणपतियों को पारिश्रमिक दें, शेष जनता करेगी।"

"लेकिन, ये तो ऐतिहासिक आभूषण लगते है, महाराज?"

पुजारी जी रहस्यमय विधि से मुस्कराए।

"मैं भी ऐतिहासिक अवशेष हू, नही? इतिहास का मलबा वर्तमान के काम आए तो इसमे इतिहास की भलाई है। वह लोक की स्मृति मे जीवित रहेगा।"

"परन्तु आपको ये मराठो के युग जैसे लगने वाले आभूषण कहा मिले? ये पुरानी मुहरे?"

"इससे क्या अंतर पड़ता है? मिल गए बस। मैं महादेव का पुजारी हूं। मुझे तो उनके एक गण ने दिए है।"

"वह कहा है भगवन्?"

"यहीं है, आप देखना चाहेगे?"

"हां हां, क्यो नही। ऊब गए इस हिसाब-किताब से···दिखाइए न वह गण।"

पुजारी जी मुस्कराते हुए सबको लेकर अपनी कोठरी के पास वाले कक्ष में ले गए और बिजली खोलकर उन्होंने घड़े का ढक्कन उठाया। नाग फनफना कर खड़ा हो गया और इधर-उधर फिर कर जीभ लपलपाने लगा। कुछ को पता था कि पुजारी के पास नाग है पर कुछ ने नही देखा था। नागदेव पुजारी जी से हिल गए थे। भूतनाथ ने उसके विष के दात तो निकाल ही दिए थे, इस कारण कोई डर भी नही था। तथापि वह लम्बा और भयंकर सर्प था। विषदन्त न होने पर भी क्या पता, दूसरे दात न उग आए हों, इस डर से पुजारी को छोड़कर और कोई उसके पास नही जाता था। नाग फन फैलाए सन्नाता रहा फिर पुजारी ने उसे ढक दिया।

"ओह! कितना जबर भुजंग है।"

"यह शिव का गण है न, यही ऐतिहासिक-निधि का रक्षक है, मित्रो।"

नागराज की जै-जैकार कर सब भय से कम्पन लेते हुए प्रस्थान कर गए।

क्वारी नदी के शिवालय के रुद्र-रुद्राणी, महादेव-पार्वती, दुर्गा और हनुमान, गणेश और कार्तिकेय आदि देवताओं के दर्शन करने के लिए आने वाले या तो पास की कुछ कोठरियों में ठहरते, शिवालय के चबूतरे पर गुजर करते या अधिक दिनों रहने वाले भक्त वहां झोपड़ियां डाल लेते जो उजड़ती-बनती रहती थी। भूतनाथ के सुझाव पर रोजी-मैरी टोली इन झोपड़ियों में ठहर गई और कुछ सदस्यों ने दो छोलदारियां भी खड़ी कर दी। अमरीकियों के आ जाने से, शिव-प्रागण में सनातनता के साथ आधुनिकता का रंग भी आ गया।

सफरी नाश्ते के बाद रोजी-मैरी टोली ने थकावट उतारी और दोपहर को, डिब्बों का खाना, भूतनाथ के साथ उड़ाकर टोली ने पुनः थोड़ा आराम किया और फिर तरोताजा होकर, उसका ध्यान दूसरे विषयों की तरफ मुड़ा।

"हम बोर हो रहे हैं"—रोजी-मैरी ने रॉबर्ट और ब्रोगले को कोंचा।

"···लोकल पापुलेस···यहां के लोगों से बात कीजिए। अनुवाद मैं कर दूंगा।" भूतनाथ ने सुझाया।

"ओ यस, क्यों नहीं, श्योर श्योर।"

विरौनाबाग से एक-डेढ़ मील जंगल और भरखों के बीच एक गांव है, 'बझाई'। बझाई, विरौनाबाग से बड़ा गांव था। वहां सातों जातियों के घर थे और ठाकुरों का दबदबा था। इसलिए बझाई को सभ्य गांव माना जाता था। काछियों-अहीरों-गूजरों-नट-बेड़ियों-कंजरों-काममारों के ग्रामों को 'पुरवा' कहा जाता था। जैसे विरौनाबाग को काछियों का पुरवा माना जाता था। काछियों को यह बुरा लगता था कि सवर्णों की चौधरायत जहां है, वहां तो नाम होगा 'पर' और जहां पिछड़ी, नीची या बीच की जातियों की बस्ती है, वह कहलाएगी 'पुरवा'—नामों में भी वर्ण-वर्ग भेद।

और जातियों की तरह काछियों ने भी हीनभाव दूर करने के लिए बागियों को कुछ काछी बागी दिए थे और अब तो बाकायदा हम्मीरा काछी ने अपना छोटा-मोटा गिरोह बना लिया था। अपने को वह ठाकुरों की तरह हम्मीरसिंह कुदावाहा कहता था और जो उसका नाम बिगाड़ता था, उसकी जीभ काट लेता था। उसके पास ऐसी कटी हुई कई जीभें थी, जिन्हें सुखाकर वह गले में पहनता था कभी-कभी और चाहता था कि सब उसे ठाकुर हम्मीरसिंह कुदावाहा कहा करें, जो कहता था, उससे खुश हो जाता था।

अन्य जातियों के भी गिरोह थे जो कभी आपस में टकराते, कभी एक होते, कभी पुलिस से मिल जाते, कभी कई मिलकर पुलिस से भिड़ जाते। यह क्षेत्र एक अनिश्चित, डरावना और जातिवादी नरककुण्ड था, जिसमें पड़कर निकलना कठिन था।

ग्राम बझाई के ब्राह्मण उस तरफ की प्रथा के अनुसार पुरोहित कहलाते है। यहां पुरोहितों को सभी जातियां पवित्र मानकर उन्हें प्रणाम करती हैं और दान-दक्षिणा भी देती हैं। पुरोहित कहीं-कहीं छोटी-मोटी खेती भी करते हैं और पुरोहित का काम भी, जन्मपत्री, शकुन-सायत देखना, संस्कार कराना।

बझाई के पिरमू पुरोहित बहुत मजेदार गप्पी पुरोहित थे। वह घटना को इस तरह बखानते कि श्रोता रात-रात भर सुनते। पिरमू पुरोहित पढ़े-लिखे नहीं थे पर

वाक्-चातुरी मे अद्वितीय थे । उनकी आंखें बड़ी-बड़ी थी और शरीर से खासे मजबूत थे । पगडी बाधते और दो काचा धोती पहनते जो घुटनों तक रहती । खेती में मन नहीं लगता था, कहते कि खेती का काम नीच जाति का है, ब्राह्मण की वृत्ति तो बातो की खेती है । सो, पिरभू पुरोहित बातो की खाते थे और बरसात के दिनो मे दूर-दूर जाकर जानवर खरीद लाते, पालते और बेच आते थे । दलाली भी कर लेते थे पशुओ के मेले पर । वहा भी काम कम, बातें अधिक करते थे ।

पिरभू पुरोहित संयोगवश बभाई से बिरौनाबाग आ गए थे । वहां रंग-बिरंगे विदेशियो को देखकर चैन कर गए कि आज उन्हें श्रोता मिल जाएगे और दक्षिणा भी, भोजन-भजन भी बन सकता है ' कोई भेंट भी मिल सकती है । पिरभू पुरोहित, पंडिताई का नाटक करने के लिए बिरौनाबाग न जाकर, सिर झुकाए, हाथ जोड़े, महादेव बाबा की स्तुति अपनी बनाई अशुद्ध किन्तु स्वादिष्ट संस्कृत और सस्कृत मिश्रित पार की बोली यानी जमुना पार की बुंदेलखण्डी बोली में बोलते हुए बढे और पूजा मे यों डूबे जैसे महादेव के विरह मे वह अब तक व्याकुल हो रहे हों ।

महादेव को प्रणाम कर पिरभू पुरोहित इस आशा के साथ कि उन्हें कोई बुलाए यो कहने लगे—"आई, कोउ है का यहा श्रोता भगवान, बकता सोताच दुरलभा ?"

भूतनाथ समझ गया कि यह पण्डित दिलचस्प है, क्या खिचड़ी भाषा बोल रहा है । उसने पिरभू महाराज को सकेत से बुलाया । पुरोहित ने वरद मुद्रा में आखे मीच कर आशीर्वाद दिया—"जय हो जिजमान । आई, हम पहुचे भए ब्राह्मन-पुरोहित हैं । कबौ अकारथ न गयो हमारो आसीरवाद···भोला भला करे आपका···आ रहा हूं आप··· को है ?"

"मेरा नाम भोला है," भूतनाथ बोला ।

"हां, हम जानते हैं, आप भोला भगवान भूतनाथ के अवतार हैं ।"

"मेरा नाम भूतनाथ भी है, महाराज ।"

"कहा कई ? भूतनाथ ? आपु भोला हू हैं औरू भूतनाथहु भी है का ?"

"हा, हा, पण्डित जी, हम भोला भी है और भूतनाथ भी हैं ।"

"अचरज है जिजमान !"

पिरभू पुरोहित भूतनाथ के निकट जाकर भूतनाथ का नख-शिख अवलोकते रहे । फिर अचानक किसी निष्कर्ष पर पहुंच कर बोले—

"आई ! आप-तो साच्छात चन्दरसेखर है···वह देखो, आपके माथे पर चन्द्रमा सो चमक रहो है, हा,···आपकी चितवनि सो नाग निकल रहे है भगवन्···अरे··· आपकी मुस्कान मे तो गंगा है···अहा ! आपका शरीर भी तो महादेव के नन्दीगन जैसा अथान है । सिरी भूतनाथ···यह ब्राह्मन पिरभू पुरोहित तो अज्ञानी है भगवन् ··आप इसे लीला दिखाय रहे हो परमेसुर···आप अपई लीला को भेद परगट करो, भूतनाथ जी । हम आपके भगत है ।"

भूतनाथ को आश्चर्य हुआ । यह पुरोहित तो सकेत दे रहा है । कही भेद न खोल दे । पहुंचा हुआ लगता है । कमाल है ।

इस बीच पिरभू पुरोहित ध्यानमग्न होकर और बीच-बीच में भूतनाथ को घूरते हुए, अगुलियो पर कुछ गणित भिड़ा रहे थे । भूतनाथ डरा कि कही कुछ और न कहने लगे ।

"···सुनो सब कोई···भविष्यवाणी—कोई मुझमे से बोल रहा है, सुनो, एक

भयंकर घटना घटेगी यहां, पर एक मनोहर मामला भी होगा...।"

नूतनाथ ने पुरोहित को रोका और कहा कि ये विदेशी उनसे कोई कहानी, बेहतर हो, बागियों की कहानी सुनना चाहते हैं। उन्हें दक्षिणा मिलेगी और भोजन भी। पुरोहित भविष्यवाणी को अधूरा ही छोड़कर विदेशियों का नख-शिख मन में भरने लगा—"अरे जिजमान ! अब कहां रहे बागी ? अब तो डकुए रह गए हैं। बागी तो दो ही थे, मानसिंह और लाखनसिंह। वे मर्यादा मानते थे, जंगल के राजा थे। लखना थोड़ा बदमास था पर मानसिंह तो राजा था..."

"लाखनसिंह ने क्या बदमाशी की थी ?"

"अरे, वह बहुत करूर (क्रूर) और कड़ुआ था लेकिन भूतनाथ भगवान' वह धर्म मानता था।"

बात चल पड़ी। भूतनाथ पण्डित के वर्णन का अनुवाद करता जा रहा था। रोजी-मैरी की टोली इस विचित्र पण्डित की कहानी में डूबने लगी।

"धर्म कैसा पुरोहित ?"

"आई, भूतनाथ हो के धर्म नहीं जानते आप ?...हां...हा समझ गया, आप तो साच्छात धर्म हैं, साच्छात शंकर-शम्भु हैं आप...हां, आप लीला कर रहे हैं, जैसे आप जानते ही नहीं।"

"अरे पण्डित, हमारे नाम से कल्पनाएं मत करो, जवाब दो।"

"धरम—धर्म तो एक ही है कि सब अपना धर्म पालें, ब्राह्मण अपना, चमार अपना किन्तु जब चमार ब्राह्मन की बराबरी करें तो धर्म कैसे रहेगा ?"

"आज के युग में, पुरोहित जी, ये क्या बातें कर रहे हैं आप ? आज जाति-भेद पाप माना जाता है।"

"बस...बस, आगे कुछ न कहना।" यह कहकर पिरमू पुरोहित ने कानों में अंगुलियां ठूंसकर ऐसा मुंह बनाया, गोया धर्म पर संकट आ गया हो।

"जिजमान, बस यही अधरम—अधर्म तो चमरपुरा के चमारों ने किया था। इसी ओर एक चमारों—ढेढ़ कहते हैं हम उन्हें यहां—का एक गांव है, रैदासपुरा। पुराना नाम तो चमरपुरा था पर ढेढ़ों ने उसका नाम रैदासभगत के नाम पर रैदासपुरा कर लिया। सरकार भी तो ढेढ़ों की तरफदारी कर रही है, अस्तु...उस रैदासपुरा का ही किस्सा है।"

"हुम्"—भूतनाथ ने हुंकारी भरी।

"तो जिजमान। रैदासपुरा में चमार अधिक थे, एक घर बढ़ई का, एक-दो घर नाई-कहारों-काछियों के और एक घर ब्राह्मन देवता का भी था।"

"हुम्।"

"उस ब्राह्मन के एक ही कन्या थी, महाराज भूतनाथ जी। उसका नाम कमला था।"

"हुम्।"

"तो कैसी थी वह कन्या? कि वह कमला सोलह बरस की थी। वह जहां जाती, दिन में चांदनी छा जाती, वह चलती तो लहर बनती, घूमती तो भोर पड़ते, बोलती तो हारसिंगार झरते, देखती तो कमल खिलते, उसके पैरों से पारिजात बिछते, वह ब्राह्मण की कुमारी, माता-पिता की प्यारी, गोरी इतनी कि चम्पा और केसर सरमाय जाए, भोरी इतनी कि बच्चे जिसके सामने वकील से चालाक लगने लगें। हां, जिजमान, यह

लाली, लाखों में एक, सोने में सुगन्ध डारिकें और तामें, फूलन की कोमलता और इन्दर-धनुक—इन्द्रधनुष—के सातों रंग मिलाय करके, वामें अमरत, अमृत और अगिन समोय करकें, ता काया में ब्रह्मा महाराज ने बसत बैठाय दीन्हों''''''ऐसी थी वह छोरी।"

भूतनाथ जो हंसा तो हहराता चला गया। पंडित विस्मित था कि क्या हो गया जो इतना हंस रहा है क्योंकि वह तो रोज इसी तरह वर्णन करता था पर भूतनाथ ने पहली बार सुना था। वह पिरभू पुरोहित की कला से प्रसन्न हो गया। स्थिर होने पर उसने जमकर अंग्रेजी में अनुवाद किया तो रोज़ी-मैरी की टोली भी मुग्ध हो गई, क्या वर्णन कला थी। रोज़ी और मैरी को विशेष आनन्द आया। वे दोनों उठकर भूतनाथ को अगल-बगल आकर जम गईं। पंडित भोंदू की तरह उन सबको देखकर स्वयं अपने पर विस्मित था और वह रोजी और मैरी को इस तरह तक रहा था जैसे वे रसभरी फलिया हों। पुरोहित अचानक बोल उठा—"तो जिजमानिनों, बुरा न मानें तो वह ब्राह्मण की लाली बस ''क्या नाम है इन लालियों का?''

''रोज़ी और मैरी।"

''हां, बस, बस, इन रोज़ी और मैरी जैसी ही थी वह पुरोहित की छोरी, मैंने अपनी इन्हीं आंखों से देखी है। वह अभी भी है। पर अब तो वह बाल-बच्चों वाली है गई सो, तुम जानो कि अब वा बात नाहिं रह गई, चन्दरकला छीन है गई'''हाय।"

पंडित ने बुरा मुंह बनाया। अनुवाद सुनकर और पंडित की मुद्रा से रोज़ी और मैरी का हंसते-हंसते बुरा हाल था।

''तो जिजमान। उस लाली की सुन्दरता देख करके उस ढेढ़पुरा के चमारों के चौधरी गोकुला के मुंह में पानी भर आया। उसका लड़का जो रंग से तो कौआ-सा काला और अकिल से भैंसा था, किन्तु तुम जानो कि वाने टिप्पस भिड़ाय करकें, काऊ तरह सों, वाय हाई स्कूल कराय कें, आगरा कालेज में भर्ती करा दिया, सो, वह अब कालेज का विद्यारथी हो गया। कलिजुग का परताप है जिजमानो, कोई का कर सकै है? कहां ढेड़ और कहां कालेज की अंग्रेजी विद्या पर तुम जानों कि विस ढेड का छोरा, कालेज में पहुंच ही गया है ईसुर।"

"हूं।"

''तो महाराज सिरी भूतनाथजी! उस कलुआ कूकर से बालक का नाम गोकुला ने मदनमोहन रक्खा'''गोकुल का मदन मोहन, वाह। क्या सूझ थी बाकी, वा ढेड की, बड़ा खुश था वह अधर्मी कि उसके मोंड़ा को मदनमोहन कहा जाता था। तिकड़िम लगाय करकें गोकुला ने मदना को बी. ए. पास करा दिया।'' तुम जानो कि अब कालेजों में भी तो नीची जाति के लोग सिच्छक है गए हैं सो विनने नम्बर दिलाय दीन्हें या मदना को और वह बी. ए. हो गया, गजब हो गया या नहीं?'''जा धरती पर धर्म नाहिं रह गओ अब। हम ससुर सुद्ध ब्राह्मन, हमाये मोंड़ा मूरख डोल रहे हैं पै ढेडन के मोंडान की फीसें माफ, कितावें मुफ्त, होसटलों में रहने की जगह, मैसन में मुफ्त भोजन '''सत्यानास कर दियो जा सरकार ने'''वो ढेढ अम्बेदकर वाने संविधान बनाए दियो। मनु महाराज को अब कौन पूछता है, अबो ढेढ चमार विवस्था दे रहे हैं महाराज'''हे कल्कीभगवान् अवतार लो जल्दी तो इन ढेड़न सों धरती खलास हो जाए'''त्राहिं माम् त्राहि माम्।"

सबने खूब हंसते हुए हुंकार भरी। पुरोहित पुनः चालू हो गया। रोज़ी-मैरी टक-टकी बांधकर पंडित को किसी और लोक का प्राणी समझकर आंखें फैलाए हुए थी।

"तो जिजमान। उस गोकुला ने पंडित के सामने परस्ताव कर दियो कि वह अपनी लक्ष्मी-सी कन्या का विवाह उस कलुआ मदना से कर दे, क्योंके अब तो चमार-ब्राह्मन का भेद समाप्त हो गया है और पंडित को दहेज मे कुछ न देना पड़ेगा। मदन-मोहन आगरा-कालेज में एम. ए. में पढ़ रहा है। वह अफसर बनेगा तो पंडित की लाली राज करेगी, सोने से मढ़ दी जाएगी, सब चमाचम हो जाएगा। यह विवाह अन्तर्जातीय होगा, इससे समाचार-पत्रों में फोटू छपेंगे। सरकार आगे सतान को वजीफा देगी और उनका भविष्य रसगुल्ला-सा हो जाएगा। गाव में ब्राह्मण से वैवाहिक नाता हो जाने से सब रैदासभक्त लोग, ब्राह्मन की सेवा करेंगे। पंडित की अगुलिया घी मे और सिर कढ़ाई मे पहुच जाएगा।"

रोज़ी भूतनाथ से शुरू से ही प्रभावित हो गई थी। उसने उसकी टोली के लिए आयोजन कराए थे, रोमाचक और रंजक। भूतनाथ का व्यक्तित्व, उसकी अंग्रेज़ी, उसकी साहसप्रियता, उसकी गहराई, सब कुछ रोज़ी को प्रिय लगा, इतना कि वह उस पर मुग्ध-सी हो गई थी पर ऊपर से वह अपने को सिर्फ कौतुक-क्रीड़ाशील किशोरी के रूप मे ही प्रस्तुत करती आ रही थी। यह आयोजन भी भूतनाथ का था अतः वह प्रसन्नता से उसे देख रही थी, और बार-बार उसे छू रही थी। कभी उसके हाथ अपने हाथों में लेकर दबा रही थी, कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए। रोज़ी का ध्यान कहानी से हटकर भूतनाथ मे रम गया था। पुरोहित समझ गया कि रोज़ी हमारे यजमान को चाहती है अतः वह कहानी रोककर बोला—"मेम साहिब। आप जो सोच रही हैं, वह पूरा होगा पर विवाह तो मैं ही कराऊंगा।" यह कहकर पिरभू पुरोहित हंसे। अनुवाद सुनकर रोज़ी शरमा गई और खुश भी हुई। उसने बंधी नजर से भूतनाथ को देखा मगर ऊपरी क्रोध से उसने पंडित को डांटा—

"नो, नॉनसेंस पंडित, नो नॉनसेंस, प्लीज प्रोसीड विद योर स्टोरी" निरर्थक बात मत करो, पंडित, कहानी शुरू करो।"

पंडित हतप्रभ हो गया। मुस्कराया और कहानी का सूत्र पुनः पकड़ लिया—"तो जिजमानो। पंडित ने ढेड का प्रस्ताव सुना तो काटो तो खून नही बिसके। ब्राह्मन की मोड़ी और चमार का मोड़ा, धर्म कहा रहेगा? इस ढेड की यह हिम्मत कि ऐसा प्रस्ताव करे परन्तु करे तो क्या करे। पंडित का पूरे गांव मे एक ही घर, घर मे लाली का कोई भाई नही। लाली के एक-दो भाई होते तो वे यह सुनते ही ढेड़ों पर टूट पड़ते पर वहा कौन लड़े और कैसे लड़े? ब्राह्मन ने कुछ समय मागा कि वह सोचकर ब्राह्मणी से सलाह कर बताएगा, और ब्राह्मन-समाज से भी बाहर जाकर, ब्राह्मण-सम्बन्धियों से भी पूछना पड़ेगा। यह अनहोनी है न, सो सबकी सलाह से ही ऐसा हो सकता है।"

"हुम्।"

"तो महाराज। गोकुला बातो में आ गया। ब्राह्मण देवता ने उसे बिदाकर घर मे ब्राह्मणी से पूछा तो वह गश खाकर गिर पड़ी और मरते-मरते बची। लाली की मा ने कहा कि वह लड़की को लेकर कुएं में गिर पड़ेगी परन्तु ढेड़ के यहा विवाह नहीं होने देगी। वह माथा धरती पर पटकने लगी और छाती पर हाथ मार-मारकर रोने लगी।"

"हुम्।"

"ब्राह्मन देवता परेसान, हाय; अब कहा करें? फिर ज्ञान आया कि बाहर जाकर परामर्श करना चाहिए। अभी मना कर देने पर गोकुला, लाली का अपहरण करा सकता

है, घर पर हमला कर सकता है। कुछ भी करेगा वह चमार। वे नीच अचानक चढ़ आए तो लाली की माँ कुए मे भी कहा गिर पाएगी"'इससे यही उचित है कि ब्राह्मन बाहर जाए। गोकुला से मोहलत मिल गई है पन्द्रह दिनों की। वह एक सप्ताह के भीतर वापस हो जाएगा। चार-छः दिनों की बात है। सो, लाली को घर से बाहर न निकलने दिया जाए। किवाड वन्द रहें। बढ़ई-काछी-कहार के घरों के लोग पहरेदारी करेंगे। उनसे कह दिया गया है। वे ब्राह्मण के धर्म की रच्छा के लिए प्रान भी दे सकते हैं। उन्हें अभी कुछ बताया नहीं है पर यह कह दिया है कि पंडित की गैर-हाजिरी में वे लोग ब्राह्मणी और बेटी की रच्छा करें"'ठीक है?"

"हूम्।"

"तो जिजमान। ब्राह्मण सब प्रवन्ध करके चला। वह कहीं नहीं गया। एक-दो दिन चक्कर लगाकर वह भजन करता हुआ, बागी लाखन सिंह के गिरोह मे पहुंचा। उसके घुटने काप रहे थे और बोलती बन्द थी। उसे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। सोच रहा था कि कौन जाने, इन ठाकुरों की नीयत ही खराब हो जाए और यह लाखन मेरी लाली को उठा लाए "हाय, न हम इतै के रहे, न उतै के। वह 'ओम् नमः शिवाय' जपता पर उसकी जीभ सूख रही थी, इससे उसके कंठ से 'फोम समाह छवाय' निकलता था। गिरते-पड़ते किसी तरह वह बूढ़ा, सफ़ेद वालो और कांपती टांगों वाला पुरोहित, बागी लाखनसिंह के पास पहुंचा दिया गया।"

"हूम्।"

"बागी लाखनसिंह, जंगल मे, एक कन्दरा मे, भीतर एक विछी जाजम पर एक मसनद के सहारे बैठा था। शाम हो रही थी। वह मदिरा पी रहा था। आखें लाल और मूछें बिच्छू-सी खडी हुई, डाढ़ी बढी हुई, काली, डरावनी। डाढ़ी-मूछों के वन मे उसकी आखें किसी जंगली बिलाव की आंखों सी चमक रही थी, खूनी और शिकार पर जमी हुई। लाखन बीच-बीच मे काजू कुटक रहा था और किसी न किसी बात पर साथी बागियों पर विगड उठता था और फिर शांत होकर पीने लगता था। एक बागी उसके पैर मल रहा था। आसपास घेरा बाधकर बैठे बागी भी खा-पी रहे थे और किसी लूट की मन्त्रना हो रही थी वहां"'नदी के किनारे उगा बेंत बाढ़ के पानी में जैसे थर-थर कांपता है, वैसे ही जिजमान, उस पुरोहित का हाल था।"

"हूम्।"

"उसने हाथ उठाकर ठाकुर को आशीर्वाद दिया पर मुंह से कुछ न निकला"' ठाकुर ने घूर कर पंडित को देखा। उसकी योजना मे बाधा पड़ी थी, सो वह बिगडकर बोला, 'क्या है, महाराज? क्या बात है? कैसे आए यहां बागियों के बीच?' पंडित कुछ बोल ही नहीं सका। वह टहनी-सा कांपा और टूट कर धरती पर गिर पड़ा और अचेत हो गया"'। ब्रह्महत्या के पाप से डरकर लखना घबड़ा गया"'ठाकुर था न, कोई ढेड था क्या, जो न घबराता?"'लखना ने उठकर पंडित को देखा कि उसकी नब्ज तो चल रही है पर उसे चेत नहीं है। उसकी आखें फिर गई है"'कहीं मर न जाए तो उसके गिरोह को कोई पानी भी नहीं पिलाएगा। लोग कहेंगे कि यह ब्रह्म-हत्यारा है। गो वध का प्रायश्चित है, ब्राह्मण का नहीं, सीधे नरक जाना पड़ेगा"'बागियों का सरदार भय-भीत हो गया। उसके संकेत पर पंडित के तलवे मलकर, कपूर सुघाकर और दिलासा देकर पंडित को चेत में लाया गया। पंडित पहले तो सांप काटे सा झूमता रहा। बाद में एक गिलास दूध पीकर चैन पा गया। मिष्ठान भी उड़ा गया पट्ठा उसी हालत में।

मिठाई ब्राह्मण मरते समय भी नहीं छोड़ सकता, सो, पुरोहित पूरे होस-हवास में आ गया। तब लखना बोला—'आई, का चक्कर है पुरोहित ? काहे बेहोस है है जात हो, मेरा नाम लाखन सिंह है, अभय देता हूं, आपको, बोलो, का बात भई ?'

'अब क्या बतावें ठाकुर राजा।'

"कमला के बाप बूढ़े पंडित ने सिर नीचा कर लिया और सिसकने लगा। फिर अंगोछा से नाक पोंछकर ऐसा हो गया जैसे कोई टीला बरसात में भसकने जा रहा हो। दो बागियों ने उसे थरथराते देख पकड़ लिया और दिलासा दिया। पंडित कहने लगा—'अब प्रतिष्ठा तो गई, प्राण भी जाएं। आपने रैंदासपुरा का नाम सुना होगा। मैं वहीं रहता हूं। वहां हमारा एक ही घर है। दुर्भाग्य से हमारे भाई-भतीजे नहीं हैं। हम, हमारी ब्राह्मणी और एकलौती बेटी कमला है, गाय-सी सीधी और निरीह। रैंदासपुरा का चौधरी गोकुला कहता है कि कमला का विवाह हम उसके लड़के मदना से कर दें।'

'क्या···या···?'

"लाखनसिंह ने इतने जोर से 'क्या' कही जिजमान कि वन में पक्षी पंख फड़फड़ाकर उड़ने लगे। जो बागी, ठाकुर और पंडित की तरफ पानी ला रहा था, उसके हाथ से पात्र छूट पड़ा। खोह में वह 'क्या' देर तक गूंजी और उसकी जवाबी गूंज आई, 'क्या···क्या' ?

'हां ठाकुर राजा। यह सत्य है। मैं यज्ञोपवीत हाथ में लेकर इसकी शपथ खाता हूं कि यह बात सत्य है।'

"लखना गुस्से में, शिकंजे में फंसे शेर-सा घूमने लगा। उसने अपने होंठ कचर डाले। उनसे रक्त निकलने लगा। वह अनहोनी सुनकर और चमारों का दुस्साहस देखकर दंग रह गया था। सेवक बागी ने थोड़ी देर तो कुछ न कहा फिर एक गिलास में सुरा भर के लखना को दीन्ही, वह बिना सोचे-समझे उसे पानी की तरह पी गया—गड़प्प। और फिर मुंह पोंछ कर पंडित की ओर मुड़ा।

'तुम जाओ महाराज। और उस ढेड़ से कहो कि तुम्हारी बेटी का विवाह उसके मौंड़ा से होगा।'

"ब्राह्मण चकराया। वह हकलाने लगा और कुछ न समझता हुआ ठाकुर का मुंह ताकने लगा जैसे कोई अनाथ-सनाथ को आशा-निराशा में देखता है।

'तुम मेरा मुंह क्यों तक रहे हो, पुरोहित ? तुमने सुना नहीं, मैंने क्या कहा ?'

'राजा। हम तो इस आशा से आए थे कि आप क्षत्रिय है, धर्म के रक्षक···कोई बात नहीं, सर्वनाश निश्चित है तो मैं अपनी बेटी को कुएं में ढकेल कर आत्महत्या कर लूंगा। पीछे से ब्राह्मणी भी आत्मघात···।'

'यह क्या बक रहे हो, पुरोहित ? मैं कहता हूं, वह करो और तिलक की तिथि तै कर हमें सूचना दो या हमारे बागी पता लगा लेंगे। यहां से रैंदासपुरा दूर है। हम तुम्हारे गांव के निकट जो मघोना के भरखे हैं, उनमें कहीं आ जाएंगे। तुम तिलक तै करो और उस ढेड से कहना कि अपने सब रिश्तेदारों को बुला ले, फिर हम उस चमार को तिलक कराएंगे।'

"ब्राह्मण अभी भी कुछ नहीं समझा पर गिरोह के बागी समझ गए। उनमें से एक तिरजुगीनरायन—त्रियुगीनारायण नाम का ब्राह्मण बागी भी था। उसने पुरोहित को उसकी भाषा में समझाया।

'दादा। आप पधारो। ठाकुर राजा, तिलक की तिथि पर, रात में मुहूर्त के

समय सदल-बल पधारेंगे। आप तिलक चढाने का मुहूर्त्त रात में लगभग दस बजे निश्चित करना जिससे कि हम मघोनी की खंदकों से निकल कर उस समय तक आ सकें, ठीक है ?'

'ठीक नहीं है त्रियुगीनारायण भाई, तुम तो ब्राह्मण हो'''कहीं उस क्षण तक ठाकुर राजा न आ पाए तो ''तो तिलक तो चढ़ाना पड़ेगा न'''ब्राह्मण वचन देकर कैसे · क्या करेगा ?'

'तुम पुरोहित न होते तो तुम्हें दो इंच छोटा कर देता।' लाखन गरजा।

'तुम ठाकुर लाखनसिंह के वचन पर शंका करते हो पुरोहित, रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्रान जाए पै वचन न जाई।' लाखन ने समझाया।

'आप पधारिए पुरोहित जू और तिलक की तिथि और समय की सूचना दीजिए। यदि न दे सकें तो भी हम पता कर लेंगे। मैं स्वयं आऊंगा वेष बदल कर पूछने। तब तुम्हें प्रतीति हो जाएगी।' तिरजुगी ने परामर्श दिया।

"जिजमानो, अब पण्डित को भरोसा बंधा। वह कुछ सोचता हुआ चला परन्तु फिर लौटकर गिड़गिड़ाता हुआ बोला कि यदि ठाकुर राजा ने रक्षा नहीं की तो धर्म नष्ट हो जाएगा।

"ठाकुर ने हाथ उठाया और पुरोहित के सन्देह पर लाखन फिर न तमक जाए, यह सोचकर तिरजुगी पण्डित को खोह के बाहर तक पहुंचा आया।"

"हुम्'' फिर क्या हुआ ?"

"फिर साहब लोगो, यह हुआ कि एक मास बाद,निश्चित तिलक की तिथि आ गई। तब तक ब्राह्मण-ब्राह्मणी और कमला सूख कर ककड़ी हो गए। डर था कि कहीं अवसर पर बागी न आ पाए और चमार ने पुलिस बुला ली भारी तादाद में तो क्या होगा ? पर वह दिन आ ही गया। फिर शाम हो गई'''तो जिजमानो, वह कैसी रात थी कि आकाश में केवल तारे चमक रहे थे और धरती पर ढेंड। शेष तो शंका और अनहोनी घटना के आतंक में थे। चमार के घर पर अंग्रेजी लालटेनों की बहार थी। बुआ, मौसी, साली-सलहजें-मामा-मामिया-नाना-नानी, गरज की गोकुला का सारा कुटुम-कबीला, एकट्ठा हो गया था। सब साफे बांधे, चमार से चौधरी बने, मूछों पर ताव दे-दे डोल रहे थे और शेखी बघार रहे थे कि अब वे ब्राह्मणों के मान्य हो गये, अब उनकी मर्यादा ऊंची हो गई है। अब उन्हें कोई चमार, ढेड़ नहीं कह सकता, अब · ।"

"हुम्"।

"तो बहादुरो। रात के नौ बजे पुरोहित थाल में पूजा-तिलक की सामग्री और दान-दहेज का सामान लेकर चलने लगे। उसी समय त्रियुगी ब्राह्मण के वेष में प्रकट हुआ, तो पण्डित का हिया यों लहराया जैसे चन्द्रमा को देखकर अरब सागर इतराता है। अब पण्डित सामग्री सहित चमार के घर की ओर चले। वहां देखा कि सैंकड़ों की संख्या में चमारों की जाजम लगी है और एक से एक कुरूप, काले, कालिया भुजंग बैठे हैं। पण्डित में अब आनन्द जग गया था, सो, विनोद करने लगे।"

"हुम्।"

"तो जिजमानो, पण्डित ने कहा कि पुराणों में एक कथा है कि यह सृष्टि जो है, यह जिस ब्रह्मा ने रची है वह रचनाकार है और आप सब भी कलाकार हैं अतएव आप की जाति और वर्ण, ब्रह्मा का वर्ण है और ब्राह्मण की बेटी का विवाह ब्रह्मा के वंशजों के साथ हो यही धर्म है।" चमार प्रसन्न हो गए।

"हुम्।"

'तो'''अब समय हो रहा है। वर के आसपास जो उसके वंश के और उसके नातेदार हैं, वे बैठ जाएं और उनके बाद व्यवहारी लोग बैठें, उस पक्ष के उधर और इस पक्ष के में तो हम और हमारा यह भतीजा नारायण है।'

"सब उसी तरफ बैठ गए। ठीक दस बजे चमारों में ही चमार बनकर शामिल बागी बन्दूकें उठाकर खड़े हो गए और साहब बहादुर, अब कैसे कहें कि जिस तरह गरम भाड़ में चना भुनता है और तड़कता है, जिस तरह दीवालों पर आतिशबाजी चलती है, गुड़म, फड़, फटाक, फट्ट, दांय, भांय, सुन-सन्न-साय, धडधाड़ धू—कड़क-कड़क दन्न धाए के बीच, 'हाय मर गए', 'हाय जू कहा है गयो', 'कक्का मर गए', 'आह, हाय' का जो कोलाहल मचा तो ऐसा भया जिजमानो कि उस चीख-पुकार-हाहाकार के बीच एक विकट अट्टहास गूंज रहा था, ठाकुर लाखन सिंह का, 'हः हः हः हः हः साले ढेड़ की औलाद, तुमने हिम्मत कैसे की ब्राह्मण की बेटी के साथ विवाह का प्रस्ताव करने की ? मारो साले गोकुला और मदना को, किधर गया ? हः हः हः हः।'

"गोकुला और मदना की लाशों को घसीट कर लाया गया। ठाकुर ने उन पर थूका और उन्हें लतियाया और पण्डित के थाल में हजार रुपए के नोट डाल कर चला गया कि वह कहीं अच्छी जगह कमला का विवाह कर दे और इस चमरपुरा को छोड़कर कहीं अपनी बिरादरी वालों के गाम में जाय करके रहे।

"तो साहबान, वह बागी था, लखना, यानि ठाकुर लाखनसिंह। बेचारा एक बागी के विश्वासघात से मारा गया। वैसे वह बहुत भयंकर था। क्रोध में फरसे से खोपड़ी छीलकर उसमे नमक भर देता था और हाथ पीठ पर बंधवा देता था और उस पीड़ा को देखकर हंसता था, हः हः हः हः हः।"

पिरभू पुरोहित को रोजी-मैरी ने खूब दक्षिणा दी और राबर्ट और ग्रोगले ने एक बुशर्ट और एक पतलून भी दे दी, जिसे पण्डित को पहनाया गया और ताली बजा-बजाकर पिरभू पुरोहित की अलौकिक छवि पर ठहाके लगाए गए। पिरभू पुरोहित आशीषें देते वभाई चले गए।

रात ढल रही थी। रोजी ने भूतनाथ का हाथ दबाया। उसने भी जवाब दिया। दोनों टहलने निकल गए।

13

रोजी और भूतनाथ जगल में न घुस कर नीचे उतर कर क्वारी नदी की तलहटी की ओर बढ़े। जगल में जाना तो खतरनाक था। भूतनाथ के मन में लाखन द्वारा निम्न जाति का नर-सहार चल रहा था। रोजी के मन मे लाखन सिंह और भूतनाथ दोनो चल रहे थे। रोजी को आपत्ति यह भी थी कि भूतनाथ उसके विषय मे नही सोच रहा है। वह घटनाओं के डोरे सुलझाने में लगा है जबकि भूतनाथ सोच रहा था कि यह जो अपराध-जगत् है, यह कितना विचारशून्य है। औद्धत्य और जाति-द्रोह तथा अहं-स्फीति, इन मनाओं-प्रेरणाओं के सिवा इन अपराधियों मे कोई और ऊंची भावना क्यों नहीं पैदा होती ? काश! इनमें चेतना जग जाए तो इनको साहस, सामाजिक बदलाव के काम मे

लाया जा सकता है···लेकिन यह उसे इतना असम्भव लगा कि वह अपनी उड़ान मुस्कराने लगा···तथापि उसका ध्यान इस पर गया कि गिरोहों के हृदय नही हो क्रूरता और आतंक उनके व्यवसाय का भाग है। उनकी पकड़ पर तभी तो रुपया आत है, तभी तो डकैती के वक्त प्राणभय से उन्हें चाबियां मिल जाती है, तभी तो पुलिस क साधारण सिपाही उन्हे छेड़ता नही है, कौन जरा-सी तनख्वाह पर अपना सीना छलन कराए ?···तभी तो उन्हे हथियार मिलते है और उनका इस्तेमाल अब तो चुनावों भी होने लगा है। तभी तो उनका रौब-दाव है···तभी तो···।

भूतनाथ ने विकल्पहीन सोच मे दर्दभरी सास ली। उसमे लाखन सिंह और 'क्वारी' जैसों के द्वारा मारे गए लोगो की लाशें फड़क रही थी और इस दुश्चक्र का कोई कूल-किनारा नजर नही आ रहा था। पतवारहीन नौका की तरह उसका मानस डोल रहा था, क्या किया जाए ? क्या गाव-गाव प्रतिरोधी युवक टोलिया, इन बर्बर वागियो को खत्म कर सकती हैं ? लेकिन जनगण तो विभाजित है और प्रत्येक जाति के डाकू को, उसकी जाति के घेरो से मदद मिलती है या फिर डाकू आतंकित कर सहयोग और सामान लेते है। पुलिस के व्यवहार से उनका व्यवहार बेहतर है। वह क्रूरता और कृपालुता मे एक सन्तुलन बनाए रहते है, तभी तो चलते रहते हैं वर्षों, फिर मारे भी जाते हैं और फिर नए गिरोह बन जाते है।

···जगल उजाड देने या चम्बल के भरखे भर देने से यह दस्यु-प्रजनन समाप्त नही हो सकता। यह तब हो जब इनके मन के जंगलों और खाई-खदकों की भराई हो और इस क्षेत्र का तेजी से औद्योगिकीकरण हो।

रोजी सोच रही थी कि अब तक एक भी ऐसा आदमी नही मिला जो रोजी पर आसक्त न हुआ हो···यह 'लार्ड आफ द गोस्ट्स'···भूतनाथ अजीब आदमी है···कहीं यह भूत ही तो नही है ?

रोजी की आकस्मिक हसी ने दोनों का विचार प्रवाह काट दिया और दोनों अपने से बाहर आ गए। रोजी ने भूतनाथ को छेड़ा। संवाद तो अंग्रेजी मे ही हो सकता था—"मिस्टर गोस्ट, आई मीन भूतनाट···आप क्या हैं सच बताएगा।"

"सच ? मैं भूतनाथ हूँ। इतना सब देख-सुनकर क्या कोई मनुष्य होश में रह सकता है ?"

"आपको मैं समझ नही पाती, आप यहा क्या कर रहे हैं ?"

"मैं। मैं एक सवाददाता हूं न, सो दस्युओ को देख रहा हूं। उन पर रपटें लिख रहा हूँ।"

"नही, कोई रहस्य भी है। आपमे कोई रहस्य-सा लगता है। आप नॉर्मल, साधारण नही हैं, क्यो ?"

"पता नही, आपको ऐसा क्यो लग रहा है ? वैसे ऐसे क्षण आते तो हैं कि जाना हुआ भी रहस्यमय-सा लगता है और रहस्यमय, परिचित और जाना हुआ।"

"जैसे ?"

"जैसे, आप मुझे पहले से जानी-पहचानी लग रही है, करौली मे भी लगी थीं।"

"सच ? रियली ? ओह। वडरफुल !"

"इसमें आश्चर्य की कोई बात नही है। यह वैज्ञानिक विषय है। मन का विज्ञान, शरीर के विज्ञान से समझा जा सकता है।"

"कैसे ?"

"पहले हम चलकर···वो देखो, नदी के किनारे बिल्कुल पानी से लगा हुआ साफ पत्थर है। है न ? और देखो, ऊपर पेड़ की छाया है। वाह ! ओस भी नहीं पड़ेगी सिर पर। हम वहां बैठकर आराम से बातें कर सकते हैं।"

"पेड़ को देखकर बैठिएगा। कहीं उस पर बागी न बैठे हों, उठा ले जाएं हमें।" ···रोज़ी हंसी।

"मुझे क्यों, आपको ले जाएंगे। आप सुन्दर हैं न। कभी उस पंडित पुरोहित से कहेंगे कि वह आपका वर्णन करे।"

"ओह, वो पंडित कितना होशियार है, कितना क्लैवर है। उसे और सुनना है हमें।"

"हां-हां, जरूर सुनिएगा··· अभी बुला लाऊं ?"

"ओह, आप बहुत शरीर है, नॉटी। आप मेरे मन की बात समझ लेते हैं।"

"बिल्कुल नहीं। मैं यही नहीं जानता कि आप मेरे साथ अकेली क्यों टहलने आई हैं ?"

"ओह, यू नॉटी ब्वाय, शैतान लड़के, आप जानते है कि मैं आपको पसन्द करती हूं।"

"आप पसन्द तो उस पंडित को भी करती है। आपको तो कौतुक चाहिए न।"

रोज़ी की नीली आंखों मे आंसू की छलछलाहट हुई। उसने होंठ काटे और चुप हो गई। उसे भूतनाथ कठोर लगा।

"अरे, आप तो भावुक हो गईं। बुरा लग गया न, मैं तो आपकी पसन्द का राज बता रहा था ··लीजिए, अब यहा बैठ जाइए। पेड़ पर कोई नहीं है। पक्षी अवश्य हैं पर वे हमें पसन्द करेंगे और हमारी पसन्द की दाद देंगे।"

रोज़ी कुछ नहीं बोली। उसने झुककर पानी चुल्लू में भरा और फेंक दिया। फिर भरा और धीरे-धीरे पानी की बूंद-बूंद गिराने लगी जैसे वह व्यर्थता का बिम्ब बना रही हो।

"मिस रोज़ी, मैं कह रहा था कि आपकी पसन्द का कारण शारीरिक है। आपको मालूम है कि जब दो शरीरों के बिजली और चुम्बक, एक-दूसरे के प्रति प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं, तब मन में पसन्दगी आती है ?"

"यू मीन, आपका मतलब है कि आपके शरीर में भी बिजली और चुम्बक है ?" ···रोज़ी ने उपहास किया।

"यकीनन है रोज़ी, यकीनन है।"

रोज़ी का क्षणिक विषाद दूर हो गया। उसे भूतनाथ की बात में एक संकेत मिला। उसने भूतनाथ का हाथ पकड़ा और हाथ में हाथ दबाकर पूछा—"आपके भीतर की कोई विद्युत-चुम्बकीय लहर सिर उठा रही है या मैं किसी काठ के टुकड़े को पकड़े हूं ? यू नो, काठ कुसंचालक होता है बिजली का ?"

"मेरे भीतर कुछ ऐसे परमाणु भी हैं जो मुझे रोकते है, अन्यथा मैं आपको पसन्दगी से प्रीति की ओर ले चलता। मिस रोज़ी, मैं भी एक मनुष्य ही हूं पर मनुष्य रह नहीं पाता हूं।"

"रियली ? मैं तो मानती हूं, आप किसी और धातु के बने हुए हैं या किसी और स्पेशीज जाति के हैं···या आपको मुझ पर विश्वास नहीं है ?"

"मैं आपको, मिस रोज़ी, एक भोली लड़की, एक नाइस गर्ल मानता हूँ। आप खेलिए, घूमिए, आप यह मन की जाच क्यो कर रही है ?"

"मेरा मन, मैं एक आजाद देश की मुक्त नारी हूं। मैं कोई आपके यहा की··· रूढ़िग्रस्त नारी कन्वेंशनल वूमन नही हू। मैं अपने मन की क्यो न करूं ? मेरा मन कहता है कि जिसे ढूंढ रही हू वह···ओह ! कैसे कहू···!"

"वह मै हू या मुझ जैसा कोई है, कौन है ?"

रोज़ी हसने लगी। वह क्वारी के मद किन्तु निर्मल प्रवाह को देखती रही। उसमे यह विचार आया कि सब चल रहा है, चलता रहेगा। हमारे हिस्से में सिर्फ यह है कि हम जब तक यहा है, कुछ अपनी छाप इस बहते हुए समय और ठहरे हुए दिक्—स्पेस पर छोड़ें···मगर यह मिस्टर गोस्ट तो मनुष्य है ही नही, अजीब उलझा हुआ, सावधान और रहस्यमय व्यक्ति है, तभी शायद चुनौती देता है कि इसमे पैठा जाए। इसकी मूल गाठ कहा है, जिसे खोल देने से यह पहेली-सा खुल सकता है, कहा है वह ?

"मैं बताता हू कि आप क्या सोच रही है ?"

"क्या सोच रही हूं ?"

"कि मैं क्या चीज हू और आप मुझे सिर्फ जानने के लिए मित्र बनाना चाहती है, करैक्ट ? ठीक है ?"

"ओह ! वंडरफुल ! मिस्टर गोस्ट, मैं रात मे आपको आपके मूल नाम से पुकारू ?"

"ओह, अवश्य, श्योर।"

"तो मिस्टर गदाधरसिंह, आप क्या है, बताइए।"

"मैं एक व्यक्ति हूँ जो मिस रोज़ी के पास बैठा सोच रहा है कि वह क्या है ?"

रोज़ी और भूतनाथ के हास्य से वातावरण कुछ हलका हुआ।

"लीव इट, छोडिए भी, आप चालाक है। रहस्यमय बनकर आप लड़कियो को चक्कर मे डालते हैं। उन्हें आप शतरज के खेल से लगते हैं।"

"आप जीत गई, यह मैं माने ले रहा हू। पर आप इस टोली मे मिस्टर शेफ्ट्सबरी और मिस्टर स्टेनबेक को क्यो ले आई है ? वे तो आपकी तरह, मेरा अर्थ है कि आप, मैरी, रावर्ट और ब्रोगले सीधे-सादे हैं पर वे दोनो मुझे जटिल और गहन लग रहे है। आप बता सकती है कि उनके इरादे क्या है ?"

"मैं जाती हू, मिस्टर गोस्ट। आप मेरे बारे मे न बोलकर औरो के बारे मे क्यों बोल रहे हैं ? आप मुझसे भेद लेने के लिए यहा लाए है या···या···पसन्द करने के लिए ?"

"ओह, सॉरी, मिस रोज़ी, लेकिन रहस्य की बात उठी तो ध्यान आपसे चलकर उन तक पहुच गया···माफ करें, एक्सयूज़ मी, मैं उनकी बात उनसे कर लूगा और अब आप जरा मेरी तरफ देखिए···तो आपको एक नया दृश्य दिखाऊ।"

रोज़ी भूतनाथ से सटी तो बैठी ही थी। समीपता और सर्दी मे ऊष्मा दोनो मिल रही थी। उसने अपना मुंह उठाया तो भूतनाथ ने उसे हाथो मे यो रख लिया गोया कमल के पत्तों मे कोई गुलाब का फूल रख लिया गया हो। वह झिलमिलाती रात के छायालोक में पानी की कलकल ध्वनि और जब तब चिड़ियों की चिच्-चिच्-किरच् टी-टी-टी-की-टुट के बीच उस सुन्दर मुख को देखता रहा। फिर उसने रोज़ी के माथे पर मीठा चुम्बन इतनी कला और कोमलता से चिन्हित किया, जैसे वही रोज़ी की

त्वचा को अधरं क्षुब्ध न कर दें।

रोज़ी ने उतावले, गरम और उग्र अमरीकी नवयुवकों का प्यार देखा था पर यह तो गीतात्मक था जैसे दो त्वक् इन्द्रियों ने सहगान छेड़ा हो। रोज़ी मुग्ध हो गई। उसे पवित्रता भी महसूस हुई। भूतनाथ चाहता तो उसके अधर पर चुम्बन ले सकता था। उसे कोई आपत्ति नहीं थी पर उसने ऐसा नहीं किया···यह कोई, हि इज़ आइदर एन एंजिल ऑर ए प्रिटेंडर···है। यह कोई बना हुआ भेदिया है या फरिश्ता, रोज़ी ने भी अपने को नियंत्रण में रखकर अपना सिर भूतनाथ की गोद में छिपा लिया मगर आलिंगन नहीं किया जैसे बच्चे आपस में एक-दूसरे को दुलार रहे हों।

दोनों उस पावन स्निग्धता में थोड़ी देर तक मौन रहे और क्वांरी नदी की गति के साथ गमन करते रहे, गोया उनके मन पानी के रूप में, बालू के बीच, साथ-साथ बह रहे हैं, लघु-लघु लहरियों से खेलते, हिलते-मिलते और कल् कल्, चल् चल् ध्वनि करते।

जब कोई अनुभूति, कोई तरलता या पिघलाव आता है, जमे हुए कठिन हिमखण्डों में, तब कैसा सुन्दर दृश्य बनता है। हमारे बर्फ द्रवित हो रहे हैं। कठोर जमाव जो हमें जड़ बना रहा था, लगता था, हम मनुष्य नहीं, पत्थर हैं, अब ऐसी प्रतीति है जैसे हम प्रवाहित होकर अपनी ग्रंथियां गला रहे हैं। हमारे भीतर जो कठोर गिल्टियां उभर आई थी, कर्म की उत्तेजना में कसावट अधिक हो जाने से अब लुप्त हो रही हैं और हमारे ऊबड़-खाबड़ भीतरी भूगोल समता पा रहे हैं। हमारे टीले-टीबे टूट रहे है। हम हमवार हो रहे हैं···भूतनाथ की पत्रकार वाली सावधानी सिमटने लगी और उसकी जगह स्वाभाविक मनुष्य ऊपर आने लगा जैसे रोज़ी के साथ बैठने के पहले जो व्यक्तित्व था,उसके स्थान पर अब कोई दूसरा व्यक्तित्व आ गया है। रोज़ी कितनी गुलाबी, गरिमामय और गरूर गिराने वाली शख्सियत है। भूतनाथ को अपने काठिन्य पर पश्चात्ताप हुआ।

"ओह! मिस्टर गोस्ट···यही सम्बोधन ठीक है, वह गडाढरसिंह तो मेरे लिए ऐसा है, जैसे मैं कोई भारी बोझ उठा रही हूं···तो मिस्टर गोस्ट, मै आप में अंतर पा रही हूं···आप, आपसे तुम पर आ रहे है, इससे आपकी अलग रहने की तैयारी खत्म हो सकती है···हः हः हः।"

"करेक्ट···तुम मुझे समझना ही तो चाहती हो न?"

"यस, बट···लेकिन अब नहीं समझना चाहती···अब नहीं।"

"क्या?"

"क्योंकि, अभी एक क्षण पहले मुझे लगा कि हम दोनों इस नदी की धारा की छोटी-छोटी तरंगें हैं, बस। वे तरंगें बहती हैं, कुछ जानना नहीं चाहतीं।"

"····ठीक है, तो फिर यह कहिए कि हम सिर्फ साथ होना चाहते हैं, जानना, उसके आगे, तो अपनी सत्ता को अकारण अधिक महत्त्व देना है।"

"गोस्ट, तुम नए वाक्य बनाने में लगे हो, मैं नया जीवन बनाने में।"

रोज़ी ने भूतनाथ का हाथ दबाते हुए बड़ी शरारत से कहा। अब उसका पलड़ा भारी हो रहा था। उसने भूतनाथ के पार्थक्य को प्रीति में बदल दिया था। वह बहुत आनन्दित थी।

भूतनाथ ने उसके कंधों को समेटते हुए अपने भद्र-आलिंगन में रोज़ी को समेटा मगर अभी भी उसमें वह ऊष्मा नहीं थी, जिसकी रोज़ी अभ्यस्त थी तथापि प्रगति देखकर

यह अब प्रमुदित थी और भूतनाथ के दुशाले में अपना मुह छिपाकर, शीत भगाने के बहाने, उसके दृढ़ वक्ष के साथ गिलहरी-सी चिपक गई थी। लेकिन उसने भी वात्सल्य और शिशुता का स्पर्श नहीं छोड़ा। उसे आज पहली बार महसूस हुआ कि प्रेम में निसर्ग का एक यह भी आयाम हो सकता है। वह भूतनाथ का स्वगत कथन अब मजे में सुन सकती थी। अब वह उसके साथ हो रही थी, मन ही मन कह रही थी, 'आय एम बीइंग विद हिम नाव, आ · य···ए···म···बी···इं···ग···वि···द···हिम।'

"रोज़ी, तुम निर्दोष, निष्पाप, गुलाब का फूल हो, एक पवित्र किशोरी···तुम उस अपराध भाव, सेंस आफ गिल्ट से परिचित नहीं हो, भगवान करे कभी तुम्हें उसका सामना न करना पड़े, जिससे मैं पीडित हूं···देखो, कितना असौंदर्य, अगलीनेस और क्रूरता-कुटिलता है, इस देश मे। तुम्हारे देश में भी है, कम नही ज्यादा ही है मगर यहां तो हद है, फिर यहां गरीबी और गिलाजत भी ज्यादा है, पिछड़ापन और बर्बरता है। इस बर्बर समाज में रहकर क्या कोई इन भोले स्नेह स्तरों मे रम सकता है, बिना अपराध का भाव लिए, जैसे कोई घायल हो भीतर से और सांत्वना के लिए प्यास बुझाने के लिए ओस चाट रहा हो, पानी न मिल पाने से···रोज़ी, मैं उसी अपराध-भाव को भूलने या उसे कुछ अच्छा करके दूर करने के लिए इन दरिंदों के बीच घूम रहा हूं। मैं अपनी घूम मे हूं, वे अपनी घूम मे हैं···मैं चाहता हूं कि कोई बड़ी बुनियाद पड जाए, कोई सिलसिला चालू हो जाए जो अन्त मे ऐसा रचाव कर दे कि मनुष्य असुन्दर व्यवहार के लिए प्रेरित होने मे अपराध-भाव का अनुभव करे···रोज़ी, माई डियर फ्रेंड रोज़ी, मैं मानवता के सारे अपराधो के बोझ को अपनी आत्मा पर लादे भटक रहा हूं और मैं ढूढ़ रहा हू उन आत्माओ को, जो भीतर से मेरे भूगोल से मिलती-जुलती हैं···रोज़ी, तुम मुझे मनोरंजन का माध्यम बनाओ, मुझे कोई आपत्ति नही लेकिन मेरे-तुम्हारे प्रेम का तो प्रश्न ही नहीं उठता, मैं तुम्हारी मित्रता के योग्य व्यक्ति नहीं हू··· मैं कोई निष्पाप किशोर नहीं, कठोरकर्मा व्यस्क हू···रोज़ी, तुम समझती क्यों नहीं कि अपराधियो और असुन्दरो का सामना करते-करते मेरी अतःचेतना भी कलुषित हो गई है···मैंने ऐसे घोर कर्म, प्रतिक्रिया या मूड मे ही सही, ऐसे घोर कर्म किए है कि उनकी छाप छुडा नही पाता और यह दागदार चेतना लेकर मैं तुम्हारे गुलाबी व्यक्तित्व को दूर से देखने के ही काबिल हूं, मैं तुम्हारे योग्य नही हूं रोज़ी, प्लीज, ट्राय टू अंडर-स्टेंड···समझने की कोशिश करो, रोज़ी।"

अब रोज़ी के विस्मित होने की बारी थी। अरे! यह तो पूरी सच्चाई से अपने तहखाने खोल रहा है। यह इतना चप्पू-गुप्पू व्यक्ति, इतने रहस्यमय सौंदर्य के सम्पर्क में आकर, एकदम खुल गया···तो सच्चाई तो है इसमे पर इसने उसे गहरे गाढ़ रखा है···बेचारा···च् च् च् च् यह तो बहुत बेचारा निकला। यह तो बुद्धू भी है, इन्नोसेंट, इग्नोरेंट भी है क्योंकि यह यही नहीं जानता कि सुन्दर और असुन्दर रहेंगे, सदैव, निरन्तर नित्य·· इसमे एक सन्त···एक सेंट बैठा हुआ लगता है और जब तक यह सेंट है···ओह, अब समझी, इसका भूत यही सन्त है जो इसे चैन नहीं लेने देता। इसी सन्त ने मुझे इसकी ओर खींचा है···।

"गोस्ट···तुम सन्त हो, गोस्ट···भूत नहीं···हरगिज नहीं। आय नो, मैं जान गई। जानने के लिए विवरण, डिटेल्स जरूरी नहीं, हृदय, यह हार्ट ··देखो, अब पहले से कैसा जोर से धडकने लगा है, यह रक्त की तीव्र गति···यह है, यह सब बता देती है तो मिस्टर तुम सेंट हो, हो न?···तुम मुझे अपने इस धड़कते दिल से अलग नहीं

कर सकते…मैं तुम्हें अपने अधिकार में नहीं करना चाहती, मेरा कोई तुम पर दावा नहीं है बल्कि एक प्रतियोगिता है हमारे बीच, प्रीति की प्रतियोगिता, आय कैन बी एफेक्शनेट, आय कैन एडोर यू इफ आय कान्ट लव यू…मैं स्नेह रख सकती हूं, मैं आपके प्रति प्रशंसा और भक्ति का भाव रख सकती हूं यदि मैं आपसे प्रेम नहीं कर सकती…।"

रोज़ी भूतनाथ के हृदय से चिपकी हुई खुशी में रोने लगी। भूतनाथ का हाल यह था कि वह विरोधी लहरों के भंवर में गोते खा रहा था। रोज़ी भूतनाथ से कहने लगी—"मैं भारतीयों को असभ्य, बुभुक्षित, वंचित, कुंठित और ब्लडी 'इंडियन' समझती थी। यह गलत तो नहीं है, माय गोस्ट ! पर इस देश में तुम जैसा आदमी कैसे पैदा हो गया, यह आश्चर्य है। भारतीय तो मौका पाते ही स्त्रियों पर टूट पड़ते हैं, दुष्ट अमरीकियों की तरह। इस देश को बेहतर व्यवहार करना चाहिए न ? यहां तो बड़ा ज्ञान है, साधना है। यह तो गुरुदेश है।"

"बस, यही अपराध-भाव मुझे दग्ध करता है। यह संगीन हमेशा मेरे मन को सालती रहती है। इसलिए मैं इस अनुभूति के आवेश में ऐसे कृत्य कर जाता हूं कि बाद में अफसोस होता है। रोज़ी, मेरी रूह पर इस तरह के धब्बे हैं जो धुल नहीं सकते तुम्हारे पाक साफ आंसुओं से। वे तो दुष्टों के रक्त से ही धुल सकते हैं। जब भी बदसूरती के लिए जिम्मेदार कोई गन्दा आदमी मरता है या मारा जाता है, मेरा दाग धुलने लगता है और कुछ न होने पर, यथास्थिति रहने पर, मेरा दाग बढ़ने लगता है। मैं इतना असामान्य हो जाता हूं यथास्थिति में, कि मैं कुछ भी कर सकता हूं।"

"बट यू…लेकिन तुम मेरे साथ तो सामान्य ही रहे…कुछ असामान्य, कुछ एबनार्मल, कहां किया तुमने ?"

रोज़ी इतनी मीठी हंसी हंस सकती है, भूतनाथ को विस्मय हुआ। वह मुस्कराता रहा मगर बोला नहीं।

"अब तुम यह सोच रहे हो कि क्या करूं ?"

"मैं सोच नहीं रहा अब। अब मैं यह महसूस कर रहा हूं कि…अब क्या करूं ?"

दोनों इतनी ज़ोर से खिलखिलाकर हंसे कि टिटहरी पंख फड़फड़ाकर टें टें करती उड़ी। वह डर गई। दूर वन में कहीं घमसान-सा हो रहा था। किसी बाघ या किसी अन्य जानवर ने शिकार किया होगा। बन्दरों की उछलकूद और उनकी खों खों सुनाई पड़ी…कोई अजगर घात लगा रहा होगा किसी बंदर पर या किसी पक्षी के नीड़ में अंडों के लोभ में कोई सर्प सरसराया होगा। भूतनाथ ने सोचा, जंगल की भयंकरता भी क्या चीज़ है और फिर भी कितनी भोली। जीव ही जीव का भोजन है। कोई बच रहा है, कोई खा रहा है, कोई घात में है, कोई भाग रहा है…लेकिन वे कितने सरल प्राणी हैं…मनुष्यों से तो भले ही हैं। उसने हृदय से लगी रोज़ी का कंधा दबाया और उसके सिर को सूंघा। कितनी प्रिय है यह रोज़ी !

"…रोज़ी क्या यहीं सोने का विचार है तुम्हारा ?"

"काश, ऐसा हो ही…तुम सोचो, मैं सोती हूं।"

"लेकिन, तुम्हारे वे…बुलडाग क्या सोच रहे होंगे ? वे मिस्टर शिफ्ट् और मिस्टर स्टेन…?"

"…ओह माई सेंट…मैं तो भूल ही गई…मिस्टर गास्ट, मुझे एक-दो बातें इस बेंडिट मिस कैरी डकैतिन के बारे में बता दो। उन दोनों ने इसी शर्त पर…इसी उम्मीद

से मुझे आपके पास आने दिया था कि मैं आपसे कुछ न कुछ निकाल सकूंगी।"

"···ओह। तो यह रहस्य था···लेकिन तुम तो अपने को ही भूल गईं।"

"वट···लेकिन मुझे इसका कोई दुःख नहीं है, मैं तो बहुत खुश हूं, आय एम वेरी हैपी टुडे।"

"मिस रोज़ी, तुम क्वांरी से मिलना चाहती हो?"

"ओह। यह आनन्ददायक होगा, आश्चर्यजनक भी! इट विल बी अ ग्रेट प्लेज़र।"

"लेकिन आपको, तुम्हें बुरा भी लग सकता है। वह बहुत कुशल है···कहीं तुम्हें मेरे साथ देखकर गोली न मार दे।"

"व्हाय? क्यों, क्या वह मुझसे ईर्ष्या करती है···क्या वह तुमसे प्रेम करती है?"

"···ऐसा है कि वह मुझे भाई मानने लगी है और हिन्दुस्तानी औरत है न सो वह···।"

"व्हाट डू यू मीन?·· तुम्हारा मतलब है कि वह यह नहीं चाहेगी कि उसका भाई एक विदेशी औरत से प्रेम करे?"

"एक्जैक्टली, यही बात है, यकीनन।"

रोज़ी हंसने लगी और भूतनाथ की पसलियों में हल्की-हल्की गुदगुदाहट करने लगी।

"सो, यू एण्ड योर ब्लडी सिस्टर···वाह! क्या बहिन बनाई है तुमने···वैसे ठीक ही है, गोस्ट की सिस्टर बैंडिट-भूत की बहिन डकैतिन ही होगी क्योंकि वह भूतों की आबादी बढ़ाती है।"

रोज़ी हंसती रही और भूतनाथ का मज़ाक बनाती कि उसने एक जल्लाद औरत को बहिन कैसे मान लिया?

यह बातें इतनी तल्लीनता से हो रही थीं कि कब पीछे से पेड़ की आड़ लेकर क्वांरी अपने कुछ बागियों के साथ आकर खड़ी होकर उनका वार्तालाप सुनने लगी, यह दोनों को पता ही नहीं चला। जब बातचीत क्वांरी पर आ गई और रोज़ी ने भूतनाथ का मज़ाक बनाया तो क्वांरी बर्दाश्त न कर सकी और उसने उसे डराने के लिए बंदूक ताने हुए बागियों की एक लघु टोली के साथ अचानक प्रवेश किया। पैरों की आहट और पत्तों पर छप् छप् के साथ, दोनों ने मुड़कर देखा तो सन्न रह गए। सामने अंधेरे में चार-पांच छायाएं बंदूक की नली ताने उन्हें घूर रही थीं।

"हाथ ऊपर करो!" बागियों में से कोई चिल्लाया।

दोनों ने हाथ ऊपर कर लिए और खड़े हो गए।

क्वांरी भूतनाथ को सचमुच डरा हुआ जानकर हंसने लगी, हः हः हः।

"भोला भाई। आप इस···इस गोरी चमड़ी पर रीझ गए। पूछो इससे कि इसके साथ क्या बर्ताव किया जाए?"

"फुलवा। यह मिस रोज़ी सचमुच गुलाब है। वह निर्दोष है···वह···।"

"भोला भाई। तुम चुप रहो, मैं इसे देखती हूं। यह मुझे डाकू कह रही थी और इसने मेरे भोले भाई पर डोरे डाले···यह मुझे मेरे भाई से भी अलग करना चाहती है?"

रोज़ी ने भयभीत दृष्टि से भूतनाथ की ओर देखा। बंदूक की नली अब रोज़ी की ओर थी। भूतनाथ अंग्रेज़ी में फुसफुसाया, "डोन्ट बी अफरेड, दिस इज़ अ फन।"

"क्या कहा भोला भाई तुमने इस रांड़ से?"

"यह कि वह फुलवा से माफी मांगे कि उसने नाजानकारी में उसे रानी न कहकर डाकू क्यों कहा ?"

"ओ क्वीन आफ'''डिको'''।"

"नो नो'''रिबैल्स'''। आय एम सॉरी।" रोज़ी ने कहा।

"यह कहती है कि विद्रोहियों की रानी, मैं माफी मांगती हूं। मैं जानती नहीं थी।"

बंदूक की नलियां नीचे हो गई मगर क्वारी का क्रोध पूरी तरह शांत नहीं हुआ था।

"तूने मेरे भाई पर डोरे क्यों डाले ?"

अनुवाद होने पर रोज़ी को हंसी आ गई और उसने शरारतन कहा कि उस पर आपके भाई ने डोरे डाले हैं'''मैंने नहीं—

"हि लाइक्स मी, मिस कैरी। यह पसंद करता है मुझे। यह मेरा मित्र बनना चाहता है। मैंने उसकी रिक्वैस्ट, उसकी प्रार्थना पर उसे मित्र बना लिया है, बस'''और कुछ भी तो नहीं है।"

"और कुछ भी नहीं है ?"—क्वांरी ने उसे चिढ़ाया और चिढ़कर बोली—"इस रांड पर बलात्कार के लिए अट्ठारह तगड़े बागियों को यहीं लाओ, अभी !"

दो बागी डाकुओं की खोह की तरफ सरपटे। क्वांरी तड़पी—"जल्दी जाना, समझे।"

दोनों चले गए। अब भूतनाथ घबराया। क्वांरी कुछ भी कर सकती है। उसने आहत दृष्टि से उसकी ओर देखा—"बहुत ममता है इस मरी पर ? क्यों ? यह बंदरिया इतनी प्यारी हो गई कि वह मेरी बुराई करती रही और तुम उसे सुनते रहे'''तमाचा क्यों नहीं जड़ दिया उसके गोरे गाल पर ?"

"तो भी फुलवा। तुम यहां भीड मत बुलाओ। यह बात इस देश के गौरव के खिलाफ होगी ''ये विदेशी क्या कहेंगे ?"

"अट्ठारह-अट्ठारह जंगली जानवरों की शिकार औरत का कोई मुल्क नहीं होता—भोला भाई ! जब मेरे ऊपर बलात्कार हुआ, तब देश कहां था ? मैं देश नहीं जानती, सभ्यता नहीं जानती, मैं सिर्फ उन अट्ठारह नगे जानवरों के नीचे एक तड़पती औरत—क्वारी को जानती हूं।"

क्वांरी ने इशारे से उन दो संदेशवाहकों को खोह की तरफ जाने से रोक दिया। अनुवाद सुनकर रोज़ी की समझ में आ गया कि क्वांरी की निर्दयता का कारण क्या है पर फिर भी निष्ठुरता की हद होनी चाहिए। रोज़ी ने कहना शुरू किया। उसके स्वर मे दुःख था।

"माय क्वीन आफ रिबैल्स, मिस कैरी, मैं आपका दुःख, आपका क्रोध समझती हूं।"

"नहीं, तू कुछ नहीं समझती। तू अपने लोगों की अच्छाइयों और धन-दौलत से सुरक्षित है। तुझे मैं बताती हू कि औरत अपना घर-द्वार छोड़कर बागी कैसे बनती है'''कालिया, इसे यहीं पटक दे और इसे मजा चखा, चल, बढ़ आगे, कपड़े उतार, चल।"

कालिया की तरफ क्वारी ने बंदूक तान ली। वह घबराकर कपड़े उतारने लगा। रोज़ी का चेहरा गिर गया और वह डरकर भूतनाथ के पीछे छुप गई। क्वारी ने वहशी ठहाका लगाया तो कालिया इस आशा से रुक गया, शायद यह चुड़ैल अपना निर्णय बदल

दे। भूतनाथ जानता था कि क्वारी रोजी को सबक सिखाना चाहती है पर मेरे रहते वह कोई बर्बर व्यवहार नहीं करेगी। उसने अंग्रेज़ी में रोज़ी से कहा कि वह आगे बढ़कर क्वारी को पटाए। रोज़ी आतंकित थी पर कोई और उपाय नहीं था। वह सिर झुकाए आगे जाकर क्वारी के बिल्कुल पास जाकर रुकी और पैरों से बालू खरोंचने लगी। उसे पश्चात्ताप के हाल में देखकर क्वारी ने फिर एक कहकहा लगाया और बंदूक नीचे कर रोज़ी का सिर ऊंचा कर, उसकी छवि निहारने लगी—"भोला भाई, अंगरेजी में सुन्दर को क्या कहते हैं ?"

"ब्यूटीफुल, चार्मिंग।"

"ओह रोज़ी, तू तो सचमुच बूटीफुल है, चारमिंग भी, वाह ! भैया, क्या सुन्दर भाभी ढूंढी है ···रोज़ी···तू हमारे भोला को धोखा तो न देगी ? बोल, नहीं तो तेरी···।"

अब रोज़ी की जान में जान आई। क्वांरी के बूटीफूल उच्चारण पर वह मुस्कुराई, बोली—"क्वीन मिस कैरो, मैं तो चाहती हू पर तुम्हारा भाई, भोला नहीं भूत है, यह मुझे नहीं चाहता, सिर्फ मित्र है, फ्रेण्ड, बस।"

"वाह ! औरत मित्र होगी तो विवाह भी होगा। भला स्त्री भी पुरुष की मित्र हो सकती है क्या ?"

"अब रहने दो, फुलवा। बेचारी को तुमने बहुत धमकाया है। अब वह तुम्हारे क्रोध का कारण समझ गई है। अब जाने दो।"

"नहीं, अब नहीं जाने दूंगी। बोल···रोज़ी, तू विवाह करेगी मेरे भोला से या यह दोस्ती ही करके भाग लेगी ?"

"आप इन्हीं से पूछिए, मैं तो तैयार हू।"

वहां एकत्र सब हंसने लगे। क्वारी ने कहा—"चलो सब खोह में। उन अमरीकियों को भी बुला लो। आज डिनर इस खुशी में कि रोज़ी भाभी बनने को तैयार है।"

सबमें विनोद का ज्वार आ गया। बंदूकें कंधों पर पहुंच गईं। क्वांरी ने रोज़ी की बगल में हाथ डालकर उसे खोह की तरफ खींचा, भूतनाथ बगल में प्रसन्न मन चला। कालिया अमरीकियों को बुलाने लपका। सोबरनसिंह ने क्वारी के शानदार रूप को देखकर मूछों पर ताव दिया।

सब क्वांरी की कन्दरा की ओर बढ़ने लगे।

14

जिला मैनपुरी के भोगाव कस्बे से कुछ मील दूर शुद्ध देहात में मानपुरा गांव है। मानपुरा में ठाकुरों की जमींदारी रही है। अभी भी खूब खुदकाश्त है और ठाकुरों में प्रमुख बानसिंह ने रुपए के बल पर गरजमन्द लोगों की जमीनें खरीद ली है। उत्तर प्रदेश में भूमि अधिक नहीं रखी जा सकती। इसलिए बानसिंह ने भूमि के टुकड़ों को 'मसनूई नामों' से ले रखा है, कोई टुकड़ा दूर के सम्बन्धी के नाम है, कोई व्यवहारी के नाम है, कोई बानसिंह के नौकर रग्घू के नाम है, एक आध तो ठाकुर के कुत्ते के नाम भी है···

किसकी मजाल है जो उनकी बेनामी जमीन की जांच करे और उस पर सरकारी कब्जा कराए।

राघव हरिजन है, जाति का धानुक। रग्घू के परबाबा, बाबा, पिता, सपरिवार ठाकुरों की सेवा मे रहे हैं, इसलिए जाति-बिरादरी में उनकी औरों से अधिक इज्जत रही है। वे ठाकुर के घर से पालित-पोषित हुए हैं और सारा परिवार उन्ही का काम करता है। छोटे बच्चे ठाकुर के पशु चराते थे, बड़े खेती की जुताई-निराई-खुदाई-रखवाली और औरतें घर का गोबर-पानी-सफाई-जानवरों की सानी-चारा-कटिया-कटाई। ठाकुर के घर को रग्घू के परबाबा ने जैसे अपना घर माना था, वैसे ही रग्घू के बाप ने भी माना।

ठाकुरों की खिदमत में रहने से रग्घू के बाबा ने न सुअर पाले, न और कोई गंदा काम किया। उसका घर उसकी जाति के और लोगों की तरह कच्चा है पर मजबूत है, कुछ बड़ा है और उसके बाहर एक छोटा-सा चबूतरा है। चबूतरे पर एक बैठक भी है, उसके आगे बड़ा-सा छप्पर पड़ा रहता है क्योंकि फूस और बांस ठाकुर के यहां से मिलते रहे हैं। अब बास की जगह अरहर की खांड़ से छावनी होती है और फूंस तो ठाकुर के झाबर में बहुत है।

रग्घू का बाप परमा धानुक बूढ़ा हो गया है। लेकिन अभी भी ठाकुर के खेतों में खटता रहता है। उसे लोग भगत कहते हैं। वह भजन करता है और नहाता है जबकि पहले धानुक कभी-कभी ही नहाते थे। अब इधर सब नहाने लगे है, उन्होने अपनी कुइया खोद ली है। पहले तो ठाकुरों के कुएं से पानी मांगना पड़ता था। घड़ा लिए बैठे रहो घंटों। कोई पानी डाल दे तो ले आओ, नही तो चिरौरी करो और गालियां सहो।

ठाकुर बानसिंह कभी आन-बान के ठाकुर थे मगर अब सिधा गए हैं, सीधे हो गए हैं। अब वह मारपीट नहीं करते, गाली-गलौज से ही काम चला लेते हैं। अब युग बदल रहा है। यह वोट का जमाना है। अब गांव में हर वोट की कद्र है। सरकार अल्पसंख्यकों और हरिजनों को रियायतें दे रही है। उन्हीं के वोट से तो सरकार बनती है।

धानुकों के बीस-पच्चीस घर गांव के एक मुहल्ले मे हैं, कुछ तो झपड़े ही है, जो कच्ची दीवालों पर रखे हुए है, कुछ कच्ची मिट्टी के है, जिन पर छतें भी हैं। रग्घू का घर सबसे ठीक-ठाक है यों वह भी साधारण ही है। रग्घू के अलावा कई धानुको के घर में सुअर पाले जाते हैं, इसलिए उनके बाड़े भी घरों के आगे-पीछे बने हुए हैं। उनसे गंदगी और दुर्गन्ध का वहां आलम रहता है लेकिन रग्घू के घर वालों ने ठाकुरों की दाब से, अपने घर के आगे सुअरों का न बाड़ा बनने दिया, न और कोई गन्दगी रहने दी। उसके साफ चबूतरे पर एक-दो चारपाइयां भी पड़ी रहती हैं, नीम की छाया में या छप्पर के नीचे। जब ठाकुर निकलते है तो सब धानुक उठकर खड़े हो जाते है। कोई आता है सो उसे रग्घू के चबूतरे पर चारपाइयों पर बिठाया जाता है। ठाकुर तो नही आते पर ठाकुर के घर के अन्य जाति के कमकर और कभी-कभी ठाकुर के बच्चे, रग्घू की मां, बाप या रग्घू को आवाज देने आते हैं। अब नई फिजा है, सो कभी-कभी ठाकुरों के पढ़े-लिखे बालक रग्घू के चबूतरे पर चारपाई पर बैठ भी जाते हैं पर ठाकुर और ठकुराइन उन पर नाक-भौ सिकोडते हैं कि उन्हें कमीनों के दरवाजे पर बैठना नही चाहिए।

रग्घू को गांव के स्कूल में पढ़ाया गया है। सफाई सिखायी गयी है। वह मिडिल स्कूल में भी मिडिल तक पढ़ा है। इससे उसको घुटन्ना ही नही, पतलून-कमीज पहनना भी आ गया है। वह नहाकर रोज बाल काढ़ता है और धोती-कुरता या कभी पतलून-

बुशर्ट भी पहन लेता है। उसकी काली आंखों में पढ़ाई की चमक है। इतनी पढ़ाई ही गजब है किसी धानुक के लिए। वह तो हाईस्कूल पास कर नौकरी करना चाहता है।

लेकिन छुट्टियों मे जब राघव घर आता है तो उसे भी ठाकुर का काम करना पड़ता है। ठाकुर भला है, समझदार है, इससे वह रग्घू से गन्दा काम नही कराता, उसे भारी काम भी नही दिया जाता। वह मजूरों की निगरानी करता है, देखभाल करता है, रखवाली करता है और दौड़भाग का काम भी उसे सौंप दिया जाता है। भोगाव से ठाकुर की खेती के लिए औजार लाने से लेकर वह बाल-बच्चों के लिए दवादारू भी लाता है। ठाकुर के नशे-पानी, चूना-तम्बाकू मे लेकर ब्लाक जाकर बी. डी. ओ. के कार्यालय से बीज, खाद और चीनी, मिट्टी का तेल वगैरह लाने तक का दायित्व उसी का है। पढाई के सत्र मे राघव भोगांव चला जाता है। छुट्टियों मे ठाकुर के घर उसकी बड़ी पूछ होती है और जब तक वह गाव मे रहता है, कभी पैदल, कभी साइकिल से, कभी ठाकुर की छोटी घोड़ी से वह लगातार दौड़ता रहता है।

जैसे-जैसे वह पढता जाता है, वैसे-वैसे वह रघुआ से रग्घू और रग्घू से राघव और कभी-कभी तो गरज या लाड़ मे राघवचन्द्र भी हो जाता है। मिडिल स्कूल में उसका नाम राघवचन्द्र धानुष्क लिखा था और उसकी फीस माफ थी। पढ़ने मे ज़हीन होने से उसे वज़ीफा भी मिलता था।

मिडिल पास कर राघव धानुष्क भोगाव के राजकीय हायर सैकण्डरी स्कूल में दाखिल हुआ। मिडिल मे द्वितीय भाषा और अंग्रेज़ी रहने से अब उसकी बोलचाल मे अंग्रेजी के शब्द आने लगे है और वह अंग्रेज़ी कट वालों की लटें फेंकता हुआ जब बूट-पतलून और कोट-कमीज मे अकड़कर चलता है तो लोग देखते रह जाते है। परमा धानुक तो तिनका तोड़ने लगता है, थूकने लगता है कि उसके भविष्य के राघवचन्द्र को नज़र न लग जाए। अब राघव दसवीं कक्षा मे है।

अब ठाकुर भी उसे कभी रघुआ से राघव कह देते हैं और ठकुराइन तो उसको लाड़ लड़ाती है—"अरे राघव ! तू तो साहब हो गया।"

आश्चर्य है कि राघव, परमा और उसके अन्य घर वालों जैसा काला नहीं है। उसका रंग कुछ गेहुआ है और नाक, आख, माथा और होठों की काट नीची जातिवालों जैसी नहीं है। उसके होठ पतले हैं जबकि और धानुकों के होठ मोटे और काट-छाट भद्दी है। राघव की मां का रंग काला, परमा काला, तब यह रघुआ गेहुंआ रंग और इतना अच्छा रूप कहा से पा गया, लोग पूछते-बतियाते हैं।

"अरे यार ! रहे वही चुगत के चुगत'''आखिर तो भोगाव के पास के हो न''' यह जो रघुआ है न, यह ठाकुरों के बीज से जन्मा है, तभी इतना रूप पा गया है।" एक गाव वाले ने कहा।

"किस ठाकुर के ?" दूसरा बोलता है।

"अरे, तुम नही जानते ? ऐसी कौन-सी धानुकिन है, जिसमे जरा-सी जान हो, और वह किसी ठाकुर-ब्राह्मण की रखैल न हो ?"

"अबे, अब ब्राह्मण भी जोड़ दिया। मैं पूछता हूं कि भोगाव का यह अमर है क्या ? तू यह बता न, किस ठाकुर का बीज है यह रघुआ ?"

"क्यों, ठाकुर बानसिंह के वंश मे वह जो ठाकुर सुघरसिंह हैं न, उन्ही से यह पैदा है।"

"सुघरसिंह तो यार, माला फेरता है।"

"अबे, अब न फेरता है। तिलक लगाता है, पूजा करता है पर यह पहले बड़ा रसिया रहा है···ठाकुर बानसिह के यहां ही तो यह सुधरसिंह उनके कारिन्दे की तरह काम करता था। वहीं रघुआ की मा से इसका इश्क हुआ होगा। उसकी काठी अभी भी अच्छी है। कभी जब इसमें ठसक थी, तब इसके देखने से काले सांप की आंखें चौंध जाती थीं।"

"नही ?"

"सच, सुना नहीं, नारी में जवानी हो, नखरा हो, आंख में खींच हो तो प्यारे! सो भुजग अन्धा हो जाता है। उसकी दृष्टि बंध जाती है और फण उठाए हुए झूमता रह जाता है और फिर थककर गिर जाता है।"

"तू बड़ा गप्पी है। तूने कभी देखा है या बिना पंखे की चिड़िया उड़ा रहा है ?"

"देखा नहीं है पर दिखा दूगा किसी दिन तुझे। रघुआ की बहिन छबीली को देखा है ?"

"आह! देखा है···ओह, क्या खीच है उसकी आंखों में। उसे देखकर आंखों में नूर बढ़ता है, सांप की तकदीर। आंखें खुल जाएं उसे ताक कर। भुजंग अंधे नही होते, आदमी अंधे होते है और जो अंधे हो सकते हैं, उन्हीं को भुजग कहा जाता है।"

"ठीक है, तू बड़ा ज्ञानी है पर तू खुद रघू के चबूतरे पर जाकर बैठता है और छबीली की एक झलक पाने के लिए बक ध्यान लगाए रहता है।"

"अबे हट। झूठे कही के···ऐसी वह कहां की अप्सरा है···उसकी हंसी जरूर मोह-छोह जगाती है।"

···ऐसा भी नही था कि रघू ने कभी ऐसी बातें सुनी न हों। उसने बचपन में ऐसे प्रवाद सुनकर माता-पिता से कहा भी पर वे कहते रहे कि ये जो ऊंची जाति के लोग हैं, ये जबान और दिल के बड़े गन्दे होते हैं। कहने से क्या होता है ? बकने दे उन्हें। एक कान सुन, दूसरे कान से निकाल दे। कही-सुनी बातों पर कभी ध्यान नही देना चाहिए। हम धानुक हैं, कमीन हैं, गरीब हैं, सो हमारी क्या औकात है ? हमारे बारे मे बड़ी जाति के लोग कुछ भी कह देते हैं मगर मजाल है कि कोई हमारी जाति-बिरादरी का कुछ कहे, कोई काछी-कोरी, चमार-धमार कह के देखे तो धानुकों के यहां हम भी अन्न खाते है। बीस-पच्चीस घर है, पचास लाठियां हैं···मार-मार कर भुरता बना दें···पर बड़े लोगों की बात का क्या बुरा मानना ? उन्हें अख्तियार है। उनके सामने हमारी क्या ताकत है ? उनकी बातो पर हम बिगड़ नही सकते। फिर मुंह पर बड़े भी नही कहते। पीछे बकते रहें।

रघू बाप की बातें सुनकर चुप हो जाया करता था।

तथापि रघुआ के मन में बचपन से ही बांस की फांस-सी चुभी रहती थी। वह लापरवाही और मस्ती मे, जितना ही इस प्रवाद को भुलाता था, उसके हृदय में यह कसक और बढ़ती थी। उसमे एक ग्लानि का भाव कुंडली मार कर बैठ गया था जो फुरसत पाते ही, स्वप्न और उधेड़बुन में उसे सताता था। राघव के अस्तित्व मे यह प्रवाद घुन की तरह लगा हुआ था जो उसे काटता रहता था।

शिक्षा मे थोड़ी सफलता मिलने और उसी के अनुसार ठाकुर के घर मे उसका महत्त्व बढ़ते जाने से उसके मन में संदेह बढ रहा था कि हो न हो, ठाकुर यह बात जानते हैं कि वह ठाकुर की औलाद है। शायद इसी से ठाकुरो के घरो मे उसको औरों से ज्यादा

अपनाया जाता है। वे उसके हाथ का पानी तो नही पीते। वह उनके वर्तन तक नही छू सकता पर उसने देखा है कि ठाकुरों के पढ़े-लिखे लड़के उसे भोगांव में साथ बिठाकर चाय पिलाते हैं, यहा तक कि होटलो में वह उनसे अलग ही सही पर साथ बैठकर खाना भी खा लेता है। गाव में वही लड़के उसे पास चारपाई पर नही बैठाते, उसे नीचे बैठना पडता है, फर्श की मेड पर या फर्श पर या ईंट या पत्थर पर। उसे अछूत और अस्पर्श्य मानकर भी उसके साथ मीठा और अपनत्व-भरा व्यवहार होता है जबकि धानुकों के और लड़कों को दुत्कारा जाता है।

'यह अन्तर इस कारण तो नही कि उसकी नसों में ठाकुरों का रक्त है ?'

राघव के अन्तर्मन मे इस विचार से उथल-पुथल मची रहती थी और वह छोटी से छोटी बात को इसी नुक्ते से देखता था कि कही उसे ठाकुर से पैदा मानकर ही तो उसको ममता नही दी जा रही है ? उसने यह भी लक्ष्य किया है कि बाप, इस प्रवाद पर गरजने-खीझने लगता है मगर मां कभी कुछ नही कहती, वह चित्र मे खिंची तस्वीर-सी सुननी रहती है, कभी एक भी शब्द नही कहती कि यह प्रचार गलत है या सही ? उसने तरह-तरह से, उसकी गोद में मचल-मचल कर पूछा है पर कभी उसने जवाब नही दिया, बस, वह अधर में ताकती रह जाती है जैसे वह बहरी हो और पुत्र के प्रश्नों को सुन ही न रही हो।

राघव ने यह भी देखा कि सुघरसिंह उसे विशेष स्नेह की दृष्टि से देखता है। उसकी नज़र से सदा आशीर्वाद और वरदान बरसते रहते है। उसे याद है कि वह बचपन में उसे पैसे भी दिया करता था, चुपचाप और इधर-उधर ताकता था कि कोई उसे देख तो नही रहा है। वह और किसी धानुक के बालक को पैसे क्यो नही देता और वह भी जब, वह स्वयं बडी खेतीपाती वाला नही है। वह हैसियत से छोटा ठाकुर है और ठाकुर बानसिंह की कारसाजी कर गुजर-बसर करता है। यह ठीक है कि उसने ठाकुर की माल-गुजारी वसूल करने मे हाथ मारे होगे। उसने ठाकुर की जमीन के पेड़ कटवा कर बेचे हैं। फसल उठने पर सैकडो बोरों-गठरियों मे से कुछ बोरे अनाज अपने घर भिजवाता रहा है। हिसाब-किताब मे घपले किए है उसने, ऐसा सभी कहते भी है। अब तो सुघर-सिंह अपनी खेती अलग कराता है, अब वह ठाकुर का कारिंदा नही है पर अभी भी बुलाने पर वह आता है और ठाकुर का बिगडा काम बनवाता है।

ठाकुर बानसिंह के लडके तो पढ़-लिखकर बड़ी नौकरी पाकर शहरो में रहते हैं, कभी-कभी आते हैं। दो लड़कियो के विवाह भी हो गए, एक बची है, यह सूर्यमुखी, सूरजमुखी। उसका विवाह होते ही ठाकुर और ठकुराइन भी शहर जा सकते है, जमीन-बमीन कौन कराएगा यहा''' यहा क्या रक्खा है, इस मानपुरा मे ? यहां रोज लड़ाई-दंदे-चोरी-डकैती होती है। ठाकुर बूढे हो गए है, ठकुराइन भी। वे यहां क्यों पड़े रहेंगे ? पुराना गाव का मोह है, पड़े है, पर कब तक ? सुघरसिंह से एक दिन ठाकुर कह भी रहे थे कि वह जमीन खरीद ले। उसी ने तो मैनेजरी की है इसकी। ठाकुर जानते है कि सुघरसिंह के पास पैसा होगा। वह भूमि खरीद सकता है पर शायद इसलिए नही लेता कि ठाकुर कहेंगे कि उन्ही का पैसा काटा है और उन्हीं की भूमि ले रहा है।

'हे ईश्वर, कब हाई स्कूल पास कर पाऊगा, कब नौकरी मिलेगी, कब इस कलंक से छुटकारा मिलेगा ? नौकरी मिल जाए तो बापू और मां को भी ठाकुर की गुलामी से मुक्त करा लूगा। बेचारे अभी भी रात-दिन ठाकुर की सेवा मे लगे रहते है। बापू कितने कमजोर हो गए हैं।'

"क्यों राघव, क्या सोच रहे हो? कब से देख रही हूं, तुम किसी ख्याल में डूबे हुए हो, क्या बात है? इतने उदास और बुझे-बुझे से क्यों हो?"

राघव को लगा कि उसके स्नायुमण्डल में कोई स्वर्गीय झंकार गूंज गई हो। उसने देखा सूरजमुखी, त्रिभंगी मुद्रा में, बड़े हावभाव के साथ खड़ी है और राघव को विस्मय से देख रही है। उसने रेशमी सारी पहनी हुई है और बालों में रिबन बांधे हैं। वह नहा-धोकर, ताजे फूल-सी गमक रही है। उसकी आंखों में विनोद और सरलता एक साथ धूप-छांह खेल रही है। राघव अचकचा कर रह गया। उसने उठकर सूरजमुखी को नमन् किया, कुछ सिर झुकाकर और उसे ताकता रह गया।

"क्यों, क्या हो गया, इस तरह खोए-खोए क्या हेर रहे हो?"

"कुछ नहीं, आप बड़े भैया के यहां से शहर से आ जाती हैं तो यहां कितना हरा-भरा सा लगने लगता है। आप यहीं रहा करें···आपने तो हाईस्कूल कर लिया होगा?"

"नहीं, मैं नवीं कक्षा में हूं, तुम तो दसवीं में हो। हम तुमसे पीछे हाईस्कूल पास करेंगे, राघव। तुम आगे हो।"

राघव का गर्व संतुष्ट हुआ—"अरे आपका क्या है? आप तो विवाह के बाद भी इम्तहान दे सकती है।"

"धत्, मैं विवाह नहीं करूंगी।"

"वाह! विवाह नहीं करेंगी? तो क्या करेंगी? पढ़ती-पढ़ती बूढ़ी हो जाएंगी, भोगाव की उस डाक्टरिनी की तरह, जो चश्मा लगाती है और पछताती हैं।"

"मैं एम. ए. करूंगी। मेरी अंग्रेजी कमजोर है। तुम मुझे पढ़ाया करो न।"

"मैं? मैं तो भोगाव में पढ़ता हूं। भला कहां भोगाव की अंग्रेजी और कहां आगरा की अंग्रेजी ''आपको मैं क्या पढ़ा सकता हूं?"

"नहीं, साथ पढ़ा करो तो अंग्रेजी इम्प्रूव होगी न···मुझे तो यह गिटपिच आती नहीं है, स्पेलिंग गलत हो जाते हैं।"

"आपने भी खूब कही, मैं साथ पढ़ूंगा! गांव के लोग मुझे मार डालेंगे···न, बाबा, न, आप बड़े लोग हैं।"

"तू क्या बात करता है भाई···तू तो भाई की तरह है, नहीं? क्या भाई-बहिन साथ बैठकर नहीं पढ़ते?"

"पढ़ते हैं·· पर यहां मानपुरा में?···सूरजमुखी, आप मानपुरा के जमींदार की 'डाटर' हैं और मैं रघुआ अछूत, अनटचेबिल···अब क्या धानुक-चमारों के लड़कों के साथ पढ़ेंगी आप?"

"क्यों, शहरों में तो सभी साथ पढ़ते हैं, साथ होटलों में खाते-पीते है, साथ सफर करते हैं···गांव में आते ही सब ठाकुर और धानुक, ऊंह! यह जो पुराने संस्कार हैं न, राघव, यह टूट रहे हैं, तू क्यों अपने को छोटा मानता है? तू तो पढ़ा-लिखा है न, नौकरी करेगा, साहब बनेगा। तब यही ठाकुर तुझे कुर्सी-चारपाई पर नहीं बिठाएंगे?"

"साहबों की जाति अलग होती है, मालकिन!"

"क्या···मुझसे भी मालकिन कहेगा, जा मैं तुझसे नहीं बोलती।"

और सूरजमुखी होंठ काटकर, भौंहें चढ़ाकर, मुंह थोड़ा मोड़कर खड़ी हो गई। राधा कृष्ण से रूठ गई होगी, वैसे ठिठ गई। विभोर होकर राघव हंसने लगा। उसकी बत्तीसी बहुत साफ थी। उसकी सफाई और सलीका देखकर सूरजमुखी उससे कहा करती थी बचपन में भी कि राघव धानुक नहीं, ठाकुर का बेटा लगता है। उसकी

भोलेपन में कही हुई बात सुनकर राघव को साफ जान पड़ता था कि उसकी हड्डी मे लगा हुआ कोड़ा उसे काट रहा है और हड्डी खिर-खिर कर गिर रही है। राघव बोला —"अच्छा, मैं अब आपको मालकिन नही कहूंगा। अच्छा, मैं आपको मिस सूरज-मुखी साहिबा कहा करू ?"

"अरे, इतना बड़ा नाम ?"

"तो मिस सूरजमुखी काफी रहेगा ?"

"हां, चलेगा, मिस सूरजमुखी सुनकर मेरी मा समझेंगी कि मैं कोई लाटसाहब की लड़की हू।"

"पर वह तो आप हैं ही, ठाकुर की बराबरी का कोई है आसपास ?"

"अच्छा रहने दे, तो आज आएगा, शाम को पढने-पढ़ाने ?"

"आ जाऊगा पर सावधान। मैं आपको रोक रहा हूं। अब आप जानें। मैं तो समझूगा कि ठाकुर का आर्डर है, मैं मना भी तो नहीं कर सकता न।"

"तब तू मत आना—तू अपने मन से क्या कुछ नही करता ?"

"मिस साहिबा, आप कैसी बातें कर रही है ? मैं ठाकुर का गुलाम हूं, बाप-दादाओ से हम ठाकुरो के चाकर है और चाकर हैं तो नाचाकर और ना नाचा तो ना चाकर ···।" राघव हसने लगा। उसने देखा, सूरजमुखी फिर रूठ गई। अरे यह तो बडी छुईमुई है, लड़ती जो है।

"अच्छा बाबा, मैं काम निबटा कर आऊगा। हरीकेन लालटेन भी ले आऊंगा··· अब तो प्लीज्ड हैं न ?"

सूरजमुखी प्रसन्न होकर सूरजमुखी फूल-सी खिल गई। वह किशोर आत्ममुग्धता में अपनी सारी की कोर दातो से काटती और सपनीली आखो मे आनन्द के बादल तैराती फुर्र हो गई। राघव को लगा, कोई अप्सरा आई हो, बात की हो और अतर्धान हो गई हो। वह सूनी दीवालो को उजबक-सा ताकता रह गया। उसकी हड्डी मे लगा कीडा कट-कट करने लगा। एक वेदना का कोयला दहकने लगा मन में, काश, वह नीच जाति का न होता।

जब वह चलने लगा तो ठाकुर ने रौब मगर स्नेह से भरी आवाज दी—"रघुआ···ए राघा···यह ससुरा राघव हो गया पढ-लिखकर···ए राघौ, इधर आ।"

राघव मुस्कराता, हाथ जोडता हुआ ठाकुर के पास सिर झुकाकर खड़ा हो गया। ठाकुर अपनी मोतियाबिन्दु से पीडित मिचमिची आंखों से उसे घूरते रहे, फिर बोले—"ए राघौ, तू तो जब रहा है। अगर तू हाई स्कूल पास हो गया तो तुझे इनाम में ऐसी चीज दूगा जो याद करेगा।"

"मैं पास हो जाऊंगा, मालिक···आपका बस आशीर्वाद चाहिए और कुछ नही।"

"कुछ नही ? क्यों ? तेरा हक है। तू नही जानता, कुछ जमीन तेरे नाम करा रखी है मैंने ?"

"मालिक, मैं क्या करूगा जमीन वमीन का ? आपका इकबाल कायम रहे, और क्या चाहिए ?"

"अरे ! तू तो बडा चतुर हो गया, इस तरह बोल न, जिस तरह तू भोगाव मे बोलता है, जरा अगरेजी सुना पट्ठे।"

"ओ गुड, माय गॉड फादर। गुड ! आय नीड योर ब्लेसिंग्स, सर।"

ठाकुर ठठाकर हंसे और राघव को पास बुलाकर उसे दस रुपये दिए—"जा, मिठाई खा और भोगांव में सिनेमा देख लेना, जा भगवान तेरा भला करे···बेचारे परमा का जीवन सफ़ल हो गया। उसी के पुन्यों का यह फल है···अब जा भाग जा।"

ठाकुर ने खुशी के आंसू पोंछे और राम-राम कहने लगे।

"ठाकुर—ठाकुर, आपने मोहममता दिखाई, सो तो ठीक किया लेकिन रघुआ के नाम जो बेनामी जमीन है, उसका जिकर क्यों कर दिया ?"

ठाकुर के पास बैठे मुंशी शीतलाप्रसाद ने नाक-भौं सिकोड़ी।

"क्यों, हमारे पास बहुत है। परमा के बापदादा मेरे घर मर खप गए। बेचारों को क्या हम कुछ न दें, क्या होगा इस सबका ? आखिर उन्हीं की सेवा से यह सब बच पाया है।"

"आप क्या बात करते हैं, हुजूर ? आप रघुआ के विवाह में दान दें, छबीलिया के विवाह का खर्चा भर दें, परमा का इलाज करा दें, यह सब ठीक है मगर जमीन तो जड़ है मालिक, उस पर आपका नहीं, आपके बच्चों का, उनके बच्चों का अधिकार है।"

"तुम मुंशी हो, शीतलाप्रसाद। तुम हिसाब-किताब बहुत लगाते हो। मुझे तो इतना सब सोचना ओछापन लगता है, क्या मेरे लड़के एतराज करेंगे ?"

"यकीनन करेंगे राजा बबुआ, क्यों नहीं करेंगे ? आप पूछ देखिएगा···बल्कि मैं पूछ चुका हूं ?"

"क्या—क्या तुम पूछ भी चुके ?"

"हां, ठाकुर साहब। मैं आपका सलाहकार जो हूं। हमारे बुजुर्ग भी आपकी खिदमत में रहे हैं। हम अदालत के आदमी हैं। कानूनी नुक्श कोई रह गया, कोई नुकसान हो गया आपकी जायदाद में तो आप मुझे दोख नहीं देंगे ?"

"क्या कहा राजा बबुआ ने ?"

"क्या कहा ? यह कहा बड़े और छोटे, दोनों राजा बाबू साहबान ने कि··· कि··कि आप पर मैं निगाह रखूं कि···कि आप अपनी शान दिखाने के लिए किसी को जायदाद न दे दें।"

ठाकुर को जैसे किसी बिच्छू ने डंक मार दी। वह बिलबिला कर रह गए। माला पर उनके हाथ तेजी से चलने लगे। राम-राम कहने लगे। फिर कुछ समय तक जोड़ने-गांठने के बाद उच्छ्वास छोड़ते बोले—

"शीतलाप्रसाद। पढ़-लिखकर साहब बन कर आदमी का दिल क्या सिकुड़ जाता है ?···इनको क्या कमी है ? बेनामी जमीन है हमारे पास बहुत-सी। पुराना दबदबा है, इसलिए बची हुई है। सरकार ले लेती तो ये राजा बबुए क्या कर लेते ? उसमें से थोड़ी-सी इस परमा को मिल जाए तो क्या पुन्य नहीं होगा ? इसके बाप-दादे···।"

"ठाकुर साहब, यह अधिकार का मामला है। आप जमीन-जायदाद के बारे में कुछ न सोचें। वह आपकी नहीं है, ठाकुर खानदान की है। आपने यदि परमा-राघव को जमीन दे दी तो···तो आपके लड़के हाथ से निकल जाएंगे···आप नए जमाने के लड़कों को नहीं समझते, मालिक।"

ठाकुर को जैसे बाण लग गया हो। मगर उनका बड़प्पन फिर उभरा, कहने लगे—"शीतला ! मैं वचन दे चुका हूं, कई बार कह चुका, मैं अभी जिन्दा हूं। मालिक मैं हूं। मैं जो चाहूं करूंगा। अगर इन लड़कों ने या खान्दानियों ने रोका तो मैं सारा

जायदाद दान कर दूंगा···अब तुम जाओ शीतला, तुम मुशी हो। खटपट कराना तुम्हारे खून में है···और राम-राम, क्या जमाना आ गया है···मैं देख लूंगा इस स्वार्थी संतान को···धिक्कार है!"

सूरजमुखी और राघव ने रात में भोजन के बाद ठाकुर की हवेली की बैठक के पास बने कक्ष में पढ़ाई शुरू की। इसी कक्ष और बैठक के बीच से सिंहद्वार से भीतर के आगन को रास्ता जाता था। कक्ष में एक मेज पर आमने-सामने बैठने से पढ़ने में आसानी भी थी और दोनों के बीच दूरी भी बनी हुई थी। मेज बड़ी थी, जिस पर दो लालटेनें जलने से प्रकाश भी पर्याप्त था। कक्ष के किवाड़ खुले हुए थे, इसलिए सिंहद्वार से घर के भीतर आने-जाने वाले नौकर-चाकर सूरजमुखी और राघव को पढ़ता हुआ देख रहे थे। सावधानी के लिए ठकुराइन ने कक्ष के बाहर दरवाजे के पास एक नौकर चतुरी नाई के लडके गिरधरिया को बैठा दिया था ताकि पानीपत्ता भी वह देता रहे और निगरानी भी रहे। बीच-बीच में ठकुराइन भी चक्कर लगा जाती थी।

यह क्रम कई दिन चला और सूरजमुखी और राघव ने मिलकर अंग्रेजी की किताबें पढ डाली, शब्दों के अर्थ लिख डाले, कुंजियों से अर्थ समझ लिया और वे हिन्दी से अंग्रेजी म अनुवाद और अंग्रेजी मे वाक्य बनाने और कुछ लिखने का अभ्यास करने लगे। वे हिन्दी मिली अंग्रेजी मे ही बात करते और हसते-खिलखिलाते। गिरधारी का भी मनोरंजन हो रहा था। वह उनकी भाषा तो नही समझ पाता पर वह सयाना था, नाई की चालाकी उसमे थी, सो वह यह टटोलता रहता था कि ये दोनो कोई ऐसी-वैसी बातें तो नही कर रहे हैं, कोई आपसी गुताड़े तो नही भिड़ा रहे हैं कही कुछ निजी खिचडी तो नही पक रही है दोनो मे? वह नित्यक्रम से ठकुरानी को रपट देता था कि सब ठीक है और विद्यार्थी लोग अपना काम कर रहे है, कोई गुपचुपी गडबड नही है।

सूरजमुखी को निगरानी अखरती थी और वह चिढती थी कि ये लोग हम पर शक क्यो करते हैं? हम क्या बावले है? हम पर इन बूढ़ो को विश्वास क्यो नही होता?

"मिस सूरजमुखी। तुम नही समझती कि तुम्हें किसी बडे घर की बहू बनना है। तुम स्वभाव से खेलपसन्द हो। तुम्हारे लिए सब खेल है। यह पढाई भी खेल है, मैं भी, इसलिए वह शक करते हैं। ठीक करते हैं।"

"अच्छा मिस्टर राघव, ओह, कैसे कहू। अभी हमने पढ़ा कि सारंगा और सदावृक्ष मे इतना आई मीन दे लव्ड ईच अदर सो मच कि पेड-पौधे, पशु-पक्षी भी उनका साथ देते थे और इधर हम है कि देखो, वह गौरेया रोज यहीं रहती है, मरी, कुछ मदद नहीं कर रही है।"

दोनों हसे मगर गिरधारी को देखकर राघव बोला, कि उसे अभी एक काम याद आ गया। वह घर जाएगा। दरअस्ल, वह सूरजमुखी का ध्यान बदलना चाहता था। वह बार-बार घूम-फिरकर सारंगा-सदावृक्ष के रोमास पर पहुच जाती थी। किसी ने सुन लिया तो भूचाल आ जाएगा। राघव सूरजमुखी के बार-बार आग्रह करने और न मानने पर आहत हो जाने पर भी नहीं रुका और किताबें छोड़कर चला गया। सूरजमुखी सन्न रह गई।

राघव घर के पास पहुचा तो उसे लगा कि मकान के पिछवाडे दो छायाए पास-पास खडी हैं। राघव का हृदय कापा, कहीं उसकी बहिन छबीलो तो किसी चक्कर मे नहीं है? उसने उन आपस मे तन्मय छायाओ को बिना चौकाए अपने को धरती पर

लिटा दिया और धीरे-धीरे बिना आवाज किए सरक-सरक कर सुनने की सीमा में पहुंचकर रुक गया। उसने देखा कि ठाकुर भूपसिंह का बदमाश लड़का सरूपसिंह, छबीली को पटा रहा है और वह अटं-मटं कर रही है, न तो हां भरती है, न जाती है। सरूप उसे अपनी ओर खींचता है, उसे रुपये दे रहा है पर न वह रुपये लेती है, न उसके घेराव से छूटने का संघर्ष करती है। उसके राजी न होने पर सरूपसिंह बोला,

"अरी तू बिना बात डर रही है। तेरा भाई तो सूरजमुखी से इश्क लड़ा रहा है और तू मना कर रही है। ले ये रुपये ले और एक मीठा दे दे। मैं तेरे लिए कपड़े-गहने लाऊंगा, और तेरे को लेकर बाहर चला जाऊंगा। वहां चैन से रहेंगे...तुझे पता ही है कि ग्वालियर के कारखाने में मेरे मामा नौकर हैं। मुझे और तुझे दोनों को नौकरी मिल जाएगी, हां, मौज रहेगी। ले ये रुपये रख ले और बस एक बार चूम लेने दे।"

जिस तरह बाघ पीछे हटकर उछलता है उसी तरह राघव, घुटनों के बल बैठकर, कुछ पीछे सरका और फिर पूरी ताकत से उसकी ओर पीठ किए सरूपसिंह पर जा पड़ा। सरूपा गिर पड़ा और राघव ने जो उसे मारना शुरू किया तो वह तभी रुका जब सरूपा की चीखों से धानुकों और अन्य लोगों का समूह वहां लाठियां ले-लेकर आ गया। राघव चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था कि ये ठाकुर हमारी बहू-बेटियों को रंडी-वेश्या समझते हैं। अब यह नहीं होगा। धानुक अगर इनकी बहू-बेटियों के साथ ऐसा करें तो इन्हें कैसा लगेगा? मार खाकर भी सरूपा कुछ ठाकुरों के आ जाने से उत्साहित होकर दहाड़ा—'यह साला सुअर पालने वाला धानुक रघुआ मुझसे खार खाए हुए है। इसने मुझे मारा है बेकसूर। मैं तो इधर से जा भर रहा था। मैंने इसकी बहिन से कुछ भी नहीं कहा। यह झूठ बोलता है...हाय, एक धानुक ने एक ठाकुर की पगड़ी उतार दी, हाय, मैं मर गया, इसने मारा है।"

"क्यों रे सुअरो? तुम्हारी यह हिम्मत कि रघुआ धानुक ठाकुर के लड़के पर हाथ उठाए?" किसी ठाकुर ने ललकारा।

"चाचा यह रघुआ, ठाकुर की राजकुमारी सूरजमुखी से आंखें लड़ा रहा है। यह साला जानवर, पढ़ाने के बहाने उसे भगा ले जाना चाहता है। मैंने इस पर व्यंग्य किया तो मुझे मारने लगा। छबीली की कहानी तो इसकी बनाई हुई है, यह नीच है, यह ठाकुरों की इज्जत से खेल रहा है।"

अब सब समाप्त हो गया था। ठाकुरों ने धानुकों पर लाठी छोड़ दी और जोर से जयकारा लगाया लेकिन धानुकों का मुहल्ला था। धानुक गाली और छबीलिया का अपमान नहीं सह सके। उन्होंने ठाकुरों को जवाब दिया। लट्ठ बजने लगे। धानुकों में कई तो लाठी बनैती का ही काम करते थे और पेशेवर लठैत थे, सो एक ही झपट में थोड़े से ठाकुर जमीन सूंघने लगे। कुछ के खोपड़े फट गए, कुछ के हाथ टूट गए।

यह सब एक जनून में हो गया मगर ठाकुरों के गिरते ही धानुक समझ गए कि अब कुशल नहीं है। अभी सारे ठाकुर बंदूक और फरसे लेकर चढ़ आएंगे और सब धानुक मारे जाएंगे। इसलिए गिरे हुए ठाकुरों की चिन्ता न कर शरीर से जितने मजबूत धानुक थे, वे सब राघव और छबीलिया को साथ ले कर जंगल की ओर भाग गए।

रात सन्नाटे ले रही थी और तारे चिता की राख के अंगारों की तरह चिलक रहे थे।

15

जो घटा, वह अघटनीय था पर नीची समझी जाने वाली जातियों के साथ जो होता आ रहा था और अभी भी जो हो रहा है, उसे देखते हुए यह होना ही था। पहले यह नहीं हो सकता था पर आजादी के बाद और कुछ हुआ हो या न हुआ हो, वोट की शक्ति का एक अहसास, सभी को हो गया था और नीची तथा मझोली जातियों-जमातों मे वोट बटते तो है पर कम बटते हैं। उनमे समूह एक साथ एक दल या नेता को वोट देता है। इसलिए हरिजनों मे जो मतपत्र की शक्ति है, उसे वह महसूस करते थे और उसी सीमा तक ऊंची जातियो की मनमानी या तो स्वतः कम हो जाती थी या टकराहट होने लगी थी।

ठाकुर बानसिंह दूरदर्शी भूमिपति थे। प्रजा उन्हें चाहती भी थी, बूढ़े भी हो गए थे, इसलिए वह अपने बडप्पन से काम लेते थे, बहुत हुआ तो सूखे बादल की तरह गरज कर शांत हो जाते थे। वह जानते थे कि सूरजमुखी का नाम उस सरूपा ने बिना बात उछाला है ताकि वह अपने कुकर्म को दबा सके और यह कि ठाकुरों की शान का सवाल बनाकर उसकी हरकत की सजा उसे न मिले। उनके भीतर का युधिष्ठिर जाग गया था और वह धानुकों पर हमले के विरोधी थे। सुरूपा के बाप से ठाकुर ने साफ कह दिया कि अपराध सरूपसिंह ने किया है और दण्ड भी उसे मिलना चाहिए। ठाकुरों ने बिना सही बात जाचे धानुको पर लाठिया छोड़ दी तो प्रतिक्रिया मे उन्होने सामना किया। आखिर छबीलिया के पास सरूपा गया क्यों? क्या धानुकों की कोई इज्जत नही है? वे जमाने लद गए जब ठाकुर प्रजा पर अत्याचार करते थे और वह बोलती नही थी।

ठाकुर ने यह भी समझाया कि अभी पुलिस आएगी और यहीं चौकी बनाकर रहेगी। सरकार हरिजनों का पक्ष लेगी। ठाकुर फंसे फिरेंगे। थाने मे पिटेंगे, जेल मे सडेंगे, जमानत नहीं होगी। घर और खेती उजड़ेंगे और हासिल कुछ न होगा। इसलिए न्याय, लोकव्यवहार और लाभहानि, सब पर सोचकर मैं यह कहूंगा कि मैं धानुको की लानत मलामत कर दूंगा पर और खून-खराबा नही होना चाहिए, नही तो वे गाव छोड़ देंगे। घायल ठाकुरो के इलाज के लिए वह रुपया देने को तैयार हैं पर तभी जब आगे झगड़ा न हो।

ठाकुर ने लठैत धानुकों के सरगना पंचमा धानुक को बुलाकर बहुत डांटा। वह पैरों पड गया और कहा कि अब कुछ नही होना है पर गलती सरूपा की थी।

घायल ठाकुरों का उपचार मनपुरी के सरकारी अस्पताल मे हुआ क्योकि धानुकों के विरुद्ध केस बनाने के लिए यह अस्पताल उपयुक्त था। सरकारी अस्पताल की प्रामाणिकता और ऊपर से घूस देकर डाक्टरों से घावों का विवरण ठाकुरो के पक्ष में प्राप्त किया जा सकता था। पुलिस मे पहली रपट (एफ. आई. आर.) में रघुआ, परमा, पचमा और अन्य सभी लठैतनुमा धानुकों के नाम थे। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया लेकिन पुलिस को असलियत का पता चल गया था और ऊपर का दबाव भी पडा कि यह मामला छोड़ दिया जाए। हरिजनों के नेता भी थाने पर धरना दिए बैठे थे कि उनकी बहू-बेटियों पर जुल्म हो रहा है। इलाके का थानेदार ब्राह्मण था। वह तटस्थ था और दोनों तरफ के दबावों मे कुछ तै नही कर पा रहा था। पहली रपट उसने ढीली कर दी थी इसलिए धानुक जमानत पर छोड़ दिए गए, साथ मे ठाकुर भी जमानत पर छूट गए।

थानेदार ने बलवा का केस बना दिया और एक सौ सात दफा लगाकर दोनों तरफ के दादानुमा व्यक्तियों को पकड़ लिया गया था।

मानपुरा में ऊपर से शांति छा गई थी पर भीतर ईंटों के पंजावे-सा गांव धधक रहा था।

भूपसिंह और उसके हरकती किशोर सरूपसिंह और उसके साथी घायलों की सेवा और मुकदमे का भार झेल रहे थे मगर जातीय अपमान से उनका खून खौल रहा था। भूपसिंह जानता था कि बलवा का केस बेकार है। बरसों खिंचेगा और दो तरफा सजाएं होंगी। तब ठाकुरों की शान क्या रहेगी? धानुकों और उनके हमदर्द अन्य हरिजनों को सबक सिखाए बिना ठाकुरों की नाक कट जाएगी।

भूपसिंह, बड़े ठाकुर बानसिंह के भूतपूर्व कारिन्दा ठाकुर सुधरसिंह को साथ लेकर रात में, गुलाबसिंह डकैत के पास गया जो मैनपुरी के चौहानों के खानदान का था। गुलाबसिंह और उसके चचेरे भाई हरपालसिंह चौहान ने गिरोह बना लिया था। मैनपुरी से लेकर एटा-कासगंज तक के बिगड़े क्षेत्र में गुलब्बा-हरपला की तूती बोलती थी और ठाकुर उनका साथ देते थे क्योंकि वे ठाकुरों पर डकैती नहीं डालते थे और किसी भी ठाकुर पर अन्य जातियों का दबाव होने पर उसके पक्ष में पहुंचकर मार-धाड़ कर आते थे। उनकी खूनी वारदातों से पुलिस तंग थी, खासकर अहीरों पर हमले अधिक होते थे। इसलिए अहीरों की तरफ से भी गिरोहबन्दी हो रही थी।

गुलब्बा-हरपला गिरोह ने भूपसिंह-सुधरसिंह की बातें सुनी और धानुकों की गुस्ताखी सुनकर गुलाबसिंह चौहान गरजने लगा।

"ठाकुर! हम चौहान ठाकुर हैं। हमने कन्नौज के जयचन्द को धूल चटाकर मैनपुरी में अपना राज्य कायम किया था। संयुक्ताहरण हमारे पुरखों ने ही किया था।"

"अच्छा?"—भूपसिंह ने डाकू को चढ़ाया।

"हां ठाकुर। संयुक्त जमीन का नाम था, जिस पर चौहानों का आज भी अधिकार है। यह बहुत उपजाऊ है। कभी इस पर कन्नौज के राठौड़ों का कब्जा हो जाता, कभी चौहानों का। इसलिए यह 'संयुक्ता' कहलाती थी। बाद में चौहान ही काबिज रहे इसलिए यह कथा बनी कि जयचंद की बेटी संयुक्ता का पृथ्वीराज चौहान ने हरण कर लिया। आज तक पुराने खातों में 'संयुक्ता' जमीन के इन्दराज हैं।"

"वाह! चौहान! चौहानों के समकक्ष कौन हुआ है? अब तो ठाकुर किसान रह गए हैं लेकिन जोर तो हमारा ही रहेगा। ठाकुर, इन धानुकों को ऐसा मजा चखाओ कि फिर कभी सिर न उठा सकें।" सुधरसिंह ने रद्दा कसा।

"वह छबीली क्या छबीली है या वह सरूपा यों ही धरम गंवा रहा था?"

"अरे ठाकुर। उसमें इतना नमक है, कि क्या बताएं। सरूपा उसे सहला रहा था पर उस साले रघुआ ने काम बिगाड़ दिया…वह तो ठाकुर आपके लायक है। वह चौदह वर्ष की है, एकदम अछूती, देखती है तो कान में खुजली-सी पड़ने लगती है और बोलती है तो दिल मछली की तरह छपाके भरता है। ठाकुर उस पर अनार पक रहे हैं और गुलाब खिल रहे हैं।"—भूपसिंह ने रंग जमाया।

"अच्छा?…आप तो पुराने पापी हैं ठाकुर सुधरसिंह? आप कुछ बताइए…हमने सुना है कि आपके ताल्लुक रघुआ की मां के साथ रहे हैं और रघुआ आपसे पैदा हुआ है…तब, छबीली भी तो आपकी लड़की हुई कि नहीं?"

सुधरसिंह झेंप गया। आतंकित होकर कहने लगा—

"ठाकुर! यह सच है कि रघुआ मेरे बीज से जन्मा है और मैं उसे प्यार भी करता हूं। यह भी सच है कि उस नाते से छबिलिया मेरी लड़की हुई···मैं यह भी कहता हूं कि आप उन दोनों पर चोट न करें। वे निर्दोष हैं। दरअसल पंचमा और उसके साथियों को पाठ पढ़ाया जाना है।"

"अगर छबीली को हम उठा लें तो आपको बुरा तो न लगेगा?"

"अब ठाकुर! मेरा लडका तो रघुआ है उसे दुःख होगा तो कुछ कसक हमें भी होगी ही मगर आप देख लें। मन आ जाए तो आप छबीली को उठा लाएं पर रघुआ से कुछ न कहें···वैसे अच्छा तो तभी रहे जब आप इन दोनों को बख्श ें।···आखिर छबीली धानुक की मामूली लड़की है और वह कोई अप्सरा नहीं है।"

"क्यो ठाकुर मूर्पसिह?"

"सरूपा छबिलिया पर पागल है। वह उसे सौंप दी जाए और हम आपके शौक के लिए, गिरोह के मज़े के लिए जो और अनेक हैं, उन्हें बता देंगे। छबिलिया को खराब करने से हमारे उस पागल सरूपा को भी दुःख होगा।"

"वाह ठाकुर! आप तो दोनों तरफ से बोलते हैं···छोड़िए, देखेंगे। तो अगली अमावस की रात होली खिलेगी। आप गिरोह के खर्च के लिए कितने रुपए लाए हैं?"

"पाच हजार तो पास हैं। पांच हम बाद मे भिजवा देंगे या आप जिसे कहें, उसे मैनपुरी में आपके घरवालों को दे दें?"

"आप दस हजार रुपए मैनपुरी में हमारे वश के मुरारीसिंह को दे आएं।"

"ठीक है, पाच क्या आप सात हजार, ये ले लीजिए। अमावस की रात हम आपकी प्रतीक्षा करेंगे···और क्या करना है?"

"पुलिस को फोडिए। उनमे जो ठाकुर हों, उन्हें साधिए, रुपए पैसे पिलाइए! बस, वे मौके से अलग रहें···नहीं तो वे भी मारे जाएंगे, हमारे आदमी भी मरेंगे, यह भय है।"

"ठीक है ठाकुर, पुलिस तटस्थ रहेगी।"

राघव जेल से जमानत पर छूटकर आया तो वह जैसे गंदे दलदल से गुजर कर आया हो। पुलिस ने उसे मारा भी था, इतना कि वह अचेत हो गया था लेकिन उसके पास भेद कुछ था ही नहीं। पुलिस चाहती थी कि वह सूरजमुखी के साथ अपना रोमांस स्वीकार कर ले पर जब कुछ था ही नहीं, तब वह स्वीकार क्या करता और अगर कुछ होता भी तो वह मर सकता था मगर जीभ पर सूरजमुखी का नाम नहीं ला सकता था। वह उसकी सारंगा थी, कल्पना की पूर्णता। सवेरे का स्वप्न, और उसकी आत्मा ने जो कुछ भी भव्य था, उसका भाजन। वह इस योग्य नहीं था कि वह उसका सदावृक्ष, उसका प्रेमी बनता पर वह अंतर्मन में उसकी शोभा, उसके ख्याल को तो बसा सकता था। सूरजमुखी को बताए बिना यदि उसके मन में वह फूल सी खिल गई है तो इसमें किसी का क्या बिगड़ता है? सूरजमुखी के बारम्बार संकेत करने पर भी उसने एक बार भी नहीं कहा कि वह उसे मीठी नजर से देखता है। यह कहते ही मैं छोटा, नाचीज हो जाता न, मेरी क्या हैसियत जो मैं ऐसा सोचूं? क्या अपनी आसक्ति से उसका भविष्य बिगाड़ दूं?

"सूरजमुखी! मैंने तो तुम्हें अलौकिक मानकर सिर्फ सपने मे देखी हुई समझा था। मेरी नजर में पवित्रता थी और है। मैं उसकी प्रतिष्ठा पर आच नहीं आने दूंगा··· मैं मानपुरा में अब क्या करूंगा?···छबीली? ए छबीली।"

तुषार से मारी घास की तरह छबीली भाई के सामने आई। वह न कुछ खाती थी, न पीती थी, बीमार सी हो गई थी। भगत परमा ने चारपाई पकड़ ली थी और सदा से मौन मां सबकी सेवा में व्यस्त थी। उसने ठाकुर के यहां जाना बन्द नहीं किया था यों उसे बिरादरी ने रोका था। उसने कहा तो कुछ नहीं पर हठ पर दृढ़ रही। उसने ठाकुर-ठकुराइन की बातें सुनी थीं और उसकी छटी इन्द्रिय ने भांप लिया था कि ठाकुर बानसिंह ही बचा सकते हैं, न पुलिस बचा सकती है, न नेता, न भगवान।

"ए छबीली, मेरी बहिन, तू कुछ खाती-पीती नहीं ? जा खा-पी और भोगांव के लिए तैयार हो जा। मैं इस गांव में नहीं रह सकता। आज ही जाना है। पढ़ाई वहीं करूंगा।"

छबीली रोती रही, बोली कुछ नहीं।

"क्यों, क्या तू भोगांव नहीं जाना चाहती ? यहीं इस नाबदान में सड़ना चाहती है ?"

"मैं बताती हूं।"—मां राघव के पास आई। वह राघव के पास आकर उसके सिर पर हाथ फेरती रही और छबीली को भीतर जाने का इशारा कर कहने लगी। आज मां का बांध टूट गया—

"बेटा। यह देह, तेरी देह, हम सबकी, ठाकुर के अन्न-जल से पली है। वह मारें, काटें-पीटें, कुछ भी करें, वह मालिक हैं। उन्होंने इस बार भी बचाया है। तेरी जमानत के रुपए ठाकुर ने दिए हैं। ठाकुर ने सूपसिंह का साथ नहीं दिया, न देंगे, तब इस हालत में उन्हें छोड़कर जाना क्या पाप नहीं होगा ?…और बिरादरी के लोगों पर तुम्हारी नादानी से क्या बीती है, यह जानकर भी तू भाग जाना चाहता है ?"

"तू क्या चाहती है, मैं उस सरूपा को छबीली पर जबरदस्ती करने देता ?"

"पर तू समझा सकता था, उस पर चढ़ क्यों बैठा ? ठाकुरों से बराबरी करेगा ? तू बड़े ठाकुर से सिकायत कर सकता था पर पढ़-लिखकर तेरा दिमाग उलट गया है। तूने धानुकों को कहीं का नहीं रखा ? तू नहीं जानता, क्या होने जा रहा है।"

"अचरज है। तू क्या चाहती है, हम अपनी बहू-बेटियों को उन्हें अर्पित करते रहें ? हम क्या जानवर हैं ?"

"नीच जाति का निरबाह कैसे हो, तू ही बता ? उन्हीं का खेत, उन्हीं की बारी, कहां जाएं ? टट्टी कहां जाएं, सुअर कहां चरें ? मजूरी कहां मिले ? घर कहां बनाएं, जलाने की लकड़ी कहां से लाएं, सादी-बिवाह, मौत-मरजाद में कर्जा कौन दे…तू यह सब क्यों सोचता…बिरादरी में कितने लोग हैं, घर हैं, घरवाली हैं, इनका जीव कैसे बचेगा, पालन कैसे होगा ? यह धन, धरती, सब उनका ही तो है।"

राघव मां के यथार्थ ज्ञान पर चकित था। मां में भी स्वाभिमान की चेतना थी पर सवाल तो जीने और पनपने का था। जिएं या मरें, यह प्रश्न है। शायद, मां ही ठीक कहती है…लेकिन कब तक ऐसे जिएं…ऐसे जीने से क्या फायदा ? क्या सार्थकता है ऐसे जीवन से ? एक बार सामना हो जाए, बलिदान करें हम अपने को तो जो बाद में बचेंगे, वे तो मान-मर्यादा से जिएंगे…फिर कौन उनकी बेटियों को छेड़ सकेगा और अब सार्वजनिक धरती पर अधिकार नहीं रहा। पंचायत है, पुलिस है, नेता है, पार्टी है।

"मां, मैं तुम्हारी तरह नहीं जीना चाहता। मैं मरना बेहतर समझता हूं। ठाकुरों से टकराना ही होगा, चाहे कुछ हो जाए। हमारे भी मददगार हैं। हम अकेले नहीं हैं।"

"तूने यह सोचा कि यह कलमुही छबिलिया घर के पिछवाड़े उसके बुलाने पर गई क्यों थी ?"

राघव चकित हो गया। यह बात उसके मन में आई ही नही...तो क्या छबीली, सरूपा के सामने झुक रही थी अपने आप ?

"उसे झांसा देकर बुलाया होगा, और क्या ?"

"झांसा ? कैसा झांसा, कैसा बहाना ? बहाना बनाकर आदमी घर के सामने बुलाता है ? बहाना बनाकर कोई किसी को, बिना उसकी मरजी के, घर के पिछवाड़े अकेले मे बुला सकता है ?...तू तो वही बिफर गया...अरे, उन्हें अलग कर घर आता। छबीली से पूछता तब उलाहना देता...तो यह तूफान क्यो आता ?"

राघव खामोश रह गया। उसे बहिन पर बहुत गुस्सा आया। उसने सोचा, शायद हम इसी योग्य हैं। हमारे साथ यही होगा। कोई क्या कर सकता है ? अपना दाम खोटा है तो परखने वाला क्या कर लेगा ? अगर छबीली के मन में कमजोरी नही थी तो सरूपा की क्या ताकत जो वह जबरदस्ती कर लेता ? बड़े ठाकुर जब तक हैं तब तक इन छुटभइयो मे कोई बलात्कार नही कर सकता। गदर मच जाएगा ऐसा करने पर... तो क्या हल्ला और हमला बोलने मे मेरी भूल थी ?

अजीब गोरखधधा है यह गाव, इसके हादसे और इसके हालात। अब क्या किया जाए ? हम सब जाकर छुटभइया ठकुट्ठों के पैरों पड़ें ?...छिः छिः मैं मर सकता हूं पर मैं यह कभी नही कर सकता।

"मां, छबीली नासमझ है। छोटी जाति की स्त्रियां लोभ में भी आ जाती हैं। गरीबी जो न कराए, थोड़ा है। पर इसका मतलब यह नही कि सरूपा जैसे लोग उसका फायदा उठाएं। सरूपा छबीली की कमज़ोरी को इस्तेमाल कर रहा था, इसलिए वह दोषी है, भोली छबीली नही।"

"छबिलिया भोली नही है बेटा और तू भी भोला कहा है ?"

"क्यों, मैंने किसकी लड़की पर डोरे डाले हैं ?"

"देख, तुझे मैंने पेट मे ढोया है। तेरे मन मे जो उपजता है, मैं जान जाती हूं।"

"तू क्या जानती है ?"

"तेरे मन में सूरजमुखी बसी है।"

"क्या ? क्या कहा ?"

"तू नर्रा मत रघू, चिल्ला मती।"

राघव की अजीब हालत हो गई। वह मा के सम्मुख अपना अंतर्मन छिपाए या प्रकट कर दे ? उसने किंकर्त्तव्यमूढता मे आखें मीच ली। मां उसके सिर और पीठ पर हाथ फेरने लगी। सूरजमुखी का फूल अपनी भव्यता से उसके मन की बगिया मे खिला हुआ था। उसमें इतनी प्रफुल्लता थी कि राघव उसे देखता रह गया। वह जितना ही चाहता कि उसके मन मे सूरजमुखी की छवि न आए, उतनी ही शीघ्रता से वह दिव्य-पुष्प उसकी आत्मा मे हलकी हवा मे हिलने-डुलने लगता था और राघव का जिधर मुख होता, उधर घूमता चला जाता था।

राघव ने सिर को झटका दिया। अचानक उसके ध्यान में आया कि वह मां से अपनी पैदायश का रहस्य इस क्षण पूछ सकता है। वह सम्हल गया।

"मां, यदि तू असलियत बता दे तो मैं भी सत्य कह दूगा। तुझे मेरी सौगध है, बता, क्या मैं मुख्तरसिंह का...।"

मां ने राघव के मुंह पर हाथ रख दिया। मगर वह बोली नहीं। दोनों उसी क्षण में स्थगित रह गए।

"तू नही बताती, मत बता, मैं भी नही बताता···और बताने को है भी क्या, सूरजमुखी के साथ खेल-खेलकर मैं बड़ा हुआ हूं। वह मेरे मन में बसी है तो क्या··· लेकिन मैं कोई अनुचित हरकत तो नही कर सकता न, फिर मन में क्या है, इससे क्या फर्क पड़ता है?"

"बेटा! यह मन है न, यह बड़ा पापी है। इसी से पुन्य है, इसी से पाप। जब मन मे है तो उसका सुख-दुःख भी भुगतना पड़ता है।"

"साफ है तेरे मौन से, यह साफ है कि मैं ठाकुर···का···।"

मा ने फिर बेटे के मुंह को बन्द कर दिया।

"अब सोच कि ठाकुरों का खून बहाएगा या माफी मांग कर झगड़ा मिटाएगा? मैं बड़े ठाकुर से बात करूंगी, तू तैयार हो जाए तो बात बन सकती है।"

राघव मा के चले जाने पर उठा और भटकने के लिए गाव की गलियां पार करता हुआ आगे बढ़ा। वह इतने मतिभ्रम में था कि कुछ समझ में ही नही आ रहा था। वह देवताओं से चिढ़ता था क्योंकि उन्होने निर्बलों की कभी सहायता नही की। वह कभी गरुड पर बैठकर नहीं आए, न सुदामा को छोड़कर उन्होने किसी की दरिद्रता दूर की। उसने द्रौपदी की लाज बचाई होगी, पर लाखों-करोड़ों का जो रोज चीरहरण हो रहा है, उस पर वह चुप क्यों रहा, आया क्यों नही? हमारा बाप तो भगत है मगर क्या भगवान ने कभी हमारी सुधि ली?···यह सब हमारी दुर्बलता है।

लेकिन मानसिक शांति और बोध के लिए राघव मानपुरा के बाहर, बिल्कुल गांव से लगा जो ठाकुर की कुलदेवी महामाया का मन्दिर था, वहीं पहुंच गया। उसमे देवियों की दसों विद्याओं की मूर्तियां थीं, बीच में महामाया की प्रतिमा थी, जो विचित्र थी। बस आंखें दिखाई पड़ती थी, बड़ी-बड़ी जो दर्शकों के मन मे पैठ जाती थी। उनमें न कोमलता थी, न ममता, बस बेधक नेत्र थे, वो भी सुन्दर नही पर वे गूढ़ और रहस्यमय थे।

राघव को भीतर कौन जाने देता? उसने बाहर से ही प्रणाम किया और वहीं से देवी मा की वे घूरती आखें ताकता रहा। उसका मन गद्‌गद नही हुआ, असमजस में वह कर्कश था, कचोट खाया हुआ। उसने मन मे कहा—"देवी मां, आपमें यदि ज़रा भी सत्य है तो मुझे बताओ, मैं क्या करूं?"

कोई जवाब न मिला। वह व्यर्थ आंखें बन्द करता, खोलता, झुकता, झीकता रहा।

अचानक उसे लगा कि कोई उसकी पीठ पर दृष्टि गड़ाए हुए है। उसने घूमकर देखा तो सूरजमुखी, पीछे खड़ी एकटक उसकी ओर देख रही थी और उसके साथ आया हुआ नौकर गिरधरिया नाई इधर-उधर सरक गया था। कमाल है! राघव के मन में महामाया की माया पर आश्चर्य हुआ। यह संयोग मात्र है, ऐसा सोचकर उसने भाव बदलना चाहा लेकिन महामाया का जादू उस पर छा चुका था।

सूरजमुखी ने संकेत किया। वे दोनों मंदिर के विशाल चबूतरे पर, मुख्य मन्दिर से सटे छोटे-छोटे खम्भों पर छत के नीचे स्थापित देवताओं की ओर गए। उधर एकांत था। सूरजमुखी के माथे पर लाल तिलक था। वह लाल साड़ी में थी। साक्षात् देवी प्रतीत हो रही थी।

"राघव।"

"सूरजमुखी।"

दोनों भावनाओं के झंझावत में थपेड़े खा रहे थे। दोनों ठगे से खड़े रहे। कहने को भी क्या रह गया था?

"राघव, तुम···तुम···वह कहानी भूल गए?"

"नहीं, उसे कैसे···कैसे भूल सकता हूं?"

"तो भूलना मत उसे।"

"नही भूलूगा पर करूं क्या?"

"तुम छबीली को लेकर जितनी जल्दी हो सके, कही चले जाओ, भोगांव नही, भोगांव भी सुरक्षित नहीं है, कही दूर, किसी रिश्तेदारी मे या किसी तीर्थ पर चले जाओ।"

"सा रं···गा!"

"नही, वह नाम मत लो पर उसे भूलना भी मत···अब मैं जा रही हूं···मुझसे मिलना नही!"

वह तीव्रगति से परिक्रमा मे प्रविष्ट हो गई और राघव वही भौचक खड़ा रह गया। सामने गणेश और हनुमान की छोटी, अनगढ़ सी प्रतिमाएं थी। राघव ने प्रणाम किया। मन ने कहा—"देवता! तुम साक्षी हो, मेरा मन शुद्ध है। मुझे कुछ भी हो पर सा—र—गा की रक्षा करना प्रभो।" वह हिलकी भर के रोने लगा

राघव आसू पोछता और मन मे खिले सूरजमुखी पुष्प पर भ्रमर सा मडराता पुन एक बार महामाया के सामने आया। अबकी बार उसने पाया कि देवी के नेत्रो मे कोमलता है और वह आशीर्वाद दे रही है।

महामाया ने निर्णय करा दिया था। उसी मे कल्याण जानकर घर और बिरादरी के विरोध के बावजूद राघव छबीली को लेकर रात बीतते, मानपुरा छोड़ गया और पहली बस से भोगाव से उल्टी तरफ चलकर बसें बदलता हुआ बरेली जा पहुंचा। वहां से वह देहात मे दूर के एक सम्बन्धी के घर गया और वहा टिक गया। पूछने पर बता दिया कि वह पीलीभीत होता हुआ अमुक गाव जाएगा। बीमार है, सो थोड़े दिनो यही रहेगा। रिश्तेदारो ने उसे प्रेम से टिकाया और मानपुरा से दूर निकल आने पर छबीली भी सहज होने लगी। उसकी छवि लौट रही थी और अपराधभाव मिट रहा था।

पचम धानुक अपने लठैतों सहित जेल से छूट कर घर में ही रहने लगा था। उसने सबको आगाह कर दिया कि वह रघुआ तो आग लगा कर भाग गया या उसे बड़े ठाकुर ने मौके से इसलिए भगा दिया होगा कि उसको देखकर ठाकुरो मे गुस्सा बढ़ेगा, छबिलिया को देखकर भी···लेकिन सच्चाई तो यही है कि झगड़े का जो कारण था, वही नही रहा तो झगड़ा किस बात का? लेकिन इस तरह के सोच-विचार का सभी ने विरोध किया और यह तै पाया कि अब ठन गई है तो हो ही जाना चाहिए। इन ठाकुरो ने छबिलिया और उसकी मां को हो नहीं, ऐसा कौन सा घर है जिसकी इज्जत पर हाथ न डाला हो। हम कब तक चुप रहेंगे? इसलिए सवाल सिर्फ छबिलिया का नहीं है, सबकी मर्यादा का है। अब पुराना जमींदारी का जमाना तो है नहीं, हमारे पुरखो ने सब सहा। तब यह भी था कि बड़े लोगों मे ऐसे लोग भी थे जो दयाभाव वाले थे, और ईश्वर और धर्म से डरते थे। अब तो इनके पढ़े-लिखे बबुए कहते हैं कि ईश्वर और धर्म है हो नहीं और जब ईश्वर, देवी-देवता, धर्म नहीं है तो फिर वह डरेगा किस बात से? लेकिन उनकी मनमानी अब अधिक समय तक चल नहीं सकती। हमारी पूछ करने वाले भी हैं···हम लड़ेंगे। मरना-जीना तो लगा ही रहता है। एक बार इन ठरुट्टों को पता चल

जाए कि युग बदल गया, सब बदल गया। अब जमींदाराना जुल्म नहीं चल सकता।

लठैत धानुकों से कुछ भद्र और कोमल मन के ठाकुरों का खेत में प्रेममय सामना भी हुआ, संवाद भी। ठाकुर गंगासिंह ने छेड़ा—"यह लाठी काहे धारे हो कंधों पर ?"

"कहा करें मालिक, जब मालिक लोग ही बैरी हो जाएं, आवार लेने पर उतर आएं तो क्या करें ?"

"अरे छोड़ो, कोई मरा तो नहीं। भूपसिंह के पक्ष के लोग बच गए। दो-चार महीनों में पट्टियां भी उतर जाएंगी। और भूपसिंह कोई दूध का धुला नहीं है। वह छंटा हुआ और बदमाशों से मेलजोल रखने वाला आदमी है। तुमने देखा न कि ठाकुरों में दो-चार घरों को छोड़कर क्या सबने उसका साथ दिया है ? उस रात को सब लाठियां लेकर इसलिए भाग गए थे कि धानुकों के मुहल्ले में भूपा ने प्रचार कर दिया था कि सरूपा को धानुकों ने मार डाला और रघुआ सूरजमुखी को भगा ले जा रहा है'''पर हम असलियत जान गए है। यह बेकार का झगड़ा है।"

"आप भूपसिंह को समझा लो, हम धानुक तो समझे-समझाएं ही हैं। हम ठाकुरों का सामना नहीं कर सकते। सब ठाकुर हमारे दुश्मन नहीं है पर महाराज हम पीढ़ियों से आप सबकी गन्दगी ढोते रहे। आपकी शान के लिए आपके दुश्मनों के साथ लड़ते रहे। धानुक ही तो जमींदारों को मालगुजारी-लगान वसूल कराते थे। हमारे पुरखों में दर्जनों आपकी हुकूमत के लिए मारे गए उसका भूपसिंह और उनके हिमायतियों ने कोई ख्याल किया ? सरूपा के चिल्लाने पर हम पर लाठियां लेकर पिल पड़े। फिर हम क्या करते, पिटते रहते ?"

"ठीक है, ठीक है जो हुआ बुरा हुआ, पर भूपसिंह से माफी मांग लो, टटा खत्म। भूपसिंह को हम मना लेंगे।"

"अच्छा है महाराज। ठीक है। चलो, हम अभी चलते हैं, पर उनके दरवाजे पर उनके आदमी हमारे साथ घात करें तो क्या होगा ?"

"हम भूपसिंह को अपने घर बुला लेंगे, वहां कोई खटपट नहीं होगी और अगर वह पंचायत नहीं मानेगा तो हम तुम्हारा पक्ष लेंगे।"

"पक्का वाचन है ? ठाकुर का कौल पक्का होता है, मालिक ?"

"एकदम पक्का, प्रान जाए पर वचन न जाई। आ जाओ। पंचमा को भी ले आना और निहत्थे आना। लाठियां घर में छोड़ आना।"

ठाकुर गंगासिंह के घर पर पंचमा सहित कुछ चुने हुए धानुक आ गए, निहत्थे और नम्र मगर भूपसिंह नहीं आया। उसने साफ कह दिया कि धानुकों से पिटकर ठाकुर के तुख्म से जन्मा कोई ठाकुर का बच्चा जी नहीं सकता। वह बदला लेगा और ऐसा बदला लेगा कि धानुक सिर उठाने लायक नहीं रहेंगे। तब तक हम अपना मुंह किसी को दिखाएंगे नहीं। यह कहकर भूपसिंह ने अपना मुंह साफे से ढंक लिया और घायल सांप की तरह फुस्कारने लगा, धानुकों को गालियां देने लगा, उन्हें भी जो समझौते की कोशिश कर रहे थे। अंततः सुलह कराने वाले खिसिया कर लौट आए। बड़े ठाकुर ने भी भूपा को बुलवाया पर वह नहीं आया। बड़े ठाकुर की लोग इज्जत तो करते थे पर उनकी कौन परवाह करता है अब ? वह तो बड़प्पन में डूबे रहते हैं, ठाकुर की ठसक उनमें रह ही नहीं गई थी।

गंगासिंह सुलह कराने में असफल होकर अपमानित महसूस कर रहा था। उसके

साथ अच्छे-भले ठाकुर थे। सबने धानुकों से कहा कि वे भूपा के कहने पर कभी उन पर हमला नहीं करेंगे और कचहरी-मुकदमे के काम में, गवाही-साक्शी से भी दूर रहेंगे। भूपा से सावधान रहना, वह ठाकुर नहीं, अपराधी है। ताज्जुब यह है कि यह सुघरसिंह क्यों उसका साथ दे रहा है! कोई कोना दबा होगा उसका। वह दबे लेकिन गंगासिंह और उसके समर्थक तटस्थ रहेंगे बल्कि उनकी सहानुभूति धानुकों के साथ रहेगी और वे बड़े ठाकुर के कहे पर चलेंगे।

लौटने पर रास्ते में पंचमा ने अपने धवल करमा धानुक से कहा—"देखा करम हम गिरे भी, पर मिली वही धमकी और पनहीं, क्या फायदा हुआ इससे?"

"मिला क्यों नहीं? यह साबित हुआ कि हम समझौता चाहते हैं। आम पब्लिक पर इसका अच्छा असर पड़ेगा। यह फायदा हुआ कि कुछ भले ठाकुर हमारी बात कहने लगे।"

"अरे तुम इन ठकुरटों को नहीं जानते। इन्हें न झगड़ते देर लगती है, न मिलते। इनका कोई ठिकाना नहीं।"

"ऐसा मत बको, गंगासिंह सच्चा ठाकुर है, भला।"

"देखेंगे, देखेंगे, उसका मरम भी खुल जाएगा।"

भूपसिंह, सुघरसिंह और शीतलाप्रसाद बड़े ठाकुर के दोनों लड़कों के कान भर आए कि सूरजमुखी को रघुआ नष्ट करने पर तुला है। दोनों ने भूपसिंह को रुपए दिए और सूरजमुखी को गांव से बाहर भेजने की बात बड़े ठाकुर को लिख दी लेकिन सूरजमुखी ने कहा कि वह नीच वृत्ति के लोगों के दुष्प्रचार की परवाह नहीं करती। रघुआ उसके लिए वही है जो बचपन में था, बालसहचर, सेवक और सहपाठी और कुछ नहीं, मैं उससे स्नेह करती हूं, विनोद करती हूं उस पर मेरा दयाभाव है, लेकिन वह मुझे भगाए नहीं लिए जा रहा है न मैं उसके साथ भांवर डालने जा रही हूं। मैं अपने बड़े भाइयों को पसंद नहीं करती, उनमें बड़प्पन नहीं है और वे ठाकुर नहीं, बनिया हैं, लोभी-लालची हैं। इसलिए वह पिता-माता की सेवा में रहेगी और मैनपुरी में भी तो परस्नातक कालेज है, यहीं से एम० ए० कर लूंगी पर मैं नराधमों को दिखाना चाहती हूं कि मैं कपूर नहीं हूं जो हवा से उड जाऊंगी। राघव मुझे अलौकिक दृष्टि से देखता है। उसमें कोई मैल नहीं, ममता और आदर है। मैं इन कुत्तों के भौंकने से उस निर्मल दृष्टि का अपमान नहीं होने दूंगी।'''सूरजमुखी का तेज धधक उठा था।

अमावस्या की रात आ ही गई। होली आसपास थी, शीत कम हो गया था पर रात में ठंडक बढ़ जाती थी। कुत्ते अब इतनी सर्दी में छिपते नहीं थे। गलियों में रहते थे। उन्हें यह कैसे पता चल गया था कि आज कुछ होने जा रहा है। वे बिना कारण शाम से ही गलियों में छतों पर भौंक रहे थे और कुछ रो रहे थे जैसे वे पागल हो गए हों। घुग्घुओं ने बोलना शुरू कर दिया था, घुसटिया डरावनी आवाजें कर रही थी और बिल्लियां लड रही थीं। लोग उन्हें भगाते। उल्लुओं की तरफ ढेले फेंकते लेकिन वे कुछ समय बाद फिर अपना राग शुरू कर देते'''वातावरण में भय-सा व्याप्त था पर किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है, क्या होने जा रहा है? लोग अततः सोने चले गए थे।

लगभग आधी रात को गुलाबसिंह के गिरोह ने धानुकों के मुहल्ले को घेर लिया और पचमा के घर में आग लगा दी और भी कई घरों के छप्परों में ज्वाला सुलग उठी। सब एक साथ जल उठे। हाहाकार मच गया। सब धानुक परिवार स्त्री-बच्चे, बूढ़े-

जवान बाहर भागे मगर बाहर, चारों तरफ डाकुओं का घेरा था। पंचमा और करमा लाठी लेकर डाकुओं पर टूट पड़े लेकिन गुलाबसिंह के गोली चालकों ने उन्हें गोली से उड़ा दिया। उनकी चीत्कार से धानुक लठैतों में खून सिर पर सवार हो गया। उन्होंने एक साथ प्राणों का माया-मोह छोड़कर डकैतों पर हमला कर दिया। पत्थर बजने लगे। डकैत घायल हुए। दो चार के सिर लाठियों से फूट गए लेकिन जलते घरों की रोशनी में सब साफ था सो डकैतों ने ताक-ताक कर निशाने लिए, बंदूक में छर्रे की गोलियां छोड़ी इसलिए लठैत धानुक गिरते गए। उन्हें आग में फेंक कर "होली है, होली है" के नारे लगाए जाने लगे।

कुछ डाकुओं के घायल हो जाने और मारे जाने से गुलाबसिंह पर वहशीपन सवार हो गया। वह गरजा, "कोई भी बच न पाए। इन औरतों, बच्चों, बूढ़ों को भी आग में झोंक दो। डकैतों ने नर-मेघ शुरू कर दिया। वे बच्चों को उठा-उठा कर आग में फेंक देते, जवान स्त्रियों को खींच कर गुलाबसिंह की तरफ भेज देते, जहां उनका निरीक्षण होता। जो आकर्षक लगती, उन पर सरे आम बलात्कार होने लगता और बाद में उन्हें आग में गेंद की तरह फेंक दिया जाता। बूढ़ों को भी नहीं बख्शा गया! गुलाबसिंह ठर्रा चढ़ा रहा था और अट्टहास कर रहा था, हः हः हः हः।

ठाकुरों के साथ गुस्ताखी का मजा चखाओ, इन जानवरों को। देखना, कोई धानुक बचने न पाए···इनकी जड़ ही काट दो, इनकी यह हिम्मत कि ठाकुरों का सामना करें, भून दो सालों को। बीन-बीन कर मार डालो।"

"वह परमा और रघुआ कहां है, और वह छबीली ?"

"चिड़िया उड़ गई ठाकुर, उड़ गई। रघुआ उसे ले गया। परमा और उसकी औरत, बड़े ठाकुर की हवेली की तरफ भाग गए। और भी धानुक उधर भागे हैं। उन्हें वहां से निकाल कर मारना होगा।"

"यह बूढ़ा ठाकुर धानुकों का पक्ष लेता है ?···चलो, यहां तो मैदान साफ हो गया, चलो, बड़े ठाकुर के घर से रघुआ की मां और उसके बाप को निकालो।"

गिरोह के कुछ डाकू हवेली की तरफ गए। सिंहद्वार का फाटक बंद था। छज्जे पर सूरजमुखी खड़ी थी। नीचे से गुलाबसिंह दहाड़ा—"राजकुमारी। उस रघुआ की मां और बाप को हमें सौंप दो वर्ना···।"

"वर्ना क्या करेंगे आप, हमें भी मार डालेंगे ?"

"आप से कुछ बैर नहीं है—हम तो ठाकुरों की शान के लिए आए हैं।"

"ठाकुर। शान। ठाकुर यही सब करते हैं ? यही शान है ? ठाकुर निरीह, निरपराध पर हाथ उठाते हैं ? बलात्कार करते हैं ? आप ठाकुर नहीं, ठाकुर के नाम पर कलंक हैं, आप जाइए, वर्ना···?"

"वर्ना आप क्या कर लेंगी, आप तो उस धानुक रघुआ से इश्क लड़ाती हैं, लज्जा नहीं आती आपको ?"

सूरजमुखी के साथ खड़े गिरधरिया ने नीचे से बोलने वाले डाकू पर टार्च से रोशनी फेंकी। वह गुलाबसिंह से कुछ दूर बंदूक लिए खड़ा था। सूरजमुखी ने इशारा किया तो हवेली के अंगरक्षकों ने ताक कर गोली चला दी। वह डाकू वहीं गिर कर तड़पने लगा। हवेली के चारों कोनों से फायर होने लगे। उधर गांव के लोगों की भीड़ का दबाव बढ़ने लगा। एक डाकू बोला—"ठाकुर। मक्खियां भिनभिना रही हैं, अब भाग लो नहीं तो थानेदार टसक निकाल देगा। पुलिस भी आ रही होगी।"

घायलों को लाद कर गुलाबसिंह का गिरोह भाग गया। मुर्दे रह गए जो मुंह फाड़े सब देख रहे थे।

धानुकों के मुहल्ले में लाशों के जलने से चिरायंध फैली थी और अधमरी देहें फड़फड़ा रही थीं। कराह, चीत्कार और आर्तनाद के मध्य फैलती आग पर जनता काबू पा रही थी। सब कुछ जलकर भस्म हो रहा था।

16

दीपा जब बम्बई पहुंची तो बम्बई सेंट्रल पर उसे दूध बेचने वाले यादव लेने आए जो 'भैया' कहलाते हैं। 'भैया' शब्द जातिबोधक नहीं पेशे की ओर इशारा करता है कि 'भैया' वे हैं, जो दूध का कारोबार करते हैं, गाय-भैंस पालते हैं, चाहे वे यादव हों या ब्राह्मण या काछी हों या कुर्मी, पर यह सही है कि उनमें मंझोली जातियों के लोग ही अधिक हैं, विशेषकर उत्तर प्रदेश के।

भाई चिरंजीव यादव साथ नहीं आया था। दीपा ने आग्रह भी किया पर वह बहिन दीपा और कलाकार वेणीमाधव के बीच नहीं आना चाहता था। पुजारी जी की भी यही राय थी कि पढ़ी-लिखी, सचेत युवतियों को डिबिया में बन्द करके रखना सामंती-प्रवृत्ति की संस्कृति है। उन्हें स्वतन्त्रता देनी चाहिए, बस यह देख लो कि वे स्तरहीन संग-साथ में तो नहीं हैं। यदि कम्पनी ऊंचे दर्जे की हो तो डरना नहीं चाहिए। वैसे दीपा कलाकार पर इतनी मुग्ध थी कि वह मानने वाली भी नहीं थी।

दीपा ने कलाकार को रोक दिया था कि वह बम्बई सेन्ट्रल स्टेशन पर उसकी अगवानी को न आए। अन्यथा व्यर्थ इन पुराने नैतिक मर्यादा वाले भैया लोगों में क्षोभ फैलेगा और ये उद्दण्ड भी इतने हैं कि कलाकार की कला का कचूमर भी निकाल सकते हैं। ये भैया संगठित होकर परदेश में रहते हैं और आपस में तथा प्रतिद्वन्द्वियों से अक्सर इनकी जोर-आजमाई होती रहती है। वे बहुत जड़ मगर जीवन्त हैं।

चौधरी हरलाल यादव, जुआ, इटावा के साधो-माधो और दीपा-चिरंजीव के दूर के सम्बन्धी हैं। दरअसल हरलाल भैया के पिता की लड़की, दीपा के वंश में विवाहित है इसलिए हरलाल यादव, दीपा के मामा के मामा हुए। दीपा पहली लड़की थी जो एम. ए. थी। उसका नाम अखबार में छपता था। वह सामाजिक कार्यों में भाग लेने से, उत्तर प्रदेश के यादव-मिनिस्टर जसवंतसिंह और उनके प्रतिद्वन्द्वी यादव नेता हनुतसिंह यादव से भी परिचित थी। जसवंतसिंह उत्तरप्रदेश के उपकृषि मंत्री थे और अपने पुत्र के साथ दीपा का विवाह चाहते थे और यही हनुतसिंह भी चाहते थे, मगर दीपा की परिष्कृत और अग्रगामी चेतना, इन प्रतिष्ठान के प्रभावशाली मगर अपरिष्कृत और निर्दय-नेताओं को देख कर ही भड़क उठती थी और एक बार तो विवाह का प्रस्ताव आने पर उसे कै हो गई थी। दीपा को उनकी सम्पन्नता में सड़ांध महसूस होती थी। वे शासक दल के दादा उसे ऐसे लगते थे गोया मध्यकाल के भाड़े के लघुसेना-पतियों को बीसवीं शताब्दी की राजनीति का विधायक बना दिया गया है। वे शासक दल और विपक्ष के बड़े नेताओं के संकेत पर सारे बुरे काम कराया करते थे। उनके घर में जाकर दीपा निश्चय ही आग लगाकर टिकिसी के महादेव की सुरंग में पहुंच जाएगी।

दीपा मामा हरलाल के अच्छे-खासे मकान के ड्राइंग रूम में जम गई थी और उसकी खातिर हो रही थी। मामा, उसकी बेटियां और बेटे, पड़ोसी अहीर, सभी उसे आंखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे क्योंकि दीपा कपड़ों में बम्बई वालों को भी हरा रही थी और नाम तो उसका सब जानते थे। वह पतलून और कमर तक बुश्शर्ट पहने थी और बालों की एक चोटी बनाकर उसमें सादे रिबन लगा रखे थे। सफर में कपड़े मैले हो गए थे पर दीपा को उसकी चिंता नहीं थी। उसके शृंगार में जो कमी थी, वह उसके चेहरे पर एक अजीब चमक और नाक-नक्श के तीखेपन से पूर्ण हो जाती थी।

"दीपा! तू चाहे तो अपने भाई, इस मेरे लड़के, इस मूरख गोवर्धन की नौकरी के लिए जसवंतसिंह से सिफारिश कर सकती है।"

"कर सकती हूं। मैं कहलवा दूंगी पर मैं खुद नहीं कह सकती।"

"काहे बिटिया, अरे कह देव तुम ही। अरे, जो बात तुम्हारी सिफारिश में है, वह औरन की में कैसे हुइ सकत है?"

"मामा, माफ कीजिए, मैं···मैं···मैं···कहूं तो गोवर्धन क्या दसियों की नौकरी लग जाए। जसवंतसिंह कृषि मंत्री है, चाहे कहीं, कॉपरेटिव सोसायटी, डेयरी, बाजार इंसपेक्टर, गल्लातोलक-आपरेटर, ऐसी अनेक छोटी-मोटी जगहें हैं, जहां वह नियुक्ति करा सकते हैं पर···पर···मैं खैर, मैं सिफारिश करा दूंगी।"

"लेकिन तुम खुद काहे नहीं कहतीं जसवन्ता से? मनिस्टर हुए गए तो कह हूं गओ, है तो इटावा को अहीर ही।" सब हंसने लगे। बात आई-गई हो गई।

होली के बाद, उत्तर भारत में तो दिन में गर्मी पड़ने लगती है लेकिन बम्बई में शीत-ताप एक-सा रहता है, गर्मी में भी पंखे की हवा गरम नहीं होती। समुद्र पसीने की चिपचिपाहट पैदा करता है पर हवा से वह सूख जाती है। दीपा को यह जरूर लगा कि बम्बई में आबोहवा, मर्दों के, खासकर मेहनत-मुशक्कत न करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। सूखी जलवायु में मर्दों में कड़क रहती है। यहां तो अजीब लुजलुजे, भेल-पूरी से लचकदार लोग हैं। पर समुद्री हवा स्त्रियों को माफिक पड़ती है शायद। उनमें खूब आकर्षण है।

शाम को घाटकोपर से लोकल ट्रेन पकड़ कर दीपा चौपाटी पहुंची। दिन में बम्बई किसी भी बड़े शहर की कारोबारी नगरी-सा लगता है, व्यापार, उद्योग और उपभोग के इस स्तर को, इस वैभव और चकाचौंध को रखने के लिए कितने तरह के व्यक्ति रात-दिन काम करते हैं। चींटियों की बस्ती में हर एक चींटी व्यस्त है। मानव-पिपीलिकाओं या मधुमक्षिकाओं के इस समुद्री द्वीप-छत्ते में हर चीज व्यापार है, हर समर्थ और सम्पन्न व्यक्ति सेठ। दीपा ने सोचा कि इस मधुछत्ते की रानी एक नहीं, अनेक हैं। बंगलेवालियां, साहबिनें, सेठानियां, नेताणियां, अभिनेत्ताणियां, जासूसिनें, तस्करिणियां, ठेकेदारिनें, दक्षों की दक्षिणयां और समृद्ध सुघड़-सुशिक्षित वेश्याएं या यक्षिणियां···उनके बच्चे-कच्चे···ये हैं, मुम्बादेवी की लड़ैती लाड़लियां, चमाचम, शऊर-शायरी-शान-शहंशाही सब कुछ और इनके दक्ष-पुरुषों की हविस के शिकार लाखों साधारण नौकरियों वाले, मामूली दूकानदार, टटपुंजिए, टकाप्रेमियों को टहल पर इन आधुनिक राजा-राणियों के ठाठ और विलास!

···कहा जाता है कि इस मायापुरी से ही मायावियों की माया चल रही है। यहीं से धन दक्षपतियों-दसाध्यक्षों को जाता है···यहीं से या कलकत्ता से, सारा आयात-

निर्यात होता है, विशेषकर यही से… निशाचरों या तस्करों की लंका यही है। इस लंका का रावण एक नही अनेक हैं लेकिन एक अर्थ में एक ही रावण है "एक फटेहाल मगर कदकाठी की अच्छी औरत ने हाथ फैलाकर पैसा मागा तो दीपा का चेतना प्रवाह टूटा—"तुम जवान हो, तुम्हें मागने में शर्म नही आती ?"

"शर्म… शर्म और बम्बई में ?"

उस औरत की सनकी हसी से दीपा का अस्तित्व काप गया—"तुम नई हो बम्बई मे, हो न ? मैं समझ गई थी। मैं जानती हूं कौन नया है, कौन बम्बइया हो गया है। तुम्हारा ठौर-ठिकाना है क्या ?"

"है, क्यों ?" दीपा प्रश्नाहत थी।

"तुम्हारी नौकरी या बिजनेस का ठिकाना होगा या तुम एक्टर हो, रूप तो टपका पड़ता है, तुम पुलिस की खुफिया भी हो सकती हो।"

दीपा हंसी पर उसमे खिसियाहट थी। वह कुछ खीझकर बोली—"मैं नौकरी का राह पर हूं—कालेज मे—लेक्चरर हूं, लड़कियो के एक कालेज मे।"

"डेढ़ हजार रुपये, ठीक है न ?"

"हा।"

"तो तुम घूमने आई हो। पैसा जेब मे, खाना पेट मे, कपड़ा बॉडी पर तो… तो तुम यहां अपने लवर से मिलने आई हो, करैक्ट ?"

दीपा को ताज्जुब हुआ इस तर्कप्रणाली पर। उसने सवालिया नजर का जवाब सिर हिलाकर दिया और मुस्कराने लगी।

"लाओ, मुझे दो रुपये दो तो एक भविष्यवानी, एक प्रीडिक्शन करू।"

दीपा ने दो रुपये दे दिए।

"तुम्हें लव मे कामयाबी मिलेगी। तुममे कान्फीडेंस गजब का है। हा, सिस्टर, दो रुपये और दो तो एक बात और बताऊ।"

दीपा ने दो रुपये और दे दिए। उसे उत्सुकता का आनन्द आ रहा था कि यह मायापुरी का औरत तो मजेदार है।

"तुम इस शहर की मिस्ट्री, राज जानना चाहती हो ?"

"हा, हा जानना चाहती हू, लेकिन तुम्हें कैसे मालूम हो गया ?" दीपा विस्मित थी।

"बस, मालूम हो गया, लाओ दो रुपये और दो, तब बताऊ, बडी मिस्ट्री है न।"

"पहले दिए दो रुपयो का तो रहस्य तुमने बताया ही नही। पहले उनका तो बताओ और अब मेरे पास देने को अधिक रुपये नही हैं। मुझे शाम बितानी है और घर लौटना है—" दीपा ने सफाई दी।

"चलेगा। जब पैसा नहीं है तो चलेगा वर्ना मैं चार रुपये से कम मे रहस्य बताती नही हू। सेठ मिल जाए तो चार सौ भी ले सकती हू… खैर। सुनो। तुम आखें बन्द करो तो इस शहर की मिस्ट्री बताऊ।"

दीपा ने आखें बन्द की पर पर्स और जेब पर हाथ मजबूत कर लिए। वह बम्बई के विषय में बहुत सुन चुकी थी, पढ भी चुकी थी।

"अब आखें खोल दो, सिस्टर।"

दीपा ने देखा कि वह अपने हाथ पर वे ही रुपये रखे हुए है। दीपा ने कहा, "यह क्या है ?"

"यह रहस्य है, मिस्ट्री आफ मुम्बई।"

दीपा ने सोचा तो यही रावण है। यह नगर को लंका और नागरिक को निशाचर बनाता है, यह पैसा।

"यह कोई मिस्ट्री नहीं, यह तो सभी जानते है।" दीपा ने कहा।

"जानते तो है पर समझते नहीं है।"

"तुमने समझ लिया। कैसे समझा?"

"सब खोकर, सब कुछ खो दिया।"

"क्या खो दिया?"

"मेरे भी घर था, परिवार था, प्रेमी था, सुन्दरता थी, मुहब्बत का मीठा दर्द था···पर इस बम्बई ने मुझे खींचा और सब छीन लिया···मैं भी प्रेमी के साथ घर से भाग कर यहीं आई थी। बम्बई के असर से उसने छोड़ दिया, किसी और के साथ चला गया, मैं वेश्या बनी। अब उनकी दलाली करती हूं और भीख मांगती हूं। कोई देह का भूखा देहाती मुझे भी कभी मिल जाता है तो उसे सिफलिस की बीमारी देकर मुझे बड़ा सैटिस्फैक्शन होता है, संतोष, सुख ' मैं चाहती हूं कि सबको सिफलिस हो जाए। सब सड़ कर मरें पर ये साले डाक्टर हर रोग की दवा निकाल लेते है। मैं भी उसी दवा से बच गई पर मैं छूत की बीमारी फैलाकर बदला ले रही हूं, सबसे!"

दीपा स्तब्ध थी। वह औरत बोले जा रही थी। फिर उसने धीरे से दीपा के कान में कहा—"बहिन। उदास मत हो। सब चलता है इस नगरी में, सब चलता है···।"

"कब तक चलेगा?"

"·ब तक यह समुन्दर इसे निगल न ले या जलजला न आ जाए···आ सकता है, नहीं?"

"तुम पढ़ी-लिखी हो क्या, तुम तो गहरे वाक्य बोलती हो?"

"कभी थी, हाईस्कूल में थी सिस्टर। तब प्रेम में पड़ गई, भागी और अब भुगत रही हूं। तुम्हारा मनभावन···ऐसा नहीं करेगा, यह प्रीडिक्शन है, यह दुआ भी है!"

और वह औरत सिसकती रही। फिर कुछ क्षण बाद आंसू पोंछती हुई चलने लगी। चलते-चलते पुनः लौटी और कहने लगी—"सिस्टर, पैसे की करामात देखनी हो तो मैं सैर करा सकती हूं। मैं यहीं इस वक्त घूमती हुई मिलूंगी। कभी याद करना।"

और फिर वह स्त्री किसी को देखकर उसकी तरफ दौड़ी, "ए बाबू, ए बाबू," करती हुई।

दीपा को रावण या पैसे का ज्ञान था, सभी को है लेकिन यह पहला साक्षात्कार था। उसका मन खराब हो गया। उसे बम्बई सिफलिस में सड़ती हुई नजर आई, जिसे समुद्र उदरस्थ करने को व्याकुल है और जिसके नीचे पृथ्वी के भीतर चट्टानों में भाप, धुआं और आग सुलग रही है, एक विस्फोट और ये आकाश छूने वाले भव्य मकान, खिलौनों से खस पड़ेंगे। दीपा ने अपने स्नायुमण्डल पर हावी होते हुए दबाव को भगाने के लिए मुट्ठियां बांधी और कहा—"तुझे भी देख लेंगे बम्बई! तू आज अपनी शान से आतंकित करती है, कभी तू खुद संत्रस्त होगी।"

दीपा ने सिर को झटका देकर अपने को सामान्य किया और पर्स झुलाती वह बालू में चलती हुई, चौपाटी पर समुद्र के किनारे लहरों के पास जा पहुंची और उनकी लीला देखने लगी।

दीपा समुद्र के पास गई तो वह लहरों के पंजे फैलाए, उसे जकड़ने के लिए, उस की ओर क्रमशः खिसकता विराट-अष्टपद-आक्टोपस सा प्रतीत हुआ, जिसे अनन्तपद कहना अधिक सही होगा। लहरों के लम्बे पंजों को ऊपर आते पाकर वह सिहर कर पीछे हट गई और उसके मुंह से 'उई' निकल गई, जिससे आसपास खड़े लोग हंसने लगे —"नई आई हुई होगी, इसलिए डर रही है।"

"पुराने तो निगले जाने के आदी होते हैं, बल्कि उन्हें तकलीफ होती है कि उन्हें निगला क्यों नहीं जा रहा है। मुझे खुद समुद्र का रुख मारक लगता है। समुद्र भी बम्बई महानगर है जो अपने उदर में रखकर हमें हजम कर रहा है और हम समझते हैं कि वह एक दृश्य है। वह दृश्य नहीं दरिन्दा है, यह समुद्र!"

"आप कौन हैं, साहब?"

"हम? हम नहीं हैं, हमारे द्वारा जो निगले जा चुके हैं, जो पचाए जा रहे हैं, तीखे पित्तों या तेजाबों से जो मथे जा रहे हैं, वे बोले होंगे, हम तो चुप हैं, हमने कुछ कहा था क्या?"

सब हंसे पर वह वक्ता ऐसी मुद्रा बनाए खड़ा था, गोया उसे समुद्र सचमुच निगलने के लिए आ रहा हो।

वह कुछ व्यक्तियों की टोली आगे बढ़ गई। उसके पास खड़ा एक व्यक्ति उस मानव-गुच्छ के चले जाने के बाद जैसे अपने आप से बड़बड़ाया—"विदूषक ही सत्य को कहना जानता है। गंभीर व्यक्ति तो समुद्र की तरह अपने अन्दर न जाने क्या-क्या दबाए चिंघाड़ते रहते हैं, कह कुछ नहीं पाते!"

दीपा को विस्मय हुआ जब उसने पाया कि लोग आ जा रहे थे, खड़े थे, बैठे थे, खेल रहे थे, लहरों में घुस रहे थे, खेल रहे थे लेकिन जो टिप्पणी उसने सुनी थी, वह तो किसी ने की ही नहीं। तब क्या वह स्वयं से ही बोल रही थी? उसे यह क्या होता जा रहा है? उस औरत ने माथा फेर दिया क्या मेरा?...

"कलाकार न जाने कब आएगा?"

तभी रोशनियों की झिलमिलाहट में से कलाकार वेणी माधव की मनोहर मुद्रा उभरी। वह धवल धोती, घुटनों तक लम्बा रेशमी कुर्ता और अंगवस्त्रम् या दुपट्टा कंधे पर डाले हुए था और एक हाथ में लम्बी बांसुरी थी, मोटी और बड़ी। उसके घुंघराले केश करीने से कढ़े हुए थे और काले भंवर की छवि दे रहे थे। उसके नीचे पान से आरक्त अधर वाला एक ऐसा मुख था जो अपनी विशेषता से, आकार और मुद्रा से, ध्यान को गिरवी रख लेने वाला था। उसकी चाल में आतुरता और उत्सुकता थी। वह बालू में पैर धसाता, लपकता-सा आ रहा था।

दीपा उसे मुड़-मुड़ कर देख रही थी। तभी लहर का छपाका उस पर पड़ा। वह, 'उई' कहकर पीछे सरकी। दीपा को अब समुद्र एक चंचल शिशु-सा जान पड़ा जो उसकी ओर न देखने से, उसे लहरों से मार रहा था। दीपा को समुद्र पर अब की बार बड़ा लाड़ आया और वह कलाकार की ओर बढ़ती हुई लहराकर हंसने लगी। फिर एक क्षण बाद उसे कलाकार की लेटलतीफी पर गुस्सा आया। वह इतने विलम्ब से क्यों आया? वह मानवती मुंह मोड़ कर खड़ी हो गई। कलाकार समझ गया। वह पास आया और दीपा के निकट अपराधी-सा खड़ा होकर हांफने लगा और वीणाविनिन्दित स्वर में कहा, "दीपा जी! मैं क्षमा चाहता हूं।"

दीपा वैसी ही अकड़ी खड़ी रही। गुस्से से उसका शरीर क्षुब्ध था और समुद्र की

तरह ही, उसके मन में प्रतिकूल तरंगें उसके किनारे काट रही थीं। कलाकार समझा, बहुत देर हो गई। आज तो देवी का कोप इस तरह शांत नहीं होगा, अतः उसने इधर-उधर देखा! अंधेरा था, झुटपुटा सा, अंधकार और रोशनी की चौंध सी पड़ रही थी। कलाकार दीपा के सामने घुटनों के बल वीरासन में बैठ गया और करबद्ध होकर बोला—"मैं निर्दोष हूं दीपावली देवी, मैं जिस टैक्सी में आ रहा था, उसका दोष था। वह आपकी तरह क्रुद्ध होकर दूसरी से टकरा गई।"

"क्या ?" दीपा का क्रोध तत्काल विला गया और वह झुक कर कलाकार के कंधे पकड़ कर उठाने लगी। उसके उठने पर वह अज्ञात भय से, उसके वक्ष में समा गई और फफक कर रोने लगी। कलाकार ने उसे रोने दिया। दीपा की गंभीरता, संयम और ठहराव से वह परिचित था। आज अचानक उसके ज्वार से जाहिर है कि या तो वह किसी हादसे से गुजरी है या वह दुर्घटना की आशंका से घबरा गई है। वे दोनों इसी हालत में खड़े रहते, मगर समुद्र ने हस्तक्षेप किया। उसकी एक जोरदार तरंग ने दोनों के पैरों के पास आकर धीमा 'छपाक' कहा और उन्हें थोड़ा भिगोती हुई वह इस तरह लौट गई, जैसे वह पुनः कह रही हो कि मानवीय राग, सागर के महाराग के सामने भुला देने के काबिल है। उसके पास बैठो, उसे सुनो, उसे अपने में भरो, हृदय विशाल हो जाएंगे, मानस रत्नाकर बन जाएंगे, न जाने कहां-कहां से बिजलियां जलाए, हाथियों की तरह तैरते, भोंपू बजाते अनुभूतियों के जहाज आएंगे-जाएंगे, ज्वार-भाटे के जलवे मिलेंगे और तुम्हें जान पड़ेगा कि तुम पहले बाग थे, अब लहरों पर टंगे बाग हो, हैंगिंग गार्डन।

सागर की मीठी दौतानी पर दोनों सब भूल गए और हंसी के फव्वारों में नहाने लगे। अब कलाकार को अवसर मिला।

"दीपावली! वह दृश्य देखो। आज शुक्ल पक्ष है न। चन्द्रमा निकलेगा, बस निकलने वाला ही है···वह देखो, वह रहा, देखा न? वह···इसी से तो सागर बिगड़ रहा है कि देर से क्यों, जल्दी क्यों नहीं आई?"

"क्या चन्द्रमा स्त्री है?"

"आपको नहीं मालूम? अरे। संस्कृत में चन्द्रमा स्त्रीलिंग है। तभी तो···तभी तो, देखो न, यह तटों में बंधा, उछल कर मिलने को व्याकुल, यह प्रेमी समुद्र हाहाकार कर रहा है पर वह आजमाता है, जोर मारता है कि उस तक पहुंच कर उसे छू ले···जब नहीं छू पाता···देखो, अब तरंग विलास होगा, जब नहीं छू पाता न, तब यह अपने भीतर चन्द्रमा के बिम्ब को लेकर उसे खूब पानी के पालने में हिलोरता है और उसे गरज-गरज कर समझाता है कि अब कहीं जाना मत, मेरे प्रिय और रात भर हिलोरता रहता है।"

"अच्छा?"

"हां, दीपामती! ऐसा ही होता है, चन्द्रोदय होने पर हर बार यही होता है। कृष्णपक्ष में तो सागर उदास हो जाता है। बरसने के पूर्व आकाश में एकत्र मेघों की तरह मंद-मंद गति में गरजता रहता है और छोटी लहरें यों चलती हैं, जैसे समुद्र पछता रहा हो प्रिय से बिछुड़ कर···यह वारिधि है, पानी का खजाना, पर कृष्णपक्ष में अकिंचन-सा हो जाता है और जो इसके पास आता है, उसके पास धीरे से आकर पूछता है कि मेरा वह मनोहर प्रिय कब आएगा?"

मंत्रमुग्ध दशा में दोनों, भीड़-भम्भड़ छोड़ कर कुछ ऊंचाई पर जाकर बैठ गए और उगते चन्द्रमा में बढ़ती लहरों का लास्य शुरू हो गया।

लहरों का पीछे हटना, फिर कुछ देर स्थगित स्थिति, फिर कुछ दूर तरंगो का आकर बड़ी लहरों में बदलना, फिर फणाकार होकर मचलते, उठते, टकराते, एक-दूसरे को धकेलते अपरिमित जलधारक शक्ति से, भूकम्पक वेग से फनफनाते हुए आना और किनारे पर महाध्वनि के साथ 'छपाक' कहना और फिर आगे बढने का अवकाश न होने से पीछे लौटने का क्रम। चन्द्रमा के धवल आलोक मे सारे दृश्य का अलौकिक हो जाना •••दोनो अपने मे खोए तरगो के तमाशे देखते रह गए।

"दीपा।"

"हा।"

कलाकार यह प्रतीति करने के लिए कि दीपा वहां है, अनुपस्थित तो नही हो गई, उसे छूता और फिर आश्वस्त होकर कि वह वहां है, पुनः सागर की क्रीडा मे डूब जाता। उसने साफ देखा कि समुद्र को जो शेपसामी विष्णु का आगार कहा गया है, वह कितना सच है। श्वेत महासर्प के लहराते-लचीले अनत देहाकारो जैसे ही तो ये तरग-प्रत्यूह लगते हैं, एक-दूसरे से लिपटे, अलग होते हुए, पुनः एकबद्ध चलते हुए और जहा उठान होती है, लहरो को, वहा सचमुच एक पलगनुमा लम्बा-चौडा स्थान बन जाता है'''श्वेत नाग शैय्या पर हिलते-डुलते विष्णु और आत्ममुग्ध ललित लक्ष्मी''।

नैरीमन-प्वाइन्ट पर बनी भव्यतम जगमग इमारतो से दृष्टि उजली हो जाती। फिर वह आगे दूर तक किनारे-किनारे अनेक भवनो के विद्युत आलोक की घुमावदार पक्ति के साथ, प्रकाश ज्यामिति से पुलकित होती हुई, जहाजों की रहस्यमयी रोशनियों मे ठिठक जाती। समुद्र का उफनता-उछलता वक्षस्थल जैसे बीच मे उठा हुआ सा जान पडता और रोशनी के रगीन धागे लहरो मे इन्द्रधनुष रचने लगते। दृष्टि क्षितिज तब जाकर उधर घोर अधकार मे कुछ न दीखने से हताश होकर वापस होती और दोनो किनारो के प्रकाश-वलय मे खोकर पुनः क्षितिज की ओर मुड जाती। अजीब जिज्ञासाए जगती, सूने-अधेरे समुद्र मे जाने पर कैसा लगता होगा•••वही भय, वे ही भयानक बिम्ब जो कलाकार के आने के पूर्व उसमे भर रहे थे'' दीपा काप कर रह गई।•••और फिर वासुरी बज उठी। बेणी माधव ने अत्यन्त विलम्बित स्वर में राग दीपा छेड़ा जिसका उसने बडे लम्बे अभ्यास से आविष्कार किया था। राग दीपा मे स्वर को अनियन्त्रित और विच्छिन्न किया गया था जो प्रारम्भ मे लहर की तरह धीरे-धीरे उठता और फिर उसी की तरह बढता हुआ, वेग पाता। फिर उन स्वरों की अनेक वीचियां, क्रमशः विकटता पाती हुईं, एक सम्मिलित उत्तुग लहर का रूप लेती और तब उनकी गति, घूर्णन, घात-प्रत्याघात, गर्जन और गमन, व्यूहमय तीव्रता के साथ अन्त मे उतार पर आकर एक महान 'छपाक' पाकर लहरे शान्त हो जाती और फिर वही स्वर-ज्वार प्रारम्भ हो जाता।

शास्त्रीय रागों मे जो पूर्वनिश्चित विन्यास होता है, उसे छोडकर कलाकार ने सामुद्रिकता का यथावत् समावेश किया और जो जलक्षोभ के बीच समुद्र का चीत्कार होता है, उसे अपने हृदय की सम्पूर्ण वेदना से गुंजाया। कलाकार सागरमय होने लगा और वह भूल गया कि वह व्यक्ति है और कुछ नया करने की कोशिश कर रहा है। उसने अपने मे समुद्र को अवतरित होने दिया, अपने अहं को तिरोहित कर लिया फलतः प्रकृति स्वतः अपनी भीषणता, विशालता और अन्तहीन, अपरिमित क्षोभ को स्वरो मे व्यक्त करने लगी ' बढ़ी मे चादनी, चन्द्रमा, सागर, हवा की दौड़, तरंगों की तेजी'''सब कुछ समाती गई और स्वर मे समुद्र साकार हो गया।

पहले तो दीपा की अतश्चेतना अपने वंशीवादन के प्रभाव को व्यक्त करने के

लिए शब्द खोजती रही किन्तु जैसे-जैसे कलाकार तन्मय होता गया, अंतर-संज्ञा खोकर वह सामुद्रिकता प्राप्त करता गया, वैसे-वैसे दीपा को लगा कि शब्द तो अत्यन्त अपर्याप्त और अधूरे हैं···वस्तुतः वे नहीं है। वे सिफ सतही, परिचित और स्थूल को ही कह सकते हैं। जब व्यष्टि और समष्टि, कला के जरिए एक हो जाते हैं तब केवल प्रकृति रह जाती है और प्रकृति में मानवीय शब्द नहीं हैं, उसकी भाषा ही पृथक है जो ध्वनिरूप है। वंशी का स्वर उसी मूल प्राकृतिक-स्वनन् को उत्तेजित करता है जो हमारी बकझक से छुपा रहता है। तभी तो जो महान है, उसे मौन होकर देखा जाता है, सूघा जाता है, चखा जाता है, स्पर्श किया जाता है और सुना जाता है। यह जो अपने अन्दर का संवाद, या आत्म-आलाप है, आत्मपरामर्श, यह भी बाधक है। स्वगत-चिन्तन भी अपने में बांधता है। यह प्रकृति, जो हमारे 'स्व' से बाहर है, स्वतंत्र है, स्वायत्त है, वह हमारे आपे या अहम् के स्थगित होने पर ही अपने को उन्मीलित करती है···।

क्रमशः दीपा की आत्मचेतना भी समाप्त हो गयी और वह आकाश होकर स्वर में आविर्भूत सागर की मूल सत्ता का साक्षात्कार करने लगी। वह वायु बनकर विभिन्न गतियों में विचरने लगी, प्रकाश बन कर अन्धकार को धो-धोकर उजलाने लगी। वह *वंशीवादन के उस अद्भुत क्षण में वृक्षों-लताओं की तरह स्वरालाप, मींड़, मूर्च्छा और* आघूर्णन पर सिर हिलाती, कभी किनारे की सडक की तरह निस्पन्द, दृढ़ और असम्बन्धित हो जाती, कभी बालू की तरह सरकती, पानी सी अपने को भिगोती, बहती, घुलती और फिर कहीं एकत्र होकर टीले बनाने लगती, कभी वह कारों की तरह सरं से संगीत से निरपेक्ष होकर सरक जाती, चिडियों के झुण्ड मे चहचहाती, दर्शकों की उत्सुक दृष्टि बन जाती, बच्चों के शोर और चंचलता में किलकती, फेरी लगाने वालों की रोचक पुकारों में परावर्तित होती और सौदा पटाते हुए तरह-तरह के व्यक्तियों का मनोभाव बनती, भिखारियों की रिरियाहट में रोती हुई, जल के अगम्य भंडार के तल में पहुचकर विचित्र जन्तुओं के रूप में जीने लगती···। दीपा की चेतना चराचरमय हो गई थी और उसका होश गायब हो गया था।

तत्पश्चात् चराचर के साथ एकाकारिता का भान भी नहीं रहा और बासुरी के स्वरों ने उसे प्राकृतिक पदार्थ मे बदल दिया। अब न अपना परिज्ञान था, न किसी अन्य का, न अब दिक् था, न काल, जो जैसा है, वह वैसा ही हो गया, सिर्फ एक स्वर था जो स्नायुमण्डल को इस तरह आविष्ट किए हुए था, कि अब वह स्वर भी पृथक से सुनाई नहीं पड़ रहा था, गोया वह स्वर भी अंतरस्थित अणु-परमाणुओं का प्राकृतिक नाद था जो अबाधरूपेण केवल 'हो' रहा था।

फिर यह मात्र 'होने' का जो एहसास था, वह भी नहीं रहा। दीपा सज्ञाहीन होकर बस वंशी के स्वर की गति, आरोह-अवरोह के साथ झूम रही थी। उसके अणु-परमाणु अब स्वरों से संचालित थे, उनकी अपनी पृथक गति खत्म हो चुकी थी। नेत्र बन्द थे और इन्द्रियां, इन्द्रियातीत किसी अवर्णनीय कला-प्रभाव के लोक में आप्यायित थीं।

बांसुरी ने अन्तिम द्रुतलय पकडी तो दीपा का शरीर वेग से झूमने लगा, इतना कि वह स्वर की तीव्र चाल से होड करने लगा जैसे वह उन्मत्त हो गई हो और उन झूम में रहीं उड़ जाने या विलुप्त हो जाने की स्थिति में हो।

तन्मयता की अति में वह झूम भी बन्द हो गई और दीपा का शरीर निस्पन्द होकर कलाकार की गोद में गिर पड़ा। उसने चौंक कर संगीत रोक दिया।

उसने इधर-उधर देखा तो उसे आश्चर्य हुआ कि उन दोनों से दस गज की दूरी पर एक अच्छी-खासी लोगों की जमात जमा हो गई थी और उन सबकी भी वही हालत है जो दीपा की थी। वे चुपचाप बिना किसी शोर के स्वरों को पीते रहे थे और कुछ लगभग स्पन्दनहीन हो चुके थे।

बांसुरी के बन्द होने पर सबने एकाएक गहन प्रश्वास छोड़ा जैसे उनकी सासें चढ़ गई हों और अब उतर रही हों। कोई कुछ बोला नहीं, सब मौन उठकर खड़े हो गए और कलाकार से परिचय की आशा से उसकी ओर ताकने लगे।

कलाकार ने हिलाकर बहुत दुलार से दीपा को जगाया। वह बार-बार चेष्टा करने पर ही उठी और उसने एक आत्मविभोर दृष्टि से वेणी माधव को देखा।

सावधान होने पर समूह पास आ गया। किसी ने कलाकार के प्रति आदर बिखेरते हुए पूछा—

"क्या हम आपका परिचय पा सकते हैं···हमने ऐसा वंशीवादन तो कभी नहीं सुना।"

"मेरा नाम वेणी माधव है। यह दीपावली है, मेरी···मेरी मित्र और प्रशंसक ···मैं आगामी संगीत-समारोह में भाग लूंगा जो आकाशवाणी और दूरदर्शन से रिले भी होगा। तब आपकी सेवा करूंगा।"

"क्या आप अपना निवास-स्थान बता सकते हैं?"

"क्यों नहीं? मैं तो भारतीय विद्याभवन में यहीं, के० एम० मुंशी पथ पर रहता हूं, चौपाटी के पास ही तो है।"

"गुड, बहुत अच्छा। आपसे कब मिला जा सकता है?"

"10 बजे से दोपहर तक, सुबह, शाम तो अभ्यास करता हूं।"

"वैरी गुड, ठीक है, आप अलौकिक वादक हैं, वाह···शुभ-रात्रि।"

"शुभ-रात्रि, धन्यवाद।"

सबके जाने पर दीपा को सुधि आई और उसने घड़ी देखी। रात्रि का एक बज चुका था। दीपा घबरा गई कि अब क्या होगा। मैया लोग तो मुझे मार ही डालेंगे कि छोकरी कहीं भाग गई। उसने अपनी कठिनाई उदास स्वर में कलाकार को बताई। वह भी चिन्तित हुआ। उसने सुझाव दिया कि वह उसे टैक्सी से उसके यहां छोड़ सकता है पर पहुंचते-पहुंचते दो बज जाएंगे। वह भी तब जब कोई टैक्सीवाला मिल जाए और लुटेरा न हो, वाजिब दाम ले ले। अतिकाल में सब गड़बड़ हो गया। अब क्या करें?

दीपा बालू पर पैर के अंगूठे से चित्र बनाती-मिटाती खड़ी थी और समुद्र अपने में मस्त गरज रहा था। लहरों की उत्तुंगता अब कुछ उतार पर लग रही थी यों वेग वही था। वह काफी देर तक ऊंच-नीच सोचती रही किन्तु समुद्र उसमें बस गया था। उससे मुक्ति सम्भव न देखकर दीपा ने मुग्ध होकर कलाकार का हाथ पकड़ा—"मैं आपके साथ ही चलूंगी।"

"मैं महासागर का आभारी हूं।"

दोनों विहंसे और हाथ में हाथ डाले आगे बढ़ गए।

17

दीपा को वेणी माधव ने उसके अनुरोध पर अपने कक्ष मे टिकने-सोने का आग्रह तो किया पर अब तक समुद्र से भारतीय विद्या-भवन तक पैदल यात्रा में दीपा से सागर और संगीत का भूत उतर चुका था। भैया लोगों के क्रोध से काप कर उसने कलाकार के साथ सह-शयन को स्वीकार नहीं किया अतः सभ्य कलाकार ने, दीपा को वही, छात्रावास में अकेली रहने वाली वृद्धा संस्कृति-क्षेत्र की कार्यकर्मी मणि बेन के साथ ठहरा दिया।

दूसरे दिन दीपा थकान मिटाती रही और कलाकार से नही मिली, न शाम को समुद्र-दर्शन के लिए गई। वह अपनी तल्लीनता से डरने लगी थी

तीसरे दिन वह कलाकार के कक्ष में गई, जहां वह धीरे-धीरे बांसुरी पर अभ्यास कर रहा था। दीपा स्वर सुनते ही भड़क उठी।

"मैं कहती हूं, इसे वन्द कीजिए और मेरे साथ चलिए।"

"कहां चलना है?"

"कहा चलना है! ···अजी वाह। आप तो सब भूल गए···इस संगीतकला में ऐब यही है कि यह यथार्थ को भुलाती है···फिर कुछ और करने का मन नही होता··· यह भुलाने वाली कला है, इसमें अफीम का नशा है। संगीत कला अफीम है।"

कलाकार को याद आ गया कि बम्बई में मजदूरों की सबसे बड़ी श्रमिक हड़ताल कराने वाले कराल ढुंढकरे से दीपा को मिलाना है। उसने बजाना बंद कर दीपा को प्रभावित करने के लिए फटाफट कपड़े पहने और जल्द-जल्द निकल पड़ा। उसकी शीघ्रता देखकर दीपा की मुस्कराहट वापस आ गई—"ऐसी क्या जल्दी है, आपने तो बिना लोहा किया कुर्ता ही डाल लिया?"

"अरे, क्या करना है···फिर आप तो श्रमिकों के नेता से मिलने जा रही हैं न, वहा बन-ठन कर चलने की क्या आवश्यकता है? वहां के लिए तो यह कुर्ता भी 'बूर्ज्वा' बना देगा।"

"आप तो बूर्ज्वा—पूंजीपतियों की आदतों के ही है न···जब देखो, स्वर में खोए हुए! आप क्या जानें कि आदमी कितनी मुसीबत मे जी रहा है···तथापि···स्नेह करना और साफ रहना, बूर्ज्वा आदत नही है? मजदूर क्या साफ नहीं रहते···आप कुर्ता-धोती बदल ही डालें।"

"भला क्यों···और आपने सफाई की बात तो की पर वह···स्नेह की बात?"

"हां, कहना यह था कि मैं भी आपके साथ हूं · श्रमिकों का ख्याल है कि वे खराब कपड़ों में आपको पसन्द करेंगे, मगर मैं भी तो साथ हू न।"

"आप···हां, आप साथ हैं···यह सौभाग्य है, लेकिन आप स्नेह भी करती हैं क्या?"

'आपको···अभी भी विश्वास नही हुआ?"

"कैसे होता? परसों रात आपने प्रमाणित कर दिया न कि आप मेरी बासुरी को चाहती हैं, मुझे नहीं।"

अब दीपा को पता चला कि कलाकार जो क्यों कुंठित हैं। यह श्रीमान् परसो रात रूठ गए कि मैं इनके कक्ष मे साथ नहीं ठहरी। दीपा प्रसन्न हो गई।

"ओह। यह बात है···अब तो मैं आपके कक्ष में हू, नहीं हूं क्या?"

कलाकार कुछ आहत, कुछ उदास-सा था मगर वह संतुलित होकर बोला—"दीपाली। मैं कलाकार हू। मैं स्वर की तरह व्यक्ति को स्वतन्त्र मानता हूं। आप स्वतन्त्र है, स्वर स्वतन्त्र हैं···पर मैं स्वतन्त्र नही रहा अब···।"

"क्यों, अब क्या हो गया आपको?"

"कभी बताऊंगा···अब चलें।"

दीपा की ज़िद पर अच्छे वस्त्र पहन कर और कधों पर अंगवस्त्रम् डालकर कलाकार चला। दीपा उसकी भव्यता के सम्मुख अपने को उस मयूरी की तरह मानने लगी जो शानदार मयूर के आस-पास घूमती रहती है और जादुई मोर पंखों वाला मयूर मस्त होकर नृत्य करता है। दीपा ने सोचा कि यह मुझ पर आसक्त कैसे हो गया?

"श्रीमान् कलाकार जी। आप ये कई मंजिलों के अब तक न देखे गए भवन देख रहे हैं न, कितने वैभवमय है, और दर्शकों में अधिकतर कितने साधारण हैं न? बस इसी तरह आप बम्बई के गगनचुम्बी महाभवन है, मैं साधारण दर्शक की तरह हू।"

"अरे···दीपाली जी···यह आपको क्या हो गया है? यह तो उलटा बोल रही हैं, इसका उलटा सच है···हः हः हः···आपके मन मे नम्रता जग रही है।"

दीपावली को कलाकार की आसक्ति पर गर्व हुआ, पर वह पहले वाले मूड में चल रही थी—"आप मे भव्यता और गौरव, कला और निखार इतना अधिक है कि आप मुझे इतना मानते हैं, इतनी ममता रखते है, इस पर मुझे आश्चर्य होता है!"

"···कभी बताऊगा···अभी तो चलें। उस कराल दुदकरे से मिलना है।"

"मैं आपके साथ ऐसी लगती हूं जैसे मयूर के साथ मयूरी।"

कलाकार हो हो कर हसा। अब वह नार्मल हो आया था। उसने एक टैक्सी करनी चाही पर दीपा ने बस से चलने की ज़िद की। बस में जम जाने पर कलाकार फिर हसा और कहने लगा—"संवादी स्वरो मे प्रेम होता है, विसवादियों में विग्रह···और स्वर आतरिक होता है, आप आकारो की तुलना कर रही हैं, क्यों?"

"इसका अर्थ है, आप मान गए कि आप मयूर जैसे मनोहर हैं, मैं मयूरी जैसी···कुरूप।"

"ओह, आप बातचीत मे राजनीति ला रही हैं, दीपामती। मैं बताऊं, मैं क्या सोचता हू···मैं आपसे अधिक मनोहर कोई मानवी मिल जाए, यह मन में स्पर्धा कर रहा हू पर कोई मिलती ही नही, मिली ही नहीं···अब क्या मिलेगी···सारा देश तो ढूढ़ लिया···मैं यही गुरुत्वाकर्षित हुआ ही नही···आप मात्र मेरी मयूरी नहीं हैं, मंजिल है, आपके और हमारे परमाणु पूरक है। हमारे प्रकम्पन एक हैं···ओह दीपा!"

इस कथन से दीपा में पुन: तल्लीनता आने लगी। उसने सिर को झटका देकर और शरीर के रोमाच को रोककर मजाक किया—"श्रीमन्। जो बोम मारता है, वह मुझे नहीं सुहाता।"

बम्बइया हिन्दी मे दीपा का लहजा सुनकर और अस्वीकृति द्वारा स्वीकृति का स्वाद चखकर कलाकार उठती हसी को, समीतमयता देकर धीमे-धीमे छलकाने लगा और उसने दीपा का हाथ अपने हाथ मे ले लिया।

दोनों कराल दुदकरे के कार्यालय मे पहुचे। परिचय दिया। कराल मजदूरों से घिरा, दाढ़ी बढ़ाए, पूरी तरह न सो पाने से भारी पलक लिए, चिंतित और व्यस्त था। एक झल्लाहट उसके मुख पर थी। वह नाम के अनुरूप बड़ी आंखों वाला और कमानदार भौंहों वाला, कद का छोटा, मगर गठा हुआ, मजबूत मराठा था। वह अधेड़ उम्र का,

पढ़ा-लिखा, लड़ाकू श्रमिक नेता था। उसने कुर्सी से उठकर अतिथियों को बिठाया और अपने काम में लग गया।

"राशनकार्ड किन-किन के नहीं बने अब तक ?"

"दस-बीस हज़ार तो होंगे, पचास हजार भी हो सकते है।"

"और मुहल्लों के वालंटियर्स क्या करते रहे, बोम मारते रहे ?"

स्वयंसेवक मजदूर जवानों को शर्म आई—"नही दादा। एक सप्ताह में राशन-कार्ड बन जायेंगे लेकिन सरकारी अमला बाधा डालता है।"

"तो उनका पोकिंग विरोध क्यों नही किया ?"

"दो-चार को हमने शेक किया था, पर पुलिस ने बहुत रिप्रैशन किया, बहुत मारपीट की, कई मारे गए, फायरिंग हो गया।"

"उससे क्या हुआ ? जो मारे गए, उनकी फैमलीज का प्रबन्ध हुआ ?"

"कर रहे है, दादा।"

"मैं उनसे मिलूंगा, कब चलें ?"

"आज रात मे चलना होगा। अभी तो जीवितों की चिंता करें, यह तो युद्ध है, मरेंगे भी, मारेंगे भी।"

कराल दुंदकरे देर तक श्रमिक हड़ताल की ब्योरेवार समीक्षा करता रहा और निर्देश देता रहा। फिर एक उसास भरकर, थकी हुई मुद्रा में उसने मेहमानों की तरफ रुख किया।

"कामरेड। आपका नाम तो कराल है लेकिन आपके मन में निर्बल मजदूरों के लिए बड़ी दया है।"

दीपा के कथन पर कराल दुंदकरे ने ठहाका लगाया और पहली बार उसकी भ्रकुटियां सामान्य हुई, नही तो वे सदा चढ़ी ही रहती थी—"कामरेड दीपा। मेरा नाम तो खासा पोयटिक···शायराना है, घनश्याम नागपुरकर। पर इन मजदूर भाइयों ने यह नाम रख दिया, जिसमे मालिकों की भी शह थी···एक मजदूर औरत को एक सूती मिल के अधिपति सेठ के लड़के ने छेड़ दिया था। मैं सूती मिलों की यूनियन का कार्यकर्ता। मुझे क्रोध आ गया। मैंने उस गुंडे सेठ-पुत्र की गरदन पकड ली जो पता नही वह कैसे टूट गई, तब से मालिक-मजदूर मुझे कराल द्वन्द्वकर कहने लगे, बिगड़कर दुंदकरे हो गया। अब घनश्याम तो सिर्फ मुझे मेरी मां कहती है या मेरी पत्नी, मित्र भी कह लेते हैं।"

"गरदन कैसे टूट गई ?"

"वह जोर न लगाता, माफी मांग लेता तो मैं छोड देता। उन दिनों मैं गुरु गणेश महाराज के अखाड़े में मल्लविद्या सीखा करता था। पढता भी था, पहलवानी भी करता था। मैं कालेज मे बम्बई का चैम्पियन था, शरीर-सौष्ठव और मल्ल-युद्ध का। गुरु ने गरदन को हाथ से बांधकर, झटके देकर, कंठावरोध का दाव सिखाया था। जब वह सेठ-पुत्र मुझसे भिड़ गया तो लाचार होकर मैंने वह दाव आजमाया। वह इतना कोमल होगा यह अनुमान नहीं लगा सका, उसकी गरदन की हड्डी टूट गई।"

"फिर क्या हुआ ?"

"क्या होना था, मैं फरार हो गया और बरसों के उपचार से उसकी गरदन ठीक हो गई पर अभी भी वह टेढ़ी गरदन कर चलता है, बेचारा। मुकदमा चला पर मालिकों को गवाह नहीं मिला। हम छूट गए। उसी लफड़े में पढ़ाई छूट गई।"

"कहां तक पढ़ाई कर डाली थी आपने ?"

"एम. ए. बाद में कर लिया था, अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र पढ़ा। मार्क्सवाद घोट डाला, अब उसका अभ्यास कर रहा हूं। पहले भारतीय साम्यवादी दल—सी. पी. आई. में भी रहा।"

"पार्टी से अलग क्यों हो गए ?"

"पार्टी के अपने अंतर्विरोध हैं, अपने लफड़े। मजदूरों के मोर्चे पर सतत संघर्षशील रहना पड़ता है। पार्टी के यूनियनबाज नेता 'अर्थवादी' हो गए थे। वे पेशेवर बन गए थे। वे मजदूरों की मांग के लिए कभी लड़ते, कभी समझौता कर लेते। धीरे-धीरे डांगे का प्रभाव चुकने लगा। अन्य संगठित वामपंथी दलों ने भी यही किया। सरकारी श्रमिक संगठन, 'इंटक' तो मालिकों का साथ देती है, दक्षिणपंथी पार्टियां तो पूंजीवादी हैं। हारकर सोचा कि मजदूरों की समस्याओं का एकमात्र समाधान तब होगा, जब सारी सूती मिलों की यूनियनों की एक 'अपेक्सबाडी' शिखर-समिति हो। यही किया। कई वर्ष बीत गए यह करते। सूती मिलों के तीन-चार लाख मजदूरों में अधिकतर मेरे साथ आ गए। इस वक्त दो लाख मजदूर हड़ताल पर हैं।"

"आपको सफलता मिलेगी ?"

"सरकार सूती मिलों की परवाह नहीं करती, पुरानी मिलें हैं, पूंजीपति कहते हैं, कर्ज दो तो इनकी मशीनरी बदलें ' मालिक यह भी कहते हैं कि मिलें बंद हो जाएं तो बिल्डिगें गिराकर जमीन के प्लॉट बनाकर बेच लें और बम्बई के बाहर जाकर रुपया कहीं और लगाएं। इसमें अधिक फायदा नहीं। तस्करी में फायदा है, आयात-निर्यात में फायदा है, और अनेक धन्धे हैं। लाइसेंस मालिकों को मिल ही जाते हैं। ये कांग्रेस के फण्ड में रुपए दे देते हैं और कांग्रेसियों को चुनाव लड़ाते हैं। नेता तो मालिकों की मुट्ठी में हैं न ''इधर शकर के सहकारी कारखाने खड़े हुए हैं। उनके प्रबन्धक, निदेशक, सब उनके हाथ में हैं ''हम चाहते हैं कि सरकार मिलों का राष्ट्रीयकरण करे।"

"राष्ट्रीयकरण से तो सरकारी नौकरशाह मालिक बनेंगे, तब क्या होगा ?"

"साम्यवाद-विरोधी ऐसा प्रचार करते हैं। सरकार तो वोटों से बनती है। उस पर हमारा अधिकार हो जाए तो नौकरशाहों को हम कस सकते हैं। पर यह सच है कि वर्तमान शासकदल यह नहीं कर सकता। वह तो लुटेरा दल है। सब लूट में लगे हैं।"

"मारो, खाओ, हाथ न आओ—यह व्यवहार है उनका।" दीपा ने कहा।

"हां, एक्जैक्टली, आप सही कहती हैं, मारो, खाओ, हाथ न आओ।"

"लेकिन चुनाव में जनता वामपंथियों का समर्थन नहीं करती।"

"कैसे करे ? उनका दिमाग खराब करने के लिए उनके पास व्यावसायिक फिल्में हैं, पत्र-पत्रिकाएँ हैं, आकाशवाणी है और अब दूरदर्शन है। शासकदल और पूंजीपति एक हैं। मध्यवर्ग अपने आराम और उन्नति में व्यस्त है। निम्नवर्ग असंगठित और बिखरा हुआ है। इसलिए सोचा कि इस विराट बिखराव में मजदूरों के संगठन को संघर्षशील बनाया जाए; मजदूर एक हो जाएं, किसानों में काम हो, बुद्धिजीवी साथ आ जाएं तो यह जो विशाल मध्यवर्ग है, यह भी झुकेगा। यह बड़ा ढुलमुल होता है न, जिधर रंग देखा, साथ हो लिए।"

"लेकिन वह शासकदल और सेठ और उनके पिछलगुए एकता क्यों होने देंगे ? प्रचार के साधन उनके पास हैं न ?"

कराल दुदकरे अपना माथा मलता रहा। फिर सोचकर बोला—"यह एकता

कोई एब्स्ट्रैक्ट, कोई अमूर्त, कोई निराकार चीज नहीं है। आप मजदूरों, छोटे किसानों को, अन्य पीड़ितों, शोषितों में प्रचार करते हैं। प्रचार भी कीजिए पर प्रचार के साथ किसी वाइटल इश्यू, किसी जरूरी मांग पर उन्हें लड़ाइए, तो यह एकता, संघर्ष के दौरान कायम होगी···बातों से तो बातें कट जाती है।"

"आप इस हड़ताल में असफल हो गए तो ?"

कराल हंसा—"अरे। मैं, हम सफल कहां हुए ? थोड़ी-बहुत सफलता मिली है, बस, लेकिन यह काम ऐसा है कि इसमें हमारे जैसे हजारों मर-खप जाएंगे, लगातार संघर्ष हो, बार-बार हार के बावजूद लड़ाई जारी रहे, दाव-पेंतरे बदलते चलें, तो···और··· देखिए न; उनके अंतर्विरोध बढ़ रहे हैं, उनमें फूट है, भ्रष्टाचार है, सग्रह है, लोभ है, विलासिता है, जातिवाद प्रतियोगिता और कुनबापरस्ती है···लोगों की समस्याएं वैसी ही है, विकास हो रहा है पर वितरण में विषमता है, धनी और अधिक धनी हो रहे हैं, गरीब, महगाई, बेरोजगारी से बेजार हैं···साम्राज्यवादी देशों का पंजा सख्त हो रहा है, अंग्रेजी-अमरीकी कम्पनियां लूट रही हैं···कर्जदारी बढ़ रही है···चालीस करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे हैं···यह कब तक चलेगा ? यही हमारा जनाधार है। इस विपन्न-समुदाय को हम शासकों-शोषकों से भिड़ा सकते हैं। क्यों नहीं ? हम कामयाब जरूर होंगे, पर हम नहीं, आज के कार्यकर्त्ताओं के नाती-पोते या उनके पोते···तो भविष्य हमारा है, वर्तमान उनका है···हां।"

"यह तो लम्बी प्रक्रिया है···क्या हम इस परिवर्तन की प्रक्रिया को तीव्र करने के लिए सशस्त्र संघर्ष नहीं छेड़ सकते ?"

"सिस्टर। यह तो साथ-साथ हो रहा है न ? नक्सलवादी, हिमालय की तराई, पंजाब में कहीं-कहीं, आन्ध्र में, केरल में, झारखंड में, बिहार में, संथालों में, कलकत्ता में, कई जगह पाकिटों में, कृषक-क्रांति के रूप में सशस्त्र संघर्ष चल रहा है। अभी विभाजित हैं, बड़े झगड़े हैं, नीति सम्बन्धी, कार्यनीति सम्बन्धी। कोई त्रात्स्कीपंथी है, कोई माओ-वादी, कोई क्रांतिकारी···समाजवादी, लेकिन हो तो रहा है, होता रहेगा। वे गलतियां कर रहे हैं। पुलिस और सेना से मर-मिट रहे हैं, लेकिन ध्यान दीजिए कि निःस्वार्थ और बलिदानी नया खून आ रहा है। वह बह रहा है, उसमें टिनैसिटी है, जिद है तो जिन्दा-बाद भी होंगे। जिसमें जिद नहीं है, जो व्यक्तिवादी है, उसे ही लगता है कि कुछ नहीं होगा।"

"कमाल है ! आपमें कभी निराशा, थकावट नहीं आती ? मजदूरों की जड़ता, कलह, स्वार्थ, गिरावट और गिरगिटपन देखकर कभी मन उखड़ता नहीं है ?"

"सिस्टर दीपा, आप क्यों भटक रही हैं ? आपकी मनुष्यता आपको भटका रही है न ? आपके बारे में भूतनाथ ने मुझे पत्र लिखा है। वह कामरेड भूतनाथ क्यों जान की बाजी लगाए हुए है ? आप जानती हैं, वह डाकुओं में क्यों समय बरबाद कर रहा है ?"

"कुछ-कुछ आभास तो है लेकिन पूरी तरह उसे कौन जानता है ? वह भूतनाथ है न, पता नहीं, उसका रहस्य क्या है, वह कैसा आदमी है ? क्या चाहता है ?"

"भूतनाथ के पास एक विराट बोध, एक विजन है, एक डिजायन है, वह बहुत दूर का देखता है, ···आपका परिचय ?"

दीपा ने हंसकर वेणी माधव की ओर देखा और परिचय दिया। कहा कि यह शुद्ध कलाकार हैं और इस समय भी किसी राग-रागिनी के ध्यान में होंगे। इन पर पूरा

भरोसा किया जा सकता है। यह भी भूतनाथ के श्रद्धालु हैं। उसने संक्षेप में इटावा की घटना सुनाई।

"कामरेड कलाकार। तो सुनिए'''कामरेड भूतनाथ अपराधियों में से क्रान्ति के लिए वॉलिंटियर ढूढ़ रहा है। रहस्य इसमे क्या है? कुछ भी नही, पर वह पत्रकार है, उसकी टैक्टिक्स, उसकी कार्यनीति अपनी है। हम उसमे हस्तक्षेप क्यो करे? आपको आश्चर्य होगा यह जानकर कि वह मेरे अनुरोध पर इस बम्बई मे भी क्रान्तिकारियों को भेज चुका है। वे काम करके जगलो मे लौट जाते है। यहा रुककर मुकदमे मे कौन फंसे?"

"कैसा काम करके?"

"बस, काम तमाम कर देते है और चले जाते हैं'''आप ब्योरा जानकर क्या करेंगी? वैसे आपको बताया जा सकता है। यो समझिए कि मछुआरो की यूनियन है न हमारी, वे भूतनाथ के कार्यकर्त्ताओं को बाहर कर देने मे मदद कर देते हैं। उन्हें कोई पकड़ ही नहीं सकता।"

दीपा और कलाकार ने एक-दूसरे की तरफ चकित होकर देखा, जैसे एक रहस्य से पर्दा उठ गया हो। दीपा ने पूछा—"कामरेड कराल। आपको दादा कहूँ'''तो दादा, हमारे भूतनाथ की वह योजना, वह डिज़ायन क्या है?"

"सीधी-सी बात है कि यह जो कानूनी ढंग से जनता में काम करने वाले वामपंथी दल हैं यानी शांति और संविधान को मानकर चलने वाले, चुनाव मे भाग लेने वाले, ये सी पी. आई., सी. पी. एम., फारवर्ड ब्लॉक, क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी, सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर वगैरह, ये जनमत बना रहे हैं। इनके फ्रन्ट-सगठन हैं, जैसे प्रगतिशील लेखकसंघ, इप्टा, जनवादी लेखक कलाकार सघ, किसान सभाएँ, नवजनवादी सगठन आदि सब मिलाकर ये जनमानस को काफी प्रभावित कर रहे हैं। इन्हें एक साथ देखना चाहिए। ये चुनाव मे भाग लेकर विधानसभाओं और लोकसभा मे सरकारी निर्णयों को भी प्रभावित करते हैं, हवा बनाते हैं, किसानो, मजदूरो, भूमिहीनों, कमजोर तबको मे काम करते है, विभिन्न पेशेवर सगठनो—दक्षवर्ग-बाबू-शिक्षक-कर्मचारी आदि छोटी-बड़ी नौकरियो वाले सगठनो मे सक्रिय है। अब इनके साथ सशस्त्र संघर्ष के विश्वासियो को मिलाकर देखें ' यदि इन सब मे कार्यगत एकता हो जाए'''।"

"आपका यह 'यदिवाद' कष्ट दे रहा है।" दीपा ने मुस्करा कर कहा।

"देखो कामरेड दीपा। 'यदि' और 'निश्चय ही' ये दो शब्द हैं। कार्य हो और होगा ही, परिस्थितिया, लडाई की चेतना पैदा कर रही हैं, चेतना परिस्थितियों को प्रभावित कर रही है'''तो यह जो हो रहा है, यह सब एकता के लिए मजबूर करेगा। तब 'यदि', 'निश्चय ही' मे बदल जाएगा'''भूतनाथ सारे वामपथियो यानी व्यवस्था-विरोधियों की कार्यगत एकता चाहता है, व्याख्याएँ अलग-अलग रह सकती हैं, रहेंगी, दल-उपदल भी अलग रह सकते है पर बुनियादी महत्त्व के मुद्दों पर एकता रहे, यह हिजायत है। वह स्वतत्र लड़ाकू सगठन बना रहा है।"

"कोई उदाहरण बताइए, कामरेड।"

"उदाहरण, देखिए! यहा हम शांतिपूर्ण, वैधानिक ढग से हड़ताल चला रहे हैं। जब धरना, प्रदर्शन या आमना-सामना होता है तब श्रमिकों के वर्ग को सभालना पड़ता है कि ये दुस्साहसी हरकत न करें अन्यथा मारे जाएगे। सरकार के पास पुलिस बल है, सेना है, भय है। अब देखिए, मालिकों के गुडे हमारे लोगों को मारते हैं, स्त्रियो पर

बलात्कार करते हैं। लाचार करके उन्हें खरीदते हैं, हड़ताल तुड़वाते है। कानून उनका, पुलिस उनकी, जनमत उनका, समाचारपत्र उनके···अब हम क्या करें ?···यह जो पूंजीवादी कानून है, यह 'मारो हाथ न आओ' की नीति पर चल रहा है और वह मारते खां लोगों को खोज रहा है। जहां देश में जरूरत पड़ती है, हम उससे सहयोग लेते हैं। यह भूतनाथ है न, सो भेदिया की पद्धति पर, जासूसों की तरह काम करता है, संघर्ष को पवित्र मानता है, शेष किसी भी कार्यनीति को अपना लेता है। उसके सरकार से भी सम्बन्ध हैं। सही बिन्दु पर वह उसका भी साथ देता है। मसलन् वह डाकुओं को पकड़वा देता है यदि वे आत्मसमर्पण नहीं करते या जनकार्य में मदद नहीं करते या अनावश्यक रूप से आततायी हो जाते हैं।"

"आप यह कहना चाहते हैं कि वह डाकुओं का हृदय बदल रहा है ?"

"डाकुओं के भी हृदय होते है। फिर वे भी कई तरह के हैं। गिरोह में भी नाना प्रकार के बागी हैं। डाकुओं में मानसिंह का नाम आपने सुना होगा ? उसने पाकिस्तानी हमले के समय सरकार को कहा था कि उसके गिरोह को अग्रिम मोर्चे पर भेज दिया जाए। वह देश के लिए लड़कर मरने को तैयार है। तो ज़ाहिर है, कामरेड, वे भी सामाजिक-सम्मान चाहते हैं। वे विवश होकर डाकू बन रहे हैं। यह व्यवस्था ही तो उन्हें अपराधी बनाती है। पुलिस, गांव के जबरदस्त लोग, आपसी वैमनस्य, ये सब कारण डाकू बनाते हैं तो उनमें भी ऐसे लोग हैं जो सामाजिक कार्य के लिए प्रस्तुत हो जाते हैं।"

"आश्चर्य है !"— दीपा के नेत्र विस्फारित थे।

"भूतनाथ बागियों को व्यवस्था का शिकार मानता है। हमदर्दी और प्रबोध से, सामाजिक प्रतिष्ठा की इच्छा से, वे काम कर जाते हैं। आप एक बात भूल रही है। डाकू जान हथेली पर लेकर घूमते हैं। उनकी मौत निश्चित है। कोई डाकू अधिक नहीं चल पाता। अंततः वे अपराधी हैं, निष्ठुर और निर्दयी हैं। जब उन्हें मरना ही है तब यदि उन्हें यह लगे कि अमुक काम से उन्हें शहीद मान लिया जाएगा या उनकी मौत के बाद लोग उनकी इज्जत करेंगे तो वे अपने दुस्साहस का प्रयोग, सामाजिक लक्ष्य के लिए क्यों नहीं करें ? याद रखिए, कामरेड, उनका सामूहिक हृदय परिवर्तन सम्भव नहीं है पर व्यक्तिशः उनकी मति और मन बदलता है और उस क्षण को लाने में भूतनाथ समझाने-बुझाने से लेकर दबाने तक, हर उपाय काम में लाता है। वह इस मामले में सचमुच आदमी नहीं, भूत है।"

"यह···यह भूतनाथ, असाधारण है···यह ऐसा क्यों बन गया, कैसे ?"

"यह लम्बी कहानी है कामरेडो ! और सच तो यह है कि हम भी जानते नहीं हैं। सशस्त्र क्रान्तिकारियों के जाने माने नेताओं की सिफारिश पर हमने भूतनाथ को अपना माना है और उसने आज तक उस विश्वास को निभाया है। हम स्वयं नहीं जानते कि वह क्या चीज़ है···कभी-कभी तो लगता है कि वह देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों का भूतनाथ है जो बीसवीं सदी के इस दौर में पुनः जन्म लेकर जन-जासूस बन गया है। भूतनाथ एक व्यक्ति है, एक मिथक भी है, एक रहस्य भी, एक नाटक भी है, एक ट्रेजडी भी।"

"ट्रेजडी कैसे ?"

"आप तो उसकी प्रिय कार्यकर्ता हैं, आप समय पर सब जान लेंगी। अब बहुत विलम्ब हो गया है। चलिए, कुछ काम भी करें और आपको अपने श्रमिकों की कला भी दिखाएं।"

"अवश्य, अवश्य।"

कराल, दीपा और कलाकार कुछ श्रमिक साथियों के साथ बसयात्रा के द्वारा, झुग्गी, झोंपड़ियों और चालों में पहुंचे। मिलों के बन्द हो जाने से बेकार मजदूर बहुत खराब हालत में पहुंच गए थे लेकिन कराल दुदकरे ने, सेना की तरह, स्वयंसेवकों, कार्यकर्त्ताओं और फुलटायमर—पूरे समय काम करने वाले साथियों के संगठन द्वारा, बेकार मजदूरों को जीवन-निर्वाह के लिए विभिन्न कामों में लगाया। कितने अकुशल मजदूर जूतापालिश करेंगे, कहां-कहां बैठेंगे, कितने श्रमिक चौकीदारी करेंगे, कहां-कहां करेंगे, कौन ठेला लगाए, कितने कमीशन पर कपड़े बेचेंगे, कितने स्टेशनों, गोदी और बसों पर कुली बनेंगे, पढ़े-लिखे मजदूरों में कौन कहां, लिपिक के काम पर लगाया जाएगा, कौन बन रहे मकानों में ईंट-गारा ढोएंगे, खुदाई-भराई करेंगे, कितने सरकारी मांग पर सड़क बनाने या दूसरे कामों में जाएंगे,'' पचास-पचास मजदूरों पर एक काडर या साथी प्रबन्धक, फिर दस-दस, बीस-बीस प्रबन्धकों पर एक क्षेत्रीय प्रबन्धक और सारे क्षेत्रीय प्रबन्धकों पर एक शिखर समिति और उसके पीर-बवर्ची-भिश्ती-खर, कामरेड कराल दुदकरे।

दोनों श्रद्धा से मुस्कराए। दीपा और कलाकार रजिस्टरों में एक-एक मजदूर का नाम, ठिकाना, काम, परिवार के सदस्य, मूलस्थान देखकर प्रसन्न थे, विस्मित भी''' कमाल है। जिस बम्बई नगर की विशालता और जटिलता देखकर बुद्धि चक्कर में पड़ जाती है, उसके एक-एक चप्पे से, एक-एक नस से श्रमिक साथी परिचित हैं और कहीं, विनय और शील से, कहीं करुणा जगाकर, कहीं दाव और धौंस से, अवसर के अनुसार न जाने क्या-क्या उलटा-सीधा करके, कामरेडों ने श्रमिकों को बिना वेतन निर्वाह करने के लिए उन्हें अपने पैरों पर खड़ा किया है और कितना विशाल प्रबन्ध है। किसी एक व्यक्ति को भी उसके भाग्य पर नहीं छोड़ा गया।

जब एक बड़ी-सी चाल में, कार्यालयनुमा वातावरण में सब बैठे थे, चाय-पानी और चलवल चल रही थी। तभी एक घबराया हुआ श्रमिक आया और चिल्लाने लगा,

"कामरेड ! मारे गए, दादर की एक चाल में एक मजदूर औरत पर मालिक के गुंडों ने रेप (बलात्कार) कर दिया।"

"फिर क्या हुआ ?"

"होना क्या था, उस औरत ने मिट्टी का तेल छिड़क कर आत्महत्या कर ली'''लेकिन एक बलात्कारी गुंडा मारा गया'''जल्दी चलिए, कामरेड, पुलिस धड़ाधड़ मजदूरों को गिरफ्तार कर रही है। उसको बहाना मिल गया है कि कत्ल मजदूरों में से किसी ने किया है।"

"हम चलते हैं लेकिन यह तो बताओ कि कत्ल किसने किया ?"

"साथी। हमें पता नहीं, किसी मजदूर ने हमला किया ही नहीं, बस चिल्लाते-चीखते रहे क्योंकि गुंडों के पास हथियार थे और वहां खून-खराबा हो जाता। फिर आपका आर्डर नहीं है कि कोई लफड़ा हो। इससे मजदूर प्रदर्शन की तैयारी करने लगे। इस भागदौड़ और हाय-तौबा के बीच न जाने किस आदमी ने भागते हुए रेपर—बलात्कारी पर उछल कर चाकू से वार किया और उसे पूरी तरह गोद कर भाग लिया।"

"वह कौन था ?"

"वह यह पर्चा छोड़ गया साब जो पढ़ा नहीं जा रहा है।"

कामरेड कराल ने पर्चा लेकर पढ़ना शुरू किया—"हम गणसमिति के सदस्य कानूनी कार्यवाही का कानूनी जवाब देते हैं, गैरकानूनी का गैरकानूनी। जिसे हमारे साथी ने चाकू से गोदा है, वह बलात्कारी था। उसे जीने का कोई हक न था'''सरकार का कानून इतना दोषपूर्ण है कि अपराधी को सजा मिल नहीं पाती। सरकार और सरकारी दल खुद अपराधियों को संरक्षण देते हैं। ऐसी हालत में औरतजात का अपमान करने वाले बदमाश, गुंडे और सफेदपोश अपराधियों को हमने सबक सिखाया है। हमने बलात्कारी को बधिया कर दिया है।" (गणसमति, दादर के सदस्य और गणपति गजानन वधकरे।)

"बलात्कारी को शिखंडी बना दिया क्या?"

"उसने उस गुंडे के अण्डकोश काट डाले'''लेडीज माफ करें, यह कहने के लिए।"

सब विस्मय-विमूढ़ हो गए, मगर इसमें कहीं विनोद का स्पर्श भी था, सो, कुछ तो हंसने लगे।

कराल ने रहस्यमय ढंग से, गर्व के साथ दीपा और कलाकार की ओर देखा—"*कामरेड आप समझ गए न?*"

"समझ गए, यह भूतनाथ की करतूत है।"

सब लोग चित्रलिखित से ताकते रहे गए।

18

जिला भिंड के विलाव गांव के पास सिंध नदी में बैसुली नदी आकर मिलती है। दो तरफ से, दो नदियां परस्पर भेंटती है, उस स्थान पर जलधाराएं एक द्वीप बनाती हैं। उस छोटे से द्वीप पर एक राधाकृष्ण का मंदिर बना हुआ है जो चार-पांच सौ वर्ष पु'''ा होगा लेकिन बरसात में इस द्वीप पर नदियों की बाढ़ से पानी चढ़ कर मंदिर के र चबूतरे को काटता रहा है अतः पुराना मंदिर गिर गया था। उसकी जगह दोबारा ासपास के लोगों ने नया निर्माण किया है और एक छोटा सा मगर मजबूत मंदिर बना दिया है। टूटे-फूटे चबूतरे की मरम्मत कर उसके आसपास बड़े-बड़े पत्थर के ढोकों को इस तरह चुन दिया है कि बरसात में भी पानी की तेज धारा उन ढोकों से टकरा कर रह जाती है पर चबूतरा और मंदिर सुरक्षित रह जाता है। बिलाव गांव के बागी गुमानसिंह ने इस मंदिर-निर्माण में बहुत सहयोग दिया था।

चबूतरे पर खड़े होकर घनघोर जंगल के बीच, दो नदियों के संगम के बीच का द्वीप अवर्णनीय दृश्य देता है और चारों तरफ जलराशि श्री राधा-कृष्ण का रात-दिन कीर्तन करती रहती है। यहां राधा-कृष्ण की ऐसी मनमोहिनी प्रतिमा है कि आसपास के किसान और दूसरे लोग दर्शन करने आते हैं, विशेषकर श्रावणी में यहां हजारों का मेला भरता है और होली पर यहां फागें होती हैं।

जब मानपुरा, जिला मैनपुरी में गुलब्बा डाकू धानुकों के घर जलाकर होली खेल रहा था और जब उ० प्र० के मुख्य मंत्री राजा साहब राजनाथ सिंह, मानपुरा

जाकर यह घोषणा कर रहे थे कि छः माह के भीतर यदि डकैत-उन्मूलन नही हुआ तो वह त्यागपत्र दे देंगे, तब फागुन में होली के आसपास एक रात प्रमुख डकैतों का मेला राधाकृष्ण-मन्दिर पर होना तै हुआ।

बिलाव गाव के पास एक गाव के डकैत गुमानसिंह ने यह आयोजन किया था जो साहस, आतक और शान मे सर्वोपरि माना जाता था। वह जाति का न ठाकुर था न गैरठाकुर। वह खगार जाति का था, इसलिए वह ठाकुर, गैरठाकुर जातियों के बागियो को राजी करने मे कामयाब हो गया था। तै हुआ कि बागी, श्री राधाकृष्ण मंदिर की साथ-साथ पूजा करेंगे और उसी चबूतरे पर उन्हें खिताब या पद दिए जाएगे। वैसे होली पर नए-नए नाम दिए जाते हैं पर बागियों को नाम मजाक मे नही, गभीरता से प्रदान किए जाएगे जो उनकी शान बढाने वाले होंगे।

बैसुली—सिंध नदी के सगम पर बागियो के जमावडे का समाचार पुलिस को नहीं लगा तो भी सावधानी के लिए भिण्ड के एस. पी. ने एक पुलिस टुकड़ी को सगम पर भेज दिया था। लेकिन गुमानसिंह के एजेण्टो ने, टुकडी के इचार्ज इंस्पेक्टर दूधनाथ को रिश्वत देकर राजी कर लिया था कि वह पूजा की रात वहा से टुकड़ी हटा लेगा ताकि जनता में पुलिस का आतक न रहे और वह होली के दिनों गाना-बजाना, फाग-रंग कर सके। चूकि सगम पर कोई बड़ी बस्ती नही थी, कामचलाऊ एक-दो छोटी दुकानें थी, इसलिए पुलिस रुपए लेकर इधर-उधर हो गई पर पुलिस और काल का क्या भरोसा, सो गुमानसिंह ने बागियों की एक मजबूत लाइन सगम के चारो तरफ लगा दी थी जो सशस्त्र थी और जो दिन मे दूरबीनो से पुलिस को देखती और रात में तो बागियो के कान ही दूरबीन का काम करते हैं। बागियों की टुकड़िया, दो-दो, तीन-तीन की संख्या मे आसपास टोह लेती रहती और मन्दिर मे डेरा डाले गुमानसिंह को सूचना देती।

उरई जालौन की ओर से सुषमा नाइन अपने प्रेमी जुझारसिंह के साथ मय गिरोह के आई थी, जो सचमुच आकर्षक थी और जिसे देख-देखकर लोग आहें भरते थे। क्वारी, सोबरनसिंह, कालिया वगैरह के साथ वही संगम के आसपास वन मे एक स्थान पर डट गई थी। उसके साथ भूतनाथ और अमरीकियो की टोली थी। मैनपुरी का गुलाबसिंह नही आ सका था क्योंकि मुख्यमत्री के दबाव से पुलिस उसको घेरे हुए थी पर उसी क्षेत्र का दलराम अहीर अपने अहीर बागियो के एक बड़े दल के साथ, वन मे एक जगह टिका हुआ था। करौली-हिण्डोन क्षेत्र का गूजर बागी करन सिंह उर्फ करना भी गूजरो का गिरोह लेकर आ गया था और बिल्हौर, कानपुर का कुर्मी डाकू बहादुर चौधरी भी वहीं था। उस्ताद तस्लीम खान नाम का एक मुसलमान बागी अपने शागिर्दों को समेट कर लाया था और अपनी महफिल मे शेरो-शायरी सुना रहा था।

इस सूची मे ठाकुर वीरसिंह-धीरसिंह डाकू भाइयो का कहीं नाम निशान नहीं था, जिन्होंने क्वारी पर सामूहिक बलात्कार कराया था और जिन्हें मारने के लिए क्वारी, खून की प्यासी काली की तरह दिन-रात एक किए हुए थी। उसके भेदिए वीरसिंह-धीरसिंह के पीछे लगे रहते थे और वीरसिंह-धीरसिंह के आदमी क्वारी के गिरोह की शिकार की टोह मे व्यस्त थे मगर अभी तक आमना-सामना हो नहीं पाया था क्योंकि दोनों गिरोह चाक-चौबन्द थे। इस झगड़े मे गुमान सिंह दलराम, करना गूजर तथा बहादुर कुर्मी तटस्थ थे लेकिन उनकी सहानुभूति क्वारी के साथ थी, उस्ताद तस्लीम तो क्वारी के कभी बाकायदा उस्ताद रह चुके थे, इसलिए वह भी क्वारी को वीरसिंह-धीरसिंह के विरुद्ध भेद दिया करता था। उधर सुषमा नायन अपने हुस्न और ठाकुर जुझारसिंह की

की ठसक के बल पर क्वांरी से ईर्ष्या रखती थी और वीरसिंह-धीरसिंह की मदद करती थी। जुझारसिंह तो ठाकुर थे ही। वह वीरा-धीरा का पक्ष लेते ही। छुटभइए और साधारण डाकू भी जाति-पाति या अपने सम्बन्धों-व्यवहारवर्ताओं के आधार पर या तो वीरा-धीरा की तरफ थे या क्वारी की तरफ। ऐसे साधारण या मंझोली हैसियत के डाकू भी अपने छोटे-छोटे गिरोहों को लेकर आ-आकर वन में डेरा डाले हुए थे। चारों ओर रहजन या लुटेरों की भी अपनी छोटी-मोटी टोलियां थीं यों वे भी अपने को बागी ही कहते थे। इन चोरों में सेंगर नदी के किनारे, जुआ गाव के पास रहने वाला प्रसिद्ध चोरों जंगली-मंगली का वंशज भी था जो चोरी की कला में जिलाजीत माना जाता था। उसका उपनाम सेंगर था और उसके जोड़ीदार का नाम था डंगर। वे दोनों संगर-डंगर कहलाते थे और बागियों में बहुत लोकप्रिय थे। वे सबका काम कर देते थे और जेल में भी रह आते थे। सगर-डंगर ने अफसरों के घरों में भी चोरियां कर और बाद में माल लौटा कर उनसे प्रमाणपत्र पा लिए थे। वे मनोरंजक चोर थे और सबको हंसाते रहते थे।

भूतनाथ ने क्वांरी से बागियों के आपसी सम्बन्ध जानकर, उनकी फूट और जुड़ाव का रहस्य रोज़ी-मैरी की टोली को समझा दिया था और अमरीकी इस नाटक को समझ कर अब एक साथ बागियों के समारोह देखने के लिए व्याकुल थे। क्वारी के निर्देश पर भूतनाथ और अमरीकियों ने एक गुफा में अड्डा जमाया था ताकि अगर पुलिस की दबिश हो, तो वे लोग बागियों से अलग रहकर अपना बचाव कर सकें। बागी तो जंगल में छिप कर पुलिस से भिड़ सकते थे।

संगम-मन्दिर के चबूतरे पर रात होते ही बागियों के दल, अपनी-अपनी टोलियों में, अपने सरदारों के साथ बैठते गए। भूतनाथ के दोनों ओर रोज़ी-मैरी थीं और कुछ आगे क्वारी सोबरन के साथ। राबर्ट-ब्रोमले तथा दोनों वयस्को मिस्टर दोफ तथा स्टेन-बेक ने कैमरे सम्हाल लिए और टेपरिकार्डर ऑन कर दिया लेकिन गुमानसिंह ने उन्हें झिड़क दिया कि वे फोटो तो ले सकते हैं मगर आवाज रिकार्ड नहीं कर सकते। खतरा तो छायाचित्रों में भी था लेकिन प्रमुख बागियों के फोटो तो पुलिस के पास थे ही और वे पत्रिकाओं में छप भी चुके थे। तथापि गुमानसिंह ने बागियों को आगाह किया कि वे ढाटे बांध लें नहीं तो उनके फोटू सारी दुनिया में फैल जाएंगे। जिन्हें शौक हो और डर न लगता हो, वे मुंह खोले रहें। खुद गुमानसिंह ने अपना मुख खुला रखा। वह पुलिस को सदा अंगूठा दिखाया करता था और दुस्साहसी था। उसने अमरीकियों से फोटो खींचने, उनकी सभा में भाग लेने के लिए भी अच्छी-खासी रकम ले ली थी, जिसे बागी सरदारों में बांट दिया गया था और इस जलसे का खर्च भी निकल आया था।

सर्वप्रथम, पुजारी नारायणदास को बुलाया गया। पुजारी अधेड़ था और बागियों का अभ्यस्त था। उसने थाली सजाई और आरती का सरंजाम किया। वह ब्राह्मण नियम का पक्का था। उसने आज्ञा दी कि कोई व्यक्ति मूर्तियों के कक्ष में नहीं घुस सकता। सब बाहर से दर्शन करें। मूर्ति-कक्ष के बाहर बरामदा था। बरामदे के बाहर चौकोर-चबूतरा। बागियों की भीड़ मन्दिर के सामने हाथ जोड़कर खड़ी हो गई और कीर्तन शुरू हो गया। चोर संगर-डंगर सेवा-शृंगार में पुजारी का साथ दे रहे थे और बागियों को भीड़ में से आ-जा रहे थे।

पुजारी ने कीर्तन में ढोलक, मजीरे, हारमोनियम की गम पर श्री राधाकृष्ण की स्तुति और गायन के मध्य आरती प्रारम्भ की। बाएं हाथ से घण्टी टुनटुनाता वह भक्ति-

भाव में लीन होकर राधा-कृष्ण की मूर्ति के आसपास, एक लय में आरती की थाली घुमाने लगा। सब उस पवित्र भावना में डूब गए और बन्दूकें धरती पर टिका कर, दोनों हाथ जोड़ कर खड़े हो गए। आरती के समय भूतनाथ ने देखा कि मन्दिर के आसपास जल की धाराएं चुपचाप बह रही हैं और दीयों की पक्तियां तथा पेट्रोमैक्स का प्रकाश लहरों में मनोहर आकार बना रहा है। उधर जगल का अन्तहीन विस्तार और ऊपर आकाश और चमकते तारे, हलकी हवा, सब मिलकर अलौकिक समा बाध रहे थे और दूर बाघ की गरज वातावरण को भय वस्त्र रही थी। किनारे के वृक्ष मानो इस अद्‌भुत दृश्य की गवाही मे शात खड़े थे।

पुजारी जी आरती की थाली लेकर मूर्ति-कक्ष या गर्भगृह से बाहर आए। आरती लेने के लिए बागियो की भीड़ टूट पड़ी। पुजारी ने डाटा—"सब कोई अपने स्थान पर रहें। आरती वही पहुचेगी।"

सब रुक गए। यह धार्मिक-अनुशासन देखकर मिस्टर शेफ ने मिस्टर स्टेनबेक से कहा—"यू सी, इट इज स्ट्रेंज दैट दिस हिन्दू रिलीजन इज समटायम्स सो डिसीप्लिन्ड आल दो देयर इज नो आर्डर इन दिस सैक्ट—आप देख रहे हैं, कितना आश्चर्य है कि इस हिन्दू धर्म में भी कभी-कभी बड़ा अनुशासन दिखाई पड़ता है। यो इस सम्प्रदाय मे अनुशासन है ही नही ''यू सी, इडिया इज पैराडाक्सीकल, इस भारत मे परस्पर विरोधी बातो का बाहुल्य है।"

"य: यू आर रायट—आप ठीक कह रहे हैं।"

"यू सी, अ प्रीस्ट इज डामीनेटिंग गैंग्स आफ डिकोइट्स—आप देख रहे हैं कि एक पुरोहित पुजारी डाकुओं पर रौब पेल रहा है।"

"दिस इज इडिया, माय डियर, हियर रिलीजन एण्ड बेरहमन हैव सुप्रीम पोजीशन"—यह भारत है। यहां धर्म और ब्राह्मण की मर्यादा और मान सबसे ऊंचा है।"

पुजारी की थाली नोटो और सिक्को से भर गई। इतनी दक्षिणा उसे कभी नही मिली थी पर वह प्रसन्न नही था। वह झल्लाया हुआ-सा था और बात-बात पर बागियों और बदमाशो को डाट रहा था। वह उनसे छू न जाए, इसका खयाल रख रहा था और जब कोई उसका हाथ छू लेता था तो बिगड़ उठता—"अबे हो क्या? मुझे छुओ मत।"

बागी सहम कर पीछे हट जाते मगर 'सगर-डगर' को विनोद सूझा। वे बोले—"पुजारी महाराज। आज तो काम बन गया, सब दलिद्दर दूर हो गया न?"

पुजारी क्रोध से आग हो गया। वह जलती आंखों से चोरों की तरफ घूर कर बोला—"धिक्कार है, इस धन पर, इस पर मनुष्य का रक्त लगा है। इसका उपयोग मैं नही कर सकता।"

"अरे-अरे, महाराज, आप तो नाराज हो गए!"

"तुम चोर हो, चुप रहो। यह श्री राधाकृष्ण का मन्दिर है, सेंध लगाते पकड़े जाओगे।"

अब बागी मुस्कराने लगे। चोर पुजारी को छेड़ रहे थे "महाराज, कन्हैया जी केन हमी सच्चे भक्त है, वे तो महाचोर थे, मणि चुरा लाए।"

"तू पापी है, भगवान की समकक्षता करता है।"

"तो भगवान चोरी करने क्यों गए?"

"बताऊं तुझे'''तू नहीं समझ सकता, भगवान श्रीकृष्ण की लीला सगर-डंगर समझेंगे क्या?"

"महाराज, हममें भी तो भगवान की जोत है।"

"तुझमें ? अरे जो ज्योति थी, उसे तो तूने अपराध से बुझा दिया···पापी, तू चुप रहेगा या श्राप दूं तुझे ?"

चोर कान पकड़ने और क्षमा मांगने लगे। सब प्रसन्न होकर ठहाके लगाने लगे। पुजारी उन पर भी फैल गया—"क्या ही ही, ही ही करते हो ! लो, आरती लो और अपना काम करो। भगवान अब शयन करेंगे। चलो शयन-कीर्तन में भाग लो।"

बागी दब गए। हाथ जोड़कर शयन-कीर्तन में भाग लेने लगे। पुजारी ने भगवान को शयन कराया और मंदिर बन्द कर, ताला लगाकर इस तरह चला गया जैसे वह कतई प्रभावित नहीं हुआ हो। उसने रुपयों से भरी थाली वहीं मंदिर में भगवान के चरणों में छोड़ दी थी। मिस्टर शेफ ने मिस्टर स्टेनवेक के कान में कहा—"यू सी माय डियर। हाउ द प्रीस्ट इज ऑन हायर लेविल दैन दीज पीपुल···आपने देखा यह पुजारी इन लोगों की तुलना में कितना ऊंचा है।"

"यः रियली, हि इज अ होली मैन, हि इज नॉट ग्रीडी आफ मनी। हि डिस्डिन्ट एक्सेप्ट द मनी। आय थिंक, हि विल इन्वेस्ट दिस अमाउन्ट आयदर इन विल्डिंग आफ द टेम्पिल और डिस्ट्रीब्यूट द मनी एमंग आरफैन्स—सच है, वह पवित्र व्यक्ति है। लोभी नहीं है। उसने धन स्वीकार नहीं किया। वह या तो मंदिर में यह रुपया लगाएगा या अनाथों में बांट देगा।"

"यू सी, दिस इज द मॉरल स्ट्रेंथ आफ ब्रैह्मन्स—यही ब्राह्मणों की शक्ति है।"

"यः इन्डीड दिस इज, आय एम इम्प्रैस्ड।"

पुजारी के चले जाने से धर्म का आतंक दूर होते ही डाकुओं की सभा शुरू हो गई। मंदिर की तरफ पीठ न कर तीन तरफ बागी एक बिछी जाजम पर जम गए। गुमानसिंह उठकर खड़ा हो गया और बोला, "आप इस सभा का मुखिया चुन लें ताकि कार्रवाई शुरू की जाए।"

"आप ही सभापति बनें"—चारों तरफ से पुकार हुई। गुमानसिंह ने फिर भी ठाकुर जुझारसिंह को महत्त्व देने के लिए घोषणा की—"नहीं, ठाकुर जुझारसिंह सभापति बनें।"

"नहीं, नहीं, गुमानसिंह हम सबमें साहसी है। वही बने।"—जुझारसिंह कहने लगे।

"नहीं, ठाकुर, यह नहीं होगा। आप हमसे उम्र में भी बड़े हैं, जाति में भी। आपके सामने गद्दी पर बैठना अच्छा नहीं लग रहा है।"

"तो क्वारी को अध्यक्ष बनाया जाए। हम जाति के आधार पर ठाकुरों को ऊंचाई नहीं मान सकते।"

सबने देखा, साँवरनसिंह मल्लाह खड़ा हो गया था और उसके स्वर में रोष था।

"तो क्वारी को क्यों, सुषमा को क्यों न सभापति का आसन दिया जाए ? सुषमा किस बात में क्वारी से छोटी है ?"—जुझारसिंह के गिरोह के एक डाकू ने चुनौती दी।

"तो दलराम यादव को बनाया जाए। वह साहस में गुमानसिंह का गुमान भी झाड़ सकता है।"

"नहीं, नहीं, दलराम को क्यों घसीट रहे हो ? दलराम घमण्डी नहीं है, उसे

माफ करो।"

स्वयं दलराम ने यह कहा, और सभी को हाथ जोड़े। सब 'नेताजी की जय' की जैकार करने लगे।

"तो यहां कौन घमण्डी है? हम सब अपना नाम वापस लेते हैं।"

यह कहकर सब प्रस्तावकों ने अपने-अपने सरदारों के नाम वापस ले लिए।

गुमानसिंह हंसने लगा। वह उठा और जुझारसिंह का हाथ पकड़ कर उठा लाया। सब तालियां बजाने लगे लेकिन क्वारी का गिरोह खामोश रहा। जुझारसिंह गद्दी पर बैठे नहीं, खड़े ही रहकर कहने लगे—"क्वारी! हम वीरा-धीरा के कृत्य को बुरा मानते हैं। हम उसके पक्ष में नहीं हैं, बस वह दूर के सम्बन्धी हैं, इससे हम उन्हें कुछ कहना नहीं चाहते लेकिन हम तुम्हें बदला लेने से रोकते भी नहीं हैं। जो जैसा करेगा, भरेगा। एक ठाकुर ने बुरा किया तो क्या सब ठाकुर बुरे हो गए?"

क्वारी तड़पकर उठ खड़ी हुई। क्रोध में वह कांप रही थी—"ठाकुर, अगर कोई ठाकुर होता तो एक औरत पर ज्यादती देखकर खुद बदला लेता। पुराने जमाने में क्षत्रिय गो, ब्राह्मन और नारी की रच्छा करते थे, आप कैसे ठाकुर हैं जो एक औरत को बदला लेने की कह रहे हैं और खुद किनारा कसे हुए हैं?"

जुझारसिंह सहित सभी सन्नाटे में आ गए। सभा में तनाव आ गया। सब आशंकित थे कि अब यहीं गोली चल सकती है। जुझार बोले—'क्वारी, हम वचन देते हैं कि हम वीरा-धीरा की मदद नहीं करेंगे। तुम्हारा भेद नहीं देंगे, आदमी नहीं देंगे, लेकिन उन्हें हम मारें कैसे, सम्बन्धी क्या कहेंगे?"

भूतनाथ ने क्वारी को संकेत किया, इतना बहुत है। वह अब और संकट खड़ा न करे। क्वारी कुछ शांत हुई—

"ठीक है ठाकुर, मलाहों की, हमारी, सारे ठाकुरों से कोई दुश्मनी नहीं है। आप सभापति बनें।"

सुषमा को बुरा लगा कि इस मल्लाहिन को महत्त्व मिल रहा है। वह बड़बड़ाई और बैठे-बैठे ही जुझारसिंह को आदेश देने लगी—"हम किसी का अहसान लेकर सभापति नहीं बनना चाहते···संगर-इयर को क्यों नहीं बना देते?"—उसने जुझार को आसन पर नहीं बैठने का इशारा किया।

सब हंसने लगे। तनाव टूटा पर पूरी तरह नहीं। गुमानसिंह ने लाचारी भरी नजर से सबको देखा। उसकी दृष्टि उस्ताद तस्लीम पर पड़ी। उसके मन में विचार आया—"भाइयो। सभापति पद पर मतभेद हो गया। अब तो हम सबके उस्ताद तस्लीम साहब सलाह दे सकते हैं।"

"वाह! वाह! क्या सूझ है" हां तस्लीम उस्ताद, आप ही सदर की गद्दी पर तशरीफ रखिए, रौनक अफरोज हो जाइए।"

तस्लीम घुटा हुआ बागी था। उसे क्वारी ने अपने गिरोह में छेक दिया था यों अभी भी वह अपनी भूतपूर्व प्रेमसी के प्रति नरम था तो भी उसने क्वारी का पक्ष नहीं लिया—"बागी गुमानसिंह, आपने यह सब जलवा दिखाया है। आपके मुंह से जो नाम पहले निकला, वही सदर हो सकता है। सदर के नाम पर चुनाव नहीं हो सकता।"

"वाह! वाह!" का शोर हुआ और उस हल्ले में जुझार को बागियों ने जबरदस्ती उठाकर आसन पर बिठा दिया। मतभेद हुआ पर टल गया। जुझारसिंह ने खड़े

होकर हाथ जोड़े, अपने सम्मान के लिए कृतज्ञ हुए और बोले कि आज यहां बागियों को एक फोर्स, एक शक्ति में संगठित किया जाएगा। हम अपने दल अलग-अलग रखें पर हमारी एक सीढ़ी बने और सीढ़ी में जो ऊपर के अधिकारी चुने जाएं वे बागियों का हित सोचें और बागी उनकी बात मानें। जो नहीं मानेंगे, उन्हें पंचायती अदालत में सजा दी जाए या सुधारा जाए।

सबने ताली बजाकर स्वागत किया। जुझार और गुमानसिंह ने बागियों के सरदारों से अलग-अलग परामर्श कर एक सूची बनाई। तब तक सगर-डंगर सभा का मनोरंजन करने लगे। संगर-डगर सरदारों के आपसी परामर्श के वक्त सभा में खड़े होकर कहने लगे—"हमारी एक विनती है साहबान! आज बागियों के सरदार तो अफसर बनेंगे, हमें कौन पूछेगा, इसलिए हमने इन सरदारों को सबक सिखाने की ठान ली है। हम कहते हैं कि आप इन सरदारों को अपना अधिकारी न मानकर सगर-डंगर को चुनें।"

सब लोग खिलखिलाने लगे। एक बोला—"अबे सगरिया-डगरिया, तुम पिटना चाहते हो क्या? चोर भी सरदार बनेंगे क्या?"

"चोर सरदारों को गाउदी साबित कर दें तो आप क्या करेंगे?"

"तो हम तुम्हें सरदार बना देंगे।"

"पक्की रही, मुकर तो नहीं जाओगे, थूक कर चाटोगे तो नहीं?"

"अबे तू क्या बक रहा है? मरेगा क्या? साले, गोली दी तो सेंध हो जाएगी तेरी दीवालों में?"

अट्टहास हुआ। लेकिन चोर बेहया थे। वे बिना हतप्रभ होकर बोले—"बड़े बहादुर हैं आप? क्यों? आपका नाम क्या है?"

"रनवीरसिंह, हम जुझारसिंह के दल के हैं।

"हां तो भाइयो, इस रन के वीर की अकिल का मुआयना हो जाए···रनवीर सिंह जी, आपकी बगुची में क्या-क्या था?"

रनवीर घबराया। उसने अपना बैग टटोला। सब ठीकठाक था। बोला, "क्यों, तुमने क्या निकाल लिया उससे? तुम छू भी नहीं सकते मेरा बगुचा।"

"यह रहा।···इसे पहचानते हो, यह क्या है?"

रनवीर लज्जित हो गया। वह अपनी प्रेमिका के लिए एक साड़ी खरीद लाया था, वह चोरों के हाथों में थी अब। रनवीर उसे लेने चोरों की तरफ झपटा। सब हंसने लगे। सगरिया-डगरिया ने साड़ी तो लौटा दी मगर रद्दा कस दिया—"तो साहबान। ये थे रनवीर सिंह, औरत के लिए सारी बगल में दबाए बागी बने घूम रहे हैं।"

रनवीर भी हंसने लगा। चोर बढ़ गए—"तो साहबान। अपना सामान संभाल कर रखना चाहिए न। अब इन सरदारों को लो···लो अब वे सलाह कर इधर ही आ रहे हैं···आइए···सरदार साहबान···पधारिए।"

गुमानसिंह, दनराम, जुझार, कर्ना आदि चोरों के विनोद में बाधा नहीं डालना चाहते थे। चुपचाप आकर बैठ गए।

"तो साहबान। सभापति जुझारसिंह जी से कहो कि वह गद्दी छोड़ दें।"

"क्यों?"

"क्यों? ठाकुर साहब, आपकी चीजें तो सुरक्षित हैं न? टटोल लीजिए।"

हंसी के बीच जुझार जेबें टटोलने लगे। लेकिन उन्हें अपना रूमाल नहीं मिला। "लीजिए, पसीना पोंछिए, अब कभी असावधान न रहिए।" सगरी-डगरी मस्त हो रहे थे।

माफ करो।"

स्वयं दलराम ने यह कहा, और सभी को हाथ जोड़े। सब 'नेताजी की जय' की जैकार करने लगे।

"तो यहां कौन घमण्डी है? हम सब अपना नाम वापस लेते है।"

यह कहकर सब प्रस्तावको ने अपने-अपने सरदारों के नाम वापस ले लिए।

गुमानसिंह हसने लगा। वह उठा और जुझारसिंह का हाथ पकड़ कर उठा लाया। सब तालियां बजाने लगे लेकिन क्वारी का गिरोह खामोश रहा। जुझारसिंह गद्दी पर बैठे नही, खड़े ही रहकर कहने लगे—"क्वारी! हम बीरा-धीरा के कृत्य को बुरा मानते हैं। हम उसके पक्ष में नही है, बस वह दूर के सम्बन्धी हैं, इससे हम उन्हें कुछ कहना नही चाहते लेकिन हम तुम्हें बदला लेने से रोकते भी नही है। जो जैसा करेगा, भरेगा। एक ठाकुर ने बुरा किया तो क्या सब ठाकुर बुरे हो गए?"

क्वारी तड़पकर उठ खड़ी हुई। क्रोध मे वह काप रही थी—"ठाकुर, अगर कोई ठाकुर होता तो एक औरत पर ज्यादती देखकर खुद बदला लेता। पुराने जमाने मे क्षत्रिय गो, *ब्राह्मन और नारी की रच्छा करते थे, आप कैसे ठाकुर हैं जो एक औरत को* बदला लेने की कह रहे हैं और खुद किनारा कसे हुए है?"

जुझारसिंह सहित सभी सन्नाटे में आ गए। सभा मे तनाव आ गया। सब आशकित थे कि अब यहीं गोली चल सकती है। जुझार बोले—"क्वारी, हम वचन देते है कि हम बीरा-धीरा की मदद नही करेंगे। तुम्हारा भेद नही देंगे, आदमी नही देंगे, लेकिन उन्हें हम मारें कैसे, सम्बन्धी क्या कहेंगे?"

भूतनाथ ने क्वारी को सकेत किया, इतना बहुत है। वह अब और संकट खड़ा न करे। क्वारी कुछ शात हुई—

"ठीक है ठाकुर, मलाहो की, हमारी, सारे ठाकुरो से कोई दुश्मनी नही है। आप सभापति बनें।"

सुषमा को बुरा लगा कि इस मल्लाहिन को महत्त्व मिल रहा है। वह बड़बड़ाई और बैठे-बैठे ही जुझारसिंह को आदेश देने लगी—"हम किसी का अहसान लेकर सभापति नही बनना चाहते···संगर-डगर को क्यों नही बना देते?"— उसने जुझार को आसन पर नही बैठने का इशारा किया।

सब हसने लगे। तनाव टूटा पर पूरी तरह नही। गुमानसिंह ने लाचारी भरी नजर से सबको देखा। उसकी दृष्टि उस्ताद तस्लीम पर पड़ी। उसके मन मे विचार आया—"भाइयो। सभापति पद पर मतभेद हो गया। अब तो हम सबके उस्ताद *तस्लीम साहब सलाह दे सकते है।"*

"वाह! वाह! क्या सूझ है" हां तस्लीम उस्ताद, आप ही सदर की गद्दी पर तशरीफ रखिए, रौनक अफरोज हो जाइए।"

तस्लीम घुटा हुआ बागी था। उसे क्वारी ने अपने गिरोह से छेक दिया था यो अभी भी वह अपनी भूतपूर्व प्रेयसी के प्रति नरम था तो भी उसने क्वारी का पक्ष नही लिया—"बागी गुमानसिंह, आपने यह सब जलवा दिखाया है। आपके मुह से जो नाम पहले निकला, वही सदर हो सकता है। सदर के नाम पर चुनाव नही हो सकता।"

"वाह! वाह!" का शोर हुआ और उस हल्ले मे जुझार को बागियो ने जबर-दस्ती उठाकर आसन पर बिठा दिया। मतभेद हुआ पर टल गया। जुझारसिंह ने खड़े

होकर हाथ जोड़े, अपने सम्मान के लिए कृतज्ञ हुए और बोले कि आज यहां बागियों को एक फोर्स, एक शक्ति में संगठित किया जाएगा। हम अपने दल अलग-अलग रखें पर हमारी एक सीढ़ी बने और सीढ़ी में जो ऊपर के अधिकारी चुने जाएं वे बागियों का हित सोचें और बागी उनकी बात मानें। जो नहीं मानेंगे, उन्हें पंचायती अदालत में सजा दी जाए या सुधारा जाए।

सबने ताली बजाकर स्वागत किया। जुझार और गुमानसिंह ने बागियों के सरदारों से अलग-अलग परामर्श कर एक सूची बनाई। तब तक संगर-डंगर सभा का मनोरंजन करने लगे। संगर-डगर सरदारों के आपसी परामर्श के वक्त सभा में खड़े होकर कहने लगे—"हमारी एक विनती है साहबान! आज बागियों के सरदार तो अफसर बनेंगे, हमें कौन पूछेगा, इसलिए हमने इन सरदारों को सबक सिखाने की ठान ली है। हम कहते हैं कि आप इन सरदारों को अपना अधिकारी न मानकर संगर-डंगर को चुनें।"

सब लोग खिलखिलाने लगे। एक बोला—"अबे सगरिया-डगरिया, तुम पिटना चाहते हो क्या? चोर भी सरदार बनेंगे क्या?"

"चोर सरदारों को गाउदी साबित कर दें तो आप क्या करेंगे?"

"तो हम तुम्हें सरदार बना देंगे।"

"पक्की रही, मुकुर तो नहीं जाओगे, थूक कर चाटोगे तो नहीं?"

"अबे तू क्या बक रहा है? मरेगा क्या? साले, गोली दी तो सेंध हो जाएगी तेरी दीवालों में?"

अट्टहास हुआ। लेकिन चोर बेहया थे। वे बिना हतप्रभ होकर बोले—"बड़े बहादुर हैं आप? क्यों? आपका नाम क्या है?"

"रनबीरसिंह, हम जुझारसिंह के दल के हैं।

"हां तो भाइयो, इस रन के वीर की अकिल का मुआयना हो जाए···रनबीर सिंह जी, आपकी बगुची में क्या-क्या था?"

रनबीर घबराया। उसने अपना बैग टटोला। सब ठीकठाक था। बोला, "क्यों, तुमने क्या निकाल लिया उससे? तुम छू भी नहीं सकते मेरा बगुचा।"

"यह रहा।···इसे पहचानते हो, यह क्या है?"

रनबीर लज्जित हो गया। वह अपनी प्रेमिका के लिए एक साड़ी खरीद लाया था, वह चोरों के हाथों में थी अब। रनबीर उसे लेने चोरों की तरफ झपटा। सब हंसने लगे। सगरिया-डगरिया ने साड़ी तो लौटा दी मगर रद्दा कस दिया—"तो साहबान। ये ये रनबीर सिंह, औरत के लिए सारी बगल में दबाए बागी बने घूम रहे हैं।"

रनबीर भी हंसने लगा। चोर चढ़ गए—"तो साहबान। अपना सामान संभाल कर रखना चाहिए न। अब इन सरदारों को लो···लो अब वे सलाह कर इधर ही आ रहे हैं···आइए···सरदार साहबान···पधारिए।"

गुमानसिंह, दलराम, जुझार, कर्मा आदि चोरों के विनोद में बाधा नहीं डालना चाहते थे। चुपचाप आकर बैठ गए।

"तो साहबान। सभापति जुझारसिंह जी से कहो कि वह गद्दी छोड़ दें।"

"क्यों?"

"क्यों? ठाकुर साहब, आपकी चीजें तो सुरक्षित हैं न? टटोल लीजिए।"

हंसी के बीच जुझार जेबें टटोलने लगे। लेकिन उन्हें अपना रूमाल नहीं मिला। "लीजिए, पसीना पोंछिए, अब कभी असावधान न रहिए।" सगरो-डगरी मस्त हो रहे थे।

"और यह लीजिए, गुमानसिंह साहब का यह पेन" यह रहा, करनसिंह गूजर का यह अंगोछा, दलराम की चूना-तम्बाकू की यह डिबिया, और'''और अब क्या रह गया ?"

बागियों की जमात हसते-हसते धरती पर लोट गई। बहुत मजा आया। सरदार चोरों की कला देखते रह गए। तभी एक ने कहा—"वाह! समरी-डंगरी, जैसा नाम सुना था, वैसा ही पाया लेकिन क्वारी और सुषमा भी सरदारिनी है, उन्हें क्यों छोड़ दिया ?"

"अरे मालिक। उन्हें जब सरदारों ने नहीं छोड़ा तो हम कैसे छोड़ सकते थे''' लेकिन कभी वे कब्जे में आई ही नहीं, आज जरा मौका मिला। लो, सुषमा रानी, जरा देखो, आपके बटुए में आपका दर्पन है या किसी और को दे दिया ?"

सुषमा अपने बटुए में दर्पण खोजने लगी पर वह नहीं मिला। ज़ोर का कहकहा लगा।

"और ये रही क्वारी की लिपिस्टिक'''अरे जरा हम भी लगाए, जरा देखें, कैसे लगते हैं।"

दोनों ने बारी-बारी से क्वांरी की लिपिस्टिक दर्पण में देखकर अपने होठों पर रगड़ी और छाती पर हाथ रखकर 'हाय' कहकर गिर पड़े—"अरे कोई आओ, हमें वरो, हम तो अभी कन्या कुमारी ही हैं। आओ कोई।"

हसते-हंसते बागियों की आखो में आंसू आ गए, और पेट में बल पड़ गए। गुमानसिंह ने तब हाथ उठाया और शांति छा गई। जुझारसिंह खड़े हो गए—"भाइयो! सबकी सहमति से बागियों के अधिकारी नियुक्त किए गए हैं—इन्स्पेक्टर जनरल आफ पुलिस, आई. जी., श्री गुमानसिंह खंगार।"

ताबडतोड़ तालियां बजी। गुमानसिंह ने हाथ जोड़कर सभा को प्रणाम किया।

"एडीशनल आई. जी. श्री दलराम यादव।"

पुन: हर्ष मे तालीवादन हुआ।

"डी. आई. जी. श्री करनसिंह गूजर, सुश्री क्वांरी देवी, सुश्री सुषमा देवी, गुलाबसिंह मैनपुरी वाले, बहादुर चौधरी बिल्हौरी।"

देर तक तालियों की गड़गड़ाहट होती रही। एक बागी असतुष्ट होकर बोला —"अरे, हमारे उस्ताद का क्या हुआ ?"

"उन्हें हमने खुफिया पुलिस का डी. आई. जी. बनाया है, मंजूर है ?"

"मजूर है, मरहबा, मरहबा'''उस्ताद तस्लीम, तस्लीम करें।"

"तस्लीम,"—कहकर तस्लीम ने झुककर सबको सलाम झुकाई।

"लेकिन जुझारसिंह को तो कोई पद नहीं दिया गया। यह तो अधेर है।"

"नहीं, वह हमारे सभापति हैं यानी आई. जी., डी. आई. जी. लोगो की एक कमेटी बनेगी, उसके चेयरमैन ठाकुर जुझारसिंह होंगे।"

"अब आपसे प्रार्थना है कि आज से इन अपने अधिकारियों का आदर मानें यों आप अपने-अपने इलाको मे आजाद हैं, मगर कोई कठिनाई आने, आपस मे खटपट होने या अन्य किसी मसले मे अधिकारी-समिति को पूरे अधिकार हैं, स्वीकार है ?"

"स्वीकार है, स्वीकार है।"

'बोलो आई. जी., डी. आई. जी. साहबान की जै।"

"जै जै, जिन्दाबाद।"

"हम अधिकारियों की कमेटी के सामने अपना एतराज पेश करते हैं कि

संगरी-डंगरी को कुछ नहीं दिया गया।"

"हां-हां, इन्हें भी कुछ बनाया जाए।"

"इन्हें उस्ताद तस्लीम के नीचे खुफिया पुलिस में सर्किल-इंस्पैक्टर बनाया जाता है और ये अपनी सर्किल में जहां चाहे हाथ मार सकते हैं। उसके लिए इन्हें इनाम में सेंध मारने के लिए बढ़िया ओजार खरीदने के लिए दो हजार रुपए और दो झापड़ रसीद किए जाएंगे।"

चोर खुश हुए लेकिन दो तमाचे कौन खाए—"साहब। तमाचे खाने को हम तैयार हैं पर कौन झापड़ मारेगा, यह भी तो तै हो?"

"एक चोर के झापड़ क्वांरी देवी और एक के सुषमा देवी।"

"वाह! क्या बढ़िया निर्णय है। हां तो हो जाए।"

क्वांरी ने संगरी का कान पकड़ा और एक हलकी चपत लगाकर कहा—"जा, खूब कमाल दिखा चोरी में।"

सुषमा ने भी लगरी के एक झापड मारा और दुआ दी कि वह जगली-मंगली से भी बड़ा चोर बने।

"दोस्तो। अब दावत होगी। अरे संगरी-डंगरी देखना, माल चुराकर खुद ही मत खा जाना।"

गुमानसिंह के संकेत पर सैकडों शराब की बोतलें पेश की गईं और पहले से ही तैयार पूड़ी-कचौड़ी-साग-मिठाई, हलवा, मेवा आदि परोसी गईं। बागियों ने ठर्रे की तेज शराब पीनी शुरू की और फाग शुरू हो गई। अमरीकियों ने ठर्रा पीने से मना कर दिया, लेकिन भूतनाथ ने समझाया कि बागी नाराज होंगे। इसलिए वह भी नाक बन्द कर एक-दो पैग चढ़ा गए। बाद में अमरीकियो ने व्हिस्की की बोतलें सरदारों को परोसी जिन्हें वह स्वाद ले-लेकर पीते रहे।

नशे में आने पर सुषमा नायन ने क्वांरी को देखकर मुंह बिराया और ज़ोर से बोली—"देखो इस गंठी (बौनी) की नाक कितनी छोटी और मोटी है, बिल्कुल पकौड़ी सी और फिर भी यह अपने रूप पर घमंड करती है, मलाहिन कहीं की।"

"अच्छा। तू बहुत छबीली बनती है, चल बाहर निकल, फिर तुझे बताती हू। बूढ़े की रखैल, तुझे एक गिरोह की सरदारनी के सामने बोलने की जुर्रत कैसे हुई, चल निकल नायन, चल, मेरी चोटी बांध और पैरों में मेहदी लगा।"

"चल चल, अभी तेरी···में मेहदी लगाती हू। मलाहिन तेरी यह हिम्मत!"

दोनों बिल्लियों की तरह चबूतरे के एक कोने में गईं और भिड़ गईं। दोनों बकती भी जा रही थी और एक-दूसरे के बाल पकड़े हुए, गिराने की कशमकश में थीं। उन्होंने लम्बे नाखूनों से एक-दूसरे के मुंह नोच डाले और कपड़े फाड़ लिए थे। कभी सुषमा ऊपर आ जाती और क्वारी को पटककर उसकी छाती पर बैठकर घूंसे जमाती कभी क्वारी उसे उछालकर उन पर चढ़ बैठती और उसके मर्मांगो पर चोट करती। जब तक लोग भागकर आते और उन्हें अलग-अलग करने का ज़ोर लगाते तब तक दोनों लहू-लुहान हो गईं। क्वारी की आखें खूनी हो गई थीं और उसने ब्लाउज़ में छिपे रिवाल्वर को निकालकर रोकते-रोकते फायर कर दिया। गोली सुषमा की बाह में लगी। वह चीत्कार कर गिर पड़ी और उसकी बाहु झूल गई। हल्ला मच गया।

सरदारों ने आकर क्वारी का रिवाल्वर छीन लिया और सुषमा के घाव की परीक्षा की। सर्वागवश गोली बाहु को छूकर निकल गई थी। घाव हलका था। उसे

उठाकर जुझारसिंह के लोग ले गए और मरहमपट्टी कर दी गई। जुझार के गिरोह के लोग मल्लाह बागियों पर झपटे मगर उन्हें हाथ जोड़कर शांत कर दिया गया कि अधिकारी अभी इस मामले का फैसला करेंगे। अधिकारियों की समिति ने तुरत-फुरत फैसला किया कि क्वारी ने फायर किया, इसलिए उसे सुषमा से माफी मागनी पड़ेगी और इलाज के लिए दो हजार रुपए देने पडेंगे।

माफी मागने की बात पर क्वांरी पहले तो बिफर गई पर बाद में भूतनाथ के समझाने पर उसने सुषमा से माफी माग ली। दोनों रोने लगी और पश्चाताप में लिपट गई। सुषमा ने कहा—"क्वारी! तुम्हारी गलती नही, यह सब शराब ने कराया, कोई बात नही, अब तुम जाओ।"

क्वारी सिर नीचा किए अपने गिरोह में लौट आई। उसे अपनी गलती पर सचमुच पछतावा हुआ।

कई बागी बिल्लियो जैसी लडाई पर ठठाकर हस रहे थे, कई सोचते थे, यह बुरा हुआ, गिरोह आपस में भिड़ेंगे।

बाद मे सरदारो की समिति की बैठक रात देर तक चली और यह तै पाया कि उ० प्र० के मुख्यमत्री राजा राजनाथसिंह की चुनौती का मिलकर सामना किया जाए। उन्हे बता दिया जाए कि कोई सरकार बागियों को दबा नही सकती, भले ही वह त्यागपत्र देकर चले जाए।

करना गूजर के वे तीन डकैत, जिन्हे इटावा में भूतनाथ ने गिरफ्तार नही होने दिया था, उससे मिलने आए। उन लगुरवीर, मिथूल और सिंहा से भूतनाथ ने पूछा—"जो दादर, बम्बई मे थे, उन्होंने क्या किया ?"

"खबर आई है कि एक बलात्कारी को वधिया कर दिया।"

"तुम तो इस तरह कह रहे हो जैसे वहां कोई और गया था।"

"आप तो देवता पुरुष है साहब, आपके सामने अपनी तारीफ क्या करें ?"

भूतनाथ ने उन्हें आगे का काम बताकर विदा किया, उनकी पीठ भी ठोंकी।

क्वारी ने जब लौटकर सरदारों का निर्णय सुनाया तो भूतनाथ चिंतित हो गया। उसने सलाह दी कि फुलवा को मुख्यमत्री को चुनौती नही देनी चाहिए। फुलवा ने हामी भरी कि वह बीरा-धीरा के पीछे है, सरकार के पीछे पड़कर वह क्या पा सकेगी ?

19

रोज़ी-मैरी टोली डाकुओं के जलसे से रोमाचित थी और अपने एलबम में मुच्छड और साफो वाले विचित्र और विकट चेहरो वाले छाया-चित्रो को जोश मे पुलकित हो-होकर सजा रही थी। भूतनाथ उदास-सा ग्राम बफाई के शिवालय के पास की कोठरी में रपट लिखने के बाद एक कागज पर अग्रेजी मे कुछ लिख रहा था। उसे वही से रोज़ी-मैरी की खुशी से लकदक आवाजें सुनाई पड रही थी जैसे वे किसी नुमायश को देख के लौटी हों। वे क्वांरी नदी पर इस मन्दिर से सिंध नदी के सगम तक के बेहडो-वनो-नदियों-नालो से भरे मार्ग की भी चर्चा कर रही थी और बार-बार मिस्टर गोस्ट का नाम ले-लेकर प्रसन्न हो रही थी। मैरी रोज़ी से बोली, "रोज़ी, हैव यू पर्जेस्ड मिस्टर गोस्ट ऑर यू विल

नॉट माइन्ड मी मीटिंग हिम ?—क्या तुमने भूतनाथ पर अधिकार जमा लिया या मैं उससे मिल सकती हूं ?"

"व्हाय आय शुड पजेंस हिम ?···मैं उस पर क्यों अधिकार जमाऊं ?"

"ओ मिस रोज़ी, व्हाय डू यू डिसीव योर सैल्फ ? यू लव हिम, इजिंट इट ?··· तुम अपने को क्यों धोखा दे रही हो ? तुम उससे प्यार करती हो। क्या ऐसा नहीं है ?"

"आय मे लव हिम ··हि इज लवेबिल, देयर इज नो डाउट, रादर हि इज एडोरेबिल, ए मिस्टीरियस मैन बट आय कुड नॉट मेक हिम लव मी···इफ यू लायक, यू मे ट्राय · मैं उससे प्यार कर सकती हूं। वह प्यार के योग्य है, इसमें संदेह नहीं, वह प्यार से अधिक आदर-प्रशंसा के योग्य है, रहस्यमय भी है···किन्तु मैं अपने ऊपर उसे आसक्त नहीं कर सकी, तुम चाहो तो कोशिश करो।"

"हि किस्ड यू, यू इम्ब्रेस्ड हिम·· ह्वाट मोर डू यू वांट एट द फर्स्ट अपार्चुनिटी ? ···उसने तुम्हें प्यार किया। तुमने उसको भुज भर भेंटा। और प्यार का प्रमाण क्या होता है प्रथम अवसर के समय ?"

रोज़ी उत्फुल्ल होकर हंसी। बोली—

"यू डू नॉट नो इंडियन्स। दे आर वैरी सब्जैक्टिव पीपुल, स्पेशयली कन्टैम्प-लेटिव टायप। मोरओवर, हि एपियरर्स टू बी अ रिडिल···आय डोन्ट नो हिम, आय कान्ट नो हिम, यू मे ट्राय···तुम भारतीयों को नहीं जानतीं। वे अंतर्मुखी होते हैं, खास-कर वे जो चिंतक प्रकार के हैं ··यह व्यक्ति पहेली-सा प्रतीत होता है। मैं उसे जानती नहीं, जान नहीं सकती, तुम प्रयत्न करो।"

"थैंक यू ! आय एम गोइंग टुडे टू वाक विद हिम···धन्यवाद ! आज मैं उसके साथ घूमने जाऊंगी।"

"ओह, श्योर, बट यू मस्ट टैल मी व्हाट हैपिण्ड एज़ आय टोल्ड यू। प्रामिस ?··· ओह, निश्चय ही परन्तु तुम, जो घटे, वह मुझे बता देना जैसा मैंने बता दिया।"

"ओह, श्योर, प्रामिस···ज़रूर, वादा रहा।"

मैरी सजने लगी और रोज़ी उसकी मदद करने लगी। मैरी ने रोज़ी को बताया कि तुम्हारे रोमांस की रपट पूरी टोली को मिल चुकी है। दोनों बूढ़े मियां हमें प्रोत्साहन दे रहे हैं। गिरद्मवरी साहब कह रहे थे कि रोज़ी को कोई कामयाबी नहीं मिली, अब मैरी तुम्हें कोशिश करनी चाहिए। यह मिस्टर गोस्ट बहुत काम का आदमी साबित हो सकता है। अगर मैं भी असफल हो गई तो वह खुर्राट बुड्ढा खुद भूतनाथ से बात करेगा पर चक्कर क्या है, यह किसी को पता नहीं है। रोज़ी ने कहा कि उसे इन शैतान बुड्ढों के चक्करों से क्या मतलब ? वह तो डाकुओं के रोमांचक किस्सों और उन पर फिल्म बनाने के लिए आई है परन्तु ये बुड्ढे कुछ और खिचड़ी पकाना चाहते हैं। कभी लगता है कि तुम्हें ये चारा समझते हैं कि भूतनाथों जैसे लोग फंस जाएं और फिर ये अपना काम निकालें पर काम क्या है, ये कम्बख्त बताते नहीं हैं। अगर ये कहीं हमारे साथ न होते तो मिस्टर गोस्ट मुझ पर यकीन कर लेता। देखना, तुम पर भी वह यकीन नहीं करेगा। वह यह इशारा कर रहा था कि ये बुड्ढे उससे कुछ जानने के लिए हमें उसके पास भेजते हैं।

"यकीनन बुरा है, यह तो छल है।"

"एब्सॅल्यूटली, दिस इज डिसप्शन···निश्चय ही छल है। हम अमरीकियों पर, इसीलिए ये भारतीय विश्वास नहीं करते हैं।"

मैरी ने अन्तिम बार रूज कपोलों पर मला और हलकी लिपस्टिक ओठों पर लगायी। उसने अपनी सबसे बढ़िया ड्रेस पहनी और पर्स हाथ में झुलाती हुई तैयार हो गई। वह रोजी से कम सुन्दर नही थी। उसने दर्पण मे अपना सौन्दर्य देखकर रोज़ी की तरफ देखा—"रोज़ी, आर यू जैलस—रोज़ी, क्या तुम ईर्ष्या कर रही हो?"

"रोजी के मुख पर शरारत थी। उसने सिर हिलाया और कोमलता से मैरी को ठेला—"नाव यू गो, डोन्ट वेस्ट टायम।"

मैरी पर्स हिलाती और गुनगुनाती हुई भूतनाथ के कक्ष की ओर बढ़ी। फिर उसने सोचा कि हिन्दुओ के देवताओ को प्रणाम करने से वह प्रसन्न हो सकता है। सो, वह मंदिर मे जाकर देवताओ को हाथ जोडने लगी। पहले तो उसके मन मे शिष्टाचार और कौतूहल का भाव था फिर जब वह जूते उतार कर पार्वती और शिव के सम्मुख गई तो उसे रोमाच हुआ। उसने सच्चे मन से मनाया कि वह अपने मिशन मे सफल हो। रोज़ी से उसकी प्रतियोगिता जो थी। वह आंख मूदकर कुछ बुदबुदाती रही। फिर वह हनुमान और गणेश जी के सम्मुख आई। ये दोनो देवता उसे अजीब लगते थे। एक का मुह बन्दर जैसा था और वह हाथ मे गदा लिए डरा रहा था, पहलवान-सा शरीर था उसका। दूसरा हाथीनुमा चेहरे वाला था। उसके मन मे वाक्य बना—"ओ मकी गॉड, ब्लैस मी, यू ऑलसो ब्लैस मी, मी लार्ड एलीफेंट-गॉड।"

फिर उसे हसी आई। डर सा भी लगा। ये हिन्दू देवता है, कही नाराज हो गए तो सब गडबड हो जाएगी। वह करौली की देवी नाराज ही तो हो गई थी। ओह, बाल-बाल बच गए हम लोग एक-दो तो घायल ही हो गए। कही अबकी बार हमारे प्राण ही न चले जाए, ओ गॉड सेव अज प्लीज।

मैरी बाहर आकर, जूते चढाकर भूतनाथ के कमरे की ओर बढी लेकिन वहा तो मिस्टर ष्रेपट्सबरी पहले से डटे हुए थे। मैरी को धक्का लगा। उसे उस बुड्ढे पर बहुत ताव आया लेकिन उसने सुनने की ठानी कि देखें वे क्या बात कर रहे है? बाद मे अगर इस बन्दर ने देर की तो मैं हस्तक्षेप करूगी। मैं यह रात ऊब में नही बिताना चाहती और बेचारी रोज़ी भी तो इतजार करेगी···खैर, वह तो राबर्ट से मन बहला लेगी पर मेरा क्या होगा? मै लौट कर रोज़ी को क्या कहूंगी कि वहा वह बुड्ढा था, सो वह लौट आई। मै अमरीकी हूं, पराजय से मुझे चिढ है। मैरी किवाड की ओट मे दीवाल से चिपक गई और मकी-गॉड हनुमान से बिनती करने लगी कि वह गदा मार कर इस खब्बीस को जल्दी भगा देगा तो कल उस पर मिठाई चढाऊगी। इस विचार पर मैरी का मन कुछ हलका हुआ। अंग्रेजी मे वार्तालाप हो रहा था—"मिस्टर सिंह। मैं आपके इस कागज को पढकर चकित हू··· क्या आप भारत सरकार के खिलाफ हैं?"

"बिल्कुल · बल्कि मै इस सिस्टम, इस व्यवस्था के खिलाफ हू और इसे नष्ट करना चाहता हू।"

"ज़ाहिर है कि यह तभी होगा, जब सरकार भारत मे असफल हो जाए, कानून और प्रबन्ध की कडिया टूट जाएं। इसके लिए आप क्या कर रहे है?"

"इसके लिए हम बागियों की मदद कर रहे है। ये इधर मध्य प्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान के इलाको मे अराजकता फैलाएं, उधर कश्मीर मे मुसलमान, उत्तरपूर्व मे नागा लोग आजादी की माग करें, पजाब मे सिक्ख खालिस्तान की माग कर सकते है। अमरीका, पाकिस्तान और चीन मदद दे तो गडबड़ी फैल सकती है। फिर हमारे सगठन सत्ता पर कब्ज़ा कर सकते हैं। सेना और पुलिस में भी हमारे मददगार तब तक बढ

जाएंगे। सवाल यह है कि आप इसमें क्या कर सकते हैं?"

"मैं तो फिल्मवाला हूं, मिस्टर गडाडरसिंह'''मैं राजनीति समझता नहीं लेकिन मैं आपसे उन लोगों को जोड़ सकता हूं।"

"तो जोड़िए न, यह शुभ कार्य कब होगा? मुझे कहां जाना पड़ेगा? बम्बई ठीक रहेगा न?"

"कहीं भी, जहां आपको सुविधा हो। हम दिल्ली में मिल सकते हैं। आपको मैं एक टेलिफोन नम्बर देता हूं। आप दिल्ली जाकर इस नम्बर पर बात कर लें।"

"लेकिन आपके बिना वह विश्वास न करेंगे।"

"मैं उन्हें लिख दूंगा या इटावा या भिण्ड से फोन कर सकता हूं। हम अभी बागियों पर फिल्म के सिलसिले में हैं। ऐसा लगता है कि अभी कुछ घटनाएं घटेंगी, इससे फिल्म में नाटकीयता बढ़ेगी'''आपका क्या विचार है?"

"नाटकीयता?'''निश्चय ही नाटकीयता बढ़ेगी'''आगे नाटक, खूनी नाटक, मैलोड्रामा होकर, ट्रैजडी'''दुःखान्त में भी बदल सकता है।"

"ओह! आप बहुत दूर का देख लेते हैं। रोज़ी ने बताया कि आप चिंतक हैं और कुछ-कुछ पैगम्बरनुमा भी हैं। आपमें विजन है।"

"मुझमें?'''अजी, मैं एक पत्रकार हूं पर जो हो रहा है, जिस ढंग से हो रहा है, उसके विरुद्ध हूं।"

"क्या आप कम्युनिस्टों के अनुगामी हैं? क्या आप कम्युनिस्ट-क्रांति चाहते हैं?"

भूतनाथ हंसा। उसने अपने भीतर उठते गुस्से को थूक के साथ निगला और मूड बदलकर बोला—"अजी। कम्युनिस्ट ही तो कुछ नहीं होने दे रहे हैं। रूस का उपग्रह हो गया है यह देश, आप क्या चाहते हैं भारत रूस का पिछलग्गू बना रहे?"

"हम अमरीकी हैं, हम सोवियत रूस को पसन्द नहीं करते। वहां बन्द-व्यवस्था है, क्लोज्ड सिस्टम है। लोहपर्दे के पीछे वहां सब छिपा है। आदमी को आज़ादी नहीं है।"

"एक्जैक्टली, यही बात है। हमारा विचार भी यही है कि रूस का आधिपत्य खत्म किया जाए पर यह तब होगा जब आप मदद करें।"

"मिस्टर सिंह। मैं आपकी बातें उनसे करा दूंगा, जो यह समझते हैं। वे जवाब दे सकते हैं। मैं तो कलाकार हूं न, मैं क्या जानूं ये दांव-पेंच!"

"करेक्ट, ठीक है। मैं उनसे वार्तालाप करूंगा। आप या तो वहां मिलें या उन्हें सूचित कर दें। बेहतर हो, आप साथ रहें। तभी सब निश्चित हो सकता है। यह तो आप मानेंगे कि यह मामला नाजुक है और मुझ पर देशद्रोह का मुकदमा चल सकता है।"

"मैं समझता हूं मिस्टर सिंह, यह सीरियस मामला है। हम चाहेंगे, आप यू. एस. ए. हमारे साथ चलें। हम खर्चा उठा लेंगे। वहां आपको अपने फिल्म सहयोगी के रूप में पेश करेंगे। आप वहां भी ये गम्भीर बातें सम्बन्धित व्यक्तियों से कर सकते हैं।"

"देखेंगे मिस्टर पोपट्मबरी, देखेंगे। पहले दिल्ली या बम्बई में बातचीत हो जाए। तब देखेंगे कि यू. एस. ए. जाना पड़ेगा या यहीं से काम चल जाएगा।"

"दिस इज़ रीज़नेबिल'''यह विवेकयुक्त रहेगा। इसमें खतरा भी कम होगा।"

"तो ठीक है, अब हम बात को यहीं छोड़ें। रोज़ी से वादा है, शायद मेरी भी आब पर्स, और दोनों चाहें कि मैं उन्हें घुमाने ले जाऊं।"

"ओह् श्योर, श्योर, जरूर। रोजी आपके प्रति आकर्षित है। वह आपके बारे मे बोलती रहती है'''दरअसल मैरी भी आपको पसन्द करती है, हम सबको आपने अपने व्यवहार और डाकुओं पर प्रभाव से मोहित कर लिया है। वी आर सिम्पली चार्म्ड''' बट, लेकिन क्या मैं यह कागज, जिस पर आपने खुद लिखा है, इसे ले जा सकता हू ?"

"अभी नही, मैं पूरा विवरण लिखकर, अपनी पूरी विचारधारा और भारत को खण्ड-खण्ड करने की योजना पेश करूगा। उसकी कापी आपको दे दूगा। अभी तो यह अधूरा नक्शा है न, आप इसका क्या करेगे ? आप तो कलाकार है न ?"

"य.यू आर राइट हम तो कलाकार हैं, हमें इससे क्या'''यों ही आपके विचार पढ़कर मैं प्रभावित हो गया था, इसलिए चाहता था'''आप माफ करें, कोई और मतलब नहीं था।"

"ठीक है, ठीक है, मिस्टर शेफ्ट्सबरी। मैं बुरा तो मानता ही नही और आप तो कलाकार ठहरे। कलाकारो मे बच्चो जैसी उत्सुकता होती है, हः हः हः हः।"

"यू आर राइट सर। कलाकार बच्चे ही बने रहते हैं।"

दोनो हसते रहे। फिर शेफ्टसबरी उठने लगा—"आय बैग पार्डन नाव—अब मैं क्षमा चाहूगा। आपका बहुत समय ले लिया।"

"कोई बात नही, फिर मिलेगे।"

दोनो ने हाथ मिलाया और अमरीकी चला गया। भूतनाथ ने उसके जाने के बाद कागज सम्हालकर रखे और अपने आप शेफ्ट्सबरी की बातें याद कर हसने लगा, ह ह ह ह हः।

मैरी ने कमरे मे झाका। दो मोटी मोमबत्तियो के प्रकाश मे भूतनाथ अवास्तविक सा प्रतीत हो रहा था। मोमबत्तिया उस प्रगाढ अधकार को अपने आसपास से दूर करके भी, कमरे के बाहर के अधेरे को रहस्यमय बना रही थी। रोशनी कम हो तो अधेरा हावी रहता है और अधिक हो तो दुम दबाकर भाग जाता है।

भूतनाथ कागज बक्से मे बन्दकर, ताला लगाकर कपड़े बदलने लगा। उसने दिन वाला पाजामा उतारकर फेंक दिया और दूसरा साफ पाजामा उठाकर पहनने लगा।

मैरी अधेरे मे थी। एक ही झलक मे उसने भूतनाथ की कसी हुई टागो और सुडौल जघाओ को देखा। फिर कुर्ता उतारने पर उसने उसका उठा हुआ वक्ष और उभरी मछलियो वाली भुजाए देखी। उसकी उम्र का अदाज, शरीर सौष्ठव के कारण लगता नही था पर यह तो मैरी ने समझ लिया कि यह व्यक्ति विलक्षण है और यह राबर्ट और ब्रोगले की तरह किशोर नही है। यह चालीस-पेतालीस का भी हो सकता है, चालीस से कुछ कम का भी हो सकता है। लम्बाई अधिक थी, और शरीर कसा हुआ मगर पतला जैसे वह ठोस इस्पात का शरीर हो। पेट पतला, वक्ष तना हुआ।

भूतनाथ ने कुरता पहन लिया। फिर उस पर एक शाल लापरवाही से डाला और बाल सम्हाल लिए। मैरी ने देखा कि उसका चेहरा लम्बोतरा है, ठोडी दृढ और लम्बी है, होंठ पतले, ऊपर के होंठ का भाग क्षीण, नासिका, सुडौल कुछ-कुछ शुकनासिका सी, नासिका-छिद्र सुघड, गाल न अधिक भरे, न दबे हुए, माथा प्रशस्त और आखें बडी-बडी, पलके घनी, काली और कान अनुपात से कुछ अधिक प्रमुखता लिए हुए। उसकी भुजाएं जघाओ को छू रही थी।

मैरी ने यह भी भाप लिया कि भूतनाथ सुन्दर नही है पर उसके नक्श ऐसे हैं कि वह तुरन्त दृष्टि को बाध लेता है। उसका व्यक्तित्व विशिष्ट और विलक्षण अधिक

है। काश ! उसके कान कुछ छोटे होते और ठोड़ी हनुमान जैसी नहीं होती—"ओह ! हि इज एन इंकारनेशन आफ मंकी गॉड।···यह तो हनुमान का अवतार है !"

भूतनाथ चौंक गया। उसने देखा कि मैरी उसकी ओर घूर रही है और उसी ने यह कहा है—"हू इज हनुमान, कौन है अवतार हनुमान जी का ?"

"अरे, आप जानते नहीं ? एक है, मैं उसी के बारे में सोच रही थी।"

"नहीं आपने मुझे देखकर कहा है। आप कब से खड़ी थीं यहां ?"

"मुझे आए काफी देर हो गई, मिस्टर सिंह।"

"ओह···तो आप हमारी बातें सुन चुकी हैं ?"

"आप टहलने चलिएगा या यहीं सब पूछ लेंगे ?"

"ओह श्योर, चलिए···लेकिन यह रोजी नहीं चलेगी आज ?"

"आपको मेरे साथ घूमने में क्या आपत्ति है ? है क्या ?"

"ओह नहीं, यह तो आनन्द की बात होगी···और आप तो रोजी से भी अधिक सुन्दर हैं।"

"सच ? तुम सबसे यही कहते होगे ? ओह, ये पुरुष ! नारी को ये पुरुष ऐसे ही बनाकर उन्हें जीत लेते हैं।"

"मेरा इरादा तो हारने का है, जीतने का नहीं।"

"ओह गुड, तब आप जीतेंगे। मेरा विचार था, आप जीतना चाहते हैं।"

"मैं सदा हारा हूं, मिस मैरी।"

"च् च् च् बेचारा।"

दोनों ने कहाकहा लगाया और आगे बढ़ गए। वे पेड़ के नीचे के पत्थर पर बैठने के पहले टहलते रहे। मैरी ने देखा कि हनुमानजी के मंदिर की दीवाल बिल्कुल क्वारी नदी के किनारे पर बनी हुई है, जिससे नदी का पानी छप् छप् छप् करता रहता है। बरसात में तो लहरें इस दीवाल को काटती होंगी पर यह पुरानी चूने और पत्थर की है, सो झेल रही है और नींव के पास पत्थरों का ढेर भी किया गया है ताकि पानी की सीधी चोट दीवाल पर न पड़े। मैरी के दिमाग में प्रतीक उभरा। भूतनाथ को अपने में डूबता देखकर उसने सोचा कि यह भारतीय है। यदि यह अपने कुएं में डूब गया तो शाम खराब हो जाएगी। उसने उसे कोंचा—"मिस्टर गोस्ट ! आप इस मंदिर की मजबूत दीवाल देख रहे हैं ?"

"हां देखी है, देख रहा हूं, क्यों ?"

"आपने इसमें कोई प्रतीक पाया है ?"

"ओह, नहीं तो, आपने पाया ?"

"यह पाया। आप यह दीवाल हैं और मैं इस नदी की पतली धारा। बेचारी छप् छप् करती रह जाती है पर उसे गिरा नहीं पाती।"

"ओह ! तो तुम उसे गिराना चाहती हो ?"

"औरत नदी होती है न, वह समेटती है, एक करती है, पुरुष अपने अहंकार में पृथक् करते हैं।"

"वाह ! मैरी, तुम तो बड़ा सत्य कह गई, पर इसका उलटा भी हो सकता है कि पुरुष प्रवाह हो और नारी अटूट—दीवाल।"

"कैसे ?"

"मैं यह समझ नहीं पा रहा हूं कि आप लोग भारत में किसलिए आए हैं ?"

"साफ है कि हम फिल्म बनाने आए है और बागियों पर किताब भी लिख सकते है, रेखा-चित्र बना सकते है। ये डाकू है न, ये भिन्न प्रकार के हैं, भयकर भी, साधारण लोग तो ऊब पैदा करते है। उनमे कोई खासियत नही होती। वे उबाते है, नही ?"

"आप लोग सिर्फ फिल्म बनाने नही आए है।"

मैरी सतर्क हो गई। अब यह गया हाथ से। मैरी ने सोचा कि इसका ध्यान बदलना चाहिए। यह तो भेद लेने लगा। बहुत सावधान व्यक्ति है।

"मिस्टर भूटनाट, तुम नॉट नही नॉटी हो, तुम्हे नॉटी—शरारती कहूं ?"

"श्योर, पर नाथ का मतलब तो मी लॉर्ड, हस्बेंड, प्रोपरायटर, ओनर, यह सब होता है।"

"यदि मैं कहूं कि ये सारे अर्थ मुझे स्वीकार है तो आप क्या करेंगे ?"

"मै ? मैं आपका 'नाथ' नही बन सकता। मै तो भूतों का नाथ हूं न, लार्ड आफ द गोस्ट, दैट इज़ द महादेव, द शिव, द भैरव, एण्ड इफ यू विल, यू कैन से भूतनाथ मीन्स, द चीफ आफ द गोस्ट्स—भूतनाथ का अर्थ है, महादेव, शिव, भैरव और आप चाहे तो भूतनाथ का एक और अर्थ है, भूतों का प्रधान।"

"रियली ? लेकिन मै आपको भूतों का मुखिया मानती हूं !"

"मुखिया का अर्थ जानती हो ? इधर डकैत को 'मुखिया' भी कहते है तो भूतनाथ का अर्थ हुआ भूत तथा डाकू या भूतो का डाकू या डाकुओ का भूत या डाकुओ के बीच भूत !"

दोनो खिलखिलाए और अनायास उस पत्थर पर जाकर बैठ गए। भूतनाथ ने पेड पर नजर डाली, वहा कोई नही था। उसने चैन की सास ली।"

"तुमने उधर क्यो देखा ?"

"उधर पेड की ओट में उस दिन मिस कैरी आकर छिप गई थी ''उसने रोजी पर बंदूक तान दी थी'''बाद मे गुफा मे उसने डिनर दिया था।"

"ओह," कहकर मैरी काफी और भूतनाथ से सट कर बैठ गई जैसे वह डर रही हो। वह भूतनाथ के हाथ से खेलने लगी और अपने पैर हिलाने लगी। उसने कहा—"मिस्टर नॉटी।"

"यस।"

"मिस्टर नॉटी।"

"यस।"

दोनों हसने लगे। दोनो अपनी-अपनी घात मे थे।

"मिस्टर नॉटी,'''वो देखो, वह चिडिया जो टी-टी करती है, एक पैर से खडी हो जाती है, वह प्रेम का पक्षी है। वह प्रेम करती है, इसलिए अपने परिवार के लिए इतना श्रम कर रही है। आपने कभी प्रेम नही किया। तभी आप इतने सतर्क और कठोर है।"

"यह भी तो हो सकता है कि मैं प्रेम के कारण ही कठोर हू।"

"आप किससे प्रेम करते है ?"

"आपसे'''तुम से !"

"झूठे ! तुम किसी से प्रेम नही कर सकते, तुम सिर्फ अपने से प्रेम करते हो''' आय से यू आर एन इगोइस्ट, तुम अहवादी हो'''मिस्टर नॉटी, तुम किससे प्यार करते हो ?"—मैरी अपनी ही बात पर हस पड़ी।

"मैं अहंवादी नहीं हूं, मिस मैरी, मैं तो ह्यूमैनिस्ट—मानवतावादी हूं, इसलिए प्रेमी हूं।"

"वाह ! जो सबको प्यार करता है, वह किसी को प्यार नहीं कर सकता। मानवता तो अमूर्तता है, उसका आकार नहीं, ह्यूमैनिटी इज इन एब्सट्रैक्शन, नहीं ?"

"मनुष्यों में जो सामान्य बातें होती हैं, उन्हीं की जोड़ तो मानवता है न, और जो समष्टि है, कलैक्टिविटी, समूह, उससे प्रेम करना अमूर्तन कैसे हुआ ? समूह तो जीवित हमजिन्सों, हमारे ही जैसे लोगों का समूह हुआ न ?"

"तो तुम समूह को चाहते हो, ठीक है, चाहो, पर किसी एक की चाह उसमें बाधक कहां है—आय से ह्वेयर इज द कंट्राडिक्शन बिटवीन एन इंडीविजुअल लव एण्ड कलैक्टिव लव ? बल्कि जो एक को चाहता है, वही सबको चाह सकता है !"

"कैसे ?"

"कैसे ? मिस्टर नॉटी, मान लो तुम मुझसे प्रेम करते हो तो तुम्हारे हृदय में जो भावना है, वह सब मुझ पर बरसेगी, नहीं ? और उसमें तीव्रता होगी, फिर वह तीव्रता, वह इन्टेंसिटी फैलती जाएगी और सब जीवधारी उसमें आ जाएंगे।"

"गुड। वेरीगुड मैरी ! तुम इसका उलटा भी सोच सकती हो। जो सबसे प्रेम करता है, मेरा मतलब है, जो सरल है, मानवता के शत्रुओं से तो प्रेम नहीं किया जा सकता है न ? तो वह जो सबसे प्रेम है, वह फैला हुआ है, व्यापक है न ? अब सोचो, जिसका इतना विशद प्रेम है, वह जब एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों पर एकाग्र होगा तो उसमें कितना वेग और तीव्रता होगी ?"

"ओह ! गुड, रियली गुड···तो क्या मैं आशा करूं कि आप यह सौभाग्य किसी एक को देंगे या दे चुके हैं ?···लेकिन आपने तो एक ही जगह कई व्यक्तियों की बात की है ?"

"मैरी ! मैं उस प्रकार के एकनिष्ठ प्रेम के योग्य नहीं हूं।"

"क्यों ? आपको क्या हो गया ?"

"मैं ··मैं ··मुझे फुरसत नहीं है और फिर मेरा जैसा जीवन है, मिशन है या व्यवसाय समझिए, जो चाहे कह लें, उसमें मैं किसी को विधवा नहीं बनाना चाहता।"

"क्यों ? आप क्या सूली पर चढ़ने जा रहे हैं ? आप क्या जीसस क्राइस्ट हैं ?"

"जीसस क्राइस्ट महान थे, मैं तो साधारण हूं पर मैं क्राइस्ट के साथ धोखा करने वालों का विरोध करूं, उसे मारूं तो मुझे लगेगा कि मैं क्राइस्ट का काम कर रहा हूं। जीसस क्राइस्ट रहें, उसके आदर्श, उसका प्रेम, उसकी मानवता रहे, इसके लिए जरूरी है कि उनके साथ विश्वासघात करने वाले व्यक्तियों और वर्गों को समाप्त कर दिया जाए, क्या ख्याल है ?"

"तुम कहना क्या चाहते हो ?···तुम कुछ कहना जरूर चाहते हो ? पर क्या, यह मैं अनुमान नहीं कर पा रही हूं···मैं तुम्हारे मिशन में मदद करूं तो तुम्हें कैसा लगेगा, मिस्टर नॉटी ?"

"मुझे बहुत अच्छा लगेगा और रोजी की तरह मैं तुम्हें मित्र बना सकूंगा।"

"ओह ! रोजी से तुम्हारी मित्रता है, रोमांस नहीं ?"

भूतनाथ हंसा—"मित्रता क्या रोमांस नहीं है ?"

"है, पर रोमांस में कुछ और भी तो होना चाहिए।"

दोनों हंसने लगे। मैरी ने जो हंसना शुरू किया तो वह रुक ही नहीं रही थी।

"तुम कह रही थी कि तुम मेरे मिशन में मदद कर सकती हो ?"

"कुछ पता तो चले कि तुम्हारा मिशन क्या है ?"

"मेरा मिशन तो सीधा है, फूलों को बचाना, कांटों को काट कर फेंक देना। बुरों को यथासम्भव सुधारना, न सुधरें तो उनको समाज से हटा देना।"

"लेकिन कैसे, तुम क्या कोई आतंकवादी संगठन बना रहे हो ?"

"मैं जनसाधारण पर सत्ता, पूंजी, प्रपंच, सेना, पुलिस, नौकरशाह और नेता का जो आतंक है, उसको खत्म करने के लिए लोगों के पक्ष में शक्तिसम्पन्न संगठन खड़ा करना चाहता हूं। यह क्या रहस्य है, यह क्या स्पष्ट नहीं है ?"

"यह तो स्पष्ट है, क्लिअर, एज़ सन, लेकिन इसके लिए तो···इसके लिए यहां क्यों भटक रहे हो, क्या ये डकैत मदद कर सकते हैं ?"

"कभी-कभी कर देते हैं। सारे देश में मैं जनप्रतिशोध समितियां पीपुल्स रीजिस्टेंस बना रहा हूं। वे सिर्फ लाचार होने पर आत्मरक्षा में लड़ाई करती हैं, सामान्यतः तो वे लोगों को शांतिपूर्ण उपायों से ही लड़ाती हैं पर यह तो आप मानेंगी कि बहुत से ऐसे व्यक्ति और समुदाय हैं जो बिना मारे मानते नहीं हैं। वे बिना डर के दबते नहीं हैं, न काम करते हैं, न करने देते हैं।"

"तो···तुम पैगम्बर हो·· ह. हः हः हः···मैं भी किस ऊसर को सींच रही हूं··· मिस्टर नॉटी, तुम मूर्खों के स्वर्ग में विचर रहे हो, सर, यू आर इन द फूल्स पैराडाइज। तुम मानव-स्वभाव बदलने में विश्वास करते हो और यह पागलपन है।"

"मैरी, मैं ऐसा ही बेवकूफ हूं और तुम या कोई इसमें अब कुछ कर नहीं सकता। मैं बहुत ऊंच-नीच देखने के बाद इस नतीजे पर पहुंच चुका हूं।"

"तो···हः हः हः हः ··तो तुम्हारे इस पागल प्रयत्न में इस सिली मिशन में, मैं क्या मदद कर सकती हूं और मैं करूं तो मुझे क्या मिलेगा ?"

"मित्रता मिलेगी, स्नेह, आदर, प्रशंसा, यश और आप क्या कर सकती हैं, यह मैं समय पर बता दूंगा···मैरी, क्या आदमी जानवर है, क्या वह इच्छापूर्ति के लिए जीता है ? क्या उसमें कोई चीज, कोई ऐसी चेतना, कोई ऐसी आग, कोई ऐसी आरपार जाने की शक्ति, कोई ट्रान्सेंडेन्स नहीं है, जो उसे किसी वृहत प्रयोजन में लगा दे और उसकी पूर्ति में वह अपना जीवन खपा दे, सार्थक हो जाए, कृतकृत्य हो जाए, आय मीन हि आर शी मे एचीव अ मीनिंगफुल गोल ?"

मैरी मौन हो गई। भूतनाथ देर तक इसी तरह बोलता रहा। उसने यह भी नहीं देखा कि मैरी उसके कंधे से सट गई है और उस पर सिर रखकर सिसकने लगी है। कुछ क्षण बाद जब वह सुबकियां लेने लगी तो भूतनाथ को आश्चर्य हुआ कि मैरी को दुःख पहुंचाते, उस पर प्रथम संग-साथ में ही मिशन लादते वक्त उसकी सावधानी कहां खो गई थी ? यह उसे क्या हो जाता है कभी-कभी ? भूतनाथ अपने नित्य-साथी, अपराध-भाव से पीड़ित हो गया। उसने सोचा, यह बेचारी भोली-भाली सुन्दर किशोरी, अपने देश जाकर क्या कहेगी कि भारतीय कितने असभ्य और बर्बर हैं। उन्हें किसी महिला से मीठी बातें करना भी नहीं आता, न उन्हें फेयर सैक्स को प्रसन्न रखना आता है। भारतीयों में विनोद का शऊर और कोमलता क्या समाप्त हो चुकी है···यह मैं क्या बक गया इस सुन्दरी के सम्मुख···शायद यह उस शेफ्ट्सबरी के विरुद्ध मन में चल रही प्रतिक्रिया का परिणाम था·· पर अब क्या हो ?

भूतनाथ ने मधुरता से मैरी को थपथपाया और उसका मुख अपने हाथ में ले

लिया। रात काफी बीत गई थी अतः हवा में ठण्डक थी और वह एक शान्त मन्द गति से वह रही थी जैसे सम पर चल रही हो, जैसे भूतनाथ को समझा रही हो कि उद्वेग अच्छा नहीं है और अपना मर्म खोलना और भी बुरा है। क्वारी नदी के एक गहरे दह की ओर भूतनाथ का ध्यान गया। मानो वह कह रहा था कि भूतनाथ, तुममें गहराई रहनी चाहिए। तुम नदी की सूखती बालू नहीं हो, अगाध जलनिधि हो, दह हो···एक मैत्री और प्रेम की प्यासी आत्मा को तुमने निराश किया···।

भूतनाथ देर तक उस सुन्दर मुख को तारों की झिलमिलाती रोशनी में मृदुल मन से हेरता रहा। और फिर मैरी के आंसू पोंछकर उसके मस्तक पर अधर रख दिए।

मैरी विह्वल होकर भूतनाथ से लिपट गई। भूतनाथ ने उसे बांह से बांधकर अत्यन्त भीगी हुई भाषा में कहा—"मैरी। आय एम रियली सॉरी।"

मैरी ने उसके होंठों पर हाथ रख दिया और पुनः सिसकने लगी। भूतनाथ उसे बच्चे की तरह चुपाता रहा। किन्तु वह चुप नहीं हो रही थी।

"मैरी, आय विल रिमेम्बर यू, आय विल चैरिश यू बट यू मुड ट्राय टू फारगिव मी, फार माय आउट बर्स्ट···योर्स दीपट्सबरी अपसेट मी, मैरी, मैं तुम्हें भूलूंगा नहीं, तुम्हारी याद सहेजूंगा पर मुझे माफ करो, मैं अपने उद्गारों के लिए लज्जित हूं···आपके उस दीपट्सबरी ने मुझे अस्तव्यस्त कर दिया।"

अब मैरी के चकित होने की बारी थी। वह झटके से उठी और भूतनाथ का हाथ अपने हाथ में लेकर आत्मीय स्वर में पूछने लगी—"उसने क्या कहा, मैं सब सुन चुकी हूं। मैं उसके लिए आपसे क्षमा चाहती हूं···इन दोनों बुड्ढों को रोजी और मैं और हमारे दोस्त रावर्ट और ब्रोमले नहीं जानते कि ये किस चक्कर में हैं।"

"मैं जानता हूं। आप चारों में जटिलता नहीं है सरलता है, सहजता है, स्नेह है इसलिए तो मैं आज तुम्हें निराश करने के लिए दुःखी हूं···मैरी, मुझे अवसर दो, मैं सचमुच रोजी और तुम्हें चाहता हूं। तुम्हारा विवाह ब्रोमले से हो जाए, यह मैं चाहूंगा··· मैं मनुष्य नहीं हूं, एक भूत हूं, आय एम ऑनली अ घोस्ट, रियली। मैं तुम्हारे काबिल नहीं हूं।"

मैरी को भूतनाथ का वात्सल्य अखर गया। वह भड़क उठी। उसने अपने को भूतनाथ के स्नेहबंधन से अलग किया और बड़े ठस्से से उठकर खड़ी हो गई। पैर पटका और बालू हाथों में भरकर भूतनाथ से बोली—"मिस्टर घोस्ट, यह लीजिए।" भूतनाथ ने बालू हथेली में भर ली।

"इसे मुट्ठी बांधकर धीरे-धीरे छोड़िए, फिर बालू हाथों में लीजिए, फिर छोड़िए···आप इसी लायक हैं।"

झमाके के साथ, इठलाती हुई मैरी चली गई। उसने एक बार भी मुड़कर भूतनाथ को नहीं देखा···वह सचमुच चली गई। भूतनाथ बालू को मुट्ठियों में धीरे-धीरे छोड़ रहा था और पुनः भर रहा था।

20

मानपुरा के ठाकुरों के नरमेध से बचे हुए धानुकों में से कुछ ने सोचा कि सरकार के आश्वासन वजन नहीं रखते क्योंकि सरकार में भी बड़े लोगों का ही बहुमत है। पुलिस कहां-कहां धानुकों को बचाती फिरेगी और बचाना भी चाहे तो ठाकुरों के प्रभाव और पैसे के लोभ में पुलिस ऐसा क्यों करेगी ? ठाकुरों से बदला तो दलराम अहीर ही लिवा सकता है। वह गुलाबसिंह का दुश्मन है और वह यादवों का हीरो है। उसकी बन्दूक के बल पर जसवंतनगर के जसवंतसिंह, हनूतसिंह, एटा के लाला प्रभातीलाल, कासगंज के सनेहीसिंह यादव और मध्य-उत्तर प्रदेश के जितने भी यादव-गडरिया-गूजर कजाट-कुर्मी-काछी आदि मँझोली जातियों के नेता, चुनाव में जीतते हैं, वे सब दलराम के आतंक के दम पर जीतते हैं। वह इन जातियों को एक करता है और दूसरी जातियों को वोट नहीं डालने देता। अगर आधे-तिहाई बूथों पर भी दलराम के दादा लोगों का जोर चल जाता है तो मंझोली या पिछड़ी जातियों के नेता जीत जाते हैं। वे चुनाव जीत कर मंत्री बनते हैं और बदले में पुलिस दलराम के गिरोह को ढील दे देती है···सब ऊंटों की तरह भले और बुरे, दादा और गुंडे, बागी और पदवीधारी, जातिवादी और जुल्मी, सब एक दूसरे की पूछ से बंध गए हैं। इसलिए प्रत्येक जाति अपने नेता, अपने अधिकारी, अपने शिक्षक, अपने पटवारी, अपने दरोगा, अपने दादा, अपने दलाध्यक्ष और अपने बागी पैदा करने की होड़ में है। सरकार पर हर जाति अपना कंट्रोल रखकर अपनों के लिए पहले, दूसरों के लिए बाद में काम करना चाहती है।

इनके लिए जनाधार का मतलब है, जाति आधार और समाज सेवा का अर्थ है, जाति-सेवा—अपने को पहले, दूसरों को बाद में, अपनों को माल सौंपो, दूसरों के सिर्फ आंसू पोंछो—मुंह पर समाजवाद, हृदय में जातिवाद, आत्मा में स्वार्थ और व्यवहार में हथजुरई या शिष्टाचार, नम्रता और खीसें-निपोरू उदारता, यह हो रहा है, सर्वत्र···तो ऐसे में, निर्बल धानुकों के समर्थन के लोभ में दलराम अहीर का भुजबल हरिजनों को बचा सकता है और भूपसिंह-सुघरसिंह-सरूपा आदि को मजा चखाया जा सकता है।

मानपुरा के नरमेध से, स्वर्गीय पचमा धानुक के लठैतों के बलिदान के बाद भी कई धानुक उस रात मानपुरा में न रहने या नरमेध के समय इधर-उधर भाग जाने या बड़े ठाकुर बानसिंह की शरण ले लेने से बच गए थे। इनमें गडेरा, धाधू, झम्मन और टुंडा धानुक तगड़े और सरकस थे। वे भूपसिंह से किसी भी कीमत पर बदला लेने के लिए चुपचाप दलराम अहीर उर्फ नेताजी के पास गए जो भोगाव के पास, समोली गांव में, एक पुरअसर, बड़े किसान यादव सत्ती प्रसाद के पक्के मकान के भीतर दलबल सहित डटा हुआ था। अहीर जासूस, गुलाबसिंह डाकू का भेद ले रहे थे और दोनों गिरोहों में किसी भी दिन गोलीकाण्ड हो सकता था क्योंकि अहीरों और ठाकुरों की प्रतियोगिता के कारण अहीर ठाकुरों पर और ठाकुर अहीरों पर डकैती डालते या पकड़ करते थे और अन्य जातियां भी जब तब चपेट में आ जाती थीं पर डाकू हमेशा जनाधार अपनी जमातों में दृढ़ किए रहते थे।

धाधू ने पृथ्वी पर सिर झुकाकर चौधरी दलराम उर्फ नेताजी को प्रणाम किया और कहा—"चौधरी। हम आपके सरन हैं, हमें बचाओ, ठाकुरों ने हमारा नाम-निशान मिटा दिया।"

"तुम ठाकुर दलराम यादव को चौधरी कह रहे हो? हम अहीर हैं या ठाकुर?"

धाधू चकराया और अपने साथियों का मुंह जोहने लगा। टुड्डा धानुक ने बात सम्हाली—"ठाकुर। यादव तो छत्री हैं। हम तो मानते हैं पर ठाकुर नहीं मानते। आप उन्हें मनवाएं। उसके लिए मानपुरा पर आप चढ़ें और कमाई छत्री लोगों का मान मिट्टी में मिला दें ''तब सब, यादवों को छत्री मानने लगेंगे, 'जो मारे सो मीर', यह कहावत क्या झूठी है सरकार?"

दलराम खुश हो गया। मूछों पर ताव देकर बोला—टुड्डा! तू समझदार है। मानपुरा में किनने धानुकों को हना है?"

"भूपसिंह ने, सुपरसिंह ने मदद की। ये दोनों गुलब्बा को ले आए। गुलब्बा डाकू ने हमारा सत्यानाश कर डाला, ठाकुर, दुहाई है।"

"हम अभी देत हैं तुम्हें टुड्डाराम, हम छत्री हैं। जे भूपसिंहा—भूपा-नरूआ, जे मारे कुरतन की औलाद हैं। हम उन्हें देख ली है।"

दलराम के गिरोह का सबसे प्रबल और निडर धवल भीमा यादव बोला लेकिन उसका हस्तक्षेप दलराम को बुरा लगा—"तुम चुप रहो, भीमसिंह। जब नेताजी बोल रहे हों तो बीच में तुम क्यों टपके''' खैर धाधू, तुम तो धाधू धकेल हो, भीमा जैसे तगड़े पट्ठा हो'' तुम क्या कर सकते हो?"

धाधू धकेल सचमुच मोटा, काला और डरावना था। वह दो-चार आदमियों की खोपड़ियां लड़ा सकता था। वह अकड़ कर बोला—

"ठाकुर साहब! अगर मेरी एक लाठी में भूपा की देह से पीला खून न निकलने लगे तो मैं धानुक के बीज से नहीं, नगी के बीज से माना जाऊं। ठाकुर, आप चढ़ाई करो, फिर धानुकों की चोटें देखो। हमें मरने-जीने की परवाह नहीं। हमारा तो बीजनाश हो गया ठाकुर, अब जीना मरने के बराबर है'''बस, दुश्मन को मार लें तो कलेजा ठण्डा हो जाए, अलाव सा धुधवा रहा है'' हाय!"

"तुम कल दोपहर तक कितने धानुकों को ला सकते हो?"

"कूड़ा-करकट इकट्ठा करके क्या होगा, मालिक? हम दस-पन्द्रह धानुक गिरोह के आगे चलेंगे, लड़ेंगे और जान की बाजी लगा देंगे'' आप हुक्म तो करो, ठाकुर।"

"दस-पन्द्रह नहीं, बीस-पच्चीस धानुक लाठी और फरसे सम्भालो। तुम हरिजन हो, बन्दूक तुम चला नहीं पाओगे, तुम अपने दुश्मनों को मारना, जलाना, चाहे जो करना, हम साथ देंगे, ठीक है?"

"ठीक है, ठाकुर, आपकी हजारी उमर हो, आपकी जै हो, आपका बाल बांका न हो, बोलो दलरामसिंह ठाकुर की जै, पुलिस की छै।"

टुड्डाराम के नारे पर जै-जै कार हुई। सभी हर्षित हुए।

उस दिन, रात और दूसरे दिन भर तैयारी होती रही। जो हथियार किराए पर उठाने का धंधा करते थे, उनके यहां से बन्दूकें मंगा ली गईं और जिस तरह शेर के शिकार पर चढ़ते समय पीछे भीड़ हो लेती है, उसी तरह छोटे-मोटे बदमाश, राहजन और साहसिक कर्म के प्रेमी उत्साही जवान भी शामिल होकर लड़ाई के लिए उठने लगे। दलराम ने मुख्य गिरोह के डकैतों में तीन साथियों को चुना जो प्रहार और पलायन दोनों में चतुर थे। उनके पास बढ़िया बन्दूकें और चाकू थे। दलराम और भीमा के पास स्टेनगन या कारबाइनें थीं, जिन्हें मोड़ कर कुहनियों से सटाए साथ चलते थे। कारतूस

की कमी नहीं थी क्योंकि लाइसेंसधारी लोगों को सौ कारतूस खरीदने की अनुमति थी। ऐसे लोग नाजायज कारतूस खरीदते और डाकुओं को बेच देते थे।

जब किसी की पकड़ होती तो भी डाकुओं के एजेण्टों का कमीशन बांधा जाता था। जो पकड कराए, उसे दस प्रतिशत, जो रुपया दिलाए और छुड़वाए उसे बीस प्रतिशत और जो सामान सप्लाई कराए, उसे पाच प्रतिशत मिलता था। जिस इलाके मे डकत रहते, उन्हे माल-कपडा-लत्ता, नशा-पानी, बीड़ी-सिगरेट, पानपत्ता, मेवा-मिष्टान, टार्च और हथियार, सभी कुछ सुलभ कराया जाता और बेकारी या गरीबी से परेशान, साहसी जवानों की चादी कटती थी।

डाकुओं के आगे बढ जाने से इलाका सूना हो जाता और तो और मंदिरों के पुजारी और पण्डित भी उदास हो जाते क्योंकि बागी खूब चढावा चढाते और शकुन विचारने वाले पडितो-ज्योतिषियो को अच्छी दक्षिणा मिलती थी। दीनहीनों मे डकैत रुपए बाटते और लोकप्रिय हो जाते। वे साहस और रुपए की शान से, गाव जवार मे एक समानान्तर व्यापार को जन्म देते थे। सरकार से अधिक, बेकार युवक, डाकुओं का यश गाते थे। उनके साहस की कहानियां कही जाती और अल्हैत हर एक बड़े डाकू की आल्हा बना लेते जिसे सुनकर बागी रुपए लुटाते और मस्त हो जाते।

गिरोह के चलने के पूर्व एक अल्हैत ने कनपटी पर हाथ रखकर, ढोलक की थाप पर दलराम सिंह बागी की आल्हा गाई—

"दलाराम दद्दा जब जनमे
धरती हली पतालन माहिं
सूरज कम्पैं, चन्दा कम्पैं
तारे काप काप रहि जाएं।
भए सयाने दलाराम जू
मानों कोई केसरी कुमार
गगा मे जल जैसे बाडे जैसे बेल बडे दिन रात
बोलें दलसिंह, नाहर नाईं
सूखे बादल सो अर्राय
बिजुरी चमकै जाकि आखिन मे
मूह तें चुअत दूध की धार
डाके मारे अरे सैकरन,
मारामारी दई मचाय
कोऊ दुसरिहा ना पैदा भौ
काहू करेजें जमे न बार
जापै चढ गओ दलारामसिंह
ताकि गई भाभई आय
हड्डी तोर दई लाठिन सौं
गोलिन खुपरी दई उडाय
गरभ गिर गए हैं नारिन के
जा छन गरजे दलारमाय
लाला लूटे, ठाकुर लूटे

लूटे बाम्हन औ बेईमान
रक्त पी गए बनिया-बाट
माया जोर धरी घर माहिं
तारौ छीनो दलाराम ने
औ जनता में बांट दई जाय
जाकि घसरी भूखी देखी
तो भर दई लूट सौं जाए
निरधन के बल दलारामजू
बलवानन कौ काल कराल
जा को धमकी कल कें दै दे
ताको सून बहै दिन रात
ढीले भए औसान पुलिस के
गिर गए बड़े-बड़े महिपाल
हवलदार हैरान भए लिग, दारोगा भए दरोगारात
वर्दी उतरी इस्पेक्टर की, डीअसपीय डरे जिय माहिं
उपर चढ़ि आओ जिलाधीश को, पोंकत फिरैं पुलिस कप्तान
मैं-मैं करें मनिस्टर साहब, कोऊ धीर बंधावा नाहिं।
दलाराम जू और भीमा जू
हैं बलराम-किसन औतार
मानपुरा के मरकापुर पै
चढ़ि रहो बीर बली दलराम
सैर मनावो भूपा-भुपरा
तुम्हरो काल रहो नियराय
बीर पधारो दलाराम को
जो सुन लेय, सिह नैं जाए ॥

दलाराम का गिरोह, आल्हा सुनकर उत्साह उन्मत्त हो गया। भीमा ने एक-एक करके साथियों को मानपुरा की तरफ चलता किया और कहा कि वे मानपुरा की महामाया के मन्दिर पर एकत्र हों। वहां पूजा करके तब भूपसिंह पर टूटना होगा। पानुको को पथप्रदर्शन के लिए आगे रखकर मरने-मारने का मौका दिया जाएगा। बाकी दो-दो, चार-चार की टोली में आड़े तिरछे रास्तों से चलें ताकि पुलिस को शक न हो और गांव वाले मानपुरा पहुंच कर खबर न दें।

दलाराम, भीमा वगैरह मान-उलमान डाकू जीप में भरे आगे चले। नेताओं को नेता के वेष में ही रहना था। मौके पर पहुंचकर डी. आई. जी. की ड्रेस पहन लेनी थी। भीमा और अन्य नकल्चों को भीतर बिठा दिया गया और दलाराम शहर के कुर्ता-पजामा में था साथी टोपी में ड्राइवर की बगल में बैठा। जीप पर कांग्रेस का झंडा लगा दिया गया। जीप शान के झपट्टे में सरसराती हुई निकल गई। लोग समझे, कोई नेता होगा। जीप भोपाली मनी खनाट वाहन की थी किन्तु मनी पालक था। उसने जीप दे दी थी पर ड्राइवरी के लिए अपने घर से किसी को नहीं भेजा और न खुद साथ गया। उसने सोचा, पुलिस ने यदि पकड़ भी लिया तो कह दिया जाएगा कि डाकू जीप

उड़ा ले गए होंगे। भीमा ने नम्बर बदलवा दिए थे और एक बागी जीप को धड़ल्ले से हांक रहा था।

मानपुरा के पास पहुंचकर जीप को एक अटपटी जगह पर पेड़ों की ओट में छिपा दिया गया और उसकी रक्षा के लिए ड्राइवर डाकू के सिवा एक-दो बागियों को छोड़ दिया गया। डी. आई. जी. की ड्रैस पहनकर दलराम ने करबाइन कंधे पर डाली और कारतूसों की पेटी बांध ली। सबको शराब के दो-दो गिलास दिए गए और नमकीन मुंह में झोंकते, चबाते और सूखी मेवा कुटकते हुए सरदार दलराम और उसके साथी मानपुरा के मन्दिर पर जा पहुंचे।

नेता जी पूजा की सामग्री जीप में साथ लाए थे। गिरोह में एक-दो ब्राह्मण भी थे। उन्होंने दस्यु-संस्कृत में, जिसमें सिर्फ कुछ संस्कृत के शब्द और पीछे से 'म्' जोड़ दिया जाता था, पूजा कराना शुरू किया। पुजारी भयभीत होकर देवी के गर्भगृह से बाहर नहीं निकला। वह कांप रहा था और आंखें बन्द कर मन्त्र बुदबुदाता हुआ महामाया से प्राणरक्षा का वरदान मांग रहा था। वह समझ गया था कि यह दिलराम अहीर है और आज मानपुरा का मानभंग होगा।

ओउम्, काली ककाली कलकत्ते वाली, महामाया मानपुरा वाली भूपसिंह जजाली, सरूपा पाजी, सुघरा, लुखरा, निसाना न चूके महिसासुर मर्दनी, मानपुरागंजनी, भूपा की हगनी बन्द हो जाए, छलनी हो जाए उसकी छाती, ओउम् माता असुरनासनी, दलराम के दिल में बासनी, भीमा भयंकर की हंसनी महामाया की रच्छा कर धानुक-धुसकारी भूपा दाने को मार, करत हों जुहार तोय हे माता, विजय दिला, भक्तन कू माल दिला मैया, डुबा दुस्मन की नैया, पूजा स्वीकार कर दलराम यादवस्य माफ कर हूमम्। ओम महामायाय नमम हूमम तुमम!"

पुजारी को डर में भी हंसी आ गई। भीमा ने घूर कर उसे देखा। पुजारी हाथ जोड़ कर पुन. ध्यान में लग गया पर भीमा के बिगड़ने पर डरकर बोला—"यह पूजा भ्रष्ट संस्कृत में हो रही है, सुफल नहीं हो सकती।"

"तो तू सुद्ध संसकरत में क्यों नहीं कराता ?" भीमा ने बंदूक तानी।

पुजारी घबरा कर संस्कृत बोलने लगा और हाथ के संकेत से सामग्री चढ़ाने को कहा। उसे जो कुछ भी याद था, बिना रुके धाराप्रवाह कहता जा रहा था और थर-थर कांप रहा था। वह मन-ही-मन इन मरदूदों को श्राप दे रहा था पर शब्दों में उनके कल्याण की कामनाएं कर रहा था। डाकू पुजारी की इस हालत पर छतफोड़ ठहाके लगा रहे थे।

दलराम ने 201 रुपए चढ़ाए और पुजारी को 51 रुपए की दक्षिणा दी पर पुजारी गंभीर बना रहा। वह गद्गद नहीं हुआ, वह डरे हुए चूहे की तरह दस्युओं को देख रहा था।

तब तक बागियों के खोजी, भूपसिंह वगैरह के घर का नक्शा समझ कर आ गए थे और दलराम और भीमा ने घर घेरने के दांव बताए और सबकी जिम्मेदारी तै कर दी। बागी एक-एक कर अंधेरे में अपने-अपने स्थान पर जम गए। रात के ग्यारह बज रहे थे और लोग सो रहे थे, कोई बाहर, कोई छतों पर। जो जहां तहां जगे हुए मिले, उनकी छाती पर बन्दूक रखकर उनका मुंह बन्द कर दिया गया। सिर्फ बड़े ठाकुर के घर पर प्रहरी थे, सो उधर बागी नहीं भेजे गए पर एहतयातन, कुछ बागियों को बड़े ठाकुर के घर के बाहर छुपा दिया गया। यदि ठाकुर के पहरेदार गोली चलाएं तो जवाब दिया जाए।

भीमा के इशारे पर धापू, टुंडा आदि को छतों पर चढ़ा दिया गया क्योंकि भेदियों ने भूपा, सरूपा और सुपरा को छतों पर सोया हुआ बताया था। अतत: दलराम के संकेत पर भीमा विराट टार्च इधर-उधर फेंकते हुए गरजा—"जो जहां-जहां है, वहीं रहे, नहीं तो मारा जाएगा। हम गांव के नहीं, वैरियों के वैरी हैं।"

भूपा-सुपरा के घरों के चारों कोनों पर चार-चार बागी आस-पास, ऊपर-नीचे टार्चों का प्रकाश फेंकने लगे और गोलियों से भाड़-सा भुनने लगा। आसपास की छतों पर सोते हुए लोग जहां के तहां, सांस साध कर रह गए। जिसने सिर उठाया, उस पर भूपा-सुपरा की छतों पर जमे डाकुओं ने गोली दागी। कई घायल होकर चीत्कारने लगे। इससे सब डर गए और प्रतिरोध के लिए कोई नहीं आया। गांव तेज धारा में पड़ी छड़ी की तरह कांप रहा था।

डाकुओं ने भूपा-सुपरा की छत पर लेटे उनके परिवार को कब्जे में ले लिया और धापू टुंडा को सौंप दिया कि वे जो चाहें सो करें। धापू रीछ की तरह बलवान था। उसने गालियां देते हुए भूपसिंह को धर-पटका और जी भर कर ठुकाई करने लगा। यही हाल सरूपा और सुपरसिंह का हुआ। धानुकों ने उनकी औरतों-बच्चों को भी नहीं छोड़ा लेकिन नेताजी का नियम था कि वह स्त्री पर बलात्कार नहीं होने देता था। जब धापू भूपसिंह को मारकर उसकी औरत पर अत्याचार करने बढ़ा तो एक अहीर बागी ने कहा, "साले, उसका नाम, दलरामसिंह है, वह तेरे को बधिया करा देगा। तू जान ले सकता है, माल ले सकता है पर औरत की इज्जत नहीं ले सकता।"

धानुकों ने यह सुनकर बच्चों और औरतों को मार-मारकर उनका भुर्ता बनाना शुरू किया। उधर घरों के भीतर घुसकर अहीर डाकुओं ने माल पर हाथ मारना चालू रखा। घरों और छतों पर हाहाकार मचा था और बाहर भीमा गरज रहा था। सारा गांव दहशत में जड़ हो गया था। डाकुओं की संख्या काफी थी और वे सशस्त्र थे, इसलिए गांव के दूसरी तरफ के लोगों ने विरोध बेकार समझा। प्रतिरोध की हालत में डाकू सारा गांव लूट सकते थे और जला सकते थे।

थोड़ी देर तक इस निर्दय धमाधम और धांय-धूम और चीख-पुकार के बाद धानुकों ने बिना आगा-पीछा सोचे, भूपा और सुपरा के घरों में आग लगा दी। घरों पर छप्पर थे, बाहर दरवाजे पर भी, इसमें आग ने तुरन्त जोर पकड़ लिया और रोशनी में बागियों के आकार स्पष्ट दीखने लगे।

वे यमदूत से अट्टहास करते हुए भूपा-सुपरा तथा उनके अन्य कुनबई ठाकुरों के स्त्री-बच्चों को मार-मार कर आग में फेंकने लगे और धानुकों पर ठाकुरों के जुल्म का उलाहना देते गए—"ठाकुरो, देखो, यह बच्चे के बदले बच्चा... यह औरत के बदले औरत।... यह आदमी के बदले आदमी, यह बूढ़े के बदले बूढ़ा... यह लो, सबक लो अपने कुकर्मों का, अब कभी हिम्मत न करना ससुरो, नहीं तो अगली बार रिश्तेदार भी मरेंगे, सब के सारे बाड़े-भराड़े भस्म कर दिए जाएंगे। बोलो बागी माई की जै, बोल सत्ता-माता की जै, बोल भैरों बाबा की जै... हः हः हः हः।"

भूपा के पक्के मकान में एक सौरैया का घोंसला था। आग की लपट देखकर सौरैया का जोड़ा उड़कर भागा मगर अंडे-बच्चे जल गए। बाहर भीमा खड़ा था। टार्च बुझती, जलती, फिर बुझ जाती थी। चिरौंटे ने शुरू आवाज-सा से पहचान लिया था। वह तीर की तरह छूटा और भीमा के सिर पर चोंट कर भाग गया। बागी हंसने लगे, तब तक चिरैया उड़ी और उसने भीमा के माथे पर मार दी। भीमा के हाथ से टार्च छूट

पड़ी पर उसने दूसरे हाथ से मारकर चिड़िया को गिरा दिया फिर बन्दूक के बट से कुचल दिया—"ससुरी ने आख फोड दी होती, ले मर।"

चिरैया मर गई, उसकी चोच ऊपर को उठ गई थी और वह अजीब करुण नेत्रों से,भीमा को ताक रही थी। वे आंखें वह नही सह सका। उसने जूते से उसका मुंह पिचका दिया और आखें मसल डाली—"ले सारी, कैसी भकुर भकुर के देख रही थी। मेरा मुह घायल कर दीन्हा ससुरी ने, नास जाए तेरा।"

बागियों ने भीमा की हालत पर खूब मनोरंजन किया। भीमा माथे से बहते खून को बार-बार पोंछ रहा था पर वह रुक नही रहा था।

उन ठाकुरो के घरो को जगल की तरह जलाने और उसमे ठाकुरों के परिवारों का होम करने के समय भूपसिंह के घर में एक ही प्राणी बचा था जो भूपसिंह की कन्या माया देवी थी। वह घर मे आग लगते ही प्राण-रक्षा के लिए घर के पिछवारे के द्वार से निकल कर बाहर के खेत मे छुप गई थी और नदी में बाढ़ के समय किनारे-सी कम्पित हो रही थी। डर से उसकी दाती बध गई थी लेकिन शोर न करने के संकल्प के कारण वह मुह को हाथों से बन्द किए मेड़ पर उगी झाडियों की आड़ मे पड़ी हुई थी लेकिन बागियों की तेज टार्चों ने उसे भी खोज लिया और उसका हुस्न और सेहत देखकर एक ने चुपचाप भीमा से आकर कहा—"सरदार! आपके लायक माल है, इधर आइए, जल्दी, नहीं तो 'नेताजी' रोक देंगे।"

नेता करबाइन से जब तब फायर करता हुआ चाक-चौबंद खड़ा था और उसके अगरक्षक बागी उसके आसपास थे। भीमा अपने बाद अपने लेफ्टीनेंट परतापसिंह यादव को चार्ज सौंप कर घर के पिछवारे गया जहां उस लडकी को पकड़े बागी खड़े थे। भीमा देखते ही समझ गया कि यह किशोरी सुन्दर है और कद-काठी दिलकश है। उस पर टार्च फेंककर उसने उससे पूछा—"तेरा नाम क्या है?"

"माया देवी।"

"वाह, महामाया निकली यह तो। तो माया, तुम्हारे रूप की माया से हम वशीभूत हो गए। साथ चलोगी?"

"मुझे मार डालो, गोली मार दो···मैं जी कर अब क्या करूगी?" वह फफक कर रोने लगी। रोने से उसका शरीर हिलता तो भीमा को लगता, मानो किसी गुलशन मे हवा चलने से फूलों के पौधे हिल रहे हो और सुगन्ध के ढेर छोड रहे हों।

भीमा उसे देखकर मस्त हो गया और उसने उसे फूल की तरह ऊपर उठाकर अपनी विराट छाती से चिपका लिया। माया सिकुड कर सिमट गई पर वह अपने उभरे हुए, पुष्ट शरीर का क्या कर सकती थी, उसे तो उस भीमासुर का गन्दा शरीर छू ही रहा था। हसते हुए भीमा ने उसे धरती पर खड़ा कर दिया।

"माया। मैं तुमसे विवाह कर लूगा। तुम पर कोई कुछ नही करेगा। तुम घबराओ मत। हमारे गिरोह मे औरत पर अत्याचार नही होता पर प्यार तो हो सकता है। मैं तुम्हे प्यार और अधिकार दूगा··· बिशनसिंघ, तू इसे उठाकर ले जा, दो बागी साथ ले जा और जीप से इसे मेरे अड्डे पर छोड आ। कानोकान किसी को, नेताजी को, खबर लग गई तो तुम्हारी खैर नहीं···माया का मुह बांध दो और हाथ-पैर चलाए तो हाथ पीठ पर कस दो। इसे पकड कर जीप मे बैठना, एक मिनिट को भी छोड़ना मत और न इसे छेड़ना। यह भीमसिंह की बहू बनेगी, समझ गया न या तुझे समझाऊ?"

"समझ गया सरदार···आप बेफिकिर रहें, ऐसा ही होगा। जीप से इसे अड्डे

पर छोड़ कर जीप दोबारा वहीं खड़ी कर देंगे।"

"तू समझदार हो गया रे बिदाना, जा जल्दी कर'''नेता हमें न देखकर संदेह करेगा।"

जबरदस्ती अंगोछे से माया का मुंह कस दिया गया और हाथ पीठ पर। बिदाना माया को गठरी की तरह उठाकर चल दिया। दो गनधारी उसकी रक्षा के लिए अगल-बगल चले। भीमा मुस्करा रहा था।

वे बागी जीप से अड्डे पर माया को पहुंचा कर लौट आए, इसलिए भीमा ने नेताजी से कहा कि यह तो सब भस्म हो गया, हवेली जल गई। अब पुलिस को चकमा देने के लिए हम जिधर से आए थे, उधर से उल्टी दिशा में चलना चाहिए। पुलिस मौके पर कभी नहीं आती। छोटी तनख्वाहों वाले सिपाही अपनी जान जोखिम में क्यों डालें पर घटना घट जाने के बाद वह जरूर आ जाती है। नेता को विचार पसंद आया। उसके संकेत पर सब बागी अचानक गोलीकाण्ड करते, फायरों से दीपावली की रात रचते हुए धीरे-धीरे खिसकने लगे और गांव से निकल जाने के बाद गिनती की गई कि कोई पीछे रहा तो नहीं। सब सुरक्षित थे और उपस्थित थे अतः अब मालमता, छोटे बागियों और धानुकों पर लाद कर विपरीत दिशा में जाकर एक बाग में सब सुस्ताने लगे।

डरे हुए उल्लुओं का शोर रात का डरावनापन बढ़ा रहा था और तारे लाचार गवाह से ताक रहे थे। किसी दरख्त से कोई छोटी-सी टहनी चरर से टूट कर गिरी।

लम्बा चक्कर लगाकर, सवेरा होने पर एक-एक, दो-दो के गुच्छों में बंट कर डकैत दोपहर और शाम तक अड्डे पर लौटे, कुछ तो दूसरे गांवों में ही रुक गए। नेताजी और भीमा जीप से, माल के साथ सुबह होने के पहले ही वापस आ गए। भीमा को माया के पास पहुंचने की जल्दी पड़ी हुई थी। उसने नेताजी के आराम की व्यवस्था की और चिड़िया की चोंच से टीगते माथे पर दवा मलकर वह फुरती से अपने गुप्त अड्डे पर पहुंच गया। वह एक अहीर का मकान था जो कच्चा होने पर भी मजबूत और सुरक्षित था। मकान मालिक भीमा का विश्वासी था और लूट के माल का एक अंश उसे मिलता था। इसलिए वह सेवा में तत्पर था। मकान के भीतर, एक ओर, एक कमरे में माया को ठहराया गया था। उसे रात में लाए जाने पर बलपूर्वक दूध पिलाया गया था और आराम से चारपाई पर लिटा कर बाहर से कमरा बंद कर दिया गया था। भीमा ने खिड़की से देखा कि माया बेखबर सो रही है और उसे तन-बदन का होश नहीं है।

नींद सुख से नहीं आती परन्तु दुःख में घनघोर नींद का छाता पड़ता है। माया को निद्रा देवी ने अपनी गोद में लेकर उसे बचा लिया था।

मकान मालिक ने सलाह दी कि भीमा भी आराम कर ले। जब माया जगे और उसका स्नान-ध्यान, भोजन-भजन हो जाए और उसके बाद दोपहर में वह एक बार फिर सो ले, तब रात में भीमा उससे मिले क्योंकि वह जान भी दे सकती है। यही हुआ। मकान मालकिन ने लाड़-प्यार दिखाकर और माया को पूर्ण सुरक्षा का आश्वासन देकर स्नान-भोजन के बाद पुनः सुला दिया। वह फिर बेसुध हो गई। शाम को नींद खुलने पर उसे पुनः स्नान कराया गया और नए वस्त्र दिए गए और [illegible] उसे रात भींगते ही, छत पर बनी अटारी में पहुंचा दिया गया।

माया समझ गई कि भीमा उस पर क्या वार करेगा। वह मन-ही-मन दिन भर बार-बार के रोने धोने [illegible] कि वह उसकी लाज बचाए। उसके हृदय में साहस भी था, भाई-भतीजा गवाँ कर मान से अग्नि की लपटें सी उठ रही थीं और उसे सब कुछ [illegible]

हो रहा था। उसके तन-बदन में शोले से भड़क रहे थे और वह उठकर छत पर चक्कर काट रही थी, ऊंचाई भांप रही थी कि वह कूद कर भाग सकती है या नहीं। मकान बहुत ऊंचा नहीं था। हां, भीमा के आदमी अवश्य आस-पास हो सकते हैं। उसे जब कोई उपाय नहीं सूझा तो वह पुनः अटारी में आकर रोने लगी। और रोते-रोते अर्धतन्द्रा में उसने देखा, मानो देवी महामाया उसके सिर पर हाथ रखे बैठी है और उसे समझा रही है—

"बेटी। तू मेरा ही रूप है। तू इस भीमासुर पर मोहिनी डाल और अवसर पाकर निकल जा। सीधे पुलिस थाने में जाना, बस तेरा उद्धार और दस्युओं का संहार हो जाएगा। तू चिंता मत कर, मैं तेरे अंतःकरण में विद्यमान हूं। तू पवित्र है, यज्ञवेदी है, तुझे यह स्वान, भीमासुर छू नहीं पाएगा।"

माया इस स्वप्न से पसीना-पसीना हो गई। वह जब उठकर बैठी तो उसे लगा कि उसके शरीर में एक पर एक शक्ति-तरंगें उठ रही हैं और सारा दुःख, ग्लानि और भय लुप्त हो गया है। उसने अपने भीतर देवी का आवेश अनुभव किया और वह महामाया का स्तवन करती हुई भीमा की प्रतीक्षा करने लगी।

भीमा नहाधोकर, साफ कुर्ता-धोती पहनकर हाथ में मिठाई का दोना लिए और एक बैग में नशे-पानी का सामान लिए हुए आया। उसने देखा कि माया सजीबजी अटारी की एकमात्र चारपाई पर पाल्थी मारे, हाथ जोड़े आराध्य देवी के ध्यान में डूबी हुई है।

स्त्री का पावन रूप, वासनाग्रस्त व्यक्ति में और अधिक यौन-उत्तेजना पैदा करता है। माया सुन्दर थी। उसे ध्यानावस्थित देखकर भीमा के मन में सौम्यता भी आ सकती थी, धीरज सहित प्रतीक्षा जग सकती थी, उसकी पशुता दब सकती थी पर नहीं, माया की पवित्र मनःस्थिति देखकर उसमें उसे विदीर्ण करने का भाव वैसे ही जगा जैसे खिले हुए पुष्प को देखकर किसी दुष्ट बालक में उसे तोड़कर नोच डालने का चाव और उतावलापन जगता है। भीमा ने मिठाई का दोना माया के सम्मुख रखा और बैग एक तरफ रखकर कहने लगा—"मायादेवी। हम यादव आपके घर की बरबादी के कारण नहीं हैं। बदला धानुकों ने लिया है क्योंकि आपके पिता ने धानुकों पर गुलाबसिंह बागी को चढ़ा कर उनका सत्यानास करा दिया था। उसका खामयाजा भूपसिंह और सुधर को मिला। इसमें हमारा कोई गुनाह नहीं। आप हमें मान लें तो हम लूट का सामान आपको वापस कर सकते हैं। हमारी नीयत बुरी नहीं है। मैं तुमसे प्रेम करने लगा हूं।"

माया ने अपने दिल में उठते नफरत के बगूले को कस कर रोका। उसके आंसू छलके मगर कंठावरोध कर उसने कहा—"आपमें प्रेम है तो मुझे समय दीजिए।"

"समय, समय क्या, मेरी जान तक ले लो। मैं कोई जंगली जानवर नहीं हूं, यादव छत्री हूं···ठीक है, पढ़ा-लिखा अधिक नहीं हूं पर आपकी सोहबत में पढ़ भी लूंगा। मुझे बताया गया है कि आप तो मैनपुरी के कालेज में पढ़ती हैं···आप बस इतना कह दें कि कितना समय लेंगी और यह कि आप भागेंगी नहीं · मैं आप पर विश्वास कर लूंगा···आप भाग भी गईं तो आप कहीं भी जाएं, भीमसिंह छोड़ेगा नहीं···मैं···आप पर आसिक हो गया हूं, आप सच्चे इश्क को तो समझती होंगी?···"

माया पहली बार मुस्कराई। भीमा निहाल हो गया। उसने माया की ओर नरक की भट्टी में झोंके जाने वाले लट्ठे की तरह मोटी बाह बढ़ाई पर माया चारपाई पर अलग सरकती हुई बोली—"आप उतावले न हों, मैं जवाब दूंगी···मैं आपकी

भावनाएं समझती हूं'''अब आप जाइए और यह सब ले जाइए।"

"आप मिठाई खाइए नहीं पर मुंह तो मीठा कर लीजिए।"

माया ने मुस्कराकर मिठाई का एक टुकड़ा लेकर होंठों से छुआया और उसे बिना खाए हाथ में ही पकड़े रही। भीमा उसके रूप को एकटक निहार रहा था। माया की बड़ी-बड़ी आंखों में एक किशोर-कोमलता और चमक थी। उसका शरीर गठा हुआ और गोरा था। वह जब बोलती थी तो जान पड़ता कि पिंजरे में कोई लालमुनइया चिड़िया बोल रही है।

भीमा मुग्ध होकर माया की मोहिनी में खोया रहा। फिर माया पर बलात्कार के विचार को यादव-क्षत्रियों की मर्यादा में बाधक मानकर, सामान समेटा मगर मिठाई का दोना वहीं छोड़ कर जीने की सीढ़ियों से उतर गया जैसे वह बड़प्पन और क्षत्रियोचित आदर्श प्रदर्शित कर माया को प्रभावित कर रहा है। रूप का प्रभाव इतना होता है कि एक असुर में देवत्व जग जाए, यह देखकर माया को आश्चर्य हुआ पर वह उसे देवी महामाया का जादू समझी और उसने उठकर जीने के किवाड़ बंद कर सांकल लगा दी और मिठाई को उठाकर छत के पीछे खेतों में फेंक दिया।

गर्मी की रात में, गांव के हारे थके किसान जल्दी सो जाते हैं पर माया को अब नींद कहां थी? वह छत पर टहल रही थी और इस धुन में थी कि किस तरह इस बिनापपुरा से बाहर निकले।

आधी रात तक भीमा के आदमी मकान के आसपास चक्कर काटते रहे पर फिर शिथिल हो गए। वे समझे कि अब चिड़िया जाल में फंस गई है, भीमा ने माया को भरमा लिया है अतः वह अब भागेगी नहीं। जब वे भी सोने चले गए तो माया ने मकान के पिछवाड़े की छत से नीचे ताका। मैदान साफ था। नीचे खेत था, बस्ती नहीं थी। आगे खेत की नालियां और बाग था। यदि वह छत से नीचे आ जाए तो आगे नालियों में से सरक कर बाग में पहुंचना सरल है। आगे रजवहा (छोटी नहर) है जो सीधा भोगांव जाता है। माया ने उमड़ते आंसुओं का अर्घ्य देते हुए महामाया का स्मरण किया तो उसने देवी को दसभुजाओं में अस्त्र-शस्त्र लिए, सिंह पर चढ़े देखा। वह मुंह से अग्नि और विद्युत उगल रही थी और मैया का सिंह दहाड़ रहा था। माया में उत्साह का ज्वार-सा उमड़ा और वह छत की मुंडेर पकड़कर नीचे सरक पड़ी।

दीवाल कच्ची और पुरानी थी। आधी दूर पर आने पर उसके हाथ में एक जगह पड़े मिट्टी के पलस्तर का हिस्सा आ गया, जिसे पकड़कर वह लटक गई। अब ऊंचाई आधी से कम रह गई थी। उसके कानों में देवी के सिंह की प्रचण्ड गरज पुनः गूंजी और वह शरीर की परवाह न कर कूद पड़ी।

वह भद्द से गिरी। नीचे धान की भूसी, कूड़ा-करकट, गोबर-माटी और सरसों की भूसी गोई पड़ी हुई थी, इसलिए चोट उछलती लगी। माया तुरन्त उठी और सिर झुकाए छोड़ी हुई धान की नाली में घुस गई। उसने देखा, आसपास कोई कहीं नहीं था। वह नाली-नाली सरक कर बाग में जा पहुंची और वहां से निश्चिन्त होकर रजवहा की पटरी पर चढ़ गई। अब रास्ता सामने था। माया ने साड़ी का कछोटा कसा और प्राण छोड़कर भागना शुरू किया। उसे आगे-आगे सिंहवाहिनी महामाया चलती जान पड़ी और सिंह की दहाड़ उसके कानों में प्रविष्ट होकर उसके हृदय को निर्भय करने लगी। माया भागती, हांफती, थकती—पुनः भागती हुई चली गई।

वह भोगांव के थाने तक किस तरह पहुंची, यह उसे ज्ञान ही नहीं पड़ा। 48

हो रहा था। उसके तन-बदन में शोले से भड़क रहे थे और वह उठकर छत पर चक्कर काट रही थी, ऊंचाई भांप रही थी कि वह कूद कर भाग सकती है या नहीं। मकान बहुत ऊंचा नहीं था। हां, भीमा के आदमी अवश्य आस-पास हो सकते हैं। उसे जब कोई उपाय नहीं सूझा तो वह पुनः अटारी में आकर रोने लगी। और रोते-रोते अर्धतन्द्रा में उसने देखा, मानो देवी महामाया उसके सिर पर हाथ रखे बैठी है और उसे समझा रही है—

"बेटी। तू मेरा ही रूप है। तू इस भीमासुर पर मोहिनी डाल और अवसर पाकर निकल जा। सीधे पुलिस थाने में जाना, बस तेरा उद्धार और दस्युओं का संहार हो जाएगा। तू चिंता मत कर, मैं तेरे अंतःकरण में विद्यमान हूं। तू पवित्र है, यज्ञवेदी है, तुझे यह श्वान, भीमासुर छू नहीं पाएगा।"

माया इस स्वप्न से पसीना-पसीना हो गई। वह जब उठकर बैठी तो उसे लगा कि उसके शरीर में एक पर एक शक्ति-तरंगें उठ रही हैं और सारा दुःख, ग्लानि और भय लुप्त हो गया है। उसने अपने भीतर देवी का आवेश अनुभव किया और वह महामाया का स्तवन करती हुई भीमा की प्रतीक्षा करने लगी।

भीमा नहाधोकर, साफ कुर्ता-धोती पहनकर हाथ में मिठाई का दोना लिए और एक बैग में नशे-पानी का सामान लिए हुए आया। उसने देखा कि माया सजीवजी अटारी की एकमात्र चारपाई पर पाल्थी मारे, हाथ जोड़े आराध्य देवी के ध्यान में डूबी हुई है।

स्त्री का पावन रूप, वासनाग्रस्त व्यक्ति में और अधिक यौन-उत्तेजना पैदा करता है। माया सुन्दर थी। उसे ध्यानावस्थित देखकर भीमा के मन में सौम्यता भी आ सकती थी, धीरज सहित प्रतीक्षा जग सकती थी, उसकी पशुता दब सकती थी पर नहीं, माया की पवित्र मनःस्थिति देखकर उसमें उसे विदीर्ण करने का भाव वैसे ही जगा जैसे खिले हुए पुष्प को देखकर किसी दुष्ट बालक में उसे तोड़कर नोच डालने का चाव और उतावलापन उगता है। भीमा ने मिठाई का दोना माया के सम्मुख रखा और बैग एक तरफ रखकर कहने लगा—"मायादेवी। हम यादव आपके घर की बरबादी के कारण नहीं हैं। बदला धानुकों ने लिया है क्योंकि आपके पिता ने धानुकों पर गुलाबसिंह बागी को चढ़ा कर उनका सत्यानास करा दिया था। उसका खामयाजा भूपसिंह और सुघर को मिला। इसमें हमारा कोई गुनाह नहीं। आप हमें मान लें तो हम लूट का सामान आपको वापस कर सकते हैं। हमारी नीयत बुरी नहीं है। मैं तुमसे प्रेम करने लगा हूं।"

माया ने अपने दिल में उठते नफरत के बगूले को कस कर रोका। उसके आंसू छलके मगर कंठावरोध कर उसने कहा—"आपमें प्रेम है तो मुझे समय दीजिए।"

"समय, समय क्या, मेरी जान तक ले लो। मैं कोई जंगली जानवर नहीं हूं, यादव छत्री हूं···ठीक है, पढ़ा-लिखा अधिक नहीं हूं पर आपकी सोहबत में पढ़ भी लूंगा। मुझे बताया गया है कि आप तो मैनपुरी के कालेज में पढ़ती हैं··· आप बस इतना कह दें कि कितना समय लेंगी और यह कि आप भागेंगी नहीं··· मैं आप पर विश्वास कर लूंगा···आप भाग भी गईं तो आप कहीं भी जाएं, भीमसिंह छोड़ेगा नहीं···मैं···आप पर आसिक हो गया हूं, आप सच्चे इस्क को तो समझती होंगी?···"

माया पहली बार मुस्कराई। भीमा निहाल हो गया। उसने माया की ओर नरक की भट्टी में झोंके जाने वाले लट्ठे की तरह मोटी बांह बढ़ाई पर माया चारपाई पर अलग सरकती हुई बोली—"आप उतावले न हों, मैं जवाब दूंगी···मैं आपकी

भावनाएं समझती हूं…अब आप जाइए और यह सब ले जाइए।"

"आप मिठाई खाइए नहीं पर मुंह तो मीठा कर लीजिए।"

माया ने मुस्कराकर मिठाई का एक टुकड़ा लेकर होठों से छुआया और उसे बिना खाए हाथ में ही पकड़े रही। भीमा उसके रूप को एकटक निहार रहा था। माया की बड़ी-बड़ी आंखों में एक किशोर-कोमलता और चमक थी। उसका शरीर गठा हुआ और गोरा था। वह जब बोलती थी तो जान पड़ता कि पिंजरे में कोई लालमुनइया चिड़िया बोल रही है।

भीमा मुग्ध होकर माया की मोहिनी में खोया रहा। फिर माया पर बलात्कार के विचार को यादव-क्षत्रियों की मर्यादा में बाधक मानकर, सामान समेटा मगर मिठाई का दोना वहीं छोड़ कर जीने की सीढ़ियों से उतर गया जैसे वह बड़प्पन और क्षत्रियोचित आदर्श प्रदर्शित कर माया को प्रभावित कर रहा है। रूप का प्रभाव इतना होता है कि एक असुर में देवत्व जग जाए, यह देखकर माया को आश्चर्य हुआ पर वह उसे देवी महामाया का जादू समझी और उसने उठकर जीने के किवाड़ बंद कर साकल लगा दी और मिठाई को उठाकर छत के पीछे खेतों में फेंक दिया।

गर्मी की रात में, गांव के हारे थके किसान जल्दी सो जाते हैं पर माया को अब नींद कहां थी? वह छत पर टहल रही थी और इस धुन में थी कि किस तरह इस पिशाचपुरी से बाहर निकले।

आधी रात तक भीमा के आदमी मकान के आसपास चक्कर काटते रहे पर फिर शिथिल हो गए। वे समझे कि अब चिड़िया जाल में फंस गई है, भीमा ने माया को भरमा लिया है अतः वह अब भागेगी नहीं। जब वे भी सोने चले गए तो माया ने मकान के पिछवाड़े की छत से नीचे ताका। मैदान साफ था। नीचे खेत था, बस्ती नहीं थी। आगे खेत की नालियां और बाग था। यदि वह छत से नीचे आ जाए तो आगे नालियों में से सरक कर बाग में पहुंचना सरल है। आगे रजवहा (छोटी नहर) है जो सीधा भोगांव जाता है। माया ने उमड़ते आंसुओं का अर्घ देते हुए महामाया का स्मरण किया तो उसने देवी को दसभुजाओं में अस्त्र-शस्त्र लिए, सिंह पर चढ़े देखा। वह मुंह से अग्नि और विद्युत उगल रही थी और मैया का सिंह दहाड़ रहा था। माया में उत्साह का ज्वार-सा उमगा और वह छत की मुंडेर पकड़कर नीचे सरक पड़ी।

दीवाल कच्ची और पुरानी थी। आधी दूर पर आने पर उसके हाथ में एक जगह फटे मिट्टी के पलस्तर का हिस्सा आ गया, जिसे पकड़कर वह लटक गई। अब ऊंचाई आधी से कम रह गई थी। उसके कानों में देवी के सिंह की प्रचण्ड गरज पुनः गूंजी और वह शरीर की परवाह न कर कूद पड़ी।

वह भद से गिरी। नीचे धान की भूसी, कूड़ा-करकट, गोबर-माटी और सरसों की सूखी तोई पड़ी हुई थी, इसलिए चोट उछलती लगी। माया तुरन्त उठी और सिर झुकाए दौड़ती हुई खेत की नाली में घुस गई। उसने देखा, आसपास कोई कहीं नहीं था। वह नाली-नाली सरककर बाग में जा पहुंची और वहां से निश्चित होकर रजवहा की पटरी पर चढ़ गई। अब गतव्य सामने था। माया ने साड़ी का कछोटा कसा और प्राण छोड़कर भागना शुरू किया। उसे आगे-आगे सिंहवाहिनी महामाया चलती जान पड़ी और सिंह की दहाड़ उसके कानों में प्रविष्ट होकर उसके हृदय को निर्भय करने लगी। माया भागती, हांफती, रुकती—पुनः भागती हुई चली गई।

वह भोगांव के थाने तक किस तरह पहुंची, यह उसे जान ही नहीं पड़ा। वह

पसीने मे तर थी। बार-बार गिरने-पड़ने से धूलधूसरित थी और उसके मुख पर एक उन्माद की छाया थी। वह सवेरा होने के पहले ही पुलिस थाने पर जा पहुंची और थाने के बाहर पहरे पर खड़े दो सिपाहियों के पैरों के पास गिरकर अचेत हो गई!

21

माया से भेद पाते ही पुलिस रोजमर्रा की चालाकी और चालबाजी छोड़कर दलुआ-भीमा अहीर के गिरोह पर छापा मारने के लिए हरकत में आ गई। मुख्यमंत्री के दबाव से अफसरो की नीद हराम थी और अब उनमें डाकुओं को पकड़कर नेकनामी हासिल करने की होड लग गई थी। पुलिस को इसमें भी घाटा नही था क्योंकि वह डाकुओ पर हमले के समय, जमकर जनता से सुविधाएं वसूल करती थी और किसी भी व्यक्ति को निचोड न पाने की दशा में, वह उसे डाकुओ का मुखबिर, हमदर्द और आश्रयदाता बताकर चालान कर सकती थी। डाकुओ पर कब्जा कर लेने पर उनके हथियार और रुपए-पैसे, अन्य सामान तो पुलिस की अपनी मिल्कियत ही थी। बडे अफसर अगर रेड या चढाई मे साथ हुए तो उन्हे जो माल बरामद कर बता दिया जाता था, वही उन्हे मानना पडता था। जो मौके पर होता है, मिले हुए माल का मालिक तो वही होता है, इसलिए पुलिस को, शांति और युद्ध, दोनों मे फायदा था तथापि डाकुओ का सामना करने में जान का खतरा तो था ही पर पुलिस-व्यवसाय मे इतना तो करना ही पडता था और फिर मुख्यमंत्री के सामने कारगुजारियां दिखाकर इनाम इकराम तरक्की पाने का भी तो लोभ जग गया था।

माया को थानेदार के पास जैसे ही ले जाया गया चंद मुअज्जिज शख्सों को बुलाकर, उनकी नजरो के सामने उसे होश मे लाकर, दरोगा की बीबी द्वारा उसके उपचार और देखभाल का प्रबन्ध करा देने के बाद, माया के बयान ले लिए गए थे और पंचनामा करा लिया गया था। माया की सुरक्षा और प्रतिष्ठा के लिए उसे भोगाव के एक परिचित ठाकुर के घर मे चुपचाप ठहरा दिया गया था और सादा कपडाधारी खुफिया पुलिस का पहरा लगा दिया गया था।

दिन मे डाकू उस गाव से भाग न जाए, इसलिए उस गाव के आसपास लम्बा घेरा डाल दिया गया और मैनपुरी से पुलिस कप्तान स्वयं, सहायक कप्तानो, इस्पैक्टरो, दरोगाओं के साथ अनेक जीपो, लारियों मे, कई थानो की पुलिस लेकर मौके पर डट गए थे और दलराम के डाकुओ के निर्मूलन का नक्शा बनने लगा था।

पुलिस जानती थी कि रात हो जाने पर दलुआ-भीमा को पकड पाना कठिन था। रात के अंधेरे मे, गाव मे से, घेरे मे से खिसक जाना असम्भव नही था।

मानपुरा की डकैती से थके हुए डाकू मजे कर रहे थे। जी भरकर सो लेने के बाद वे सब इधर-उधर से सत्ती प्रसाद यादव के बाडे मे एकत्र हुए। फाग और आल्हा हुई और देसी ठर्रा की सैकड़ो बोतलें खुल गईं, बकरे काटे गए, कढाव चढ गए। बस कसर कोई थी तो नाच-गाने की थी, सो यार लोगो मे से कुछ ने तो आसपास के नर्तक लौंडो को नचाया और खास-खास सरदारो ने चुपचाप, नेताजी को बिना बताए, कहीं से एक तवायफ को भी बुला लिया। सारंगी पर गज फिरते ही तबले पर थाप पडी और

कत्थक गति में, रंडी के घुंघरुओं की रुनझुन और छमाछम होते ही डाकू दीन-दुनिया को भूल गए :

"नजरिया न मार कसम तोरी मर जैहों।
कटरिया न मार सनम हाय मर जैहो।"

नेताजी अपने को बागी भी नहीं कहते थे। वह अपने को लोकरक्षक मानते थे और हमेशा श्रोताओं की जुगाड़ किया करते थे। डाकू श्रोता तो उपलब्ध ही थे पर वह जनता में बोलना पसन्द करते थे और उनके सामने अपने कर्म को उचित ठहराते थे। मानपुरा मे नरसंहार से उनका आतंक आसमान छूने लगा था और जनता उन्हें 'ठाकुर' कहती न अघाती थी। वह प्रसन्न थे और लूट के माल का दान कर रहे थे। वह सत्ती प्रसाद के मुख्य कमरे में जमे हुए थे और उन्होंने बाड़े में अलग हुड़दंग करने वाले डाकुओं पर नाक-भौं सिकोड़ी थी गोया उनका धरातल ऊंचा था और वह उन्हें गन्दा और नादान समझते थे। वह गांव के खासो आम के सामने, मूछों को बिच्छू का आकार देते हुए बोले—"भैया। देखा आप लोगों ने। मेरे एक भी बागी ने किसी औरत पर हाथ नहीं उठाया, काच नहीं खोली,...है कोई बागी इस भारत की धरती पर जो यह कह सके कि उसका गिरोह औरत को माता-बहिन मानता है ?"

गाव के लोग बहुत चतुर होते हैं। वे तारीफ करके दूसरों के मुह से सब कुछ निगलवा कर, बाद में हंसते हैं। ये गद्गद होकर बोले—"ठाकुर साहब, आपकी बराबरी कौन कर सकता है ? वाह, क्या ऊंचे विचार है। वाह !"

"और सुनो,"— दलराम चहका। "धांधू धकेल को तो आप सब जानते है, अरे वही, मानपुरा का धानुक, जो पंचमा के बाद अब धानुकों का दादा है। उसे कोई बुला लाए...अरे कोई है ?"

एक बागी हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया।

"जा, उस धांधू को बुलाकर ला, नशे में हो तो उस पर दस-पांच घड़े पानी डाल देना।"

सब हंसने लगे। सत्ती प्रसाद के पुरोहित पंडित मेवाराम भी वहां डटे हुए थे। हरलाल चमारों का चौधरी भी वही था, सेवकराम काछी भी था और अहीर तो थे ही। पंडित मेवाराम को मानपुरा की डकैती से लौटकर नेताजी ने दक्षिणा दी थी और पैर छुए थे, इसलिए वह सुख और सम्मान की समाधि मे पहुच गए थे। वह जानते थे कि ये दुष्ट डाकू क्या है, और क्या करते फिरते हैं तो भी पंडित लोग, गाव के इन गवारों और गुंडों का क्या बिगाड़ सकते है ? जो ऊपरी आदर-भाव और परनाम-पालागन है, उससे और वंचित हो जाएगे। पंडित ने कलियुग में डाकुओं और सत्ती प्रसाद जैसे धनी किसानों को अनिवार्य मानकर और सब कुछ प्रभु कर रहा है, इस मूड मे अपनी दुर्बलता और चापलूसी को आपद्धर्म समझ कर शास्त्रों से एक मंत्र को पूरी तरह अशुद्ध उच्चारण के साथ बड़े मान और गर्व के साथ सुनाया और आंखें मीचे रहे गोया वह अदृश्य शक्तियों को अपने में खीच कर ला रहे हों। अब सब पंडित मेवाराम को देख रहे थे। वह कुछ महत्त्वपूर्ण कहेंगे, यह सोचकर नेता भी चुप हो गया था—

"शास्त्र में कुंअर दलरामसिंह जो यादव, यादवों को युद्धपुत्र बतलाया गया है। शिवपुराण में कथा है कि राजा जजाति अर्थात् ययाति के यदु और पुर यानी पुरु नाम के पुत्र थे। यदु से यादव और पुरु से पौरव हुए। यदुवंश मे श्रीकृष्ण हुए जो चन्द्रवंशी थे। श्री कृष्ण के भाई बलराम, सातकी अर्थात् सात्यकी, ये तीन महारथी थे, सो, द्वापर के

उन्ही तीनों ने दलराम, भीम और प्रतापसिंह यादवों के रूप में अवतार लिया है। जिस परकार अर्थात् जिस प्रकार, कि कहा नाम करके, भगवान श्रीकृष्ण ने कंस मारा, तैसे ही दलराम ने अपने दुष्ट चाचा बुलाकीराम की हत्या की। जिस प्रकार कृष्ण-बलराम ने हाथी पछाड़े, पहलवान मुष्टिक और चानूर-चाणूर को हराया, तैसे ही, दलराम और भीम ने इस आर्जावरत, अर्थात् आर्यावर्त्त में, गंगा-यमुना के इस मध्य देश में अनेक कजूसो-कृपणों को मार डाला। वे धन जमा कर रहे थे और सचय पाप है। सास्त्र कहते हैं कि जो दूसरो से पैसा खीचता है वह चोर है तो इन चोरों या धन्ना सेठो को पकड़ करके, भगवान कृष्ण रूप दलराम जी ने पृथिवी का भार कम किया अतएव, मैं तो इस युगल जोडी—दलराम-भीमा को अपना इष्टदेव कृष्ण-बलराम मानता हूं और उनसे यह बिनती करता हूं कि वे ऐसे ही धर्म का उद्धार करते रहें—

"जदा जदा हि धर्मस्य ···ग्लानिर्भवत भारत···

परित्रानाय साधूनाम···संभवामि जुगे जुगे।"

"तो आप सब···कृष्ण-बलराम की इस जोडी को लौकिक न समझकर अलौकिक समझें।"

पंडित मेवाराम ध्यान मे खो गए। वह नाक से श्वास खीचकर विधिवत् कृष्ण-बलराम का ध्यान करने बैठ गए और ओम कृष्णबलरामाय नमः जपने लगे।

गांव वालों के विकट अट्टहास से पंडित के नेत्र खुल गए और उनके उपहास से वे बिगड उठे—"तुम नरक में जाओगे, तुम पंडित का उपहास कर रहे हो और सो भी, का नाम करकें, भगवान कृष्ण-बलराम के अवतारो के सामने ··धिरकार है।"

उपहासपरक पुनः ठठ्ठा हुआ। हरलाल और सेवकराम वज्र गंवार मगर विनोदी थे। पंडित की पोल सब जानते थे। हरलाल ने छेड़ा—"अरे रहने दो पंडित! बगला भगत हो तो आप ऐसा। अरे तुमने तो कांग्रेसी नेताओ के भी कान काट लिए पंडित महाराज—क्या बेकूफ बनाते हो, वाह! ठाकुर ने दच्छिना दे दीन्ही होगी। आटा लगा दो तो बाजा बोलता है। पंडित महाराज। तुममें और मिरदग मे कोई फरक नही है। वाह! मीठा बोलो, मेवा खाओ, पंडित मेवाराम।"

हसी के ज्वार के थमने पर पंडित मेवाराम ने ऐसा मुख बनाया जैसे वह आहत हुए हों—"हरलाल, तुम हरिजन हो, भगवान के आदमी, तुम्हें ब्राह्मनो का अपमान करना सोभा नही देता। सराप दे दिया तो अगले जनम मे कोढी हो जाओगे।"

"अरे रहने दो पंडित! तुम और सराप! डकैती का माल खा रहे हो और ब्राह्मन बनते हो, अरे राम राम पंडित, नास जाए तुम्हारा।"

बड़ों के हास्य के बीच बच्चो की हसी खरज के स्वरों के मध्य सप्तम स्वर-सी लग रही थी। दलराम को 'डकैती' शब्द पर क्रोध आया। उसकी भृकुटि कमान सी चढ़ गई। पंडित ने भाप लिया।

"दुहाई है ठाकुर, आप छत्री हैं, इस चमार से इस विप्र की रक्षा कीजिए।"

पंडित ऊपर से नाटक कर रहा था यों वह जानता था कि वह सच्चा ब्राह्मण नहीं रह सका पर सभा मे अपनी बात रखने के लिए स्वांग जरूरी था।

"महाराज। ठाकुर की भौंह चढ़ गई, यह हम भी देख रहे हैं लेकिन हम हरिजन है, भगवान के मनई, सो सच कहते है। बताओ डाकुओ से अब तक कितनी दच्छिना पा चुके हो···हम नेताजी को नेता मानते हैं, वह क्या डकैत है लेकिन गिरोह में तो डाकू हैं हो, क्यों नेता जी ?"

तब तक धाघू धकेल आ गया था। नेता के इशारे पर उसने हरलाल को पकड़-कर ऊपर उठा लिया—

"माफी मांग ढेड, नहीं तो मारता हूं।"

"अबे छोड़, धानुक का बच्चा, तू अपनी बहादुरी रहने दे···तब कहां था जब छबीली को सरूपा छेड़ रहा था? साले, सब मरजाद मिटवा कर अब हम पर ताकत दिखा रहा है, छोड़ दे नहीं तो हरिजन तेरी बोटी काटकर कुत्तों को खिला देंगे।"

सबको मनोरंजन में उन्मत्त देखकर नेता भी हंसने लगा। तनाव दूर हो गया। सेवकराम काछी चहका—

"ए धाघू ढकेल, तेरी यह हिम्मत कि तू भूपा की औरत पर चढ़ने के लिए तैयार हो गया। ठाकुर दलराम ने पीठ पर हाथ रख दिया तो भैंसा भोग लगाने बैठ गया।"

धाघू सबकी हंसी से खिसिया गया। वह सेवकराम की तरफ झपटा किन्तु मजाक में मारपीट से धाघू को ही नुकसान होता अतः दुःखी होकर वह ठाकुर की तरफ देखने लगा—

"अबे उधर क्या घूरता है, इधर आ।"

कइयों ने धाघू की गेंद बना दी। वह रोकता रहा पर कौन मानता है। अन्त में वह हाथ जोड़ने लगा।

"धाघू! बता न मानपुरा में क्या हुआ?"

"मैं बदला लेना चाहता था। ठकुरानी पर हाथ साफ कर देने से ठाकुरों को नसीहत मिल जाती पर नेता ठाकुर ने रोक दिया।"

दलराम की जनता ने जयजयकार की। उनके मर्यादावाद और आदर्शों के गीत गाए लेकिन जनता-जनार्दन को बोलने की आजादी दे देने पर फिर वह सत्य को साफ-साफ कहने लगती है। अतः सेवकराम काछी कह उठा—"यह तो ठीक हुआ पर धाघू तुम और तुम्हारे धानुकों ने ठाकुर दलराम की शह पाकर जो बच्चों-बूढ़ों और औरतों को आग में फेंक दिया, उसमें क्या वीरता हुई?···निर्दयी। तूने सुअरों की तरह निर्दोषों को भून डाला, तू नरक में जाएगा भैंसासुर!"

"धानुकों के औरत, बच्चों को जब ठाकुरों ने भून डाला, तब तुम कहां थे कछोटू?" धाघू अब सचमुच गुस्से में आने लगा।

"बेसक, उन्होंने बुरा किया पर उसकी सजा तुमने निर्दोषों को क्यों दी? क्या कोई अनीति करे तो उसके बदले में तुम्हें उसके साथ अनीति न कर, उसके बाल-बच्चों को मार डालना चाहिए था?···अरे राम, राम···क्यों पंडित मेवाराम, बगुलाभगती छोड़ कर बताओ, सास्तर क्या कहते हैं?"

"सठे साठ्यम् समाचरेत् अर्थात् दुष्ट के साथ दुष्ट जैसा व्यवहार करो।"

"जो ब्राह्मन अधरम का खाए, उसके लिए क्या दंड लिखा है वेद में?" सेवक-राम काछी ने पूछा।

'वेद' का नाम सुनकर जनता हंसने लगी क्योंकि मेवाराम का वेद क्या, लघुकौमुदी से भी कोई परिचय नहीं था। वह लठा पांडे था, पापी और जड़ मगर चालाक। उपहास को गंठियाता हुआ वेद की रक्षा करता हुआ सा क्रोध में कहने लगा—

"सेवकराम। नास हो जाए तेरा! तू काछी है, सब्जियां उगाता, बेचता है।

मौका था। छत से बीस-पच्चीस बागी, नेता और भीमा के नेतृत्व मे, बिजली की गति से छत से नीचे कूद पड़े। सिपाहियों को उन्होने डाटा—"क्यो जान देते हो? टके की तनख्वाह पर क्यों शहीद होते हो? हमें निकल जाने दो, हम तुम्हारा घर भर देंगे।"

पुलिस की टुकडी का नायक डाकुओ पर निशाना लेने लगा। भीमा ने उस पर गोली दाग दी और सभी बागियो के नेता को बीच मे करके, जमीन पर लेट कर गोली काण्ड शुरू कर दिया। पुलिस इसके लिए तैयार नही थी। दोनो तरफ से लोग गिरने लगे। सिपाही पीछे हटने लगे। वे झुक कर दौड़ रहे थे और गोली न लगे, इसलिए चक्कर काट-काट कर चल रहे थे। मार से दूर होते ही उनमे जो बचे वे नालियों मे घुस गए और बाग की ओर रेंग गए।

इस चालबाजी का पता लगते ही चारो तरफ से पुलिस ने बाग की ओर दौड लगाई। कुल आठ-दस डाकू बच पाए थे मगर नेता और भीमा घायल नही हुए थे। वे हाफते हुए बाग मे घुस गए और पेडो की ओट लेकर बंदूक भरने लगे। नेता चिल्लाया—"बदूकें भरना बेकार है। आगे रजबहा है। उसे पारकर सीधे जगल मे छिपो।"

यही हुआ। जब तक पुलिस आई, सरदार बच कर निकल गए। शेष डाकू जो घायल हो गए थे या मकान के भीतर से गोलिया दाग रहे थे, वे बन्दी कर लिए गए।

कप्तान साहब मकान के पीछे की टुकड़ी पर दात पीस रहा था पर टुकडी का नायक घायल हो गया था, कई सिपाही भी घायल हुए या मारे गए थे, इसलिए वह कुछ अधिक न कह कर हाथ मलता रह गया। गिरोह पकड़ा गया मगर सरदार दलुआ और भीमा छूट निकले, इससे वह गमगीन था पर जो सफलता मिली, वह भी मामूली नही थी।

भीमा और नेताजी, आठ-दस बचे हुए डाकुओ के साथ उस छोटे से जंगल मे दाखिल हो गए। उस जगल मे एक तालाब के किनारे उन्होने विश्राम किया और आगे क्या करें, यह सोचने लगे।

इसी बीच दिन लटक आया था और शाम हो चली थी। जगल की मिट्टी मे डाकुओ के पैरों के निशानो के सहारे पुलिस का एक दल पीछा करता आ रहा था। उसका नायक एक अहीर दाताराम यादव था। दलराम ने अपने चाचा की हत्या की थी। उसके लडके यानी दलराम के चचाजाद भाई पानसिंह यादव का दाताराम दोस्त था अतः वह नेता को अपना दुश्मन मानता था लेकिन यह नाता दलराम नही जानता था।

हारे-थके, हाफते डाकुओं को दाताराम की टुकड़ी ने घेर लिया और हवा मे गोलिया चलाते हुए ललकारा—"दलराम, भीमा, तुम्हारा खेल खत्म हो गया है। तुम बच नही सकते। भलाई इसमे है कि तुम हथियार फेंक दो और समर्पण कर दो, नही तो मरने के को तैयार हो जाओ।"

नेता और भीमा, जब तक संभले, तब तक दाताराम के सिपाहियो ने उनके बचे बागियों मे से चार को घायल कर दिया। सिपाही ओट मे थे और बागियो के भागने का मतलब मौत थी। कोई रास्ता रह ही नही गया था। नेता ने भीमा की ओर लाचार निगाह से देखा—"भीमसिंह, अब साथ छूटता लगता है।"

"नेताजी, आप समर्पन कर दें, मैं लड़ते हुए मरना पसन्द करूंगा।"

"तुम्हें पता है कि पुलिस को किसने भेद दिया?"

"किसने?"

"तुम्हारी माया ने। यह सब तुम्हारी कमजोरी के कारण हुआ, भीमसिंह। मैं

इसीलिए, औरत और शराब से परहेज करता हूं। इन्हें लो, तो सीमा मे रहो पर तुमने गिरोह का मटियामेट करवा दिया, आह।"

भीमा में बहुत बल था। वह समर्पण की भाषा समझता ही नही था। उसने दांत पीस कर अपने होठ लहूलुहान कर डाले और नेता से बोला—"हम अभी छः आदमी है और कारतूस की पेटी है। हम पेड़ो की तरफ सरकें और लड़ें। जो हो गया, उस पर सोचना कायरों का काम है। पुलिस के सिपाही अनगिनत तो नही होंगे'''आप मेरे पीछे आइए'''घंटे भर रोक लें इन्हे तो अंधेरा हो जाएगा, तब ये क्या कर लेंगे ?"

मरता क्या न करता। छः व्यक्ति बंदूकों सहित तालाब के तट से ज़मीन पर लेट कर वृक्षों की ओर सरके लेकिन पुलिस ने एकदम चार्ज किया और खुले में आकर उसने चारों तरफ से उन्हें घेर लिया। दाताराम चीखा—"हवलदार। हथगोला फेंको, ये मानेंगे नही।"

दांत से पिन निकाल कर हवलदार ने हथगोला फेंका पर दूर का निशाना लिया। इतने ज़ोर का धमाका हुआ कि डाकू ज़मीन पर गिर गए। धूल और धुएं से वे भर गए।

दाताराम पुनः दहाड़ा। उसने नेता का नाम लेकर कहा—

"चचा। अब बेकार है। बन्दूकें फेंक दो। दूसरे हथगोले मे आपका दल मुर्गे सा भुन जाएगा। मैं यादव हूं। आपका शानदार शर्तों पर समर्पण करा दूंगा। आप जेल मे मौज करें, जान तो बचेगी, दस-पांच साल बाद रिहा होकर भगवान का भजन करना। बिना बात शहीद क्यों हो रहे हो ?"

'यादव' नाम सुनते ही नेताजी ने निश्चय कर लिया। वह उठकर खड़े हो गए। करबायन फेंक दी और भीमा को भी ऐसा ही करने के लिए कहा। उसने भी अन्य चार बागियों के साथ हथियार फेंक कर हाथ उठा दिए। दाताराम की टुकड़ी ने उन्हें आकर गिरफ्तार कर लिया और उनके हाथों में हथकड़ियां पहना दी। कमर में रस्सियां बाध दी गई और दो-दो सिपाही दोनों तरफ उन्हें लेकर चल पड़े। उनके हथियारों को समेट लिया गया।

थोड़ी रात बीतते-बीतते नेता और भीमा को गांव में कप्तान के पास लाया गया। कप्तान ने हंडो और लारियो की रोशनी मे नेता को देखा, हसा और कहा—"दलराम यादव। तुमने सैकड़ों डकैतिया डाली, दर्जनों हत्याएं की। मानपुरा मे ठाकुरो का नरसहार किया, घर जला दिए। कईयों को पकड़ कर उनसे रुपया वसूला। इन सब जुर्मों मे हम तुम्हें और भीमा सहित, तुम्हारे डाकुओं को गिरफ्तार करते हैं। तुम्हें कुछ कहना है ?"

"हम अदालत मे कहेंगे। हमने अपने हाथ से एक की भी हत्या नहीं की, एक पर भी बलात्कार नहीं किया। हमने धन्ना सेठों को लूटा पर गरीबो मे धन बांट दिया। कप्तान साहब, हम नेताजी हैं, बागी हैं, डकैत नहीं, दाताराम ने वादा किया है कि हमारे साथ कानूनी व्यवहार होगा। हमे मारा नहीं जाएगा।"

पुलिस कप्तान ने पहली बार कहकहा लगाया।

"तो दलराम। तुम मरने से डरते हो ? तुमने कितनों को मरवाया, कितनी मां-बहिनों की मांग पोंछ डाली, उन्हें विधवा बना दिया। कितने बच्चों को पकड़ा, उनके साथ तुम्हारे बदमाशों ने अप्राकृतिक व्यभिचार किया। कितने घर उजाड़ दिए तुमने। अब अपने प्राणों का भय है, कैसे बागी हो तुम हः हः हः हः ?"

नेताजी सिर झुकाए खड़े थे और गांव वाले ठहाके लगा रहे थे।

"सब इंस्पैक्टर दाताराम, हम तुम्हारी तारीफ करते है। क्या तुमने इनसे कोई वादे किए हैं ?"

"हुजूर ! पुलिस के कई सिपाही खेत रहते यदि नेता और भीमा समर्पण नही करते। यह भी मुमकिन था कि शाम के धुधलके मे जंगल में ये भाग जाते। इन्होंने हमारे आश्वासन पर समर्पण किया है। इनके साथ अच्छा व्यवहार होना चाहिए।"

दलराम का चचाजाद भाई पानसिंह यादव आगे आया। उसने कप्तान साहब को सलूट किया—

"तुम दलराम को पहचानते हो ?"

"जी सरकार। यह हमारे चचा के लड़के है।"

"अच्छा तो तुम क्या चाहते हो ?"

"जी सरकार ! यह हमारे चचा के लड़के है। हमारे भाई है, इनकी सेवा का अधिकार मिले। अब यह तो जेल में जाएगे। फिर कभी इनसे मिलना हो या न हो। इसलिए आप कृपा करके मुझे इनसे एकात में बातचीत का अधिकार दें।"

"ऑल राइट ! दाताराम, सबइस्पैक्टर, हम तुम्हे अभी स्टेशन आफीसर बनाने का वचन देते हैं। तुम अपने को थानेदार समझो और इन भाइयो को, एकान्त में ले जाकर बात करा दो मगर सावधान, कोई गडबड न हो।"

"थैंक्यू सर।"'तो नेताजी, इधर आइए।"

नेताजी को दाताराम कुछ सिपाहियो के साथ एक ओर ले गया। उनके चारों ओर कुछ दूरी रखकर घेरा डाल दिया गया।

पानसिंह ने नेताजी दलराम बागी को घूरकर देखा। वह ऊपर से शात था किन्तु उसके बाप को दलराम ने मार डाला था, अतः वह भीतर ही भीतर हलवाई की अंगीठी सा धधक रहा था। वह नुकीली नजरो से अपने चचाजाद भाई, उस डकैत को बेध रहा था। उसके शरीर मे ट्रैक्टर सा चल रहा था। उसने गुस्से की धुमड़ को काबू में किया और कुछ सोचकर दुश्मन को देखकर मुस्कराने लगा।

दोनों भाई अब आमने-सामने थे। पानसिंह ने भाई दलराम की आखों में घूरते हुए पूछा—

"भाई ! कैसा लग रहा है ?"

नेता ने सिर झुका लिया। फिर कहने लगा—"मैं अपराधी हूं, पानसिंह। तुम्हारे बाप ने मेरी मा और मेरे बाप के साथ ज्यादती की थी। गुस्से मे मैंने तुम्हारे बाप, अपने सगे चाचा को मार डाला। मैं माफी चाहता हू भाई। गुस्से मे ही मैं बागी बन गया, गुस्से में ही यह अनर्थ किया। यह गुस्सा और गरब ही बैरी है मनुष्य का।"

"मुझे भी गुस्सा आ रहा है चौधरी दलराम। अब आप अपने इष्टदेव को याद कर लें। आपकी लीला खतम हो गई।"

"यह क्या कह रहे हो भाई ? तुमने माफ नही किया मुझे ?"

"तुमने किसी को माफ किया है ? तुम हत्यारे हो भाई, तुम्हारा इस धरती पर रहना ठीक नही है। तुम्हे देखकर मुझे अपने पिता की तड़पती लाश याद आती है, अपने इष्ट का स्मरण करो, नीच।"

और यह कहकर पानसिंह ने भीतर की जेब से रिवाल्वर निकाला और जब तक पुलिस कुछ समझे-बूझे उसने नेता के दिल के पास रिवाल्वर रखकर ट्रिगर दबा दिया। एक जोर का धड़ाका हुआ और दलराम चीखता हुआ, गिरकर तड़पने लगा। पानसिंह

ने रिवाल्वर फेंककर हाथ उठा दिए, उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

दलराम की लाश फड़क रही थी और उसके शरीर से रक्त बह रहा था। वह बुरी तरह कराह रहा था। सब लोग उसके आसपास आकर खड़े हो गए थे और दलराम ऐंठता हुआ दम तोड़ रहा था। मरते समय उसने करुण दृष्टि से पानसिंह और कप्तान की तरफ देखा—

"मुझे माफ करना, मुझे मेरे कर्मों का फल मिल गया। मैं कहता हूं, बागी होना बुरा है। इससे कुछ नहीं बनता। कोई बागी न बने···लेकिन मुझे मेरे चाचा, पानसिंह के बाप ने बागी बनाया···वह मेरी मां के साथ बदफेली करता था और मेरे बाप को दबाता था···कोई किसी पर जुल्म न करे···तो बागी नहीं बनेंगे।"

गोलीचालन से जगह-जगह रक्त के थक्के जमा हो गए थे। पुलिस और डाकू—दोनों तरफ कई लाशें गिरी थीं। सत्ती प्रसाद के घर में, अंततः आग लग गई थी, वह घर धुएं के उठने से ईंटों के भट्टे की तरह सुलग रहा था। गांव के लोग कुएं से घड़ों-बाल्टियों में पानी ला-लाकर आग बुझा रहे थे! सतिया अहीर और उसका परिवार पुलिस की हिरासत में था। वे आंसू बहा-बहाकर डाकुओं को शरण देने की करतूत का नतीजा देख रहे थे।

भीमा परतपा तथा अन्य बचे हुए डाकुओं को लारी में बैठा दिया गया। उन्हें हथकड़ी-बेड़ी में जकड़ दिया गया था। दूसरी लारी में लाशें थीं, तीसरी में घायल थे जिनकी मरहम-पट्टी की जा रही थी। यह सब व्यवस्था हो जाने और एक ओर लारी में गांव से चुने हुए सभी जातियों के गवाहों को भर लेने के बाद पुलिस कप्तान ने एक जीप में आराम से बैठी माया को बुलाया। माया को डाकुओं से बदला ले लेने का तो संतोष था मगर इतनी खूरेजी और खराबी देखकर बेचैनी भी थी, व्यर्थता की भावना भी। पर जो हुआ, उसके अलावा और कुछ हो ही नहीं सकता था।

"माया बेटी। तुम भीमा को पहचानती हो न?"

माया ने सिर हिलाया और सामने हथकड़ी-बेड़ी में कसे हुए बेबस भीमा को देखा। भीमा पिंजड़े में शेर की तरह व्याकुल था। उसके होंठ घायल थे और दलराम की मौत पर वह रोया भी था। उसने माया को एकटक, आहत दृष्टि से ताका और ताकता रह गया। वह शानदार साड़ी-ब्लाउज में थी और उसकी दो चोटियां पीठ पर नागिनों सी लहरा रही थीं। उनमें बंधे रिबन, नागमणि से ध्यान खींच रहे थे। माया के गोरे पैरों में बढ़िया चप्पलें थीं और हाथ में पर्स था, एक किताब भी वह समय काटने के लिए साथ लाई थी।

"माया! मैंने तुम पर विश्वास किया, तुमने धोखा दिया···आखिर तो तुम ठाकुर की पेशाब से उपजी हो··मैं अगर जिन्दा रहा तो तुम्हें इसका नतीजा मिलेगा। मर गया तो भी बचोगी नहीं, अहीर इसका बदला लेंगे।···खैर जो होगा, होगा पर चलते-चलते यह तो बता दो कि तुमने ऐसा क्यों किया? तुमने यह माया क्यों फैलाई, माया?"

वहां खड़े सब पोलरों की रोशनी में माया की तरफ देख रहे थे। माया पैर के अंगूठे से धरती पर लकीरें बनाती रही।

"माया, मैं जा रहा हूं, तुम एक बार मेरी तरफ प्रेम की नजर से देख भर लो, मैं माफ कर दूंगा, तुम्हारी किरपा···"

चोट खाई सिंहनी-सी माया भीमा को घूरने लगी और उसने कुछ आगे बढ़कर

भीमा के पास थूक दिया, कहा—"यू ब्लडी मर्डरर, यू ब्लडी स्वायन, आय डॅस्पा
यू'''तू कातिल है, तुझ पर लानत है!"

22

मिस्टर शेफ्टसबरी जो अमरीकियो की जमात मे, मिस्टर शेफ और कभी-कभी मिस
सेफ कहलाते थे, भूतनाथ को लेकर होटल ताजमहल मे पहुंचा। यह पचसितारा होट
दिल्ली के कुछ बाहर के इलाके मे है और इतना शानदार है कि उसके भीतर तिलि
सा लगता है। भूतनाथ चतुर्थ मंजिल मे कक्ष संख्या 110 मे ठहराया गया था। कमरे
डबल बेड, कीमती कालीन, गुदगुदे बिस्तर, बाथरूम मे गर्म-ठण्डा पानी, टेलीफोन, सा
कमरा चौबीस घंटे एयरकंडीशन। वर्षा शुरू हो गई थी, वातावरण मे उमस थी प
होटल के कमरो मे शीत-ताप का नियन्त्रण था और वहां हर चीज इतनी कीमती थी
भूतनाथ सोचता था कि जो यहां टिकते है, वे इतना रुपया कहां से लाते होगे?

वह क्वांरी नदी के हनुमान मंदिर की कोठरी मे जंगली हवाओ के बावज
बिजली के पंखे के बिना, मच्छरो और गर्मी का सताया हुआ था। बर्बर दस्युओं के बी
सदैव डर और अशोच का अनुभव होता था। बस, रोजी और मेरी का साथ और प्र
पुरोहित की गप्पें जरूर राहत देती थी'''ओह, रोजी।

भूतनाथ को अपने चेले बागियों लंगूरवीर, सिंहा और त्रिशूल से दलराम-भीम
गिरोह की सफाई का पता चल चुका था और यह भी कि पुलिस ने, मुख्यमंत्री के दबाव
ठाकुर गुलाबसिंह के गिरोह को भी तहस-नहस कर डाला है। अब मध्य उत्तर प्रदेश के
डाकुओ को दबाकर, पुलिस गुमानसिंह, क्वारी, करना गूजर और जुझारसिंह के गिरोह
को रात-दिन पछिया रही है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश की पुलिस औ
सशस्त्र पुलिस की कम्पनियां डाकू-उन्मूलन मे लगी है। भूतनाथ ने इन डाकुओ के ठिकान
और इनके लक्ष्यो का, इनके आपसी रिश्तो और झगडो का, कार्यपद्धति का पूरा ब्यौर
मुख्यमंत्री को भेज दिया था और उसी रपट मे से कुछ हिस्सा जो छपाने योग्य था, छप
दिया था। राजा राजनाथसिंह और आई. जी उत्तर प्रदेश पुलिस के गोपनीय प्रशसाप
आ चुके थे, जिन्हें वह सम्हाल कर रखता था।

उसने इस बीच करना गूजर के गिरोह से लंगूरवीर, सिंहा, त्रिशूल और क्वार
के गिरोह के कालिया आदि की मदद से कई दस्युओं को सामाजिक कार्य के लिए तैया
कर लिया था। वैसे भी जमना-चम्बल पार के उस बीहड़ इलाके मे, सेना से सेवानिवृ
ऐसे गुलचले—गोलीचालक मिल जाते हैं, जो रुपया लेकर किसी का भी कत्ल कर दें
है। उधर खेतीपाती, वाणिज्य-व्यापार कम है, मीलों बीहड़ी क्षेत्र है अतः लोग फौज मे
काम करते हैं और रिटायर होने पर जब कोई काम नही मिलता और खर्च नही चलत
तो पेशेवर कातिल बनकर साल मे दो-चार वारदातें कर गुजारा कर लेते हैं।

बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान के उत्तरी-पूर्वी क्षेत्र और मध्यप्रदेश के कुछ
हिस्सो मे गणसमितिया, व्यवस्था विरोधी-प्रतिरोधी संगठनों के रूप मे, आन्दोलन और
जब तब सशस्त्र मुठभेड़ो मे कामयाब होने लगी थी, मगर गण, जो क्रांतिकारी पर्चे
घटनास्थल पर छोड़ जाते थे, उनके कारण सरकारें डाकुओ-तस्करो की उपेक्षा कर, इन

जनपक्षधर गणसमितियों के कार्यकर्त्ताओं के पीछे अधिक पड़ी हुई थी क्योंकि राजनैतिक उद्देश्य को सूंघ लेने पर सत्ता अपने अस्तित्व का खतरा महसूस करने लगती है। राजनैतिक कार्यवाही का असर चुनाव पर पड़ता है और गणसमितियां, डाकुओं की तरह जनता में घृणा और भय की पात्र नहीं थीं। वे लोकप्रिय होती जा रही थीं और स्थिति यहां तक आ पहुंची थी कि बिहार, बंगाल आदि में सक्रिय क्रान्तिकारी गुटों के लोगों का ध्यान खिंचने लगा था। उजाड़ खण्डहर, वन-बीहड़, मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे जहां भी जनगणों को छुपकर काम करने की सुविधा होती थी, वे एकत्र होते और जनता जिस समस्या से सर्वाधिक परेशान होती, उसे हाथ में लेकर आम-आदमी के पक्ष में आन्दोलन करते, पत्रों में लिखते, सभा करते, भ्रष्टाचारियों को सभाओं में बोलने नहीं देते, उनकी लू-लू बोल देते और गुण्डों-दादाओं को भी कभी-कभी इस जनकार्य में पेल देते। यदि वे खिलाफ जाते तो उनकी तबीयत दुरुस्त कर देते।

नारा एक था, जनता की वास्तविक समस्या को पहचानो और उसके निवारण के लिए सत्ता और अन्य प्रतिष्ठानों को दबाकर काम कराओ। नहीं मानें तो मारो मगर हाथ न आओ। कई जगह जनगण पकड़े गए थे और कई गणेशों को जेल में डाल दिया गया था। उनकी दुर्दशा की गई थी। कमज़ोर कार्यकर्त्ता पुलिस से पिटने पर भेद खोल देते और पुलिस चढ़ दौड़ती पर चार नंगे हो जाते, गद्दार साबित होते तो चौदह आकर संगठन में शामिल हो जाते। चूंकि बनावटी नामों से काम होता था, इसलिए अभी तक पकड़धकड़ के बावजूद काम जारी था बल्कि पुलिसदमन से जनपक्ष में एक जिद, एक खून सवार हो गया था।

दूसरी तरफ पुलिस भी धीरे-धीरे गणसमितियों और गणेशों के काम का मतलब पहचानने लगी थी। वह जान गई थी कि गणसमिति के जनगण अपराधी नहीं हैं, शुद्ध और आदर्शप्रिय अच्छे कार्यकर्त्ता हैं इसलिए जब तक ऊपर से दबाव न पड़ता, पुलिस गणों की उपेक्षा करती, पकड़ कर भी छोड़ देती या मुकदमा बनाते वक्त, दफाएं लगाते समय, रपट में पोल रहने देती। इसलिए गण ज़मानत पर छूट जाते और गवाह तो उनके विरुद्ध विरले ही मिल पाते थे।

जब किसी जगह कोई खतरनाक अपराधी दल या भूमिपति के लठैत या बड़े आदमियों के एजेन्ट काबू में न आते, और स्थानीय गण लाचार हो जाते, आंदोलन-धरना आदि व्यर्थ हो जाते, वर्गशत्रुओं का आतंक बढ़ जाता तो वे पुजारी के माध्यम से भूतनाथ को खबर कराते और वह अपने नरबाघ भेज कर स्थानीय गुंडों, दादाओं या अधिकारियों के मुनियर या खास व्यक्ति को खत्म करा देता था। भूतनाथ के आदमी, वारदात कर चम्बल के खारों में भाग जाते और बीहड़ों में छुप जाते। भूतनाथ ने कल्पना में भारत के विराट इतिहास के कालप्रवाह में गंगा-यमुना प्रदेश या आर्यावर्त में इन्द्रप्रस्थ-दिल्ली-पचनद-सारस्वत-कान्यकुब्ज क्षेत्र में आक्रान्ताओं से पराजित होकर सूरमाओं को चम्बल क्षेत्र में आकर, वहां के सनातन व्यवस्थाविरोधी जनगण को सेना में भरती कर विजयी होते देखा और उसकी चेतना में चम्बल से नर्मदा तक के अंचल के गिरिजनों आरण्यकों की अपरिष्कृत परन्तु अक्षय आक्रामक जनशक्ति का बोध हुआ। उसे लगा, यह भी तो जनहित में उसी क्षेत्र के दुष्ट और दस्यु रूप में पथभ्रष्ट समुदायों से पक्षधर योद्धा पा रहा है। उसके अहसास में चंबल का उज्जवल जल, उसकी पथरीली दृढ़ता के साथ चमकने लगा जो रक्त से प्रायः लाल होता रहता है और फिर उज्जवल हो जाता है, पारदर्शी, कठिन और गहरा चम्बल का जल तो वहां के लोगों में बह रहा है जो

साहसिकता देता है, लड़ाकू बनाता है···।

भूतनाथ को कक्ष 110 की चमकती बिजली में चम्बल की चिलक महसूस हुई और एयरकंडीशनर की भरभराहट में उसे चम्बल नदी के दह का खरज स्वर सुनाई पड़ा। उसके मन में चम्बल के पक्षियों जैसी कूज और फड़क पैदा हुई और वह उठकर सम्हलने लगा। अमरीकी आने वाले होंगे।

शाम को सात बजे के लगभग किसी ने घंटी बजाई। एक मधुर ध्वनि कमरे में तैर गई। भूतनाथ सूट-बूटिड था। उसने अपनी टाई ठीक की और शीशे में अपने चेहरे पर एक दृष्टि डालकर वह किवाड़ खोलने गया। किवाड़ खोले पर कोई नहीं आया। उसने बाहर सिर निकालकर देखा, उसी समय एक चांदी की घंटी जैसी मीठी खिला-खिलाहट के साथ रोज़ी ने भूतनाथ की आंखें अपने छोटे-छोटे दूधिया हाथों से छिपा लीं। भूतनाथ भी हंसने लगा—"ओह ! तो तुम हो रोज़ी···मैरी कहां है ?"

रोज़ी रूठ गई। भूतनाथ ने कितने गलत ढंग से उसकी प्रतिद्वन्द्वी नारी का नाम लिया था।

होटल ताजमहल के कक्षों में किवाड़ अपने आप तालाबन्द हो जाते हैं और उन्हें सिर्फ भीतर से खोला जा सकता है। अतः भूतनाथ निश्चित था कि रोज़ी की क्रीड़ा में अचानक कोई आकर व्यवधान नहीं डाल सकता। भूतनाथ भी देशचिन्ता से ऊबा-थका हुआ था। अनुचिंतन से मस्तिष्क अधिक थकता है, उसके केन्द्र अधिक विद्युत की खपत करते हैं जबकि क्रीडा और विनोद में मस्तिष्क आराम में रहता है। तभी क्रीड़ा और विनोद सबको खुश रखता है।

"रोज़ी ! माफ करना, तुम तो रूठ गईं।"

"तुमने मेरे अलावा किसी और का नाम क्यों लिया ? क्या मैरी मुझसे अधिक सुन्दर है, आर यू लास्ट टू हर—तुम खो गए उसमें ?"

"यू नो रोज़ी, तुम तो जानती हो, क्वारी नदी पर उसी जगह मैंने उसे अपने बड़प्पन से नाराज कर दिया, (आय डिडिंट बिहेव लायक अ लवर, आय बिहेव्ड लायक अ प्रोफेट) मैंने एक पैगम्बर की तरह व्यवहार किया, एक प्रेमी की तरह नहीं।"

"मैं इसीलिए तुमको ढूंढ़ती हुई आई हूं। तुम सचमुच गोस्ट हो, भूत, चुपचाप भाग आए, मिस कैरी भी अपने बदले के मिशन पर चली गई। मिस्टर शेफ्ट्सबरी, आय मीन मिस्टर शेफ भी दिल्ली चला आया। हम मिस कैरी के गिरोह के वहां से चले जाने के बाद वहां क्या करते ? तुम रहते तो किसी और गिरोह के साथ पटरी बैठाते पर हमारे साथी भी बोर हो गए थे। इधर-उधर भटक कर दिल्ली भाग लिए।"

"मिस्टर शेफ कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ यहां आने वाले हैं। हनी, मेरी राय है···।"

"कि मैं भाग जाऊं और शाम के वक्त आकर रोऊं या चर्च चली जाऊं या साध्वी—नन बन जाऊं · नहीं-नहीं, तुम अपनी गूढ़ वार्ता करते रहना, आज मैं तुमसे मिलने आयी हूं, इतने दिनों बाद · मेरे साथ चलो। उन्हें फोन कर दो कि तुम्हारे सिर में दर्द है···लाओ नम्बर, मैं फोन करती हूं।"

रोज़ी उछलकर टेलिफोन पर पहुंची। उसे मिस्टर शेफ का नम्बर याद आ गया। भूतनाथ के रोकते-रोकते उसने नम्बर मिलाया और कह दिया—"मिस्टर शेफ, एक्सक्यूज मी—मैं मैरी हूं। मिस्टर नॉट, नॉटी के सिर में दर्द है। आज की बैठक स्थगित समझिए।"

"उसके सिर में नहीं, तुम्हारे कारण, दिल में दर्द है, एम आय करेक्ट रोज़ी—क्या मैं सही हूं?"

"ओ यू ओल्ड हैग। यू शटअप एण्ड स्टाप इट···ओ, बूढ़े, तुम चुप रहो और फोन बन्द करो।"

फोन पर मिस्टर शेफ का कहकहा सुनाई पड़ा।

"मिस रोज़ी, तुम उससे प्यार करने लगी हो। लेकिन तुम नहीं जानती कि तुम क्या कर रही हो? ···वह कहां है इस समय?"

"वह?"—रोज़ी ने चोंगे पर हाथ रखकर भूतनाथ की तरफ देखा। वह तो स्वभाव का घुन्ना था ही, सो उसने किताब में आंखें गड़ा ली थी।

"वह?—वह तो बाथरूम मे है।"

"बाथरूम मे भी कनेक्शन है···मेरी राय है, तुम एक घंटे तक वहां रहो, आठ बजे हम पहुंच रहे हैं। फिर तुम वहा नही रह सकती। बहुत गूढ़ वार्ता है।"

"ओह। यू ओल्ड फाक्स, यू डेविल, यू गो टू हेल,"—यह कहकर रोज़ी ने फोन रख दिया और फिर सिर पकड़कर बैठ गई।

भूतनाथ उठकर उसके पास आकर बैठ गया—"हनी। तुम समझती क्यों नही? हम रातभर तो बैठक नही करेंगे न? हम खाने के वक्त तुम्हें बुला ही लेंगे। रात तब तक ठण्डी हो जाएगी। फिर हम कार से घूमने चल सकते हैं, डियर, रात तो अपनी है, शाम शैतानों के नाम है।"

रोज़ी खुश हो गई—"तो वादा रहा न? फिर तुम उन बूढ़ों का साथ छोड़ दोगे? यू गिव मी अ किस आफ प्रामिस—मुझे चूम कर वचन निभाने का वादा करो।"

भूतनाथ ने रोज़ी की गरदन पर इतने धीमे, इतने कलात्मक ढंग से अधर-स्पर्श दिया कि रोज़ी उससे लिपट गई—"ओ माय गोस्ट, यू आर वन्डर फुल इन आर्ट आफ लविंग, हाउ स्वीट एण्ड साफिस्टीकेटिड···तुम प्रेम-क्रिया मे आश्चर्यजनक हो, कितना मीठा और परिष्कृत चुम्बन लिया।"

"रोज़ी, माय डियर, आश्चर्यजनक तो तुम हो। क्या तुम कुछ भी नही जानती कि ये तुम्हारे शैतान यहा क्यों आ रहे हैं?"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, मैं जानती हूं?"

"मेरा अनुमान है, तुम नही जानती···जान भी जाओ तो तुम समझ नही सकती।"

"व्हाट। मैं ईडियट हूं··मूर्ख हूं क्या?"

"नही, तुम भोली हो, इन्नोसेंट लाइक अ फ्लावर, यू आर रियली अ रोज़—तुम निष्पाप, एक गुलाब के फूल की तरह हो"

रोज़ी प्रसन्न होकर बेड पर झूमती हुई पैर हिलाने लगी। उसने दर्पण मे अपने को देखा। स्वयं पर मुग्ध हो गई और शरारतन आंख मार कर बोली—"गोस्ट, मुझे लग रहा है, मैं तुम्हें खो दूंगी, ऐसे क्यों लग रहा है?"

रोज़ी सचमुच उदास हो गई। भूतनाथ का दिल भर आया। उसने रोज़ी को पुनः प्यार किया पर एक मित्र की तरह। उसने उसके होंठ नहीं छुए और कहा—"तुम मुझे खोओगी नही, शैतान नहीं चाहेगा कि तुम मुझे अपनाए रहो···अभी तो उनका मतलब है। वे समझते हैं मैं उनकी योजना का अंग बन सकता हू, बाधक बना तो रोज़ी वे मुझे···वे मुझे तुमसे हमेशा के लिए हटा सकते हैं।"

"ओह ! मुझे क्या वे नाचीज समझते हैं ? तुम मुझे मित्र मानते हो, स्नेह करते हो पर प्यार तो नही करते। तुम प्यार करो, कर सकते हो, प्यार करना चाहते हो पर करते नही···मैं समझती हू···तुम कुछ निर्णय नही ले पा रहे हो। तुम वादा करो मुझे, चाहो तो गोस्ट, मैं इन शैतानो को ही नही, अमरीका को भी छोड़ सकती हूं···मैं भारतीय नागरिकता ले सकती हूं···।"

इतना कहते-कहते रोज़ी रोने लगी। भूतनाथ पर पहली बार प्रभाव पड़ा। वह विस्मित होकर रोज़ी को देखने लगा। फिर उसमें एक स्वतः संभूत संवेग जगा। रक्त मे तूफान सा आया और उसने प्रथम बार प्राणों को उड़ेलते हुए रोज़ी के अधरो पर अधर रख दिए।

उन्हें कक्ष घूमता सा लगा। फिर वह ऊपर नीचे होने लगा। चीजें नाचने लगी और एक-दूसरे को वह दृश्य दिखाती हुई वे वस्तुएं हंसने लगी जैसे वे इस महोत्सव में शामिल होकर किलक उठी हों। बिजली की झिप्-झिप् मानो स्वीकृति की सूचना दे रही थी और शीत तापनियंत्रक की मद भरभराहट जैसे हृदय बन गई हो जो धड़कने लगे थे और वक्ष से बाहर आने को व्याकुल हो रहे थे। टेलिविजन पर कोई राग छेड़े हुए था और साज़ इस तरह बज रहा था गोया वह इस दृश्य का साथ दे रहा हो।

एक दीर्घ और गम्भीर भाव भरे चुम्बन के बाद वे दोनो अलग होने को ही थे कि घंटी की मधुर ध्वनि हुई।

रोज़ी ने पहले तो भूतनाथ को उठने नही दिया लेकिन घंटी बजती ही रही। लाचार रोज़ी ने अलग होकर जल्दी-जल्दी अपनी लिपिस्टक ठीक की और भूतनाथ को यह दिलासा देकर कि वह शैतानों को भगा देगी, बाथरूम मे जाकर मुह साफ करने को कहा।,भूतनाथ मुस्कराता हुआ बाथरूम मे चला गया। रोज़ी ने दरवाज़ा खोला वहा मिस्टर शेफ के साथ तीन और अमरीकी खड़े थे, भव्य, तगड़े और सावधान। उनके हाथो मे ब्रीफकेस थे और वे कौतुक के साथ रोज़ी को देख रहे थे—"मे वी कम इन मिस रोज़ी—क्या हम आ सकते है ?"

"आय एम अफरेड, यू कान्ट। मिस्टर गोस्ट इज नॉट फीलिंग वैल। हि इज इन द बाथरूम। हि इज रियली अनवैल। यू कैन फिक्स विद हिम टुमारो, नॉट टुडे—मुझे भय है, आप नही आ सकते। भूतनाथ की तबीयत अच्छी नही है। वह शौचालय मे है। आप कल बैठक निश्चित कर सकते हैं पर आज नहीं।"

"ओ मिस रोज़ी। मैरी इज वेटिंग फार यू इन द हॉल, बिलो। देयर इज अ कल्चरल शो, इडियन डांस एण्ड सोंग। वी विल अकम्पनी यू इन द डिनर, एट नाइन थर्टी। दिस इज द क्विश्चन आफ वन आर टू आवर्स ओनली, एक्सक्यूज अज, मिस रोज़ी— मैरी नीचे प्रतीक्षा कर रही है। वहां हाल मे सास्कृतिक कार्यक्रम है, नृत्य और संगीत। हम रात्रिभोज में साथ देंगे। एक-दो घटो की ही तो बात है, रोज़ी।"

रोज़ी विवश हो गई। उसकी आखें छलक उठीं, गला भर आया मगर उसने ज़ब्त किया और किवाड़ खोलकर एक तरफ हट गई। फिर एक झोंक मे अपना पर्स लेकर भाग गई। सब देखते रह गए। मिस्टर शेफ ने आंख मारी। सब हसने लगे पर उस हंसी मे रोज़ी के प्रति कोमलता जरूर थी।

भूतनाथ ने बाथरूम से ताजादम होकर निकलने पर उन्हें आदर से बैठाया और पूछा कि वे क्या लेंगे। सबने स्कॉच व्हिस्की, सोडा के साथ ली। भूतनाथ ने गर्मी के कारण जिन और नीबू से काम चलाया। साथ तो देना ही था। दूसरे, भूतनाथ का कुछ

और भी उद्देश्य था। उसने बार-बार अनुरोध कर, सौगंधें दे-दे कर, उन्हें तीन-तीन, चार-चार पैग पिला दिए। स्वय वह तबीयत खराब होने का बहाना बनाकर एक पैग को ही सिप करता रहा। उसने माफी माग ली और कहा कि रोजी ने गलत नही कहा है, उसका पेट वस्तुतः खराब हो गया है और सिर में भी दर्द है।

परिचय हो चुका था। एक मिस्टर कार्लजेस्पर प्रोफेसर थे, समाजशास्त्र के, दूसरे मिस्टर के. होम्स भूगोल पर शोध के लिए भारत आए थे और तीसरे मिस्टर जिरार्ड जेम्स जूनियर अमरीकी दूतावास मे कनिष्ठ सचिव थे। भूतनाथ ने अपना परिचय एक पत्रकार के रूप में दिया और बताया कि वह खोजपूर्ण रपटें लिखता है। उसने कहा—

"आय एम इन्वैस्टीगेटिव रिपोर्टर।"

"ओह गुड, वैरी गुड मिस्टर गडाडरसिंह‥‥कैन वी एड्रैस यू वाई यौर पेन नेम, दैट इज मिस्टर गोस्ट‥‥यह अच्छा है, क्या हम आपको भूतनाथ या गोस्ट कह सकते है?"

'श्योर, अवश्य, क्यों नही?"

अब महत्त्वपूर्ण क्षण आ गया था। बातें अंग्रेजी में होने लगी। अमरीकी सीधे बात करते हैं। घुमाव-दुराव पसंद नही करते। मिस्टर जेम्स ने साफ-साफ कहा— "मिस्टर गोस्ट, रादर लार्ड आफ द गोस्ट्स‥‥आपके विचार हमें मालूम हैं। आप श्योर हैं कि यहां हमारी बात कोई सुन नहीं रहा है? आपको आपत्ति तो नही कि हम एक नजर कमरे पर डाल लें कि कोई बगिंग, कोई यत्र तो नहीं लगा जो हमारी बात-चीत रिकार्ड हो जाए?"

"ओह, श्योर, आप जरूर जांच कर लें।"

वे चारों ओर बाथरूम से लेकर चारपाई के बिस्तरों तक गहरी नजर से चीजों को उलट-पुलट कर जाचते रहे पर कही कुछ नही था लेकिन उन्होंने भूतनाथ के शरीर की तलाशी नहीं ली। यह सम्भव भी नहीं था अन्यथा वह भडक जाता।

"सब ठीक है, अब मिस्टर गोस्ट, आप यह नक्शा देखें।"

नक्शा फैला दिया गया। नक्शे में पंजाब, कश्मीर को स्वतन्त्र देशों मे पृथक-पृथक रग से दिखाया गया था। कश्मीर में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर भी शामिल था और पजाब मे राजस्थान का श्रीगंगानगर जिला, हरियाणा का अम्बाला, समूचा हिमाचल प्रदेश शामिल था। उधर आसाम, नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा, अरुणाचल, मेघालय आदि सभी उत्तरीपूर्वी भाग स्वतन्त्र दिखाए गए थे। नीचे तमिलनाडु, आंध्र-प्रदेश, कर्नाटक, केरल भी स्वतन्त्र दिखाए गए थे। भूतनाथ देखता रह गया।

' दैन, व्हेयर इज इंडिया? भारत कहां बचा?"

"व्हाय? क्यों? भारत का इतिहास बताता है कि यहा हमेशा मैदानी भाग, यमुना से बिहार तक, कभी महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और राजस्थान यही भाग भारत रहा है। अभी भी यह रहेगा। इससे शासन मे आसानी होगी और अन्य नेशन्स, पजाबी, कश्मीरी वगैरह जो अपने मे भिन्न और स्वतन्त्र राज्य हैं, इनकी सस्कृति भिन्न है, धर्म, भाषा, सब भिन्न है, ये स्वतन्त्र हो सकते है यदि आप इस योजना मे मदद दें।"

भूतनाथ अवाक् था। उसका सारा रक्त उसके मुह पर आ गया और वह इन विनाशक वानरों के गले न टीप दे, इस डर से अपने हाथों की अगुलियों को मिलाकर नाखून देखने लगा, जो भूतनाथ की एक ऐसी आदत थी, जिससे यह जाना जा सकता था कि वह किसी घटना के लिए तैयार है और अब बर्दाश्त नहीं करेगा। वह देर तक

नाखूनों को देखने के बाद बहुत धीमे मानो अपने को कह रहा हो, इस तरह बोला—

"मुझे इस देश का विखंडन स्वीकार है। आप पूरी योजना बताइए और उसमें हमारी भूमिका तै कीजिए ···यह भी कहिए कि यह सब करने पर अपने ही देश का अंग-भंग करने पर मुझे क्या मिलेगा ?"

"क्या नहीं मिलेगा ? एवरीथिंग यू विल गैट—सब मिलेगा···आप क्या चाहेंगे ?"

भूतनाथ ने कहा—"मैं बता दूंगा, देखिए, आप यह तो जानते हैं कि जब तक वर्तमान प्रधानमंत्री अपने पद पर हैं, बल्कि जब तक वह इस धरती पर, भारत में जिन्दा हैं, तब तक भारत का खण्डन सम्भव नहीं ···सम्भव भी हो जाए तो आपको विश्वयुद्ध करना पड़ेगा ···सोवियत रूस के साथ भारत की संधि है और वह अफगानिस्तान में पैर अड़ा सकता है···तब जाहिर है कि पाकिस्तान और चीन के बल पर आप भारत को तोड़ेंगे लेकिन इस हरकत से सोवियत रूस और भारत एक होकर आप तीनों की तिकड़ी तोड़ देंगे और आप अमरीकियों को विश्वयुद्ध के कगार पर ले जाएंगे, तब आप भारत को नहीं, अमरीका को खंडित करेंगे ···यह सोचा नहीं आपने ?"

अमरीकी, भूतनाथ की स्पष्टता, साफ नजर देखकर विस्मित हुए। वे तस्वीर की तरह भूतनाथ को घूरते रह गए।

"मिस्टर गोस्ट ! यू आर रियली वंडरफुल, रोजी हज नॉट रौंग व्हेन शी सेज दैट यू आर रियली नॉटी···आप विस्मयजनक हैं श्री भूत ! रोजी ठीक कहती है कि आप बहुत शरारती हैं।"

'ओह। दैट। द रियलिटी इज दैट आय एम नॉट सो मच नॉटी, एज आय शुड हैव बीन···सच यह है कि मुझे जितना शरारती होना चाहिए, उतना नहीं हूं।···इस बात से रोज़ी नाराज रहती है कि मैं उतना शरारती क्यों नहीं हू ?"

सभी ज़ोर से हंसे। भूतनाथ के रहस्य को मिस्टर शेफ अधिक जानता था, वह दो बार हंसा, फिर एक बार और।

"मिस्टर गोस्ट। आपने जो बिन्दु बताया है, उस पर हम सोच चुके हैं। सोवियत रूस और भारत की संधि टूटे, इसके लिए भारत के भीतर वामपंथी शक्तियों को तोड़ना होगा और वियतनाम से अफगानिस्तान तक दक्षिणपंथी, धार्मिक और पश्चिम देशों की समर्थक पार्टियों और गुटों को सशक्त बनाना होगा। जनमत पर उनके दबाव से नहीं, बड़े-बड़े पदों पर दक्षिणपंथी आ जाएं तो हो सकता है। भारत का जनमत, व्यक्तिगत, किसी चमत्कारी व्यक्ति के ऊपर निर्भर करता है। अभी तक यहां का जनमत, चमत्कार से मुक्त नहीं हुआ है जैसा कि भारतीय धर्म में भी है। उसमें अंधभक्ति और चमत्कार पर भरोसा ज्यादा है ··तो मिस्टर भूटनॉट, बड़ी सम्भावनाएं हैं ' देअर आर बिग पालिटीकल पासीबिल्टीज···इज नॉट इट ?" मिस्टर होम्स ने कहा।

भूतनाथ बोला—"आय टैल यू, आय डू नॉट एग्री विद दिस एनालिसिस···मैं इस विवेचना से सहमत नहीं हूं लेकिन मैं अपनी सोच को बदल सकता हू यदि मैं आपकी तैयारियों को देख लूं···मैं रिपोर्टर तो हू पर मैं रपट नहीं करूंगा किसी को और गोपनीयता बरतूंगा पर आप मुझे भूत समझें, आदमी नहीं।" भूतनाथ ने कहा।

"यह तो वादा रहा, हम आप पर विश्वास करते हैं, आप करते है या नहीं, यह जानना बाकी है···करने लगेंगे, आप जब हमारी तैयारियां देखेंगे···आप अगर राजनैतिक धरातल पर लॉबी बनाएं, प्रचार-प्रसार करें तो काम बन सकता है।"

"मैं करूंगा, इसके लिए मुझे इस नक्शे की प्रतियां, अन्य राजनैतिक साहित्य तथा रुपया चाहिए।"

"कितना, हाउ मच ?"

"आपको मेरे काम की कीमत खुद लगानी चाहिए, मैं देशद्रोही बन रहा हूं न।"

"पर, आप तो कहते हैं कि देश की जनता के हित के लिए आप ऐसा कर रहे हैं। जब तक वर्तमान दल और उसका प्रधान व्यक्ति शासक है, तब तक कुछ नहीं हो सकता—यही न ?···यह ठीक भी है। हम भी यही चाहते हैं यानी हम यहां की पब्लिक के दोस्त हैं, दुश्मन नहीं, इसलिए हम भारतद्रोही नहीं, भारतभ्राता हैं, वी आर ब्रदर्स आफ इंडिया, लेट अज शेक हैंड्स।"

सबने हाथ मिलाए। भूतनाथ ने रुपए के विषय में याद दिलाया—

"मिस्टर जेम्स, वो रुपए ?"

"ओह ! मिस्टर शेफ, आप अपने नाम से एक चैक ले लें, सांस्कृतिक कार्यक्रम के सन्दर्भ में आप फिल्म बना रहे हैं न, उसके लिए फिलहाल आप एक मोटी रकम ले लीजिए और मिस्टर गोस्ट को रुपए देते रहिए···।"

"नो सर। मैं किसी पर निर्भर नहीं रहना चाहता। रुपया मेरे नाम से, मेरे बैंक में जमा करा दें, डालरों को रुपयों में बदलवा दें।"

"नो ओब्जैक्शन, मगर किस नाम से ?"

"क्यों ? गदाधरसिंह के नाम से, क्या हर्ज है ? मैं खोजपूर्ण रपटों से काफी कमाता हूं।"

"आप जानें, ठीक है, मिस्टर शेफ यह कर दीजिएगा और अब ?"

"अब ? अब यह कि मुझे आगे क्या करना है, यह बता दें।"

"ठीक, फिलहाल, आपको पाकिस्तान जाना है। उसका प्रबन्ध भी मिस्टर शेफ करेंगे। आप शुरू से ही मिस्टर शेफ और डॉ० स्टेनबेक की फिल्मपार्टी के साथ हैं न ? तो बस यह पूरी पार्टी अब भारत के डाकुओं की तस्वीरें लेने के बाद, स्वभावत. पाकिस्तान जा रही है, आप उसके साथ हैं ही। आपने बहुत सहयोग दिया है। आपकी मदद से ही इतने डाकुओं के चित्र मिल सके हैं, थेंक्स, अब आप पाकिस्तान जाइए। इस फिल्मी कम्पनी में मजे कीजिए, आपको वहां हमारा आदमी मिलेगा। वहां तैयारियां देखिए और आप···आप गुड कम्पनी में हैं, मिस्टर गोस्ट, रोजी और मैरी भी पाकिस्तान जा रही हैं।"

सब हंसते हैं। भूतनाथ के चेहरे पर लज्जा की एक लहर आई और गई। उसने लापरवाह लहजा अपना कर कहा—"रोजी और मैरी तो अराजनैतिक कलाकार टाइप की भोली लड़कियां हैं। आप उन्हें बीच में क्यों लाते हैं ?"

'ओह, सॉरी, हम उन्हें बीच में नहीं ला रहे हैं। उन्हें तो आप बीच में ला रहे हैं—यू हैव ग्रांट देम बिटवीन अज एण्ड नाउ वी आर एट ए फिक्स व्हाट टू डू विद देम। द डिफेंड यू, राद्दर दैन अज, यू हैव चार्मड देम—आप उन्हें हमारे बीच ले आए हैं और हम समझ नहीं पा रहे हैं कि उनका क्या करें। वे आपकी पक्षधर हैं, आपने उन्हें मोहित कर लिया है।"

"मिस्टर जेम्स, मुल्कों के टुकड़े करने की प्रक्रिया में अपने टुकड़े भी तो हो सकते हैं। हमारे टुकड़े करके रोजी और मैरी ने मुझे बांट लिया है। हम क्या करें ? कैसे अपने विभाजित मन को एक करें, यह सवाल है।"

"दो सुन्दर युवतियों में से यों विभाजित हो जाना तो भाग्य की बात है, मिस्टर गोस्ट, यू आर वेरी लकी। दीज गर्ल्स हैव नॉट बादर्ड अबाउट अज'''आप भाग्यशाली हैं भूत'' ये लडकिया हमारी परवाह नही करती।"

सब मुस्कराते-विहसते रहे। अचानक भूतनाथ ने पूछा—"मिस्टर जेम्स। हमारी यात्रा कब होगी?"

"किसी भी दिन।"

"नही'''कुछ झंझट हैं'''।"

"ठीक है, आप दो-चार दिन में निश्चित तिथि बता दें मि० शेफ को'''बिल्कुल ठीक है'''बहुत ठीक है'''बाय द वे, आप किधर को जाना चाहते है?"

"हम तो पत्रकार है न मिस्टर जेम्स, हम तो भूत की तरह सर्वत्र घूमते और टोह लेते है, हमारा क्या है? अभी किसी सहयात्री पत्रकार का फोन आ जाए तो फौरन जाना पडेगा—डकैतो का मोर्चा तो फिलहाल पीछे छूट गया है।"

"ठीक है, आप स्वतन्त्र है।"

भूतनाथ ने देखा कि होम्स शुरू से अब तक उसे टकटकी लगाकर देखते रहे हैं और उसने एक भी शब्द नही कहा है। भूतनाथ ने उसे छेड़ा—

"मिस्टर होम्स! आप किस तरह के भूगोल पर रिसर्च कर रहे हैं?"

"ह्वाय? सारे भारत की ज्याग्राफी—भूगोल का एक एटलस बनाना है। एटलस कम्पनी ने मुझे यह काम सौंपा है।"

"ओ गुड! इसमे मानव-भूगोल—ह्यूमन ज्योग्राफी—भी शामिल होगी? मनुष्य का अध्ययन भी भूगोल का विषय है न?"

"यकीनन।'''आप मानव भूगोल जानते हैं?"

"श्योर! मैं मानव-भूगोल का ही तो अध्येता हू। मसलन मैं आपको देखकर बता सकता हू कि आपसे मेरी पुन. भेंट होगी।"

सब हसने लगे। सबने आखिरी जाम पिया और डिनर के लिए नीचे उतर गए। वे सब रोजी और मैरी को खोज कर ले आए और 'इस्फहान' नाम के ताज के भोजनालय मे जा पहुचे। वह इतना खूबसूरत था, ईरानी ढग का कि चंचल रोजी ने भूतनाथ से पूछा—

"ऑर वी इन ईरान ऑर इडिया—हम ईरान मे है या भारत मे?"

"वी आर इन पाकिस्तान, दैट इज ईरान"—हम पाकिस्तान मे हैं जो ईरान है।"

सब मुस्कराने लगे। रोजी हतप्रभ हो गई। उसकी कुछ समझ मे नही आया। उसने भूतनाथ की बाह मे चिकोटी ली और बोली—

"मिस्टर गॉटो! शरारत नही, ठीक-ठीक बताओ।"

"ठीक यह है कि हम यहां नही हैं, कही और हैं?"

"कहा?"

"यह तो मिस्टर जेम्स बता सकते हैं।"

सबने छेडछाड करते हुए भोजन किया और चले गए। रोजी ने भूतनाथ की तरफ गूढ दृष्टि से देखा। उसने धीमे स्वर मे कहा कि वह मैरी को उसके कमरे तक छोड कर आ जाए। तब देखेंगे। मैरी क्वारी नदी की घटना से भूतनाथ से इतनी नाराज थी कि वह उसकी ओर भर आख देखती भी नही थी और रोजी से औपचारिक हो गई थी,

पर निभाए जा रही थी। उसके चेहरे पर एक प्रकार की गंभीरता सी छा गई थी जैसे उसे कोई चोट लगी हो। भूतनाथ को इससे तकलीफ थी, लेकिन लड़कियों का यह स्वभाव होता है कि वे बिना अधिकार जमाए मित्रता कर ही नहीं सकतीं। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि मैरी के मन को सहज कैसे किया जाए? उसने औपचारिक रूप में कहा—

"मिस मैरी! आप थक गई हैं, आराम करेंगी?"

"आपका परिचय? हू आर यू वाय द वे, आप कौन है?"

"मैं? आप जानती हैं, फिर यह सवाल क्यों?"

"नहीं, मैं नहीं जानती और रोज़ी को यह भ्रम है कि वह आपको जानती है?"

"ओह, माइण्ड योर बिज़नेस, यू मिस मैरी - तुम अपना काम देखो, मैरी।"

मैरी नाराज़ हो गई। वह बिना शुभरात्रि कहे झपटती हुई चली गई। उसने दोनों को और कुछ कहने का अवसर ही नहीं दिया। दोनों सन्न खड़े रह गए। रोज़ी ने सम्हल कर कहा—

"लैट अज़ गो फार ए ड्राइव, लैट हर गो टू हैल, शी हैज़ इन्सलटिड अज़··· हमें कार से घूमने चलना चाहिए, उसे नरक में जाने दो। उसने हमारा अपमान किया है।"

"मूड तो उसने चौपट कर ही दिया है, रोज़ी। अब हम अकेले चलेंगे तो अपराध की अनुभूति रहेगी कि हम किसी को सता कर मजे कर रहे हैं। इसलिए हम अपना कार्यक्रम कल के लिए रखकर मैरी को मनाएं तो हमारी आत्माएं हमें आशीष देंगी कि हमने दूसरे मित्र की परवाह की।"

अब रोज़ी रूठ गई। वह मुंह बिचका कर बोली—

"मैं जानती थी, तुम मुझे टालोगे। तुम क्या हो, यह मैं नहीं समझ पाती··· शायद मैरी ठीक कहती है ··तुम गोस्ट हो, आदमी नहीं।"

भूतनाथ हंसा। उसने रोज़ी की कमर में हाथ डाला और उसे दुलराते हुए कार की तरफ बढ़ा।

भूतनाथ अमरीकियों की उस परी की तरह उड़ने वाली कार को चलाते समय, गाड़ी की सरसराहट और गति के अन्दाज़ में खो गया। रोज़ी उसके कंधे पर सिर रखे, हलके नशे में आत्मतृप्त होकर औंघ-सी रही थी। काफी देर तक कोई न बोला। ताज से भूतनाथ निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन की ओर बढ़ रहा था। उधर सुनसानता कम थी और कारें आ जा रही थीं। भूतनाथ जानता था कि दिल्ली अब सुरक्षित जगह नहीं रही।

तभी निज़ामुद्दीन स्टेशन की ओर से एक वैगन तेज़ी से आती हुई दिखाई पड़ी। उसमें चार आदमी बैठे हुए थे। भूतनाथ की छठी इन्द्रिय ने उसे चेताया कि खतरा है। भूतनाथ ने कार को धीमी किए बिना उसे सड़क की बाईं तरफ किनारे लगाकर चलाने की कोशिश की किन्तु स्टेशन वैगन सड़क के नियमों की उपेक्षा कर उसी के सामने से आने लगी। अब टक्कर के अलावा कोई विकल्प नहीं था। भूतनाथ ने एकदम ब्रेक लगा कर गाड़ी को रोका। एक ज़ोर का धक्का लगा। रोज़ी दूसरी तरफ गिर गई पर भूतनाथ ने परवाह न कर उससे कहा—

"रोज़ी, लाई लो—नीचे लेट जाओ, दुश्मन दुर्घटना करना चाहता है, जल्दी, शार्प।"

रोज़ी नीचे लेट गई। भूतनाथ खिड़की खोल लपक कर बाहर आ गया और रिवाल्वर निकाल कर कार की ओट में खड़ा हो गया। इतने में, भूतनाथ के इशारे से रोज़ी ड्रायवर की सीट के पास वाली सीट से पीछे आकर, पीछे वाली सीट के बीच की संधि में लेट गई।

वैगन भूतनाथ की कार के आगे आकर रुक गई। उसमें से एक तो ड्रायवर की सीट पर बैठा रहा। शेष तीन रिवाल्वर हाथ में लिए हुए नीचे उतरे। ड्रायवर ने जोर से कहा—

"यही वह आदमी है, जिसने मुझे धौलपुर में गिरफ्तार कराया था और जेल भिजवाया था। इसे सज़ा दो, मार डालो और इसके साथ जो अमरीकी लौंडिया है, उसे बचाओ।"

भूतनाथ ने लड़कियों का क्रय-विक्रय करने वाले मादक वस्तुओं के व्यापारी तस्कर को पहचान लिया। उसने तीन बदमाशों पर ध्यान केन्द्रित किया। वे स्टेशन वैगन के पीछे थे। जैसे ही एक ने सिर निकाल कर भूतनाथ को देखना चाहा, उसने निशाना लिया। बिजली की रोशनी सड़क पर इतनी तो थी ही कि आदमी का सिर नज़र आ जाए। एक फटाक हुई और एक चीख उभरी। तस्कर सेठ ने गाली दी और शेष दो बचे हुए अपराधियों को ललकारा। भूतनाथ ने सेठ पर फायर किया पर वह नीचे झुकाई दे गया। उसने दोनों अपराधियों को फायर करने का अवसर दिया। भूतनाथ उनकी गोलियों से बच गया और धुआं शांत होने पर फिर जैसे ही एक सिर वैगन से बाहर निकला, भूतनाथ ने फायर झोंक दिया। पुनः चीख उभरी। अब तस्कर सेठ चिन्तित हो गया। वह स्वयं खिड़की खोलकर नीचे उतरने की कोशिश में था। तभी भूतनाथ ने फायर किया और आगे के शीशे को चूर-चूर कर दिया। तस्कर चिल्लाया जैसे चोट खा गया हो। शेष बचा गुंडा घबरा गया। वह सावधानी भूलकर बाईं तरफ सेठ को देखने आया। इतना मौका काफी था। भूतनाथ ने भाग कर स्टेशन वैगन की आड़ ली और बचे हुए गुंडे पर फायर कर दिया किन्तु इसी बीच तस्कर सेठ ने भूतनाथ पर गोली चलाने के लिए रिवाल्वर उठाया पर पता नहीं कहां से एक गोली ने आकर उसे बेकार कर दिया।

भूतनाथ चकित था कि उसकी जान किसने बचाई। यदि तस्कर को पीछे से कोई न मारता तो उसकी मौत निश्चित थी। वह अपने प्राणरक्षक को खोजने के लिए इधर-उधर देख ही रहा था कि रोज़ी रिवाल्वर लिए सामने आई।

"ओह। रोज़ी, तो यह तुम थी?"

"यः दयोर, व्हाय, आर यू सेफ?"

"यः वाय द ग्रेस आफ रोज़ी।"

इतने में पुलिस आ गई और भूतनाथ ने उन्हें अपराधियों को सम्हलवाया। घायलों और मुर्दों को वैगन में डालकर उस इलाके के थाने में ले जाया गया। पहचानें हुईं, बयान लिखे गए, टेलीफोन खटके। ताज होटल के मैनेजर और मिस्टर शेफ ने रोज़ी और भूतनाथ का परिचय प्रमाणपत्र दिया। रात के दो बजे तक यही सब चलता रहा। अंततः रोज़ी और भूतनाथ को गवाह के रूप में अदालत में हाजिर होने का आदेश देकर पुलिस-अफसरों ने उन्हें छोड़ दिया। दोनों थके-मांदे कार से होटल आए और कमरे में आकर एक-दूसरे के सामने बैठकर इस तरह देखने लगे गोया वे पहली बार मिले हों और अब परस्पर पहचान पाए हों। दोनों एक-दूसरे को बचाने के लिए कृतज्ञ थे। विशेष

रूप से भूतनाथ रोज़ी के साहस, फुर्ती, चतुराई और निशाने पर फिदा हो गया था। रोज़ी ने पहली बार भूतनाथ को अपने पर आसक्त पाया। अब परीक्षा पूरी हो गई थी और वह जानती थी कि अब गोस्ट मनुष्य हो गया।

दोनों अकस्मात् बिना कुछ कहे, आंतरिक आवेग में बहते हुए दो तिनकों की तरह मिल गए।

23

बुढ़वा मंगल भाद्र मास में पड़ता है। उसके पन्द्रह दिन पहले सोमवार को इटावा के टिकिसी के महादेव के मन्दिर पर बड़ा उत्सव आयोजित हुआ, जिसमें दूर-दराज़ के कथा-वाचक और उपदेशक आए। गणसमितियों के गण और गणेशों को भी बुलाया गया था। दिन भर तो भजन-कीर्तन-पूजा-यज्ञ चला फिर रात में कुछ विश्राम के बाद सुरग की राह से प्रमुख व्यक्ति मराठाकिले के सूने हाल में एकत्र हुए। पुलिस चौकी के सिपाही बेखबर थे। उन्हें पुजारी जी ने दूधिया भंग और भंग मिली मिठाई का प्रसाद खिलाया था सो वे सो गए। एक सिपाही औंघता हुआ, सड़क की ओर रुख कर बैठ गया और भंग के नशे में सपने लेने लगा। महादेव के मंदिर के आगे, किले के खण्डहर से कुछ दूर एक देवी का मंदिर है। वहां भी तब पुलिस नहीं रहती थी, आती जाती रहती थी। आज सन्नाटा था।

खण्डहर के साबुत बड़े हाल में बिछावन बिछा दी गई और मोमबत्तियों को जला लिया गया। पानी और पान-तम्बाकू वगैरह का प्रबन्ध भी पुजारी जी ने कर दिया था।

सशस्त्रक्रान्ति के समर्थक नक्सली कहलाते थे। उनमें से बंगाल से बुद्धिदेव चटर्जी और भानु सान्याल आए थे। बिहार से नारायणसिंह ग्रुप के रतीभानसिंह, मनोज मिश्र के ग्रुप के श्याम किशोर, आन्ध्र प्रदेश के वेंकट सुब्बइया, बस्तर के गरुड सथास, हिमालय की तराई के गिरिधारीलाल, पंजाब के जबरसिंह, भोजपुर (बिहार) के तारकनाथ सिन्हा, गया के वीरेन्द्र चौधरी, कुम्भेर, उदयपुर के भाला भील, नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश के रामसनेही और अन्य प्रतिनिधि तथा नेता थे। वातावरण गंभीर और उत्साहवर्द्धक था। बिना किसी बनावट और तकल्लुफ के तुरन्त सब लोग बैठ गए और पुजारी जी ने बुद्धिदेव चटर्जी की ओर देखा, चटर्जी ने सान्याल की ओर। सान्याल ने गला साफ किया और बोले—

"कामरेड! भूतनाथ और पुजारी जी के प्रयत्न से, आप सब की संघर्ष चेतना से इस क्षेत्र में गणसमितियां बन गईं। संगठन का एक स्ट्रक्चर एक संरचना हो गया। वर्ग-शत्रुओं को तुमने दण्ड भी दिया। पब्लिक का को-आपरेशन भी मिल रहा है लेकिन कोई बड़ा एक्शन होना है, क्यों कामरेड अतिबल?"

बूढ़े सिंह की तरह अतिबल सम्हला। इधर-उधर देखा। पास में अघानी के विश्वेश्वर दयालु डटे थे जो औद्धत्य के लिए प्रसिद्ध थे। उसने कहा—

"कामरेड, इधर-उधर लुखरिया (लोमड़ी) की तरह क्या देख रहे हो? बकेवर थाना का घेराव होना चाहिए क्योंकि उस जंगली थानेदार महीपत गड़रिया ने

सल्लापुरवा के चमारों के साथ जो व्यवहार किया है, वह नादिरशाही है। नादिरशाह ऐसा सोच भी नही सकता था। सो, महीपता को मारो।"

बिसेसुर गुस्से मे खडा हो गया और उसका टिड्डे सा शरीर रेलवे पुल की तरह थरथराने लगा। उसकी आखें लाल हो गईं और वह जोर से कहने लगा—

"महीपता ने सालिगराम चमार को मार डाला। कई घायल पड़े है। सालिग के लडके कढोरा और उसकी मा को पकड लिया गया और थाने में उससे कहा कि वह अपनी मा के साथ बदफेली करे। जब उसने इन्कार किया तो उसके गुप्ताग काट डाले और उसकी मा पर सिपाहियो ने बलात्कार किया। महीपता गडरिया जानवर है। उसके बाप-दादा कभी दरोगा क्या सिपाही भी नहीं हुए, सो, उसका माथा फिर गया है। उसका इलाज होना चाहिए।"

बिसेसुर को अतिबल ने बल से बैठाया और उसके मुख को बन्द कर दिया लेकिन क्रोध मे उसने अतिबल दुबे का हाथ काट खाया। दुबे सी-सी करके रह गए। सब हसने लगे।

"यह कामरेड कौन है·· हू हिज हि ?" चटर्जी ने पूछा।

पुजारी ने चटर्जी के कान मे कहा कि यह बातूनी मगर सक्रिय कार्यकर्ता है, विनोदी और बक्कू मगर इसने सी ओ. हरशरनलाल की सफाई में हाथ बटाया था। चटर्जी ने तारीफ भरी नजर से बिसेसुर को देखा —

"कामरेड। उस विलेज···ग्राम से काम का कोई आदमी यहा बुलाया गया है ?"

"हा, उस गाव, सल्लापुरा का, सालिग राम के वश का दामोदर—दमोरा चमार यहा है···चल रे दमोरा, बता कामरेड चटर्जी को कि क्या वारदात हुई ?"

अतिबल ने बिसेसुर को डाटा कि उसे दामोदर कहना चाहिए, दमोरा नही। मुखिया रेवतीरमन ने व्यंग्य किया कि बिसेसुर को सभ्यता सिखाना उल्लू को वेद पढ़ाना है। गाव के गण मुस्कराए।

दामोदर चमार ने सारा किस्सा बताया। सब उस बर्बर कृत्य से सिर नीचा कर मौन रह गए। गया के बीरेन्द्र चौधरी ने कहा—

"कामरेड! यह पूजीवादी-सामन्ती सरकार अब उदारवाद छोड तानाशाह होती जा रही है। इस काग्रेस पार्टी मे अधिकतर भूमिपति—फ्यूडल एलीमेंट है जो गाव मे सामती रवैया अपनाता है और पुलिस और सेना से, आधुनिक सामन्तवाद कायम करना चाहता है, वही निर्दयता, वही दमन, वही ऊंच-नीच का भेद, वही जातिवाद, वही सब कुछ। जनता प्रतिरोध करे तो उन्हें सीमा मे रखा जा सकता है, इसलिए महीपत दरोगा के साथ ठीक वही व्यवहार हो जो उसने दलित वर्ग के सालिगराम और कढोरीराम के साथ किया।"

गरुड सथाल ने अपनी टूटी-फूटी हिन्दी मे सुझाव दिया कि महीपत को बधिया कर दिया जाए और—और—।"

"उसकी औरत पर बलात्कार उसी चमार से कराया जाए, दामोदरा तैयार हो जा पट्ठे।"

बिसेसुर की इस बात पर साधव-माधव अहीर ने उसकी पतली गरदन पकड ली और अगौछा उसके मुह मे ठूसने लगे। सब गण हंसने लगे।

"राय बुरी नहीं है, जैसे को तैसा—गरुड़ संथाल और भाला भील ने समर्थन किया परन्तु चटर्जी आहत भाव से बोले—

"नो, दिस इज मैडीवल रिवेंज"'यह तो मध्यकालीन प्रतिशोध होगा। महीपत की मा और स्त्री ने क्या बिगाडा है ? हां, महीपत को एलीमिनेट किया जा सकता है।"

"यह एलीमिनेट क्या होता है ?" बिसेसुर ने अतिबल से पूछा। अतिबल ने बताया कि एलीमिनेट का मतलब है कि महीपत को माफ कर दिया जाए और उसे चेतावनी दे दी जाए।"

बिसेसुर बिगड़ गया, बोला—"कामरेड ! महीपता को मारिए, एलीमिट मत कीजिए। वह जगली है।"

"ए बिसेसुर महाराज। अगर तुम फिर बोले तो हम तुम्हारी यह बीड़ी के धुएं से गन्दी जीभ साफ कर देंगे। एलीमिनेट का मतलब है, मार देना।"—मुखिया रेवती-रमन ने बताया।

बिसेसुर खिसिया कर बैठ गया और चटर्जी को हाथ जोड़कर प्रणाम करने लगा।

पंजाब के सरदार जबरसिंह ने सिर हिलाया और मूछों को सहलाते हुए बोला—"थाने का घिराव हो ताकि जनता लड़ना सीखे। पुलिस ज्यादा जमा न हो, इसलिए अचानक घिराव हो, तारीख चुपचाप तै हो, पुलिस को पता न चले। फिर अगर पुलिस गोली चलाए तो उसका सामना किया जाए। कितने बन्दूकधारी लोग मिल सकते हैं ?"

"आप निर्णय लें, बन्दूकधारियों की कमी न होगी। लायसेंसधारी तो आएंगे नहीं, पकड़े जाएंगे बाद में, गैरकानूनी हथियार वालो को बुलाना पड़ेगा।" पुजारी ने कहा।

"हम खुद घिराव मे भाग लेंगे हथियारबद होकर।" तराई के गिरधारीलाल तमक कर बोले।

"इटावा में तो बागी बहुत हैं, उनकी मदद क्यों न ली जाए ?" रामसनेही, नरसिंहपुर ने सुझाव दिया।

"यह तो भूतनाथ कर सकता है, उसे बुलाना पड़ेगा। वह आजकल कहां है, देश में भी है या नहीं, पता नही। देखेंगे'''उसके चेले तो हैं, उनसे बात करेंगे।" पुजारी जी ने रुक-रुककर बताया।

"लेकिन रिवोल्यूशनरी एक्शन—क्रान्तिकारी लड़ाई मे अपराधियों का प्रवेश अच्छा नहीं है," चटर्जी और सान्याल ने आपत्ति की।

"पुलिस अपराधी-संगठन है, कोअर्सिव पावर—दमनकारी शक्ति है, तब बद-माशों से मरवाने में हर्ज क्या है ?" साथी श्यामकिशोर ने पूछा।

"कोई हानि नहीं पर वे क्रान्तिकारी नेतृत्व के अनुशासन मे रहें, तब है," तारकनाथ सिन्हा ने सोचते हुए कहा।

बिसेसुर हाथ जोड़कर पुन: बोलने की अनुमति मागने लगा। उसकी बेचैनी देख, हंस कर उसे आज्ञा दे दी गई। वह बोला—

"सब जातियों के अपने-अपने बागी हैं और यहां सब जातियों के पच हैं। अपनी-अपनी जाति के बागियों को बुला लें और उन्हें काबू मे रखें, वे पुलिस की गोलियों का जवाब दे सकते हैं।"

"जाति का सवाल उठाना, क्रान्ति को पीठ मे छुरा भोंकना है,"—चटर्जी ने उदास होकर कहा।

"माफी माग बिसेसुरा। तू अपनी बेवकूफी से काम बिगाड़ रहा है," मुखिया

रेवतीरमन ने विसेसुर को समझाया। उसने माफी मांग ली।

"हमारा ज़ोर जनता की अधिक से अधिक संख्या पर हो, घिराव की इस शिक्षा में यदि हम सफल रहे तो उसके बाद इससे बड़े घिराव हो सकेंगे और एक दिन पूरे नगर को घेरा जा सकेगा।" अपराधियों का कोई विश्वास नहीं किया जा सकता, हां, उनसे कभी, किसी जन-दुश्मन के सफाए में काम लिया जा सकता है। तो भी इससे बचना चाहिए।" कामरेड चटर्जी ने समझाया।

"लेकिन भूतनाथ की थीसिस भिन्न है। वह बुरों को बुरे लोगों द्वारा ठिकाने लगाने में बुराई नहीं मानता," अतिबल ने कहा।

"भूतनाथ की बात और है।"

"कितना बढ़िया रहता, भूतनाथ यहां होता।"

"वही बागियों को अनुशासन में रख सकता है!"

"भूतनाथ को भूल जाइए। अपने पैरों पर खड़े होइए। पन्द्रह-बीस नेता तो यहीं है यानी पन्द्रह हथियार और स्थानीय पचास-साठ बन्दूकें हो जाएंगी। देशी कट्टे तो तमाम हैं "लायसेंसधारियों में से कुछ जनभक्तों की बन्दूकें मिल सकती हैं। वे रिपोर्ट करा सकते हैं कि उनकी गनें चोरी हो गई," पुजारी ने कहा।

"इतना काफी है। अगर हम तिथि का पता न चलने दें तो पुलिस के थाने के सिपाही और दरोगा क्या कर लेंगे? हम थाने में ही उन्हें भून देंगे। लेकिन अगर पता चल गया तो सारे जिले की पुलिस आ लगेगी, सशस्त्र पुलिस भी। तब हमारे लोग शूट कर दिए जाएंगे।"

"हमें शांतिपूर्ण प्रदर्शन करना चाहिए। यदि हम देखें कि पुलिस कम है तो हमला कर सकते हैं।"

भानु सान्याल ने बताया कि यह घिराव-विराव बेकार है। साफ बात है कि दरोगा को सज़ा देनी है। हम आज रात में हमला करें। थाने के तार काट दें और थानेदार को दण्ड दें, अपराधी सिपाहियों को मारें। घिराव का मतलब व्यर्थ प्रदर्शन है। सामूहिक, आमने-सामने की लड़ाई में हमारी हानि अधिक होगी अतः गुरिल्ला जंग ही ठीक है। जनता को समाचार मिलते ही वह प्रसन्न हो जाएगी और हमारी पीठ पर होगी। आप आज या कल की रात में बकेवर के थाने पर आक्रमण की योजना बनाइए।"

"पर इससे जन-शिक्षा नहीं होगी। क्रान्ति तो जनता को करनी है, कुछ दु:साहसी लोगों को नहीं। बकेवर के स्टेशन आफीसर को तो कभी भी मारा जा सकता है पर प्रश्न तो सामूहिक एक्शन का है। अतएव कामरेड भानु सान्याल के मत से मैं भिन्न लाइन पर हूं," कामरेड चटर्जी ने गंभीरता से कहा।

"मैं भी कामरेड चटर्जी से सहमत हूं। सवाल जनता को जगाने, उसमें वर्ग-अत्याचार से बदला लेने की भावना भरने, उसकी कायरता छुड़ाने, उसे सत्ता की शक्ति के सामने खड़ा करने, उसको क्रान्ति के विकल्प को बताने की जिम्मेदारी हम पर है ताकि अफसर डरें और जन आतंक बढ़े। नौकरशाही को जन-समूह आतंकित करे, तब है," कामरेड अतिबल ने कहा।

लम्बे विचार-विमर्श के बाद यही तै हुआ कि थाने का घिराव किया जाए और तिथि बुढ़वा मंगल हो। चुपचाप गांव-गांव में गण प्रचार करें और गणेश अधिक से अधिक लोगों को अपने-अपने क्षेत्र से लाए। अखबारों में तारीख न छपने पाए मगर पुलिस के ज़ुल्मों के विरुद्ध प्रचार कराया जाए। सालिगराम, ढंढोरीलाल और उसकी

मा के फोटो छपें। पूरा विवरण जनता को दिया जाए मगर यह न बताया जाए कि जनता क्या करना चाहती है। सरकार के खुफिया लोगों से जनरहस्य छुपाया जाए। इस बीच अगर पुलिस ज्यादती करे तो उसका विरोध न किया जाए ताकि जनरोष बढ़े। अगर इस सबसे या खुफिया पुलिस को भेद मिल जाने पर दरोगा महीपत को मुअत्तिल कर दिया जाए या उसका तबादला कर दिया जाए तो भी प्रदर्शन और घिराव हो और महीपत कहीं भी छुप कर बैठ जाए, उसको ढूंढ़ कर उसको खत्म कर दिया जाए।

निर्णय हो गया। कामरेड चटर्जी और भानु सान्याल ने वेंकट सुब्बइया और तारकनाथ सिन्हा ने, देर तक, धीमी-आवाज़ में सबको पूंजीवाद और उसके शोषण का रहस्य समझाया। उनके अनुसार भारत में पूंजीवाद है ही नहीं, एक किस्म का दलाल पूंजीवाद है जो योरोप और अमरीका के पूंजीपतियों के अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक साम्राज्यवाद की दलाली करता है। वह तकनीक उससे उधार लेता है और पुर्ज़े जोड़कर यहां मशीन बनाता है, कर्ज़ भी उसी से लेता है। गांव में सामंतवाद है, जहां बड़े किसानों और ज़मींदारों का वर्चस्व है। भूमिहीन मज़दूर, दस्तकार, छोटा किसान, इस वर्ग की संख्या ही अधिक है। साथियो, यही जनाधार है। इसे क्रान्ति की ओर मोड़ो और उसे समझाओ कि धन-धरती और धंधों पर जनता का अधिकार होना चाहिए।

पुजारी जी ने सबको क्रान्ति के नाम पर शपथ दिलाई कि कोई गण प्रदर्शन की तिथि नहीं बताएगा लेकिन सब जानते थे कि जनता में बात फैलने पर तिथि को छुपाया नहीं जा सकता और यही हुआ भी। बाहर के नेता तो टिकिसी के महादेव के मंदिर में रहे, वहां पुलिस का दबाव पड़ने पर सुरंग से किले में सरक जाने की सुविधा थी मगर गणों को तो गांव-गांव जाकर लोगों को कहना था कि बुढ़वा मंगल को बकेवर चलना है। जो शस्त्र लेकर चल सकते थे, उन्हें भी तैयार करना था। पुलिस को भेद मिल गया और उसने इटावा से बकेवर और बकेवर से बाबरपुर तक सारी सड़क पर पुलिस बल का प्रदर्शन किया। रास्ते-रास्ते मोड़-दर-मोड़ पुलिस ही पुलिस छा गई। सशस्त्र पुलिस के दस्ते बकेवर पुलिस थाने पर लगा दिए गए। बकेवर में धारा 144 घोषित कर दी गई। पुलिसवैन में भरी सिपाहियों की पलटनें, बन्दूकें तान-तान कर गश्त करने लगीं। जहां लोग एकत्र होते, उन्हें डपट कर भगा दिया जाता। यदि प्रतिरोध करते तो उन्हें गिरफ्तार कर उनकी पिटाई होती और उन्हें हवालात में ठूंस दिया जाता।

पुलिस को यह भेद मिल गया कि नक्सलियों की गुप्त सभा हुई थी और यह भी कि उसमें बिहार-बंगाल के तपेतपाए नेताओं ने भाग लिया था। इस कारण पुलिस ने टिकसी के महादेव के मंदिर के पुजारी को हिरासत में ले लिया मगर अन्य क्रान्तिकारी वहां से खिसक गए। सुरंग को बन्द कर दिया था। उसका भेद पुलिस को नहीं मिला। यदि पुजारी ने मुंह खोल दिया तो सुरंग का भी रहस्य खुल जाएगा। लेकिन हड्डी-हड्डी तोड़ने पर भी पुजारी ने मुंह नहीं खोला। पुलिस उसे जान से मार नहीं सकती थी। उसका आदर था। वह पंडित था, पुजारी था और विद्वान था। वह बेहोश और बीमार हो गया। उसे इटावा के सरकारी अस्पताल में इलाज के लिए भेज दिया गया जहां उसकी सुरक्षा का भारी बंदोबस्त था।

लेकिन गणों और गणेशों ने हार नहीं मानी। बुढ़वा मंगल की पूर्व रात्रि में ही हज़ारों की संख्या में जनता बकेवर के पास के गांवों तक जा पहुंची। गांवों में पुलिस का कोई दबदबा नहीं था। बिखरे पुलिस वालों से गांव वालों में भेंट होने पर सिपाही कह देते

कि जनता को जाना हो तो जाए लेकिन हमारी आंखें बचाए ताकि हमारी नौकरी बची रहे।

लगभग साठ-सत्तर हजार आदमी, अतिबल, श्याम दीक्षित, रेवतीरमन, साधव-माधव, बिसेसुर, और इटावा शहर के राजेन्द्र तिवारी, ज्वालामुख प्रवीन तथा दूसरे नेताओं को आगे कर बकेवर पर चढ आए। वे चारों तरफ से एक साथ आगे बढ़े। सैकड़ों गिरफ्तार कर लिए गए लेकिन उनकी चिन्ता न कर भीड़ पुलिस से बचती, छुपती, कावा काटती आखमिचौनी खेलती हुई बकेवर के चौराहे पर पहुंचने लगी और नारेबाज़ी शुरू हो गई। भीड़ के रेले इतने अधिक थे कि गिरफ्तारी बेकार होने लगी। तब एस. पी. ने सोचा कि समूह को भड़ास निकाल लेने दी जाए और वे यदि शांत रहें तो उन्हें बकने दिया जाए। आखिर सबको तो गोलियों से नहीं भूना जा सकता। एस. पी. महीपत गड़रिया के गधेपन पर दांत पीस रहा था। उसने भीड़ को चौराहे पर सम्बोधित किया—

"हमने महीपत दारोगा को सस्पेंड कर दिया है, उसकी ज्यादती की जाच होगी। अब और आप लोग क्या चाहते हैं?"

अतिबल को लोगों ने ठेल कर आगे किया। वह चिल्लाया—"महीपत को हमे सौंप दो। हम जन-न्यायालय में उस पर केस चलाएगे। हमें इस सत्ता के न्याय पर भरोसा नहीं है। महीपत की मुअत्तिली एक नाटक है। उसे बाद मे बहाल करा दिया जाएगा।"

"कामरेड अतिबल। आप तो समझदार हैं। कानून को अपने हाथों में मत लीजिए। मैं इटावा का पुलिस-सुपरिन्टेन्डेंट पूरी जिम्मेदारी के साथ ऐलान करता कि…हम महीपत के साथ रियायत नहीं करेंगे। उसने कानून के खिलाफ काम किया है, उसे सजा मिलेगी। आप मजमा मत लगाइए। दफा 144 लगी है, नहीं तो खून-खराबा हो जाएगा।"

बूढ़े शेर अतिबल को कई बरसों बाद आज इतनी बड़ी भीड़ के नेतृत्व का मौका मिला था। उसको आवेश आ गया। वह छाती खोलकर, गुस्से में होंठ चबाता, पुलिस और राज्य को गरियाता हुआ आगे बढ़ा—

"लो, मार दो गोली। जनता को मजमा कहते हो? शर्म नहीं आती? तुम्हारी मां पर बलात्कार हो, तुम्हारे लड़के की लिंगी काट दी जाए तो तुम्हें कैसा लगेगा? लोगो, देख क्या रहे हो, यह एस. पी. महीपत को बचाना चाहता है। यह जनता का अपराधी है, थू है, लानत है ऐसे अफसरों पर।"

एस. पी. का अपमान पुलिस बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। तो भी एस. पी. ने मजिस्ट्रेट की तरफ देखा। मजिस्ट्रेट ने माइक पर कहा—

"अतिबल जी! आप नाहक रक्तपात कराना चाहते हैं। मैं आपको एक मौका और देता हूं। भीड़ को हटाइए और कानून और व्यवस्था को भंग मत कीजिए।"

"कौन व्यवस्था भंग कर रहा है, जनता या पुलिस? यह कौन सी व्यवस्था है, कौन-सा कानून है जो अपनी प्रजा को बर्बर तरीके से सताता है? यह कौन-सी सभ्यता है कि लड़के को अपनी मां पर बलात्कार के लिए लाचार किया जाता है? क्या आप कढ़ोरीलाल की इन्द्रिय वापस कर सकते हैं, उसके बाप को? क्या उसकी मां की प्रतिष्ठा उसे दोबारा मिल सकती है? मजिस्ट्रेट, एस. पी. साहब आप पुलिस बल को हटाइए, हम आज उस नीच दरोगा महीपत को दण्ड दे के रहेंगे। बोलो, जनता जर्नादन की…।"

"जै, जै, कामरेड अतिबल की, छै पुलिस जुलुम की !"
"महीपत का नाश हो।"
"एस. पी.—हाय हाय।"
"मजिस्ट्रेट—हाय हाय।"

मजिस्ट्रेट के संकेत पर पुलिस का एक भारी जत्था अतिबल की ओर बढ़ा। भीड़ ने अतिबल को बीच में कर लिया। पुलिस ने लाठी चार्ज किया। भीड़ भी डण्डे मारने वाली पुलिस पर पिल पड़ी। घमासान हो गया। अतिबल को पुलिस ने पकड़ लिया। इसी क्षण उसके आसपास खड़े किसी ने अतिबल को पकड़ने वाले पुलिस के जत्थे पर फायर कर दिया। दो-चार सिपाही छर्रों से घायल होकर गिर गए। भीड़ ने जैकारा लगाया और ईंट-पत्थर चलने लगे। कई तो कुचल कर घायल हो गए, कुछ मर गए। उधर जनता से फायर होने पर पुलिस ने फायर किए। लोग गिरने लगे। भीड़ भाग खड़ी हुई तो भी वह रुक-रुककर पत्थर चलाती, गोली चलाती, लोग गिरते और फिर भीड़ भागती।

इसी क्षण जनता में से किसी ने चिल्लाकर कहा, "भागो मत, देखो, अब क्या होता है। हमला करो, लो सालो, अब मजा लो।"

कुछ पक्के निशानेबाज बंदूकधारी पुलिस पर गोली चलाने लगे। वे किधर थे, यह पता नहीं चल रहा था। गोलियां बिना चूके पुलिस पर पड़ने लगीं। पुलिस गुस्से में उन्हें न देख पाकर जनसमूह को भूनने लगी। आखिर कब तक निहत्थी भीड़ पुलिस का सामना कर सकती थी? अतिबल को पुलिस पकड़ ले गई थी। उसको इतना मारा कि वह अचेत हो गया। श्याम दीक्षित, राजेन्द्र तिवारी आदि नेताओं को भी जकड़ लिया गया। रेवतीरमन मुखिया भी बच नहीं पाए। पर बिसेसुर, साधव-माधव की आंख बचाकर भाग गया। बिसेसुर को भागता देखकर साधव-माधव भी खिसके। भीड़ में भगदड़ मच गया। जो रुकता, उसके गोली लगती या छर्रे बदन में घुस जाते। लोग सिर पर पांव रख कर भागे।

बकेवर के चौराहे पर रक्त ही रक्त दिखाई पड़ने लगा। घायलों और लाशों को पुलिस लारी में भरने लगी। चारों तरफ पुलिस ने भीड़ का पीछा किया। कुछ समय बाद सिर्फ पुलिस रह गई और अधिकारियों का हुक्म बजने लगा। मुर्दों और घायलों को पृथक किया गया। सवाल यह था कि मुर्दों की इतनी बड़ी संख्या का क्या किया जाए? मजिस्ट्रेट आदेश देकर जा चुका था कि लाशों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया जाए और घायलों को अस्पताल में। किन्तु पुलिस ने घटना का महत्व कम करने के लिए अनेक लाशों को यमुना में फिकवा दिया और घायलों को मरने का पूरा मौका दिया। जो सख्तजान निकले, नहीं मरे, उन्हें दूसरे दिन अस्पताल भेजा। वे बेचारे रात भर चिल्लाते-चीखते रहे, उन्हें पानी पिलाने वाला भी कोई नहीं था।

बकेवर में दिन भर आतंक छाया रहा। लोग घर में घुसे रहे। पुलिस ने अनेक घरों में घुस कर बैठे हुए दूसरे गांव के निवासियों को पकड़ा और शाम तक बकेवर को बाहर वालों से मुक्त कर दिया।...बकेवर के बाहर साधव-माधव बिसेसुर को खोजते फिर रहे थे, जोर-जोर से उसे पुकार रहे थे। अचानक एक नाली से प्रतिध्वनि आई। साधव-माधव ने खेत की एक नाली में झांका, बिश्वेश्वरदयालु पानी भरी नाली में पड़े हुए हांफ रहे थे। कोई आता तो पानी में सिर छिपा लेते और फिर सांस लेने के लिए खोपड़ी निकाल लेते। साधव-माधव उस शोक में भी हंस पड़े—

कि जनता को जाना हो तो जाए लेकिन हमारी आंखें बचाए ताकि हमारी नौकरी बची रहे ।

लगभग साठ-सत्तर हजार आदमी, अतिबल, श्याम दीक्षित, रेवतीरमन, साधव-माधव, बिसेसुर, और इटावा शहर के राजेन्द्र तिवारी, ज्वालामुख प्रवीन तथा दूसरे नेताओं को आगे कर बकेवर पर चढ आए। वे चारों तरफ से एक साथ आगे बढ़े। सैकड़ों गिरफ्तार कर लिए गए लेकिन उनकी चिन्ता न कर भीड़ पुलिस से बचती, छुपती, कावा काटती आखमिचौनी खेलती हुई बकेवर के चौराहे पर पहुंचने लगी और नारे-बाजी शुरू हो गई। भीड़ के रेले इतने अधिक थे कि गिरफ्तारी बेकार होने लगी। तब एस. पी. ने सोचा कि समूह को भड़ास निकाल लेने दी जाए और वे यदि शात रहें तो उन्हें बकने दिया जाए। आखिर सबको तो गोलियों से नहीं भूना जा सकता। एस. पी. महीपत गडरिया के गधेपन पर दांत पीस रहा था। उसने भीड़ को चौराहे पर सम्बोधित किया—

"हमने महीपत दारोगा को सस्पेंड कर दिया है, उसकी ज्यादती की जांच होगी। अब और आप लोग क्या चाहते हैं ?"

अतिबल को लोगों ने ठेल कर आगे किया। वह चिल्लाया—"महीपत को हमें सौंप दो। हम जन-न्यायालय में उस पर केस चलाएंगे। हमें इस सत्ता के न्याय पर भरोसा नहीं है। महीपत की मुअत्तिली एक नाटक है। उसे बाद में बहाल करा दिया जाएगा।"

"कामरेड अतिबल। आप तो समझदार हैं। कानून को अपने हाथों में मत लीजिए। मैं इटावा का पुलिस-सुपरिन्टेन्डेंट पूरी जिम्मेदारी के साथ ऐलान करता हूं कि···हम महीपत के साथ रियायत नहीं करेंगे। उसने कानून के खिलाफ काम किया है, उसे सजा मिलेगी। आप मजमा मत लगाइए। दफा 144 लगी है, नहीं तो खून-खराबा हो जाएगा।"

बूढ़े शेर अतिबल को कई बरसों बाद आज इतनी बड़ी भीड़ के नेतृत्व का मौका मिला था। उसको आवेश आ गया। वह छाती खोलकर, गुस्से में होंठ चबाता, पुलिस और राज्य को गरियाता हुआ आगे बढ़ा—

"लो, मार दो गोली। जनता को मजमा कहते हो ? शर्म नहीं आती ? तुम्हारी मां पर बलात्कार हो, तुम्हारे लड़के की लिंगी काट दी जाए तो तुम्हें कैसा लगेगा ? लोगो, देख क्या रहे हो, यह एस. पी. महीपत को बचाना चाहता है। यह जनता का अपराधी है, थू है, लानत है ऐसे अफसरों पर।"

एस. पी. का अपमान पुलिस बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। तो भी एस. पी. ने मजिस्ट्रेट की तरफ देखा। मजिस्ट्रेट ने माइक पर कहा —

"अतिबल जी ! आप नाहक रक्तपात कराना चाहते हैं। मैं आपको एक मौका और देता हूं। भीड़ को हटाइए और कानून और व्यवस्था को भंग मत कीजिए।"

"कौन व्यवस्था भंग कर रहा है, जनता या पुलिस ? यह कौन सी व्यवस्था है, कौन-सा कानून है जो अपनी प्रजा को बर्बर तरीके से सताता है ? यह कौन-सी सभ्यता है कि लड़के को अपनी मां पर बलात्कार के लिए लाचार किया जाता है ? क्या आप कठोरीलाल की इन्द्रिय वापस कर सकते हैं, उसके बाप को ? क्या उसकी मा की प्रतिष्ठा उसे दोबारा मिल सकती है ? मजिस्ट्रेट, एस. पी. साहब आप पुलिस बल को हटाइए, हम आज उस नीच दरोगा महीपत को दण्ड दे के रहेंगे। बोलो, जनता जर्नादन की···।"

"जै, जै, कामरेड अतिवल की, छै पुलिस जुलुम की !"

"महीपत का नाश हो।"

"एस. पी.—हाय हाय।"

"मजिस्ट्रेट—हाय हाय।"

मजिस्ट्रेट के संकेत पर पुलिस का एक भारी जत्था अतिवल की ओर बढ़ा। भीड़ ने अतिवल को बीच में कर लिया। पुलिस ने लाठी चार्ज किया। भीड़ भी डण्डे मारने वाली पुलिस पर पिल पड़ी। घमासान हो गया। अतिवल को पुलिस ने पकड लिया। इसी क्षण उसके आसपास खड़े किसी ने अतिवल को पकडने वाले पुलिस के जत्थे पर फायर कर दिया। दो-चार सिपाही छर्रों से घायल होकर गिर गए। भीड़ ने जैकारा लगाया और ईंट-पत्थर चलने लगे। कई तो कुचल कर घायल हो गए, कुछ मर गए। उधर जनता से फायर होने पर पुलिस ने फायर किए। लोग गिरने लगे। भीड़ भाग खड़ी हुई तो भी वह रुक-रुककर पत्थर चलाती, गोली चलाती, लोग गिरते और फिर भीड़ भागती।

इसी क्षण जनता में से किसी ने चिल्लाकर कहा, "भागो मत, देखो, अब क्या होता है। हमला करो, लो सालो, अब मज़ा लो।"

कुछ पक्के निशानेबाज बंदूकधारी पुलिस पर गोली चलाने लगे। वे किधर थे, यह पता नही चल रहा था। गोलियां बिना चूके पुलिस पर पड़ने लगी। पुलिस गुस्से मे उन्हें न देख पाकर जनसमूह को भूनने लगी। आखिर कब तक निहत्थी भीड़ पुलिस का सामना कर सकती थी? अतिवल को पुलिस पकड़ ले गई थी। उसको इतना मारा कि वह अचेत हो गया। श्याम दीक्षित, राजेन्द्र तिवारी आदि नेताओ को भी जकड लिया गया। रेवतीरमन मुखिया भी बच नही पाए। पर बिसेसुर, साधव-माधव की आंख बचाकर भाग गया। बिसेसुर को भागता देखकर साधव-माधव भी खिसके। भीड़ में भर्राटा मच गया। जो रुकता, उसके गोली लगती या छर्रे बदन मे घुस जाते। लोग सिर पर पांव रख कर भागे।

बकेवर के चौराहे पर रक्त ही रक्त दिखाई पड़ने लगा। घायलों और लाशों को पुलिस लारी में भरने लगी। चारों तरफ पुलिस ने भीड का पीछा किया। कुछ समय बाद सिर्फ पुलिस रह गई और अधिकारियों का हुक्म बजने लगा। मुर्दों और घायलों को पृथक किया गया। सवाल यह था कि मुर्दों की इतनी बड़ी सख्या का क्या किया जाए? मजिस्ट्रेट आदेश देकर जा चुका था कि लाशों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया जाए और घायलों को अस्पताल मे। किन्तु पुलिस ने घटना का महत्त्व कम करने के लिए अनेक लाशों को यमुना में फिकवा दिया और घायलों को मरने का पूरा मौका दिया। जो सख्तजान निकले, नही मरे, उन्हें दूसरे दिन अस्पताल भेजा। वे बेचारे रात भर चिल्लाते-चीखते रहे, उन्हें पानी पिलाने वाला भी कोई नही था।

बकेवर में दिन भर आतक छाया रहा। लोग घर में घुसे रहे। पुलिस ने अनेक घरो में घुस कर बैठे हुए दूसरे गाव के निवासियो को पकड़ा और शाम तक बकेवर को बाहर वालों से मुक्त कर दिया।…बकेवर के बाहर साधव-माधव बिसेसुर को खोजते फिर रहे थे, ज़ोर-ज़ोर से उसे पुकार रहे थे। अचानक एक नाली से प्रतिध्वनि आई। साधव-माधव ने खेत की एक नाली मे झाका, बिश्वेश्वरदयालु पानी भरी नाली मे पड़े हुए हांफ रहे थे। कोई आता तो पानी में सिर छिपा लेते और फिर सांस लेने के लिए खोपडी निकाल लेते। साधव-माधव उस शोक में भी हस पड़े—

"वाह महाराज। द्रोणाचार्य की संतान कीचड़ में सिर छुपा रही है, हः हः हः हः।"

"कौन, साधव-माधव चौधरी?" बिसेसुर को लगा, प्राण बचाने वाले आ गए।

"हां, हमी है ब्राह्मन देवता! अब पानी में मेढक से क्यों छिपे हो? बाहर आओ न। दुर्योधन की तरह सबको मरवा कर सरोवर में छुप गए, क्यों परसुराम के औतार?"

बिसेसुर कीचड़ और मिट्टी से लिपटा भूत की तरह नाली से निकला और घबरा कर साधव-माधव से लिपट गया, "बचाओ, बचाओ।"

"अरे महाराज, यहा अब कौन है जो तुम्हें मारेगा? काप क्यों रहे हो? यहां पुलिस कहा है? वह तो बकेवर मे है।"

"कितनी दूर है बकेवर यहां से?"

"दो-तीन मील तो होगा। हम पीछे से चिल्लाते-चिल्लाते थक गए। क्या बहरे हो गए थे डर से? भागते ही रहे, वाह महाराज, क्या वीरता दिखाई है?"

"सचमुच बच गए हम? सचमुच?"

"हा बच गए तुम, अब यह स्वाग छोड़ो और यह कीचड-मिट्टी पोछ डालो।"

बिसेसुर को पकड कर साधव-माधव ने नाली के गहरे पानी मे डुबकी लगवाई और उसकी मिट्टी-कीचड़ साफ कर दिया। अगोछे से उसका बदन पोछा और उसे आराम से लिटा दिया। डर निकल जाने और कुछ आराम मिलने पर बिसेसुर की बुद्धि वापस आई। यादवों ने उसे कुछ चने मुरमुरे भी चवाने को दिए, जिन्हें वह अकाल के भूखे की तरह निगलने लगा।"

"चलो, उस महीपता को थाने से पकड़ लें। तभी इस नरसहार का बदला मिलेगा।" बिसेसुर खाना पेट मे जाते ही भभका।

दोनों अहीर हसने लगे। बोले—

"क्यो, अभी मन भरा नही? अभी कोर कसर बाकी है? चलो, घर चलो, वहा पंडितायन गरम दूध लिए बैठी होगी, हो गई न क्रान्ति या नाली में डाल दें तुम्हें?"

साधव-माधव के उपहास से बिसेसुर की कमजोर काया मे क्रोध का संचार होने लगा—

"तो तुम समझते हो, हम डर के कारण नाली में छिपे थे?"

"और क्या पाताल मे किसी कामरेड को टेलीफोन कर रहे थे?"

"यार तुम रहे अहीर के अहीर…अरे भाई, हमे यहां नियुक्त किया गया था। आज रात मे घटना घटने वाली है।"

"अच्छा? किसने यहा कीचड मे सडने के लिए कहा था तुमसे?"

"तुम्हें यह भेद नही बताया जा सकता। यह क्रान्ति का रहस्य है।"

"अच्छा, मत बताओ मगर अब चलोगे या महीपत की पकड करोगे?"

"तुम क्या घर जा रहे हो? धिक्कार है तुम्हें और तुम यादव बनते हो? चलो, महादेव के मदिर चलते है। रात मे हमला करेंगे।"

दोनो यादवो का हसते-हसते बुरा हाल था। उन्होंने बताया—

"तुम्हारा टिकसी के मदिर मे पुलिस स्वागत करेगी, चलो, चलते हैं, पुजारी जी तो पकड़े गए, अखिल भी। अब तुम्ही नेता हो, चलो, उठो न।"

"मैं नेता हूं, रहूंगा। मैं घर नहीं जा सकता। मैं…मैं महीपत को मार कर ही घर जा सकता हूं।"

"घर क्यों, सरग जाना। महीपत को मार कर घर ! क्या सपना देख रहे हो महाराज ?"

"सपना ? सपना ही तो था, पर, अभी वह पूरा होगा। जरूर होगा। लो, देखो, वह कोई इधर आ रहा है, भागो···भा · ग ··लो।"

भीगी और डरी गिलहरी से भागते विसेसुर को यादवों ने पकड़ा और अपनी ओर आने वाले व्यक्ति को पास आने दिया। वह व्यक्ति अपरिचित था। उसने क्रांतिकारी सैल्यूट मारा और कहा, "आप साधव-माधव हैं न ?"

"हा, है और ये नेता विसेसुर हैं।"

"आप यही रुकें और रात मे ग्यारह बजे धर्मशाला के सामने बरगद के नीचे मिले। वह व्यक्ति यह कहकर चलने लगा। पूछने पर उसने बताया कि यह कामरेड चटर्जी का आदेश है·· रात के ग्यारह बजे।"

अब विसेसुर की बारी थी। वह पहले घबराहट में था। अब वह पुनः अपने अभ्यस्त अंदाज में आ गया। वह बोला—"मानते हो कि मैं नाली में इसी संदेश का इतजार कर रहा था ?"

"लेकिन, वह तुम्हें नही, हमें बुलाने आया था। तुम तो नाली में थे, वहा वह कैसे देख पाता ?"

'तुम रहे चुगत के चुगत।"

'पंडित, हम मरे को मारना नही चाहते, लेकिन तुम्हारी जीभ कुतर कर उसे भून कर खा जाएंगे।·· अब उठो दयानिधान और पास ही अहीरो के पुरवा मे पधारो, दूध पियो और भोजन करो। रात में ग्यारह बजे तुम्हें हम अपने हाथ से हनेंगे।"

हंसी से हहराते साधव-माधव विसेसुर को यादवों के घर ले गए और उन्हे खिलापिला कर सुला दिया। खुद भी आराम किया।

बकेवर मे धर्मशाला के बाहर जो बरगद का पेड़ है वह असाधारण रूप मे बड़ा है, पुराना है। धर्मशाला लगभग खाली पड़ी है अतः उधर पुलिस नहीं है। सन्नाटा है। बरसात की रात है और घटा छाई हुई है। जब तब पानी बरसने लगता है। चारों तरफ से झींगुरो और मेंढकों की आवाज़ आती है अतः माहौल डरावना हो जाता है। बकेवर कस्बे को जैसे साप सूघ गया है, कहीं कोई सुगबुग नही।

ठीक ग्यारह बजे कुछ छायाएं एक ओर दिखाई पड़ी। विसेसुर का तीतर-सा छोटा दिल कांपा पर उसने अपने को मजबूत बनाया और साधव-माधव से कहा कि वे आ गए, चला जाए। तीनों उधर गए तो पाया कि कामरेड चटर्जी, सान्याल और अन्य बाहर के कामरेड सशस्त्र होकर खड़े हैं। गरुड़ संथाल, झाला भील, जबरसिंह तो तगड़े थे, शेष दुबले मगर दिलेर। वे छायाएं एक तरफ को सरकीं और बकेवर के बाहर आकर मशवरा करने लगीं। तभी तीन आदमी प्रकट हुए। जब उनसे पूछा गया कि वे कौन हैं तो उन्होंने गुप्त संकेत बताया। छायाएं आश्वस्त हो गईं। उनमें जो तगड़ा था वह बोला, "आप अगर मारे गए या पकड़े गए, तो कुछ न हो सकेगा। इसलिए आप यहीं रहें। चाहें तो पुलिस थाने के आसपास छिपे रहें पर कोई हरकत न करें। हम तीन काफी हैं। महीपता को मार कर सम्भव हुआ तो पकड़ कर आपके पास लाते हैं।"

"मगर, आप कौन हैं, यह तो बताइए।"

"हमारे नाम हैं लंगुरवीर, सिंहा और तिरसूल, त्रिशूल। गुरु भूतनाथ ने हमे इस इलाके का काम सौंपा हुआ है।"

सब चकित थे। कुछ समझ में नहीं आया कि भूतनाथ को प्रदर्शन की असफलता की खबर कैसे लग गई ? लेकिन भूतनाथ का प्रबन्ध स्वीकार करना ही उचित था। छायाओं ने अनुमति सूचक सिर हिलाया।

"हममे से आप जिसे चाहें, ले जा सकते है।"

"सिर्फ साधव-माधव को, बस।"

पाच छायाए चली गईं। रास्ते में कालिया ने साधव-माधव को चाकू और छोटी गनें दी और कहा कि जो उनसे कहा जाए, सिर्फ वही करें।

नौकरी से मुअत्तिल और पुलिस की निगाहों मे गिरा हुआ महीपत गड़रिया अपने क्वार्टर मे शराब की पूरी बोतल चढ़ाकर सोया हुआ था। उसके क्वार्टर के सामने पुलिस का पहरा था पर दिन-भर की उत्तेजना से थके सिपाही औंघ रहे थे। पाच छायाएं थाने के पीछे गईं जहां संगरी-डगरी चोरो की दो और छायाए खड़ी थी। कालिया ने सिर हिलाया तो वे दोनो छायाएं कमंद फेंक कर क्वार्टर पर चढ़ गईं। साधव-माधव चकित थे कि ये दोनों तो अद्भुत है। दोनो ने रस्सी पर पाचों छायाओ को ऊपर चढा कर, रस्सी का हुक मुंडेर मे फसा दिया और छिपे तौर पर दूसरी रस्सी के सहारे महीपत के आगन मे उतर गईं। उन्होने सबसे पहले जीने के किवाड़ खोल दिए ताकि ऊपर के लोग नीचे आ सकें। सब नीचे आगन मे उतर गए।

छायाओ ने देखा कि वरामदे मे महीपत सोया हुआ है और पखा चल रहा है। पास ही उसकी पत्नी तथा बच्चे सो रहे हैं और उसके बाद उसकी मा सो रही है।

दो छायाएं आगे बढी और उन्होने बटुए से एक चूर्ण-सा निकाल कर पखे की हवा के सामने कर दिया। फिर थोडी देर बाद सोने वालों की नाक के पास उस सुगन्धित चूर्ण को रखा। सोने वालों की तरफ से, कुछ क्षणों के बाद निश्चिन्त होकर दोनों छायाओं ने इशारा किया। कालिया, सिंहा और त्रिशूल ने महीपत, उसकी औरत और मा को उठा लिया जो बेहोशी की दवा से बेसुध थे। साधव-माधव उनकी रक्षा के लिए उनके पीछे चले। दोनों छायाओ ने महीपत के घर मे जो जल्दी मे मिला, उस पर हाथ साफ किए और भाग कर वे भी छत पर आ गए। तब तक उन पाचो छायाओ ने रस्सी के सहारे उतरने का सरजाम किया। क्वार्टर बहुत ऊचा तो था नहीं और तानो बागी तगडे थे अतः वे कधे पर लाश की तरह बेहोश उन तीनों को लादे हुए चुपचाप उतर गए। शेष लोग भी आ गए। कमद का हुक खीच लिया गया और उन तीनो को लादे हुए वे थाने के पीछे गलियो-गलियों खिसक आए। साधव-माधव बदूक के ट्रिगर पर हाथ रखे साथ चलते रहे। कोई विघ्न नहीं पडा।

उन छायाओं को आते देखकर, उनकी रक्षा के लिए छायाओं का बाहरी घेरा भी हट गया। सब एक बधे इशारे से वकेवर के बाहर पहुच गए। तीनों बागी बुरी तरह हाफ रहे थे पर प्रसन्न थे कि उन्होने गुरु भूतनाथ का ऋण चुका दिया था।

राजमार्ग छोड़ कर सबने पगडडी पकड़ ली और थके बागियो को विश्राम देने के लिए साधव-माधव और एक किसी साथी ने निद्रा-मग्न अपहृतों को लाद लिया। अहीरो के पुरवा मे आकर साधव-माधव ने अपने परिचितो को जगाकर उन्हे सब बताकर, एक अलग से लम्बी पशुशाला को खुलवाया और उसमे सब घुस गए। वही सालिगराम के वंशज दामोदर को बुलवा लिया गया और निद्रामग्नो को होश मे लाया गया। महीपत ने सिर को झटका देकर अपने को दुरुस्त किया तो देखा कि दामोदर उसकी मा पर बलात्कार की तैयारी कर रहा है और अग्रगामी दो छायाओ मे से एक उसकी

औरत का चीरहरण कर रहा है।

"यह क्या हो रहा है ? तुम कौन हो ? पीछे हटो, नही तो गोली मार दूंगा।"

दामोदर हंसा—"क्यों, बुरा लग रहा है ? मैं सालिगराम चमार का भतीजा हूं और अपनी चाची पर बलात्कार का बदला ले रहा हूं।"

महीपत ने देखा कि चारों तरफ गनों की नालियां तनी हुई हैं। महीपत गिड़गिड़ाने लगा, "मुझे माफ कर दो, मेरी मां को छोड़ दो, मेरी पत्नी को। मैं अपराधी हूं, माफ़ करो, मेरी मति मारी गई थी, माफ करो मुझे।"

"लो छोड़ दिया। हम तेरे जैसे नीच नहीं हैं। लेकिन तुझे सबक तो सिखाना ही है। तूने कढ़ोरा को नपुंसक बना दिया अब ले तू भी बधिया हो जा।"

दामोदर ने उसे पटक दिया। कालिया और सिंहा ने उसके हाथ पकड़ लिए और दामोदर ने तेज चाकू से उसके गुप्तांग काट दिए। एक मर्मभेदी आर्तनाद हुआ। मगर दामोदर, कालिया, सिंहा और त्रिशूल अट्टहास करने लगे, हःहःह हः।

महीपत बेहोश हो गया। पत्नी और मां रोने लगी। उन्हें दिलासा दिया गया और यह निर्णय हुआ कि महीपत की मरहमपट्टी कर दी जाए। फिर उसे कुछ स्वस्थ हो जाने और तकलीफ का अहसास हो जाने पर मारकर, उसका सिर बकेवर के चौराहे पर रख दिया जाएगा और उसके गुप्तांग उसकी खोपड़ी के ऊपर सजा दिए जाएं ताकि सनद रहे और वक्त पर काम आए।

24

बांदा जनपद मे बेतवा नदी के किनारे कुछ बागियों मे मशवरा चल रहा है। सुषमा नाग़िन, जुझारसिंह, दलराम यादव का पुत्र अजयसिंह यादव, गुलाबसिंह का पुत्र दलेलसिंह, उस्ताद तसलीम खान, विरौना बाग का हम्मीरा काछी और उरई के पंडित चूड़ामन, रात के प्रथम प्रहर ही अपने-अपने चुने हुए बागियो के साथ आ गए थे और नदी बेतवा के मनियाघाट के क्षेत्र में, एक खार में वार्ता चल रही थी।

शरदकाल में बेतवा नदी में पानी की धारा में उफान तो नही था पर वह अभी भी कल-कल ध्वनि से अपने वजूद को बताती थी और बहते पानी में काफी तेजी थी। जलपक्षी जब उड़ते तो उनके पंखों की फड़फड़ाहट से, कोई बागी चौक कर नदी की ओर देखने लगता था, यों बेतवा ने अपने किनारे इतना रक्तपात देखा था कि वह इन बागियो की वारदात के पहले की खुसुर-पुसुर पर लज्जा से सिमटी हुई कुलवधू की तरह भागी जा रही थी। बेतवा के ऊपर रात्रि की हवा इतने इत्मीनान से दिलासा सी देती हुई वह रही थी जैसे वह नदी को थपकी दे रही हो। वातावरण मे एक भीम, एक उनींदापन सा था जैसे सब कुछ सामान्य हो, वातावरण में एक भीम, एक उनींदापन-सा था जैसे सब कुछ सामान्य हो, जीवन की स्वाभाविक गति में स्वतः चलता हुआ··· प्रकृति बेतवा की तेजी पर गोया उसे समझा रही हो कि बेटी, धीरे बहो, इतनी तीव्रता बेकार है अंततः जहां पहुंचना है, वहां थोड़ी देर बाद भी पहुंचा जा सकता है पर बेतवा काल की भी नही सुनती, मां की बात पर कौन समर्थ लड़की ध्यान देती है ? बेतवा अपने द्रुत राग मे प्रवाहित हो रही थी और उछाल खाती मछलियो और जब

तब चहकते पक्षियों को अपने सूक्ष्म संकेत से आश्वासन दे रही थी, मस्त रहो और जियो। तुम्हें आदमी से रात में कोई डर नहीं, दिन में सावधान रहना, इस हत्यारे आदमी नाम के बहेलिए से।

"दादा ! राजनाथसिंह की पुलिस ने गुलाबसिंह को तड़पा-तड़पा के मारा, पूरा गिरोह तहस-नहस हो गया। इसका बदला लिया जाए।" दलेला ने शुरू किया।

जुझारसिंह ने देखा कि दलेलसिंह, अपने बाप डाकू गुलाबसिंह का एकदम प्रतिरूप है, वैसी ही मुख की छवि, वैसी ही चितवनि, वैसी ही चालढाल, अभी दूध भी नहीं छूटा होठों से और डाकू बनना पड़ा। पुलिस ने घर जला दिया, सब बरबाद हो गया, कहीं का न रखा। ठकुरानी गम में मर गई, बच्चे बेघरबार ननसाल में पल रहे हैं, मामा के टुकड़ों पर, भाइयों की पढ़ाई छूट गई, खेतीपाती बनिज-ब्योपार की तो बात ही क्या कहे, सत्यानाश हो गया। दलेलसिंह का कलेजा मुंह को आने लगा, हूक उठी और वह सिसकने लगा।

"दादा, आप बागियों की कमेटी के प्रधान हैं। राजनाथसिंह को मारे बिना भट्टी सी जल रही छाती का दाह नहीं बुझ सकता···दादा।"

"आपस की अनबन से अहीर और ठाकुर एक दूसरे की जड़ें काटते हैं। धानुकों की बातों में आकर मेरे पिता नेताजी ने, मानपुरा के भूपसिंह को उजाड़ा, उनकी मति पलट गई थी, दुरभाग्य था, लेकिन पुलिस ने अहीरों के साथ जो किया है, उसका बखान भी नहीं हो सकता। जब तक राजनाथसिंह, इस मुख्यमंत्री को मजा न चखाया जाएगा, यादवों की कलगी गिरी रहेगी·· दादा।"

अजबसिंह भी रोने लगा। दलेला और अजबा दोनों के भोले चेहरों पर आंसुओं की धार देख कर उस्ताद तसलीम खान का दिल भर आया—

"तुम बागी सरदारों के बेटे हो, अजीजो। इस तरह यतीमों की तरह रोते हो ? अल्लाह, पुलिस को गारत करे। वही हमें अपने जुल्म से बीहड़ में कूदने को लाचार करती है। बाबा-ए-बागी जमात ! दादा। आप खामोश क्यों हैं ? क्या इन नौनिहालों के खून के आंसुओं से आपका दिल पसीजा नहीं ?"

"अब कुछ बककुरो भी ठाकुर। मुझसे तो इन बच्चों का दुःख नहीं देखा जाता, बोलो न।" सुषमा नायिन ने जुझारसिंह को कोंचा। हम्मीरा कहने लगा—

"पुलिस ने हमारे काछियों को तो बेगनों की तरह भून डाला। वह छिनाल सवारी वहां क्या रही, पुलिस ने हमारा वंश ही मिटा दिया। ठाकुर, कुछ होना चाहिए। इस तरह तो बागियों का चिह्न ही मिट जाएगा। फिर रह क्या जाएगा ? बागी ही तो बीहड़ के राजा हैं।"

पंडित चूड़ामन डकैत तो थे ही, सगुन भी बिचारते थे और उत्तरप्रदेश के ब्राह्मण विधायकों और मंत्रियों से रिश्तेदारों के जरिए सूतडोरा भी जोड़े रहते थे। उन्होंने हवा को सूंघा। फिर मिट्टी उठाकर उसे चखा। आकाश की ओर देखकर किसी अदृश्य शक्ति को हाथ जोड़े। एक बार प्राणायाम सा किया और कहने लगा—

"ठाकुर। तुम्हें सकोच यह है कि मुख्य मंत्री ठाकुर है। उस पर ठाकुर का हाथ कैसे उठे ? यही बात है न ? तो सुनो, मुख्य मंत्री की कोई जाति नहीं होती। वह मुख्यमंत्री होता है, राजा। राजा यदि अत्याचार करे तो प्रजा को उसे दण्ड देना चाहिए और बागी ही प्रजा के सच्चे रक्षक हैं, सो राजा पर चोट होनी चाहिए।"

"कैसे ? कैसे चोट करोगे पंडित ? देख रहे हो, पुलिस का कितना दबदबा है।

उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान का पुलिसवल एक कमान के अन्दर काम कर रहा है···मुख्यमंत्री को मारना क्या तमाशा है? नहीं, कुछ और सोचो,"—जुझारसिंह ने सहमते हुए कहा।

"बाबा-ए-बागी! मैं खुदा को हाजिर नाजिर कर वादा करता हूं कि मैं लखनऊ में जाकर मुख्यमंत्री को शूट कर सकता हूं बशर्ते कि आप मदद करें।"

"उस्ताद। तुम मारे जाओगे और कुछ न कर पाओगे, बेकार···है और··· तुम्हारी यहां जरूरत है···कुछ और सोचो। तुम तो जासूसी करते हो उस्ताद, कोई भेद की बात बताओ।"

उस्ताद तस्लीम रहस्यभरी हंसी हंसे। वे चुपचाप उठे और पास ही चद्दर निकाल कर बिछाई और नमाज पढ़ने लगे। सुषमा जलभुन गई।

"ठाकुर! यह मुसल्ला बड़ा नौटंकीबाज है, लो, अब खुदा से सूफियागिरी करने लगा।"

सबके मुखों पर मुस्कराहट आई और वे उस्ताद की नमाजी उठक्क-बैठक देखने लगे। उस्ताद हथेलियां फैलाकर अल्लाहताला से गिड़गिड़ा रहा था और चद्दर पर औंधा होकर जमीन पर माथा रगड़ रहा था। काफी देर हो गई मगर उस्ताद इबादत में लीन रहा। सुषमा नायिन तस्लीम से चिढ़ती थी क्योंकि वह क्वांरी का प्रेमी और सलाहकार रह चुका था। तस्लीम के फकीरी नाटक से क्वांरी ने एक रात भड़क कर उसे गिरोह से भगा दिया था। उसके अपने गिरोह में थोड़े से डाकू थे। ताकत की कमी वह अपने सैय्यदपन से पूरी करता था, कभी भविष्यवाणी करता, कभी रमल बिछाता, कभी-कभी उस पर जिन्न आ जाता था। कहा जाता था कि एक जिन्न उसके वश में है और वह तस्लीम की ऐय्याशी के लिए हूरों को उसके पास लाता था। ऐसी ही किसी हूर को एक रात उसकी बगल में देखकर क्वारी ईर्ष्यावश बिगड़ गई थी।

सुषमा से उन्माद का नाटक नहीं सहा गया। वह बेचैनी में उठी और औंधे पड़े उस्ताद के नितम्ब पर एक भारी धौल जमाकर बोली—"बन्द करो यह भड़ैती। बहुत हो गया। मैं असलियत जानती हूं।"

उस्ताद धम्म से चद्दर पर गिर पड़े और उनकी आंखें चढ़ गईं। वह चकरघिन्नी की तरह चक्कर खाने लगे और कुरान शरीफ की आयतें गलत-सलत बोलने लगे। उनके मुंह से फेन निकलने लगा और वह यों ऐंठने लगे गोया उनका दम निकल रहा है। घबरा कर बागी उनके आसपास झुक आए और देखने लगे कि यह क्या हो गया?

उस्ताद अब बैठ गए और झूमने लगे। वह इतनी तेजी से सिर को घुमा रहे थे कि ताज्जुब होता था। देर तक झूमने के बाद उस्ताद ने एक किलकारी भरी और उनके माध्यम से जिन्न बोलने लगा—

"ठाकुर! देखो···देखा? सामने देखो, अंधेरे के पर्दे पर देखो, गौर से देखो, हां-हां घूरो···वह रहा, आ जा···आ आ···। आ जा भई, आ···आ···आह! आ जा, तशरीफ ला, तस्वीरे दुश्मन, पर्दे पर आ, आ जा···लो आ गई।"

आंखें बंद किए उस्ताद ने हाथों से हवा में से कुछ पकड़ा और ऊपर झुकी सुषमा के हाथ में रखकर मुट्ठी बंद कर दी।

"देख शहजादी! हूर-ए-बहिश्त, परी रूह! खोल मुट्ठी वरना तेरी हो जाएगी छुट्टी—हां, हां, खोल, खोल जल्दी।"

सुषमा ने मुट्ठी खोली। उसमें एक कागज था। बागी उत्सुकता में बावले हो रहे थे। सुषमा ने कागज की पुर्जी ठाकुर को दे दी। ठाकुर ने दलेला को।

"पढ़, तू पढ़ा-लिखा है, क्या लिखा है ?"

दलेला ने टार्च की रोशनी में पढ़ा।

"राजनाथसिंह के बड़े भाई जज गजराजसिंह, अपने परिवार के साथ शिकार करने आए हैं। वे जिला जज बांदा के मेहमान हैं।"

सुषमा यह समाचार सुन उस्ताद के सिर पर हाथ फेरने लगी और उसने नदी से पानी लाकर उस्ताद के मुंह से लगाया। जिन्न उतर रहा था अतः उस्ताद ने झूमना बन्द कर आंखें खोल दीं। आंखें सुर्ख हो रही थीं और उस्ताद निचुड़े से लग रहे थे, थके हुए और कमजोर—

"मैं कहां हूं, क्या हुआ ?"—यह कहकर सारा पानी गटागट पी गए।

"अब बनो मत मियां। मैं जानती हूं, तुम्हें कल यह खबर बांदा में मिली होगी। तुमने कागज पर लिख ली होगी। इस ड्रामे के बिना भी तुम उसे बता सकते थे। यह तुम्हारे जिन्न की करतूत नहीं है, तुम्हारी जासूसी है। मैं तुम्हारी नस-नस जानती हूं। नक्काल कहीं के। क्या स्वांग रचा है, वाह उस्ताद !"

उस्ताद खिसिया गए लेकिन उन्होंने सुषमा को अपने पास बुलाया और उसके कान में कहा—

"तू जिन्नात में यकीन कर अजीज़ा ! ए परी रूह। वरना तू गिरफ्तार हो जाएगी।"

"खामोश। बगुलाभगत, झूठे। बागी या तो गिरफ्तार होगा या मरेगा। तू डरा रहा है।"

निराश बागियों में उस्ताद की खबर से आशा का संचार हुआ। ठाकुर जुझारसिंह इस नोकझोंक से हंसने लगे। उन्होंने सुषमा को रोका कि वह उस्ताद की खिल्ली न उड़ाए। कौन जाने, वह पहुंचा हुआ हो, उसकी बद्दुआ लेने से क्या लाभ ? सुषमा हंसते हुए अलग जा बैठी और उस्ताद को बनाती रही।

"तो···तो क्या फैसला हुआ ?"

"फैसला क्या होना है ? राजा न मिले तो राजा का भाई सही। राजा ने हमारे लोगों को मारा, हमीं जानते हैं, कितने दुखी हैं। अब राजा भी दुख झेले। उसे पता चले कि भाई-भतीजे मरने से कितनी तकलीफ होती है"—चूड़ामन पंडित ने निर्णय कर दिया।

"लेकिन, इससे तो राजा गुस्से में बागियों को बीन-बीन कर मरवा देगा। अभी तक पुलिस रुपए खाकर या जाति-जमात का ख्याल कर बागियों को छोड़ जाती थी लेकिन इस घटना से तो···।" ठाकुर जुझारसिंह लड़खड़ाए।

"अब रहने दो ठाकुर, ज्यादा सोचना, हिसाब-किताब फैलाना बागी को शोभा नहीं देता। यह सुनहला अवसर है ठाकुर। कौन क्या करेगा, यह बोलो।" पंडित चूड़ामन ने हस्तक्षेप किया।

"धां गुलाबसिंह की लाश मेरे ध्यान में फड़क रही है तो भी मैं इस हमले में भाग नहीं लूंगा। जज निर्दोष है···लेकिन, आप लोग कुछ करना चाहें ··तो मैं रोकूंगा नहीं।" ठाकुर बोले

"ठीक है, ठीक है। उस्ताद जासूसी करें। जज कार से शिकार पर जाएंगे।

उनकी टोह लें और हमे सकेत दें। हम आगे का काम देख लेंगे।"

सुषमा ने यह कहकर पंडित चूड़ामन की तरफ देखा। पंडित ने रहस्यभरी स्वीकृति में सिर हिलाया—"बिल्कुल ठीक। कल हम राजा को पाठ पढ़ा देंगे। दलेलसिंह और अजबसिंह गोली चलाएगे और हम उनकी रक्षा करेंगे। ठीक है?"

"ठीक, हम उन्हें भून देंगे।"

"लेकिन, उनके साथ पुलिस भी तो रहेगी?"

"पुलिस क्या कर लेगी, ठाकुर? थोड़े से आदमी होंगे। हम हथगोलों का इस्तेमाल कर सकते है।" वैसे आशा यही है कि पुलिस डरेगी। कौन सिपाही जान की बाजी लगाता है? हम सब देख लेंगे।"

'जज के साथ उनके बच्चे है। एक को पकड़ कर लें और राजा से रुपए वसूल करें तो मजा आ जाए। इसमें रक्तपात भी न होगा।" ठाकुर ने सलाह दी मगर इसमें तो और अधिक खतरा समझा गया और सीधी मुठभेड़ का निर्णय पक्का रहा। उस्ताद ने आखे मूद कर कुछ मंत्र-सा जपा। फिर बोला—

"सुषमा परी। मेरी राय यह है कि जंगल की शिकारगाह के आसपास के बीहड़ में हम आज ही छिप जाएं और मौका देख लें। कल सुबह तो यह हो नही सकता, क्या राय है?"

"ठीक है, मगर आप सब जाएं, ठाकुर को क्यों भटकाओगे रात में?"—सुषमा ने ठाकुर के हाथ को सहलाया।

"यह भी ठीक है। सुषमा रानी तुम ठाकुर साहब को सुलाओ, हम सब जाते हैं और अब बदला लेने के बाद अड्डे पर भेंट होगी, वहीं राधाकृष्ण के मंदिर पर। तुम यहा राधा-कृष्ण की लीला करो तब तक।"

सुषमा ने मजाक में पंडित चूड़ामन की ओर बन्दूक तानी। सबने अट्टहास किया।

डकैत बंदूकें कंधे पर रखकर अंधकार में यमदूतों की छाया से चलने लगे। बेतवा की धारा में पानी की एक लहर ने 'छपाक्' कहा और फिर सब शान्त हो गया। बेतवा नदी अपने अंदरूनी दूरदर्शन पर अतीत के चलचित्र देख रही थी। उसने देखा कि दिल्ली से लाखों सैनिकों की चतुरंगिणी सेना ने बुंदेलखण्ड पर हमला किया था। पृथ्वीराज चौहान एक दांत वाले विराट हाथी पर बैठे हुए कविराज चन्द्रबरदायी से बतिया रहे थे और चामुण्डराय के सेनापतित्व में धांधू, ताहिर, नूरखां पठान (भूरा), पृथ्वीराज के चचा कान्हराय चौहान, आदि अपनी-अपनी सेनाओं से महोबा के बावन गांव को घेरे हुए हैं। बेतवा ने, महोबा के राजा परमाल की रानी मल्हना की सिसकी सुनी और देखा कि वह जगनेरी के जागन (जगनिक) को रूठे हुए आल्हा-ऊदल को मनाने के लिए कन्नौज भेज रही है और जागन, हरनागर घोड़े पर सवार कनवज जा रहे है। बेतवा ने उच्छ्वास छोड़ा।

दृश्य बदला। देखा कि आल्हा-ऊदल पृथ्वीराज के सामने डटे हैं। [illegible] हाथी को जयचन्द के भतीजे लाखन राणा (लक्ष्मण) की [illegible] रही है और लाखन राणा मीना खोले हौदे मे खड़े है कि चौहान [illegible] लेकिन चन्द्रवरदायी रोक रहे हैं कि यह अनर्थ है। सेनाएं [illegible] एक-दूसरे को काट रही हैं। ऊदल की ललकार साफ सुनाई पड़ती है

"सदा तुरंय्या ना वन फूलें यारो सदा न सावन होय। [illegible]

धरिहौ बार-बार अवतार। पानी कैसो बलबूला है जो काऊ छन जैहे बिलाय, लाज महोवे की रख लेवो, चाहें तन धजी-धजी उड जाए। मोहरा मारो पिर्थीराज को चौहानन को देय गिराय, राय चौंडिया को सिर काटो, और मूरा को चूर मिलाव। धोखा कीन्हो पिर्थीराज ने, घेरे घाट बेतवा क्यार, बीन-बीन कें दुस्मन मारो जैसे खेती लुने किसान, डीकन ऊदल रसबेंदुल पै, कलहा दस्सराज को लाल!"

दृश्य फिर बदला और बेतवा ने अपने जल मे रक्त की धाराओं के मिलन से ग्लानि और पश्चाताप महसूसा। उसने देखा कि पृथ्वीराज से जूझते हुए रण की अग्नि मे महोवे के सभी वीर सामत मारे गए और वह स्वय भी घायल होकर गिर गए। संयमराय ने अपना मास काट-काट कर चीलो को खिलाया अन्यथा वे अचेत चौहान राजा को खा जाती। बेतवा ने यह भी देखा कि ऊदल की मृत्यु के बाद जंग और जीवन को व्यर्थ समझकर आल्हा धनुष तोड़कर और तलवार के टुकडे कर फेंक रहे हैं और आसुओं से भरे चेहरे को लिए हुए सन्यास लेकर वन को जा रहे है और जो मिलता है, उससे पूछते है, "क्या उसने भाई उदयसिंह को देखा है, मैं उसी को ढूंढने जा रहा हूं।"

वेदना से बेतवा का हृदय फटने लगा। अमर आल्हा अभी भी भटक रहे है। उन्हें न ऊदल मिलते हैं, न उन्हें काल ग्रस्त करता है। वह प्राय: बेतवा के पास आकर बैठते हैं, सूनी आखों से दुःख की मूरत बने ऊदल की प्रतीक्षा करते हैं। बेतवा ने सोचा—

'युद्ध कितना घातक और व्यर्थ कर्म है! कितना रक्त बहता है, कैसे-कैसे मनोहर-अलबेले लोग मारे जाते है, कैसे कलरव करते, हरे-भरे परिवार उजड़ जाते हैं और अन्त मे दोनों पक्ष हारते हैं। युद्ध मे कभी किसी की विजय नही होती। पृथ्वीराज ने सिरसा के वीर मलखान और महोवा के पुरशिरोमणि ऊदल को मार डाला, महोबा लूट लिया। यदि यह आपसी युद्ध न होता तो मुहम्मद गोरी के विरुद्ध जंग मे आल्हा-ऊदल-मलखान क्या पृथ्वीराज को मरने देते? इस देश के विनाश के मूल में कलह है।'

नदी बेतवा अनमनी हो गई और उसने अपना भीतरी दूरदर्शन बन्द कर दिया। उसने देखा कि वह अतीत के रक्त रंजित दृश्यो को सह नही पाएगी। कितना सहा है उसने! क्या-क्या देखा है! विधाता भी विचित्र है जो उसने प्रकृति को अवाक् बनाया। काश, वह बोल सकती तो इन सिरफिरे डकैतों को रोकती कि तुम क्या करने जा रहे हो? इससे क्या बनेगा? क्यो मनुष्य होकर दानवलीला कर रहे हो? तुम्हारा कल्याण नहीं होगा डाकुओ, लौट जाओ।

बेतवा ने बोलना चाहा पर वह तडप के रह गई। लहरो के बहाने उसकी पसलियो मे मरोड उठी और अपने पानी से, अपने को पोटती और वेदना मे बिलखती हुई वह बहती रह गई।

...शिकारगाह को चारों तरफ से घेरकर कुछ दूरी बनाए रखकर बागियों ने, दो-दो, चार-चार के झुण्डों मे झाडियों और दरख्तो पर रात बिताई। दलेला और अजवा को आमेटगारा के पास रखा गया ताकि वे निशाना ले सकें। गजराजसिंह जज के लिए मौत का फन्दा तैयार हो गया था।

किन्तु जुझारसिंह के पेट मे इस षड्यन्त्र से खलबली मची हुई थी। उन्होने राधा-कृष्ण मंदिर की ओर यात्रा न कर, अपने साथियो को कहा कि वे जहा चाहें, चले जाए। वे स्वय किसी काम से जा रहे हैं लेकिन सुषमा ने उनकी एक न सुनी। लाचार उसे साथ लेना पड़ा। जुझारसिंह का मुख्य धवल, गिरोह का शब्दवेधी गोलीचालक

अर्जुनसिंह भी हठ कर ठाकुर के साथ हो गया। अर्जुन का नाम तो कुछ और था मगर आवाज पर गोली मार देने की चतुराई के कारण सब उसे 'अर्जुन' कहते थे।

"ठाकुर, कहा चल रहे हो ? कुछ बताओ तो सही।" सुषमा ने रहस्यमय स्वर में पूछा।

"इसी से मैं अकेला जाना चाहता था। तुम्हारे पेट में बात पचती नही। तुम चुपचाप साथ नही चल सकती क्या ? मौका आने पर बता देंगे "यह भी हो सकता है कि मौका आए ही नहीं। सावधानी के लिए जा रहे है, वही शिकारगाह पर। ' मुझे इन लौंडो—दलेला और अजवा पर भरोसा नही है। वे बदले की आग में जल रहे है, और फंस सकते है, और मुझे इस खुराफाती पंडित पर क्रोध आ रहा है।"

"तो इसमें रहस्य की बात क्या थी ? आप गिरोह को भी साथ क्यों नही ले लेते ?"

"ज्यादा बावा, मठी उजाड़। मैं अकेला ही देखरेख के लिए जाना चाहता था, उनसे छुपकर परन्तु अर्जुन और तुम माने नही'''अच्छा, चलो वही देखेंगे, गिरोह को जाने दो।"

सुबह नौ बजे जज साहब की कार शिकारगाह पर पहुंच गई। आगे पीछे पुलिस जीपें थी, जिनमें कुल मिलाकर दस-बारह सिपाही और दो छोटे दरोगा थे। सब-इंस्पेक्टर पर रिवाल्वर थे और सिपाहियों पर थ्री नॉट थ्री बंदूकें थी। जज साहब सोचते थे कि उनसे किसी को क्या दुश्मनी है अत: वे पुलिस को बेकार का झमेला मान रहे थे। उनके इस रुख से पुलिस तत्पर नही थी यों वह डर रही थी कि कही कुछ हो न जाए अन्यथा राजा मुख्यमंत्री उनकी चपरास रखवा लेगा। वह एक आख से सतर्क और एक से सहज थी।

"डैडी। आज मैं गोली चलाऊंगा।"

"नही पापा। मैं पहली मार करूंगा।"

जज साहब के साथ दो बच्चे थे। ठकुरानी साहिबा भी साथ आ. थी। बडा बच्चा बारह-तेरह वर्ष का था। वह इतना सुन्दर था कि उसे देख कर मोह उपजता था। वह नैनीताल के एक पब्लिक स्कूल में पढ़ता था और फर्राटे की अंग्रेजी बोलता था। दूसरा आठ-नौ वर्ष का नन्हा फरिश्ता-सा लगता था। उसके होठों से दूध-सा टपकता था और चेहरे पर शरारत भरी दिव्य मुस्कान खेलती थी। दोनों शिकारी वेष मे थे, जोधपुरी कोट और बिरजिस। जज साहब भी इसी ड्रैस में थे। रानी साहिबा अवश्य साधारण वेषभूषा में थी। उनके मुख पर कुलीन-शालीनता थी और व्यस्क हो जाने पर भी उनमें सौन्दर्य था'''वह भव्य थी।

शिकारगाह में नाश्तापानी कर न्यायमूर्ति की शिकारपार्टी जीप मे बैठ गई। सब-इंस्पैक्टर जीप मे तथा सिपाही पैदल साथ चले, कभी आगे, कभी बगल मे, कभी पीछे। वनपाल अधिकारी तथा शिकार कराने वाले कर्मचारी ने उनको रास्ता दिखाया।

जाहिर है कि इस बंदोबस्त मे डाकू कुछ कर नही सकते थे और साहस करते तो वे भी मारे जाते। इसलिए छिपे बागियों ने तै किया कि इन्हें वापस आने दो। भोजन के बाद सब आराम करेंगे और पुलिस के लोग भी शिथिल होकर इधर-उधर लम्बलेट हो जाएगे। तब प्रहार करना चाहिए।

दोपहर दो बजे तक शिकार होता रहा। बच्चों ने भी फायर किए और एक-दो

"ओह। बोसा नही लिया उस्ताद ? क्या माशूका थी, मार डाला उसे"
हः हः हः।"

तस्लीम ने उछल कर सुषमा पर छलाग लगा दी मगर वह उसकी पकड़
कर मंदिर के चबूतरे पर भागी। अब आलम यह था कि आधी रात के वक्त सुषम
हिरनी सी दौड़ रही थी और उस्ताद बावले से उसे पकड़ने के लिए परेशान थे।
हस रही थी, बना रही थी और उस्ताद उसे मीठी गालिया दे रहे थे, "
महबूबा। तू दोजखनशीन हो।"

अततः उस्ताद, उस्ताद थे। उन्होने अचानक अपने को गिरा दिया जै
बेहोश हो गए हो। वह आह भरने लगे गोया उन पर दिल का दौरा पड़ गय
सुषमा घबरा गई। तस्लीम बागियों का जासूस था और ठाकुर उसकी कद्र कर
उसकी मदद भी की जाती थी। वह सचमुच उस्ताद था। वह मर गया तो ठाकुर
की चमडी उधेड़ देगा। वह खौफ खाकर दिल को पकड़े काखते-कूखते तस्लीम के
झुक गई और पास बैठकर उसके दर्द से खिचे हुए मुख को हेरने लगी। उस्ताद अ
अपना बनावटी हादसा भूल गया और उसने अपने पर झुकी हुई सुषमा को ता
बगल मे दबाकर उसका प्रगाढ चुम्बन लिया। सुषमा ने बहुत जोर लगाया लेकि
वश नही चला तो उस्ताद को काट खाया और बंधन शिथिल हो जाने पर वह
खिलाती हुई भाग गई। उस्ताद ने वजनी गाली दी और सीत्कार करने लग गया
मिर्चें चबा ली हो।

उस्ताद सुषमा को गरिया रहा था और वह हंस-हंस कर दीवानी हुई जा
थी।

25

भूतनाथ को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का धिक्कार भरा पत्र मिला, जिससे वह ब
सतप्त हुआ। राजनाथसिंह के भाई और भतीजे को ही डाकुओं ने मार डाला। भूत
को लिखा गया था कि वह सब काम छोडकर डाकू-उन्मूलन की मुहिम मे मदद दे
बवारी को रोके कि वह लेमही के ठाकुरो के कत्ले आम की प्रतिज्ञा से बाज आए। लेकि
भूतनाथ के सम्मुख डाकुओ के झगड़ो और लूटपाट से होने वाली हानि की तुलना
पूरे देश का भविष्य था। मानव भूगोल विशेषज्ञ मिस्टर होम्स, भारतवर्ष के विघटन
सारा नक्शा उसे समझा चुके थे और भूतनाथ को अमरीकियो की गुप्त सेवा मे विधि
दीक्षित कराया जा रहा था। उसे अब तक विदेश भेजा जा चुका होता मगर उसे
बढा कर, पंजाबी पढ़ा कर, बाकायदा सिक्ख बनाने की ट्रेनिंग दी जा रही थी
पंजाब के आतककारी तत्व उसे सिक्खधर्म की शिक्षा दे रहे थे, आचार-विचार सम
रहे थे। भूतनाथ ने उनसे सिक्खधर्म स्वीकार कर अमृतप्रसाद चखने की इच्छा प्रकट
थी अतः वह गुरुवानी का पाठ करता और गुरुद्वारा सीसगंज मे रोज जाता। उसके
को बदल कर उसे नया नाम मिला था, करनैलसिंह सानेहवाल, लुधियाने जिले मे
गाव का नाम है, जहा भूतनाथ कुछ दिनो रह चुका था।

भूतनाथ के केश बढ़ रहे थे। उन्हें वह रोज गिरी का तेल पिलाता और दही

दाढ़ी धोता। कड़ा पहनकर जब वह तहमद, कुर्ते और केसरिया साफे और नोंकदार जूते पहन कर निकलता तो सरदारों में कर्नल सा ही लगता, लम्बा, मजबूत और रौशन ख्याल। वह हरदम गुरुवानी बुदबुदाता रहता और बात-बात में गुरु गोविन्दसिंह के वीरता भरे वाक्य बोलता। उसने सिक्ख इतिहास घोंट डाला और वह समझने लगा कि आतंककारी सिक्खो के सामूहिक मन मे किस तरह, किस सीमा तक स्वतंत्र खालसा राज्य का मिथक जमा दिया गया है। अतिवादी और हिंसा के लिए कटिबद्ध सिक्ख को लगता कि सामने गुरु गोविन्दसिंह खड़े हैं और उनकी कलाई पर खूंख्वार बाज बैठा हुआ है।

ग्रेटर कैलाश में कालिका के मंदिर के क्षेत्र मे भूतनाथ को अब एक एकांत में बने बंगले में ठहराया गया था, जिसमें सभी सुविधाएं थी। यही उसके सिक्खीकरण की ट्रेनिंग चल रही थी और यही वह हाथ में उत्तर प्रदेश के 'राजा' का पत्र लिए सोच रहा था कि वह अमरीकियों के कवच में रहे या बागी क्षेत्र में जाकर वहां के हालात को देखे? बहुत सोच-समझ के बाद उसने तै किया कि वह देश की सुरक्षा के काम के लिए जान लड़ाएगा। डाकुओं को सरकार मार डाले या डाकू कुछ और वारदातें कर डालें, इससे क्या फर्क पड़ेगा…? लेकिन क्वारी की कठोर मुद्रा के भीतर 'भोला भाई' के लिए उपजी ममता का वास्ता था। क्वारी की वह बहिन की छवि बार-बार उसे अभिभूत करती परन्तु वह हर दफा उसे ध्यान से पोंछ देता था।

बंगले की बगीची में भूतनाथ बेचैनी से टहलने लगा। सूर्यास्त का समय था और उसके धर्मशिक्षक आज गैरहाजिर थे। उसने मानसिक तनाव को कब्जे में करने के लिए गुरुवानी का जप किया, गुरु नानक की शान्त प्रशान्त अलौकिक छवि को अंत:करण में भरा मगर हर बार उनकी बगल में क्वारी आकर खड़ी हो जाती। भूतनाथ अंतत: परेशान होकर बंगले में गया और बरामदे में आरामकुर्सी पर बैठ गया। उसने अपने सिर को दोनों हाथों से दबाया तो नौकर ने कुशल पूछी। उसे कुछ लाने के लिए कह कर भूतनाथ मन की रोकड़ पुन: गिनने लगा। उसकी समझ मे यह नही आ रहा था कि इस घटनाचक्र से निकल कर वह बीहड़ में कैसे जा सकता है?

नौकर ने भूतनाथ के सामने व्हिस्की और बर्फ रखी। आमलेट बना लाया और अदब से बोला—

"साहब, मेम साहब को फोन कर दूं क्या?"

भूतनाथ ने एक बड़ा घूंट भरा। आमलेट का टुकड़ा खाया और सोचता रहा। अन्त में उसने नौकर से कहा कि वह मेमसाहब को नही, मैरी से बात कराए।

नौकर भागा। उसने नम्बर मिलाए और सम्पर्क होने पर साहब को बुलाया।

"हलो! मैरी? मैं सानेहवाल बोल रहा हूं।"

"ओह माय गोस्ट! आय एम ग्लैड यू कॉल्ड बट…बट व्हाय?—ओह भूत। मैं प्रसन्न हूं कि तुमने फोन किया पर क्यों?"

"कैन यू कम हियर मैरी?—क्या तुम आ सकती हो यहां?"

"क्यों, रोजी नही है वहां? मिस्टर गोस्ट आय डोन्ट वान्ट टू बी गो थ्रो इट अगेन…मैं दुबारा उस सब मे पुन: नही गुजरना चाहती।"

"फारगेट इट मैरी। टुडे आय एम सैड, परहेप्स टू मच सैड एण्ड आय डोंट नो व्हाय, कैन यू कम माय डियर?—उसे भूल जाओ। मैं आज उदास हूं, बहुत अधिक, क्या तुम आ सकती हो?"

"नो, आय विल रादर नॉट'''नहीं, मैं नहीं आना चाहती।"

"ओह मैरी, यू विल नॉट बी डिस्एपोइंटिड। आय वांट टू टाक टू यू'''रोज़ी विल नॉट बी हियर टु नायट। शी इज़ बिज़ी समव्हेयर इन हर वर्क'''ओह, मैरी। तुम निराश नहीं होगी। मैं तुमसे बात करना चाहता हूं। रोज़ी यहां नहीं आएगी। वह अन्यत्र व्यस्त है।"

"ओ. के. आय एम कमिंग'''बट डोंट डिस्एपोंइंट मी लाइक इन द ताज होटल—ठीक है, मैं आ रही हू पर ताज होटल में उस रात की तरह मुझे निराश नहीं करना।"

"प्रामिस, कम हनी।"

"हनी" सम्बोधन मैरी के मन की कड़वाहट पर शहद की चाशनी थेंपने लगा। उसने अपनी सबसे बढ़िया ड्रेस पहनी और कार से एक घंटे के भीतर आ गई। भूतनाथ ने मदिरा की मस्ती में उसका स्वागत किया। उसके माथे पर चुम्बन लिया, उसके कंधे को घेर कर उसे प्यार से बंगले मे लाया और बैठक में जम गया। जाम बनाकर उसने मैरी को दिया। बंगले के सूनेपन को भाप कर उसने पूछा कि क्या यहां और कोई नहीं रहता?

"कोई नहीं, लोग आते हैं और चले जाते हैं। तुम तो जानती हो, मुझे सिक्ख बनाया जा रहा है और मैं अब कर्नलसिंह सानेहवाल हूं, भूतनाथ नहीं और जब मैं भूत नहीं रहा तो हम अपने सम्बन्ध नए सिरे से शुरू कर सकते है।"

"बट'''मगर रोज़ी से आप क्या ऊब गए या उसके साथ भी आपके कूटनीतिक रिश्ते थे?"

"मैरी, विश्वास करोगी? विल यू बिलीव मी?"

"व्हाय नॉट? बट यू नो एवरीथिंग इज़ फेयर इन लव एण्ड वार—क्यों नहीं, पर प्रेम और युद्ध में सब जायज़ है।"

"मैं रोज़ी को चाहता हू, *आय लव हर नाउ बट बिलीव मी,* शी इज़ स्टिल ऑनली ए फ्रेण्ड, नथिंग एल्स।—मैं उससे प्रेम करता हूं पर मेरा विश्वास करो, वह अभी भी एक मित्र मात्र है और कुछ नहीं।"

"उसने तुम्हारी जान बचाई, तुम उस अहसान से उसके हुए नहीं? आर यू ऑनली अ फ्रेंड टू हर? अभी भी तुम उसके सिर्फ मित्र हो?"

"य: श्योर, वी आर नॉट इन्टीमेट इन दैट वे मैरी बिलीव मी। आय कान्ट मैरी रोज़ी एज आय एम लायक अ क्रायस्ट हू इज़ केरीइंग हिज़ ओन कॉस'''निश्चय ही, हम नारी-पुरुष के अर्थ मे एक नहीं हुए। मैं रोज़ी से विवाह नहीं कर सकता क्योंकि मैं ईसामसीह की तरह अपनी सूली स्वयं ढो रहा हूं।"

"डोन्ट गिव मी दैट। यू ब्लफर, यू चार्मर। डोन्ट गिव मी दैट—तुम धोखेबाज़ हो, जादूगर।"

"मैरी, माय डियर फ्रैण्ड बिलीव मी, रोज़ी इज़ अ ग्रेट फ्रेंड, वैरी क्लोज़ ब ऑनली अ फ्रैन्ड, बिलीव मी—विश्वास करो, रोज़ी एक मित्र है, महान मित्र, बस।"

"दैन। यू आर अ वैरी क्रुअल परसन। आर यू अ विक्टोरियन, अ प्यूरिटन ऑ व्हाट? तब तुम निर्दय हो। तुम क्या विक्टोरियन युग के हो, कोई नैतिकतावादी, सयमवादी?"

"नो आय एम नॉट'''नो, मैं नहीं हूं'''बट आय'''आय डोंट वाट टू टे

एडवान्टेज आफ माई पोजीशन"'माय इन्फ्लुएस ऑन हर। आय थिंक दैट विल गो टू यू. एस. ए. सून, आय वांट टू गिव रोजी एनफ टायम"'लेकिन मैं रोज़ी पर अपने प्रभाव या पोजीशन का इस्तेमाल नहीं करना चाहता। हम लोग शीघ्र ही अमरीका भेजे जाएंगे। मैं चाहता हूं रोज़ी को सोचने का काफी वक्त मिल जाए।"

"ओह। माय गोस्ट, दैन यू आर वैरी सेंसिबिल परसन, इन्डीड यू आर।—ओह भूत, तब तुम समझदार व्यक्ति हो, यकीनन।"

"पता नहीं, मैं क्या हूं, आय डोन्ट नो। बट मैरी, व्हाय आर यू जैलस विद रोज़ी ? लेकिन तुम रोज़ी के प्रति ईर्ष्या क्यों रखती हो ?"

"बिकाज आय कुड नॉट हुक यू, लायक हर"'क्योंकि मैं तुम्हें वशीभूत नहीं कर सकी, रोजी ने कर लिया।"

भूतनाथ अबकी बार ठठा के हंसा।

"मैरी। रोज़ी इज एन एंजिल, शी इज रियली अ रोज़ फ्लावर, इन्नोसेंट, प्योर एण्ड ट्रान्सपैरेण्ट"'रोज़ी फरिश्ता है। वह गुलाब के पुष्प की तरह है, भोली, शुद्ध और पारदर्शी।"

"एण्ड मी ?…और मैं ?"

"मैरी। यू आर नाट अ चाइल्ड लाइक रोज़ी। यू आर मोर अटरैक्टिव इन अ वे दैन हर, मोर सोबर एण्ड डीप बट व्हाट इज इन द डेप्थ, यू टैल मी टुडे—मैरी, तुम रोज़ी की तरह बच्ची नहीं हो। तुम उससे अधिक आकर्षक हो, कम चंचल और गहरी। उस गहराई में क्या है ?"

"मिस्टर गोस्ट, तुम्हारा मन रोज़ी के बचपने पर मुग्ध भी होता है और जब तब दूर भी जाता है। वह समर्पिता है, मैं सावधान लगती हूं तुम्हें, यही न ?"

"वाह यही, बिल्कुल यही। मैरी तुम मन को पढ़ती हो, ब्रेवो, लेकिन तुम बताती क्यों नहीं कि तुमने क्या ऐसा जाना है जो मुझे जानना चाहिए ?"

"आय डौन्ट नो मिस्टर गोस्ट, बट व्हाट कैन आय डू ? यू आर फार अहैड नाऊ"'मैं नहीं जानती पर मैं क्या कर सकती हूं ? तुम तो बहुत दूर निकल चुके हो ?"

"लेकिन तुम मदद कर सकती हो। कोई खतरा हो, कोई चक्कर चल रहा हो तो संकेत दे सकती हो। आखिर हम मित्र हैं, नहीं ?"

"यकीनन हैं, क्यों नहीं। यः वी आर रियली गुड फ्रैण्ड्स बट ऑनली फ्रैण्ड्स"' लेकिन हम सिर्फ मित्र ही तो हैं ?"

दोनों खिलखिला कर हंस पड़े। मैरी दो-तीन डोज व्हिस्की ले चुकी थी और उसने बातचीत के प्रवाह में कुछ खाया भी नहीं था। भूतनाथ ने कहीं बाहर डिनर का प्रस्ताव किया लेकिन मैरी ने मना कर दिया। उसने कहा—

"नो मिस्टर गोस्ट नाट टुडे"'टुडे देयर इज अ डेंजर"'आज नहीं, आज खतरा है।"

"व्हाट ? खतरा और भूतनाथ को ?"

"क्यों, उस रात रोज़ी ने तुम्हें बचाया था, आज मैं बचाऊं, क्यों यही न ?"

"वह तो एक संयोग था, मैरी"'और मुझे बचा भी लो तो बुरा क्या है, मुझे बचाना नहीं चाहती क्या ?"

"क्यों नहीं ? पर संयोग पक्ष में न पड़ा तो ? और मैं रोज़ी की तरह चास नहीं ले सकती। तुम यहीं रहो। नौकर खाना बना देगा, नहीं ?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं,"'किन्तु कुछ हवा लेते, दिन भर गुरबानी रटते बोर हो

गया। जो मैं नहीं हूं वह बनना पड़ रहा है।"

"लो पियो मिस्टर गोस्ट और अपने को भूल जाओ। क्या तुम कभी अपने क नहीं सकते? कभी नहीं भूले? आज भूलो अपनी खुदी को, अपने भंवर को, लो पि

मैरी ने पैग बनाए और नौकर को बुलाकर डिनर का आर्डर दिया। नमकीन और सलाद दे गया और सोडा-बर्फ का प्रबन्ध कर किचिन में खाना चला गया।

"मैरी, माय डियर···मेरी एक समस्या है।"

"क्या?"

"मुझे बीहड़ मे बार-बार वह आपकी मिस कैरी—क्वांरी—फुलवा बुला है···मुझे चारों तरफ 'भोलाभाई,' 'भोलाभाई' शब्द सुनाई पड़ रहा है। इन दु आवाहनों से मैं परेशान हूं" मैरी, वह डकैतिन, वह जंगली जानवर सी दया-ममता बदले की आग मे तप्त बावली क्वारी याद आ रही है। मैरी, तुम हिंसक पशु आसक्ति को जानती हो न? मान लो, तुम एक बाघिन पाल लो तो वह कितना चा तुम्हे, कितना अधिकार रखेगी तुम पर। यदि तुम जरा भी उसकी उपेक्षा करो, भूलना चाहो, किसी और पर ममत्व उड़ेलो तो वह तुम्हारी जान भी ले सकती बाघिन हिंसक होती है न, दूसरे के रक्त-मास पर पलती है, कितनी सहजता से वन्य अपने शिकार को चीथ डालता है और खा जाता है, कितना प्रेम करता है। बस, बागी भी ऐसे ही बाघ है और यह क्वारी, वह तो नरभक्षक है, उसकी घृणा और म दोनों भीषण हैं, है न?"

"य: अवश्य हैं और मुझे लगता है कि मुझे भी मिस कैरी बन जाना चाहिए' मुझे यह भी महसूस हो रहा है, मिस्टर गोस्ट कि तुम किसी बाघिन से किसी जंगली जी से ही प्रेम कर सकते हो या फिर उसके दूसरे सिरे पर जाकर रोज़ी जैसी किसी बच्च से। तुम सब जगह निष्पापता खोजते हो, मिस्टर गोस्ट। तुम सोचते हो, बागियों क सरकार और समाज ने जंगली बनाया, अतः उनकी नृशंसता—क्रूअलिटी, उनकी गंदगी उनकी दरिन्दगी तुम्हें उनकी नेचुरलनेस—प्राकृतिकता लगती होगी। वे तुम्हें निरप राध, रूसों के खूंख्वार बच्चों से जान पड़ते होंगे, जिन्हें समाज ने प्रकृति की गोद में खदे दिया है। नहीं?"

पहली बार भूतनाथ मैरी से प्रभावित हुआ···वाह! क्या समझ है···सचमु डाकू क्या बिगड़ैल बालक नहीं? निश्चय ही वे यही है, विकृत बालक-बालिकाएं" मैरी में मसीह की माँ मदर मैरी की ममता है, तभी वह समझ सकी है।

"मैरी ''माय डियर···तुममें मदर मैरी का वात्सल्य भरा हुआ है और वात्सल् के बिना मनुष्य मात्र को शिशु रूप मे कोई नहीं देख सकता। तुमने सुना हो शायद, हमारे देश में एक सूरदास नाम के कवि हुए है। उन्होंने वात्सल्य के सागर बहा दिए हैं, 'सूर सागर' लिखा है। उन्होंने, उनके साथियों ने, उनके गुरु वल्लभाचार्य ने यही दृष्टि दी थी कि सृष्टि को पिता-माता की तरह वात्सल्य भाव से देखो तो सब बच्चों का खेल सा लगने लगेगा और घृणा दूर हो जाएगी। शिशु-क्रीड़ा में छल-कपट, हिंसा-घृणा, युद्ध-प्रेम, क्रीड़ा और क्रूरता सब होती है न, तो सृष्टि में यही तो हो रहा है, भाव बदल लो, अपने को थोड़ा ऊंचे धरातल पर रख लो तो यह सब लीला या प्ले सा लगेगा न ''हमारे वैष्णव आचार्यों और कवियों ने लीला-दृष्टि दी थी, तभी वे देश में परस्पर विरोधी मतों के मानवों को एक कर सके···आज उसी 'महाभाव' की जरूरत है···मुझमें वही महाभाव

जग रहा है, मैरी और आज तुम मुझे रासलीला की गोपी सी लग रही हो···और मैं कृष्ण हूं··· प्रत्येक व्यक्ति कृष्ण है, प्रत्येक नारी राधा या दूसरे भाव में प्रत्येक शिशु कृष्ण है, प्रत्येक कन्या राधा, प्रत्येक व्यक्ति नन्द है, प्रत्येक नारी यशोदा···मैरी समझ रही हो न ?"

"मैरी ने देखा कि भूतनाथ के मुख पर अत्यन्त सरल दिव्य भाव छा गया और वह पारदर्शी हो गया है। उसने मैरी के स्वागत के लिए दोनों बांहें फैला दीं। मैरी भूतनाथ की गोद में जाकर बैठ गई। भूतनाथ ने उसे इस तरह भेंटा जैसे वह कोई बरसों से बिछड़ा हुआ प्रियजन हो। उसकी दृष्टि निष्कलुष थी और वह एक बच्चे की तरह मैरी को प्यार कर रहा था। मैरी के मन की भी गांठें खुल गईं और वह भूतनाथ से मार्जारी की तरह लिपट गई। दोनों न जाने कब तक उस अनुरक्ति की मनोदशा में स्थिर और तन्मय रहे। नौकर ने बैठक में मौन देखकर झांककर देखा तो वह मुस्कराया और तुरत-फुरत लौट गया लेकिन वह डरा कि उसका साहब, शराब के नशे में कोई घपला न कर दे। इन अमरीकियों का क्या है, ये तो हिन्दुस्तानियों को फंसाने के लिए ही आते हैं। इन्होंने पाकिस्तान को फंसा लिया। अब ये वही यहां करना चाहते हैं। हमारा साहब हीरा है। यह आदमी सा है भी नहीं, कोई भटका हुआ महात्मा है या योगी। न जाने क्या-क्या करता है, क्यों करता है, कोई नहीं जानता लेकिन उसकी आत्मा उस सबमें नहीं है। मालिक को चेताना चाहिए। उसे माया लग गई है···कबीर ने सही कहा है—माया। महा ठगिनी हम जानी···आगे की लाइन, ससुरी याद नहीं आ रही है,···चलो बनाते हैं, कबीर ने भी तो बनायी हो होगी···ब्रिह्मा पागल भए बिसिन जी, महादेव से ग्यानी···माया, महाठगिनि हम जानी···अरे ग्यान हो गया मुझे···कबीर तेरी जय हो, तू जगाता है पापी जीवों को···इसी भजन को जोर-जोर से गाता हूं, साहब चेत जाएगा।

बूढ़े नौकर ने भजन गाया और स्वर को ऊंचा करता गया। जब भूतनाथ और मैरी नहीं चेते तो उसने किवाड़ पर तबला बजाना शुरू किया। हड़बड़ाकर दोनों ने आखें खोलीं। उन्हें सुनाई पड़ा, "माया, महाठगिनि हम जानीं। ब्रिह्मा पागल भए बिसिनजी, महादेव से ग्यानी, माया, महाठगिनि हम जानी।"

भूतनाथ ने लजाकर मैरी को पास की कुर्सी पर बैठाया पर इस तरह गोया वह कहीं उस कोमल काया को तनिक भी कष्ट न पहुंचा दे। इसलिए उसे इस तरह कुर्सी पर रखा जैसे वह कोई बताशा हो, फूट न जाए। मैरी ने उपकृत होकर दिव्योन्माद से वापस आकर नेत्र खोले, धीरे-धीरे जैसे दो पुष्प पाटल खुल रहे हों। उसके मुख पर वही मुस्कराहट थी जो गोपियों के मुख पर रहती होगी कृष्ण अनुराग में। वह अपने को धन्य समझ रही थी। उसे जीवन का एक ऐसा सत्य मिल गया था जिसे वह कभी-कभी आभासों में देखती थी पर पकड़ नहीं पाती थी···

"माई री, मैंने रामरतन धन पायो।"

मैरी ने भूतनाथ के महाभाव को अपने हृदय के गूढ़तम अंचल में संभाल कर रखा और पुनः नेत्र बन्द कर लिए।

"साहब ! डिनर लगा दिया, सोडा-बर्फ और लाऊं ?"

भूतनाथ नौकर की चतुराई पर मुस्कराया।

"नहीं, अब कुछ नहीं चाहिए, मैरी, माय डियर, क्या आपको कुछ चाहिए ?"

"नथिंग माय फ्रैण्ड, आय डोंट नीड एनीथिंग नाउ, नथिंग एब्सोल्यूटली नथिंग।

डू यू नीड इट ?"

"नथिंग। वी हैव हैड एवरी थिंग···कुछ नहीं चाहिए, सब मिल गया। सूरदास तजि कामधेनु को छेरी कौन दुहावै···मेरो मन अनत कहां सुख पावै ?···चलो, खाना खाएं।"

दोनों चुपचाप खाना खाते रहे और एक-दूसरे को देखदेख कर इतने प्रफुल्लित होते रहे जैसे वे बच्चे हों। बालभाव सभी को नहीं मिलता, सब समय नहीं मिलता, यह तो सत्कर्मों का फल है, पहले के,अब के, किसी को कभी मिल जाए तो धन्य हो गए, वर्ना जीवन में शिशु-भाव के बिना भेदभाव, ईर्ष्याद्वेष और अलगाव ही पनपेगा। भाव के बिना सब अभाव ही है।

भोजन के बाद दोनों दूरदर्शन के सामने बैठ गए। सुगंधित पान-पत्ते से भारतीयता बिखेरते हुए दोनों ने अंगरेजी में समाचार सुने। उनमें सारे देश में, विभिन्न कारणों से होने वाली हिंसा की घटनाओं की सुर्खियां थीं। पंजाब में बस से निकाल कर इतने हिन्दुओं को आतंककारी सिक्खों ने मारा। हैदराबाद में हिंदू-मुस्लिम दंगा हो गया। उसमें इतने मरे और घायल हो गए। कश्मीर में पाकिस्तानी घुसपैठ से इतने खेत रहे, आसाम में इतने विस्फोट हुए और मूल निवासियों और बाहर के लोगों में झड़प हो गई, इतने घर जला दिए गए। नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा और दूसरी जगह ईसाई कबीलों के विद्रोहियों ने देश में रहने से मना कर दिया। वे अपना स्वतंत्र राज्य चाहते हैं अतः उन्होंने इतने अफसरों, इतने सैनिकों-सिपाहियों और इतने नागरिकों का वध कर दिया।

भूतनाथ को लगा, मुल्क के गले में कोई डायन, कोई चुड़ैल लग गई है। वह खूब रक्त पी रही है, डकार रही है और खुश है। उसे न कोई लज्जा है, न डर है। वह डरावनी डायन है। ऊपर से मनोहर, सभ्य, शानदार, भीतर से रक्तजीवी, मुलक-मारू काली जादूगरनी'' भूतनाथ के मन में पुन: गुस्से की लहर आई और उसने दांत पीसे ···वह इस डायन को मारेगा···।

समाचार समाप्त हो गए थे और अंगरेजी में एक नाटक शुरू हो गया था जो बहुत प्रसिद्ध और रोचक था। मैरी उसमें डूब गई पर भूतनाथ ने अपनी आत्म-यवनिका पर कुछ और देखा।

···मल्लाहों के गांव से रात के तीसरे पहर साठ-सत्तर आदमी क्वांरी के नेतृत्व में अरगौनी नदी की ओर बढ़े। क्वांरी डी० आई० जी० की वर्दी पहने हुए थी और सिर पर भूरे रंग का हैल्मिट या शिरस्त्राण था, जिसके फीते उसने ठुड्डी के नीचे बांध रखे थे। उसके कंधे पर गन थी और कारतूसों की पेटी जनेऊ की तरह कंधे पर पड़ी हुई थी। उसकी चाल में अकड़ थी और वह जल्दी चलने के लिए सुस्त साथियों को गालियां दे रही थी। अरगौनी नदी पर आकर क्वांरी ने उसे प्रणाम किया, पानी चुल्लू में भरकर आचमन किया और पुन: सिर झुकाया। साथी बागियों ने भी ऐसा ही किया और वे नदी पार कर गए। नदी में जहां-तहां पानी था और पैदल ही उसे पार किया जा सकता था।

नदी के किनारे पर पहुंच कर क्वांरी ने शिकारी नजर से इधर-उधर ताड़ा, फिर आगे के भेद लेने के लिए अग्रिम दल को भेज दिया। मुखबिरों ने खबर दी थी कि वीरसिंह और धीरसिंह आज लेमही गांव में मिल सकते हैं। इधर महीनों से क्वांरी निष्क्रिय थी, वह क्वांरी नदी की खोहों में छुपी रही थी, इसलिए उसके दुश्मन वीरसिंह-धीरसिंह अपने गांव लेमही आने-जाने लगे थे। यों वे सशंकित थे क्योंकि वे क्वांरी को

काली नागिन कहते थे जो कभी भी डस सकती थी। नाग चाहे अपने शत्रु को भूल जाए पर नागिन कभी नही भूलती।

सूर्योदय के पूर्व, पौ फटते ही क्वांरी का गिरोह लेमही पहुंच गया। क्वांरी ने कड़क कर कहा, "मेरा इस गन्दे गाव में सीलभंग हुआ था, मैं इसलिए इस नरक में नही जा सकती। पाच-सात बागियों को छोड़कर तुम सब गांव को घेर लो और बीरा-धीरा सहित जितने बालिग ठाकुर मिलें, सबको यही बांध लाओ। जो अकड़े उसे वही गोली मार दो। मुकाबला करें तो हथगोलो की किरच खीचों और फेंको लेकिन उससे सारा गांव जल सकता है। औरतों और बच्चों ने क्या बिगाड़ा है ? कालिया, सोबरनसिंह, तुम जानते हो, मेरी माटी किस-किस ने खराब की थी, उन्हें लाओ। मैं देवी के मंदिर पर रुकूगी। आज मैय्या को नरबलि दूगी। माई बहुत प्यासी है, जय दुर्गा!"

"जय। फुलवा देवी की—जय!"

"जय।"

धीमी आवाज मे जय-जयकार करके मल्लाह डाकुओं ने लेमही के मुख्य मार्गों को रोक दिया। प्रातः जो लोग टट्टी-पखाने के लिए निकले उनसे पूछने पर पता चला कि बीरा-धीरा तो रात में ही खिसक गए पर उनके घर के लोग यही है। गैर ठाकुर जातियों के मर्द-औरतों-बच्चों को शंकानिवारण के लिए जाने दिया गया लेकिन उन पर निगाह रखी गई। ठाकुरों के घरों पर हमला बोल दिया गया।

गांव में सुबह सभी बाहर निकलते हैं। जो ठाकुर बाहर आता, उसे पकड़ लिया जाता। बच्चों, बूढ़ों और औरतों को छोडकर मल्लाहों ने अट्ठारह-बीस ठाकुरों को पकड़ लिया। इस पकड़ में जो अवरोधक हुए उन्हें वही मार डाला गया। भय का आतक छा गया। इससे पकड़े जाने में ठाकुरों ने भलाई समझी। शायद, क्वांरी छोड़ दे। उन अट्ठारह-बीस ठाकुरों में ऐसे भी थे जो निर्दोष थे पर उनमे कुछ बलात्कारी भी थे। गिरोह-निर्दोष ठाकुर बड़बड़ा रहे थे⋯"अरे भाई, हमें क्यो पकड रहे हो ? हमने क्या बिगाड़ा है ? हम तो बीरा-धीरा के ऐमालों-ऐबों की निन्दा करते रहे है और हमने तो उन्हें जाति-बाहर कर दिया है। हमारा उनसे खानपान नही है⋯हमारे साथ यह ज्यादती क्यों हो रही है, भाई ?"

"चुपचाप चलो ठाकुर के बच्चे।⋯तुम ठाकुर की पेशाब से पैदा हुए हो, यही तुम्हारा जुर्म है। तुममें ठसक है कि तुम ठाकुर हो। यह क्या अपराध नही है ? इसकी सज़ा फुलवा देगी, चलो, सरग जाओगे, गोली छाती में मार देंगे ताकि कह सको कि घाव पीठ में नही खाया, हः हः हः हः।"

जानवरों की तरह हाथ पीठ पर बंधाए अट्ठारह-बीस ठाकुर बदूकों के कुन्दों से अपनी हड्डी-पसली तुड़वाते, गालियां निगलते और क्वारी डकैतिन के डर से थर-थर कांपते मंदिर के पास आए। उन्हें देखकर क्वारी ने एक बर्बर कहकहा लगाया और वह उन्हें इस तरह घूरने लगी जैसे कोई भूखी शेरनी, शिकार को देखकर अधीर होती है। उसने पंक्तिबद्ध ठाकुरों का मुआयना किया और उनमें जिन्होने क्वारी पर बलात्कार किया था, उनके मुह पर थूकती गई—"थू है तुम पर, तुम ठाकुर—कहते हो अपने को, थू⋯थू⋯थू⋯थू⋯थू।"

"कालिया। गोली दागने से पहले इनकी इन्द्रिय काट दो और उन्हें एकट्ठा करो, एक कपड़े में लपेटो और बीरा-धीरा के घर मे फेंक आओ जिससे वह समझ सकें कि किसी नारी पर मर्दों की मनमानी की सज़ा क्या होती है, जल्दी करो सालो⋯टुकुर-

ठकुर क्या देख रहे हो ? चाकू निकालो और तराशो, इनकी मूतनी इनके वदन से अलग कर दो।"

बलात्कारी ठाकुरों की दशा का वर्णन सम्भव ही नही है। वे स्तब्ध थे, पत्थर वन गए थे। उन्होने मन में महावीर हनुमान का स्मरण किया, "बाबा वचाओ।" उनके मुह सूख गए थे और वे तस्वीर से नीचे निगाह किए जड़वत् खड़े थे। मरता क्या न करता, एक गैरबलात्कारी ठाकुर गिडगिड़ाकर बोला—

"फुलवा वहिन ! आप हमे क्यों मारती है ? हमने तो कुछ नही किया। हमने वीरा-धीरा से नाता तोड लिया · हमने उन्हें बहुत बुरा-भला कहा है, हमे छोड़ दीजिए, हम निरपराध है, हम कभी आपके विरोध में नही जाएगे।"

"विरोध मे नही जाएगे ?···तब आपने बलात्कारियों का हुक्कापानी बन्द क्यो नही किया ? क्यों आप लाठिया लेकर उन पर नही पिल पडे ? क्यो आपने उन्हें गाव मे रहने दिया ?···तुम ठाकुर बनते हो, तुमने अनीति का विरोध नही किया···तुम ठाकुर किस वात के हो ? तुम्हे जुलुम के सामने खामोश रहने की सजा मिलेगी। कालिया, किस वात की परतीच्छा कर रहा है हरामी···या मैं तेरी खाल उड़ा दू ?"

क्वारी ने वन्दूक तानी तो कालिया ने अंतिम प्रयत्न के लिए, करुण-विवशभाव से क्वारी को देखा। सोवरन को भी यह अगभग करने की नीति बुरी लगी। आखिर जान से ज्यादा सजा और क्या होती है ? सोवरन ने क्वारी के हाथ जोड़े—

"फुलवा रानी। तुम दुर्गा की औतार हो न, तुम्हें यह करम शोभा नही देता। इससे मल्लाहो की नीचता जगजाहिर हो जाएगी। मर्द कोई मछली नही होता है कि उसे···"

"अच्छा। तू सोना मलाह, केवटो की शान बढ़ा रहा है, शावाश वहादुर ! तू यह नही सोच सकता कि इनकी देह के जो हिस्से तेरी दुर्गा की देह से लगे थे, उन्हे काट डाला जाए ··और तू मलाहो के जस वखान रहा है···ये कायर, कमीने, उस दिन कहा थे जव मुझे इन भेडियो ने चाटा था, काटा था और मेरी देह में इनके डण्डे घुसे थे···मैं कहती हू कि अगर तुम यह नही कर सकते तो मैं खुद करूंगी। मैं इन हाथियों की सूड़ें खुद काट डालूगी।"

क्वारी पर उसका प्रिय पागलपन छा गया और उसने रामपुरिया चाकू कमर की वर्दी से निकाला। क्वांरी को अटल देखकर कालिया और उसकी टोली ने चाकू निकाल लिए और देखते-देखते दस-बारह ठाकुरो के लिंग काट डाले गए। पीड़ा, ऐंठन, और आर्तनाद से आकाश भर गया। हर बार चाकू की खच्च पर क्वारी अट्टहास करती और ताली बजाती—

"नीच ठाकुरो ! यह एक औरत का वदला है मरदों से···हः हः हः।"

जिन्हे वधिया किया गया, वे तो वेहोश होने लगे। उन्हें पीड़ा से मुक्त करने के लिए उन्हें ज़मीन पर ही गोली मार दी गई और जो खड़े थे उन्हे छाती मे गोली दाग कर खत्म कर दिया गया।

अट्ठारह-वीस लोथें गिर गई। रक्त से धूल लाल-लाल हो गई। क्वारी प्रतिशोध की अग्नि मे जल रही थी और प्रत्येक ठाकुर के गिरने पर अट्टहास कर रही थी। गिरोह ने समझा कि अब क्वारी कभी संतुलित नही हो सकेगी। वह पूरी तरह विक्षिप्त हो गई है लेकिन क्वारी ने ठाकुरो के सिर कटवाए जैसे—नारियल तुड़वा रही हो और एक-एक खोपड़ी दुर्गा के मदिर पर चढ़ा-चढ़ा कर देवी की स्तुति करने लगी। फिर उन

पर देवी का आवेश आ गया। वह झूमने लगी और बुदबुदाने लगी। अचानक वह तड़प कर उठ बैठी। बदूक हाथ में थी, देवी को प्रणाम किया और गरजी—

"जब तक बीरा-धीरा, उन राच्छसों की बलि देवी पर नहीं देती तब तक क्वारी चैन नहीं लेगी। मैय्या। तू साच्छी है। चलो बहादुरो! आज मैंने मलाहों का दबदबा कायम कर दिया। अब किसी की हिम्मत नहीं कि किसी की औरत पर कोई आदमी बलात्कार करे, जय दुर्गा···।"

···भूतनाथ का ध्यान भंग हुआ। उसने आह भरी, जैसे उसके भीतर कुछ टूट गया हो। दिल को हाथ से दबाया, माथे पर हाथ फेरा और खोई हुई, चोट खाई दृष्टि से मैरी की तरफ देखा। मैरी ने उसे थपथपाया और उसे एक पैग बनाकर दिया। भूतनाथ उसे एक सांस में पी गया, होठ पोंछे और मैरी के हाथ को हाथ में लेकर बैठा रह गया। मैरी घबरा गई—

"व्हाट इज़ द मैटर···क्या बात है, क्या देखा है तुमने मिस्टर गोस्ट?"

"मैं···मैं बयान नहीं कर सकता·· ओह!"

"तुम जिस महाभाव का अनुभव कर रहे थे, उसी में लौट जाओ भूतनाथ···यू शुड रीएंडर इन द सेम ग्रेट सेंटीमेंट आफ द प्ले आफ द लार्ड क्रिशना। दिस इज़ द ओनली वे, अ सेंसिटिव बीइंग लाइक यू कैन सेव योरसेल्फ, डू यू अंडरस्टैंड मी?"

"य:···ह: आय कैन···बट···डू यू नो, मिस कैरी हैज़ बुचर्ड एट्टीन ऑर सो मैन इन कोल्ड···ब्लड···शी हैज़ एवेंज्ड हर इसल्ट बट एट व्हाट कॉस्ट? मैं समझ सकता हूं, तुम जानती हो, क्वांरी ने अट्ठारह-बीस पुरुषों को मार डाला। उसने अपमान का बदला ले लिया पर कितनी बड़ी कीमत पर···आह।"

"नाऊ यू शुड चियर अप एण्ड फोरगेट इट, आय एम लेट आलरेडी, आय बैग लीव नाऊ···अब खुश हो जाओ और यह सब भूल जाओ। मुझे विलम्ब हो गया है··· मैं अब विदा चाहूंगी।"

"नो यू शुड नॉट लीव मी टु नाइट। कांट वी स्लीप लायक चिल्ड्रन···तुम मुझे आज की रात छोड़ना मत, क्या हम बच्चों की तरह नहीं सो सकते?"

"य: वी कैन डू इट···हां, हम यह कर सकते हैं।" और दोनों दो शिशुओं की तरह सो गए।

26

श्रीगंगानगर (राजस्थान) के एक होटल से, शाम के धुंधलके में एक कार और एक मेटाडोर वैन निकली। शीतकाल में राजस्थान के इस मरुस्थली क्षेत्र में कड़ाके की सर्दी पड़ती है, उस पर आज तो महावट शीतकालीन बूंदाबादी हो रही थी और बादल छाए हुए थे। लोग अपने-अपने घरों में थे या छवि गृहों में या क्लबों में। बेधड़क कार और सामान लादने वाली वैन शहर पार कर श्रीकर्णपुर की ओर बढ़ी। जब जनशून्य सड़क पर यात्रा होने लगी तो कार में बैठी रोज़ी ने पास बैठे भूतनाथ को कोहनी से चेताया। भूतनाथ विचारों में गुम था, वह रोज़ी की ओर देखकर मुस्कराया मगर दूसरी तरफ मैरी के संकोच से चुप रहा। ड्राइवर के पास मिस्टर शेफ डटे हुए थे, जो कार की

लाइट जलाकर कभी-कभी एक नक्शे को देख रहे थे। रोज़ी बोर हो रही थी उसने पुन: भूतनाथ की पसली में टहोका दिया और इशारा किया कि वह ऊब रही है। मैरी ने उसकी मुद्रा देखी और हसने लगी। मिस्टर शेफ ने चौंककर पीछे देखा और मैरी को चुप रहने का सकेत दिया। रोज़ी हतप्रभ होकर बैठ गई। उसने बुरा-सा मुह बनाया और भूतनाथ के कंधे पर सिर रखकर उसने आखें मूद ली।

श्रीकर्णपुर पहुचकर, ज्ञान-ज्योति महाविद्यालय के पास कार रुकी। वहा कालेज के गेट से कुछ दूर ओट मे एक व्यक्ति पहले से ही इतज़ार मे खड़ा था यो रात के दस-ग्यारह बज रहे थे और रात अधेरे बुन रही थी। बादल हवा में कभी उड़ते, कभी भेड़ो के झुण्ड से एक दूसरे पर लद कर सघन हो जाते। पास के खेजड़े के वृक्षों से उल्लू कभी-कभी यों बोलता जैसे वह रात के साथ भेदो का आदान-प्रदान कर रहा हो। हवा की झकोर मे परिवेश ठिठुरता और अपने मे सिकुडता-सा लग रहा था।

"हू इज़ देयर ? कौन है वहां ?"

"आपरेशन क्रासिंग।"

"ओह, गुड ' कम ऑन, वैलकम फ्रेंड, इज़ एवरीथिंग ओ० के० ? वाह ! आइए, स्वागत है मित्र, क्या सब ठीक है ?"

"एवरीथिंग अरेंज्ड, ओ० के० थेंक्यू"

वह सर्दी मे भीगा व्यक्ति, बरसाती उतारकर आगे बैठ गया और मिस्टर शेफ खुसपुसाने लगा। रोज़ी ने उत्सुकता प्रकट की पर भूतनाथ ने उसके मुख पर हाथ रख दिया। कार पुन: चल पडी। श्रीकर्णपुर को पार कर, आधी रात के समय अमरीकी यात्री, नगर के बाहर कच्चे रास्ते पर पहुच गए। आगे रजबहे तक सड़क खराब थी तो भी कार उसकी पुलिया तक किसी तरह पहुची। आगे कार ले जाना सम्भव नही था। बहुत कीचड़ और पानी था। इसलिए कार को लौटा दिया गया और सबको वैन में, आगे-पीछे भर लिया गया।

पुलिस और सशस्त्र पुलिस की चौकी वहां से बहुत दूर नही थी पर न कोई गश्त पर मिला, न किसी ने गाडियो की आवाज़ से कोई हरकत की। भूतनाथ को ताज्जुब हुआ कि इतने सवेदनशील इलाके मे कोई नाकेबन्दी नही। पाकिस्तान की सीमा के सरक्षक-दल क्या सो रहे है या उन्हे सुला दिया गया ? यह छाया-पुरुष कौन है, क्या यह सब इसी की करतूत है ?

सामान ढोने वाली वैन मोटरगाड़ी मे आगे की सीटो पर रोज़ी, मैरी, भूतनाथ और मिस्टर शेफ को ठूस दिया गया और छाया-पुरुष तथा मिस्टर ग्रोगले, मिस्टर राबर्ट आदि सामान के बीच अट गए। गाडी रजबहे की पटरी पर, सीमासरक्षक चौकी को दाईं ओर छोडती हुई चल पड़ी। रजबहा, छोटी-सी कैनाल की शक्ल मे था मगर उसकी पटरी बुरी नही थी। इसलिए मोटरगाडी हिचकोले खाती रुकती बढती गई। रजबहे के दोनों तरफ बालू, कीचड और पानी था, जिसमें कही-कही जलपक्षी फड़फड़ाते और मेढक टर्रा रहे थे। उन्हें मोटरगाडी कोई शत्रु प्राणी-सा लगा होगा जो उन्हे मारने आ रही है।

काफी देर चलने के बाद मोटरगाड़ी रजबहे से उतरकर कच्चे दडे (रास्ते) पर सीमा की ओर बढ़ी। गाड़ी की गति अब बहुत धीमी हो गई थी और पहियो में कीचड़ फस जाने से उसे बार-बार रोकना पड़ता था। एक दो बार वह गड्ढों में धंस गई पर ड्राइवर, छाया पुरुष तथा एक-दो लोगों ने उतरकर धक्के देकर किसी तरह निकाल

ही थे और कहीं कोई न पहरेदार था न निगहवान। एक
लिया। सीमा के तार सामने और मैरी रोमांचित हो रही थी। रोजी को भूतनाथ की
डर ज़रूर था जिससे रोज़ी कि रोमानी प्रतीत हो रहा था यों कहीं खटका भी था कि
निकटता में भय, एक हद तार पकड़े गए तो भारतीय जेलों में न जाने कब तक सड़ना
कहीं सब पकड़े न जाएं। अगार्ड यहीं गोली मार दें तो उनसे कौन पूछने वाला है?
पड़े और यह भी कि सुरक्षा शलता के बावजूद गाड़ी बिल्कुल सीमा के तारों के पास जा
ड्राइवर की सारी कु ड़ा किसानों का था, जिससे सीमा के पास के खेत वाले
नहीं सकती थी क्योंकि वह े जाते थे। दड़ा जहां खत्म होता था, वहां से सीमा के तार
बैलगाड़ियों में सामान लाते-ले दूर थे। अतः वहीं मोटरगाड़ी को रोका गया। मिस्टर
कम से कम ढाई-तीन सौ गज और उनके नेतृत्व में, छाया पुरुष को आगे कर सब तारों की
शेफ के संकेत पर सब उतरे अ ा, ड्राइवर तथा एक-दो और व्यक्तियों ने सामान सिर
तरफ़ चल पड़े। राबर्ट, ब्रोगले र दिया।
और कंधों पर लादना शुरू क की ऊंचाई अधिक नहीं थी अतः रोज़ी, मैरी को उठाकर
लोहे के कंटीले तारों भूतनाथ, शेफ और छाया पुरुष काटों के तारों को किसी
उधर पहुंचा दिया गया और तान की तरफ कुछ छायाएं दूर खड़ी दिखाई पड़ी। उनमें
तरह लांघ गए। उधर पाकिस पुरुष के संकेत पर मिस्टर शेफ से कुछ बतकही हुई और
से एक दो पास आईं। छाया कर सामान को उठाना-ले जाना शुरू कर दिया। सारे
पाकिस्तानियों ने निश्चित हों अधिक होने से कोई भारी वस्तु नहीं थी। सब सामग्री
सामान में फिल्मपार्टी की ची सीमा में लाई गई और कुछ खेतों-मेंड़ों को पार करते हुए
लाद-लूद कर पाकिस्तान की व सवार हो गए।
कुछ दूर खड़ी दो जीपों पर स ता और शीघ्रता से हुआ कि भूतनाथ तारीफ किये बिना
सब कुछ इतनी चतुर किस्तानी सेना-पुलिस की चौकी पर ले जाया गया और
नहीं रह सका। जीपों को पा कमाण्डर ने मिस्टर शेफ से हाथ मिलाया—
परिचय शुरू हुआ। चौकी के ऽ, खुशामदीद।"
"वैलकम मिस्टर शेफ पार्टी को पेश किया—"यह मिस्टर कर्नैलसिंह सानेहवाल,
मिस्टर शेफ ने फिल्म र्यक्रम सहायक ''यह मिस रोजी, मिस मैरी, फिल्म
हमारे प्रोग्राम-असिस्टेन्ट—ब टर ब्रोगले'''मिस्टर'''ऑल विलोंग टू अवर फिल्मपार्टी।
आर्टिस्ट्स, मिस्टर रॉबर्ट, मिस। हम आपके आभारी हैं, वी आर आल ग्रेटफुल टू यू।"
हम सब फिल्मी दल के लोग हैं माण्डर आफ दिस यूनिट, इस चौकी का इन्चार्ज'''इन-
"मैं अशरफ खान, व ल, टू टेक सो मच ट्रबुल'''सच यह है कि तकलीफ उठाने
फेक्ट वी आर ग्रेटफुल टू यू आ नमन्द हैं।"
के लिए हम आप सबके अहसा क पुरानी गढ़ी में थी, जो काफी ऊंची और पेड़ों-झाड़ियों
पाकिस्तानी चौकी ए ह थी, और किसी राजा या नवाब का लघु दुर्ग होने के
से ढकी थी। भीतर काफी जग काफी ऊंचे और मजबूत थे यों बाहर से गढ़ी खण्डहर-सी
कारण उसके रिहायशी कमरे के द्वार के बाहर सहन में, जीपें और अन्य गाड़ियां थीं और
लगती थी, उजड़ी हुई। गढ़ी। गढ़ी में चहल-पहल कम थी क्योंकि पुलिस टोलियां गश्त
सजग प्रहरी पहरे पर खड़े थे रों में अवश्य कुछ हलचल थी जहां ट्रांजिस्टर बज रहा था
पर जाती रहती थी, कुछ कम
और खाना-दाना हो रहा था। कमरे और दालान दे दिए गए। रात काफी हो जाने के
यात्रियों को तीन-चार ों में नींद की जगह उत्सुकता थी। नित्य कार्यों से निपट-
बावजूद मौके को खूबी से आ

कर वस्त्रादि बदलकर अशरफखान और अन्य एक-दो अफसर भोजन की टेबुल पर आए और फिलमपार्टी की थकान उतारने के लिए पेय पेश किया। मिस्टर शेफ बोले :

"मगर मिस्टर कमांडर अशरफ। पाकिस्तान में तो शराब पर बंदिश है, इट इज़ प्रोहिबिटिड···।"

"इट इज ऑल रायट सर। सब चलता है और फिर यह फौज है, सिविलयंस के लिए मनाही है, चियर अप, टू योर ग्रेसस कमिंग।"

"चियर्स। थैंक्स।"

भूतनाथ घनी दाढी-मूछों में स्कॉच ह्विस्की को सिप् करते हुए चुपचाप रोजी को तक रहा था जो चहकने के लिए उतावली थी। उस बेचारी को अब तक मौन रहना पड़ा था। मैरी को रोजी की ऊब और उतावली पर हंसी आ रही थी। भूतनाथ ने आंख दबाकर मैरी के मनोरंजन में साथ दिया। रोजी कुछ कहती, इसके पहले ही मिस्टर शेफ ने बात शुरू की—

"नाउ ह्वाट इज नैक्स्ट, मिस्टर कमांडर? अब आगे का क्या कार्यक्रम है?"

"ह्वाट इज हरी सर? क्या जल्दी है? आप आराम से डिनर लें, आराम फरमाए···सुबह देख लेंगे···वैसे सब ठीक है. पूरा इंतजाम है, नो प्राब्लम सर।"

अतिथियों का तनाव दूर हो गया। तो भी मिस्टर शेफ संतुष्ट नहीं थे। वह कुछ रुककर अशरफ को धन्यवाद देते हुए, हिचकिचाहट झलकाते हुए कहने लगे—

"एक्सक्यूज मी, कमांडर खान। माफ कीजिए खान साहब···वी आर इन ग्रेट हरी···हमें बहुत जल्दी है···एण्ड वी डू नॉट नो अवर डैस्टीनेशन···हमें पता नहीं कि हमें कहां जाना है?"

कमांडर रहस्यमय विधि से मुस्कराया। उसने पहली बार भूतनाथ पर नजर ठहराई और कहा—

"मिस्टर···सरदार कर्नलसिंह भिंडरावाले ओह्। सॉरी···सानेहवाल···को तो शायद सियालकोट जाना पड़े···यों लाहौर···भी जा सकते हैं।"

रोजी और मैरी दोनों एक साथ बोल पड़ी—"नो आफिसर। वि ऑल गो टू ह्वेयर मिस्टर गो" ऑह सॉरी···मिस्टर कर्नलसिंह सानेहवाल गोज···वी हैव टू वर्क एज़ अ टीम "कान्ट वी सैपरेटिड···।"

मिस्टर शेफ और खान अशरफ ज़ोर से हंसने लगे।

"सरदार जी। आप तो लेडीज में बड़े पॉपुलर हैं···आप लुधियाना जिले के हैं न?"

"श्योर···कमांडर···बट···मैं बचपन से ही दिल्ली रहा हूं। वहीं रहा, वहीं पढ़ा, इसलिए मैं कभी-कभी ही गया सानेहवाल···मुझे दिल्ली का समझिए "मेरा बिजनैस दिल्ली, लखनऊ और इटावा में है, जी हां "आप पंजाब में कहां के हैं···?"

"अजी, मैं तो पठान हूं पर पंजाब में रहा हूं, अभी भी हूं···पंजाबी बोल लेता हूं। आप पंजाबी तो जानते होंगे?"

"श्योर···बट···अंग्रेजी और हिन्दुस्तानी में काम ज्यादा पड़ता है।"

'क्यों नहीं, क्यों नहीं···आप कहां तस्वीरें लेना पसन्द करेंगे, लाहौर या सियालकोट?"

"कहीं भी भेज दीजिए, फिल्मवाले के लिए तो कुछ न कुछ मसाला हर जगह मिल जाता है···वैसे तो कश्मीर भी जाना चाहेंगे बादशाहो!"

"श्योर, जरूर तशरीफ ले जाइएगा···लेकिन पहले कुछ इधर का तो फिल्मा लीजिए न ?"

"जरूर, वेहतर यही होगा, जरूर।"

"आय वाण्ट टू गो फर्स्ट आफ ऑल टू अनारकली, लाहौर···मिस्टर गो··· ओह सॉरी सानेहवाल···हैव यू हर्ड द स्टोरी आफ अनारकली, द स्वीट हार्ट आफ प्रिंस जहांगीर ?" रोजी सपनीली अदा से वोली कि क्या आपने अनारकली, जहांगीर की प्रेमिका की कहानी सुनी है ?

सब हंस पड़े। अशरफ ने यह पकड़ा कि रोजी दो वार कर्नैलसिंह को मिस्टर 'गो' कहते-कहते नाम वदल गई। उसने मज़ाक किया—

"मिस रोजी। डू यू नो द रियल नेम आफ जहांगीर···हिज नेम वाज सलीम··· एवरीवाडी हैज़ टू नेम्स·· माई नेम इज 'डेविल' इन माय होमटाउन···ह्वाट इज द अदर नेम आफ मिस्टर कर्नैलसिंह ?—क्या आप जहांगीर का असली नाम जानती हैं ? उसका नाम सलीम था। प्रत्येक व्यक्ति के दो नाम होते हैं। मेरा नाम मेरे कस्बे में शैतान डेविल था·· सरदार कर्नैलसिंह का दूसरा नाम क्या है ?"

"आय डोंट नो वट आय एड्रैस हिम इन एम्यूज़मेन्ट मिस्टर गोट···हिज़ वियर्ड मेक्स हिम सो, इजिन्ट इट ? मुझे पता नहीं पर मैं उसको मजाक में वकरा—गोट कहती हूं। उसकी दाढ़ी उसे गोट वनाती है न ?"

सबने ज़ोर का कहकहा लगाया। भूतनाथ को पसीना आ गया मगर रोज़ी की प्रत्युत्पन्नमति से बात बन गई। मिस्टर शेफ ने चैन महसूस किया और मैरी को रोजी की हाज़िर जवाबी से ईर्ष्या हुई·· भेद खुलते-खुलते बचा। मैरी ने नज़रों से शावाशी छिड़कते हुए रोज़ी को ताका—

"रोज़ी, ब्रेवो। लैट अज लीव फारेमेलिटी एण्ड कॉल कर्नैलसिंह एज़ मिस्टर गोट। इट विल वी वैटर एज़ वी आर एक्स्टम्ड टू से सो···रोज़ी। शावाश। औपचारिकता छोड़कर हम कर्नैलसिंह को गोट ही क्यों न कहें, हम उसके आदी हैं ?"

"ओह। श्योर, व्हाय नॉट···सो मिस्टर गोट···ओह सॉरी मिस्टर कर्नल।"

सब दिल खोलकर खिलखिलाते रहे।

कमाण्डर अशरफ के साथ जो डिनर में शामिल थे, उनमें एक केंद्रीय खुफिया पुलिस का और दूसरा पाकिस्तानी पंजाब प्रान्त का इन्सपैक्टर था। केन्द्रीय जासूस ने भूतनाथ से दोस्ताना लहज़े में पूछा कि भारतीय सिक्ख भारत सरकार के पीछे क्यों पड़ गए हैं। हिन्दू-सिक्खों में सदियों की एकता क्यों खत्म हो रही है ? भूतनाथ ने गला साफ किया, इधर-उधर ताका और चुप लगा गया। जासूस ने पूछा, "क्या बात है मिस्टर सिंह ?"

"हमारी बहस हमीं तक रहेगी या रिकार्ड हो रही है ?"

"ओह। खातिर जमा रखें, यह तो डिनर टाक है···लेकिन आपको खौफ किसका है ?"

"खौफे खुदा, बस और किसी का नहीं, ताहम, आपने नाज़ुक सवाल पूछे हैं··· वहरहाल,···सिक्खों में यह फीलिंग, यह अहसास वढ़ा है कि उन्हें वेवकूफ बनाया जाता रहा है। मसलन, आज़ादी की लड़ाई में सिक्खों को इंडियन यूनियन—भारतीय संघ में एक खुदमुख्तार हुकूमत वनाने का वादा किया गया था। पंडित नेहरू ने वार-वार इसे दुहराया था···लेकिन आज हम क्या हैं ? जहां हमारी अक्सरियत है, पंजाव में वहां भी

हमें दूसरे दर्जे का शहरी समझा जा रहा है···यह हिन्दू दिमाग का जादू है। वह तारीफ करता है, सरदारजी, सरदारजी कहकर हमें मुसलमानों से लड़ाता रहा है और हम कुरवानियां देते रहे मगर हमें मिला क्या? लड़ाकू कौम मानकर हमें अंग्रेज़ों ने फौज में वढत दी ··अव पडितों ने वो औसत भी कम कर दी···कोई कारखाने, कोई उद्योग नहीं दिये गए, हमें खेतिहर वनाए रखा गया···वांध तो बना दिए लेकिन हरियाणा को छाती पर लाद दिया, वह हकतलफी कर रहा है···हमारी जबान को हिन्दू महाशयों—आरज-समाजी महाशयों के प्रचार से नहीं माना गया···बड़ी मुश्किल से गुरमुखी लिपि में पंजाबी को मान मिला पर हिन्दी हावी है···हमारे धरम को पंडत लोग हमेशा से सस्कीरत न जानने वाले दहकानियों का धरम मानते रहे हैं। ···भारत सरकार सरेआम, हिन्दू सरकार है, स्टेट का धरम हिन्दू-धरम है, हम क्यों रहें ऐसे मुल्क में?···हमारी कुरवानियों से आज़ादी मिली और हम आज़ादी में हिन्दुओं के गुलाम हो गए। जर्नेल-सिंह भिंडरांवाले गलत नहीं कहते। वो सन्त है, फकीर···और अब सरकार हिन्दू वोटों के लिए सिखों को लतिया रही है ताकि पंजाब में सिख सरकार न बन जाए·· सिखों को विदेशियों ने वांटा, पंडतों ने वही किया लेकिन अब हम एक होकर अपना अलग राज बनाएंगे और इस बारे में हम आपकी मदद चाहते हैं···आप कर भी रहे हैं ···वैसे देखें तो हमारा धरम, हमारा अंदाज, फलसफा, सब कुछ इस्लाम के करीब है और हम कायदे-आज़म की सियासत पर चलकर खालसा-राज-खालिस्तान चाहते हैं···हम महाशयों-पंडितों और दूसरे हिन्दुओं को पंजाब से निकाल बाहर करेंगे और राज करेगा 'खालसा'। हम अपने इस कौमी ख्वाव को हकीकत में बदलेंगे। आप हमारी आज़ादी के जानिबदार हैं, यू० एस० ए०, कनाडा, इंगलैण्ड और चीन में बहुत से लोग हमारी पीठ ठोक रहे हैं, हमें हथियार और टरेनिंग दे रहे हैं···आप हमारे दोस्त, राहबर और हमराज़ हैं···हम···कुछ भी कर सकते हैं···हम अलग कौम हैं··· हम···हम···।"

रोज़ी मुग्ध थी, मेरी प्रशंसा भाव में मग्न। मिस्टर शेफ के भावनाहीन चेहरे पर तारीफ की चमक थी और रावर्ट-ब्रोगले वगैरह तो भौचक्के थे कि यह भूतनाथ तो विलकुल सिक्ख वन गया। कमाल है, क्या अदायगी है, क्या अभिनय है। कमाण्डर अशरफ के सैनिक मस्तिष्क में जोश और रोशनी फैल गई थी और केन्द्रीय जासूस, रावलपिंडी वाले, भूतनाथ को बड़े अदव से सुन रहा था गोया कोई पैगम्बर बोल रहा हो। रोज़ी ने गर्व से तालियां बजा दीं—

"ब्रेवो मिस्टर···गो···गोट···यू स्पोक लाइक ज़रथुस्त्रा दज़ स्पोक ज़रथुस्त्रा आय एम प्राउड आफ माय गोट, ऑर यू आलसो मिस मैरी ऑर व्हाट? शावाश, मिस्टर वकरे। तुम पैगम्बर ज़रथुस्त्र की तरह वोले, मुझे गर्व है, वाह! ···मैरी, तुम्हें भी है या क्या है!"

सामूहिक अतिहास से कमरे की छत से एक-दो मिट्टी और धूल के कण गिरे। पुरानी छतें थीं। उसे देखकर पुनः हंसी हुई। सवाल मैरी से किया गया था, उसने हास का झंझा-वात गुज़र जाने पर कहा—

"व्हाय नॉट, आय एम आलसो प्राउड, नॉट ऑनली प्राउड वट फ्लैटर्ड ऑन-गो विकॉज़ अवर गोट स्पीक्स टू।—क्यों नहीं, मैं भी गर्व करती हूं पर स्तुतिमयी होने का भी गुख मिला क्योंकि हमारा वकरा बोलता भी है।"

"जो मेरा है, वह तुम्हारा कैसे हो सकता है, मिस मैरी, तुम 'हमारा' शब्द का

प्रयोग बन्द करो, कहो रोज़ी का है—हि इज़ माइन, हि कान्ट बी योर्स, मिस, यू आर यूजिंग 'अवर' रोंगली, यू शुड रादर से, दिस इज़ द गोट आफ रोज़ी।"

पुनः घरफोड़ कहकहा लगा। मैरी ने सानंद घूंसा ताना और रोज़ी की पीठ पर धीमे से एक जड़ भी दिया। रोज़ी ने कृत्रिम तकलीफ से भूतनाथ से कहा "माय डियर गोट। डू यू एक्सेप्ट पब्लिकली दैट यू आर मायन नाट एवरीवडीज ?"

"ओह। रोजी, नाऊ यू शट अप। वी मे डाय आफ लाफ्टर···ओह, रोजी, अब चुप रहो, अन्यथा हम हंसते-हंसते मर जाएंगे" मिस्टर शेफ ने हास्य की वाढ़ पर बाध लगा दिया।

"आय कान्ट हैल्प इट जैंटिलमैन एण्ड लेडीज। आय कान्ट हैल्प इट। वी वर बिफूल्ड बाय हिन्दूज, एण्ड नाव वी आर वीग बिफूल्ड बाय रोज़िज़···मैरी रोजिज···मैं लाचार हूं हमें हिन्दुओं ने मूर्ख बनाया अब गुलाब, प्रसन्न गुलाब बना रहे हैं।"

भूतनाथ की उक्ति पर पुनः मुस्कराहटें आईं।

पाकिस्तानी पंजाब के जासूस ने कर्नेलसिंह को इस तरह देखा, गोया वह उससे एकांत में कुछ कहना चाहता है। उसके इशारे पर भूतनाथ उठा और वे दोनों दूसरे कमरे में चले गए। अब रास्ता साफ था और रावलपिण्डी वाले भेदिए ने अमरीकियों को जानकारियां दीं और कार्यक्रम तै कर दिया। कमाण्डर अशरफ ने इसके बाद भूतनाथ को आराम करने के लिए कहा और चला गया।

रात के तीन साढ़े तीन बज रहे थे अतएव सब सोने चले गए मगर भूतनाथ की आंखों में नींद नहीं थी। उसने अपने कमरे में जाकर कपड़े उतारे और केश खोलकर उनको सुलझाने लगा। फिर किवाड़ उड़का कर लेट गया और बत्ती बन्द कर दी। वह सुनाई पड़ने वाले स्वरों में गुरुवानी का पाठ करने लगा। उसने पैरों की आहट से भांप लिया था कि दोनों पाकिस्तानी जासूस उसके कमरे की खिड़की के पास खड़े हैं और तौल रहे हैं कि यह कर्नेलसिंह क्या चीज़ है।

थोड़ी देर बाद उसने करवट बदली और नेत्र बन्द कर लिए किन्तु उसके मस्तिष्क में एक विराट क्षेत्र उभरा, जिसमें एक भाग मरुस्थल था, जो तप रहा था, दूसरे इलाके में सैनिक मोर्चा था, जहां लड़ाई जारी थी, टैंक मार कर रहे थे, हवाई जहाज सन्नाते हुए आते और गोले बरसाते हुए चले जाते, नीचे से घायलों की चीख-पुकार उठती, आग की भरभराहट साफ सुनाई पड़ती और गिरते हुए मकानों और वृक्षों की गिरन गूंजती···तीसरे क्षेत्र में षड्यंत्र और जंग की योजना में मशगूल छाया-पुरुषों के अधमुंदे चेहरे झांकते और एक-दूसरे अंचल में नन्दन-वन सा था, बढ़िया बाग पक्षी और सरोवर···जिसके किनारे रोज़ी बैठी हुई थी और जलक्रीड़ा के लिए भूतनाथ को मीठे संकेत दे रही थी···दोनों सरोवर में कूद पड़े। पानी में छपाक् की ध्वनि सुनाई पड़ी और रोज़ी की फूल-हंसी···भूतनाथ उस शोभा और सुख में डूबने लगा···रोज़ी का स्पर्श उसे उन्मत्त कर रहा था किन्तु उसने पाया कि मिस्टर शेफ हाथ में गन लिए उसको निशाना बना रहा है।

भूतनाथ को पसीना आ गया। उसने कमरे में ताका, कोई नहीं था, न खिड़की पर। वह पांव दाबकर उठा, किवाड़ का पल्ला खोला। सन्नाटा था। उसे अपने तन्द्रालस स्वप्न पर हंसी आई और वह मुस्कराकर पुनः लेट गया और अपने को 'सत् श्री अकाल' कहकर ठण्डाने लगा, काश, नींद आ जाए और ये दुःस्वप्न पीछा छोड़ें। इसी असमंजस में उसकी आंख लग गई और उसकी सांसें सम हो गईं। चतुर्थ प्रहर की वादे

सबा ने उसके दहकते दिमाग को राहत दी और उसका उत्तेजित स्नायुमण्डल विश्रान्ति पाने लगा।

अभी उसे सोए हुए कुछ ही क्षण हुए होंगे कि उसे लगा कि उससे कोई लिपटा हुआ है और उसे प्यार कर रहा है। कच्ची नींद में उसने समझा कि वह गुलगुले रेशम के तकिये को कुछ समझ रहा है जिसे वह दबाकर सोया था। उसने लिपटाव की उपेक्षा की और शिथिल काया को और ढीला छोड़ दिया लेकिन उसको जान पड़ा कि कोई है अवश्य···तकिया क्या आलिंगन कर सकता है ? तकिए को तो वह स्वयं दाबे हुए था। अर्ध-तन्द्रा में उसने टटोलकर अपनी गन पर हाथ रखा और रिवाल्वर को उठाकर वह एकदम झपट कर उठा और उसने गन तानकर चारपाई को गौर से देखा। रोज़ी हंसी दबाने के लिए तकिये को मुह में भरे हुए थी और उसका शरीर छलक रहा था। हंसी के कम्पन उसकी कोमल काया को हिलती हुई रेशम बना रहे थे और भूतनाथ उसकी ओर गन ताने हुए भौंचक सा खड़ा था ··फिर वह होश में आने पर स्वयं भी मुस्काने मारने लगा और गन सिरहाने रखकर उसका सेफ्टी कैच बंद करके रोज़ी से फुसफुसाया—

"रोज़ी। आर यू मैड ? क्या तुम पागल हो ?"

"य: आय एम, रियली आय एम मैड। आय कुन्डिंट स्लीप···योर्स बियर्ड इज वर्स दैन यू ··हां, मैं पागल हूं···मैं सो नहीं सकी···लेकिन तुम्हारी दाढ़ी तुमसे भी बुरी है, छिदती है !"

"रोज़ी, माय डियर, इफ यू डू नॉट गो टू यौर रूम, दैन आय गो आउट साइड ···यू गो जस्ट नाऊ, डौंट स्टे हियर ···प्रिय रोज़ी अपने कमरे में जाओ। यदि तुम नहीं जाती तो मैं बाहर चला जाऊंगा। हम खतरे में हैं ··जाओ, यहां मत रुको।"

भूतनाथ का कड़ा रुख देखकर रोज़ी विवश होकर चली गई। उसकी आंखों में आंसू थे।

अबकी बार भूतनाथ ने किवाड़ बन्द कर लिए और निश्चिंत होकर सो गया। वह कब तक सोता रहता, कहा नहीं जा सकता लेकिन नाश्ते के समय मैरी ने उसके किवाड़ खटखटाए और जब वह नहीं जगा तो उसने शोर मचाया। अन्ततः भूतनाथ उठा और किवाड़ खोलकर देखा कि दिन चढ़ आया है और सजी-बजी मैरी खड़ी है। शुभ-प्रभातम् के विनिमय के बाद भूतनाथ के लिए मैरी चाय लाई और कुर्सी खींचकर भूतनाथ के पास बैठ गई।

दोनों चाय पीने लगे।

"व्हेयर इज़ रोज़ी ? ···रोज़ी कहां है ?"

"शी इज़ आलसो स्लीपिंग। शी स्लैप्ट आफ्टर यू, इज़िन्ट इट ? वह भी सो रही है। वह आपके बाद सोई नहीं ?

"य: यू नो, शी इज़ अ नॉटी चायल्ड···शी केम टु से गुडनाइट व्हैन आय वाज़ आलरेडी स्लीपिंग···आप जानती हैं, वह शरारती बच्ची है। जब मैं सो गया, तब वह शुभरात्रि' कहने आई थी।"

"लेकिन तुमने उसे भगा दिया, नहीं ?"

"और क्या करता ?"

"वह रो रही थी, बेचारी।"

"बेचारा तो मैं हूं मैरी···वह स्थिति को समझती ही नहीं, मनमानी करती है।"

"यह प्रेम का प्रमाण है···दिस इज़ श्योर साइन आफ लव, नहीं ?"

"श्योर, रवली श्योर···बट, मैरी यू शुड मेक हर अण्डरस्टैण्ड द सिचुएशन···सही है लेकिन उसे हालात के बारे में समझाइएगा।"

"डू यू नो, आय आलसो वांटिड टू कम टु से गुडनाइट···मैं स्वयं शुभरात्रि कहने आ रही थी।"

दोनों ओर से हंस पड़े। भूतनाथ ने पूछा, "मैरी, मेरे जाने के बाद क्या-क्या बातें हुईं, तुमने वादा किया था, तुम मुझे बताती रहोगी।"

"यानी, मैं तुम्हारी जासूस हूं ?"

"इन्डीड यू आर ··निश्चय ही तुम मेरी जासूस साथिन हो ··अब बोलो, स्पीक आउट।"

मैरी उठी। उसने इधर-उधर घूमकर देखा। आस-पास कोई नहीं था। कमरों में चखचख अवश्य थी। बाहर पाकिस्तानी अपने काम में व्यस्त थे। सब ठीक था। मैरी ने आकर कहा—

"मिस्टर गोस्ट ··ओह गोट। ये लोग तुम पर शक कर रहे हैं कि तुम क्या हो ? वे यही पूछ रहे थे लेकिन हम सबने उन्हें बता दिया कि कर्नैलसिंह काम का आदमी है और हमारी सेवा में है।"

"इन्हें शक कैसे हुआ ? जाहिर है कि आपकी सर्विस के किसी आदमी ने बताया होगा···मुझे साबित करना पड़ेगा किसी हिन्दू की हत्या करनी पड़ेगी···तब इन्हें यकीन होगा···यह तो बहुत बुरा हुआ···ये मुझे आतंकवादियों के प्रशिक्षण-शिविरों में जाने देंगे या नहीं ? विल दे परमिट मी टू अटेंड द टैररिस्ट-ट्रेनिंग सेंटर्स ?"

"श्यर, बटो यू विल हैव टू प्रूव यौर हेट्रिड टुवर्डस हिन्दूज ··निश्चय ही पर तुम्हें हिन्दुओं के प्रति अपनी नफरत साबित करनी होगी।"

"एनीथिंग मोर ? और कुछ ?"

"नॉट नाउ, इफ एनीथिंग डैवेलप्स, आय विल लैट यू नो ··अभी नहीं: यदि कुछ हुआ तो बता दूंगी।"

"प्रोमिस ? वादा ?"

"प्रोमिस।"

भूतनाथ ने मैरी को अपनी ओर खींचा और उसे दुलारभरा आलिंगन दिया। वह मैरी की मित्रता पर मुग्ध हो गया। वह राजदार बन गई। उसका विश्वास जीतना बड़ी उपलब्धि थी। मैरी भूतनाथ के भरतमिलाप से मुक्त होकर कुर्सी पर जम गई। वह खुश थी, कि भूतनाथ को अब पूरी तरह यकीन हो गया। उसे यह भी आशा थी कि भूतनाथ, कभी भी, रोजी की नादानियों से चिढ़कर उससे दूर जा सकता है और तब वह मुझे रोजी का दर्जा दे सकता है। प्रेम में मात्र समर्पण नहीं, समझ भी चाहिए और रोज़ी में समझ और नासमझी दोनों थीं, कब कौन हावी हो जाए, कहा नहीं जा सकता, इसलिए आशा थी। भूतनाथ उसको सोचते हुए देखकर उठ गया और थोड़ी देर में अपने को स्वच्छ कर वापस आ गया। उसने कपड़े बदले और मैरी के मस्तक पर हल्का सा प्यार बरसा कर नाश्ते के लिए चला।

नाश्ते के बाद कमाण्डर अशरफ और दोनों जासूस भूतनाथ को लेकर एक तरफ चले गए। उस चौकी पर घुसपैठियों ने एक भारतीय पुलिस अधिकारी को कैद कर रखा था, जिसे मारपीट कर वे पंजाब में भारतीय सेना और सुरक्षा के ठिकानों आदि का भेद पूछ रहे थे किन्तु अभी तक उसने मुंह खोला नहीं था। वे उसे मारना भी नहीं चाहते थे

क्योंकि वह पंजाब के बारे में बहुत कुछ जानता था।

भूतनाथ को कहा गया कि वह उससे भेद ले और न माने तो उसे खत्म कर दे।

दिन भर फिल्मपार्टी वाले चौकी के आसपास के क्षेत्र में घूमते रहे और जीप से कुछ दर्शनीय स्थानों, दृश्यों और इमारतों के छायाचित्र भी ले आए, पर पाकिस्तानियों ने उन्हें सीमा के फोटो नहीं लेने दिए।

भोजन के बाद रात के दस बजे भूतनाथ ने पूछताछ शुरू की। भूतनाथ की सलाह पर कैदी ने सैनिक ठिकानों वगैरह का एक झूठा नक्शा बनाया और पुल, कारखाने, हथियारों के अड्डे आदि के चिह्न लगाकर उसे दे दिया। उसे जेब में रखकर भूतनाथ ने कैदी के चार-छः हाथ लगाए जिस पर बन्दी बहुत चीखा-चिल्लाया। दूरी पर उपस्थित पाकिस्तानी जासूस आश्वस्त हुए कि भूतनाथ अपना काम सच्चाई के साथ कर रहा है। भूतनाथ ने नक्शा उन्हें सौंप दिया और बताया कि अब इस बन्दी को यहां रखना बेकार है। या तो इसे खत्म किया जाए या भीतर कहीं और किसी छावनी में भेज दिया जाए। उसने यह भी कहा कि यदि इसे छोड़ दिया जाए तो यह तोड़फोड़ के काम में मदद कर सकता है। यदि वह धोखा दे रहा है या दे तो उसे उड़ा दिया जाए। वह पुलिस में एक सब इंस्पेक्टर है और मजहबी मन का है, शायद ही झूठ बोलेगा। तो भी सावधानी जरूरी है।"

"मिस्टर कर्नैलसिंह। आप इसे शूट करें, इससे जो मिल सकता था, मिल चुका है। इसे कहां लिए-लिए फिरेंगे? इसका क्या यकीन कि यह भारत में हमारा साथ देगा?"

"अगर इसके परिवार को खत्म कर देने का डर दिखाया जाए तो साथ क्यों नहीं देगा?"

"हां, यह तो मुमकिन है···फिर भी काफिर का क्या यकीन? सरदार! तुम इसे खलास कर दो, आज ही।"

"ठीक है, मेरे साथ कौन चलेगा?"

"एक पूरी टुकड़ी ताकि आपको अकेलापन न लगे और हां मैं भी साथ चलूंगा··· गवाह के तौर पर···।"

भूतनाथ लाचार हो गया। एक निर्दोष देशभक्त की हत्या करनी ही होगी। तभी इन्हें यकीन आएगा। उसने वृहत्तर उद्देश्य के लिए कलेजा कड़ा किया और हत्या के लिए चल पड़ा।

जासूस और सैनिकों की टुकड़ी के साथ कैदी के हाथ पीठ पर बांध कर भूतनाथ चला। उसके हाथ में रिवाल्वर था और वह अजीब अन्तर्द्वन्द्व में झूल रहा था। उसने एक बार तो सोचा कि इन सबको खलास कर दे और सीमा पार कर भारत में पहुंच जाए। कहां फंस गया? किन्तु अब तो भट्टी में सिर दे चुका था। बन्दी को मारना ही होगा। अचानक, उसे एक उपाय सूझा, अगर वह इनमें से किसी एक को, बेहोश कर बन्दी के कपड़े पहिनाकर मार डाले और उसे जला दे तो?···पर, उसे अपनी कल्पना पर हंसी आ गई। भूतनाथ ने लाचारी में एक उसास भरी और अपने कर्म को 'महाभाव' के वृत्त में ले आया···"यह भी तो लीला ही है, अपरिहार्य, इससे बचा नहीं जा सकता।"

कब उस बन्दी को आंख बांधकर खड़ा किया गया, कब भूतनाथ ने गोली चलाई, कब वह चीत्कार कर गिरा, कब उसने लगातार उसके शरीर में और गोलियां पहुंचाई, कब उसे पत्थर बांधकर एक गहरे नाले में डाल दिया गया···यह सब उसने बुरे ख्वाब की

तरह झेला और ऊपर से अकड़ता हुआ मगर भीतर से टूटा हुआ भूतनाथ, अन्त में, जब अपने कमरे में आया तो उसे गश-सा आने लगा। उसका जी मिचलाया, जोर की कै हुई और कराहता हुआ वह चारपाई पर गिर गया। रोजी आज भी शुभरात्रि कहने आई पर उसने उसे डाट कर कहा—

"डोंट टच मी रोज़ी, डोंट टच मी। आय एम अ मर्डरर ''आय हैव किल्ड माय ओन कंट्रीमैन'''ओह रोज़ी, डोंट टच मी। मुझे छुओ मत, मैं अपने देशवासी का हत्यारा हूं।"

रोजी आंखों में आंसू भरे उसे करुण दृष्टि से देख रही थी।

27

जिस अड्डे पर भूतनाथ की फ़िल्म पार्टी को पहुंचाया गया, वह बाड़मेर, राजस्थान के सामने पाकिस्तानी इलाके में बीस-पच्चीस मील पर था। मरुस्थल के बीच छोटी-मोटी पहाड़ियों की घाटी में सिक्खों को भारत में गड़बड़ मचाने और मारधाड़ का यह प्रशिक्षण शिविर बनाया गया था। भूतनाथ चाहता था कि उसे सियालकोट की तरफ रखा जाए पर पाकिस्तानियों ने उसे उधर नहीं भेजा। सियालकोट क्षेत्र में वह रहता तो वह कश्मीर-जम्मू और पंजाब पर नजर रख सकता था। अब तो यह बाद में कभी होगा। एक सुविधा भी थी। वह लम्बे चौड़े रेगिस्तान में कहीं भी अपने यंत्र छिपा कर समाचार भेज सकता था। राजस्थान से सीमा मिली होने से वह सीमा के देशभक्त लोगों द्वारा भी अपना काम करा सकता था। उसने चैन की सांस ली और गुरबानी गुनगुनाने लगा'''

तोड़फोड़ के अड्डे पर, जब वह फिल्मपार्टी को दृश्यांकन के लिए भेजकर ट्रेनिंग के लिए गया तो उसके परिचय में उसकी तारीफ की गई, उसे बहादुर और काफिरों का कातिल बताया गया और एक हिन्दू पुलिस इन्स्पेक्टर की हत्या का श्रेय दिया गया। कहा गया कि कर्नैलसिंह सानेहवाल इतना उपयोगी है कि उसे लंदन-कनाडा और यू० एस० ए० भेजा जा सकता है। प्रशिक्षण लेने वाले सरदार प्रायः नौजवान थे। वे खुश हुए और ट्रेनिंग शुरू हो गई। निशानाबाजी में भूतनाथ का जवाब नहीं था। उसने आवाज़ पर गोली मार कर दिखाया। सरदार लड़कों ने उसे 'सबदभेदी' का खिताब दिया। उसके बाद बड़े हथियारों की शिक्षा दी गई। अड्डे के संचालक सरफराज खां ने तोड़-फोड़ के नायाब तरीके बताए मगर सवाल तो सम्पर्कों का था। आखिर पंजाब में घुस कर किसके यहां शरण मिलेगी? कौन हथियार देगा? हरमंदिर साहब में हथियार कैसे पहुंच रहे हैं भूतनाथ ने अपने त्वराशील मन को शिथिल किया और अनाड़ियों की तरह ट्रेनिंग की मामूली बातों को गौर से समझने लगा गोया वह कुछ न जानता हो। उसकी लगन से साथी प्रभावित हुए।

कुछ दिनों यही सब होता रहा। भूतनाथ ने अपने को रोजी-मेरी से बचाया और वह अड्डे पर ही सोया, वह अड्डे के उस भाग में गया ही नहीं, जहां मिस्टर शेफ की फिल्मपार्टी टिकी हुई थी। भूतनाथ को रोज शाम को यह विवरण दिया जाता कि पाकिस्तानी सेना के एक रिटायर जनरल अकरम के नेतृत्व में सिक्ख आतंककारियों ने क्या-क्या किया। लाला जगतनारायण और दूसरे आलोचकों का किस तरह मुंह सदा के

लिए बन्द कर दिया गया। जो एकता की बात करे, उसे मारो, जो सिक्खों के भा
राज्य का विरोध करे, उसे मारो, जो धर्म और इतिहास की ऐसी व्याख्या करे, जि
हिन्दू-सिक्ख एक कौम सिद्ध हो, उसे काट डालो, जो सन्त जर्नेलसिंह भिंडरावाले व
नुक्ताचीनी करे, उसकी बोली बंद कर दो, जो केन्द्रीय सरकार और राष्ट्रीय एकता व
समर्थन करे, उसकी गरदन नापो। आतंक फैलाकर, मंदिरों को भ्रष्ट कर, गुरुद्वारों व
हथियारों का अड्डा बनाकर, हिन्दुओं को भगाओ, जिस तरह पाकिस्तान बना था, उ
तरह खालसा राज्य बनाओ - यह सब राज भूतनाथ के सामने खुल गया। आतंककारियं
मे इतना आत्मविश्वास था गोया खालिस्तान बनने में कोई बाधा नहीं है और यदि है त
शहादत के लिए वे तयार है।

भूतनाथ ने यह भी देखा कि प्रशिक्षण लेने वालों में धार्मिक उन्मादियों से कहीं अधिक सख्या अपराधियों की है जिन्हें अपराध का स्वर्ण अवसर मिल गया था और मारे जाने पर शहीदों की सूची में नाम लिखा जाने का सुख वट्टे में मिल रहा था। इसलिए अपराधी तत्वों का जोश देखने लायक था। वे 'हिट लिस्टों' को कहा किसे मारना है, उसकी सूचियों को जेब मे रखते और दावत खाने के मूड में सशस्त्र होकर सीमा पार कर जाते।

भूतनाथ को पता चला कि भारतीय सीमा के समानान्तर सिंध से कश्मीर तक आतंककारियों को तैयार करने के शिविरों का जाल बिछा हुआ है और सैकड़ों घुसपैठिए रोज़ रात मे पजाब जा रहे हैं। कहीं पजाब पुलिस की मदद से और कहीं सुनसान सीमापार कर आने जाने वालो का सिलसिला लगातार जारी है। घुसपैठिए गिरफ्तार भी होते हैं, मारे भी जाते हैं किन्तु एक की जगह दस उग आते है। सन्त जी के भारत विरोधी उपदेशों के कैसिट सुन-सुनकर धर्मभीरु सिक्खों में रोष बढ रहा है और नरम नीतिवाले सिक्ख नेताओं के शांतिवाद से चिढकर, सम्पन्न घरों के सिक्ख नवयुवकों और बेकार जवानों को कुछ करने का मौका मिल गया है। सिक्ख-इतिहास में अपना नाम लिखाने की इतनी उमग है कि किसी खतरे या बरबादी की बात को सुनना भी उन्हें पसन्द नहीं है। अजीब पागल-उत्साह का वातावरण बन गया है।

गम और गुस्से से भूतनाथ की आतें ऐंठने लगी, लेकिन लाचारी थी। वह जानता था कि केन्द्रीय सत्ता और सत्तारूढ दल की आपसी रंजिश, प्रतिद्विन्द्वता और एक-दूसरे के विरुद्ध आतंककारियों के इस्तेमाल के कारण हालत और भी खराब हो रही थी। अकालियों की सरकार पजाब मे न बन पाए, इसके लिए कांग्रेसी तत्वों ने पहले जर्नैलसिंह भिंडरावाले को शह दी लेकिन वह बोतल में बन्द दानव की तरह बाहर निकलकर मजहबी जनून जगाने मे कामयाब हो गया। मिस्टर जिन्ना ने भी यही किया था। भूतनाथ को तृतीय दशक और चतुर्थ दशक के मुस्लिमलीग के प्रचारकों का स्मरण हो आया। वही सब तो कट्टरपथी सन्त लोग कह रहे हैं कि हिन्दू और सिक्ख अलग कौम हैं। यह जो दो राष्ट्रों का सिद्धान्त था, वही अब सिक्खों को पृथक् राज्य बनाने की प्रेरणा दे रहा है।

भूतनाथ को सारे पजाब के मंदिरों मे गायों के सिर पड़े हुए दीखे। उसने देखा कि सैकड़ों मोटरसाइकिलों और स्कूटरों पर नौजवान सिक्ख आ जा रहे हैं और गोलियों से निरपराधों को भून रहे हैं। कहीं पेट्रोल पम्प लुट रहे हैं, कहीं बैंक, कहीं डकैती पड़ रही है, कहीं घरों में घुसकर विरोधियों को गोली का निशाना बनाया जा रहा है। हिन्दू और सिक्ख, दोनों को मारा जा रहा है। जो पुलिस अफसर कानून तोड़ने वालों के खिलाफ

कार्यवाही करता है, उसे घात लगाकर मार डाला जाता है। अतः पुलिस का मनोबल गिर रहा है। सिपाही और उच्च अधिकारी आतंकवादियों के सरगनाओं से सम्पर्क रखते हैं और अपनी जान की खैर मनाते हुए उन्हें भेद देते रहते हैं। इससे वे निश्चित होकर मारधाड़ कर भाग जाते है और मूछों पर ताव देकर घूमते हैं। मदिरा, गन और गोरी, चारों चीजें हासिल है, रोमांच का आनन्द है कौम की खिदमत है और भविष्य चमकीला है। यदि खालसा राज्य बन गया तो पौ बारह हैं। यदि मारे गए तो स्वर्ग और बच गए तो हुकूमत के स्वाद और सम्पन्नता···दोनों तरह मजे ही मजे हैं।

भूतनाथ देश की बरबादी के डर से कांप गया और उसका जी मिचलाने लगा। कुछ और भेद मिले तो वह जान पर खेल कर भी खबर देगा और अखबारों में भी लिखेगा। अभी उसने जो देखा है वह तो जाना हुआ था। गहरे इरादे क्या है ? दुश्मन किस सीमा तक जा सकता है ?

एक रात भूतनाथ को गुप्त बैठक में बुलाया गया। चुने हुए सिक्ख युवकों के बीच सरफराज खां के साथ मिस्टर शेफ, कनाडा में आए हुए सरदार मानसिंह, लन्दन के सरदार गोविन्दसिंह चौहान और अमरीका के सरदार पहाड़सिंह अहलूवालिया डटे हुए थे। मिस्टर शेफ ने भूतनाथ का परिचय दिया जिस पर तीनों ने सिर हिलाया जैसे वे पहले से ही इस रहस्य से परिचित हों। मिस्टर शेफ ने वही पुराना नक्शा फैलाया, जिसमें हिन्दुस्तान के विभाजन का आयोजन था। फिर पंजाब का एक विशाल मानचित्र सामने रखा गया, जिसमें कहां-कहां हमले होने हैं, इसके निशान लगे हुए थे। इसमें भारतीय सशस्त्र-बलों के ठिकानों का भी ब्योरा था। एक कम्प्यूटर से सूचनाएं वसूल कर बताया गया कि अब तक कितने काफिरों को मारा गया, कितने विश्वासघाती सिक्खों को खत्म कर दिया गया और कितनों को समाप्त करना है। जिन्हें अभी मारना है, उनके पते ठिकाने प्रस्तुत किए गए और उसके लिए नवयुवक सिक्खों को तैनात कर दिया गया। उन्हें यह बता दिया गया कि उन्हें किस तरह पंजाब मे पहुंचना है और वहां किन-किन से मदद लेनी है। भूतनाथ को इस सूची की जरूरत महसूस हुई। वह आतंककारी गुरुदासपुर जिले के सरदार सुच्चासिंह के जिम्मे थी जो एक खतरनाक अपराधी था। संयोगवश, शुरू से ही सुच्चासिंह, भूतनाथ के प्रति आकर्षित हो गया था और उन्होंने अपने-अपने भेदों का आदान-प्रदान भी किया था। सहजभाव से भूतनाथ ने वह सूची ले ली और खास-खास स्थानों पर होने वाले हमलों का विवरण दिमाग में जमा लिया। मुख्य घटना यह थी कि एक साथ रेलवे स्टेशनों पर आक्रमण हो ताकि रेल यातायात रुक जाए। बसें तो रात मे चलती ही नही थी। अगर रेलें रुक जाएं तो मनमानी करने का मौका मिलेगा और आतंक भी बढ़ जाएगा। हिन्दू व्यापारी अमृतसर, जालंधर और लुधियाने से भाग खड़े होंगे।

···एक लम्बा आदमी अरबी चोगा पहने तस्करों की एक छोटी-सी टोली में चला जा रहा है। रात के अंधकार में, रेत के ठण्डाने से सर्दी बढ़ जाती है, सो अरब वस्त्रधारी लम्बा आदमी सिर को ऊनी मफलर से कसता हुआ, तस्करों के मुखिया से बतिया रहा है।

"उस्ताद ! बाड़मेर की सरहद कितनी दूर है ?"

"यही कोई पन्द्रह मील। अभी तो पांच-सात मील ही चले हैं और आप सभी थक गए ?"

"रेत मे पैर धंसते हैं···हवा कोड़े मारती है, कितनी कटीली है और ऊपर से

दहशत कि पकड़े न जाएं, खुदा कसम, यह थार का रेगिस्तान तो दोज़ख है, आह !"

"हम तो रेगिस्तान के जंगली ऊंट और खच्चर हैं, रात-दिन चलते हैं, कोई थकावट नहीं···आपको सवारी चाहिए न ? मिलेगी, मगर उसके लिए आपको दस दीनारें देनी होंगी।"

"मंजूर है बिरादर लेकिन जल्दी करें, मुझे फौरन वापस होना है, नहीं तो मारे जायेंगे।"

उस्ताद ने अपने एक साथी से कुछ कहा और सुस्ताने के लिए बालू के टीले पर सब बैठ गए। लम्बा आदमी थकावट से बेहाल पसर गया—

'या खुदा। रहम कर।"

उस्ताद, लम्बे अरब की कोमलता पर हंसा। लम्बू ने उस मजाक का बुरा नहीं माना और पूछा—

"उस्ताद ! दोनों तरफ चौकसी है। आप यह हेराफेरी कैसे कर लेते हैं ?"

"वाह ! यह खूब फरमाया आपने। आप नए मुर्गे हैं शायद, नए फंसे हैं। हमारा तो यह धंधा है साहिब ? अल्लाह के फज्ल से दोनों मुल्कों में सब जगह बेईमानी है। अगर अफसर ईमानदार है तो नीचे के लोगों को रिश्वत दे देते हैं, अगर अफसर मुफ्तखोर है तो क्या कहने ! आप किसी दफ्तर, किसी पुलिस स्टेशन, किसी अदालत, किसी तिजारत, किसी कारखाने, किसी चौकी, किसी कौम के रहबर के घर चले आइए और दो जगह दो सौ दीजिए, कामयाब होंगे। दो सौ की जगह दो दिए तो जेल में रौनक अफरोज हो जाइएगा। खुदा गवाह है, हमें यह आराम और यकीन तो अंग्रेजों के जमाने में भी मयस्सर न हुआ। आजाद मुल्क उसी को तो कहेंगे कि तिजारत की आजादी हो !"

"लेकिन आप तो हेराफेरी करते हैं। यह तो स्मगलिंग है न ?"

"ओह ! आप धंधे के साथ धरम का घपला कर रहे हैं हुजूर। धंधे में धरम नहीं चलता, धंधे से धरम चलता है। धंधा न हो तो इन मुल्लाओं-मुरशिदों पीरों-सैय्यदों को चैन की जिन्दगी कैसे मिले ? देखा नहीं कितने मजहबी मसीहे धंधे की वजह से मजे ले रहे हैं, क्या नूर है उनके चेहरों पे ! जब बोलते हैं तो लगता है, पैगम्बर साहब के नवासे हैं, कितना रूहानी सुकून देते हैं ये मदरसों वाले, मस्जिदों-खान्काह वाले, मीलादशरीफ वाले, कैसे अशरफुलमखलूक जंचते हैं। हमारे पैसे पर पलने वाले ये रूह के बदापरवर ! सेठ साहूकार न हों तो इन्हें कौन पूछे ? इनके बड़े पेटों का हिसाब लगाया है आपने ? ···मेरा ख्याल है कि दुनिया का एक बटा दस हिस्सा इन अल्लाह के प्यारों के पेट में जा रिया है। या इलाही, तू इन्साफ पसन्द है, परवरदिगार इन चंडूलों के होश दुरुस्त करना आतिशे दोज़ख में···।"

अपनी ही बात के लहजे पर उस्ताद हंसा, साथी हंसे, लम्बू अरब हंसा और छापे सी मारती हवा के तमाचे खाते हुए आसमान में तारे हंसे जो घटनाओं के एकमात्र साक्षी थे और रंग बदल-बदलकर आदमी नाम के जानवर की करतूतों को ताक रहे थे, टीप रहे थे और अक्सर मनुष्य की दरिंदगी और गंदगी का अवलोकन कर थर-थर कांपने लगते थे।

लम्बा व्यक्ति प्रकृति की तटस्थता पर कुढ़ रहा था। ये नक्षत्र, ये पवन, यह बालू का समुद्र, यह हस्तक्षेप क्यों नहीं करता ? यह मनुष्य नामक प्राणी इतना अज्ञानी है, इतना भावुक है कि इसके समूह को कोई भी मूर्ख बना देता है। क्या भारत और

पाकिस्तान के आम लोग यह नहीं समझते कि उनके नेताओं, बुद्धिजीवियों, उनके धार्मिक अंधविश्वासों ने उन्हें शताब्दियों से एक साथ रहने वालों का दुश्मन बनवा दिया और वे एक-दूसरे को मारकाट कर अलग हो गए ? हिन्दू-मुस्लिम दंगों में लाखों मर गए, बेघर-बार हो गए, कितने बलात्कार हुए, कितने ज़ख्म लगे, कितने तड़पे और जन्नतशीन हो गए, यह क्या कोई सोचता नहीं ? अगर आम पब्लिक अपने बड़े आदमियों के छलकपट को समझ ले तो क्या फिर मुल्क एक नहीं हो सकता ? यही क्यों, सारी दुनिया में जनता, जनता से लड़ रही है, कहीं धर्म के नाम पर, कहीं देशभक्ति के या राष्ट्रवाद के नाम पर लड़ना ही है तो गरीब अमीर से भिड़े तो तो बात समझ में आती है'''पाकिस्तान बनने से किसे लाभ हुआ ? उसी नेता और शासक वर्ग को, जमींदारों और मजहब के ठेकेदारों को आम आदमी को क्या मिला ? वह भारत और पाकिस्तान में, दोनों देशों में गरीब की जोरू की तरह शोषित-पीड़ित है। खालिस्तान बन गया तो फायदा किन्हें होगा, बड़े लोगों को। वे खुदमुख्तार हो जाएंगे और अपने और अपनों को धनी बनाएंगे। खिदमतगार लोगों को क्या मिलेगा, क्या मिलेगा मेहनतकशों को ? जहां-तहां थोड़ी बहुत तरक्की हो जाएगी, दाल में नमक की तरह। मूलतः सब वही रहेगा, मजदूर का मजदूर, छोटे किसान का छोटा किसान, छोटे नौकर का छोटा नौकर'''इन बड़े-बड़े लोगों के भीतर मानव नहीं, दानव बैठा है'''।

"अरे। आप तो फिक्रमन्द हो गए हुजूर। फिक्र तो फकीर को खा जाती है साहिब। फिक्र न कीजिएगा, बेफिक्र रहिए और खतरों से खेलिएगा। जो खेल सकता है वह मीर है। मीर वो जो पहले मारता है। जो पहले नहीं मारता, मरता है सोचिए मत, टूट पड़िए और लूट कर लम्बे हो जाइए। हक उसका जो हक जताता है, हासिल करता है। हकीकत यही है, बाकी तो मालिक, जुबान के करिश्मे हैं। जिसको जुबान के दांव आते हैं, वो गैरदिमाग वालों को उल्लू बना देता है जैसे मस्जिद में नमाज के वक्त मुल्ला हमें बनाता है और खुद खुदा के नाम पर आई रकम चाट जाता है'''नाम पाकिस्तान है लेकिन है कोई अल्लाह का बन्दा पाक साफ ?''' मैं भी बेवकूफ हूं जो बातें बटने लगा, लीजिए साडिनी आ गई। सवार हो लीजिए और दस मुहरें एडवांस में नजर कर दीजिए ताकि किचकिच न हो और दोनों तरफ इत्मीनान बना रहे'''तशरीफ लाइए।"

लम्बू ने दस मोहरें उस्ताद को दी और वे दोनों साडिनी पर सवार हो गए। सधी हुई सांडिनी बिना आवाज किए सीमा की तरफ दौड़ने लगी। साथ के लोग पीछे से आते रहेंगे।

जब भी सांडिनी बलबलाने को होती, उस्ताद उसे थपथपा देता और वह चुप मार जाती। उसे वह रुक-रुककर खिलाता और प्यार की बातें कर दिलासे देता। सांडिनी रेत पर ऐसे भागती जैसे नाच रही हो। यदि नकेल का कसाव नथुनों पर न होता तो वह तूफान बनकर उड़ जाती। लम्बू मियां तस्करों की होशियारी, धीरज और स्रोत-शक्ति पर चकित था। जहां कोसों तक चिड़िया पर नहीं मारती, वहां ये रात की वीरानी में कितने आत्मविश्वास के साथ भटक रहे हैं। लम्बू ने उस्ताद को छेड़ा—"उस्ताद। सच बताना, एक फेरे में कितना मिल जाता है ?"

"मालिक। हम तो गिरोह के मामूली प्यादे हैं, ताहम लाख दो लाख जो भी मिल जाए। असली फायदा तो बड़े लोगों का है'''अब क्या अर्ज करूं। मैं क्या आप पर यकीन कर सकता हूं ?"

"शौक से उस्ताद। मुझे तुम्हारे बॉस ने ही तो तुम्हारे साथ भेजा है न ?"

"दुरुस्त है, तो गौर कीजिए। पाकिस्तान और हिन्दोस्तान में पुलिस, सेना और चलते पुर्जों की मिलीभगत के बिना क्या स्मगलिंग हो सकती है? ज़ाहिर है कि नहीं हो सकती तो फायदा किन्हें हुआ? अब आप गौर करें। इस सरदी पाले में, हम मर रहे हैं और वे गरम लिहाफ़ में अपनी माशूकाओं के गुदाज़ बदन की आंच में आराम से खर्राटे भर रहे होंगे, नींद खुलने पर रेशमी बदनों को लपेटते होंगे और अपनी दाढ़ियों से हसीनों के बालों पर ब्रुश कर रहे होंगे···आह··· हमारा हिस्सा तो मामूली है न हुज़ूर, यह फ़ी सैंकड़ा तिजारत है मालिक, फ़ीसदीतहज़ीब है यानी पचास फ़ीसदी गिरोह के कारगुज़ार का, जो सेठ हो सकता है, कोई नेता हो सकता है, फौज का कर्नल हो सकता है और साहब फिर पचास फ़ीसदी में दस फ़ीसदी पुलिस का, दस हमारा. पांच इन मेहनतकशों का जो माल ढोते हैं, इसी तरह एक हिसाब है जिसमें सब बंधे हैं। फ़ीसदी-तहज़ीब में जिसका हिस्सा जितना ज़्यादा है, उसका उतना ही रौब है।"

"लेकिन आप और आपके ये जांबाज़ मज़दूर और लड़ाकू लोग मारे भी जाते होंगे, तब इनका क्या होता है?"

"खुदा, स्मगलरों को सलामत रखे, बड़े लोग हमारे मालिक हैं। वे ही मुकदमों से छुड़ाते हैं, वे ही हमारे घर-बार चलाते हैं और मुकाबले में मारे गए तो बालबच्चों का गुज़ारा उन्हीं से होता है · वो हमारे आका हैं मालिक।"

"आप कोई और काम क्यों नहीं कर लेते? इसमें खतरा और सरफ़रोशी ज़्यादा है, नाहीं?"

"सिर्फ़ गधा ईमानदार ज़िन्दगी जी सकता है और हमें खर बनना कुफ़्र लगता है। इसमें हुज़ूर खतरा तो है पे जब तक बचते हैं, बहुत मज़े हैं। मसलन हम माल-अस्बाब खरीद फ़रोख्त कर ऐश करेंगे। आपको भी कराएंगे हुज़ूर, ऐसी-ऐसी माशूकाएं और माशूक हैं कि आप अश, अश कर उठेंगे, जी हां, बढ़िया शराब, शबाब और दौलत·· हुज़ूर, हम कोई सूफ़ी तो है नहीं और खुदा उन्हें गारत करे, हमारे ऊपर के बड़े लोग तो अपनी रजाइयों में होंगे, चुनांचे हम अपना हिसाब खुद बना लेते हैं।"

"वो कैसे?"

"वो ऐसे कि मौके पर तो हम हैं न, मान लीजिए हमने चार लाख की अफ़ीम, एक लाख का गांजा, एक का चरस या किसी दिन बीस लाख का सोना या किसी दिन दस लाख की चीज़ें, जेवरात, साड़ियां, घड़ियां, कपड़े और तमाम अलाय-बलाय बेची। अब जो कौल करार होगा, जो भुगतान होगा, हमीं करेंगे। इसलिए हम अपना हिस्सा अगर दस से बीस फ़ीसदी कर लें तो क्या बुरा है?"

"जायज़ है, दुरुस्त है, आपको तो पचास फ़ीसदी मिलना चाहिए, इतनी तकलीफ़ उठाते हैं।"

"हुज़ूर का इकबाल बुलन्द रहे. हमें पुलिस और फौज मार सकती है। हम उन्हें धरका दे जाते हैं, वे हमें। मिलीभगत भी है, चालाकियां भी। यह बड़ा गन्दा काम है पे चुनौती तो चुनौती है। ये ज़िन्दगी है न, इसे गन्दगी कहना चाहिए। जब सब गंदे और नंगे हैं, वहशी जानवर हैं तो मालिक, हम भोंदू बनकर अपने को क्यों ज़ाया करें? इन काम में जब जिसकी घात लग जाए, उसको फायदा है। बन्दापरवर होशियार हो जाए, सरहद आने ही वाली है। यह जानवर है तो गधा हुआ और आदमी से ज़्यादा मातबर है ताहम जानवर है। अगर यह माडिनी डीकने लगी तो हमारे जिस्म गोलियों से छलनी हो जाएंगे, इसलिए इसे यहीं छोड़ें और पैदल चलें। अपने आदमी भी आ जाएं, तब तक

टीले की आड़ में एक-एक ख्वाब हो जाए हुजूर।"

दोनों मुस्कराए। सांडिनी को एक खेजड़े की आड़ में खड़ा कर दिया गया। वह पत्तियां चवाने लगी और उस्ताद तथा लम्बू सावधान मुद्रा मे एक तरफ बैठ गए। थोडी देर मे एक साया उभरा उसे सांडिनी सौंप दी गई और पीछे के सामान से लदे लोगों के आ जाने पर सब बीच मे दूरिया रख-रखकर सरहद की तरफ बढ़े।

बिना किसी बाधा के सब सरहद के गांव तक पहुंच गए। इस गांव का आधा हिस्सा तो पाकिस्तान मे था और आधा हिन्दुस्तान मे। दोनों तरफ की पुलिस इस तरह के गांवों में रहती थी। मगर दोनों को तस्करों की जरूरत थी। इसलिए मैदान साफ था। तस्कर गांव में अपने ठिकाने पर पहुंच गए और एक मकान पर थपकी देकर उसे खुलवाया और किवाड़ बन्द हो गए। यह लगा ही नही कि कोई घटना घटी है या कोई गड़बड़ है।

घर के भीतर सब तैयारी थी। सरदी से बचने के लिए पुआल पर बिछे गरम गद्दों पर कम्बल थे, अंगीठियां और चाय थी, शराब और गोश्त था। तस्करों में, थोड़े आराम और खानपान के बाद लेन-देन शुरू हो गया। लम्बू उनकी आंख बचाकर सरक आया।

लबादे में अपने को छिपाता हुआ लम्बू हिन्दुस्तानी हिस्से की तरफ बढ़ा। रात अपनी काली चादर उतारने को थी तथापि उपाकाल में अभी कुछ विलम्ब था। गांव का मुर्गा अकड़-अकड़ कर बांग दे रहा था। मगर गांव वाले सो रहे थे। गली के नुक्कड़ पर एक दो पहरेदार आग जलाकर ताप रहे थे, इसलिए अंधेरे का आदमी उनकी नजर से ओझल हो जाता था। उन्हें अधिक उसकी चिन्ता भी नहीं थी। वे अपनी बीड़ियां सुलगाते और गप्प लगा रहे थे।

लम्बू अपने को बचाता उस मकान को खोज रहा था, जहां उसे पहुचना था लेकिन अंधकार में कुछ पता नही चल रहा था। उसने कुछ सोचकर वह अरबी लबादा उतारकर अपने कंधों पर डाला। भीतर सेना की वर्दी थी, जिसके कंधों पर अफसर होने के बैज लगे थे। लम्बू ने अपना बैग थपथपाया, उसे कंधों पर डाला, दाहिने हाथ में गन सभाल ली और एक बार फिर उस मकान को खोजने लगा। फिर कुछ याद आ गई। उसने बैग से निकालकर फौजी टोपी सिर पर पहन ली और पुनः खोज शुरू की। गांव छोटा ही था। उसने नीम का पेड और मकान का हुलिया अन्ततः पहचान लिया और सधे हाथों से किवाड़ों पर दस्तक दी। कमरा खुल गया। लम्बू ने संकेत शब्द कहा. उसका जवाब मिला और कैलाश मेघवाल ने निश्चित होकर लम्बे आदमी को भीतर ले लिया। लम्बू ने संक्षेप मे बताया कि वह अभी जाए और हिन्दुस्तानी सीमा सुरक्षाबल के इंचार्ज अफसर को यहीं बुला लाए।

"पर, आप दिन में लौट नही सकते, तब आराम करें। कोई डर नही, कोई तकलीफ नही। बाद में आफीसर से बात कर लें।"

"नही, हमें अभी लौटना है, सवेरा होने को है। सीमा पार कर गए तो वापसी सम्भव हो जाएगी। तुम अभी जाओ, हम रुक नहीं सकते।"

"लेकिन"—कहकर भी मेघवाल तुरन्त गया। तब तक लम्बू नित्यकर्म करने लगा और हाथ-मुह धोकर ताजा दम हो गया। वह साथ लाई सूखी मेवा चबाने लगा और मेघवाल के घर से आई चाय की चुस्कियां लेने लगा।

आधा पौन घटे में सीमा सुरक्षा बल का अधिकारी झपटता हुआ आया। वह

सशस्त्र था और आश्चर्यचकित था कि यह कौन-सी नई वला आ गई। लम्बू को उसने सिर हिलाकर नमस्कार किया। संकेत शब्दों का आदान-प्रदान किया और वह लम्बू के चेहरे को जहन में भरने लगा। लम्बू समझ गया कि इसे भरोसा नहीं हो रहा है। उसने केन्द्रीय खुफिया एजेन्सी का प्रमाणपत्र दिखाया, जिसके वाद वह अधिकारी कायल हो गया। उसने हाथ बढाया—

"मेरा नाम वलवत है, चौधरी बलवन्त। मैं शेखावाटी का जाट हूं और जाट शक्की होता है, साहब, माफ कीजिएगा। यह सीमा की चौकी है। यहां जो आता है, तस्कर या भेदिया होता है। अब हुकम फरमाइए।"

"चौधरी साहब, ये बहुत महत्त्वपूर्ण दस्तावेज हैं। अगर इन्हें दिल्ली पहुंचने में देर हुई तो गजब हो जाएगा। पजाब के हालात से तो आप वाकिफ ही हैं।"

"हा साहब। हमारे भजनलाल ने तो कहा था कि हम इन्हें ठीक कर देंगे पर प्रधानमंत्री तो ढील दे रही हैं न, इस कारण इन सिक्खड़ों का माथा फिर गया है··· क्षमा करें, गलती हो गई।"

"क्या ?"

"सिक्खो के माथा होता कहां है ?"

दोनों हंसने लगे। लम्बू ने संहाल कर अपने थैले से कागज, नक्शे और टेप निकाले और बलवन्त को सौप दिए। फिर लम्बू भेदभरी मुद्रा मे बोला—

"कितना समय लगेगा इन्हें पहुचाने मे ?"

"कुछ भी नही, यहां से एकदम खबर कर देंगे पर कागज पहुंचाने मे एक-डेढ दिन लग सकता है।"

"लेकिन समय बहुत कम है मिस्टर वलवन्त, आप हवाई जहाज से ये कागजात भेज सकते हैं।"

"यहा से जोधपुर ले जाना होगा। फिर भी मैं देखता हूं कि सेना का कोई हेलीकॉप्टर भेजा जा सकता है या नही···आप निश्चित रहें, वी विल डू अवर बस्ट, दिस इज सिक्योरिटी मैटर, इजिन्ट इट ?"

"ओह श्योर, तो मैं चलता हूं।"

"अभी ? सवेरा हो रहा है सर। पाकियो ने पकड़ लिया तो हमारा क्या होगा ? आपकी टक्कर का एक भी आदमी वहां नही है···नही, नही, आप आज रात को जाएं, दिन मे आराम करें···मेघवाल साहब के लिए···।"

"नो, मिस्टर बलवन्त। मैं वहां कर्नलसिंह सानेहवाल हूं। मेरी तलाश हो रही होगी। आप किसी तरह मुझे एक-दो घंटे मे वहा नही पहुचा सकते क्या ?"

"दो घटो मे ?"

"क्यों, वीस-पच्चीस मील पर ही तो वो अड्डा है। आपके पाक-पुलिस में सम्पर्क सूत्र तो होंगे।"

"वो तो हैं लेकिन आपको किस वहाने भेजें वहां ?"

"यह आपका काम है, देश का काम है। आप तो चौधरी हैं, कोई करामात दिखाइए।"

"हूं, लेकिन···आप तब तक आराम करें, खाए-पीएं और अरबी लबादा डाल लें···मैं देखता हूं कि क्या हो सकता है।"

बलवन्त झपटता हुआ बाहर आया। उसने उसी 'उस्ताद' तस्कर को बुलवाया

और उसे भारी इनाम देकर कहा कि वह उस अरब को वापस पहुंचाए। उस्ताद ने आनाकानी की पर मान गया। उस्ताद पाकिस्तानी इन्चार्ज चौकी के पास गया। उस से जीप मांगी और बहाना बनाया कि वह उसके लिए एक माशूका लेने जा रहा है। दिन चढ़ते वापस हो जाएगा। पाक-अधिकारी ने जीप को जाने दिया।

लम्बू अरब को मेघवाल की पत्नी का बड़ा घाघरा पहनाया गया और सिर पर औरतों के बनावटी बाल लम्बू के थैले से निकाल कर सजा दिए गए। कुरती घांघरी पर एक चादर उढ़ा दी गई और पैरों में जस-तस, किसी लम्बे पैरों वाली स्त्री की जूती पहनाकर तुरत-फुरत जीप पर लम्बू को पीछे बैठा दिया गया। ड्रायवर सब्ज ओढ़नी और घाघरी में एक लम्बी तड़ंगी औरत को देखकर मुस्कराया। वह बेचारी शरम से दोहरी हुई जा रही थी। उसने हाथ भर का लम्बा घूंघट खींच रखा था। और वह बगल में एक बगुची को दाबे हुए थी। ड्रायवर फिर मुस्कराया। उस्ताद ने आंख मारी और ड्रायवर के पास ही बैठ गया। भीतर जीप में सिर्फ लम्बू मियां मौके की नजाकत पर बिफर रहे थे।

"इसे कहां ले चलना है, उस्ताद?"

"वाह हुजूर। आप यह भी नहीं जानते? यह तो अपने वतन की है न, सो अभी तो अपने घर जाएगी। रात में मैं इसे सांडिनी पर सवार कर ले आऊंगा। घर पर सब इसे तलाश कर रहे होंगे न? आपको राज बताता हूं, कहीं जिक्र न कर दीजिएगा, वरना मेरी गरदन काट दी जाएगी। राज यह है कि हुजूर कि यह कल रात डिप्टी साहब के अड्डे पर थी···जी हां। आज बड़े साहब की बगल गरम करेगी। अल्लाह गवाह है, यह वो औरत है कि मरदानगी के गरूर निकाल देती है, देखो, कैसी दबी सिकुड़ी बैठी है मगर मौके पर यह शेरनी की तरह मर्द को जमीन दिखा देती है। हां साहब, वह औरत क्या जो मर्द का शीराजा न ढीला कर दे। जो हां, पहले जनम में यह हूर थी, इसका जवाब नहीं। अजी अपने पठान प्रेसीडेंट इसे पा जाएं तो मार्शल ला भूल जाएं। यह मेरी खोज है प्यारे?"

"वाह! उस्ताद! तुम यार बातों का तूमार बांध देते हो। अच्छा चलो, कहां तक चलना है?"

"हुजूर, बस यही कोई दो-चार कोस, फिर सांडिनी मिल जाएगी आप, वापस हो लें।"

उस्ताद की लन्तरानियों से ड्रायवर का दिल बेकाबू होने लगा उसने सोचा कि यह औरत तो तवायफनुमा है, चालू है तो वह भी थोड़ी छेड़खानी कर ले। उसने उस्ताद को आंख मार कर ताका और जीप चलाते हुए उसे पटाने लगा। उस्ताद बिगड़ उठा—
"ड्रायवर साहब, आप साहब के मुंह लगे जरूर हैं मगर यह चीज आपके आफीसर की है जनाब, आप कोई ऐसी वैसी हरकत न करें, हां, नहीं तो ˙ गजब हो जाएगा।"

ड्रायवर को उस्ताद की बात से हेटी महसूस हुई। वह पठान था, लम्बा-चौड़ा, जिन्न जैसा। उसने चुप्पी मार ली और बड़ी तेजी से जीप चलाता हुआ, उस्ताद के इशारे पर एक जगह जीप रोककर औरत की तरफ हसरत भरी नजरों से ताकने लगा। उस्ताद ने उसे रोका। कावा काटकर उसने जीप से लम्बू को उतारा। वह सिकुड़कर, लजाते हुए उतरा। घूंघट उठाकर उसने सांडिनी सवार को कुछ दूर खड़ा देख लिया। सांडिनी को देखते ही लम्बू को शरारत सूझी। उसने औरतों की आवाज में उस्ताद से कहा—

"उस्ताद जी, जरा ड्रायवर जी से कहिए कि वो ओट में छिप जाएं। उनके सामने हम सांडिनी पर कैसे सवार होंगे, हाय सरम लगती है हमें।"

पठान ड्रायवर लम्बू की लहकदार जनाना आवाज सुनकर पागल हो गया। उसने दौड़ कर लम्बू का घूंघट तो नहीं उघाड़ा पर अपनी विशाल भुजाओं में उसे लेना चाहा। लम्बू ने अपना सिर इतनी जोर से पठान ड्रायवर के मुंह पर मारा कि वह दर्द से छटपटाते हुए गिर पड़ा और "मार डाला, मार डाला कम्बख्त ने," कहता हुआ मर्राने लगा। उसके होंठ फट गए और जीभ कट गई।

लम्बू ने लजीली खिलखिलाहट बिखेरी और लपक कर सांडिनी पर सवार हो गया। उस्ताद ड्रायवर को दिलासा दे रहा था—"ड्रायवर साहब, देखा, इस नाजनीन को, मैं कहूं कि यह कयामत है, बला है, आफत है"' दर्द कुछ कम हुआ?

लम्बू ने पुकारा—"आइए उस्ताद, तशरीफ लाइए, जल्दी।"

उस्ताद समझ गया। वह सांडिनी पर सवार हो गया और नकेल हाथ में पकड़ कर उंटनी का रुख प्रशिक्षण-अड्डे की तरफ किया। लम्बू ने ओढनी उतार कर फेंक दी। ड्रायवर ने देखा कि एक मुच्छड़ सरदार उस्ताद के पीछे घाघरा पहने बैठा है और दोनों ठहाका लगा रहे हैं।

ड्रायवर ने समझा यह जिन्नात की करामात है। वह भौंचक-सा देखता रह गया। सांडिनी हवा हो गई।

28

भूतनाथ, लम्बू अरब के वेश को उतारकर जब दिन चढ़े पाकिस्तानी अड्डे पर आया तो वहां सब सामान्य लगा। किसी ने कोई सवाल-जवाब नहीं किया, न उत्सुकता दिखाई। प्रशिक्षण केन्द्र के इंचार्ज अधिकारी ने अवश्य इतना कहा कि वह आज विलम्ब से आया है, लेकिन भूतनाथ ने तबीयत अलील होने का बहाना किया जिसे अधिकारी मान गया। यह अक्सर होता था कि ट्रेनिंग लेने वाले सिक्ख जवानों में से कुछ व्यक्ति लेट आते थे, इसलिए भूतनाथ का विलम्ब कोई खास मुद्दा नहीं था।

दिन भर सब ठीक-ठाक रहा। दूसरे-तीसरे दिन भी यथास्थिति रही। इस सन्नाटे से भूतनाथ को आश्चर्य हुआ कि भीतर क्या पक रहा है। उसने सुच्चासिंह से पूछा तो पता चला कि लगभग चालीस रेलवे स्टेशनों पर एक साथ आतंककारियों ने पंजाब में हमले किए और उन्हें जला डाला। बसों से खींच-खींचकर बिहारी हिन्दू श्रमिकों को मारा गया क्योंकि वे पंजाब में हिन्दुओं के वोट बढ़ा रहे हैं। अगर बिहारी और दूसरे गैरसिक्ख मजदूर इसी तरह आते रहे तो एक दिन पंजाब में भी सिक्खों का बहुमत नहीं रहेगा और सिक्ख राज्य का आधार ही खत्म हो जाएगा। यह भी पता चला कि कई विशिष्ट व्यक्तियों, जिनमें पुलिस अफसर, पत्रकार, अध्यापक और कांग्रेस पार्टी के अधिकारी थे, का सफाया कर दिया गया।

भूतनाथ को झटका लगा। वह उदास वापस आकर अपने कमरे में लेट गया। उसे आश्चर्य था कि उसकी रपट पर अमल क्यों नहीं हुआ? क्या बकेवर के थाने की वारदात में, थानेदार के अंगभंग होने के बारे में उसका नाम आ जाने से और राजा

राजनाथसिंह के उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे देने से राजा साहब ने उसके विरुद्ध चुगली खाई है कि भूतनाथ अविश्वसनीय है या यह कि वह नक्सलियों से मिला हुआ है और विधिवत् चुनी हुई सरकार को गिरा देना चाहता है ताकि गड़बड़ी के हालात में सशस्त्र क्रान्तिकारी, पुलिस और सेना को वरगला कर क्रान्तिकारी सरकार बना लें ?

कहीं कोई गड़बड़ ज़रूर है। कोई अज्ञात व्यक्ति उसके पीछे पड़ा हुआ है। वह भेद खोल रहा है। वह कौन है ?

बहुत देर तक भूतनाथ उलझा रहा लेकिन कोई सूत्र सुलझा नहीं। वह थक गया, बेहाल हो गया। उसने शीतकाल में गरम पानी से स्नान किया और कपड़े बदल कर मेज़ पर अगुलियां बजाने लगा कि क्या किया जाए। उसके ध्यान में रेलवे स्टेशन जल रहे थे रेलगाड़ियां पटरी से उतर रही थीं और आततायियों की तनी हुई गनों की नलियों से गोलियां और धुएं निकल रहे थे। मर्म-भेदी चीखों से भूतनाथ का दिल धड़-धड़ाया। उसने उठकर पेय बनाया और चुस्कियां लेने लगा। रात अपना जाल फलाने लगी थी और उसकी स्याह सारी पर नक्षत्र बुंदकों से चमकने लगे थे। बाहर वृक्ष पर कोई पक्षी रिरिया रहा था, शायद उसके घोंसले पर कोई सांप दखल कर रहा होगा''' यह जीवन कितना निर्दय है, सब एक दूसरे की घात में हैं यदि यह लीला है, प्रभु का खेल है या प्रकृति की स्वभावज प्रक्रिया है तो यह सब बहुत दग्धकारी है'''भूतनाथ को 'महाभाव' याद आया'''महाभाव '', ग्रेट सेंटीमेंट, वाह ! क्या उपाय बताया गया ! उसके लिए दिल को कितना कठोर करना पड़ता है ' काश, वह व्यक्ति मिल जाए जो मेरी भूमिका को मटियामेट कर रहा है भूतनाथ को मेरी की याद आई। शायद वह कोई भेद जानती हो। काश, वह आज आ जाए।

अचानक उसे दरवाज़े पर आहट सुनाई पड़ी। उसने रिवाल्वर पर बांया हाथ रखा और आने वाले से भीतर आने को कहा। जो व्यक्ति भीतर आया, वह आतंक फैलाने की शिक्षा लेने वालों में से ही एक था। उसका नाम केहरीसिंह था और वह शरीर से साधारण मगर दिमागी और कम्प्यूटरायस का सिक्ख था। केहरीसिंह किताबें बहुत पढ़ता था और बहस के मौके ढूढ़ता था। भूतनाथ खुश हुआ कि केहरीसिंह उसे उसकी उधेड़बुन से बाहर ले आएगा। उसने केहरीसिंह को पेय दिया, और हंसकर पूछा कि उसने आज कौन सी नई किताब पढ़ी है ?

केहरीसिंह ने गुस्से से भौंहें चढ़ाईं और भूतनाथ को देर तक ताकते रहने के बाद तमक कर कहा, "कामरेड भूतनाथ। तुम बहुत गलत लाइन पर चल रहे हो।"

"किसी नई किताब में पढ़ा होगा कि जो दोस्त मिले उसे भूत कहो और उसकी लाइफ खराब करो, क्यों ?"

केहरी कसमसाया। वह अगर बुद्धिवादी प्रकार का न होता तो भूतनाथ पर आक्रमण कर देता। उसने उसे खा जाने वाली नज़र से देखा और दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा। क्रोध कुछ कम हो जाने पर केहरी ने गला साफ किया—"कामरेड भूतनाथ।"

"प्लीज़ काल मी बाय माय रियल नेम, आय एम कर्नलसिंह, नॉट भूतनाथ।" भूतनाथ ने डांटा।

"ओ. के., ओ. के. मिस्टर कर्नलसिंह, आप पर बूर्ज्वा इंडियन गवर्नमेंट के साथ सहयोग करने, जनवादी अकाली आन्दोलन और संगठन के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने, सिक्ख-नेशन को भारतीय राष्ट्र संघ में रहने के आत्मनिर्णय के अधिकार को मान्यता न

देने, सिक्ख-क्रान्तिकारियों के सत्ताविरोधी संघर्ष के साथ गद्दारी करने और अपराधियों-तस्करों-डाकुओं के साथ सांठ-गांठ करने और सरकार के पक्ष में उनका समर्पण कराने जैसे गम्भीर आरोप हैं। आपको क्या कहना है ?"

भूतनाथ को केहरी का तेवर देखकर हंसी आ गई। वह सरकडे-सा लम्बा, दुबला, किताबी कीडा उसे धमकी दे रहा है। अट्टहास से केहरी और बिगड़ गया। उसने एक और आरोप जड दिया—"कामरेड। तुम एक इंकलाबी साथी का मज़ाक उड़ाकर उसका अपमान कर रहे हो।"

भूतनाथ ने केहरी को जवाब न देकर उसे एक गिलास पेय और दिया, जिसे उसने स्वीकार कर लिया। भूतनाथ के मन में जुमला उभरा, 'शैतान शराब स्वीकार कर रहा है और मेरा वजद मिटाने आया है।' यह सोचकर भूतनाथ पुन: हंसने लगा। फिर गम्भीर होकर बोला—

"मिस्टर केहरीसिंह, कामरेड शब्द यहां इस मुल्क में तुमने बोला, इसकी सज़ा जानते हो ?"

"आय एम सॉरी।"

"ठीक है, ठीक है। कोई बात नहीं। अब कभी किसी को यहां कामरेड मत कहना। दूसरी बात यह कि तर्क दो कि मेरी लाइन गलत है।"

"मिस्टर कर्नैलसिंह। आप·· तुम शुरू में ठीक चले मगर सिक्ख-क्रान्ति के सदर्भ में तुम राष्ट्रवादी भ्रमो के शिकार हो गए। अकाली-आन्दोलन एक पूरी 'जाति' या 'कौम' या नेशनैलिटी के अस्तित्व का प्रश्न है। सिक्खो को अधिकार मिलना चाहिए कि वे भारत संघ मे रहें या न रहें, वह एक पृथक्, स्वतन्त्र कौम है। टैक्टीकली, क्रान्ति की कार्यनीति की दृष्टि से हमें अकालियों, विशेषकर गरम नीति वालों का समर्थन करना चाहिए। सिक्ख लडाकू कौम है। वह भडक चुकी है। वह सत्ता और व्यवस्था से टकरा रही है। उसे दबाया नही जा सकता। उसे पाकिस्तान, चीन और पश्चिमी देशों से मदद मिल रही है। सेना मे असन्तोष है, किसी भी क्षण सेना और सशस्त्र पुलिसबलों मे विद्रोह हो सकता है। अराजकता की स्थिति पैदा करो और जब भारी अशांति फैल जाए, चीन पाकिस्तान की मदद से, सेना, पुलिस और जनता के सहयोग से क्रान्तिकारी सरकार कायम कर लो। यदि कश्मीर, पंजाब और उत्तरपूर्वी जातियों, नेशनलिटीज, मीजो, नागा वगैरह को आत्मनिर्णय का अधिकार दे दिया जाए तो भारत में इंकलाबी सरकार बन सकती है। कश्मीर पाकिस्तान में जाए या स्वतन्त्र हो जाए, पंजाब स्वतन्त्र होना ही चाहता है, उत्तरपूर्वी प्रान्त स्वतंत्र होकर अपना सघ बना सकते हैं या जो चाहें कर सकते हैं। शेष भारत के भाग पर हमारी इंकलाबी हुकूमत होगी।"

भूतनाथ केहरीसिंह के किताबीपन पर पुन: ठहाके लगाता रहा। फिर समझाकर बोला—"बादशाहो। तुम ज़ोर से बोल रहे हो। तुम्हारी-हमारी आवाज रिकार्ड भी हो सकती है। क्यो न हम बाहर चलें और कही एकान्त में बातें करें ?"

भूतनाथ ने केहरी को तीसरा पैग दिया, जिसे वह पी गया और भूतनाथ की तरफ इस तरह देखने लगा कि आगे तलब लगी तो क्या होगा। भूतनाथ ने अपने झोले की तरफ इशारा किया तो केहरी सतुष्ट हो गया।

दोनों अधकार मे छायाओ की तरह चलते गए। भूतनाथ जानबूझकर उधर गया, जिधर फिल्मपार्टी का डेरा था। कब से उस मनोहर सग साथ से भूतनाथ वंचित था। वह उधर ही बढ़ा।

रोज़ी-मैरी के डेरे से कुछ ही दूर एक टीले पर दोनों जा बैठे और भूतनाथ के संकेत पर केहरीसिंह शुरू हो गया।

"कामरेड भूतनाथ···ओह सॉरी, मिस्टर कर्नलसिंह, जो आरोप तुम पर लगाए गए हैं, उनका जवाब दो, सीरियसली, गम्भीरता से एण्ड नो जोक्स प्लीज, और मजाक बिल्कुल नहीं।"

"केहरीसिंह। तुमको मैं प्यार करता हूं क्योंकि तुम स्वप्नदर्शी हो। लेकिन तुम हकीकत नहीं देखते, अपने नेता की विचारधारा की लाइन देखते हो···देखो, एनी हिलेशनिस्ट्स···वर्ग शत्रु को मारो की नीति वाले चारू मजूमदार के अतिवादी सिद्धान्त को तुम अब भी मानते हो क्या? क्या नक्सलवादी आंदोलन की अदूरदर्शिता और दु:साहसिकतावाद से भ्रम नहीं टूटा? जनता को साथ लिए बिना, वर्ग शत्रु का उन्मूलन व्यक्तिगत स्तर पर दुराव-छिपाव से चलता रह सकता है लेकिन बड़ा एक्शन होते ही पुलिस और सेना क्रान्तिकारियों को बीन लेती है, बीन लेगी और जनता चुप रहेगी। इसलिए कामरेड चारू मजूमदार की लाइन गलत है। जनता को राजनैतिक शिक्षा दो, उसे साथ लाओ और साथ ही उसके संघर्षों में जहां जरूरी हो, वहां सशस्त्र संघर्ष करो, कराओ। और जहां तक इस सिक्ख-क्रान्ति का प्रश्न है, बिरादर, यह धर्माधारित आंदोलन है, वर्गाधारित नहीं। अतः खालसा राज्य बनते ही यह शोषितों के प्रति क्रूर हो जाएगा। अभी भी सिक्ख-भूपति मजदूरों के साथ जमींदाराना व्यवहार करता है। आज़ादी के पहले, भारतीय साम्यवादी दल, सी. पी. आई. ने इसी जाति या कौम या नेशनैलिटी के तर्क पर पाकिस्तान का समर्थन किया था, नतीजा सामने है। आज पाकिस्तान में साम्यवाद निषिद्ध है जबकि भारतीय जनतंत्र में वैधानिक साम्यवादी दलों पर कोई रोक नहीं है। राष्ट्र हमारा सबका है, केवल पूंजीपतियों और भूपतियों का नहीं। सोवियत रूस और चीन अपने-अपने देशहित और उसकी भौगोलिक सीमा को अखंड रखना चाहते हैं, तब हम अपने मुल्क के टुकड़े क्यों करवा दें? और केहरीसिंह जी, जनसाधारण भी देश को अखण्ड रखना चाहता है। राष्ट्रवाद जनता के मन में मजबूती से जम गया है। जो भूल सन् 1942 में हुई, वही आप फिर कर रहे हैं···बाय द वे, कामरेड चारू मजूमदार-ग्रुप के कितने लोग अपने साथ हैं? लायन-वायन तो होती रहेगी, पर पहले पता तो चले, कौन-कौन हैं यहां अपनी विचारधारा वाले?"

केहरीसिंह एक क्षण झिझका। भूतनाथ ने उसे एक पैग बनाकर दिया जिसे वह उत्तेजना में चढ़ा गया और अपनी अंगुलियों के नाखून देर तक देखने के बाद बोला—

"तुम्हें एक्सपोज करने का आदेश मुझे मिला है, कामरेड भूतनाथ। तुम मुझे प्रेम करते हो, मुझसे खेलते हो, बड़े भाई की तरह, मेरा ख्याल रखते हो, यह जानते हुए भी कि मुझे हुक्म हुआ है कि अगर भूतनाथ भारत सरकार की तरफ से जासूसी बन्द नहीं करता तो उसे नंगा कर दो। पाकिस्तानी उसे खत्म कर देंगे···मैं आप जितना तजुर्बा नहीं रखता लेकिन हमारा ग्रुप आपके डबल एजेन्ट होने की खबर रखता है और किसी भी क्षण आप गिरफ्तार हो सकते हैं··हां, अगर आप यह वादा करें कि भारत सरकार के भेद आप पाकिस्तान और खालिस्तान के समर्थकों को देंगे तो मुमकिन है, आपको खुला छोड़ दिया जाए···मैं सोचता हूं इसी लाइन पर आपको चलना चाहिए।"

"यानी, मैं देश के टुकड़े कराने की साजिश में शामिल हो जाऊं?"

"देश किसका जी? देश तो बड़े लोगों का है, जब देश छोटे लोगों का हो तब देश की परवाह कीजिएगा।"

भूतनाथ इस चारू ग्रुप के अधमतवाद को समझता था। केहरीसिंह के प्रति उसके मन मे प्यार उमड़ा। बेचारा कितना जहीन और ईमानदार है, सीधा और सच्चा। उसने झोले से पानी और ह्विस्की निकाल कर एक और पैग तैयार किया पर अबकी बार केहरीसिंह ने दृढता से मना कर दिया। भूतनाथ ने इस सावधानी को नोट किया। सोचकर उसने कहा—

"कामरेड केहरीसिंह। ठीक है, मैं आपके ग्रुप गुरु से मिलूगा और भारत सरकार के कुछ भेद दूगा, मगर वही, जिनसे देश अखडित रहे।"

"नही, तुम्हें सब कुछ बताना होगा, क्रान्तिकारी सच्चाई के साथ, हर एक बात, हर एक कदम जो तुम उठाओ या प्लॉन करो···वरना, मैं तुम्हारा राज फाश कर दूगा।"

"जरूर कर देना लेकिन मुझे अपने ग्रुप लीडर से तो मिलवा दो ताकि मैं सफाई दे सकू।"

"तुम यकीन खो चुके हो, कामरेड। तुम पर सब शक करते है और डरते भी है। तुम रहस्यमय हो न·· तुम काम करके दिखाओ, भेद बताओ, तभी हमारी टोली तुम्हे छोड़ेगी, नही तो···नही तो तुम्हारा सफाया कर देगी···तुम कोई राज अभी क्यों नही बता देते ताकि मैं उन्हें इत्मीनान दिला सकू ··तुम्हे थोड़ा वक्त मिल जाए।"

"मेरा मुख्य रहस्य यह है कि साम्प्रदायिक हिंसा को सामाजिक या जनता की तरफदार हिंसा मे बदला जाए। शेष सब तो कार्यनीतिया है। रणनीति यही है और चूकि अकालीदल सिक्ख-शॉवनिज्म, सिक्ख-अंधराष्ट्रवाद से मोहित होकर काम कर रहा है, वह पृथकतावादियो का खुलकर विरोध नही कर रहा है, उनसे डर कर, उन्हें तरह देकर उन्हे बढावा दे रहा है, इसलिए मैं उनका समर्थन कैसे कर सकता हूं···सिक्खो मे जो इकलाबी अहसास या कमजकम, प्रगतिशील तत्व हैं, गैर साम्प्रदायिक और वर्ग-चेतना वाले, उन्हें आगे आकर इस खूनी जैसे मतान्ध-सकीर्ण रक्तपात करने वालो का विरोध करना चाहिए, तब सिक्ख, किसान, मजदूर और समझदार बुद्धिजीवी उनका साथ देने लगेगे।"

"हमें इस बूर्ज्वा, इस सरमायादार, निज़ाम को खत्म करने के लिए सिक्ख-भ्रान्ति का इस्तेमाल करना चाहिए। बाद में क्रान्तिकारी ताकत बढ़ने पर हम इन सिक्ख-खुर्मनियो को देख लेगे।"

"यही गलती शासकदल ने की थी। कुछ कांग्रेसी नेताओं ने अकाली सन्तो की मज़हबी राजनीति को प्रभावहीन करने के लिए खालसा राज्य बनाने के नारे पर भिण्डरवाले सन्त को खड़ा किया था, परिणाम सामने है। साम्प्रदायिक मतान्धता, फासिस्टि हो जाती है, पजाब की हिंसा, इसका प्रमाण है।"

केहरीसिंह भूतनाथ के तर्क का वजन समझता था, लेकिन ग्रुप-वफादारी और चारू मजूमदार दल के नेताओ की लायन मे उसका अंधविश्वास था। वह चिढ़कर बोला—

"तुम बहस भी कर लेते हो, विचार भी, बहादुर भी हो, ऐयार भी लेकिन मैं तुमसे सहमत नही हू। मैं तुम्हें आखिरी बार होशियार करता हूं···बेहतर है, तुम पाकिस्तान छोड़ दो और अपनी स्ट्रेटेजी, रणनीति के लिए कोई और जगह चुनो, गुड बाय, कामरेड भूतनाथ।"

केहरीसिंह झटके से उठा और भूतनाथ के रोकते-रोकते अपने हैंगरनुमा लम्बे

पैरों से ज़मीन नापता अंधेरे में अदृश्य हो गया। भूतनाथ चिंतित हुआ कि ये इन्कलाबी इतने अंधे हैं, आविष्ट कि मज़हबी-फासिस्टों का साथ दे रहे हैं और क्रांति के सपने ले रहे हैं। ये अंधे आदमी यह नहीं जानते कि इस नीति से देश टूट जाएगा और देशभक्त जनता इन्हें कभी माफ नहीं करेगी। वह राष्ट्रवादियों का साथ देगी भले ही वे मुल्क में सरमायादारी कायम करें और योजनाओं से उच्च और मध्यवर्ग को मज़बूत करते रहें। वे भले ही भ्रष्ट और भोगी समाज बना रहे हों पर वे राष्ट्र की एकता और अखण्डता के समर्थक होने से जन-जन के मन में जो देशभक्ति का भाव है, उसको भुना कर बार-बार चुनाव में जीतते रहेंगे और ये क्रांतिकारी उसी राष्ट्रवाद के विरुद्ध जा रहे हैं। काश, इन्हें कोई वियतनामी होचोमिन्ह सा लीडर मिलता…काश…!

भूतनाथ काफी देर तक विचारों को उधेड़ता बुनता रहा। फिर उसकी छठी इन्द्रिय जाग गई। उसे लगा कि कुछ छायाएं उसे घेर रही हैं। उसने अपनी गन को दाएं हाथ में लेकर बाएं हाथ से, झोले से टार्च निकाली और सहसा रोशनी डाली। एक साथ गोलियों की बौछार हुई किन्तु भूतनाथ पहले ही ज़मीन पर लम्बलेट हो चुका था। उसे लगा कि घेरने वालों में वह टिड्डा केहरीसिंह भी है। उसने टीले से एक ओर को लुढ़कना शुरू किया, उधर जिधर केहरीसिंह था।

केहरीसिंह बड़े कद के टिड्डे की तरह पैर फैलाए खड़ा था और टीले के ऊपर देख रहा था। वह बालू में बिना आवाज किए लुढ़कते हुए भूतनाथ को नहीं देख सका। भूतनाथ चाहता तो केहरी को नज़दीक से गोली मार सकता था मगर वह उसे बेवकूफ, बक्कू और किताबी-कीट समझता था। वह जानता था कि इस ग्रुप का सरगना मतान्ध ब्यक्ति है। उसी ने केहरीसिंह की रपट पर कातिलों को भेजा होगा। भूतनाथ ने टार्च की रोशनी में देख लिया था कि वे पांच व्यक्ति हैं, जिनमें केहरी भी है। उसने सोचा कि कुछ न समझ पाने के कारण अब वे पांचों इकट्ठे होंगे तब इन्हें मजा चखाया जाएगा। सचमुच अंधेरे में, टीले पर मार करने पर भी कुछ दिखाई नहीं पड़ा। भूतनाथ बालू अपने ऊपर कर सिर्फ सिर निकाले, सांस साधे, टिड्डे केहरीसिंह से कुछ दूर पड़ा हुआ था।

पांचों इन्कलाबी केहरीसिंह के पास सरक आए और इशारों से मशवरा हुआ कि भूतनाथ कहां चला गया। केहरी बोला—"उसका नाम भूतनाथ है न। मैंने रोका था कि उसे मौका दो, एकदम हमला मत करो। लेकिन किसी ने माना नहीं, अब इस लम्बेचौड़े टीले की बालू को छलनी में छानो, तब वह मिलेगा। वह भूत आदमी है, वह रूहपोश हो सकता है, नज़र से गायब हो सकता है, वह अपने आपको…।"

"वह न भूत है, न जिन्न, वह आदमी है। बालू में छिपा है और कहां गया? मगर हम ज्यादा वक्त तक यहां नहीं रुक सकते। गोलियों की आवाज़ से वे आते ही होंगे और कम्बख्त अमरीकियों का डेरा तो पास ही है। वे आ सकते हैं, क्या किया जाए कामरेड?"

"एक बार टीले पर देख तो लो। आखिर कहां उड़ गया? वहीं छिपा होगा बालू ओढ़कर।"

केहरी वहीं रहा। चार आदमी, रिवाल्वर हाथ में लिए हुए टीले पर चढ़ने लगे। जब वे टीले पर पहुंच गए तो भूतनाथ ने टिड्डे केहरी के सिर पर उछल कर रिवाल्वर की मूठ मारी और कहा कि तुम्हें मार सकता था, मगर तुम बेवकूफ हो, इसलिए छोड़ रहा हूं।"

खोपड़ी पर चोट से टिड्डा केहरीसिंह बैल सा डकराया और गिर गया। चारों टीलेवाले साथी नीचे को भागे मगर भूतनाथ तब तक आड़ा-तिरछा दौड़ता-फलांगता अमरीकियों के डेरे तक पहुंच चुका था। मुकाबला खत्म हो गया।

रोज़ी, मैरी, मिस्टर शेफ, ब्रोमले और राबर्ट, दिनभर फिल्म के लिए छायांकन के बाद अपने-अपने कमरों में सुस्ता रहे थे मगर इतने पास गोलियों की आवाज़ से वे क्वार्टरों से बाहर निकल आए थे। जो छाया उनकी तरफ चक्कर खाती भागती हुई आ रही थी, उसे ललकारने पर जब "गोस्ट, गोस्ट" सुनाई पड़ा तो उन्होंने अपनी गनें नीचे कर लीं। हंसता हुआ, झोला बगल में चांपे भूतनाथ प्रकट हो गया।

"गुड ईवनिंग, लेडीज़ एण्ड जेंटलमैन। दिस इज़ योर गोस्ट···ओह् गोट, हः हः हः हः।"

रोज़ी लता की तरह लहराकर भूतनाथ से लिपट गई। मैरी भी भागी और उसने भी भूतनाथ से भरतमिलाप किया। उसे टटोला कि वह घायल तो नहीं है। भूतनाथ हंस रहा था, "डोंट वरी, आय एम नॉट वूण्डिड···मैं घायल नहीं हूं। चिन्ता मत करो।" मिस्टर शेफ और अन्य सब भी लपक कर भूतनाथ के पास पहुंचे, उसे छुआ और उसे स्नेह से साथ ले आए। भूतनाथ रोज़ी को गोद में उठाए हुए था। वह उसके वक्ष में घुसी जा रही थी। उसने उसे माथे पर प्यार दिया और धीरे से उतार कर खड़ा कर दिया पर वह पुनः भूतनाथ से लिपट गई। सब भावभरी हंसी हंसने लगे। मैरी की आंखों में आंसू थे और रोज़ी तो पागल सी सिसक रही थी।

आवेग उतरने के बाद सब खाने की टेबिल पर बैठ गए और भूतनाथ से उसका किस्सा सुनने लगे। मिस्टर शेफ गम्भीर हो गए। उन्होंने सुझाव दिया कि भूतनाथ को बाड़मेर के रास्ते निकल जाना चाहिए। कुछ समय बाद सब भारत में कहीं मिलें और तब अमरीका चला जाए। वहां भूतनाथ की जरूरत है और रोज़ी भी इसे पसन्द करेगी, क्यों?

रोज़ी ने खुशी से तालियां बजाईं। मैरी भी खुश हुई यों वह बहुत उल्लसित नहीं हुई। भूतनाथ अपने चिन्तन में लीन हो गया। सन्नाटे के बाद उसने आह सी भरी और कहा—"मुझे आपत्ति नहीं लेकिन···लेकिन···ठीक है, मैं भारत चला जाऊंगा। वहां मुझे कुछ काम करने हैं। फिर हम अमरीका चल सकते हैं, अगर तब तक सुरक्षित रहे तो।"

"क्या मतलब? तुम डर रहे हो क्या?"

"भूतनाथ को भय? हरगिज नहीं, लेकिन अब यहां रुकना अपने मिशन को मटियामेट करना है। नमूना देख ही लिया है। यही सब और दूसरे अड्डों पर होगा। इसलिए भारत पहुंचना ही उचित है। वहां मेरी लम्बी गैरहाज़िरी से बहुत नुकसान हो रहा होगा।"

"एग्रीड, ठीक है। मिस्टर गोस्ट, आप स्वयं जाएंगे या आपको भारत भेजने का प्रबन्ध मैं करूं?"—मिस्टर शेफ कुछ सोचते हुए बोले।

"आप लोग भी क्यों नहीं चलते? आपने चित्र तो ले लिए होंगे। आप तो लाहौर, रावलपिण्डी, और कश्मीर भी हो आए होंगे?"

"सभी जगह तो नहीं लेकिन काफी कर लिया है मगर हमें अभी कई जगह जाना है। तभी फिल्म पूरी होगी···आपके साथ कोई जाना चाहे तो मुझे एतराज नहीं, कोई जाना चाहता है क्या?"

"मैं जाऊंगी, मैरी, तुम भी चलो।"

"मैं ?"

"क्यों ? तुम क्यों नहीं ? एक बार और मिस कैरी से नहीं मिलोगी ? उसने अपना बदला ले लिया, ब्रेवो, वह बहादुर औरत है, टेरीबिली करेजियस, क्या भयकर साहस है, उसमें !"

मैरी ने भूतनाथ की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा मगर वह न जाने कहां खोया हुआ था। मैरी ने कहा—

"रोज़ी ! तुम अकेली मिस्टर गोस्ट के साथ जाओ और मिस कैरी के किस्से सुनो, उस पर अधूरी फिल्म पूरी करो।"

"आल रायट। बट मिस्टर ब्रोगले, मिस्टर राबर्ट ?"

"हमें तो पाकिस्तान में काम है। मिस्टर गोस्ट अकेले जाएं। हम जल्दी ही मिलेंगे।"

"मैं सहमत हूं। मेरा काम इस तरह का है कि रोज़ी की देखभाल उसमें बाधा डालेगी। बेहतर यह है कि मैं अकेला जाऊं और आप सब दिल्ली में मिलें।"

गुस्से में रोज़ी फनफनाती हुई भागी। उसने अपने कमरे के किवाड़ ज़ोर से बन्द किए और पलंग पर गिर कर रोने लगी।

सब हंसने लगे। भूतनाथ ने मैरी से कहा कि वह जाकर रोज़ी को मनाए। तब तक आगे के प्रोग्राम का ब्योरा तय कर लिया जाएगा। भूतनाथ और मैरी, रोज़ी के कक्ष की ओर बढ़े। बहुत दस्तकें दीं, अनुनय-विनय की मगर उसने किवाड़ नहीं खोले। हारकर मैरी के कमरे में भूतनाथ गया और उसने गहरी नज़र से मैरी की ओर देखा—

"मिस्टर गोस्ट। तुम्हें खतरा सिर्फ तुम्हारे लोगों से ही नहीं, अब हमसे भी है।"

"व्हाट ? क्या कहा ? क्या अमरीकियों को भी शक हो गया ?"

मैरी ने एक कागज़ अपने पर्स से निकाला और भूतनाथ को दे दिया। भूतनाथ बड़ी उतावली से उसे पढ़ने लगा। उसका लेखक दिल्ली में अमरीकी दूतावास का कोई गुप्तचर था। उसने लिखा था कि कुछ ऐसे सबूत मिल रहे हैं जिनमें भूतनाथ का घनिष्ट सम्बन्ध सरकार और कम्युनिस्ट-क्रांतिकारियों से जान पड़ता है। इसलिए उससे सावधान रहा जाए पर उसका उपयोग जारी रहे। कम्युनिस्टों में उग्रदल, भारत सरकार का तख्ता पलटना चाहता है। यह पता लगाया जाए कि भूतनाथ किस टोली के साथ सम्बन्धित है ? यदि वह भारत सरकार और प्रधानमन्त्री के खिलाफ हो तो उसे मदद दी जाए, अन्यथा वह हमारी योजना को बिगाड़ सकता है।

भूतनाथ वह कागज़ लिए देर तक बैठा रहा। फिर उसने उसे मोड़कर मैरी को दे दिया और मैरी को अपने पास खींचकर झील सी गहरी आंखों में खो गया।

"मैरी। तुम जानती हो, तुम क्या कर रही हो ?"

"अपने मिशन, अपने लोगों से गद्दारी और उसकी सजा भी जानती हूं। मगर मैं अपने देश से तो विश्वासघात नहीं कर रही न ? ये लोग जो कर रहे हैं, उससे अमरीका का क्या भला होगा...लेकिन...लेकिन व्यक्ति क्या देश का पुरजा होता है, वह अपने लिए कुछ नहीं कर सकता ? इफ देयर इज़ अ कम्प्लिटल बिटवीन इण्डीवीजुयल एण्ड कन्ट्री, हू विल डिसाइड, व्हाट इज़ रायट एण्ड व्हाट इज़ रोंग ? इज़ इन इंडीवीजुअल

आॅनली अ कॉंग इन द व्हील ऑर ही ऑर शी कैन डिसाइड समथिंग ?"

"मैरी। रोज़ी इज लवली बट यू आर ग्रेट। अ ग्रेट इडीवीजुअल ट्रान्सैन्डेंस ज्याग्रैफीकल बाउन्डरीज—मैरी, तुम महान हो, रोज़ी सिर्फ प्यार के योग्य है, एक महान व्यक्ति सर्वदा भौगोलिक सीमा के आर-पार चला जाता है। ओह! तुमने कितना बड़ा खतरा मेरे लिए उठाया है! मैरी। आय एम इन्डेटिड, रियली, आय एम इन्डेटिड—मैं ऋणी हूं तुम्हारा, सचमुच मैं तुम्हारा कर्जदार हूं।"

मैरी को भूतनाथ ने थपकी दी और भुजभर भेंटा। जब वह भूत के आलिंगन में थी, तब उसने रुंधी हुई आवाज से कहा—

"मिस्टर गोस्ट। यू मस्ट गो नाउ टू मेक रोज़ी हैपी। शी इज एंग्री एण्ड सैड''' तुम जाकर रोज़ी को मनाओ, उसे प्रसन्न करो। वह नाराज और दुःखी है।"

"ओ मैरी, यू आर ग्रेट'''तुम महान हो मैरी'''मैं एक सुझाव दूं तो मानोगी?"

"नो, नैवर, आय नो, यू वाट टू क्लियर यौर डेट्स'''नहीं मैं जानती हूं कि तुम ऋण उतारना चाहते हो।"

भूतनाथ रोज़ी-मैरी के द्वन्द्व से किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर चुपचाप बैठ गया और मैरी का हाथ, हाथ में लेकर अपनी चिन्ताओं में खो गया। मैरी उसका अंतर्द्वन्द्व समझ रही थी। उसने धीरे से अपना हाथ भूतनाथ से अलग किया। एक बार उसको भेंटा और कहा कि वह परेशान न हो। उसे रोज़ी के पास जाना ही चाहिए अन्यथा वह कोई भी तमाशा कर सकती है। वह समर्पिता है। उसको प्राथमिकता मिलनी ही चाहिए। मैरी का गला भर आया—

"मेरा क्या है, मैं बर्दाश्त कर सकती हूं।"

भूतनाथ असमंजस में चलने लगा। मैरी ने एक और कागज पर्स खंगाल कर निकाला और भूतनाथ के हाथ में दबा दिया और मुट्ठी बन्द कर दी। भूतनाथ कृतज्ञ भाव से पानी पानी हो गया। वह पुनः रुक गया, भौंचक रह गया लेकिन मैरी ने उसे धकियाकर कमरे से बाहर किया और किवाड़ बन्द कर लिए।

भूतनाथ मैरी के दरवाजे को ताकता रह गया। उसने थपकी दी पर दरवाजा नहीं खुला। लाचार वह रोज़ी के कक्ष की ओर बढ़ा। वह मैरी के निःस्वार्थ बलिदान की भावना में गर्क था। अतः वह यह नहीं देख सका कि उसके सामने मिस्टर रॉबर्ट रिवाल्वर लिए खड़ा है। वह क्रोध में होंठ चबा रहा था और जबड़ों को कसे हुए था—

"गोस्ट, यू आर अ ब्लडी इंडियन। टेक यौर गन एण्ड वी विल डिसाइड द फेट आफ रोज़ी—भूत। तू नीच भारतीय है, अपनी गन ले। हम रोज़ी का भाग्य निश्चित कर लें।"

"व्हाट। मिस्टर रॉबर्ट, आर यू इन यौर सेंसिस? यू आर टाकिंग नॉनसेंस''' तुम पागल हो गये हो क्या? यह क्या बक रहे हो?"

"यू हैव टेकिन अवे रोज़ी फ्राम मी, आय लव हर, वी मस्ट डिसाइड बाय अ डयुअल। तुमने रोज़ी को मुझसे छीन लिया। हम द्वन्द्व युद्ध से तै कर लें। मैं उससे प्रेम करता हूं।"

"आय हैव नो आब्जैक्शन। बट देअर आर टू कंडीशंस, फर्स्ट यू विदड्रा द एब्यूजिव वर्ड्स एण्ड सैकेण्डली, वी मस्ट आस्क रोज़ी हूम शी लव्ज'''मुझे आपत्ति नहीं, पर दो शर्तें हैं, प्रथम तुमने जो गाली दी, उसे वापस लो, और दूसरे, रोज़ी से पूछो कि वह किससे प्रेम करती है?"

"शी इज इन्नोसेंट, लायक अ रोज, शी इज चार्मड बाय यू, यू सोर्सरर, द डयुअल विल डिसाइड—वह गुलाब के फूल की तरह भोली है। तुमने जादू डाल दिया है उस पर। वह तुम पर मोहित है अतः द्वन्द्व युद्ध तै कर देगा।"

"वट देअर आर रूल्स, यू नो—लेकिन द्वन्द्व युद्ध के नियम हैं। आप जानते ही हैं।"

"हैल विद द रूल्स एण्ड विद यू, यू ब्लडी ब्लफर। आय विल किल यू हिअर एण्ड नाउ—नरक में जाओ तुम और तुम्हारे नियम। मैं तुम्हें अभी मारता हूं।"

भूतनाथ रॉबर्ट के तेवर और तुर्शी देखकर, उसके बचकाने व्यवहार पर हँस पड़ा। उसके अट्टहास से रोज़ी रोना-धोना छोड़कर भागी और किवाड़ खोलकर जब उसने भूतनाथ पर तना हुआ रिवाल्वर देखा तो वह बिजली सी लपकी। उसने अपना रिवाल्वर निकाला और रॉबर्ट की पीठ पर उसे छुआ कर, ठण्डे मगर वेधक स्वर में बोली—

"हैंड्स अप, यू अ सिली परसन, व्हाट आर यू डूइंग? हाथ उठाओ, सिड़ी आदमी, तुम यह क्या कर रहे हो?"

"रोज़ी, माय लव, आय विल रिमूव दिस् स्वाइन फ्राम अज़। हि इज अ ब्लडी सोर्सरर, हि हैज कम्पलीटली टर्न्ड योर माइण्ड, आय लव यू रोज़ी।"

"ओह, रॉबर्ट, यू आर बीइंग सिली, आय नैवर सैड दैट आय लव्ड यू, डिड आय? आय आलवेज लाइक्ड यू, आय स्टिल लायक वट यू आय कान्ट लव एण्ड मैरी अ स्पोइल्ड चाइल्ड लाइक यू, यू शूड ग्रो अप, मैन, रोज़ी इज नॉट लव गोस्ट, आय वरशिप हिम, डज इट सैटिस्फाय यू? तुम सिड़ी बन रहे हो रॉबर्ट, मैंने कब कहा मैं तुम्हें प्यार करती हूं। मैंने तुम्हें सर्वदा पसन्द किया, अब भी करती हूं पर मैं तुम जैसे बिगड़े बच्चे से प्यार या विवाह नहीं कर सकती। मैं भूतनाथ को प्यार नहीं करती, मैं उसकी पूजा करती हूं। क्या अब तुम सतुष्ट हो?"

रॉबर्ट ने चकित होकर रोज़ी को देखा। उसने सच्चाई का भाव भर कर सिर हिलाया। रॉबर्ट का गनवाला हाथ झुक गया। उसे कमर में बांधे बैग में रखकर वह रोज़ी के सामने सिर झुका कर खड़ा हो गया। फिर भूतनाथ से कहा—

"आय एम सॉरी, मिस्टर गडाढरसिंह।"

"दैट्स ऑल रायट, मिस्टर रॉबर्ट।"

भूतनाथ ने स्थिति के नाटकीय परिवर्तन पर ठहाका लगाया और रॉबर्ट से हाथ मिलाकर, उसके कंधे थपथपाकर, रोज़ी को लेकर उसके कमरे में चला गया।

मैरी ने यह दृश्य खिड़की से देखा। उसने उसे इतनी जोर से बंद किया कि रोज़ी और गोस्ट स्तब्ध रह गए।

29

अट्ठारह-बीस ठाकुरों का नरसंहार कर, क्वारी आतंक फैलाने में सबसे आगे हो गई थी लेकिन उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की पुलिस उनके पीछे हाथ धोकर पड़ गई थी। विशेषकर उत्तर प्रदेश की पुलिस ने ऐसा घेराव किया था कि क्वारी का गिरोह रात-

दिन बीहड़ों में भागता था। चैन, नीद और भोजन न मिलने से कालिया और सोवरन चिंतित थे और चिन्ता और थकावट से क्वांरी का रंग-रूप उड़ गया था। वह बात-बात पर गालियां देती और मरने-मारने पर उतारू हो जाती। जब सोवरन उसकी ओर मोहित या आहत दृष्टि से देखता तो वह खीझने लगती। उसे कुछ सुहाता नही था और वह प्राण रक्षा के लिए दिन-रात भागमभाग में रहती थी। वह भूतनाथ को भी बुरा-भला कहती कि वह ममता-मोह दिखाकर न जाने कहा चला गया? उसने सुधि नही ली। उसके कुछ पत्र जरूर आए थे पर चिट्ठियो से क्या होता है?

सोवरन की सलाह पर क्वारी ने, अन्त मे, तै किया कि उसे सिंध और बँसुली नदियो के मिलन स्थल के जंगल मे टिक कर आराम करना चाहिए। वहां राधाकृष्ण का मन्दिर था और नाव से खाने-पीने का सामान पाया जा सकता था। उस घनघोर बीहड़ मे पुलिस का बस नही चल सकता था। बहुत आगा-पीछा कर क्वारी ने यह राय मान ली और उसका गिरोह सिंध-बँसुली नदियों के सगम की तरफ बढा।

भूतनाथ ने चकरनगर के सर्वोदयी सन्तजी को लिखा था कि वे उसकी ओर से गुमानसिंह, क्वारी, जुझारसिंह, हम्मीरा, उस्ताद तस्लीम खान आदि डाकुओ के समर्पण के लिए सम्पर्क करें। सन्तजी की बात को आदर से सुना गया लेकिन कोई तैयार नही हुआ। डाकू जो शर्तें रखते, सरकार नही मानती और सरकार की शर्तें डाकुओ को मान्य नही होती। यह खीचतान लगातार चलती रहती थी और कभी-कभी इसमे सफलता भी मिली थी पर इस बार गुमानसिंह और क्वारी जैसे बर्बर और विकट बागियों से पाला पडा था। सन्त जी निराशा मे सब कुछ भगवान की इच्छा पर छोड़ देते और माला फेरने लगते। वह कलिकाल को दोष देते और हृदय परिवर्तन के उसूल को बखानते रहते।

भूतनाथ के ताजा पत्र मे बहुत विनय और व्यग्रता थी। सन्त जी सिंध बँसुली सगम की ओर चलने के पूर्व, स्वर्गीय बागी मानसिंह-सूबेदारसिंह के साथी लोकमणि से मिले। लोकमन पंडित, बागियो और समाज में, 'लुक्का गुरु' कहलाते थे और मानसिंह के वंशज, ठाकुर कोमलसिंह के साथ, कई बरस पूर्व पुलिस के सामने समर्पण कर चुके थे। उनका बागी समाज में बहुत आदर था। कोमलसिंह, बागी नरेश ठाकुर मानसिंह के भतीजे थे अतएव उनको मानसिंह का अंश माना जाता था। वह थे भी, यथानाम तथा गुण, कोमल और भद्र। वह अब प्रौढ उम्र के थे और मानसिंह के सगुनिया पंडित तथा शब्दभेदी निशानेबाज लुक्का गुरु की वृद्धावस्था मे देखभाल करते थे। वे दोनो, सन्तजी के सर्वोदय आन्दोलन मे काम करते और आध्यात्मिक जीवन व्यतीत कर रहे थे। जब कभी पुलिस को, किसी डाकू के समर्पण के लिए जरूरत होती तो वह लुक्का और कोमलसिंह की मदद लेती थी, जिनके पास बागी गिरोहों के सरदार आते-जाते रहते थे।

पंडित लोकमन पुरानी अपराध भावना के उदित होने पर भजन गाते और कीर्तन मे अपनी ग्लानि को धोया करते थे। वह आगरा की बाह तहसील के ठाकुर मानसिंह के गांव मे उन्ही के घर रहते थे। पुलिस ने मानसिंह के मारे जाने पर मानसिंह का घर और जमीन वापस कर दी थी। कोमलसिंह ने फिर से घर-द्वार सवारा था और खेती-पाती का भी प्रबन्ध कराया था।

सन्तजी अपने भगवा वस्त्रों मे, एक रात अचानक अवतरित हुए तो लोकमन समझ गए कि बागियों के समर्पण की पेशकश हो रही है। शाम का समय था और कोमलसिंह के फर्श पर कीर्तन चल रहा था। पंडित लोकमन जोर से गा रहे थे अतः

सन्तजी चुपचाप जाकर बैठ गए और गायन सुनने लगे—

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जा तन दियो, ताहि बिसरायो।
ऐसा नौन हरामी
मो सम कौन कुटिल खल कामी।

ढोलक की लयबद्ध गमक, मंजीरों की खनक और बूढ़े लुक्का गुरु के खरखराते, भारी स्वर में स्वर मिलाकर बच्चे जब सप्तम स्वर पर चीखते तो लगता कि जैसे बजते धौंसे के साथ कोयलें कूक रही हैं। स्त्रियों का स्वर अलग से गूंजता और कीर्तन को कोमल बनाता। ठाकुर कोमलसिंह गा तो न पाते मगर गुनगुनाते रहते और तालियां बजाते। साथ ही, मानसिंह-सूबेदारसिंह के परिवार की बरबादी का स्मरण कर आंसू भी बहाते जाते थे।

लुक्का गुरु के गीत के बाद "रघुपतिराघव राजा राम, पतित पावन सीताराम" का सर्वप्रिय गायन हुआ, जिसमें सन्तजी भी भाग लेने लगे। उनके सफेद केश हिल रहे थे और मुख पर दिव्य भाव टपक रहे थे। सन्तजी के आ जाने से कीर्तनियों में जोश आ गया था। सन्त जी जनता के लिए भगवान के ही रूप थे, सज्जन और सदासहायक। उनके पोपले मुख पर परमहंस का भाव रहता और शिशुओं जैसी सरलता और विनोद खेलता रहता। एक लम्बी लय के बाद कीर्तन बन्द हुआ। तब ठाकुर ने सन्तजी की ओर ध्यान दिया। प्रणाम कर वह कहने लगे—

"बाबा, किधर रम रहे थे ? कुशल तो है ?"

"कुशल तो भजन-कीर्तन में है ठाकुर साहब, रक्त के कीचड़ में कुशल-क्षेम कैसी ? पथभ्रष्ट प्राणी अपने अहंकार में दूसरों को कष्ट पहुंचाता है और ज्ञान जगने पर पछताता है ···आपसे, पंडित लोकमणि जी से कुछ निवेदन करना था।"

ठाकुर ने कीर्तनियों को कहा कि वे अपना भजन चालू रखें और वे लुक्का गुरु के साथ उठ गए। उन्होंने सन्तजी का सत्कार किया, खिलाया-पिलाया और सारा हाल सुना। ठाकुर आश्वस्त नहीं हुए, वह संदेही स्वर में बोले—

"गुमानसिंह मान भी जाए पर वह काली मलाहिन बवौंरी नहीं मान सकती। वह ठाकुरों की दुश्मन है···मेरी राय है कि आप पंडित जी को साथ ले जाएँ और कोशिश कर देखें। मान जाए तो नरसंहार बन्द हो···मैं अगर समर्पण न कर चुका होता तो इस मलाहिन को मार डालता। वह निर्दोष को मारती है, क्या पता, वह मेरे जाने पर मुझ पर ही गोली न चला दे।"

"आप तो संसार छोड़ चुके, वैरागी और भक्त का जीवन जी रहे हैं। आप पर कौन हाथ उठा सकता है ? परन्तु यह ठीक है कि आप यहीं रहें। यहाँ जो बागी आए, उन्हें समर्पण का परामर्श दें, सरकार का आदमी आए तो उसे समझाएं, शर्तें तै करा दें···मौके पर हम दोनों पर्याप्त हैं, क्यों पंडित लोकमणि जी ?"—सन्तजी ने आशा से लुक्का गुरु की तरफ देखा।

"ठाकुर के बिना बागियों पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। हम दोनों तो पंडित हैं। ठाकुर की बात पत्थर की लकीर होती है। सरकार भी ठाकुर की सुनेगी। बवौंरी मल्लाहिन है जरूर पर वह बीरसिंह-धीरसिंह की ही शत्रु है, सभी ठाकुरों की नहीं और अब बातों से मुझे टिपता नहीं है, पर यदि उसने कोई हरकत की तो उसकी आवाज पर गोली मार ूंगा और गोली उसके मुंह में घुस कर उसके पेट से निकल

जाएगी···ठाकुर आप साथ चलिए।"

"और वहां भूतनाथ भी आ रहा है।"

"भूतनाथ···भूतनाथ कौन ? यह नाम सुना तो था पर यह आदमी है या भूत ?"—ठाकुर और लुक्का गुरु चौंक कर बोले। सन्तजी बताने लगे—

"वह सचमुच विचित्र और अलौकिक व्यक्तित्व है सज्जनो ! उसमें भगवान भूतनाथ का शिवत्व और भैरव की भैरवता है। वह भैरव और शिव का एक साथ अवतार है, इस धरा पर। वह करौली के कर्ना गूजर, बिलाव के गुमानसिंह, क्वांरी, इन सबको जानता है और वे उसकी बात टाल नही सकते। वह बांका वीर है, दोनों हाथों से एक साथ गन चलाता है, हां।"

सन्तजी के बखान से ठाकुर कोमलसिंह आंखें फाड़ कर देखने लगे। लुक्का गुरु चहके—

"मैंने सुना है कि वह क्वांरी के साथ क्वारी नदी की खोहों में रहा है और सगम पर जब गुमानसिंह ने बागियों का सम्मेलन किया था, तब भी वह वहा आया था। वह क्या चाहता है, वह क्या है ?"

"कौन जाने कौन है ? कहा का है ? उसके साथ तो विदेशी भी थे। उसने चकरनगर के सर्वोदय मण्डल के लिए अमरीकी टोली से काफी अनुदान भी दिलवाया है। वह कोई भटकी आत्मा है। लोग कहते है कि वह देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों का भूतनाथ ही है जो इस काल मे जनोद्धार करने आया है, विचित्र रहस्यमय व्यक्ति है, किन्तु उसका हृदय कोमल है, सकल्प वज्र है। उसको क्वांरी 'भोला भाई' कहती है और राखी बाधती है। भला उसके सामने वह कोई अनर्थ कैसे कर सकती है ?···ठाकुर साहब, आप पधारिए। सज्जन के दर्शन जीवन मे अब दुर्लभ हैं। आप गद्गद हो जाएगे उससे मिलकर। वह भी प्रसन्न होगा क्योकि आप बागियों के राजा मानसिंह के अश है।"

"पडित। प्रबन्ध करो, मैं चलूगा। यह भूतनाथ तो 'न भूतो न भविष्यत्' है, उसके दर्शन करेंगे। सन्तजी किसी की नाहक स्तुति नही करते, कोई भारी रहस्य है भूतनाथ में···मुझे कर्ना गूजर के एक बागी ने बताया था कि वह कोई देव है, देवदूत और उसकी शक्ति और प्रभाव का कोई अनुमान नही कर सकता है···क्या नाम था उस बागी का···हा, लगुरा कहता था वह अपने को। वह भूतनाथ का भक्त है और उसके कहने पर कलकत्ता, बम्बई और न जाने कहां-कहा जाता है···वह तो कह रहा था कि भूतनाथ भी बागी है या इन्कलाबी है। वह पापियों को दण्ड दिलवाने के लिए डकैतों का प्रयोग भी करता है···कही वह बागियों को इन्कलाब के काम में तो नही जोतना चाहता ? अगर ऐसा है तो सरकार हमारी बात नही मानेगी···लेकिन वह लगुरा कहता था कि राजा राजनाथसिंह से भूतनाथ की दोस्ती है···हे भगवान, यह क्या चक्कर है···तो चला जाए, उसे जांचा जाए, क्या पता, वह बागियो का समर्पण करा ही दे···तो राजनाथसिंह की बात रह जाए···बेचारा भाई-भतीजे को खो बैठा और उसने त्यागपत्र भी दे दिया। ऐसे सज्जन शासक का काम नहीं हुआ तो धर्म किसके सहारे जिएगा ? सन्तजी, कब चलें ?"

"बसन्तपंचमी के कुछ ही दिन शेष हैं। वह शुभ दिन है। तब तक शर्तें तै हो जाए तो उस दिन समर्पण हो जाए, मगलमय रहेगा। भूतनाथ ने बागियों की तरफ से शर्तों की सूची तैयार कराई है, वह यह रही। आप तब तक बड़े अफसरो से मिलकर, पुलिस मत्री से मिलकर इन शर्तों को स्वीकार कराइये। हम अपने स्तर पर यही प्रयत्न

करेंगे। आप बसंत पंचमी को राधाकृष्ण के मंदिर पर पहुंच जाएं, वहीं समर्पण होगा लेकिन सरकारें मान जाएं, तब है। वहां सरकार को भारी पुलिस बन्दोबस्त करना पड़ेगा…खैर, इसे देख लेंगे। पहले शर्तें तो तै हों।"

"ठीक है तो हम और पंडित लोकमन आगरा जा रहे हैं। वहां से लखनऊ जाना होगा। फिर हम चकरनगर में आपको आदमी भेजकर समाचार देंगे। आपने मध्य प्रदेश की सरकार से बात करने का प्रबन्ध किया है?"

"मध्य प्रदेश की सरकार की तरफ से, जिला भिण्ड के एस०पी० रघुवीर द्विवेदी बागियों से बात कर रहे हैं पर शर्तें तै नहीं हो पा रही हैं। उत्तर प्रदेश की पुलिस चाहती है कि समर्पण उत्तर प्रदेश में हो जबकि मध्य प्रदेश के नेता और मुख्यमंत्री बागियों के समर्पण का स्वयं श्रेय लेना चाहते हैं। प्रधानमंत्री को प्रसन्न करने की स्पर्धा है और चुनाव भी तो अब बागियों के बिना नहीं होते। हमें लगता है, उत्तर प्रदेश की पुलिस पर बागियों का यकीन नहीं है, क्योंकि वह किसी भी तरह क्वारी को मार डालना चाहती है। उसकी वजह से तो राजा राजनाथसिंह को त्यागपत्र देना पड़ रहा है। अतः उत्तर प्रदेश की पुलिस गुस्से में खलबला रही है। वह दलराम को समर्पण के बहाने मार चुकी है। तब से बागियों को उत्तर प्रदेश की पुलिस पर भरोसा नहीं रहा।"

"यह आपने अच्छा बताया। इससे हमें उत्तर प्रदेश के अफसरों और मंत्रियों के साथ यह मामला तै करने में सुविधा रहेगी…अब आप विश्राम करें।"

…बसन्त पंचमी निकट है। जंगल में यों शीत है तो भी ऋतुपरिवर्तन के लक्षण प्रकट होने लगे हैं। अभी कोयल तो नहीं बोली किन्तु जहां तहां ठूंठों और टहनियों में, शाखा-प्रशाखाओं में नये अंकुर जन्म लेने लगे हैं। किसलयों में कौतुक की भावना है। अंकुर उमंग में हुमकते हुए निकल रहे हैं कि देखें बाहरी संसार में क्या है। उन्होंने शीतकालीन लम्बी प्रसवपीड़ा भोगी है, इसलिए अब वे बाहर की हवा और रोशनी में अघाकर सांस लेने और कद काढ़ने में एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। बसन्त की बयार चलने लगी है। सुबह शाम शीत रहता है पर दिन में सूरज आंखें लाल करने लगा है।

राधाकृष्ण मंदिर के आसपास के सघन वन में, एक अभेद्य स्थल पर क्वारी का पड़ाव है। जंगल में एक पहाड़ी पर बागियों ने, खोहों और चट्टानों की आड़ में बसेरा लिया है, जहां वे थके-मांदे बेसुध सो रहे हैं। प्रहरी, दूरबीन गले में डाले सशस्त्र और सजग हैं। हर पचास कदम पर दूसरा पहरा है। नीचे टीले की तराई में आठ-दस डकैत टिके हुए हैं। उसके सिवा, सबसे ऊंचे पेड़ों पर कुछ बागी डटे हैं ताकि पुलिस या दुश्मन डकैतों से सावधान हो जाया जाए। एक खोह में भोजन बन रहा है, पर धुआं ऊपर नहीं उठने पा रहा है। स्टोवों का इस्तेमाल हो रहा है। एक तरफ कुछ बागी नग छान रहे हैं और कुछ बोतल खोले बैठे हैं। वातावरण में सतर्कता है जैसे अभी कुछ होने जा रहा है।

क्वारी उस पहाड़ी के एक गड्ढे में, जो खासा गहरा और चौड़ा है, जाजम पर सो रही है। सोबरन बन्दूक लिए सन्नद्ध खड़ा है। क्वारी स्वप्न में भी अपनी पीड़ा नहीं छिपा पा रही है। उसके चेहरे पर तनाव है और वह रह-रहकर बुदबुदाती है। शाम है, सूर्यास्त है पर बागी का सबसे बड़ा सुख है, सोने का अवसर, सो वह सरे शाम ना रहो है, क्या पता, कब पुलिस घेर ले और तब तक भागना पड़े। सोबरन उसे कोमल नजर से देखता है और फिर आहटें सुनने लगता है। अचानक क्वारी उठकर बैठ जाती है और बोलती है, गोया अपने से कह रही है—"भोला भाई। भो…ला।" सोबरन कुछ कहे,

उसके पूर्व वह पुनः लेट जाती है और उसकी सांस सम पर आ जाती है। कुछ समय बाद वह नींद मे पुनः 'भोला, भोला' बड़बड़ाती है।

सोबरनसिंह क्वारी की तकलीफ समझता है। आखिर वह एक औरत है, कब तक भाग-दौड़, भूख, अनिद्रा और रक्तपात सहे ? उसे सिर्फ भूतनाथ पर भरोसा है। वह कुछ तै नही कर पा रही है, क्या करे, समर्पण कर दे या बीरसिंह-धीरसिंह को मार कर मर जाए ? यह कालिया भी अजीब मूरख है। उसे चकरनगर, भूतनाथ को लाने के लिए कई दिन हुए भेजा गया है लेकिन आज तक उसका अतापता नही है'''कहा जाकर मर गया, वह बहुरूपिया'''बातें बनाना, क्वांरी के लिए कुत्ते की तरह लार टपकाना और भूतनाथ के गीत गाना, और कुछ भी नही जानता, यह काला भैंसा। भूतनाथ ने उसे और सिर पर चढा रखा है, कहता है, मैं कालनाथ हूं'''गधा कही का'''कालनाथ '''वाह ''ह: ह: ह: ह:।

सोबरन की हिहिर-हिहिर से क्वारी की तन्द्रा टूटी। उसने पलक उघार कर देखा कि सोबरन, अपने में डूबा, अपने से ही बतिया रहा है'''बेचारा, खुद नही सोता, मुझे सुलाता है और कभी-कभी चलते-बैठते नीद ले लेता है। भूख और भाग-दौड से उसके गाल बैठ गए हैं और चर्बी छट गई है'''मैं भी वह क्वांरी कहा रह गई, रूखड और भूखड़ हो गई हूं, न नहाने का समय, न खाने का, न सोने का। गिरोह भी परेशान है, कई तो इस दौड़ मे पीछे रह गए, कुछ भेस बदलकर भाग गए, कुछ मारे गए, कुछ घायल हैं, कुछ पागल से हो रहे है'''किसी दिन पगला कर मुझे ही गोली न मार दें '''ए सोबरन, तुम क्या बडबडा रहे थे ? सो रहे थे क्या ?"

सोबरन ने सिर को झटका दिया और आलस भगा कर बाहर एक चक्कर लगाया। अधेरा फैल गया था, दूसरी खोह और चट्टानो के पीछे से बागियों की खुसफुस सुनाई पड रही थी और नशेबाजों की दबी हुई हसी भी। वहा सब ठीकठाक देखकर पुनः लौटा और उसने क्वारी को ममत्व से हेरा—"फलवा। अब तुम जल्दी स्नान-ध्यान कर खाना खा लो'''कुछ कहा नही जा सकता, क्या होगा। खबर है कि पुलिस की दाब इधर होगी पर अभी वह दूसरी तरफ भटक रही है'''मैं कालिया पर बिगड़ रहा था कि वह कम्बखत कहा चला गया ? भोला भाई अब तक तो आ गया होगा। चकरनगर से यहा तक दो-तीन दिन का ही रास्ता है, कही कुछ गड़बड तो नही हो गई'''हे राम।"

क्वारी सोबरन के थके-चुके स्वर से मर्माहत हुई। उसने उठकर सोबरन का कधा थपथपाया और नित्यकर्म से निवृत हो गई किन्तु उसने भोजन नही किया। साफ कह दिया कि वह रात के दस-ग्यारह बजे तक भोलाभाई का इन्तजार करेगी, उसके बाद कुछ खाएगी। और लोग खाए और सोए। पहरा बदलता रहे, कोई गफलत न हो। यह पहाडी मैय्या आज की रात हमें चैन देगी, पुलिस यहा आई तो सैकड़ो की बलि दनी होगी। हम ऊचे पर हैं और ओट मे हैं।

रात के नौ बज गए। जगल मे वन्य जीवो का आहार-विहार शुरू हो गया। अजगर सरकने लगे और शिकार को लपेटे मे लेकर मसलने लगे, जोंकें लपालप होने लगीं। कहीं बाघ गर्राया, सो पेड़ो के बदर चीखे, नीलगायों का झुण्ड भागा, चीतल चीत्कारा और मोर व्याकुल होकर कुहुके और फिर मसान जैसा सन्नाटा छा गया। बाघ को दरेड़ के वक्त जो भयभीत पक्षियो का करुण कोलाहल हुआ था, वह भी शान्त हो गया, बीच-बीच मे अपने नीडों की तरफ सरकते साप को देखकर कोई पक्षी युगल चीत्कार करते और फिर वही डरावनी शांति छा जाती थी।

क्वांरी प्रतीक्षा में पागल हो गई। उसने सोवरन को साथ लिया और पीछे कुछ बागियों को आने को कहकर जंगल में उतर गई। सोवरन ने उसके आवेश को देखकर उसे रोका नहीं लेकिन कहा कि वह पहाड़ी की तलहटी से दूर न जाए, भोला भाई आया तो वह कहां ढूंढेगा ? क्वांरी ने भोला भाई का नाम सुनकर उसे फुसफुसे स्वर में खूब कोसा "...उसे क्या फिकिर है कि मुझ पर क्या बीत रही है। वह तो उन विदेशी कबूतरियों, रोजी-मैरी से गुटरगूं कर रहा होगा। वे चुड़ैलें उसके खून की जोंकें जो हैं। वे इंगरेजी झाड़ती है और बात-बात में 'डार-लिंग' करती हैं...मरी सरम भी नहीं खाती, वे 'डियार डियार' करती हैं...यह यार और डारलिंग की जबान कितनी नंगी और फूहड़ है। लोग कहते हैं, क्वांरी फूहड़ बोलती है, गालियां देती है पर यह इंगरेजी तो मेरी बोली से भी फूहड़ है...अब की बार भोला भाई मिल जाए तो उसकी बदफेली पर उसकी ऐसी गत बनाऊंगी कि वह अंगरेजी भूल जाएगा...सोवरन, रस्सी तो तेरे पास है न ?...ठीक है, आने दे उसे, जब तक वह यह वादा नहीं करता कि वह उन अमरीकी कुत्तियों का पीछा छोड़ देगा, तब तक उसे क्वांर के कुत्ते की तरह बांधकर रखूंगी...कहां रह गया मेरा भोला ?"

...काफी देर बाद पत्तों की खड़खड़ाहट हुई और तीन छायाएं पास आती दिखाई पड़ी। अंधेरे में भी चाल के ढंग से क्वांरी ने कालिया को पहचान लिया और भूतनाथ की दाढ़ी-मूंछ के बावजूद उसकी लम्बाई स्वयं ही सब कुछ कह रही थी। तीसरा व्यक्ति अपरिचित था। शायद, भोला भाई का चेला होगा। जब वे काफी पास आ गए तो क्वांरी के इशारे पर सोवरन और साथियों ने रस्सी के फंदे फेंके जो भूतनाथ और कालिया की गरदन में फंस गए। भूतनाथ ने गले में कसते हुए फंदे को हाथ से पकड़ लिया पर वह फंदे को गले से निकाल नहीं सका। कालिया फुसफुसाया, "भोला भाई। यह फुलवा का सत्कार है, कोई डर नहीं, घबराना नहीं...अरे गरदन क्यों कस रहे हो भाई, लो सम्हालो अपने भोला को।"

फंदे ढीले कर दिए गए पर छोड़े नहीं गए। क्वांरी हिरनी-सी उछली और उसने प्यार भरे गुस्से में भूतनाथ के गले के फंदे को पकड़ कर कसा—

"अब बोलो भाई, रास्ता कैसे भूल गए, कहां रहे, क्यों नहीं आए ? उन अमरीकी नटिनियों के घाघरे में छुपे थे क्या ? 'डारलिंग, डारलिंग', 'डियार, डियार' सुनने में सुधि खो बैठे...फुलवा मर गई थी क्या ? राखी का बन्धन तोड़ दिया ? सब भुला दिया ? वाह भोले, खूब धरम निभाया तुमने...खींच दूं फंदा ?"

और रस्सी छोड़कर क्वांरी भूतनाथ की छाती से जा लगी और बुक्का फाड़कर रोने लगी। भूतनाथ ने रस्सी का फंदा निकालकर फेंका और क्वांरी की पीठ पर हाथ फेरने लगा मगर उसने हाथ झिटक दिया—"तुम्हारे हाथ गंदे हैं भाई...तुमने इन्हीं हाथों से उन गोरी कंजरियों को पीठ सहलाई होगी। छिनालो ने मेरे भोले भाई की मति हर ली...मैं तुम्हें मारूंगी भाई।"

क्वांरी ने भूतनाथ के हाथों, कंधों और पीठ पर स्नेह भरी मुक्कियां मारी और फिर उसके गले से चिपट कर सिसकने लगी।

सभी उपस्थित बागियों ने आंखों के आंसू पोंछे। ऐसा प्यारा दृश्य जंगल में कहां देखने को मिलता है ? जो क्वांरी बाघिन सी विकराल रहती है, वह आज भूतनाथ के सामने भावुकता में बह रही है। बेचारी को कब से मनुहार का मौका नहीं मिला। बागी की जिन्दगी तो जंगली जानवर की जिन्दगी है, उसमें मानवीय सम्बन्धों की महक कहां ?

ज्वार उतर जाने पर कालिया को विनोद का मौका मिला। उसने तीसरे साथी लगुरा गूजर को ललकारा—"अबे लंगुरा। तू उजबक सा क्या तक रहा है, फुलवा रानी को कैलादेवी का परसाद दे न।"

लगुरा गूजर ने आगे बढकर करौली की देवी का प्रसाद बांटा। क्वांरी ने श्रद्धा से उसे लिया मगर भूतनाथ की वाह नही छोड़ी। कालिया चहका—

"फुलवा रानी। यह ससुर करिंघा क्या लोहे का बना है ? किस तरह मैं भोला भाई को ला सका, कितना इंतजार कराया भाई ने, कहां-कहां भटका, सन्तजी से पता लेकर कहां-कहां चक्कर लगाया तब भाई मिला···इसके लिए रानी, तुमने एक भी शब्द नही कहा, मेरा दिल ऊंट की पूछ की तरह हिल रहा है।"

सब मुस्कराए मगर क्वांरी ने उसे खा जाने वाली नज़र से घूरा—"तुझे आज रात भर मुर्गा बनाऊंगी, तूने इतनी देर क्यो की, कहां मरता रहा ?"

"लो सुनो मालिक लोगो, क्या तकदीर है सिरी कालनाथ जू की। नाम को कालनाथ और कदर कुत्ते की·· ठीक है माई, तू यह फदा कस दे तो इस नाचीज़ जान से छुटकारा पा जाऊं···अब यह फदा डाले रहूं या उतार दू, क्या हुक्म है देवी ?"

क्वारी के मुख पर पहली मुस्कान आई और गई। उसने आंखें तरेर कर सोवरन से कहा कि वह इसे ले जाए और इसे मुर्गा बनाकर एक पत्थर इसकी पीठ पर रख दे। इसकी लेटलतीफी की यही सज़ा है···लेकिन खाना खिलाकर इसे मुर्गा बनाना ताकि पुलिस आने पर यह तुरत बांग दे।"

सब हसते-मुस्कराते पहाड़ी पर चढ़े और भूतनाथ के साथ क्वांरी का दस्तरखान सजा। मोटी रोटियां, दाल, मिरचें, नमक और अचार, बस यही डिनर था और क्या मिलता इस वन में ? भूतनाथ ने कालिया को इशारा किया। वह अड़ गया—

"जब तक मुझे माफी नही मिलती, तब तक मैं चकरनगर से लाया गया सामान नही दूगा। सब खाओ, यह मोटा-झोटा खाना, हा।"

"मेरा भाई, अपनी बहिन के लिए भेंट लाया है और तू उस सामान पर काले नाग सा बैठ गया। निकाल जल्दी वरना तुझे मुर्गा बनाती हूं, बिना खाना दिए ही।"

"लो सुनो। हे महादेव महाराज, तू साच्छी है, इस अन्नाय का। मैं लाद कर लाया, उसका भी अहसान नही, हाय।"

बच्चो की उत्सुकता से क्वारी ने भूतनाथ के भेंटवाले थैले को खोला और स्वाद लेती हुई चीजें दिखाने लगी··· "ओह, यह इगरेजी विस्की, वाह, ठर्रा पीते-पीते गला बैठ गया···और ये डबलरोटियां, डिब्बेबंद मास और सब्जियां, टमाटर जूस, अचार, मिठाई के डिब्बे और ··और वाह, ये मेरे लिए कपड़े, जीन और कमीज···वाह भाई, और ये चूड़ियां सोने की, हार, अगूठी और मंगलसूत्र भी···सारियां, ब्लाउज़···भोले भाई, सारा बाज़ार ही उठा लाए ? क्यो बे कालिया, तूने रोका क्यो नही ? मेरे भाई को गरीब बना दिया, अच्छा, तुझे अभी बताती हूं, बन मुर्गा जल्दी।"

कालिया मुर्गा बन गया और बाग देने की नकल करने लगा। क्वांरी उमग मे उसके ऊपर लद गई और "चल मेरे घोड़े तिक तिक तिक" कहकर कालिया के ऐड़ लगाने लगी।

"मैं मुर्गा हू, घोड़ा नही, कसम मुर्गी की, मैं गिर रहा हू, अरे, कोई बचाओ, मरा मैं।"

हसी-खुशी मे खानादाना हुआ। अंग्रेजी शराब और स्वादिस्ट भोजन, खाम-

खास बागियों में बांटा गया। आंखों के डोरे जब लाल होने लगे और खाना खत्म हो गया तब भूतनाथ ने क्वांरी को गंभीरता से देखा, जो भाई की भेंट के गहने पहन चुकी थी और साड़ी-ब्लाउज़ में, सचमुच गृहस्थ नारी सी लग रही थी। वह बार-बार लाड़ और गर्व से भूतनाथ के हाथों को चूमती जाती थी।

"फुलवा। तुम्हारा यही रूप सच्चा है। यही नारी की श्रेष्ठता है, यही ममता-मोह, प्यार और सरकार उसका गौरव है। तुम चाहो तो सोवरन के साथ स्थायी तौर पर गृहस्थ जीवन शुरू कर सकती हो। सन्तजी, राजा मानसिंह के भतीजे कोमलसिंह, लोकमन पंडित और दूसरे उपकारी सज्जनों ने सारा मामला सुलझा लिया है। तुम्हारी कोई विशेष शर्तें हों तो बता दो···समर्पण बसंत पंचमी को होगा, पुलिस मान गई तो संगम के राधाकृष्ण के मंदिर पर या फिर भिण्ड में या आगरा में।"

क्वांरी वहिन होने के भाव में थी अतः उसे समर्पण के नतीजों पर जाने में कुछ देर लगी। वह घृणा में जी रही थी। अभी दुश्मन से बदला मिलना शेष था। वीरसिंह-धीरसिंह जीवित थे और क्वांरी को मारने की फिराक में थे। क्वारी ने ध्यान में देखा कि उसे धरती पर पटक कर वीरसिंह और धीरसिंह उसकी देह का सत्यानाश कर रहे हैं और वह बेबस चीख रही है। पीड़ा से उसका बदन ऐंठ रहा है। उसके हाथ, पैर जकड़े हुए हैं और उसकी इज़्ज़त लूट कर ठाकुर अट्टहास कर रहे हैं। वह क्रोध में कटीली बन गई—

"नहीं, जब तक वीर-धीरसिंहा ज़िन्दा है; तब तक क्वारी समरपन नहीं करेगी, कभी नहीं।"

क्वांरी नागिन-सी बल खाने लगी। गुस्से में उसका मुख तमतमा रहा था और वह कुछ कर न बैठे, इसलिए पत्थर उठाकर अपने सिर को पीटने लगी।

भूतनाथ ने क्वारी के हाथ से पत्थर छीन लिया और उसके माथे से बहते रक्त को पोंछ कर उसका उपचार किया। वह साथ ही समर्पण की योजना और उसके लाभ समझाता रहा। जब वह नहीं मानी तो उसने बागियों से पूछा—

"तुम सब थक चुके हो, कब तक पुलिस से बचोगे? बलात्कार के बदले दो दर्जन ठाकुरों को मार डाला गया। ब्याज सहित बदला ले लिया गया। अब जंगल-जंगल भटकने में क्या तुक है?···वीर-धीरसिंह भी तो समर्पण कर रहे हैं न?"

क्वांरी ने पूछा, "क्या? वे भी हथियार डाल रहे हैं?"

"हां, और वे क्वारी पर अत्याचार के लिए माफी मांगने को भी तैयार हैं?"

क्वांरी इस पर चुप रह गई। अब कोई तर्क उसके पास नहीं था। अब उसका ध्यान पुलिस की तरफ गया—

"भाई! अगर वे ठाकुरनामधारी जानवर जेल में, सबके सामने छमा माग लें, मुझे बहिन कहें तो मैं माफ कर सकती हूं···मगर, मैं उत्तर प्रदेश की पुलिस के सामने समरपन नहीं करूंगी। वह दगाबाज़ है। उसने दलराम को इसी बहाने मारा था और समरपन के बाद यह जेल में मेरी दुरदसा करेगी और कोई सर्त नहीं मानेगी।"

"तो ठीक है, तुम मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के सामने समर्पण करना। मध्य प्रदेश का मुख्यमंत्री यों ठाकुर है पर भरोसे का है। वह जो कहेगा, करेगा। तुम पर मुकदमा चलेगा पर मध्य प्रदेश में ही। तुम पर उत्तर प्रदेश के केस भी मध्य प्रदेश की अदालतों में चलेंगे। यह सब हो जाएगा। तुम जेल में विवाह करना और वह मंगलसूत्र धारण करना। फुलवा, मैं इस अवसर पर स्वयं रहता पर तुम जानती हो, मेरी एक बहिन नहीं

करोड़ो बहिनें हैं,…मुझे विदेश भी जाना है, मैं समर्पण का प्रबन्ध करा दूगा किन्तु उन दिन रहूगा नही…जहा भी रहूंगा, फुलवा के ध्यान मे रहूंगा…अब हठ छोड़ो और जो मैं कहता हूं, करो, इसी में भलाई है। जो शेष जीवन है, उसे शान से गुजारो, सुखी रहो, जियो और जीने दो…तुम चाहो तो तुम्हारे गिरोह के कुछ लोग मेरे मिशन मे काम कर सकते है। उसमे भी साहस है, रोमाच है लेकिन वह समाजसेवा है, सही बगावत है। दस्युता गलत बगावत है, फुलवा, उसे अब छोड़ दो, मेरा यह अन्तिम निवेदन है।"

भूतनाथ ने हाथ जोड़े। उसके जुड़े हाथ पकड़ कर फुलवा ने अपनी आखो से लगाए और उसने भूतनाथ के पैरो पर सिर रख दिया—

"मैं तुम्हारी छोटी बहिन हू, तुम जो चाहे करो, लेकिन एक वचन तुम्हे देना होगा ?"

"बोलो, दूगा।"

"यदि पुलिस ने, जेल के साहबों ने, सत्तों का उल्लंघन किया तो तुम्हें आना पड़ेगा और सब ठीक करना पड़ेगा और…और मेरे विवाह पर कन्यादान कौन लेगा… मेरा तो कोई है ही नही ?"

"सन्तजी सबके पिता है। उन्ही को यह अधिकार है। मैं तो भाई हू सो भेंट दूगा, जहां भी हूगा, भेंट भेजूगा, इतनी कि बहिन निहाल हो जाएगी…और सुनो, रोजी-मैरी ने तुम पर फिल्म बनाई है। उसे दुनिया भर में दिखाया जाएगा। उससे जो आय होगी उसमें तुम्हारा हिस्सा होगा। वे तुम पर किताब भी लिखेंगी, उसका कमीशन भी तुम्हें मिलेगा। तुम्हारी सात पीढ़ियों के लिए यह काफी होगा फुलवा…और वक्त-जरूरत के लिए मैं तो हू ही।"

क्वांरी आसू आखों में भरे हुए मुग्ध भाव से अपने भोला भाई को गर्व से देख रही थी। उसने अचानक बदूक उठाई और कारतूस की पेटी उठाकर भूतनाथ के पैरो मे रख दी और हाथ जोड़कर खड़ी हो गई—

"मै पापिन हू, पसु हूं…मैंने जो किया, बदले के सन्निपात में किया। मैं आगे का जीवन पराछत मे बिताऊंगी… कालिया। तू भाई का चेला है, और कौन-कौन उनके काम से जाएगा ? सबको आजादी है, मै अब तुम्हारी नेता नही रही…।"

कालिया और चार अन्य बागी खड़े हो गए। लंगुरा गूजर भी उनमें मिल गया। क्वारी ने कहा—

"तुम अगर मलाह के बिन्द से उपजे हो, सच्चे केवट हो, भगवान राम को पार उतारने वाले, तो मै तुम्हें अपने भोला भाई को सौंपती हूं। जान दे देना पर उनका साथ न छोड़ना, न उनकी बात टालना, न उनका मुकाबला करना, मेरा भाई मानुष नही है, वह देवता है, देवदूत है, मसीहा है…क्वारी अभागिन है, तेरी तकदीर मे भी यह सुख सौभाग बदा था…।"

और क्वारी लहरा कर बेहोश होकर गिर गई। उसका सिर भूतनाथ की गोद मे था और वह उसे इस बुरी तरह जकड़े हुए थी, कि जैसे लोहे को सरुसी से किसी चीज को पकड़ा जाता है।

सब स्तब्ध थे। भूतनाथ के सकेत पर सब चुपचाप रहे और अपनी-अपनी आखों से आसू पोछते रहे। विचित्र दृश्य था। आकाश के तारे इस हृदय परिवर्तन का मर्म समझ मे न आने पर चमत्कृत हो रहे थे। पहाड़ी पर हवा की तेजी मे भी मरना आ गई थी जैसे वह भी इस स्वर्गीय परिदृश्य को अपने टेप पर टाक रही हो।

भूतनाथ ने अचेत क्वांरी का सिर धीमे से सरका कर एक गुल-गुल वस्त्र पर रखा और उस पर चादर डाल दी। उसने सोवरनसिंह और कालिया को चलने का संकेत किया। पहरे का पक्का बंदोबस्त कर भूतनाथ, सोवरन, लंगुरा और कालिया पार्टी नीचे उतरने लगी। भूतनाथ ने बताया कि सोवरन की जिम्मेदारी बड़ी है। वह क्वांरी को लायन पर रखे, वह भावावेश में आत्मघात भी कर सकती है, पागल भी हो सकती है, गुस्से में समर्पण से मना भी कर सकती है। इसलिए सोवरन उसे अपने प्रेम और चतुराई से उत्तेजित न होने दे। उसने नारी के रूप में बहुत सहा है और उसमें नारी का आहत दर्प बोलता है। कसूर उसका नहीं, पुरुष वर्ग का है। उसे सताया न गया होता तो वह बागिन क्यों बनती ?

भूतनाथ ने ब्योरे वार समर्पण का समाचार दिया। सोवरन का काम यह है कि वह गिरोह को, समझा-बुझा कर, सन्तजी, लोकमन और कोमलसिंह की मध्यस्थता में, भिण्ड ले जाए, वहीं समर्पण होगा। गुमानसिंह, हम्मीरा, वीरसिंह, सुषमा, जुझारसिंह और कर्ना गुजर भी समर्पण करेंगे।

सोवरन ने घबराकर कहा, "पर साहब आपसे भेंट कहां होगी'''आप चले गए तो क्या होगा ?"

"हम अपने बदलते पते भेजते रहेंगे, ताकि फुलवा चिट्ठी लिखवा सके, तुम पत्र लिख सको और हमारी गतिविधियों का ज्ञान कालनाथ और लंगुर बीर के जरिए होता चलेगा, सोवरन तुम चिन्ता मत करो'''मैं जीवित रहा तो तुम सबसे जेल में आकर मिलूंगा।"

भूतनाथ अपने पांच अनुयायियों के साथ चलने लगा। सोवरन ने उसको प्रणाम किया और जब तक वे अदृश्य नहीं हुए, रोते हुए रास्ते को देखता रहा।

30

कर्नलसिंह सानेहवाल के रूप में भूतनाथ रास्ते में कई काम निबटाता हुआ वसंतपंचमी की पूर्व संध्या को इटावा के टिकिसी के महादेव मंदिर पर आया। पुजारी जी को, सबूत न मिलने और बुढ़ापे के रोगों के कारण छोड़ दिया गया था। उनके पक्ष में बकेवर में पाने के आतंक के विरुद्ध जनसंघर्ष में काम आए साथियों के गुण गाते हुए, "कामरेड धतिबल अमर रहे," के नारों के साथ, लखनऊ में इतने जोर का कृषक-प्रदर्शन हुआ था कि सरकार हिल गई थी और उसने बकेवर-काण्ड की न्यायिक जांच की घोषणा कर दी थी।

दरोगा महीपता को तो गणों ने मार डाला था और न्यायिक जांच के नाटक में जनता को अधिक विश्वास नहीं था, अतः गवाही-साखी का प्रबन्ध करते हुए भी टिकिसी के महादेव-केन्द्र को पुनः चलाने का काम मुख्य था। प्रदर्शन और इटावा के लोकप्रिय कुछ नेताओं की राय से पुजारी जी को छोड़ दिया गया, मगर बाहर से आए नक्सली नेताओं के पीछे पुलिस हाथ धोकर पीछे पड़ गई थी। वे मंजे हुए क्रान्तिकारी थे, इसलिए वे इटावा के यमुना नदी के भरकों में उतर गए और लंगुरा, सिंहा और त्रिशूला इत्यादि के नेतृत्व में धौलपुर के पास चम्बल पार कर ग्वालियर और शिवपुरी होते हुए अपने-अपने

ठिकानों को चले गए।

पुजारी जी बीमार हो गए थे। भेद लेने के लिए पुलिस ने उनकी पिटाई की थी, उन्हें बिजली के झटके दिए गए, भूखा रखा गया, उलटा लटकाया गया, रस्सी बांध कर हाथ-पैर ऐंठे गए, सोने नहीं दिया गया। वे विक्षिप्त से हो गए, आएं-बाएं बकने लगे लेकिन वह पुरानी पीढ़ी का क्रान्तिकारी था। पुजारी ने नक्सली नेताओं का नाम नहीं लिया, न स्थानियों के नाम बताए। कामरेड अतिबल शहीद हो चुके थे और वे ही नेतृत्व कर रहे थे, इसलिए पुजारी अतिबल का ही नाम लेते रहे।

कई महीनों तक पुजारी बीमार रहे। लुकछिप कर जो जनगण और गणेश आते, उन्हें वह परामर्श देते कि फिलहाल, रचनात्मक काम करो और वैधानिक आन्दोलनों द्वारा जनमनोबल ऊंचा किए रहो। दबो मत मगर बकेवर जैसा काण्ड मत करो।

शुरू के महीनों में बिखराव के बाद जनगणों में पुनः संगठन और उत्साह वापस आ रहा था। इटावा के बाहर के जिलों के गणों ने बहुत मदद की थी। घायलों का इलाज, मृतकों के परिवारों की देखभाल, मुकदमे में आर्थिक-सहयोग और लगातार आवागमन, बैठकें और विचार-विमर्श से, बकेवर काण्ड के बाद, गण समितियों में पुनः जान आने लगी थी। सरकार, जितना ही दबाती, पुलिस जितना ही सताती, गणों की वृद्धि उतनी ही होती और जनसाधारण उतनी ही उनकी तरफदारी करता। पुलिस उपाय करके परेशान हो गई, किन्तु जनगणों के विरुद्ध गवाह नहीं मिले। पुलिस के एजेण्ट बनकर जो झूठी गवाही को तैयार हुए, उनका हुक्कापानी बन्द कर दिया गया।

पुजारी जी बच तो गए थे लेकिन वे चारपाई पकड़ चुके थे और उनकी जीवन-ज्योति मंद पड़ने लगी थी। आश्चर्य यह था कि वे अब तक बुझे नहीं थे। उन्हें रक्त के कै-दस्त होते, उनकी किडनी खराब हो गई थी, रक्तचाप का रोग था, शिरशूल होता रहता था, हड्डियों में मर्मान्तिक पीड़ा होती, पुलिस ने भीतरी मार दी थी···लेकिन पुजारी जी इच्छामृत्यु थे, पता नहीं किस आशा में उनके प्राण अटके हुए थे, दीपा और चिरंजीव उनकी सेवा में थे। बकेवर काण्ड के बाद वे बम्बई से आ गए थे और उन्होंने सामाजिक कार्य के सिवा, पुजारी जी का उपचार तल्लीनता से कराया था।

पुजारी जी टिकिसी के महादेव के मंदिर की पूजा तो न कर पाते थे पर उन्हें ऊपर मंदिर में शिवविग्रह के सामने बरामदे में, सुबह-शाम, लिटा दिया जाता था। वह टकटकी बांधकर शिव पिण्डी को देखते और आंसू पोंछते रहते थे। आरती के बाद पुजारी जी को चारपाई पर डालकर या पीठ पर लादकर उनकी कोठरी में पहुंचा दिया जाता। जब से पुजारी जी घायल और रुग्ण होकर हवालात और जेल से आए थे, तब से उनका पुरातन नाग, उनका साथ नहीं छोड़ता था। शायद उसे अहसास हो गया था कि उसका प्रतिपालक संकट में है। सो, वह पुजारी जी के पास चुपचाप, मलीनमन बैठा रहता या आसपास रेंगता रहता। यदि निकटतम व्यक्तियों के अतिरिक्त कोई अजनबी पुजारी जी के पास जाने का उपक्रम करता तो नाग क्रोध में फुफकारने लगता। उसने खाना-पीना भी कम कर दिया था और वह पुजारी जी की तरह रुग्ण और कमजोर लगता था। प्रातः सन्ध्या, जब पुजारी जी को ऊपर शिवविग्रह के दर्शनार्थ ले जाया जाता तो नाग को भी साथ ले जाना पड़ता। वह शिवलिंग में लिपटता, पूजाघर में रेंगता या पुजारी के पास बैठा रहता। यही शाम को आरती के समय होता। अब जनता को नाग से डर नहीं लगता था। बहुत बार बच्चे उससे खेलते रहते। वह फण उठाकर उनका मनोरंजन कर देता मगर छूने नहीं देता था। सिर्फ पुजारी और दीपा से वह हिला हुआ

था। वह उसे चाहे जैसे उठाते, हटाते रहते थे। भोजन भी वह उन्ही के हाथ से करता था।

टिकिसी के महादेव के प्रांगण में पुलिस की चौकी पर अब सिपाहियों की संख्या अधिक थी और देवी के मंदिर के सामने तो विधिवत् पुलिस-शिविर स्थापित था। वहां भीड़ अधिक रहती थी। भूतनाथ ने यह बंदोबस्त देखकर दीपा चिरंजीव के घर जाना उचित समझा क्योंकि सिक्खों के प्रति एक अजीब शंका, वितृष्णा और भय, गैर-सिक्खों में बढ़ रहा था। जो सिक्ख कभी हिन्दुओं के रक्षक माने जाते थे, वे अब भक्षक माने जाने लगे थे। यों अभी तक स्थानीय सिक्खों ने कोई हरकत नहीं की थी, न गैर-सिक्खों ने उन पर कोई हमला किया था।

भूतनाथ, अब तक केशों को ढाटे में छुपाए यहां तक आया था लेकिन अब उसे लगा कि इस रूप में वह स्वतंत्रता से काम नहीं कर सकता। केश तो पुनः एक माह में बढ़ाए जा सकते हैं। जब वह दीपा-चिरंजीव के घर पहुंचा तो शाम हो रही थी। लम्बे केशधारी सिख को देखकर, चौधरी-चौधराइन, डर के कारण सहम गए और उन्होंने पूछा कि वह कौन है और क्या चाहता है? भूतनाथ ने दीपा और चिरंजीव का नाम लिया तो भी उन्हें भरोसा नहीं हुआ तब भूतनाथ को हंसी आई। उसने विनोद में बताया कि वह भूतनाथ है, पत्रकार और दीपा-चिरंजीव का मिलने वाला, और नाटक कम्पनी में सिख का पार्ट करता है, इसलिए यह वेष बनाया है। तब चौधरी को इत्मी-नान हुआ। भूतनाथ उनके घर कई बार आ चुका था और दीपा उसे अपना सरंक्षक मानती थी। उन्होंने दोनों को आवाज दी। दोनों भागते हुए आए, और एक सिख को देखकर दंग रह गए—चौधरी-चौधराइन ने आनन्द लेने के लिए भूतनाथ का भेद नहीं बताया।

"आप···आ···प···कौन हैं?"

"कर्नैलसिंह सानेहवाल।"

"क्या? आप···यहां क्या कर रहे हैं, आप···आप क्या हैं?"

"पहचानिए! क्या केशधारी हो जाने से आदमी, आदमी नहीं रह जाता?··· मैं आप दोनों को सिख बनाने आया हूं, सच्चा गुरु का सिख, सच, मेरा नाम कर्नैलसिंह है, हः हः हः हः हः।"

हंसते ही भूतनाथ का रहस्य खुल गया। दीपा ने पहचान लिया। वह भागकर भूतनाथ के वक्ष में जा लगी और उसकी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगी। चिरंजीव भी हंसने लगा "···ओह। तो आप हैं···आइए न।"

कुशल मंगल, चाय-पानी के बाद भूतनाथ ने चिरंजीव के द्वारा एक नाई को बुलवाया और दाढ़ी-मूंछ साफ कराई। फिर स्नान कर, वस्त्र बदल कर पुजारी से भेंट के लिए तैयार हुआ। दीपा ने बम्बई में कराल दुदकरे के काम की रपट दी। उसने बताया कि पूंजीपति, कपड़ा मिलों को बन्द कर, उनकी पुरानी मशीनरी बेचकर, कारखानों की लम्बी-चौड़ी जमीनों पर रिहायश के मकान बनाकर करोड़ों कमाना चाहते थे। कामरेड कराल दुदकरे यदि लाखों श्रमिकों की हड़ताल को डेढ़ वर्ष तक न खींच ले जाता तो मालिक अपने षड्यन्त्र में कामयाब हो जाते। कराल ने, कुशल प्रबन्ध और ऊंचे आदर्श व्यवहार से मजदूरों को जिन्दा रखा, बम्बई में जनआतंक स्थापित किया और पेशेवर पार्टियों के अवसरवाद से उन्हें बचाया। बाद में वामपंथी दलों ने समर्थन भी दिया पर पूरी तरह नहीं। वे अपने शिकंजे के बाहर के संगठनों को कम

महत्व देते हैं चाहे मजदूरों पर कितनी ही मुसीबत क्यों न आ जाए ''''आपके लंगुरवीरों ने तो कमाल कर दिया। जब-जब मालिकों के क्रीत गुंडों, पेशेवर दादाओं और शासक-दल के शोहदों ने मजदूरों या जनता पर अत्याचार किया, आपके भेजे शूर-वीरों ने उन्हें खलास कर दिया और खिसक लिए। आश्चर्य तो यह है कि आप यह कैसे प्रबन्ध कर लेते हैं ?"

"यह हम नही, वे ही करते हैं, उनके अपने आदमी बम्बई में है, वे खबर कर देते हैं।"

"मैं यह नही मानती। आपके बिना वे कुछ नही कर सकते। एक बार तो आपका एक आदमी, उसका नाम शायद त्रिशूल था, पकडा गया। उसे हवालात में बन्द कर दिया गया। बहुत मारपीट हुई, बेचारे की, पर उसने कुछ नही बताया। कहा कि वह बाद मे बताएगा। दूसरे दिन पुलिस उसे अदालत में ले जा रही थी। भरे बाज़ार में पुलिस-पार्टी की गाड़ी को रोक लिया गया। गोलिया चली और त्रिशूल को छुड़ा लिया गया। पुलिस के सिपाही इतना डर गए थे कि वे कुछ न कर सके'''मुझे तो लगा कि उनमें से एक दो मिले हुए थे।"

"अहीर या गूजर होगा कोई उनमें। त्रिशूल बागी है और गूजर है।"

"अब वे कहा है, आपके तिलगे ?"

"वे अब अपने मिशन में हैं। बागी गिरोह उन्होने छोड़ दिया। वे कर्मा गूजर के गिरोह के थे, वे ही जो तुम्हारा अपहरण करने आए थे।"

दीपा के बदन मे सिहरन उठी। वह काप गई। भूतनाथ ने उसे चिढ़ाने के लिए कहा—

"हु, हुम्, हुं, हुम्।"

तीनो हसते रहे। दीपा ने पूछा,

"और भी तो होगे। आपने लोहे को सोना बना दिया और गिरोहो के भी होगे ?"

"हा हैं, वक्त पर प्रकट होंगे। क्रान्तिकारी घटनाएं बढ़ें तो डाकुओं से टूटकर कई बागी आ सकते हैं। वे अपमानित अपराधी का जीवन जीते हैं न, उन्हें समाज के हित में, साहसिक कार्य करने को मिल जाए, तो और उन्हें क्या चाहिए ? आप उनमें सामाजिक दस्युता करा सकती हैं, सामाजिक डकैती—चोरी भी। हमारे पास दो चार ऐसे हैं जो अद्वितीय हैं, अद्भुत भी हैं'' कभी उनका कौशल देखना।"

"लेकिन वे खतरनाक साबित हो सकते हैं। उनमें चेतना तो होती नही, आपके व्यक्तिगत करिश्मे, कृतज्ञता या किसी निजी भावना से ही वे काम कर सकते हैं।"

"उनमें भी आत्मसम्मान का भाव होता है, वे भी समझते हैं, समझ सकते हैं। उनसे बड़े अपराधी आपके समाज में हैं।"

"खैर, आप जानें, आप जैसा नेता हो तो वे गड़बड़ नही कर सकते। वे आपसे डरते भी है। आप उन्हें, उन्हीं के स्तर पर, सजा दे सकते है।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है कि जब ये दस्युगण चुनावो मे, शासकदल के विधायकों, एम० पी० लोगो के पक्ष मे आतक फैलाते हैं तो क्या वे जनहित मे उनके विरुद्ध आतक नहीं फैला सकते या वैसा करना अनुचित होगा ?"

"आप अधिक समझते हैं, पर न जाने क्यो मुझे इनके प्रयोग मे खतरा महसूस होता है ?"

"खतरा तो हर एक बात में है, सवाल उसके नियोजन का है, कुशल प्रयोग का, सतत सावधानी के साथ जनयुद्ध में, सब प्रकार के सहायकों के इस्तेमाल का है।"

"तो चलें पुजारी जी के पास ? आप बहुत मौके से आए हैं...वह अब बच नहीं सकते।"

दीपा के नेत्र भर आए। भूतनाथ गम्भीर हो गया। कोई कुछ नही बोला। तीनों अंधेरे में टिकिसी महादेव की ओर बढ़े।

पुजारी जी अपनी कोठरी में, मद बिजली के बल्ब की रोशनी में छत को ताकते पड़े थे और कराह रहे थे। नाग उनके पैरों को अपनी लपेट में लिए निर्जीव की तरह पड़ा हुआ था। पुजारी ने कई बार नाग को अलग करने की कोशिश की पर वह बार-बार उनके पैरों में लिपट जाता और उन्हें गुजलक में लेकर फण रखकर शिथिल हो जाता। क्या वह जान गया था कि क्या होने जा रहा है ? जैसे ही दीपा, चिरंजीव और भूतनाथ पास पहुंचे, नाग पहले तो गुस्सा करके फुनफनाया फण खड़ा किया, फिर दीपा को पहचान कर, सरककर उसके पास आ गया और चाहने लगा कि वह उसे प्यार करे। दीपा ने उसे उठाकर गले में डाला और स्नेह दिखाया, उसका मीठा लिया। नाग संतुष्ट होकर पुनः सरक कर पुजारी के पैरों को अपने में लपेटकर शान्त हो गया।

इस दृश्य को देखकर कोई भी भावुक हो उठता। दो असाधारण प्राणी, जैसे अनन्त की यात्रा के लिए तैयारी कर रहे हों।

तीनों ने आंसू पोछकर, लगभग अचेत पुजारी जी को देखा। वे छत पर न जाने क्या खोज रहे थे...कहीं आखें तो नही टग गई ? सर्प की जब तब टरन-बरन से पुजारी जी अप्रभावित थे। दीपा को भूतनाथ ने सकेत किया। वह रोगी के पास गई और उसने पुजारी के माथे पर हाथ रखा। एक क्षण कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला, पर दूसरे क्षण पुजारी ने जब दीपा का शब्द सुना, "बाबा...बाबा...देखिए तो आपसे मिलने कौन आए हैं ?"

'बाबा' शब्द पुजारी को अवचेतन से वापस लाने लगा। वह छत को नही, अपने बचपन, किशोरावस्था और बाद की जीवन-लीला देख रहे थे। उन्होने अपने को एक स्नेही मगर दरिद्र माता-पिता की गोद में पाया और वह मां-बाप के लाड के चित्रों में निमग्न थे। पिता घोर आदर्शवादी, सात्त्विक जीव थे, पुत्र और देश, दो के लिए जीते थे। फिर पुत्र को भी देश के लिए दे दिया और सारी अभिलाषाएं छाती में दबाए चले गए। मां उनके बिना नहीं रह सकी। जल्दी ही स्वर्ग सिधार गई। बालक अनाथ हो गया। मौसी-बुआ और बहिनों के घर पालन-पोषण हुआ। शिक्षा भी हुई थोडी सी। फिर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े...सारा जीवन ध्येयनिष्ठता में गया। कभी चैन नहीं लिया, कभी कोई इच्छा, कोई वासना पूरी नही की। जेल में पढ़ते-पढाते रहे, अनशन और सत्याग्रह...फिर क्रान्तिकारी हो गए...उनके साहस के किस्से मशहूर थे...एक बार बचपन में कच्चे घर में नाग निकल आया। बालक जरा भी न डरा और लाठी से उसे मार डाला। पिता माता सन्न रह गए...इस बालक में तो परशुराम का अंश है... गजब कर दिया। एक बच्चे ने सांप मार डाला...पड़ोस के लोगों-लुगाइयों ने उस पर राई-नमक उतारा, कहीं नजर न लग जाए। क्या बालक है ! आज भी नाग पैर में लिपटा है, "बाबा" "बाबा" की ध्वनि कहां से आ रही है...?

"बाबा। बाबा। देखो तो आपसे मिलने कौन आया है ?"

मस्तक पर दीपा का नरम और प्रस्वेद युक्त स्पर्श अनुभूत हुआ। पुजारी जी ने कठिनाई से नेत्र खोले पर पहचान नहीं सके। उनकी तबीयत कुछ ज्यादा ही खराब थी।

"कौन ? दीपा बेटी···कौन है ?"

"आप पहचानिए, देखिए कौन हो सकता है ?"

'कौन हो सकता है ?"

दीपा के संकेत पर भूतनाथ पुजारी के चेहरे पर झुका, "देखो बाबा, पहचान।"

पुजारी ने बल लगाया। भूतनाथ का हाथ अपने हाथ में महसूस किया। जर्जर हाथ से भूतनाथ का चेहरा टटोला—

"बेबी। यह तो भूतनाथ का चेहरा है, वह हाथ, वही नाक, वही दृढ़ ठोड़ी किन्तु भूतनाथ यहां कहां हो सकता है ?···बेटी, तुम उसे बुला नहीं सकती, क्या ? ज के पहले एक बार देख लेता···वही तो अंतिम आशा है बेबी···।"

पुजारी थक गए। दीपा ने उन्हें दवा दी, पानी पिलाया। कुछ देर तक शिथि पड़े रहे। भूतनाथ चुपचाप उनके हाथ-पैर दबाता रहा। दवा से कुछ चेतना आई। पु नेत्र खुले मगर खांसी आ गई। बलगम में रक्त का थक्का गिरा, जिसे कढ़ाई की रा में दीपा ने ले लिया और खेह से ढक कर पुनः कढ़ाई रख दी। उसने भूतनाथ की ओ लाचारी से देखा।

भूतनाथ ने पुजारी की नब्ज देखी। उसमें जान थी यों दुर्बल थी। रक्त व बलगम में आना अच्छा नहीं था। भूतनाथ ने दीपा से डाक्टरों के लिखे नुस्खे देखे, रो के लक्षण और उपचार पढे, फिर कुछ सोचकर उसने अपने झोले से एक छोटी सी शीश निकाली। उसने पानी में उससे कुछ बूंदे डाली और दीपा को संकेत किया। दीपा ने उं बाबा को जोर देकर पिला दिया।

तीनों दवा के असर की प्रतीक्षा में मौन बैठे रहे। तब तक महानाग ने चिरजीव और भूतनाथ के पास जाकर उन्हें सूंघा, स्पर्श किया। फिर निश्चिन्त होकर पुनः बाबा के पैर लपेट कर विवशता में फन पाटी पर रखकर सोने लगा।

आध घंटे के बाद दवा का जादुई प्रभाव पड़ा। गले की खरखराहट कम हो गई। सांस पर दबाव हट गया। रक्त संचार सामान्य होने लगा। नब्ज में उभार आ गया और बाबा के नेत्र खुल गए। अबकी बार उन्होंने भूतनाथ को पहचान लिया—

"क्या ?···आ···प···तुम ?"

"हां बाबा। मैं भूतनाथ, आपका···बेटा।"

"बेटा।" सुनते ही पुजारी में शक्ति का सचरण हुआ और वह तकिए पर उठकर बैठने को हुए, पर दीपा ने उन्हें बलात् लेटा रहने दिया लेकिन उनकी करवट बदल दी, ताकि वह भूतनाथ के सामने हो सकें।

"क्या कहा तुमने भूतनाथ ?"

"आपका बेटा। गदाधर।"

"गदाधर···गदाधरसिंह, भूतनाथ। मेरा बेटा। आओ, मेरे हृदय से लग जाओ।"

भूतनाथ बाबा को गोद में लेकर बैठ गया और उन्हें अपनी छाती से चिपका लिया—

"बाबा। अभी से साथ छोड़ने लगे, अभी तो श्रीगणेश हुआ है···अभी से···?"

"बेटा। अब बस हो गया, तुम, हो तो चैन से जाऊंगा···किंतु तुम कब आए ?"

"बस, आ गया, कल बसन्त पंचमी है न, कल बागियों का समर्पण होगा भिण्ड में। मुझे आपकी रुग्णता का समाचार मिल चुका था, चला आया।"

"लेकिन, वह क्वांरी, वह करना गूजर। ये तुम्हारे बिना समर्पण कैसे करेंगे ?"

"करेंगे बाबा, सब निश्चित कर आया हूं, सब कुछ। आप स्वस्थ होते तो हम सब वहां चलते। इटावा से सीधी बस जाती है भिण्ड को, लेकिन अब क्या हो सकता है ?"

"अब, मेरी चिता रचो…कल चलाचली होगी…शायद आज ही चला जाता, पर तुम आ गए। तुम्हें देख लिया, सब पा लिया, दीपा, मेरी वह संदूकची लाना।"

चिरंजीव ने कुछ भारी-सी सदूकची उठाई और बाबा के पास, तख्त पर रख दी। बाबा ने जनेऊ में बंधी चाबी की ओर संकेत किया। दीपा ने उसे खोला। बाबा ने दस-बारह दस्तावेज निकाले। वे अलग-अलग, लिफाफों में सावधानी से बन्द थे और उनको फिर लाल कपड़ों में बांध दिया गया था।

"बेटा भूतनाथ। तुम इनके हकदार हो। इन्हें बाद में पढ़ना। मैं इतिहास हूं, इतिहास ही दे सकता हूं, भविष्य तो तुम्हारे हाथ है।"

"नहीं बाबा, मैं भी भूत हूं। भविष्य तो इनके हाथ है।"

"यही सही, इनके और इनके नाती-पोतों के हाथ सही…पर भविष्य है, यह मत भूलना।"

"नहीं भूलेंगे, कभी नहीं।"

बाबा फिर उस पेटी में कुछ खोजने लगे। उनके हाथ कांप रहे थे मगर वे रुके नहीं, लगे रहे। कुछ पाकर उसे दीपा के हाथ में रखकर उसकी मुट्ठी बन्द कर दी और कहा… "बेटी, मैं तुम्हें क्या दे सकता हूं। यह तो एक अकिंचन की स्मृति मात्र है, इसे लो। लेकिन इसे बाद में देखना।"

दीपा ने उस वस्तु को, बिना देखे, अपने पर्स में रख लिया।

बाबा पुनः कुछ ढूढने लगे। फिर उन्होंने कोई चीज चिरंजीव को दी। वह वस्तु जरा बड़ी थी और एक कपड़े की थैली में बन्द थी। उससे भी यही कहा कि वह बाद में इसे खोले, अभी नहीं।

पुनः संदूकची से बाबा ने दो कुछ बड़े थैलों को भूतनाथ को सौंपा और अन्त में एक छोटा सा तेज चाकू निकाला। वह उसकी धार देर तक, बिजली की रोशनी में देखते रहे। फिर अचानक, उन्होंने कनिष्ठ अंगुली पर हलका चीरा लगाया। रक्त छलछला आया। दीपा ने रोका पर वह नहीं माने और रक्त का भूतनाथ के मस्तक पर टीका किया। उसका सिर सूंघा, मस्तक पर अपने रक्तहीन होंठ रख दिए और बाबा बिलख कर रोने लगे—

"बेटा। क्षमा करना, शरीर ने धोखा दिया, अन्यथा…।"

बाबा अचेत हो गए। चिरंजीव और दीपा जोर से रोने लगे, किन्तु भूतनाथ ठगा-सा बैठा रहा। उसकी आंखों से आंसू बह रहे थे पर बोलने की स्थिति में वह नहीं था। नाग इस क्षण टरबराया और भूतनाथ की गोद में पड़े पुजारी जी के ऊपर रेंगता हुआ, भूतनाथ की गरदन में लिपट गया। दीपा और उसका भाई, वह देखकर चीत्कार कर उठे। नाग समझ गया कि अब बाबा का उत्तराधिकारी कौन है।

भूतनाथ के संकेत पर चिरंजीव मंदिर के पंडित पुजारी को बुला लाया। उसने बाबा की नाड़ी देखकर कहा कि जब तक सांस है, तब तक आस है। गीता का पाठ

होना चाहिए। उसने दो ब्रह्मचारियों को बुलाकर कोठरी के सामने, गीता का पाठ कराना शुरू किया और एक पंडित को महामृत्युंजय का जप सौंपा। मंदिर के सभी कर्मचारी सेवक तथा भक्तगण कीर्तन-भजन मे लग गए।

भूतनाथ ने कुछ समय बाद पुनः अपनी औषधि दी पर अबकी वार कुछ भी प्रभाव नही हुआ। प्रातः एक बार बाबा को पुनः होश आया। उन्होंने पागल दृष्टि से भूतनाथ की ओर देखा। उसने कहा—

"बाबा। सवेरा हो गया। बसंतपंचमी आ गई। ऋतु बदल गई, युग भी बदलेगा।"

बाबा ने, धरती की ओर संकेत किया। अविलम्ब कम्बल बिछाकर उनको जमीन पर लिटा दिया गया। गीता की स्वरलहरी में वह लीन हो गए। फिर एक बार आँखें खोलकर भूतनाथ की ओर टकटकी बांधी, और एक हिचकी के साथ बाबा का सिर लटक गया।

पुजारी जी के प्राण-विसर्जन के क्षण में ही महानाग के शरीर मे ऐंठन हुई उसने धरती पर फन पटका, पटकता रहा और वह भी निर्जीव होकर बाबा के पैरों मे गिर गया।

दीपा और चिरंजीव के रुदन से हृदय फटने लगे। भूतनाथ को काठ-सा मार गया। उसके आंसू अविराम बह रहे थे किन्तु उसमें बोलने की शक्ति नही थी। वह सिर्फ दीपा और चिरंजीव के सिर पर हाथ फेर-फेर कर उन्हें शान्त कर रहा था।

मृत नागराज को पैरों मे लिपटाए पुजारी जी के शव को, वस्त्रों और पुष्पों से सजाकर, अंतिम यात्रा निकाली गई। इटावा नगर और जहां-जहां तक समाचार पहुंचा, वहां-वहां से आबाल वृद्ध वनिता के ठट्ठ के ठट्ठ आने लगे और 'पुजारी जी अमर रहें' 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से दिगन्त ध्वनित होने लगे।

यमुना के किनारे नागराज सहित बाबा की चिता सजाई गई और भूतनाथ ने अग्नि दी, पिण्डदान किया और कपालक्रिया की। पुजारी जी यही अन्तिम इच्छा थी कि उसका बेटा भूतनाथ, उसकी विधिवत् क्रिया करे।

नागराज और पुजारी जी का शरीर भस्म हो गया पर वह आग जिसमें दोनों ने आहुति दी, क्या कभी बुझ सकती है? भूतनाथ अग्नि की लपटों में लवलीन हो गया और एक उच्छ्वास के साथ बुदबुदाया—

"बाबा। यह ज्वाला बुझेगी नही, तुम निश्चित महाप्रयाण करो।"

किसी लुप्तात्मा की तरह भूतनाथ, सबको विदा कर पुजारी जी के कक्ष में लौटा। वहा भजन पूजन का प्रबन्ध हो रहा था। वह उनके तख्त के नीचे कम्बल बिछाकर इस तरह बैठ गया जैसे कोई सब कुछ गवा कर, निराश और आहत हो। आज बाबा के बिना सब सूना था।

शुद्धिकर्म पूरा होने पर भूतनाथ ने वे दस्तावेज निकाले और पढ़ने लगा। वे भारत मे क्रान्तिकारियों के कृतित्व से सम्बन्धित थे और उनमे ऐसे तथ्य थे, जिनसे क्रान्तिकारियों का नया बिम्ब बनता था। प्रचलित इतिहासों और आत्मकथाओं में, कांग्रेस पार्टी के आधिकारिक वक्तव्यों, प्रस्तावों और कार्यों के विवरणों में, भारत के क्रान्तिकारियों को आतंकवादी और विचारधाराविहीन कुछ जोशीले देशभक्त नवयुवकों-नवयुवतियों का उत्तेजनाप्रिय, साहसिक संगठन बताया गया था। परन्तु इन दस्तावेजों से यह मालूम था कि उनके दृष्टिपथ में, भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था और राजनीति की एक पूरी

परिकल्पना थी और वे क्रान्ति को, मात्र राजनैतिक सत्ता प्राप्ति का साधन न मानकर यह मानते थे कि उसकी अग्नि में तप कर ही देश का जन अपने व्यक्तिवाद और फिरकापरस्ती से ऊपर उठ सकता है। क्रान्ति व्यक्ति को बदलती है, आमूलचूल। अतः उसमें यह शक्ति होती है कि वह समाज को भी पूर्णतः बदल दे। जब तक व्यक्ति और समूह, अग्निदीक्षा में से पवित्र होकर नहीं निकलते तब तक बदलाव का माध्यम अशुद्ध या विकृत होने से वह परिवर्तन भी विकृत हो जाएगा।

भारतीय स्वतन्त्रता, क्रान्ति के पथ से नहीं मिली, अतः देश के टुकड़े हो गए और नेतागण के मन की दुर्बलताओं ने आज़ादी के बाद कहर ढा दिया। जो हुआ, आधा-अधूरा, विसंगत और विकृत हो गया। सिर्फ अपनी और अपने परिवार की चिन्ता ही प्रधान हो गई और उसके लिए नियमों और मर्यादाओं को छोड़ दिया गया। रक्तक्रान्ति से डरकर आज़ादी ली मगर हिन्दू-मुस्लिम दंगों से लाखों भर मिट गए। सवाल यह है कि उतनी कीमत, पहले ही अदा क्यों नहीं की गई?

पुजारी जी ने यह सही लिखा है कि आन्दोलन या सामूहिक संघर्ष, उसके ध्येयों कि पूर्ति से अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि आन्दोलन की प्रक्रिया में व्यक्ति अपने स्वार्थ से ऊपर उठने की प्रेरणा पाता है। सभी ध्येय पूरे न भी हों और सभी ध्येय कभी पूरे नहीं होते, परन्तु उनकी पूर्ति की सामूहिक प्रणाली में व्यक्ति अपने घोंघापन, अपने सिकुड़ाव, अपनी पशुता तथा स्व के प्रति संलग्नता के आर-पार जाता और मनुष्य बनता है। यकीनन क्रान्ति वैधानिक और अहिंसक भी हो सकती है पर उसके लिए भी ऊंचे दर्जे का धीरज और परोपकार की भावना चाहिए। उसी से व्यक्ति और व्यक्ति के समुदायों-समुदायों के बीच जो अ-लगाव है, शुद्ध वैयक्तिक स्तर पर जो धार्मिक या अन्ध विश्वासपरक आत्मनिर्वासन होता है, उससे छुटकारा सामूहिक-क्रिया द्वारा ही मिल सकता है।

भूतनाथ को उन बुद्धिजीवियों के आत्मभ्रम पर हंसी आई जो पूंजीवादी समाज के इन-लगाव को बखानते रहते हैं किन्तु स्वयं उसी के घेरे में कोल्हू के बैल से जुते रहते हैं। उनके व्यवहार और वचनों में, सृजन और मनन में, मानवीय प्रेम और लगावों की लयों का संचरण नहीं होता अतएव वे न चाहते हुए भी अ-लगाव के आढ़तिए बन जाते हैं। इन आत्महीन वक्तव्य-व्यापारियों के पास पूंजीपरस्त दिमाग होता है, हृदय नहीं होता और क्रान्ति सहृदयता है, कोरी मस्तिष्कीय—महामारी नहीं।

बाबा की शक्ति का केन्द्र उनका विशाल हृदय था, जिसमें सब प्राणियों के प्रति प्रेम था, सिर्फ उन्हें छोड़कर जो दूसरे जीवों के रक्त पायी हैं। रक्तपिपासुओं के प्रति क्रोध, सहृदयता का निकष है। कोरा दिमाग तो वकील के पास भी होता है। यह तर्क कर सकता है, मुक्त नहीं कर सकता।

"पूंजीवाद मनुष्य को हृदयहीन बनाता है, इसलिए उसका उन्मूलन करो।" बाबा की इस उक्ति में सार है।

और बाबा ने यह भी सही लिखा है कि क्रान्ति शाश्वत है। उसमें विश्राम नहीं है, मनन प्रयत्न है। एक-एक सोपान की चढ़ाई है और सीढ़ियां अनन्त हैं। रुक गए या सन्तुष्ट हो गए तो जहां जिस सोपान पर हो, उससे नीचे गिरोगे। इतिहास में ठहराव है ही नहीं। जो कर रहे हो, उसमें कुछ कमी तो रहेगी ही, इसलिए आगे उनकी शुद्धि करणीय होगी। पुनः न्यूनताएं रहेंगी, गलतियां होंगी, उन्हें दूर करो, करते चलो। तब मुड़कर देखो कि कितने नीचे थे और अब कितने ऊंचे पर आ गए हो लेकिन यहां भी

रुकना आत्मघात है क्योंकि यह जो मनुष्य है, यह प्रकृति है, वह प्राकृतिक प्राणी है, सामाजिक-कर्म के दरम्यान वह अपनी पशुप्रकृति पर विजय पाता है। पशु से शिव बनना ही तो इन्कलाब है। पशु बने रहकर जो व्यवस्था चलाओगे, चकनाचूर हो जाएगी अतः "सदाशिव" की धारणा शास्त्रों में है। उसे समझो भाई! होड़ करो तो सदा-शिवत्व की करो, अपने को औरों पर लादने और अमरबेल की तरह दूसरों के रस को खींच-खींच हरे-भरे होने में खतरा यही है कि जिन पौधों का रस तुम पी रहे हो वे लाचार होकर विद्रोह करेंगे ही। अतः क्रान्ति अनिवार्य है, उसे टाला जा सकता है पर रोका नहीं जा सकता।

"भूतनाथ आज तुम क्रान्ति की धुरी हो। तुम क्या हो, क्या थे, ये प्रश्न व्यर्थ हैं, तुम कर क्या रहे हो, प्रश्न यह है।"

"करो या मरो"····बाबा का यह अन्तिम वाक्य था।

भूतनाथ ने दस्तावेज समाप्त किए और वह घोर अँधेरी रात में टिमटिमाते उस विद्युत-दीप की शक्ति पर मुग्ध हो गया।

31

नौ दिन तक, पुजारी जी के शव का दाह-संस्कार करने से भूतनाथ को जमीन और तख्त पर सोना पड़ा। नवें दिन, नौवार हुआ और तेरहवें दिन, तेरहीं या मृत्युभोज। मृत्यु-भोज पर जिले के सभी कार्यकर्ताओं से मिलने, हालचाल को समझने और दोबारा सब ठीकठाक करने का बढ़िया मौका था, अतः भूतनाथ ने बाबा के महाप्रयाण के दूसरे ही दिन श्याम दीक्षित, राजेन्द्र तिवारी, रहमत खां, मौलाबख्श, सरदार करतार सिंह, ज्वालामुख और स्वर्गीय कामरेड अतिबल के लड़के निर्भय दुबे इत्यादि को गणेशों और और गणसमिति के सदस्यों को बाबा के मृत्युभोज में आने को कहलवा दिया था। जंगल की आग की तरह, जिला इटावा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद, कानपुर, जिला भिण्ड, जिला आगरा, भरतपुर, धौलपुर, करौली और अन्य दूरदराज इलाकों के गणों तक बात फैल गई कि पुजारी जी का मृत्युभोज परम्परागत ढंग से नहीं होगा, इसलिए गणसमूह अपने भोजन की स्वयं व्यवस्था करें, सिर्फ प्रतीक रूप में मामूली मृत्युभोज होगा, जैसा कि बाबा की इच्छा थी।

तेरह दिन की प्रतीक्षा। भूतनाथ को पहली बार अनुचिंतन का अवसर मिला। वह कुछ खा-पीकर कम्बल पर लेट जाता और जो अब तक हुआ था, उसकी कड़िया मिलाता रहता। बाबा की मृत्यु से उसे ऐसा झटका लगा था कि उसके सोच में विशृ-ंखलता सी आने लगी थी। वह जिस विषय पर ध्यान लगाता, कूद कर दूसरे विषय पर पहुंच जाता। जब उसके मन में बचपन के बिम्ब बनते तो बीच में पत्रकारिता के चित्र आने लगते और उनके मध्य कोई अन्य स्थान का चलचित्र चलने लगता। उसे चेतना की इस गति और उसके अनोखे संयोजनों पर ताज्जुब होता। वह देखता कि प्रारम्भिक शाला में वह बच्चों के साथ पढ़ रहा है और शरारतें कर रहा है। अचानक वह बेणीमाधव की बांसुरी सुनने लगता। कलाकार के राग में जब वह सो रहा होता, तभी उसके घर पर कप्तान दुदकरे का सिर उग आता। फिर वह रूपाकार लुप्त हो जाता, पाकिस्तान के

शिक्षण-कैम्प के किसी साथी की दाढ़ी और मूंछ उसके अवचेतन में हिलने लगती। उसे लगता उसे एक साथ कई पूर्वपरिचित व्यक्ति बुला रहे हैं। किन्तु जब वह किसी एक ओर जाता तो वहां बचपन में साथ खेली हुई कोई लड़की हंसती हुई मिलती। ध्वनियों का मिश्रण भी अजीब हो गया। बन्दूक की आवाज के साथ साइकिल की घण्टी टनटनाती और उसमें हाथी की चिंघाड़ मिल जाती। ध्वनियों के आकार-प्रकार बदलने लग जाते। वह शेर की दहाड़ को संगीत में बंधा पाता…शेर अलाप भरता और तान पर दहाड़ को समाप्त करता। मध्य में कोयल कूकती और चमगादड़ पंख फड़फड़ाते, चिचियाते। उसका दृष्टिपथ भी प्रभावित हो गया। वह जब लेटे-लेटे थक कर बाबा के कमरे के बाहर निकल कर जंगल को देखता तो दरख्तों में से पेड़ चलकर उसके पास आता और कोई पत्र उसे डाली बढ़ा कर दे देता और वह शाखा फिर सिकुड़ कर स्वाभाविक हो जाती और वह पादप सैल्यूट कर वापस अपनी जड़ों पर जाकर स्थिर हो जाता। उससे वन बतियाने लगता और सुझावों का प्रवाह उसके कानों पर प्रहार करता। आकाश में बादल न होने पर नीला आकाश कभी आंखें तरेरता, कभी लगता कि उसके धड़कते हृदय में नीलिमा का समुद्र तटबन्ध तोड़कर जबरदस्ती घुसता जा रहा है और फिर अचानक ठहर कर कहता है, भूतनाथ! हृदय बड़ा करो, और बड़ा…और और इतना कि मैं पूरा समा जाऊं। आकाश में बादल होने पर तो गजब हो जाता। कोई ऐसी वस्तु और व्यक्ति नहीं, बादल जिसका रूप न धरते हों और फिर पागलों की तरह वे गड़गड़ाते, हवा के साथ बहते चले जाते। भूतनाथ के दिल में बिजलियां कड़कती और वह किसी वज्रपात की आशंका से कांप कर रह जाता।

…क्या ध्यान की यह कूद अवसों की मनमानी मिलावट मानसिक-सक्रियता की अति से उपजती है या यह किसी घटना का असर है? बाबा के मरने से एक मानसिक स्तम्भ टूटा था पर उसे टूटना ही था। अनिवार्य का इतना घातक प्रभाव कैसे हो सकता है? क्या घटनाओं के अप्रत्याशित मोड़ों से उसका मस्तिष्क अपनी सहज गति छोड़ रहा है या उसकी जन्मजात अपराध भावना के कारण, कि उसने ऐसा क्यों किया, ऐसा क्यों नहीं किया? क्या उसे कुछ समय के लिए भूमिगत हो जाना चाहिए? क्या उसे किसी अखाड़े में जाकर मालिश, वरजिश और मल्लक्रीडा में लग कर इस बनते-बिगड़ते इतिहास से कुछ समय के लिए छुट्टी ले लेनी चाहिए?

कुछ भी तै न कर पाने और उधेड़बुन को काटने के लिए वह बाबा के कमरे के सामने, मन्दिर के एक कोने में खुदाई करने लगा ताकि बाबा की स्मृति में कुछ बनाया जा सके। जब तक वह खोदता या उस स्थल के झाड़ काटता, तब तक चिन्तनधारा स्थगित रहती, किन्तु बाद में वही पुनः मनमाने चलचित्रों की नुमायश शुरू हो जाती। घबरा कर वह पुनः शारीरिक श्रम करने लगता। एक-दो दिन बाद उसने पाया कि शारीरिक श्रम के समय कार्य की जो लय बनती है, उसमें भी अवचेतन अपने मुहाने खोल देता और अंतर्चेतना का बायोस्कोप दृश्यों को धड़ाधड़ चालू कर देता। एक बार तो कुल्हाड़ी से पेड़ काटते वक्त, जब वह एक लय में काट रहा था, वह आंतरिक चित्रावली में इतना तल्लीन हो गया कि कुल्हाड़ा पेड़ के मूल पर न पड़ कर उसके पैर पर पड़ा। गनीमत यह थी कि वह हल्की चोट कर रहा था, इससे पैर पर हलका घाव लगा। वह चीख कर गिर पड़ा। इधर-उधर के लोगों ने उसे उठाया और घाव की मरहमपट्टी की।

…उसे कुछ हुआ जरूर है। क्या हुआ है, यह साफ नहीं समझ में आता…या कुछ होने को है? क्या किसी घटना का यह पूर्वाभास है? उसकी इच्छाशक्ति को

कसावट ढीली पड़ रही है क्या ? वह चाह कर भी, संकल्प करके भी किसी एक बात पर देर तक स्थिर क्यों नही हो पाता ? विवेच्य विषय के ब्यौरों की जगह, वह विषय दृश्य क्यो उगलने लगता है ? अचानक, उसे याद आया कि वह तो भूतनाथ है न। भूतनाथ अक्सर असमंजस का शिकार हो जाया करता था वह तो मुझसे भी अधिक अस्थिर, शक्की और स्वार्थी था, क्रूर भी था, प्रतिक्रिया की झोंक में वह कुछ भी कर गुजरता था।···मैं तो ऐसा नहीं। मैंने पक्ष नहीं बदला, अपना मार्ग नही छोड़ा···लेकिन क्या इच्छाएं मुझे ललचाती नहीं ? ···ललचाती हैं। मन करता है, कुछ न करूं। इस प्रिय उधेड़बुन, इस ब्रूडिंग का आनन्द लेता रहूं, भोजन, विश्राम, भ्रमण और उधेड़बुन, वाह, क्या आनन्द होगा निठल्ले आत्म-अटन में। न कोई भय, न खतरा, न व्यर्थ की विपदाएं, बस, अपना भीतरी अलबम खोला और विचित्र चित्रावली में खो गए। आदमी, सबसे थकता है पर अपनी अन्दरूनी कताई, बुनाई, रंगाई, छपाई से नहीं थकता···अपनी रूह के जुलाहे, रंगरेज, छीपा और चित्रकार, एक साथ। बस, अपने से चुपचाप बैठे या लेटे रेशम निकाल रहे है और शहतूत के पत्ते खा रहे हैं।

रेशमी कीट की कल्पना से भूतनाथ को अपने पर हंसी आ गई और उसने अपने आपको एक अच्छा-खासा झापड़ रसीद किया। आखों से तिलबोने उठे और क्षणांश में लाल किरणें चमक गई। उसे मज़ा आया। दूसरे गाल पर पुनः एक तमाचा मारा, पुनः वही दृश्य।

अपने गालों और सिर पर तमाचे और घूसे जड़ते हुए भूतनाथ को, कमरे के बाहर से राजेन्द्र तिवारी, इटाविया ने देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। राजेन्द्र तिवारी की ताकत यह थी कि वह श्रद्धेय को सच्ची प्रशंसा और अगाध प्रेम से इतना ऊंचा उठाता कि वह आकाश-पुरुष बन जाता था। बाबा और भूतनाथ मे उसकी श्रद्धा अपरिमित थी और वह किसी नुक्ताचीनी करने वाले से लड़ाई ठान लेता था। वह शरीर से तो सींकिया और ताँतिया था पर उसके सम्बन्ध इटावा के कई दादाओं से थे। उसके पास जमीन भी थी और गाव में मकान भी था, माली हालत भी अच्छी थी, इसलिए वह चुनौतियां दिया करता और मारपीट कराने में रोमांच प्राप्त करता था। वह हमेशा, कुछ कर गुजरने की फिराक मे रहता और किसी भी हालत मे निराश नही होता, कोई न कोई बचाव या हमले का उपाय खोज निकालता। वह स्वभाव से अन्याय विरोधी था और वह सूचियां बनाया करता कि किन-किन से निबटना है।

उसकी श्रद्धा के अवलम्ब भूतनाथ ताबड़तोड़ अपने को पीट रहे थे। यह देखकर राजेन्द्र तिवारी ठठाकर हंस पड़ा। भूतनाथ को गुस्सा आया और उसने तिवारी को पकड़ कर ऊपर उठाकर टसकना चाहा। तिवारी ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। उस पर दृष्टि पड़ते ही भूतनाथ ने उसे हृदय से लगा लिया और बोला—

"राजेन्द्र तिवारी। क्या तुम बता सकते हो कि हवालात मे किस पुलिस अधिकारी ने बाबा की हड्डी-पसली एक की थी ?"

"हां, मैं जानता हूं···लेकिन आप तो उसे मारने की जगह अपने को मार रहे हैं, भला क्यों ?"

"इसे भूलो, बताओ, उसका नाम क्या है और वह कहा पर मिलेगा ?"

"वह खुफिया इन्स्पेक्टर थानसिंह है। उसने बाबा को ही नहीं, हम सबको बोल्शेविक काण्ड में पकड़े गए, सभी गणों की हड्डियां तोड़ी हैं। मेरी पीठ देखिए अभी तक दाग हैं। वह दरिन्दा है दादा, ऐय्याश भी।"

"वह कहां मिल सकता है, कोतवाली पर प्रदर्शन तो हो सकता है, पर उसका इलाज होना चाहिए⋯बाबा के वधिक को जिन्दा रखकर मैं अपने को पागल बना लूंगा। एक नमूना तो तुम देख चुके हो मेरे पगलेटपन का।"

"मैं समझ गया था, आपको कोई शिकार नहीं मिला, इसीलिए आप अपने को तमंचिया रहे हैं। लेकिन वह बड़ा अफसर है दादा। फिर बकेवरकाण्ड हो जाएगा, नतीजा वही जो हुआ। पुलिस से सीधे भिड़ने से उसे चुपचाप एलीमिनेट—खत्म कर दिया जाए—आप सोच लीजिए।"

"सोच ! सोचते-सोचते ही तो मैं परेशान था। बाबा की आत्मा को शांति तभी मिलेगी, जब थानसिंह भी मुल्के अदम को रवाना कर दिया जाए, पर पहले उसकी हड्डी-पसली एक की जाए⋯तुम साथ चलोगे ?"

"आप आर्डर करें, मैं अकेला ही काफी हूं। मैं इटाविया हूं, मैं इक्कड़ नहीं, मेरा भी संगसाथ है।"

"शाबाश तिवारी। लेकिन तुम तो कमजोर हो ?"

"कमजोर ? दादा। लीजिए यह लाठी लीजिए और मुझे मारिए।"

कौतुकवश भूतनाथ ने एक लाठी ली और एक तिवारी को दी। तिवारी कठिनाई से पांच फीट पांच इंच लम्बा होगा, भूतनाथ छः फुटा इस्पाती। भूतनाथ ने एक हलका वार किया। तिवारी ने चोट अपनी लाठी पर ली और ऐसा हूला दिया कि भूतनाथ पीछे जाकर गिरा। तिवारी बोला,

"दादा उठो, नहीं तो सिर फोड़ता हूं।"

दोनों हंसने लगे। तिवारी की तारीफ़ हुई तो वह उत्साह में आकर कहने लगा, "दादा। रमपुरिया चाकुओं का खेल भी हो जाए।"

"अच्छा ? तुम जानते हो चाकू चलाना ?"

"क्या नहीं जानता ? मैं ऐसी गुलेल चलाता हूं कि आंखें फोड़ दूं, अच्छे अच्छों को, लीजिए सम्हालिए चाकू।"

दोनों पैंतरे बदल कर खड़े हो गए। भूतनाथ ने वार किया पर तिवारी कावा काट गया और घूम कर उसने भूतनाथ की पसली पर चोट की। यदि भूतनाथ पहलू न बदल लेता तो कद्दू सा चिर जाता।

"वाह तातिया ! तुम तो बड़े काम के आदमी हो तिवारी। वाह।"

"आपने बचाव किया मेरा, वर्ना कहां आप और कहां मैं ? हाथी के सामने कुत्ता⋯आप चाहते तो मुझे मार सकते थे।"

"अरे नहीं, मैंने पूरी निर्ममता से प्रहार किया था⋯तुम तो खूब हो तिवारी⋯गुलेल का खेल दिखाओ अब⋯वह देख रहे हो, वह गिलहरी बैठी है। उस पेड़ पर, मारो।"

राजेन्द्र तिवारी ने कुर्ते की जेब से गुलेल निकाली, उस पर लोहे की छोटी गोली रखी और गुलेल को खींच कर मारा तो वह गिलहरी के सिर पर लगी। पट से गिलहरी गिर पड़ी। भूतनाथ के मुख से, "वाह" निकला और उसने तिवारी के साथ भरत-मिलाप किया।

वे दोनों देर तक परामर्श करते रहे। कुछ समय बाद तिवारी घर चला गया और भूतनाथ सो गया।

रात में नौ बजे तिवारी पुनः आया। दोनों ने काली कमीज-पतलून पहनी।

उन्होंने जेबों और कंधे पर पड़े थैलों में हथियार रखे और चेहरे पर काली नकाब लगा कर चल पड़े। तिवारी, भूतनाथ की बगल में चलने पर अलग से पहचान में ही नहीं आ रहा था। भूतनाथ ने मजाक किया, "ओए ताँतिए तू तो सुरक्षित है, मेरी मुसीबत है।"

"दादा। जब तक राजेन्द्र तिवारी जिन्दा है, आप मौज करें। मेरी गोली निशाने को खुद खोज लेती है···और वह थानसिंहा, इस समय, रामगंज में अपनी प्यारी तवायफ आयशा के घर है, बाहर एक दो चमचे होंगे यदि होंगे तो···वह अकेला ही रंगबाजी के लिए जाता है और आधी रात तक वहीं पड़ा रहता है···इस वक्त तो गजल, नशे और आयशा के गश में सुअर सा लोट रहा होगा—मजा आ जाएगा दादा।"

दोनों काले कपड़ों में, अंधेरी रात में, चक्कर भरते, गलियों से गुजरते, अंततः रामगंज जा पहुंचे। रामगंज, इटावा में यों वेश्याएं अब उतनी नहीं हैं, पर अभी भी कुछ हैं जो मुजरा करती हैं और पेशा भी। पुलिस की मदद से उनका धंधा चलता है। कभी ऊपर से दबाव पड़ने पर पुलिस उन्हें भगा भी देती है। तब वे गांव चली जाती हैं और फिर आ जाती हैं।

सौभाग्य से, इटावे की बिजली अक्सर आंख मिचौनी खेलती रहती है। दस बजे के लगभग बिजली चली गई। आयशा के मुजरे के कमरे में पजामा, कुर्ता में थानसिंह गाव-तकिए पर औंधे पड़े थे और मोमबत्तियों की झिलमिल रोशनी में, आयशा के चेहरे पर पतिंगे की तरह भांवरे भर रहे थे। वह उसके सूरजमुखी से खिले मुखड़े की आभा और हाव-भाव को उस बदमाश बच्चे की तरह ताक रहे थे जो किसी फूल को देखते ही उसे तोड़ने और नोच-नोच कर फेंकने की जुगाड़ में लग जाता है। वह आयशा के गायन पर सिर हिलाते, दाद देते और नोट फेंक रहे थे। आयशा थानसिंह की मुग्धता देखकर सदके जा रही थी। उसकी लौंडी, थानसिंह को जाम पेश करती और नौकर चिलमची में उसके थूक को लेने के लिए तैयार रहता। थानसिंह पान चिलमची में थूक कर जाम से घूट भरते, नमकीन मुंह में डालते, रोंथते और तोते की तरह काजू कुतरते। उन्हें उस वक्त कोई चिंता नहीं थी और वह अकड़ते हुए अपने भारी बदन पर शाबाशियां बरसाते हुए चमड़े की थैली में पड़े रिवाल्वर को शान से सहला रहे थे। फिर वहां से निगाह उठाकर आयशा पर पड़ती तो जाम पर जाम, ढालने लगते और नशे की धुंध में गजल के यौन-उत्तेजक शेर, उनकी तोंद को वेधकर, दिल में उतर कर, उनकी इन्द्रियों को तिकतिकाते। थानसिंह वासना के एक ज्वार में आयशा को पकड़ने लगे। आयशा की खाला ने इस बदतमीजी को तमीज से रोका—"हुजूर यह आपकी ही है मगर महफिल में नहीं, महफिल में यह सभी हाजरीन की है मालिक। माफ कीजि-एगा।"

थानसिंह को खाला की नम्रता में भी गुस्ताखी लगी। उसने रिवाल्वर पर हाथ रखा और तेवर दिखाए—"हमारी खाला अफसर की हैसियत और मुझे तमीज सिखाती है। तवायफें क्या इबादत के लिए होती हैं···हम तो आज यहीं इश्क करेंगे, ···आयशा, इधर आओ, पहलू गरम करो, बैठे-बैठे गाओ···उस्ताद साज छेड़ो।"

खाला, इज्जतदार तवायफ थी। अपने जमाने में उसके ताल्लुक बड़े-बड़ों से थे। वह सुनकर कबाब हो गई। उसने आयशा को इशारा किया और साजिन्दों को भी। वे उठ गए, आयशा भीतर चली गई। दो-चार ऐरे-गैरे भी जो वहां थे, खिसक

गए। सिर्फ थानसिंह तावपेंच खाते बैठे रह गए। खाला ने आदाब किया।

"हुजूर, आयशा के कमरे में तशरीफ ले चलें। मुजरे में वस्ल हराम है हमारे लिए···अब शौक से शमा पे परवाना बनें।"

"नहीं, वह यहीं आएगी। थानसिंह अपने थान पर रहेगा, खाला, तुमने गुस्ताखी की है, सजा मिलेगी।"

"हुजूर माफ करें, हमारे भी कुछ उसूल हैं···।"

"तुम्हारे उसूलों और तुम्हारी ऐसी की तैसी। आयशा, आओ, हम बेकरार हैं।"

आयशा नहीं आई तो थानसिंह उठकर आयशा के कमरे की तरफ बढ़े। उसने आयशा को कमर से पकड़ा और उसे उठाकर बैठक में घसीटते हुए लाया। वह रो रही थी और तवायफ की जिन्दगी को लानत भेज रही थी। बैठक में आयशा को पटककर वह उसे गोद में बिठाकर चुमकारने लगा। आयशा में खान्दानी तवायफ होने का गुरूर जगा। उसने थानसिंह को धक्का दिया और उठकर भागी। थानसिंह ने उसे पकड़ लिया और एक दो हाथ रसीद कर दिए। ओट में खड़े राजेन्द्र तिवारी ने भूतनाथ को कोंचा, "दादा। यही मौका है।"

अचानक सामने आ खड़ा हुआ नकाब पोश भूतनाथ मोमबत्तियों के प्रकाश में थानसिंह को धोखा सा लगा। वह आयशा से बोला—

"हरामजादी। जल्दी आ, मुझे नशे में नकाबपोश नजर आ रहे हैं···खाला कालाजादू जानती है क्या? खुदा हाफिज तू कौन है?"

"जिन्न बहराम खान।"

"क्या? क्या कहा?"

"बहराम खान।"

थानसिंह हँसने लगा, "हः हः हः हः···आयशा, जिन्न बहराम खा आ गया ·· भाई, बहराम वाह! तुम हमारे लिए क्या तोहफा लाए?"

"तुम्हारी कजा।"

"हाय, मजा में कजा। तौबा-तौबा! आयशा। मेरा साया नकाब पहनकर आ गया है। मैं इसे शूट करता हूं।"

जब तक थानसिंह गन निकाले, तब तक राजेन्द्र तिवारी ने बैठक के किवाड़ बन्द कर दिए और पीछे से जाकर रमपुरिया चाकू से थानसिंह की कलाई पर वार किया। गन दूर गिर पड़ी और घाव खाकर थानसिंह चीखा पर भूतनाथ ने उछलकर उसकी गरदन बांध ली, उसके खुले मुख पर कपड़ा ठूंस दिया और उसके हाथ खींचकर पीठ पर किए जिन्हें तिवारी ने रस्सी से कसकर बांध दिया।

अब भूतनाथ और तिवारी ने नोंकदार बूटों से थानसिंह की पसलियां तोड़ने का कार्यक्रम विधिवत चालू किया। वह हर चोट पर 'हिन्च' करता और लोटपोट हो जाता।

तिवारी ने उसके पैर भी बांध दिए क्योंकि वह गधे की तरह दुलत्तियां झाड़ रहा था। एक बार तो तिवारी उसकी लात खाकर गिर पड़ा। अब थानसिंह कब्जे में था। भूतनाथ ने उसका मुंह खोल दिया और पूछा—

"थानसिंह। याद है, तुमने पुजारी बाबा की पसलियां तोड़ी थीं, याद है न?"

"मुझे माफ करो, तुम जो भी हो। मैंने अपना फर्ज निभाया था, बस।"

"जो पूछा जाए, उसका जवाब दो।"

"हां, उस खतरनाक इन्कलाबी को मैंने मारा था…ताकि वह कुछ कु
लेकिन वह बड़ी सख्तजान का था…आह। मेरी हड्डियां…।"

"अभी टूटेंगी, उसी के बदले में। तिवारी इसके गंदे मुह को
करो।"

फिर कपड़ा ठूस दिया गया। भूतनाथ ने फिर मार शुरू की और गुस्से मे
दोनो हाथ मरोड़कर मुजमूल उखाड़ दिए। थानसिंह बेहोश हो गया। राजेन्द्र ति
ने एक मजबूत दुसूता चद्दरे मे उसकी गठरी बाध दी और उसे उठाकर भूतनाथ
हो गया। राजेन्द्र तिवारी ने आयशा और खाला से कहा, "कोई बहाना बना देना
से। भागना मत, नही तो शक होगा। कह देना कि थानसिंह मुजरे के बाद चले गए
हम इसे किसी गटर में डाल देंगे। तुम्हें पुलिस ने सताया तो हम तुम्हारी तरफ
करेंगे।"

"मेहरबानी है। अल्लाह, आपको सलामत रखे। मगर आप हैं कौन?"

"जिन्नात-ए-मुल्ए-ए-आदम खलीकुलतिलिस्मातुलतजिमुरशान वली कुल
ओ कलाम। सलाम।" बनावटी हसी हंसता तिवारी झपटता हुआ बाहर आया। उ
आयशा के मकान की कुण्डी चढ़ा दी। थानसिंह के अलावा आए हुए शौकिन लोग प
ही भाग गए थे। मैदान साफ था। भारी बोझ को लादे हुए भूतनाथ मुख्य सड़क
आकर, पुनः गली मे घुस गया और भागता रहा। जहां अवरोध आया, तिवारी
हवाई फायर किया। रास्ता निर्विघ्न हो गया। एकान्त पाकर भूतनाथ ने थानसिंह
कनपटी पर गन रखकर ट्रिगर दवा लिया और उसकी लाश को गटर मे फेंककर
दस्ताने उतारे उन दस्तानों को जलाकर दोनों ने टिकिसी के महादेव के मन्दिर
आकर सास ली।

भूतनाथ तिवारी को लेकर मराठा किले की सुरंग से किले में पहुंच गया औ
वहा खा-पीकर अपनी उधेड़बुन से मुक्ति पाकर सो गया। तिवारी हाथ में रिवाल्व
लिए पहरे पर डट गया।

पुलिस यह कल्पना तक न कर सकी कि पुजारी जी का दाह-सस्कारी व्यक्ति
जो रोज पिण्डदान करने श्मशान जाता है और जप सा करता पड़ा रहता है, दिनरात
वह खुफिया पुलिस इंस्पेक्टर थानसिंह का कत्ल कर देगा। पुलिस को एक रक्त से लिख
थानसिंह के बदन पर पर्चा भी मिला जिसमे लिखा था कि अब कभी पुलिस किसी
बन्दी के साथ थर्ड डिग्री वाली मारपीट न करे। वैसा करने का पुलिस को कोई अधिकार
नहीं है और यदि पुलिस गिरफ्तार लोगों के साथ ऐसा ही बर्ताव करेगी, जैसा उसने
बकेवरकाण्ड के साथियो के साथ किया, पुजारी जी को मार ही डाला, अतिबल को भी,
तो यही सज़ा जन-न्यायालय उसे देगा। नीचे जिन्न बहरामखा और सोहराब खा के
नाम लिखे थे और बादशाह बहादुरशाह जफर का चित्र उस कागज के ऊपर छपा था
जो 1857 के इन्कलाब के प्रतीक थे।

पुलिस मतिभ्रम में पड़ गई मगर उसे शक पुजारी के गणों पर था। उसे यह भी
पता चल गया कि भूतनाथ ने मृत्युभोज के दिन सभी गणों और गणेशों को बुलाया है।
कोतवाली में कोतवाल इमामबख्श ने थानेदारों को बुलाकर कहा—"ये गन और
गन्नेस ही इस वारदात की जड़ में है, लेकिन भूतनाथ पर हाथ नही डाल सकते क्योंकि
…क्योंकि ऊपर से आर्डर नहीं है।"

"क्यों भला ? भूतनाथ अखबारनवीस है। वह कब से सरकार का खैरख्वाह हो गया ?"

"ये राज की बातें हैं दरोगा साहबान ! भूतनाथ ने डाकुओं को सरेन्डर कराया है, चुनांचे पहले के वज़ीरे आला, राजा राजनाथसिंह की सिफारिश पर इस वक्त के मुखमंतरी ने, भूतनाथ पर निगाह रखने मगर तरह देते रहने का हुक्म फरमाया है ·· यह मुमकिन है कि पुजारी की तेरहवीं पर तमाम खलकत जमा हो जाए और वह बकेबर का बदला ले···खुफिया खबर है कि पचास हजार आदमी इकट्ठा हो सकता है। हम हथियारबंद पुलिस का इन्तजाम करवा रहे हैं, आसूगैस वगैरह का माकूल जखीरा रहे। वे नारेबाजी करें, मजमा लगाएं, बयानबाजी करें, करने दी जाए मगर कानून और दबदबे को तोड़ेंगे तो दूसरा बकेवरी हादसा होगा···बच जाए तो बेहतर है।"

भूतनाथ अब तांतिया उपनाम राजेन्द्र तिवारी को दे चुके थे। पुलिस में उसके आदमियों ने कोतवाली के निर्णयों की सूचना उसे दे दी। उसने तांतिया तिवारी से कहा :

"तांतिया टोपे ! क्या राय है, सुन रहे हो, पुलिस की तयारियां, हो जाए आमना-सामना या टाला जाए ?"

"आपका भूत, पब्लिक पर सवार है। लोग समझते हैं कि आप मोर्चे पर हों तो असम्भव सम्भव हो सकता है लेकिन हमारे लोग मरेंगे और मिलेगा कुछ नहीं। जब तक पुलिस में अपने समर्थक काफी न हों तब तक शहर पर कब्जा नहीं हो सकता··· अभी काम पब्लिक में होना चाहिए और गुप्त रूप से जन-शत्रुओं का सफाया होना चाहिए, मसलन्, इटावा, इटावा में क्या रखा है, कानपुर के भ्रष्टाचारी तत्वों पर हमला हो, लखनऊ के भ्रष्ट अधिकारियों को दबोचा जाए तो जनआतंक स्थापित हो जाएगा। कानूनन तो कुछ होता नहीं और पुलिस भी उनका कुछ कर नहीं पाती, करना भी नहीं चाहती, उसे मालमलीदा मिलता रहता है, इसलिए बकेवरकाण्ड के लिए जिम्मेदार पुलिस अफसरों के खिलाफ प्रदर्शन हो, इतना काफी है।"

"वाह तांतिया। तुममें सेनापति तांतिया टोपे की तरह पीछे हटने की भी समझ है, शाबाश।"

इस बीच राजा राजनाथसिंह की तरफ से प्रशंसा का पत्र आ चुका था और भूतनाथ के लिए जो आदमी रात लाया था, उसने यह भी बताया कि पाकिस्तान से भेजी गई उसकी रपटों और संदेशों को सबसे अधिक महत्व दिया गया है। उसे अविलम्ब दिल्ली जाकर शोध और खोज सवर (रा) नामक केन्द्रीय खुफिया एजेन्सी के निदेशक मिस्टर पीटर्सन से मिलने का निर्देश था। संदेश देकर और भूतनाथ से जवाब लेकर वह आदमी चला गया। भूतनाथ पुनः चिंतित हो गया ! उसने पुन राजेन्द्र तिवारी से सलाह ली—

"तांतिया। तेरहवीं नजदीक है। हजारों आदमी एकत्र होंगे। उन्हें प्रेरित करने और लड़ाई की लाइन पर डालने का मौका है मगर दिल्ली की सरकार बुला रही है। मुल्क की रक्षा का काम है। वहां भी मेरे विरुद्ध उग्रवादियों के समर्थक इन्कलाबी और मज़हबी अनिवार्यता विषवमन कर रहे हैं। वे मुझे मारना चाहते हैं।"

"आप मुझे अपना अंगरक्षक बनाकर ले चलिए, मैं उनको देख लूंगा।"

"यह तो ठीक है लेकिन तुम्हारे बिना यहां काम बिगड़ेगा···अच्छा, मैं अभी दिल्ली जाता हूं और कल, अधिक से अधिक परसों तक वापस हो लूंगा। हर हालत में मैं पुनीत पर आ जाऊंगा।"

भूतनाथ दिल्ली जाकर मिस्टर पीटर्सन—पीटर से मिला। वह फौज की गुप्तचर सेवा का वरिष्ठ अधिकारी था, दबंग, देशभक्त और लोमड़ी से भी ज्यादा चालाक। उसने भूतनाथ को कार्यालय में नहीं अपने निवास पर बुलाया था। भूतनाथ एक मामूली होटल में ठहरा। आराम कर रात में दस-ग्यारह बजे वह मोटर रिक्शे से पीटर साहब के बंगले पर पहुंचा वहां बहुत इंतजाम था। मगर संकेत शब्द बता देने से उसे अंदर बैठक में पहुंचा दिया गया। पीटर उसे नजरों से तौलता रहा पर भूतनाथ खद्दर के कुर्ते, पजामे और जवाहर जाकेट में नेतानुमा वेश में था। उसके चेहरे से कुछ भी पता लगा पाना कठिन था। वह अनासक्त सा बैठा रहा। अंततः पीटर बोला—

"मिस्टर गदाधरसिंह। हम सब जानते हैं···यू आर वैरी डेंजरस परसन बट यूजफुल फार द इन्टैग्रिटी एण्ड सेफ्टी आफ अवर कंट्री···उस थानसिंह को तुमने खुद एलीमिनेट—खत्म कर दिया, क्यों ?"

भूतनाथ चौंका। सोचा, यह तो बेढब जासूस है। आज बराबरी का दाव है। भूतनाथ हंसने लगा—

"मिस्टर डिरेक्टर। मैं जिस काम के लिए बुलाया गया हूं, वह बात कहें···मेरा क्या लेना देना थानसिंह-बानसिंह से ? जो जैसा करेगा, भरेगा। यह इटावा है साहब बहादुर, वहां अनेक भूतनाथ बनकर वारदातें करते हैं और अपयश मुझे मिलता है।"

"ऑलराइट बट आय नो···ठीक है, पर मैं जानता हूं। थानसिंह सेंट्रल इंटेलीजेंस—केन्द्रीय खुफिया पुलिस का इस्पेक्टर था, हमारा आदमी था···उसने ज्यादती तो की लेकिन···खैर छोड़िए·· और वह आपकी फिल्म पार्टी ?"

पीटर रहस्यमय ढंग से मुस्कराया।

"मैं तुम्हें 'रॉ' की तरफ से अमरीका-कनाडा-इंग्लैण्ड और जहां-जहां तुम्हें जाना है, भेजना चाहता हूं। मैं सब जानता हूं। तुम्हारी रिपोर्टें पढ़ी हैं लेकिन तुम वहां इंडियन स्टेट के—भारती राज्य के दुश्मनों से भी मिलोगे न ? विदेश में तुम्हारे क्रांतिकारी भी तो हैं ?"

"मैं क्या करूंगा, यह आप जान ही जाएंगे, तब पूछने से क्या प्रयोजन ? जो देश का काम होगा, उसे करूंगा शप तो सब अप्रासंगिक है ?"

"नहीं, वह भी स्टेट का कसर्न है, राज्य-चिन्ता है मगर तुम सरकार के खिलाफ जा सकते हो, स्टेट के नहीं या स्टेट के भी खिलाफ हो ?"

"मैं राज्य और सरकार का अंतर जानता हूं।"

"तो यह भी जानते हो न कि किसी ब्यूटीफुल सुन्दर औरत से कैसे बचा जाता है ?"

और पीटर खिलखिलाकर हंसा।

पीटर कहने लगा—

"भूतनाथ ! तुम दो सुन्दरियों में कॉम्पीटीशन—प्रतियोगिता करा रहे हो, इंटेरेस्टिंग, वैरी इंटेरेस्टिंग, दिलचस्प, तुम आशिक भी गजब के हो···बाय द वे तुम कहां के हो गदाधरसिंह ?"

"मैं देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों में जन्मा, बढ़ा और विकसित हुआ, बस इतना जानता हूं।"

"वैरी क्लेवर। यू आर अ ग्रेट मिथमेकर। जासूसी के लिए इससे बढ़िया नजर कोई नहीं, बट, इन कान्फीडेंस प्रधानमन्त्री तुमसे मिलना चाहती हैं।"

"मैं विदेशों से लौटकर मिलूंगा, अभी नहीं। मैं जल्दी ही लौटूंगा, अप्रैल या मई तक।"

"ओह! तुम प्रायम मिनिस्टर आफ इंडिया से मिलने से मना करते हो? कमाल है।···व्हाट डू यू थिंक आफ योर सैल्फ?—तुम अपने को समझते क्या हो?"

"भूतनाथ! भूतनाथ के लिए आप ही प्रायम मिनिस्टर हैं। मुझे आपको रपट करना है। प्रधानमन्त्री से मुझे क्या मतलब···फिर भी एक बात है, जो उन्हीं से कहनी है लेकिन उसे अभी कहना बेकार है।"

"मुझसे भी नहीं कहोगे? मुझसे?"

"नहीं, वह व्यक्तिगत बात है जिसे देश के प्रधानमन्त्री से ही कहना है।"

"भूतनाथ! आय कैन ब्रेक योर इगो—मैं तुम्हारा घमण्ड झाड़ सकता हूं।"

"भूतनाथ के गर्व को कोई नहीं तोड़ सकता। आप भी नहीं, हां मैं आपके अहंकार को तोड़ सकता हूं। मेरी आत्मगरिमा—डिगनिटी अखण्ड है, अनन्त। मेरे पास आपके खिलाफ भी सबूत है।"

"वाह! जैसा सुना था, वैसा ही पाया।"

फिर वे दोनों जासूसी के भेदों-रिपोर्टों और दस्तावेजों पर घण्टों बात करते रहे और साथ ही खाते-पीते भी गए। रात के दो बज गए। तब पीटर ने जम्हाई ली और भूतनाथ को विदेशों के लिए जरूरी कागजात देकर विदा कर दिया। चलते समय पीटर साहब उसे दरवाजे तक छोड़ने आए। हाथ मिलाया और विभाग की कार से उसे वापस कर दिया।

दूसरे दिन भूतनाथ इटावा में था।

बाबा की त्रयोदशी के मृत्युभोज पर भारी भीड़ जमा हुई। श्याम दीक्षित, तालिया और रहमत खान आदि के प्रयत्नों से मृत्युभोज के दिन भीड़ को नुमायश के मैदान में एकत्र किया गया और उसे पुजारी जी के स्मृति-समारोह में तब्दील कर दिया गया। भूतनाथ, श्याम दीक्षित वगैरह ने पुजारी जी के मिशन के बारे में बताया और 'करो या मरो' का नारा बुलन्द किया। भूतनाथ ने कहा कि किसानों-मजदूरों छोटे नौकरपेशा लोगों और अन्य खस्ताहाल जनसमुदाय को चाहिए कि जो जहां गड़बड़ हो रही है उसे वे गणसमितियों को बता दें और सरकार जो विकास का काम करा रही है, उसकी निगरानी पब्लिक खुद करे। भ्रष्ट नेता, अफसर, इंजीनियर और ठेकेदार, ये चार अगर लाइन पर रहें तो आधे खर्चे पर काम हो सकता है। जो शादी-विवाह, भवन-निर्माण, विलास और दूसरे कामों में अधिक खर्च कर रहा हो, उसके खिलाफ कार्यवाही हो और शिकायत पर यदि मन्त्री, पुलिस और नौकरशाह निर्णय न लें तो उनको चू-चू बोल दो। खुद रिश्वत देकर काम कराना बन्द करो। मन्त्री और उनके दलालों से बचो। सही काम कराओ और जन-बल के दबाव से कराओ। जब काम हो, गणसमिति के सदस्यों को साथ लो और कार्यालयों में बाबुओं और अफसरों से, रोब से काम लो पर स्वयं ज्यादती मत करो। जनता की बेईमानी से, कारकुन और शासक वर्ग फायदा उठाता है। अपने कर्मों को देखो और शासक और सेठ के कर्मों को ठीक करो। एक दिन संगठित हो जाने पर इस तथाकथित भ्रष्ट जनतन्त्र की जगह शुद्ध जनतन्त्र कायम हो सकेगा। चुनाव में अपने परखे आदमी खड़े करके उन्हें जिताने से जनतान्त्रिक संस्थाओं, विधानसभाओं और संसद में अपने लोग जनहित में निर्णय लेंगे और कानून बन और पदों पर जनाधिकार कायम हो सकेगा। लेकिन यदि इसे शासक और बुर्जुआ विरोधी

दल नहीं होने देंगे तो लड़ाई के लिए तैयारी करते चलो। पुजारी जी की असली निर्वाण तिथि पर जनप्रगति की रपट पेश की जाएगी। इसलिए एक वर्ष में अधिक-से-अधिक करो या मरो।

पुजारी जी और भूतनाथ की जय-जयकार के साथ सभा समाप्त हुई। इस बार कालेजों, हायर सेकण्डरी स्कूलों के लड़कों ने भारी संख्या में भाग लिया क्योंकि बेकार नवयुवकों की सूची बनवाकर सरकार से लड़ाई लड़नी थी कि उन्हें रोजगार दिया जाए, लघु उद्योगों का जाल बिछे। स्वयं काम करने वालों को सस्ते ब्याज पर कर्ज की व्यवस्था हो और ऋण दिलाने वाले शासक दल के दलालों का दमन किया जाए। ऋण सीधे जनता को गाव-गाव जाकर दिया जाए। तहसीलों और दफ्तरों के चक्कर जनता क्यों लगाए?

बकेवर काण्ड के दोषी अफसरों को दण्ड के लिए शांतिपूर्ण मगर जोशीले प्रदर्शन के बाद भीड़ छट गई। रात गणों और गणेशों के साथ, किले में गुप्त बैठक हुई। रचनात्मक कार्यों के लिए भरोसे के नागरिकों की सूचिया पेश की गईं। जगह-जगह स्कूल खुलाओ, उद्योग-शिल्प, शिक्षा संस्थान बनाओ, जन स्वच्छता के लिए काम करो। मलिन बस्तियों में सड़कों, नलों, कुओं, बिजली का प्रबन्ध कराओ। समानान्तर व्यवस्था खड़ी करो या मरो।

बड़ा लम्बा-चौड़ा, जटिल काम था। रात भर काम होता रहा। तै यह हुआ कि पायलट-प्रोजेक्ट की तरह, जहां गणसमितिया प्रबल हैं, गणेश सक्रिय है और चतुर हैं, वहा सघन कार्यक्रम हो और उसके साथ ही लड़ाकू टोलियां भी मजबूती से जनशत्रुओं से भिड़ें। साम्प्रदायिक शांति रहे, और वर्ग के आधार पर काम हो, जाति-धर्म वगैरह के रोड़े दूर किए जाए। दहेज, वधूदहन, छूआछूत जैसे कोढ़-कर्मों का जमकर विरोध हो। साहित्य, कला, नाटक और स्वांगों द्वारा मनोरंजन और शिक्षण साथ-साथ चले।

भूतनाथ ने माना कि बकेवरकाड गलत था। महीपत को गुप्त रूप से मारा जा सकता था। यह विचार कि व्यवस्था से सार्वजनिक मुठभेड़ से, जनता बिना तैयारी के स्वत: उठ खड़ी होगी और जगल की आग की तरह क्रांति फैल जाएगी, एक भ्रम है, भूल है। असली जनता के जीवन संघर्ष में मदद करना है। कोई जन यह महसूस न करने पाए कि वह अकेला और निःसहाय है। आपसी कलह क्रांति का सबसे बड़ा शत्रु है, यह मूलमन्त्र है। इसे मत भूलना साथियो!

"दूध में पानी मत मिलाओ, घी में डालडा मत पेलो। अनाज में कंकड़-पत्थर की बजरी मत भरो। मसालों में काठ का चूरा मत मिलने दो। शुद्ध चीजें बेचो, फायदा उतना लो, जितना जरूरी हो। परीक्षाओं में नकल मत करो। मेहनत करो, सीखो, शुद्ध आहार-विहार करो। नशे और विलास से पलायन करो। फिर जो गड़बड़ करे, उसको मारो।"

ग्राम अधामी के विश्वेश्वरदयालु को लड़ाई में मजा आता था। इस सुधार और निर्माण से वह ऊब गया, बोला—

"यह सन्तसमागम, सज्जनों को मुबारक। माधो-माधो। चुप क्यों हो, हरदारन लाल सी० जी० को हलाक करने के बाद कोई मारने को नहीं मिला। महीपता भी गया। मुझे लड़ाकू काम सौंपा जाए। यह शुद्धि और सुधार मेरे बस का नहीं, क्यों अहीरो?"

माधो-माधो ने बिसेसुर को घूसा दिखाया। सब हंसने लगे। बोझ हलका हुआ। भूतनाथ ने बिसेसुर से कहा—

"कामरेड विश्वेश्वरदयालु को 'हिटलिस्ट', जिन्हें मारना है, उनकी सूची, बनाने का काम सौंपा जाए और उनके नेतृत्व में साधो-माधो काम करें।

ज़ोर का अट्टहास हुआ। बिसेसुर अपनी चूहानुमा मूछों पर ताव देने लगा। साधो-माधो ने कहा—

"बिसेसुर महाराज तो मौके पर नाली में घुस जाते हैं, नेता नाली में और मरने को ससुर साधो-माधो। हो गया इन्कलाब।"

सब इसने नोंक-झोंक का आनन्द लिया और बैठक समाप्त हो गई।

32

जब तक बाल नहीं बढ़े, भूतनाथ पुनः जब तक कर्नैलसिंह सानेहवाल नहीं बना, तब तक वह गांवों, कस्बों और नगरों में जाकर गणपतियों के माध्यम से गणसमितियों का कार्य देखता रहा। उसने स्थान-स्थान पर सक्रिय किसान-मजदूरों की पक्षधर पार्टियों, विशेष कर साम्यवादी दलों के साथ जनहित के कार्यों का तालमेल बैठाया और जहां चोरी-डकैतियों का ज़ोर था, वहां लड़ाकू रुद्रगणों के दस्तों को मजबूत किया। डकैतों के सरगनाओं से सम्पर्क कर उनका या तो समर्पण कराया या उन्हें गरीबों को सताने से रोका। दो-चार जगहों पर जनसंघर्ष का पथप्रदर्शन भी किया और जनता के साथ दुर्व्यवहार पर अधिकारियों, मन्त्रियों-मुसद्दियों के खिलाफ़ पत्र-पत्रिकाओं में रपटें भी छपाईं। एक वातावरण बनने लगा। यों आपसी कलह मुख्य अंतर्विरोध था। उसे नियन्त्रित रखने के लिए सबको बार-बार समझाया।

जनगणों के साथ होली खेलकर भूतनाथ ने टिकिमी के महादेव के अड्डे को श्याम दीक्षित और उस्ताद रहमतखां को सौंपा और तातिया तिवारी राजेन्द्र को द्रटाया-अचल के रुद्रगणों का सेनापति बनवा दिया।

तभी मिस्टर शेफ का पत्र मिला। भूतनाथ ने दिल्ली जाकर रहे बचे कागज़ात कर्नैलसिंह नाम से तैयार कराए और मिस्टर शेफ से मिलने वह उनके होटल पहुंचा। वहां रोज़ी ने भूतनाथ को देखकर अपना मुंह फुला लिया और वह पीठ फेर कर बैठ गई। भूतनाथ ठठाकर हंसा। मैरी ने कटाक्ष किया कि भूतनाथ ने बहुत दिन लगा दिए—

"रोज़ी! विलम्ब के लिए क्षमा—एक्सक्यूज़ मी फ़ार दिस लेकिन मैं अब यह देश छोड़ रहा हूं। तुम यू० एस० ए० अमरीका चल रही हो क्या? आय एम प्रोसीडिंग टू यूनायटिड स्टेट्स।"

"व्हाट? आर यू रियली गोइंग टू स्टेट्स ऑर यू आर अगेन ब्लफ़िंग मी, क्या? क्या तुम वस्तुतः अमरीका जा रहे हो या पुनः पूर्ववत् धोखा दे रहे हो?"

"आय स्वेयर रोज़ी, मैं कसम से सच कह रहा हूं, ये कागज़ देख लो, सी योर सेल्फ़ माय पेपर्स।"

रोज़ी ने विश्वास नहीं किया। उसने उलटपुलट कर कागज़ देखे और पासपोर्ट की जांच की। वह पुनः प्रसन्न हो गई।

"ओह! डियर। आय एम हैपी अगेन आफ्टर अ लोंग टाइम, ओह डियर! मैं

बहुत समय के बाद फिर खुश हुई, थैंक्स।"

"नैवर माइन्ड। नाउ शो यौर फिल्म्स एण्ड अदर थिंग्स।"

रोज़ी, मैरी, रावर्ट और स्टेनवेक आदि ने ब्यौरेवार फिल्में दिखाईं—यह मिस क्वारी के छायाचित्र हैं, ये अन्य बागियों के···ये पाकिस्तान के, ये पंजाब के, ये कश्मीर के, ये जादूगरों, सपेरों और बनारस के साधुओं के, ये प्रयाग के कुम्भ-मेले के, हरिद्वार और कन्या कुमारी के···भूतनाथ ने पाया कि अमरीकियों की मेहनत, साहस और जोड़-तोड़ का कोई जवाब नहीं। उनके ज़खीरे में न जाने कितने नेताओं, संसद सदस्यों, साहित्यकारों-कलाकारों-पत्रकारों विद्वानों और अपराधियों के साक्षात्कार थे, न जाने कितने पत्र, दस्तावेज़ और किताबें। वे पूरा सूचनाकोष एकत्र कर चुके थे और अब अमरीका जाकर उसे भुनाने की बारी थी।

भूतनाथ भोजन और विश्राम के अलावा दिनभर यही सब देखता रहा। रोज़ी बच्ची की तरह किलक-किलक कर उसे सब बताती रही और मैरी, मुद्राओं से उसका परिहास करती हुई भूतनाथ को यह सकेत करती रही कि उसके पास कुछ ऐसी सूचनाएं हैं जिन्हें वह एकात में ही पा सकता है। लेकिन रोज़ी एकात पर एकाधिकार के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थी और अब तो रावर्ट भी ईर्ष्या छोड चुका था। उसे मिस्टर शेफ ने भूतनाथ का महत्त्व समझा दिया था अतः वह भूतनाथ के प्रति आदर और सभ्रम से पेश आ रहा था। रोज़ी बेचैनी से शाम का इन्तजार कर रही थी। अमरीका यात्रा कल ही तो होनी थी और वहा न जाने क्या हो? भूतनाथ वहा फिर घटनाओं के भंवर मे फंस जाएगा। इसलिए वह आज रात को अपने लिए सुरक्षित रखना चाहती थी। भूतनाथ मैरी से एकात में मिलने के लिए व्याकुल था पर रोज़ी उसे मौका देना नहीं चाहती थी।

लेकिन मिस्टर शेफ ने उसकी समस्या हल कर दी। उसने रोज़ी और रावर्ट को, अमरीकी दूतावास, यात्रा के सिलसिले में भेज दिया। रोज़ी रोती हुई चली गई। भूतनाथ ने उसे दिलासा दिया कि वह शाम उसी के साथ बिताएगा। काम ज़रूरी है। उसे करके आ जाना है। वह यहीं है। कहीं जाने वाला नहीं है। रोज़ी को कुछ सात्वना मिली तथापि उसकी आखों में आसू थे।

रोज़ी के जाते ही भूतनाथ ने मैरी को सकेत किया। दोनों, मैरी के कक्ष में गए और मैरी ने किवाड बंद कर दिए। भूतनाथ ने एतराज किया—

"उसका नाम रोज़ी है डियर। वह कोई बहाना बनाकर बीच मे आ सकती है।"

"आय डोंट केयर, डू यू? मुझे परवाह नहीं, तुम्हे है?"

"नो बट शी विल फील हर्ट,—नहीं, पर वह आहत होगी।"

"नैवर माइन्ड शी इज नॉट केयर फार एनीबडी···शी हर्टस एवरी बडी··· परवाह मत करो। वह किसी की परवाह नहीं करती, वह सबको आहत करती रहती है।"

"तो भी, किवाड़ पाच मिनिट खुले रहने दो।"

"ठीक है, ठीक है···" मैरी ने हिन्दी मे कहा। अब वे अमरीकी थोड़ी-थोड़ी हिन्दुस्तानी बोलने लगे थे और समझने तो लगे ही थे।

"बहुत ठीक।" भूतनाथ ने मजाक बनाया और दोनों हसने लगे। काफी समय बाद दोनों मिले थे, और दोनों सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए व्यग्र थे, भावनाओं के लिए भी। जैसा भूतनाथ को भय था, रोज़ी दौड़ती हुई आई। भूतनाथ ज़ोर-ज़ोर से

मैरी से बहस करने लगा। रोज़ी धड़धड़ाती हुई खुले द्वार में आकर रुक गई—"क्या मैं आ सकती हूं," कहा और बिना अनुमति कमरे में घुस आई। देखा, दोनों दूर-दूर बैठे बहस कर रहे हैं, बीच में टेबिल है। रोज़ी को कुछ संतोष हुआ। उसने मैरी से कहा—

"मैरी गिव मी दैट लैटर कर्सनिंग द एम्बैसी ?"

"व्हाट लैटर ? आय हैव नन, कौन सा पत्र ?"

"वट मिस्टर शेफ सेंट मी टू फैच, पर मि० शेफ ने मुझे भेजा है।"

"टैल हिम, आय हैवन्टि। उसे कहो, मेरे पास नहीं है।"

"य: नाऊ एक्सक्यूज मी, माफ करो।"

रोज़ी संतुष्ट होकर चली गई। भूतनाथ रोज़ी की ईर्ष्या पर हंसने लगा। मैरी कुढ़ गई। उसने कहा—

"यू डोंट नो। मिस्टर शेफ डिडिन्ट सैंड हर बैक। शी वाज लाइंग—तुम नहीं जानते। मिस्टर शेफ ने इसे वापस नहीं भेजा वह झूठ बोल रही थी··· यू नो, शी इज नॉट सो इन्नोसेंट एज यू से ऑलवेज··· तुम समझो, वह इतनी भोली नहीं, जितना तुम उसे कहते रहते हो।"

"दैट इज आल रायट—ठीक है।"

"कैन आय क्लोज द डोर नाऊ ?"

"य: नाउ यू कैन, हां कर लो। अब ठीक है।"

मैरी दरवाजा बन्द कर वहीं पीठ किवाड़ों से लगाकर खड़ी हो गई और सुभावनी नजरों से भूतनाथ को उसने देखा। वह समझ गया और उसने आकर मैरी को स्नेह दिया। पर मैरी का मन आज दूसरा था—

"यू किस मी यू ब्लडी डबल एजेंट।"

भूतनाथ ने बदनभींचू आलिंगन किया, इतना कि मैरी "ओह लीव मी" चिल्लाने लगी लेकिन उसने अधरों पर चुम्बन नहीं लिया। मैरी ने इस बात को नोट किया। वह बोली—

"यू डोन्ट लव मी, दैट्स आल रायट, बट यू कैन किस मी एज अ फ्रैंड, कान्ट यू डू दट, यू ब्लफर ?—तुम मुझे नहीं चाहते, न सही, पर एक मित्र के रूप में मुझे प्यार करो, नहीं कर सकते ?"

भूतनाथ ने सोचा कि अब और नियंत्रण से मैरी भेद नहीं देगी। यह तो भेदों का सौदा है और यह सौदा महत्वपूर्ण है। उसने मैरी का प्रगाढ़ चुम्बन लिया। वह पागल हो गई—

"ओह गोस्ट, व्हाट कैन आई डू फार यू···हाऊ आय कैन हैव यू ऑनली फार मी। ओह, भूत ! मैं तुम्हारे लिए क्या करूं ? मैं किस तरह तुम्हें सिर्फ अपने लिए पाऊं ?"

"नेवर माइण्ड मैरी, आय एम योर्स बट···आय डू नॉट बिलोंग टू ह्यूमन सेक्सिज्म···आय एम रियली अ गोस्ट···यू कान्ट हैव मी ऑनली फार योरसैल्फ··· परवाह मत करो, मैं तुम्हारा हूं पर तुम मुझे केवल अपने लिए नहीं पा सकतीं···बट आय डिजायर यू, आय रिस्पेक्ट यू फार लोयल्टी एण्ड साईकिन···लेकिन मेरे मन में तुम्हारे लिए इच्छा है और वफादारी के लिए आदर, पसन्दगी के लिए भी।"

मैरी ने सोचा, यह भी कम नहीं है। उसने नोट किया कि उसने भूतनाथ के मन में अपने लिए जगह बना ली है और वह मुझे भी चाहता है पर वह कहता है कि वह मनुष्य योनि का नहीं है, यह अजीब बात है। क्या वह सचमुच भूत ही तो नहीं है ?

बहुत समय के बाद फिर खुश हुई, थैंक्स।"

"नेवर माइन्ड। नाउ शो योर फिल्म्स एण्ड अदर थिंग्स।"

रोज़ी, मैरी, राबर्ट और स्टेनबेक आदि ने ब्योरेवार फिल्में दिखाईं—यह मिस क्वारी के छायाचित्र हैं, ये अन्य बागियों के···ये पाकिस्तान के, ये पंजाब के, ये कश्मीर के, ये जादूगरों, सपेरों और बनारस के साधुओं के, ये प्रयाग के कुम्भ-मेले के, हरिद्वार और कन्या कुमारी के···भूतनाथ ने पाया कि अमरीकियों की मेहनत, साहस और जोड़-तोड़ का कोई जवाब नहीं। उनके ज़खीरे में न जाने कितने नेताओं, संसद सदस्यों, साहित्यकारों-कलाकारों-पत्रकारों विद्वानों और अपराधियों के साक्षात्कार थे, न जाने कितने पत्र, दस्तावेज़ और किताबें। वे पूरा सूचनाकोष एकत्र कर चुके थे और अब अमरीका जाकर उसे भुनाने की बारी थी।

भूतनाथ भोजन और विश्राम के अलावा दिनभर यही सब देखता रहा। रोज़ी बच्ची की तरह किलक-किलक कर उसे सब बताती रही और मैरी, मुद्राओं से उसका परिहास करती हुई भूतनाथ को यह संकेत करती रही कि उसके पास कुछ ऐसी सूचनाएं हैं जिन्हें वह एकांत में ही पा सकता है। लेकिन रोज़ी एकांत पर एकाधिकार के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थी और अब तो राबर्ट भी ईर्ष्या छोड़ चुका था। उसे मिस्टर डोफ ने भूतनाथ का महत्त्व समझा दिया था अतः वह भूतनाथ के प्रति आदर और सभ्रम से पेश आ रहा था। रोज़ी बेचैनी से शाम का इन्तजार कर रही थी। अमरीका यात्रा कल ही तो होनी थी और वहां न जाने क्या हो? भूतनाथ वहां फिर घटनाओं के भंवर में फंस जाएगा। इसलिए वह आज रात को अपने लिए सुरक्षित रखना चाहती थी। भूतनाथ मैरी से एकांत में मिलने के लिए व्याकुल था पर रोज़ी उसे मौका देना नहीं चाहती थी।

लेकिन मिस्टर डोफ ने उसकी समस्या हल कर दी। उसने रोज़ी और राबर्ट को, अमरीकी दूतावास, यात्रा के सिलसिले में भेज दिया। रोज़ी रोती हुई चली गई। भूतनाथ ने उसे दिलासा दिया कि वह शाम उसी के साथ बिताएगा। काम ज़रूरी है। उसे करके जाना है। वह यहीं है। कहीं जाने वाला नहीं है। रोज़ी को कुछ सांत्वना मिली तथापि उसकी आंखों में आंसू थे।

रोज़ी के जाते ही भूतनाथ ने मैरी को संकेत किया। दोनों, मैरी के कक्ष में गए और मैरी ने किवाड़ बंद कर दिए। भूतनाथ ने एतराज किया—

"उसका नाम रोज़ी है डियर। वह कोई बहाना बनाकर बीच में आ सकती है।"

"आय डोंट केयर, डू यू? मुझे परवाह नहीं, तुम्हें है?"

"नो बट शी विल फील हर्ट,—नहीं, पर वह आहत होगी।"

"नेवर माइण्ड शी डज नॉट केयर फार एनीबडी···शी हर्ट्स एवरी बडी··· परवाह मत करो। वह किसी की परवाह नहीं करती, वह सबको आहत करती रहती है।"

"तो भी, किवाड़ पांच मिनिट खुले रहने दो।"

"तीक है, तीक है···" मैरी ने हिन्दी में कहा। अब वे अमरीकी थोड़ी-थोड़ी हिन्दुस्तानी बोलने लगे थे और समझने तो लगे ही थे।

"बहुत तीक।" भूतनाथ ने मज़ाक बनाया और दोनों हंसने लगे। काफी समय बाद दोनों मिले थे, और दोनों सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए व्यग्र थे, भावनाओं के लिए भी। जैसा भूतनाथ को भय था, रोज़ी दौड़ती हुई आई। भूतनाथ जोर-जोर से

मैरी से बहस करने लगा। रोज़ी धड़धड़ाती हुई खुले द्वार में आकर रुक गई—"क्या मैं आ सकती हूं," कहा और बिना अनुमति कमरे में घुस आई। देखा, दोनों दूर-दूर बैठे बहस कर रहे हैं, बीच में टेबिल है। रोज़ी को कुछ संतोष हुआ। उसने मैरी से कहा—

"मैरी गिव मी दैट लेटर कंसर्निंग द एम्बैसी ?"

"व्हाट लैटर ? आय हैव नन, कौन सा पत्र ?"

"वट मिस्टर शेफ सेंट मी टू फेंच, पर मि० शेफ ने मुझे भेजा है।"

"टैल हिम, आय हैवन्टि। उसे कहो, मेरे पास नहीं है।"

"य: नाऊ एक्सक्यूज मी, माफ करो।"

रोज़ी संतुष्ट होकर चली गई। भूतनाथ रोज़ी की ईर्ष्या पर हंसने लगा। मैरी क्रुद्ध गई। उसने कहा—

"यू डोंट नो। मिस्टर शेफ डिडिन्ट सेंड हर बैक। शी वाज लाइंग—तुम नहीं जानते। मिस्टर शेफ ने इसे वापस नहीं भेजा वह झूठ बोल रही थी··· यू नो, शी इज नॉट सो इन्नोसेंट एज यू से ऑलवेज··· तुम समझो, वह इतनी भोली नहीं, जितना तुम उसे कहते रहते हो।"

"दैट इज आल रायट—ठीक है।"

"कैन आय क्लोज द डोर नाऊ ?"

"य: नाउ यू कैन, हां कर लो। अब ठीक है।"

मैरी दरवाजा बन्द कर वहीं पीठ किवाड़ों से लगाकर खड़ी हो गई और लुभावनी नजरों से भूतनाथ को उसने देखा। वह समझ गया और उसने आकर मैरी को स्नेह दिया। पर मैरी का मन आज दूसरा था—

"यू किस मी यू ब्लडी डबल एजेंट।"

भूतनाथ ने बदनभींचू आलिंगन किया, इतना कि मैरी "ओह लीव मी" चिल्लाने लगी लेकिन उसने अधरों पर चुम्बन नहीं लिया। मैरी ने इस बात को नोट किया। वह बोली—

"यू डोन्ट लव मी, दैट्स आल रायट, वट यू कैन किस मी एज अ फ्रेंड, कान्ट यू डू इट, यू ब्लफर ?—तुम मुझे नहीं चाहते, न सही, पर एक मित्र के रूप में मुझे प्यार करो, नहीं कर सकते ?"

भूतनाथ ने सोचा कि अब और नियंत्रण से मैरी भेद नहीं देगी। यह तो भेदों का सौदा है और यह सौदा महत्वपूर्ण है। उसने मैरी का प्रगाढ़ चुम्बन लिया। वह पागल हो गई—

"ओह गोस्ट, व्हाट कैन आई डू फार यू···हाऊ आय कैन हैव यू ऑनली फार मी। ओह, भूत ! मैं तुम्हारे लिए क्या करूं ? मैं किस तरह तुम्हें सिर्फ अपने लिए पाऊं ?"

"नेवर माइण्ड मैरी, आय एम योर्स बट···आय डू नॉट बिलोंग टू ह्यूमन सेपियन्स···आय एम रियली अ गोस्ट···यू कान्ट हैव मी ऑनली फार योरसैल्फ··· परवाह मत करो, मैं तुम्हारा हूं पर तुम मुझे केवल अपने लिए नहीं पा सकती···बट आय डिजायर यू, आय रिस्पेक्ट यू फार लोयल्टी एण्ड लाईकिंग···लेकिन मेरे मन में तुम्हारे लिए इच्छा है और वफादारी के लिए आदर, पसन्दगी के लिए भी।"

मैरी ने सोचा, यह भी कम नहीं है। उसने नोट किया कि उसने भूतनाथ के मन में अपने लिए जगह बना ली है और वह मुझे भी चाहता है पर वह कहता है कि वह मनुष्य योनि का नहीं है, यह अजीब बात है। क्या यह सचमुच भूत ही तो नहीं है ?

लेकिन यह हो नहीं सकता'''यह तो जासूस है, भूत बनने की मिथ खड़ी कर रहा है, चालाक है मगर क्या आदमी है, व्हाट अ मॅन !

"कॅन यू प्रूव दॅट यू आर अ गोस्ट'''गोस्ट्स कॅन डीमटीरियलाइज, कॅन यू डू इट ? पर तुम क्या प्रमाणित कर सकते हो कि तुम भूत हो ? भूत तो अदृश्य हो जाते हैं, तुम हो सकते हो ?"

"यः नाउ सी, हां, देखो।"

भूतनाथ ने अपने झोले से छुपाकर एक गुटका सा निकाल उसे मुंह में रखा और कोने में जाकर खड़ा हो गया। ताली बजाई और मंत्र पढ़ा'''ओम् ह्रीं क्लीं वच कुरु मॅरीम्। सा च शक्ति रूपा, शुद्धा प्रेयसी महिमामयी मॅरी अदृश्य कुरु भूतनाथाय ओम ह्रीं क्लीं थी ओम् फट फट स्वाहा !—भूतनाथ ने पुनः ताली बजाई और मॅरी को आंखों में आखें डाल कर सम्मोहन किया। थोड़ी देर में मॅरी के नेत्र बंद हो गए और भूतनाथ ने उसे जमूरा बना दिया—

"मॅरी ! व्हेयर आर यू, व्हाट डू यू सी ?—मॅरी, कहां हो, क्या देख रही हो ?"

"आय डोंट सी यू गोस्ट, व्हेयर आर यू ?—मैं तुम्हें नहीं देख रही, कहां हो ?"

भूतनाथ ने पुनः ताली बजाई और उल्टा हाथ फेरना शुरू किया। मॅरी के नेत्र खुल गए—

"व्हाट ! व्हाट हैपिन्ड ? यू रियली डिसएपीयर्ड ? नो ? डिड यू ? ओह ! माय गॉड, सो, यू आर गोस्ट एण्ड आय वान्टेड टु लव अ गोस्ट'''क्या ? क्या हुआ था ? तुम अदृश्य हो गए सचमुच ? ओह, मैं एक भूत को प्यार कर रही थी ?"

भूतनाथ खिलखिलाया और मॅरी को विश्वास दिलाया कि वह सचमुच भूत है और उसे, उससे डरना चाहिए लेकिन मॅरी बेपनाह हंसती रही। उसने भूतनाथ को गुटका मुंह मे दबाते देख लिया था। वह सम्मोहित होने का नाटक कर रही थी—"यू ब्लफर, यू लायर। यू'''डबल एजेण्ट हः हः हः हः यू ब्लडी मर्डरर बट माय डियर यू आर ?"

ठहाकों के ठहराव के बाद भूतनाथ ने मॅरी को जासूसी दृष्टि से ताका। वह अल्मारी से कुछ कागज ले आई। भूतनाथ पढ़ने लगा। मॅरी काफी बनाने चली गई।

भूतनाथ मॅरी के दिए पत्रक पढ़कर सन्न रह गया। उनमें एक पत्र प्रतिलिपि पृथकतावादी हिंसक सिख-संगठन की थी, जिसमे कहा गया था कि कर्नलसिंह सानेहवाल ग्राम का नहीं है। सानेहवाल मे पता लगाया गया लेकिन कर्नलसिंह नाम का कोई सिख वहां नही रहा, कभी, इसलिए उसकी जांच की जाए कि वह कौन है और किसके लिए काम कर रहा है ? दूसरे खूनी उग्रवादी सिख संगठन ने, एक पत्र मे साफ लिखा कि कर्नलसिंह सरकार का जासूस है, उसे देखते ही गोली मार दो। उसका तब तक पीछा करो, जब तक वह निशाने पर न आ जाए। अमरीकी दूतावास के एक अधिकारी की बातचीत का एक टुकड़ा मॅरी ने लिख लिया था, जिसमें यह विचार था कि भूतनाथ डबल एजेन्ट है, उससे अपने भेद बचाए जाएं अन्यथा वह उन्हें भारत सरकार को दे सकता है। चारु मजूमदार-ग्रुप की एक गुप्त बैठक के प्रस्ताव का सारांश यह था कि भूतनाथ की सफाई जरूरी है अन्यथा वह उग्रवादियों के समर्थक साथियों के पीछे भारत सरकार की सशस्त्र पुलिस या सेना को लगा देगा।

भूतनाथ का मनोविनोद हुआ। वह अपने आप मुस्करा रहा था। मॅरी काफी लाई। भूतनाथ ने पूछा, "माई डियर मॅरी। यह उन्हें कैसे ज्ञात हुआ कि मैं भारत

सरकार का भेदिया हूं,—हाउ दे कुड नो दैट आय एम एन इन्टैलीजेंस-एजेन्ट आफ इंडिया ?"

"दैट इज माय सीक्रिट, य: व्हाय आय शुड टैल यू दैट ? व्हाय ? मैरी बोली, यह मेरा रहस्य है, मैं क्यों बताऊं, क्यों ?"

"व्हेयर इज योर ग्रेट सेंटीमेंट···तुम्हारा वह महाभाव कहा गया ?"

"व्हेयर इज योर्स—और तुम्हारा ?"

भूतनाथ ने देखा, मैरी की आंखों में आसू हैं पर वह मुस्करा रही है···खूब। वर्षा भी, बिजली भी। इस छवि को चेतना में गठिया कर भूतनाथ ने सोचकर कहा—

"मैरी। द ग्रेट फीलिंग इज नॉट लिव ऑन सरफेस···इट लिव्स बिलो द सरफेस, दैट इज विदिन द सोल ऑर सबकाशस इन द डैप्थ आफ बीइंग—मैरी महाभाव, सतह पर नही, उसके नीचे रहता है, यानी, आत्मा में या कह लो अवचेतन में, अस्तित्व की गहराई में।"

मैरी कुछ रुकी। भूतनाथ को बंधी नजर में समेटा और बोली—"आय नो मिस्टर गडाढरसिंह, आय नो। इन योर डैप्थ देयर इज नथिंग, नीदर मैरी, नॉर रोज़ी, देअर इज अ सोर्ट आफ हेट्रिड, अ निगेटिव करंट, अ बरनिंग फायर टू डैस्ट्रॉय। इन दिस सेंस यू आर रियली अ गोस्ट बट आय डोंट नो, इफ देअर इज सम ग्रेट सेंटीमेंट, बिहाइन्ड दिस निगेटिव लैविल, आय डोंट नो···इफ देअर इज सच अ सेंटीमेंट, इट इज नॉट फार मी, नॉर फार रोज़ी···यू आर एन एब्स्ट्रैक्शन अ शैडो। इन दिस सेंस आल सो, यू आर ए गोस्ट।—मैं जानती हूं, तुम्हारी चेतना की गहराई मे कुछ भी नही है, न मैं, न रोज़ी। वहा घृणा है, नकारू धारा, एक प्रज्वलित अग्नि, जो बरबाद करना चाहती है। इस अर्थ में तुम भूत हो। पता नही, इसके नीचे कोई महाभाव हो, मैं नही जानती। यदि ऐसा कोई भाव है भी तो वह न मेरे लिए है, न रोज़ी के लिए···तुम एक अमूर्त्तन हो, एक छाया, इस अर्थ में भी तुम भूत हो।"

भूतनाथ विस्मित था। वह पहली बार मैरी से डरा। यह तो कमाल की अतर्दृष्टि रखती है। वह देर तक अंगुलियां टेबिल पर खटकाता रहा, काफी पीता रहा, फिर उसने जवाब दिया—

"मैरी, तुमने पाया कि घृणा या विध्वंस—इच्छा के पीछे कोई विचार है जरूर, महाभाव भी हो सकता है, यह भी तुम्हें जान पड़ा। यदि यह सही है और यही सच है तो तुम्हें मैं धोखेबाज क्यों लगता हूं ? क्या मैं उसी महाभाव को, उस महान व्यापक प्रेम को नही खोज रहा हूं, उसकी झलक तुममें है, इसी से तुम्हें चाहता हूं पर तुमने सिर्फ तुम हो मैरी, सारा संसार नही। मैं सारी दुनिया की वेदना ढो रहा हूं पर रोता नही, उन्हें रुलाता हूं जो इस दुःख के दाता हैं। क्या यह चीज तुम्हें पसद नही ?"

"नो, आय एम अ वुमन, रॉ लायक नेचर फुल आफ डिजायर एण्ड सेंस आफ वंडर···आय लाइक यू, रादर आय लव यू बिकाज यू आर एक्स्ट्रा आर्डिनरी, अ मैन··· आय लव योर करेज, क्लवरनेस, नॉट योर आइडियालॉजी · नहीं, मैं एक स्त्री हूं, प्रकृति की तरह अपरिपक्व और ताजी, इच्छा से लबालब और विस्मय के प्रति उत्सुक। मैं तुम्हें चाहती हूं, क्योंकि तुम असाधारण हो, एक मर्द। मैं तुम्हारे साहस और कौशल को पसन्द करती हूं, तुम्हारी विचारधारा को नहीं।"

"क्या कोई महान और व्यापक विचारधारा, बिना किसी महाभाव के जन्म ले सकती है ?"

"आय डोंट नो···आय लिव इन फीलिंग्स—मैं नहीं जानती, मैं भावनाओं में जीती हूं।"

"लेकिन तुममें, जो ठहराव और अंतर्दृष्टि है, वह भावुक व्यक्तियों में कहां होती है ? रोज़ी में क्यों नहीं है यह ?"

"आय डोंट नो···वट फीलिंग मेक्स वन आइडेंटीफाय विदसमवन कम्पलीटली एण्ड दिस प्रोड्यूसिज़ इनसाइट, इफ आय कैन से सो—पता नहीं, भावना से तादात्म्य हो जाता है किसी के साथ और वह अंतर्दृष्टि पा जाता है, भीतर-बाहर का देख लेता है।"

"तुम तादात्म्य कर गईं मेरे साथ, फिर भी हमदर्दी नहीं जगी ? मेरी बड़ी वेदना को नहीं समझा···मुझे आशा थी कि तुम समझ सकोगी,···काश, तुम समझ पाती, सहानुभूति दे पाती, मेरी गहराई को···तो मैं···तो एक अवलम्ब पा जाता।"

भूतनाथ का अकेलापन उभर आया। मैरी तत्क्षण उठी और उसने भूतनाथ के नेत्रों में झांका। दोनों देर तक वैसे ही एक दूसरे की झीलों में डुबकियां लगाते रहे। मैरी ने उसको प्यार किया और कहा—

"माय फ्रेंण्ड, यू आर अ ट्रैजिक फिगर आल दो यू आर रिगार्डिड टु बी टैरिबिल, आय नो ''देयर इज़ गोइंग टु बी अ ट्रैजडी, आय फील, आय मे बी रौंग···यू नो गोस्ट''' देअर आर पीपुल इन द आफ़िस आफ़ मिस्टर पीटर्सन हु विट्रे देयर कंट्री, देअर पीपुल—तुम एक शोकान्त व्यक्ति हो। यों तुम्हें लोग भयंकर समझते हैं। मैं जानती हूं, महसूसती हूं कि एक ट्रेजडी, एक दुखान्त घटना घटने जा रही है। हे ईश्वर ! मैं गलत हो जाऊं, तुम जान लो, मिस्टर पीटर्सन के विभाग में कुछ लोग हैं जो अपने देश और जन से गद्दारी कर रहे हैं।"

"व्हाट ! क्या, तो यह है ! तुम्हें यानी अमरीकी दूतावास को भारतीय गुप्तचर सेवा के उच्चतम कार्यालय से भेद मिल रहे हैं, यही न ?"

"गोस्ट। डोंट वरी, हवाई जहाज पर न्यूयार्क में, कैलीफोर्निया में तब तक मैं साथ हूं या रोज़ी या हम दोनों, तब तक तुम अमर हो, औरों की गारन्टी नहीं ले सकती, डोंट वरी, सो लौंग आय एम विद यू···ऑर रोज़ी और बोथ आफ़ अज आर विद यू, यू आर सेफ वट आय काट गारन्टी अदर्स विहेवियर।"

"आय एम ग्रेटफुल, आभारी हूं मैरी। वट डज़ इट मीन दैट ईविन योर पीपुल हैव सस्पिशन्स ? दे कैन किल मी ऑर गैट मी किल्ड···दैन व्हाट इज़ द पाइंट इन गोइंग देअर ? क्या इसका मतलब यह है कि तुम्हारे लोग भी मुझ पर शक करते हैं और वे मुझे मरवा देंगे ?···तब वहां जाना क्यों ?"

"द प्वाइंट इज़ दैट यू आर यूज़फुल फार दैम, मोर यूज़फुल फ़ार मी एण्ड फार रोज़ी, ठीक है ? बात यह है कि तुम उपयोगी हो, दूतावास के लिए भी, हमारे लिए भी !"

भूतनाथ मकड़जाल में उलझ गया। यह मैरी तो पहेली की तरह है। वह भांपता रहा। फिर उसने दाव लगाया—

"मैं अगर तुम्हारा विश्वास और प्रेम पा जाऊं और वादा करूं कि इस सिख-आतंकवाद के समाप्त हो जाने के बाद या तो मैं तुम्हारे देश में आऊं या तुम इंडिया में आकर मेरे साथ रहो तो क्या यह नहीं हो सकता कि तुम वहां से खबरें भेजती रहो, और मैं यहीं रुक जाऊं···मेरा यहां बड़ा मिशन है।"

"नो, यू विल हैव टू अकम्पनी अज़ बट यू विल नॉट बी अलाउड टु रोम इन द स्ट्रीट्स, यू हैव नो फ्रीडम। योर प्रोग्राम विल बी फिक्सड बाय अज़ एण्ड यू विल हैव टू स्टिक टु इट अदरवाइज़ यू विल नॉट बी सेफ—नहीं, तुम्हें हमारे साथ चलना ही है पर तुम मुक्त नहीं घूम सकते। तुम्हें कोई आजादी नहीं मिलेगी। कार्यक्रम हम तय करेंगे और तुम्हें मानना होगा अन्यथा तुम मारे जाओगे।"

"सो, आय हैव नो च्वाइज ? यानी कोई विकल्प नहीं है मेरे लिए ?"

"नो'''वी'''आय विल गवर्न योर डैस्टिनी'''नहीं, हम, मैं तुम्हारी नियति की निर्धारक हूं।"

और मैरी ने जो हंसना शुरू किया तो वह रोके भी नहीं रुकी। भूतनाथ बेबस, खिसियाया सा बैठा रहा। मैरी हंसते-हंसते उसके अंक में गिर गई और उसकी ठुड्डी पकड़ कर बोली—

"डिड यू डिसायड टु ब्लफ एवरीबडी ऑन दिस पावर आफ योर्स व्हिच इज नथिंग'''क्या तुमने इसी बल पर सबको धोखा देने का निर्णय लिया है ? तुममें तो कुछ भी नहीं है।"

और मैरी पुनः खिलखिलाने लगी। विजय से उसके चेहरे पर एक अनोखी चमक आ गई थी, गर्व से वह इठला रही थी और भूतनाथ की वह 'टि ली ली' बोल रही थी।

तब तक रोज़ी की टोली अमरीकी दूतावास से वापस हुई। उनकी कार की आहट से दोनों झपट कर कमरे के बाहर हो गए और भूतनाथ कागजों को जेब में भर कर कुछ लिखने पढ़ने लगा। मैरी उनके स्वागत में गई।

रोज़ी, राबर्ट आदि के साथ गुनगुनाती हुई आई और भूतनाथ को पकड़ कर अपने कमरे में ले गई। भूतनाथ ने कहा कि कल की तैयारी कर लें, सामान बांध लें और शाम सात बजे रीगल सिनेमा पर रोज़ी आ जाए। यहां तो मैरी का पहरा है। रोज़ी मान गई। भूतनाथ उसके केशों को ओठों से छूकर चला आया।

सात बजे रीगल सिनेमा, कनॉट प्लेस पर उसने रोज़ी की प्रतीक्षा की। गोल-गोल बाजार में अंगरेजी ढंग की इमारतों और चौड़े बरामदों में लोगों की भीड़ समा नहीं रही थी। बीच में विशाल बाग था, फव्वारा, सब्जा, वृक्ष और हरियाली। सबसे ऊपर रोशनी की दमक से, रात में गोल मार्केट अलौकिक हो जाता और बड़े से बड़ा व्यक्ति उस समूह में खो जाता। दृश्य इतना मोहक था कि उसे अकेले-अकेले या तो कवि-कलाकार देख सकते थे या पागल। रीगल के सामने के बाग में गाड़ियों का अड्डा था। वहां, भूतनाथ ने एक साधू को देखा जो हठयोगी था। गोरखी योग का वेष बनाए वह उस जगह अजीब लग रहा था। बड़ी-बड़ी जटाएं, गांजे, और चरस से लाल नेत्र, नंगे शरीर पर भभूत मली हुई, कटि प्रदेश पर एक भगवा वस्त्र और एक घंटा बंधा हुआ, जिसे वह क्रमशः दोनों पैरों पर ले लेकर बजाता और हाथों में त्रिशूल और डमरू। डमरू बजाकर वह भिक्षा मांगता और आशीर्वाद बरसाता। तभी रोज़ी आ गई। भूतनाथ को बाबा के पास देखकर वह भी बगल में खड़ी हो गई और जिज्ञासा से भरपूर नेत्रों से बाबा को प्रसन्न हो निरखने लगी। बाबा ने दोनों को अलग-अलग और फिर एक साथ देखा—

"अलख निरंजन। बच्चा। खेत तेरा, जस तेरा पर गोरख ने भाखा, नारी माया है। ठगिनी से बचना बालक!"

भूतनाथ ने उसका मर्म समझा, परन्तु उसने बाबा को छेड़ा—"बाबा और यह रोज़ी, गुलाब, इसका भविष्य, यह ठगिनी माया कहां, यह तो स्वर्ग है, सीधी और मीठी।"

"अलख निरंजन ।" बाबा रोज़ी को घूर कर बोला—' यह तो इन्द्रलोक की अप्सरा है तेरे लिए, पर उर्वशी तो बेटा सदा साथ नहीं रहती न, सो पुन्न कर तो रहेगी, तू पुरुरवा राजा है ।"

भूतनाथ बाबा को दक्षिणा देकर चला। रोज़ी ने पूछा—"व्हाट हि सेड, दैट स्ट्रेंज परसन ? उस विचित्र व्यक्ति ने क्या कहा ?"

"हि ब्लेस्ड अज—उसने दुआ दी। हि सेड दैट वी विल बी हैपी।"

"बट आय थाट हि मेन्ट समथिंग बैड, इजिन्ट इट ? पर मुझे लगा, उनने बुरा कहा।"

"नो, हि मेंट वेल—नहीं वह अच्छा कह रहा था।" भूतनाथ बाबा के बोल पर विचार कर रहा था।

दोनों, रोज़ी की गाड़ी में घूमने निकले और अशोक होटल के पीछे के घास के मैदान में जाकर बैठे। वहाँ भी लोग आ जा रहे थे, वे पुनः उठे और कार में ही घूमना तय किया। भूतनाथ गुम था जैसे कुछ हो गया हो। रोज़ी ने उसके चिकोटी काटी। वह हंसा—

"रोज़ी। तुम्हारी क्या राय है, मैं चलूं या नहीं चलूं ?"

"व्हाय दिस क्विश्चन नाउ ? आय थिंक मेरी हैज कम्युनीकेटिड सम बैड न्यूज टु स्पोयल माय ईवनिंग, इज इट करेक्ट ?··· यह प्रश्न अब क्यों ? मैरी ने कोई खराब बात कही है ताकि मेरी शाम नष्ट हो जाए, यही है न ?"

भूतनाथ चकित था। ये स्त्रियां ! ये कैसे सब समझ लेती हैं ? कमाल है। उसने गला साफ किया और बोला—

"रोज़ी। एवरी वुमन इज अ सोर्ट आफ कम्युनीकेशनसेंटर दैट इज सो सेंसिटिव दैट रिकार्ड्स एवरीथिंग एण्ड कम्युनीकेट्स एवरी थिंग, आय वडर। दि फेयर सेक्स इज द ग्रेटेस्ट मिरेकिल आफ नेचर, हाउ डू यू न्यू दैट आय एम टोल्ड समथिंग बैड न्यूज—प्रत्येक महिला एक सम्प्रेषण-केन्द्र की तरह है, अति सवेदनशील। वह सब कुछ रिकार्ड कर लेती है और जो घटित होता है उसे सम्प्रेषित कर देती है। नारी प्रकृति का सबसे बड़ा चमत्कार है। तुम्हें कैसे पता चला कि मुझे कोई बुरा समाचार मिला है ?"

"डोंट ब्लफ मी, टैल मी व्हाट शी सैड—धोखा मत दो, बताओ मैरी ने क्या कहा ?"

"अब क्या बताएं, तुम्हारी शाम खराब होगी, तुम्हारा क्या मत है, मैरी दूतावास में बहुत मानी जाती है क्या ?"

"पहले यह बताओ ? उसने क्या कहा ?"

"उसने कहा कि मेरे लिए अमरीका में बहुत खतरा है और यह कि मुझ पर सभी को शक है, यह कि मैं धोखेबाज हूं, ऐयार डबल एजेण्ट···और न जाने क्या क्या ?"

"ओह। गोस्ट, डिड यू बिलीव हर, तुमने विश्वास कर लिया ?"

"व्हाय नॉट ? क्यों नहीं करता ?"

"डोंट बिलीव हर। शी इज अ सस्पैक्ट इन द एम्बैसी। शी इज यूज्ड टु ly2 सीक्रिट्स एण्ड शी कीप्स सम सीक्रिट्स टु हरसेल्फ···उस पर विश्वास मत करो। उस पर दूतावास को शक है। उसको रहस्य पाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है पर वह कुछ

भेदों को अपने पास रख लेती है। बाद में जब दूतावास वालों को पता चलता है कि मैरी सब कुछ नहीं बताती तो वे उस पर शक करते हैं और उसे दूतावास की सभी बातों का पता नहीं चल पाता। वो सिर्फ बातों में होशियार है, एक खास ढंग की। वह टटोल करती है, मनभेदन मगर वह अनुमान मात्र होता है। वह कुछ नहीं जानती, मैं तुम्हें बताऊंगी।"

भूतनाथ ने पुन: चकित होकर गाड़ी रोकी और रोज़ी को पास खींच कर प्यार किया। वह रोज़ी का सचमुच कृतज्ञ था। मैरी ने तो उसे पहेली में कैद कर दिया था और स्वयं पहरे पर बैठ गई थी कि बाहर न निकल पाऊं। भूतनाथ का विस्मय और लाड़ देखकर रोज़ी पुलकित हो गई और खुशी में बुलबुल-सी बोलने लगी—

"तुम मैरी की विवेचना के शिकार हो गए हो, वह सब उसका दाव है। वह झूठे सबूत भी एकत्र करती है, तुम्हें भी दिए होंगे? यू आर विकटिम आफ हर अनालिसिस।"

अब तो भूतनाथ स्तब्ध हो गया। अद्भुत है। हठयोगी बाबा ने ठीक कहा था कि नारी मायाविनी होती है लेकिन रोज़ी तो प्रत्यक्ष और पारदर्शी है···तो भी मैरी के सबूत मेरे पास हैं उन्हें रोज़ी को दिखाना तो विश्वासघात होगा मगर रोज़ी को शायद उन प्रमाणों का भी पता हो। यह रोज़ी तो तिलिस्मी गुलाब है। भूतनाथ ने जवाब दिया—

"लीव इट। यह बताओ कि उसे भेद लेने के लिए किस तरह कहा इस्तेमाल किया जाता है?"

"ओह! यू आर अ सिली परसन···व्हाय, शी मैट सम परसन्स इन द आफिस आफ द सैक्रेटेरियट आफ द प्रायम मिनिस्टर इंदिरा गांधी एण्ड इन हर रिसर्च एण्ड इन्वैस्टीगेशन विंग आल सो।—वह मैरी प्रधानमंत्री के सचिवालय में कुछ व्यक्तियों से मिली, कुछ गुप्तचर एजेंसी, 'रा' के लोगों से भी।''

"शी माइट हैव मैट, द डिरेक्टर आलसो।—वह 'रा' के निदेशक से भी मिली होगी।"

"व्हाय नॉट? शी विजिटिड हिज बंग्लो मैनी टायम्स, शी इज अ फैमिली फ्रैंड—क्यों नहीं, वह मिस्टर पीटर के बंगले पर कई बार गई, वह उसके परिवार की मित्र है।"

रोज़ी ने भूतनाथ की आश्चर्य से फटी आंख देखकर कहकहा लगाया। उसे बताया और बोली—

"आय सस्पैक्ट समथिंग बिटवीन हर एण्ड द पर्सनल असिस्टेंट आफ द प्रायम मिनिस्टर्स सेक्रेटरी—मुझे शक है कि प्रधानमंत्री के सचिवालय के सेक्रेटरी के व्यक्तिगत सहायक और मैरी के बीच कुछ खिचड़ी पक रही है।"

"लेकिन इसमें मैं कहां आता हूं, मेरे लिए खतरा किस तरफ से है?"

"मैरी की तरफ से। यदि तुम उसके कब्जे से निकल गए, उसको मान और मन नहीं दिया तो वह वे टेप भारत सरकार और दूतावास को दे देगी जिन पर उसने तुम्हारी हर बात रिकार्ड कर ली है।"

"भूतनाथ जैसे आसमान से गिरा। उसने पुन: एकान्त में गाड़ी रोकी और रोज़ी को पहचानने की कोशिश करने लगा—

"आर यू द सेम रोज़ी ऑर आय एम सिटिंग बिसाइड समबडी—एल्स?—

"अलख निरंजन ।" बाबा रोज़ी को घूर कर बोला —' यह तो इन्द्रलोक की अप्सरा है तेरे लिए, पर उर्वशी तो बेटा सदा साथ नहीं रहती न, सो पुन्न कर तो रहेगी, तू पुरुरवा राजा है।"

भूतनाथ बाबा को दक्षिणा देकर चला। रोज़ी ने पूछा—"व्हाट हि सेड, दैट स्ट्रेंज परसन ? उस विचित्र व्यक्ति ने क्या कहा ?"

"हि ब्लैस्ड अज—उसने दुआ दी। हि सेड दैट वी विल बी हैपी।"

"बट आय थाट हि मैन्ट समथिंग बैड, इजिन्ट इट ? पर मुझे लगा, उसने बुरा कहा।"

"नो, हि मैंट वैल—नहीं वह अच्छा कह रहा था।" भूतनाथ बाबा के बोल पर विचार कर रहा था।

दोनों, रोज़ी की गाड़ी में घूमने निकले और अशोक होटल के पीछे के घास के मैदान में जाकर बैठे। वहां भी लोग आ जा रहे थे, वे पुनः उठे और कार में ही घूमना तय किया। भूतनाथ गुम था जैसे कुछ हो गया हो। रोज़ी ने उसके चिकोटी काटी। वह हसा—

"रोज़ी। तुम्हारी क्या राय है, मैं चलूं या नहीं चलूं ?"

"व्हाय दिस क्विस्चन नाउ ? आय थिंक मैरी हैज कम्युनीकेटिड सम बैड न्यूज टु स्पौयल माय ईवनिंग, इज इट करैक्ट ?" यह प्रश्न अब क्यों ? मैरी ने कोई खराब बात कही है ताकि मेरी शाम नष्ट हो जाए, यही है न ?"

भूतनाथ चकित था। ये स्त्रियां ! ये कैसे सब समझ लेती हैं ? कमाल है। उसने गला साफ किया और बोला—

"रोज़ी। एवरी वुमन इज अ सौर्ट आफ कम्युनीकेशनसैंटर दैट इज सो सैंसिटिव दैट रिकार्डस एवरीथिंग एण्ड कम्युनीकेट्स एवरी थिंग, आय वडर। दिस फेयर सैक्स इज द ग्रेटेस्ट मिरैकिल आफ नेचर, हाउ डू यू न्यू दैट आय एम टोल्ड सम थिंग बैड न्यूज—प्रत्येक महिला एक सम्प्रेषण-केन्द्र की तरह है, अति सवेदनशील। वह सब कुछ रिकार्ड कर लेती है और जो घटित होता है उसे सम्प्रेषित कर देती है। नारी प्रकृति का सबसे बड़ा चमत्कार है। तुम्हें कैसे पता चला कि मुझे कोई बुरा समाचार मिला है ?"

"डौट ब्लफ मी, टैल मी व्हाट शी सैड—धोखा मत दो, बताओ मैरी ने क्या कहा ?"

"अब क्या बताएं, तुम्हारी शाम खराब होगी, तुम्हारा क्या मत है, मैरी दूतावास में बहुत मानी जाती है क्या ?"

"पहले यह बताओ ? उसने क्या कहा ?"

"उसने कहा कि मेरे लिए अमरीका में बहुत खतरा है और यह कि मुझ पर सभी को शक है, यह कि मैं धोखेबाज हूं, ऐयार डबल एजेण्ट···और न जाने क्या क्या ?"

"ओह। गोस्ट, डिड यू बिलीव हर, तुमने विश्वास कर लिया ?"

"व्हाय नॉट ? क्यों नहीं करता ?"

"डौट बिलीव हर। शी इज अ सस्पैक्ट इन द एम्बैसी। शी इज यूज्ड टु !2 सीक्रिट्स एण्ड शी कीप्स सम सीक्रिट्स टु हरसैल्फ ···उस पर विश्वास मत करो। उस पर दूतावास को शक है। उसको रहस्य पाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है पर वह कुछ

भेदों को अपने पास रख लेती है। बाद में जब दूतावास वालों को पता चलता है कि मैरी सब कुछ नही बताती तो वे उस पर शक करते है और उसे दूतावास की सभी बातों का पता नही चल पाता। वो सिर्फ बातों में होशियार है, एक खास ढंग की। वह टटोल करती है, मनभेदन मगर वह अनुमान मात्र होता है। वह कुछ नही जानती, मैं तुम्हें बताऊंगी।"

भूतनाथ ने पुन: चकित होकर गाड़ी रोकी और रोज़ी को पास खींच कर प्यार किया। वह रोज़ी का सचमुच कृतज्ञ था। मैरी ने तो उसे पहेली में कैद कर दिया था और स्वयं पहरे पर बैठ गई थी कि बाहर न निकल पाऊं। भूतनाथ का विस्मय और लाड़ देखकर रोज़ी पुलकित हो गई और खुशी में बुलबुल-सी बोलने लगी—

"तुम मैरी की विवेचना के शिकार हो गए हो, वह सब उसका दाव है। वह झूठे सबूत भी एकत्र करती है, तुम्हें भी दिए होंगे? यू आर विक्टिम आफ हर अनालिसिस।"

अब तो भूतनाथ स्तब्ध हो गया। अद्भुत है। हठयोगी बाबा ने ठीक कहा था कि नारी मायाविनी होती है लेकिन रोज़ी तो प्रत्यक्ष और पारदर्शी है···तो भी मैरी के सबूत मेरे पास हैं उन्हें रोज़ी को दिखाना तो विश्वासघात होगा मगर रोज़ी को शायद उन प्रमाणों का भी पता हो। यह रोज़ी तो तिलिस्मी गुलाब है। भूतनाथ ने जवाब दिया—

"लीव इट। यह बताओ कि उसे भेद लेने के लिए किस तरह कहा इस्तेमाल किया जाता है?"

"ओह। यू आर अ सिली परसन···व्हाय, शी मैट सम परसन्स इन द आफिस आफ द सैक्रेटेरियट आफ द प्रायम मिनिस्टर इंदिरा गांधी एण्ड इन हर रिसर्च एण्ड इन्वैस्टीगेशन विंग आल सो।—वह मैरी प्रधानमंत्री के सचिवालय में कुछ व्यक्तियों से मिली, कुछ गुप्तचर एजेंसी, 'रा' के लोगों से भी।"

"शी माइट हैव मैट, द डिरेक्टर आलसो।—वह 'रा' के निदेशक से भी मिली होगी।"

"व्हाय नॉट? शी विजिटिड हिज बैंगलो मैनी टायम्स, शी इज अ फैमिली फ्रैन्ड—क्यों नही, वह मिस्टर पीटर के बंगले पर कई बार गई, वह उसके परिवार की मित्र है।"

रोज़ी ने भूतनाथ की आश्चर्य से फटी आंख देखकर कहकहा लगाया। उसे बनाया और बोली—

"आय सस्पैक्ट समथिंग बिटवीन हर एण्ड द पर्सनल असिस्टेंट आफ द प्रायम मिनिस्टर्स सेक्रेटरी—मुझे शक है कि प्रधानमंत्री के सचिवालय के सेक्रेटरी के व्यक्तिगत सहायक और मैरी के बीच कुछ खिचड़ी पक रही है।"

"लेकिन इसमें मैं कहां आता हूं, मेरे लिए खतरा किस तरफ से है?"

"मैरी की तरफ से। यदि तुम उसके कब्जे से निकल गए, उसको मान और मन नहीं दिया तो वह वे टेप भारत सरकार और दूतावास को दे देगी जिन पर उसने तुम्हारी हर बात रिकार्ड कर ली है।"

"भूतनाथ जैसे आसमान से गिरा। उसने पुन: एकान्त में गाड़ी रोकी और रोज़ी को पहचानने की कोशिश करने लगा—

"आर यू द सेम रोज़ी ऑर आय एम सिटिंग बिसाइड समबडी—एल्स?—

—क्या तुम वही रोज़ी हो या किसी और के पास मैं बैठा हूं ?"

"रोज़ी इज द सेम, मैन। आय एम नॉट यूज्ड इन द गेम आफ इंटैलीजेन्स। आय एम एन आर्टिस्ट, अ वुड बी रायटर बट यू आर नॉट द सेम परसन, आय नो, यू आर रियली डबल एजेन्ट। आय स्मैल ऑन यौर लिप्स द स्मैल आफ मैरी'''रोज़ी वही है, मैं कोई खुफिया विभाग की गोट नही हूं। मैं कलाकार हूं, लेखक बनने वाली हू लेकिन तुम वह नही रहे। तुम्हारे होंठो मे मैरी की गंध है।"

भूतनाथ कुछ गंभीरता और कुछ दिल्लगी मे अपने सिर पर मुक्कियां मारं लगा—

"ओह गॉड, आय एम गोइंग टू ब्रेक, सेव मी फ्राम दीज़ फेयरीज़—हे ईश्वर, मैं पागल हो जाऊंगा। मुझे इन सुन्दरियो से बचा।"

भूतनाथ स्टीयरिंग के चक्के पर सिर रखकर अपनी कनपटी मलने लगा। रोज़ी हसते-हसते पसर गई।

"रोज़ी, यह तो तुमने भी कहा कि मुझे उससे विमुख नही होना चाहिए। यह बात उसने भी मुझसे कही लेकिन तुमने जो अभी उसके भेद खोले, उसके बाद उसकी गध अपने में कैसे बसाई जा सकती है ?"

"यू आर नॉट स्ट्रौंग एज यू से। व्हेयर देअर इज अ रोज व्हाट द हैल इज नैसै-सिटी आफ अ मदर आफ'' ब्लैक मैजिक'''तुम दृढ़ नही हो, सिर्फ कहते हो। जहा गुलाब की गध हो, वहां काले जादू की माता, मैरी—की क्या जरूरत है ?"

रोज़ी पुन. खिलखिलाई और भूतनाथ के कधे से चिपक गई। वह उसे दुला-रता रहा और सोचता रहा—

"लेकिन रोज़ी। वह चाहती तो है, प्रेम भी करती है, ऐसा कहती है वह। और उसे, वैसे भी तो नही छोड़ा जा सकता। जैसा घटना-जाल बुना जा रहा है, उसकी दृष्टि से भी उसको विश्वास में लेना होगा, अन्यथा वह बिगड़ कर सारा खेल खराब कर सकती है, नही?"

"दिस इज अप टू यू टु डिसाइड वट आय कान्ट शेयर यू विद हर"—यह तुम पर है, मैं उसके साथ तुम्हें नही बाट सकती।"

"आय एम डूम्ड बिटवीन द टू डैमसिल्स,—मैं दो सुन्दरियो के बीच विनष्ट होने के लिए विवश हूं।"

विनोद मे मस्त रोज़ी भूतनाथ के सिर पर हाथ फेरने लगी जैसे वह कोई बच्चा हो—बेचारा ! और रोज़ी भूतनाथ की अड़दब देखकर हहराने लगी—"ओह, माय पुअर ब्वाय।" कहकर उसको पुचकारा और पुनः ठहाका लगाया। भूतनाथ ने रोज़ी की शैतानी का बदला लेने के लिए उसे कसना चाहा मगर वह चिल्लाई—

"डौंट टच माय लिप्स, यू डर्टी डैविल डौंट टच दैम। यू स्मैल मैरी, माय रायवल—मेरे अधर मत छूना। तुम में मैरी, प्रतिद्वन्द्वनी मैरी की गध है।"

पर भूतनाथ ने उसे छोड़ा नही। एक दीर्घ और गहरे चुम्बन मे दोनों तल्लीन हो गए। जब मुक्त हुए तो रोज़ी आनन्द से अपना सिर उसके कंधे पर पटकने लगी—

"आय कान्ट शेयर यू विद द बिच, आय कांट।"

"बट रोज़ी। वह तो इतनी ईर्ष्या नही करती, वह तुमसे अधिक मुक्त है—शी इज नॉट सो जैलस एड शी इज मोर लिबरेटिड दैन यू।"

"यः शी इज मोर लिबरेटिड, आय नो बिकाज़ शी नोज़ शी कांट पर्जेस यू बट

आय कैन पर्जेस यू···"वह यकीनन मुझ से अधिक मुक्त है क्योंकि उसका तुम पर सर्वाधिकार नहीं है, मेरा है, इसलिए मैं मुक्त नहीं हूं।"

"बट यू शुड सजेस्ट सम वे इन माय प्रीडिकामेंट ··लेकिन तुम्हें कोई उपाय बताना चाहिए, इस मेरे संकट में।" भूतनाथ ने चिंता व्यक्त की।

"आय एम गोइंग टु मैरी यू इन द स्टेट्स। दैट इज़ सौल्यूशन सो दैट यू शुड नॉट स्मैल आफ द विच। मैं अमरीका में तुमसे विवाह कर लूंगी। यह समाधन है। तब तुम में उस जादूगरिनी की गंध नहीं आएगी।"

"बट आय मे वी किल्ड देअर, डार्लिंग। आय मे वी किल्ड एट एनी टायम, एनीव्हेयर···लेकिन मैं मारा जा सकता हूं कहीं भी, किसी भी समय।"

"नैवर, एण्ड डोंट से सच थिंग्स—कभी नहीं, और यह मत कहो, अपशकुन की बातें।"

रोज़ी ने भूतनाथ के मुख पर हाथ रख दिया जिसे उसने हलके से चूम लिया।

रोज़ी स्वप्नशील हो गई—"डार्लिंग! वहां मेरा प्यार होगा, कार, बच्चे और तुम्हें मैं ऊंचा पद दिलाऊंगी, सी० आई० ए० में नहीं, प्रशासन में। भारत में तो तुम वही इन्कलाब की सोचोगे। मैं तुम्हें आने नहीं दूंगी। ओह गोस्ट! तुम नहीं जानते, मैं तुम्हारे बिना रह नहीं सकती। तुमसे मिलने के बाद मुझे और मर्द बच्चे से लगते हैं। मैं तुम्हें इस सब प्रपंच से अलग करके मानूंगी। मैं एक ऐसा मीठा और मादक संसार रचूंगी जिसमें तुम सब कुछ भूल जाओगे, इतना सुन्दर और भव्य। मैं तुम्हें एक कलाकार, एक लेखक का कल्पना से जगमगाता, नित्य सृजनशील प्यार दूंगी, जो कभी उबाता नहीं और कभी नहीं थकाता। मैं इन्द्रधनुष रचूंगी तुम्हारे लिए, सच, चिड़िया की तरह गाऊंगी, उड़ूंगी तुम्हारे साथ अंतरिक्ष में और मुख में दाने भर भर लाऊंगी, अपने प्रतिबिम्ब बच्चों को चुगाने। मेरे और बालकों के कलरव से तुम्हारे कष्ट कट जाएंगे और असमंजस धुल जाएंगे। मैं रोज़ी हूं माय एंज़िल···आज से मैं तुम्हें एंजिल कहूंगी, देवदूत, फरिश्ता। वाह। मंजूर है, अच्छा है न?"

भूतनाथ रोज़ी पर झुक गया और वह उसकी पवित्र आत्मविस्मृति देखकर सचमुच उस क्षण में सब भूल गया। न जाने कब तक वे एक-दूसरे में खोए रहे। जब सामने हार्न बजा तो वे चौंके। पुलिसवाले ने डण्डा कार की बाडी पर बजाया—"ए बाबू। यह क्या कर रहे हैं आप लोग? गाड़ी बढ़ाइए नहीं तो चालान करता हूं। चलिए!"

भूतनाथ अलग होकर गाडी स्टार्ट करने लगा। सिपाही बड़बडा रहा था—"बेसरम चले आते हैं सड़क पर चुम्मी-मेढ़ाडुम्मी करने। अभी चालान कर दें तो बदमासी भूल जाए, राम राम।"

भूतनाथ ने रोज़ी को सिपाही के जुमले का मतलब समझाया तो दोनों हंसी के फव्वारे उड़ाते हुए उड़नछू हो गए!

33

वैनकुवर, कनाडा के क्रान्तिकारी वामपंथी दल 'भदरपार्टी' के महामन्त्रिव कामरेड एस० एच० बेन के कार्यालय में बेन के अलावा, दल के सहमन्त्रिव, कामरेड के०

एल० कोहन, कार्यकारिणी के कई सदस्य और कोषाध्यक्ष कामरेड पी० एन० सिंह भी थे। बैठक कामरेड बेन के निवास पर ही हो रही थी जो पूर्णत: गोपनीय और महत्वपूर्ण थी। भूतनाथ, कार्यकारिणी के एक सदस्य सरदार मनमोहनसिंह के माध्यम से बुलवाया गया था। वह न्यूयार्क से रोज़ी के साथ आया, जिसे वह समझा बुझाकर होटल में छोड़ आया था क्योंकि वामपंथियों के बीच उसे कोई खतरा नहीं था। लेकिन रोज़ी इतनी संशकित कि थी उसके दो बार फोन आ चुके थे। वह भूतनाथ की आवाज सुनती और कुशल पूछ कर फोन रख देती, जल्दी लौटने को कहती। भूतनाथ जब से भारत से न्यूयार्क फिल्म पार्टी के साथ आया था, रोज़ी छाया की तरह उसके साथ रहती और मेरी भी मौके-ब-मौके उसकी चिन्ता किया करती थी। आज विचार का विषय 'भारतीय सन्दर्भ और क्रान्ति' था।

बैठक में कामरेड बेन ने, प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की सरकार को फासिस्ट करार दिया और बताया कि भारतीय जनतांत्रिक सरकार का सारतत्व यह है कि वह एक पूंजीवादी तंत्र है, जिसे सामंती जड़ों वाले उपनिवेशी संस्कृति के लोग चला रहे हैं। उन्होंने कहा कि जवाहरलाल नेहरू के समय परस्पर विरोधी शक्तियों के मध्य एक संतुलन था किन्तु इंदिरा गांधी के शासन में, वह भंग हो गया और भारत को, सामाजिक-साम्राज्यवादी सोवियत रूस का पिछलग्गू बना दिया गया। जिस तरह सोवियत रूस, साम्यवाद का मार्ग छोड़ लेनिन की क्रान्तिकारी कार्यनीति को धता बताकर राष्ट्रवादी और प्रभुत्ववादी हो गया, कमजोर देशों में जिस तरह वह अपने को आरोपित करता है, सहायता के बहाने कीमतों के निर्धारण में चालाकी से उनका शोषण करता है, वियतनाम और क्यूबा को बढ़ाकर अन्तर्राष्ट्रीय दादागीरी करता है, और जिस तरह साम्यवादी चीन की इन्कलाबी नीति का विरोध करता है उससे वह कम्युनिस्ट न रहकर साम्राज्यवादी बन गया है और वह अपने हित में, चीन और भारत की दुश्मनी के कारण जो सीमा-संग्राम से पनप गई, चीन के विरुद्ध भारत को बढ़ा रहा है और उसे छूट दे रहा है कि भारत अपने देश के भीतर भले ही तानाशाही तरीके अपनाकर सामंती पूंजीवादी निहित स्वार्थों को मजबूत करे पर भारत, वैश्विक राजनीति में सोवियत रूस का साथ दे। सोवियत रूस अब चर्बी-प्रधान देश है, चेतना नहीं।

कामरेड बेन ने कहा, "इसलिए इंदिरा गांधी की सरकार अपने को सत्ता में रखने के लिए जनगण को आपस में लड़ा रही है और उसका रवैय्या, राज्य सरकारों और एक दूसरे से भिन्न जातियों या नेशनलटीज़ के साथ वही है जो अंग्रेज़ी साम्राज्यवादियों का था। जिस तरह अंग्रेज, धर्म, भाषा और जातीय मतभेदों को उछाल कर एक को दूसरे से लड़ाते थे, उसी तरह भारत सरकार हिन्दुओं को सिखों से, मुसलमानों को हिन्दुओं और सिखों से, हिन्दुओं को ईसाइयों से, उत्तर को दक्षिण से भिड़ा कर इन सबको अपने विरुद्ध नहीं होने दे रही है। ज़ाहिर है कि इस काम में पश्चिमी पूंजीवादी साम्राज्यवाद मदद कर रहा है यों उनके स्वार्थ दूसरे हैं। मसलन अमरीकी अन्तर्राष्ट्रीय उद्योग कम्पनियां अपना माल भारत जैसे देश में तभी बेच सकती है, हथियार, उच्च तकनीकी यंत्र और प्लान्ट वगैरह, जब भारत सरकार, समाजवाद का नाम भी न ले यानी बहाना भी न करे और पूरी तरह पूंजीवादी पद्धति अपना ले।"

"साथियो! यह तो आप जानते ही है कि जवाहरलाल नेहरू ने, समाजवाद के नाम पर नौकरशाहों द्वारा सचालित पब्लिक सेक्टर की नींव रखी थी, जिसे बढ़ाने और जिसमें मजदूरों की प्रत्यक्ष भागीदारी की जगह वर्तमान राज्यसत्ता ने पब्लिक सेक्टर में

बदइन्तज़ामी कर उसे अयोग्य घोषित कराया ताकि पूंजीपति कह सकें कि राज्य उद्योग-धंधे नहीं चला सकता। यह समाजवाद के विरुद्ध भारी षड्यंत्र किया गया है कि उसे जनता की निगाहों में अव्यावहारिक साबित कर, उद्योग धन्धों को सेठों को सौंप दो और जनता से कहो कि क्या किया जाए, राज्य तो राज कर सकता है, व्यापार और उद्योग उसके बूते की बात नहीं है।"

"तो पूंजीवादी भारत सरकार ने, जो नेहरू के समय, समाजवाद का बहाना किया था, वह भी इन्दिरा सरकार के समय साख खो बैठा और पूंजीवाद का रास्ता साफ हो गया। आप जानते ही हैं कि इन्दिरा गांधी के पुत्र, संजय गांधी, साम्यवादविरोधी और तानाशाह प्रवृत्ति के थे, आपात्काल लागू किया गया था। मतलब यह कि आर्थिक-क्षेत्र में समाजवाद का जो नाटक था, वह भी न हो, अमरीकी साम्राज्यवादी यह चाहते हैं, यह भी कि भारत, सोवियत रूस से कट कर उसका ऋणी देश होकर रहे और वहां इन्दिरा गांधी की जगह पूर्णतः साम्राज्यवाद के पिछलग्गू प्रधानमंत्री की सरकार हो। इसलिए, साथियो! अमरीका भारत का विघटन चाहता है और विघटनकारी तत्वों को, पाकिस्तान और अन्य स्रोतों से आर्थिक मदद दे रहा है। भारत से स्वतंत्र होने की मांग करने वाले तमिल क्षेत्रीयतावादियों की उसने मदद की, कश्मीर आज़ाद देश हो, इसकी साज़िश कराई, पूर्वी कबीलाई शक्तियों—नागा, मीज़ो आदि को, ईसाई मिशनरियों के माध्यम से आगे बढ़ाया और अब वह पाकिस्तान की सैनिक तानाशाही के ज़रिए सिखों को, हिन्दुओं से भिड़ा कर, खालिस्तान बनवाना चाहता है। सम्मिलित भारत, अखण्ड रहकर पूरी तरह अमरीका का उपनक्षत्र नहीं बन सकता, इसलिए उसे खण्ड-खण्ड कर, उसको आर्थिक साम्राज्यवाद के नीचे लाना राजनैतिक आवश्यकता है। इस तरह, साथियो। यह जो द्वन्द्व है, यह वैश्विक स्तर का है और उसकी प्रकृति जटिल है। भारत में धार्मिक सम्प्रदायवाद के पीछे साम्राज्यवाद का घिनौना खेल है।"

"यदि भारत को एक रखना एशिया की जनता की स्वतंत्रता के लिए ज़रूरी है, पूंजीवादी साम्राज्यवाद के विरोध के लिए भी तो भारत के विघटन में संलग्न मज़हबी सिख-तत्ववादियों या सन्त भिंडरांवाले जैसे सिख-फण्डामेंटलिस्टों का विरोध करना जनगण के हित में होगा या नहीं?" भूतनाथ ने प्रश्न किया।

कामरेड बेन ने बताया, "यकीनन होगा और हम कनाडा में सिख धार्मिक-फासिस्टों का विरोध कर रहे हैं मगर भारत तभी एक रह सकता है जब उसकी संरचना, महासंघ की हो। इसलिए 'खालिस्तान' की काट यह है कि भारत में जो भिन्न जातियां या कौमें हैं, कश्मीर के मुसलमान, उत्तरपूर्व के कबीले, पंजाब के सिख, दक्षिण के तमिल आदि, इन कौमों को अपने-अपने राज्यों में स्वायत्तता दे दी जाए, जैसाकि संयुक्त राष्ट्र अमरीका में है, लेनिन के समय रूस में भी था पर वहां बाद में, रूसी कौम ने, अन्य कौमों को दबा दिया।"

"दो सवाल हैं, एक तो प्रान्तीय या कौमी स्वायत्तता का है, दूसरा सवाल है भारत में स्वावलम्बी वामचेतना और स्वतंत्र साम्यवादी संगठनों के विकास का। मसलन भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, कम्युनिस्ट संगठन नहीं है। वह तो सोवियत रूस के इंगित पर चलता है। सी० पी० आई० एम० भी ऐसा ही है अतः भारत में क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी की ज़रूरत है जो हमारी 'गदर पार्टी' की परम्परा में विकसित हो सकती है।"

"चारू मजूमदार, सत्यनारायणसिंह, विनोद मिश्र, नागभूषण पटनायक, कानू

सान्याल के ग्रुप सी० पी० आई० एम० एल० पार्टी का आदर्श मानते हैं। क्या आप उन्हें 'गदर पार्टी' की परम्परा का मानते हैं ?"—भूतनाथ ने पुन: पूछा।

"एकदम सही लेकिन ये एक तो हों। इन्हें वैधानिक और सशस्त्र-संघर्ष, इन दो स्तरों पर एक साथ लड़ना होगा। अब चारू मजूमदार के बाद ये क्रान्तिकारी टोलियां महसूस कर रही हैं कि क्रान्तिकारी वैधानिक राजनैतिक संगठन के बिना, बूर्ज्वा जनतंत्र में, जनगण को क्रान्ति के लिए शिक्षित और संगठित नहीं किया जा सकता। यह विचार कि जहां-तहां व्यवस्था के साथ, टकराहट या शहादत से या व्यक्ति-उन्मूलन से, जनता स्वत: स्फुरित ढंग से उठ खड़ी होगी, त्रात्स्कीवादी भ्रम है। स्वत: स्फूर्त क्रान्ति तभी होती है, जब जनता में चेतना का स्तर ऊंचा हो जाए। शोषित मगर अचेत जनता, भीड़ होती है, जनसमाज नहीं।"

"इसका मतलब है कि भूतनाथ सही लाइन पर है ?" सरदार मनमोहन सिंह ने पूछा।

"काफी सीमा तक, मगर अभी तो जनाधार ही नहीं बना है और शक्तियां बिखरी हुई हैं···वैधानिक साम्यवादी राजनैतिक दल, व्यवस्था और सत्ता पर वामपंथी दबाव बढ़ाकर पूंजीवाद को बढ़ने न दें, समाजवाद के पक्ष में निर्णय कराए, तानाशाही के खिलाफ लड़ें और साथ ही सशस्त्र संघर्ष को बढ़ावा दें ताकि दमनकारी सामंती-पूंजीवादी तत्वों और पुलिस से, जनगण को बचाया जाए, उनके अधिकारों को फलीभूत कराया जा सके।"

"आपका क्या विचार है चीन का साम्यवाद शुद्ध है ? क्या उसके साथ भारतीय साम्यवादी मिलकर काम करें ?"—भूतनाथ ने प्रश्न किया।

"माओ के बाद अब वहां भी संशोधन-वाद बाढ़ पर है। इसलिए भारतीयों को अपने बलबूते पर, स्वतंत्र पार्टी-प्रोग्राम चलाना पड़ेगा। फिर अंतर्राष्ट्रीय साम्यवाद से जब जहां मदद मिल जाए, ठीक है। मैं तो मात्र अलबानिया को शुद्ध साम्यवादी नमूना मानता हूं"—कामरेड बेन ने कहा।

भूतनाथ ने अपनी स्थिति बताई—

"मैं इसलिए आया हूं कि कनाडा, अमरीका और पश्चिमी योरोप में, जो सिख अतिवादी तत्व हैं, उनकी अधिकाधिक जानकारी मिल जाए तो उन्हें संरक्षण देने वाले अमरीकी और पश्चिमी साम्राज्यवादियों का हुलिया सामने आ जाए। अभी तो वे कहते हैं (मार्गरेट थैचर और रीगन) कि वे भारत का विघटन नहीं चाहते किन्तु अमरीका, कनाडा और इंग्लैण्ड में ही सिख अतिवादियों के अड्डे हैं और वे पंजाब में आम सिख जनता का दिमाग खराब कर रहे हैं। जाहिर है कि पाकिस्तान की तरह यहां भी सिख धर्मोन्मादियों के प्रशिक्षण केन्द्र होंगे, उनका विवरण मिल जाए तो कनाडा, अमरीका की सरकारों पर राजनैतिक दबाव डालकर उन्हें एक हद तक तटस्थ किया जा सकता है। अन्तत: रीगन और थैचर वगैरह भारत को सोवियत रूस के झोले में पूरी तरह नहीं डालना चाहते। सोवियत रूस ही इस समय विघटनकारी तत्वों की जानकारी भारत सरकार को दे रहा है और पूंजीवादी-साम्राज्यवादियों की भारत विरोधी नीति को नंगा कर रहा है। इससे तो भारत पूर्णत: सोवियत रूस पर निर्भर हो जाएगा, इस डर से सिख अतिवादियों के अड्डों की जानकारी यदि अमरीका-इंग्लैण्ड को दी जाएगी तो वे कुछ कार्यवाही करने को बाध्य होंगे।"—भूतनाथ ने इस बिन्दु पर बहुत जोर दिया।

कामरेड बेन ने कहा कि इसका प्रबन्ध हो जाएगा मगर बहुत से व्यक्तियों और

प्रशिक्षण केन्द्रों और दूसरी गतिविधियों के विषय में भूतनाथ को स्वयं जासूसी करनी होगी। सब कुछ तो हम भी मालूम नही है। कनाडा सरकार सिख आतककारियों को उतना खतरनाक नहीं मानती जितना हमारी 'गदर पार्टी' को मानती है क्योंकि हम पूरे विश्व में पूजीवादी व्यवस्था के सशस्त्रविरोध का समर्थन करते हैं।"

सब कुछ साफ हो चुका था। भूतनाथ को अच्छा यह लगा कि 'गदर पार्टी' नाम से क्रांतिकारी कम्युनिस्ट संगठन बनाने वाले इन भारतीय मूल के साथियो का राजनैतिक चिंतन और लायन स्पष्ट और कुछ ठीक भी है। उसमे लचक भी है, कड़क भी। भूतनाथ को अपने में उलझा देखकर कामरेड बेन ने मज़ाक किया—"ऐयारो के साथ यही कठिनाई है कि वे अंतर्मुखी हो जाते हैं और रोमानी भी।"

ज़ोर का ठहाका लगा। बहस का तनाव ढीला पड़ा, सहजता वापस आने लगी।

मनमोहनसिंह बोले—"कामरेड बेन! आपने इस भूतनाथ पर विश्वास कैसे कर लिया? केवल हमारी सिफारिश पर आप इस बैठक के लिए मान गए। यह तो बहुत जटिल चरित्र है, यह भूतनाथ। इसकी माया कोई नही जानता, मैं भी नही। यह कसी हुई रस्सी पर नाच रहा है, क्यो भूत?"

कामरेड बेन ने कहा—"कामरेड भूतनाथ' काम का साथी है। गदरपार्टी के भारतीय क्रांतिकारियों के साथ बिरादराना सम्बन्ध है। इनके विषय मे मुझे कामरेड बुद्धिदेव चटर्जी, भानु सन्याल, रतीभानसिंह, श्यामकिशोर, सरदार जयरसिंह आदि ने लिखा था और बकेवरकाड की रपट उन्ही को थी जो 'गदरपार्टी' के एक अक मे प्रकाशित हुई है'''लेकिन कामरेड भूतनाथ के कई सम्बन्धों को मैं अच्छा नही मानता मुझे मालूम है कि कामरेड भूतनाथ सी आई. ए. के कुछ व्यक्तियों को आश्वस्त कर चुका है कि वह उनके काम आ सकता है जबकि यह भारत सरकार से भी मिला हुआ है, नहीं?"

मनमोहनसिंह हसे—"कामरेड बेन, आप सब जानते है मगर आप इसकी टैक्टिक्स, इसकी कार्यनीति का वह पक्ष बचा गए जो रोमांटिक है।"

सब मज़ा लेने लगे। भूतनाथ सकुचित हो गया पर मुस्कराता रहा। कामरेड बेन भी विनोद करने लगे, "कामरेड मनमोहनसिंह। रोमास एक कार्यनीति भी है, हो सकती है, इसे अमल में लाकर यह साथी भूतनाथ सिद्ध कर रहा है। हमें यकीन है कि भूतनाथ गच्चा नही खाएगा और रोमांस से भी राजनीति को मज़बूत करेगा, आय विश हिम सक्सेस।"

मुक्त अट्टहास हुआ। भूतनाथ ने मनमोहनसिंह को चिकोटी काटी और घूसा दिखाया। पुनः सब हसने लगे।

बैठक समाप्त हो गई। मनमोहनसिंह के साथ भूतनाथ कामरेड बेन और अन्य सबको क्रांतिकारी सॅल्यूट देकर होटल को चला।

मनमोहन ने सिख आतंकवादी सरदार नरिन्दरसिंह का पता दिया और कहा कि वह बहुत सनकी है। वह किसी से नरिन्दर को कहलवा देगा कि कर्नलसिंह मानेहवाल पक्का खालिस्तानी है। सो, भूतनाथ उससे जाकर मिल सकता है और यह सभव है कि वह विश्वास कर ले। लेकिन भूतनाथ को बहुत सावधान रहना होगा। ज़रा भी शक हो गया तो उसे वे गोली मार देंगे। यह भी मुमकिन है कि उसके बारे में और पजाब से रपट आ गई हो कि कर्नलसिंह पर विश्वास न किया जाए। एजेण्ट है।

मनमोहन को विदा कर भूतनाथ होटल की तरफ चला। उसने सावधा किसी सरदार की टैक्सी नहीं ली। कनाडियन टैक्सी वाले की टैक्सी में बैठकर वह उसने सोचा कि मैरी मददगार हो सकती है। काश, सी० आई० ए० का सम्बन्ध न सिंह के साथ हो तो काम बन सकता है किन्तु रोज़ी मेरी निर्भरता मैरी पर दे ऊधम मचा सकती है और उसे आहत करना निष्ठुरता है···खैर देखा जाएगा। को पटाना होगा।

होटल आकर देखा तो रोज़ी उदास बैठी थी। भूतनाथ को पाकर उसकी में चमक तो आई मगर वह स्वागत के लिए उठी नहीं, बैठी रही। भूतनाथ पास ज उसके सिर पर हाथ फेरने लगा पर वह चिढ़ी बैठी थी।

"डोंट टच मी। मैरी हैज़ कम जस्ट नाउ। शी इज़ विद द फुल फिल्मपा मिस्टर ग्रेफ विल अरेंज अ शो हियर···मैरी हैज़ इन इट। शी डिडिंट लीव अज़ अले — मुझे मत छुओ। मैरी आ गई है। पूरी फिल्मपार्टी ले आई है। मिस्टर ग्रेफ डॉक्यूमेंटरी फिल्म का प्रदर्शन करेंगे। मैरी ने मुझे तुम्हारे साथ अकेले नहीं दिया।"

"कहां है वे लोग ?"

"यहीं, इसी होटल में, बगल के कमरों में। पूरी भीड़ है, हियर इन दिस होट इन द रूम्स नियर बाय, द बिग क्राउड।"

भूतनाथ हंसने लगा। रोज़ी और चिढ़ी।

"बट, रोज़ी। वी आर फ्री इन अवर रूम, इंडिपेन्डेन्ट इट—पर हम अपने कमरे स्वतन्त्र हैं, नहीं ?"

"नो, आय कान्ट टौलरेट ईविन हर प्रज़ेन्स—मैं मैरी की उपस्थिति भी नहीं सकती।"

"रोज़ी। यू आर लूज़िंग योर सैंन्स आफ ह्यूमर···ह्वाय यू आर गिविंग सो म वेट टु हर प्रज़ेन्स।—रोज़ी, तुम विनोद-शक्ति खो रही हो, उसे महत्त्व क्यों दे रही हो इतना ?"

"आय केयर अ फिग फार हर बट इट इज़ यू हू गिव इम्पोर्टेंस टु हर बिका शी इज़ मोर यूज़फुल टु यू इन यौर इंटेलीजेन्स वर्क···मैं उसकी परवाह नहीं करती प तुम उसे, खुफिया कार्यवाही में उपयोगी होने से महत्त्व देते हो।"

'डू यू वांट माय परपज़ डिफीटिड ? शी इज़ ओनली अ फ्रेण्ड यू आर गोइंग टु बी माय लाइफ पार्टनर, रोज़ी—क्या तुम चाहती हो, मेरा मिशन फेल हो जाए ? वह मात्र मित्र है, तुम जीवनसाथी बनने जा रही हो।"

"नो, आय कान्ट बेयर विद हर। आय एम गोइंग बैक टु न्यूयार्क···इट इज़ सो ह्यूमीलियेटिंग एण्ड काम्प्लीकेटिड··नहीं, मैं उसे नहीं सह सकती, मैं न्यूयार्क वापस जा रही हूं, यह सब अपमानजनक और जटिल सम्बन्ध है।"

भूतनाथ रोज़ी के पास बैठ गया और उसकी ठुड्डी को अपनी ओर कर, उसका मुख दोनों हाथों में भरा। हथेलियों में खिला गुलाब था जो आंसुओं से भीगा था जैसे फूल पर शबनम हो···भूतनाथ को सचमुच तरस आया, बेचारी रोज़ी, इस घटनाचक्र में फंसकर कितनी दुःखी है। पुष्प पर पहाड़ दिया गया है ··क्या किया जाए अब ?

भूतनाथ में अवतरित कोमलता को रोज़ी ने महसूस किया। प्रेमी से स्नेह पाकर

वह उससे लिपट गई। कुछ सहज हो जाने पर भूतनाथ ने रोज़ी से कहा कि वह जाकर फिल्मपार्टी से मिले अन्यथा मिस्टर शेफ को बुरा लगेगा। यह बात रोज़ी ने समझी और वह मुस्कराती हुई भूतनाथ की पीठ पर एक धौल जमाती हुई उसके निर्देश पर चली गई। वह जानती थी कि भूतनाथ मैरी से बातें करना चाहेगा और ऐसा अवसर पाकर खुश होगा, रोज़ी ने मैरी को, भूतनाथ के पास जाने का संकेत किया और मिस्टर शेफ, रावर्ट आदि से बतियाने लगी।

मैरी को आश्चर्य हुआ। रोज़ी स्वयं उसे अपने मनोनीत जीवनसाथी के पास भेजे और वह भी स्वयं, यह कमाल था, किन्तु यह संभव है कि वह भूतनाथ के कार्य को महत्त्वपूर्ण मानती हो और उसने उसे प्रसन्न करने के लिए अपनी ईर्ष्या को दबा लिया होगा। मैरी बिना अपना भाव दिखाए भूतनाथ के कमरे में गई, वह अपने में खोया बैठा था और कनाडा तथा अमरीका के मानचित्र में कुछ ठिकानों पर निशाना लगा रहा था।

मैरी ने भूतनाथ के नेत्र बन्द कर लिए और चुपचाप खड़ी रही। भूतनाथ ने समझा, रोज़ी होगी। उसने बाहों को पीछे मोड़कर उसे लपेटा और उसके शरीर की माप करने लगा''''ओह मैरी सो यू आर हियर, ठीक है?''

''ठीक नहीं है गोस्ट। रोज़ी ने मुझे स्वयं भेजा है ''शी हैज सेंट मी हियर हर सैल्फ, इज इट नॉट अननैचुरल? क्या यह अस्वाभाविक नहीं है?—शी मे क्रिएट अ सीन इफ शी कम्स हियर जस्ट नाउ—वह तमाशा खड़ा कर देगी यदि वह यहां इस हालत में हमें देख ले।''

''दैन कम एण्ड सिट हियर, लायक अ गुड गर्ल—तब आओ और अच्छी बालिका की तरह बैठो।''

''ठीक है'''बट किस मी फर्स्ट यू डेयर डैविल।—मुझे प्यार करो पहले।''

भूतनाथ से गहरा दीर्घ बोसा वसूल कर मैरी ने कनाडा में सिख-अतिवादियों के कतिपय प्रमुख नेताओं के पते भूतनाथ को दे दिए जिनमें सरदार नरिन्दरसिंह का भी नाम था। भूतनाथ बहुत खुश हुआ। उसने कहा कि उसका जीवनसाथी तो मैरी जैसा होना चाहिए।

''तो रोज़ी को क्यों मूर्ख बना रहे हो। तुम'''मैं सब छोड़कर तुम्हारे लिए भारत जाने को तैयार हूं—दैन व्हाट आर यू ब्लफिंग रोज़ी? आय एम रैडी टू लीव एवरीथिंग एण्ड गो विद यू टू इंडिया।''

''ठीक है।''

''व्हाट? क्या ठीक है? डू यू प्रॉमिस? वादा करते हो?''

''ठीक है! यू रिवील द सीक्रिट्स आफ दीज सिख फण्डामेंटलिस्ट्स हु आर डूइंग एवरीथिंग टु डिस्टेबिलाइज इंडिया एण्ड आय प्रॉमिस टू कंसीडर योर प्रपोजल—तुम सिख अतिवादियों के रहस्य बताओ जो भारत में अस्थिरता पैदा करना चाहते हैं और मैं तुम्हारे प्रस्ताव पर विचार करूंगा।''

''एण्ड इफ आय डू नॉट गिव यू द इंटैलीजेंस, यू विल नॉट कंसीडर माय प्रपोजल—यदि मैं भेद न दूं तो क्या तुम मेरे प्रस्ताव पर विचार न करोगे?''

''मैरी। माय डियर। आय एम नॉट अ मैन आफ स्टॉक-एक्सचेंज, आय एम अ फ्रैण्ड एण्ड यू हैव आलरेडी प्रूव्ड दट अ फ्रैण्ड हैल्प्स विदाउट एनी अलटीरियर मोटिव, माय प्रीडिकामेंट इज दैट रोज़ी इज मैड फार मी। शी इज नॉट अ फ्रैंड, शी हैज विक्टम

पार्ट एंड पार्सल आफ माय बीग—मैरी, मैं कोई सट्टा का व्यापारी नहीं हूं। मैं मित्र हू और तुमने पहले ही साबित कर दिया है कि मित्र स्वतः बिना किसी स्वार्थ के सहायक होता है। संकट यह है कि रोज़ी मेरे लिए पागल है। वह मात्र मित्र नहीं है, वह मेरे अस्तित्व का अंग बन चुकी है।"

"दैन, व्हाट डू यू वाट टु से ? व्हाट डू यू मीन बाय एक्सेप्टिंग माय प्रपोजल"' तब तुम कहना क्या चाहते हो ? मेरे प्रस्ताव के विषय मे जो तुमने कहा, उसका क्या मतलब है ?"

"मरी। ऑनली टायम विल टैल व्हाट आय मीन। आय फील दैट व्हाटएवर आय से, इट हैज नो मीनिंग। आय मे बी शॉट डाउन एट एनी मोमेंट, देयरफोर रोज़ी कैन एन्ज्वाय हर मैडनैस एंड यू योर फ्रेंडशिप —द लायफ इज़ लायक अ बबल, बोथ आफ यू कैन सी टुगेदर टु बर्स्ट एट एनी टायम—सो सब ठीक है न ? सिर्फ समय बताएगा, मैं क्या कह रहा हू। मेरे कुछ भी कहने का कोई अर्थ नहीं। मुझे किसी भी क्षण मारा जा सकता है अतः रोज़ी मेरे लिए पागल रह सकती है और तुम मित्र बनी रह सकती हो। मैं एक बुलबुले की तरह हू, दोनों मुझे फूटता हुआ देखना।"

"डोंट से दैट एंड डोंट बी डैस्परेट आय कैन फिक्स योर इंटरव्यू विद नरिन्दरसिंह, एंड यू विद्या एंड आय मे बी विद यू"'बी सपोर्ट हिम, ही कान्ट किल यू"' यह मत कहो और निराश मत हो। मैं नरिन्दरसिंह से तुम्हें मिलवाती हू, जैसा तुम चाहते हो। मैं तुम्हारे साथ रहूगी, उसे हम मदद देते है। वह तुम्हे नही मार सकता।"

बहुत-सा ब्यौरा देकर मैरी चली गई।

दूसरे दिन दस बजे, किसी तरह रोज़ी को राज़ी कर मैरी और भूतनाथ सरदार नरिन्दरसिंह के यहा पहुचे। नरिन्दरसिंह कारखानेदार सम्पन्न व्यक्ति थे और उनका बगला शानदार था। नरिन्दरसिंह ने चुने हुए अतिवादियों को भी बुला लिया था। परिचय के बाद दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए प्रौढ़ उम्र के नरिन्दरसिंह ने कहा—

"कर्नैलसिंह सानेहवाल। तुम हमारे मिशन मे क्या मदद कर सकते हो ? तुमने पाकिस्तान मे, एक हिन्दू पुलिस अफसर को मारा, यह खबर मुझे मिल गई है। तुम फरार हो क्या ? भारत सरकार का कोई वारन्ट होगा तुम्हारे खिलाफ ?"

मैरी ने वारन्ट की कापी सरदार को दे दी। वह खुश हो गया।

"देखो। यहा कोई बाहरी आदमी नही है। तुम क्या सोचते हो, खालिस्तान बन सकता है ?"

"बन गया है, थोड़ा दबाव और उत्पात और हो तो हिन्दू भागने लगेंगे। हरमंदिर साहब मे, सन्त जर्नैलसिंह का जत्था मोर्चा रोप रहा है। हथियारों की कोई कमी नही। वे कई स्रोतो से आ रहे है। सुखद यह है कि हथियार लादे ट्रकों की डरी हुई पुलिस जाच नही करती। पाकिस्तान के प्रशिक्षण-केन्द्रो से सैंकडों नौजवान सिख ट्रेनिंग लेकर धड़ाधड़ आ रहे है। पाकिस्तान की भारत के साथ सीमा रेखा लम्बी है, कहां तक चक करेंगे वे ? भारत सरकार मे हिम्मत नही है जो कि हरमंदिर साहब पर सेना भेज दे। छात्र सगठन सक्रिय है। अच्छे-बुरे सभी लड़ाकू सिख, खालिस्तान के विरोध करने वालों को मार रहे हैं। सिख किसान साथ हैं ही। यदि पाकिस्तान हमला कर दे तो पंजाब के सिख साथ देंगे। आनन-फानन पजाब पर खालिस्तान का कब्ज़ा हो जाएगा। पाकिस्तान जनरल ज़ियाउल हक पजाब मे धर्मयुद्ध को डायरेक्ट कर रहा है"'राज्य करेगा खालसा, इसमे शक नही रहा।"

नरिन्दरसिंह गद्‌गद् हुए। उन्होंने कहा—"मान लो, स्वर्णमंदिर पर सेना ने खवावो कार्रवाई की तो जानते हो सिख क्या करेंगे ?"

"यह तो नामुमकिन है, भारत सरकार कभी हरमंदिर साहब पर हमला नहीं कर सकती। इसलिए यह सवाल तो ख्याली है जी।" नूतनाथ ने कहा।

"शावाश। ख्याली ही सही लेकिन सवाल तो है।"

"तो हम सिख-गौरव के प्रतीक हरमंदिर साहब पर हमले के लिए जिम्मेदार प्रायम मिनिस्टर और उसके लड़के को मारकर बदला लेंगे। इसमें फर्क नहीं पड़ेगा जी।"

"वाह ! यही हमारा सकल्प है। हमने सब तैयारी कर ली है···लेकिन इसका असर पंजाब के बाहर के हिन्दुओं पर क्या होगा ? क्या वे सिखों को मार कर बदला नहीं लेंगे ?"

"एक शेर हजार गीदड़ों के लिए काफी है जी। गुरु गोविन्दसिंह ने एक सिख को सवा लाख के बराबर बताया था। हम बाज हैं, वे पच्छी···और अगर ऐसा हुआ तो और भी उम्दा रहेगा क्योंकि तब हम पंजाब के हिन्दुओं पर टूट पड़ेंगे और पाकिस्तान बनने के पहले जैसी हालत हो जाएगी। फिर हमारे मददगार अमरीका और पच्छिमी मुल्क हस्तक्षेप करेंगे···फिर शान से गुरु का निशान लहराएगा और खालसा राज्य करेगा !"

"कर्नलसिंह ! तुमसे यही उम्मीद थी, जियो बहादुर···अब देखो जी, नार्वे, स्वीडन, जर्मनी, इटली, इग्लेंड, न्यूयार्क, केलीफोर्निया, वाशिंगटन···तमाम जगहों पर हमारे लोग हैं। हम अनगिनत धन, पंजाब के धर्मयुद्ध के लिए भेज रहे हैं। अमरीकी परमासन और जिया साहब, हमारी पीठ पर हैं···बस जी, थोड़ी-सी फिकिर रूसियों से है···मान लो, पजाब मे गदर होने पर वे कूद पड़ें···पास मे ही तो है ?"

"तो वर्ल्ड वॉर होगा, सरदार जी ! वर्ल्ड वॉर ! अफगानिस्तान मे घुस जाना मामूली बात थी। लेकिन आप जानते है, डियागो ग्रेसिया में अमरीकी अड्डा है, हिन्द महासागर की लहरों पर अमरीकी अधिकार है···पाकिस्तान पर हमला हुआ तो अमरीकी, न्यूक्लियर हथियारों से रूस को उड़ा देंगे और अगर वे अमरीका या पाकिस्तान पर बम मारेंगे तो वे भारत को जला डालेंगे। इतना बड़ा खतरा सोवियत रूस नहीं उठा सकता, इसलिए जो मारेगा, मीर बन जाएगा···आप हमें यहा के साथियों के नाम पते दे दें तो मैं उनसे मिलना चाहूंगा···आप गुरु का सिख मेरे साथ भेज दें।"

"मजूर है, हम एक गुरु का सिख तुम्हारे साथ भेज देंगे मगर सूची नहीं देंगे। यही दुश्मन के हाथ पड़ गई तो ?"

"नहीं पड़ेगी, कर्नलसिंह को मारने वाली गोली अभी तक नहीं बनी, मैं गुरु का सिख हूं।"

"तो भी लिस्ट नहीं देंगे लेकिन खास-खास सिखों से मिल लो, कुछ तो यहीं हैं, और भी हैं ··हम यहा लोंगोवाल के समर्थक नरम दल वाले सिखों से टकरा रहे हैं, तुम भी टकराना।"

"जरूर, क्यों नहीं ? आप इम्तहान लेना चाहें तो टारगेट लक्ष्य बता दें, मेरा साहस देख लीजिए जी।"

नरिन्दरसिंह ने पास बैठे गजिन्दरसिंह खालसा की तरफ देखा। उसने एक पता दिया। नूतनाथ ने उसे जेब में रख लिया।

"हलाक कर दूं या सबक देकर छोड़ दूं ?"

"उसको कोई सबक दो जी। घायल कर दो और यह पैम्फलेट छोड़ देना उसके पास, यह तुम्हारी परिच्छा है। कोई धमाका करना जी।"

"दुरस्त है जी। आज रात में उसे कोई बड़ा सबक देकर कल आपसे सूची लेने का हकदार हो जाऊंगा न ?"

"जरूर जी ! वह हमारा खास दुश्मन है···तुम उसे आज ही सबक दे दो जी।"

"करैक्ट, आज ही लो जी।"

देर तक भूतनाथ नरिन्दरसिंह और गजिन्दरसिंह के साथियों से मशवरा करता रहा और खालिस्तान के नक्शे के नीचे वह भेद लेता रहा कि कौन-कौन क्या-क्या कर रहा है तो भी मुख्य भेद तो कल मिलना था। भूतनाथ ने विदा ली और सत् श्री अकाल कहा। गजिन्दरसिंह ने नारा किया—"जो बोले सो निहाल।"

"सत् श्री अकाल, सत् श्री अकाल !"

चलने के पूर्व एकान्त में बुलाकर मैरी से नरिन्दरसिंह ने वार्ता की और दोनों को विदाई दी।

भूतनाथ के कौशल पर मैरी फिदा हो गई। वह उस पर लदी हुई टैक्सी में बैठी और मंत्रमुग्ध नजरों से उसे हेरती रही। भूतनाथ उसकी कमर में हाथ डालकर उसे कलेजे से लगाए रहा। मैरी ने सुख से आंखें मूंद लीं।

कुछ देर बाद वह बोली, "नाउ ह्वाट विल यू डू टु प्रूव यौर सैल्फ···तुम अब अपने को प्रमाणित करने के लिए क्या करोगे ?"

"तुम होटल चलो, मैं उस देशभक्त नेता प्रीतमसिंह से मिलकर आता हूं। ठीक है ?"

"ठीक नहीं है ! मैं उससे मिलूंगी ताकि रात में वह न मारा जाए···इट इज नॉट ऑल रायट। आय विल मीट हिम सो दैट हि मे नॉट बी किल्ड।"

"मैरी। यू आर वंडरफुल। बट दे मे नो ' कैन यू सेंड यौर प्रोगले टु वार्न हिम ?"—तुम आश्चर्य हो। पर वे जान लेंगे ''क्या तुम अपने प्रोगले को वहां भेजकर प्रीतमसिंह को सावधान नहीं कर सकती ?"

"बट ह्वाट विल वी गेन्ड बाय दिस एक्ट ''इससे क्या लाभ होगा ?"

"दैट यू लीव इट फार मी···इसे छोड़ो मेरे लिए।"

"दैन इट विल बी डन···बट आय विल अकम्पनी यू इन द नाइट···यह हो जाएगा पर मैं रात में तुम्हारे साथ चलूंगी।"

"श्योर, व्हाय नॉट ? आलसो इट विल बी रिस्की···जरूर, यों यह खतरनाक हो सकता है।"

"आय एन्ज्वाय डैन्जर विद यू माय डियर गोस्ट···तुम्हारे साथ मैं खतरे का रोमांच लूंगी।"

"एण्ड रोजी ? विल शी परमिट—और रोजी, वह मान जाएगी ?"

"दैट इज अप टु यू टु सैटिल···यह तुम जानो।"

दोनों होटल चले। दोनों ने दर्पण में देखा कि एक टैक्सी जो उनकी टैक्सी का पीछा करती आ रही थी, पीछे से आकर वहीं रुक गई। उसमें एक भयंकर सूरत का सरदार बैठा हुआ था। वह इधर-उधर देखता रहा और जब मैरी और भूतनाथ होटल की लिफ्ट में घुस गए तो वह टैक्सी से उतर कर उधर को ही आया और लिफ्ट का

इंतजार करने लगा। भूतनाथ जानता था कि उसका पीछा हो रहा है। उसने मैरी का हाथ पकड़ा और जिस मंजिल में वह ठहरा था, उस पर न उतरकर उसके पहले की मंजिल पर उतर गया ताकि वे दोनों लिफ्ट के दड़बे पर निगाह रख सकें, ऐसी जगह जाकर आट में खड़े हो गए। पीछा करने वाला सरदार लिफ्ट के नीचे जाने के बाद ऊपर आया और उसी मंजिल पर चला गया जहां फिल्मपार्टी ठहरी थी। भूतनाथ और मैरी इंतजार करते रहे।

कोई घंटे भर बाद वह भीषण सरदार लिफ्ट से नीचे आया और लिफ्ट से उतरकर अपनी टैक्सी में जा बैठा, चला गया। भूतनाथ और मरी ने ऊपर से ताका कि वह ऊपरी मंजिल पर खड़े मिस्टर शेफ की तरफ हाथ हिला रहा है। दोनों को ताज्जुब हुआ—"यह मिस्टर शेफ कहीं हम दोनों पर शक तो नहीं करता ? मैं समझता हूं कि अब ग्रोगले को प्रीतमसिंह के यहां भेजना ठीक न होगा।" भूतनाथ ने अंग्रेजी में कहा।

"गोस्ट ! मेरी एक दोस्त लड़की है यहां। मैं उसके यहां जाकर उसे प्रीतमसिंह के यहां भेज सकती हूं।"

"दैट विल बी बटर। तुम यही करो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूं। लेकिन हमें कपड़े बदलने होंगे।"

अपने कमरे में आकर दोनों ने वस्त्र बदले। भूतनाथ ने तो अरबों जैसा वेष बनाया और मैरी को बुरका पहना दिया। सौभाग्यवश रोज़ी, रॉबर्ट आदि बाज़ार गए हुए थे। दोनों नीचे आकर एक टैक्सी में बैठकर मैरी की सखी के घर गए। किसी ने उनका पीछा नहीं किया। सखी ने बात मान ली और दोनों वापस हो लिए। सखी ने बाद में मैरी को फोन कर दिया कि सरदार से कह दिया कि वह आज रात सपरिवार बाहर चल जाएं। सखी को धन्यवाद दिया गया और यह बता दिया गया कि वह यह बात गोपनीय रखे।

मैरी को विदा कर, भूतनाथ ने अपना कमरा बन्द कर लिया और उसने प्रीतम-सिंह के बंगले को उड़ाने के लिए एक टायमबम पर काम किया। कई घंटे काम करके वह खा-पीकर सो गया। रोज़ी बीच में आई थी पर खिड़की से भूतनाथ ने होंठों पर अंगुली रखकर उसे खामोश रहने और कल मिलने का वादा किया।

...रात के लगभग बारह बजे होंगे। वैनकुवर शहर जगमगा रहा था। गर्मी की शुरुआत के कारण अब शीत सहने योग्य हो गया था तथापि सर्दी थी। टैक्सी में भूतनाथ और मैरी एक-दूसरे के हाथ में हाथ डाले तनाव और चिन्ता में रोमांचित हो रहे थे। बिजली से चमकती भव्य इमारतों के बीच वे यों महसूस कर रहे थे, जैसे वे किसी दुःस्वप्न में चल रहे हों और दहशत हो कि आगे क्या होगा ?

प्रीतमसिंह के बंगले की गली के कुछ पूर्व ही उन्होंने टैक्सी छोड़ दी ताकि इन्क्वायरी होने पर ड्राइवर ठीक-ठाक कुछ बता न सके। वे पैदल, टायम बम झोले में लिए प्रीतमसिंह के बंगले पर पहुंचे। बंगला ऊंघ-सा रहा था। सामने बरामदे में कोई सोया जान पड़ा। शायद प्रीतमसिंह पहरेदार को छोड़ गए हों। उसकी उपेक्षा कर वे दोनों चक्कर काट कर पीछे गए और प्रीतमसिंह के शयनकक्ष की खिड़की काटकर वे उसमें उतर गए। अच्छी तरह से टायमबम फिट किया और आराम से बाहर आ गए। लेन से बाहर आकर दोनों ने लबादे उतारे और अपनी स्वाभाविक वेषभूषा में होटल आ गए।

मैरी इस हादसे से गुज़र तो गई लेकिन वह खौफ से पीली पड़ गई। वह बराबर

"हलाक कर दूं या सबक देकर छोड़ दूं ?"

"उसको कोई सबक दो जी। घायल कर दो और यह पैम्फलेट छोड़ देना उसके पास, यह तुम्हारी परिच्छा है। कोई धमाका करना जी।"

"दुरस्त है जी। आज रात में उसे कोई वड़ा सबक देकर कल आपसे सूची लेने का हकदार हो जाऊंगा न ?"

"जरूर जी ! वह हमारा खास दुश्मन है···तुम उसे आज ही सबक दे दो जी।"

"करैक्ट, आज ही लो जी।"

देर तक भूतनाथ नरिन्दरसिंह और गजिन्दरसिंह के साथियों से मशवरा करता रहा और खालिस्तान के नक्शे के नीचे वह भेद लेता रहा कि कौन-कौन क्या-क्या कर रहा है तो भी मुख्य भेद तो कल मिलना था। भूतनाथ ने विदा ली और सत् श्री अकाल कहा। गजिन्दरसिंह ने नारा किया—"जो बोले सो निहाल।"

"सत् श्री अकाल, सत् श्री अकाल !"

चलने के पूर्व एकान्त में बुलाकर मैरी से नरिन्दरसिंह ने वार्ता की और दोनों को विदाई दी।

भूतनाथ के कौशल पर मैरी फिदा हो गई। वह उस पर लदी हुई टैक्सी में बैठी और मंत्रमुग्ध नजरों से उसे हेरती रही। भूतनाथ उसकी कमर में हाथ डालकर उसे कलेजे से लगाए रहा। मैरी ने सुख से आंखें मूंद लीं।

कुछ देर बाद वह बोली, "नाउ ह्वाट विल यू डू टु प्रूव यौर सैल्फ···तुम अब अपने को प्रमाणित करने के लिए क्या करोगे ?"

"तुम होटल चलो, मैं उस देशभक्त नेता प्रीतमसिंह से मिलकर आता हूं। ठीक है ?"

"ठीक नहीं है ! मैं उससे मिलूंगी ताकि रात में वह न मारा जाए···इट इज नॉट ऑल रायट। आय विल मीट हिम सो दैट हि मे नॉट बी किल्ड।"

"मैरी। यू आर वंडरफुल। बट दे मे नो ' कैन यू सैंड यौर ब्रोगले टु वार्न हिम ?"—तुम आश्चर्य हो। पर वे जान लेंगे "क्या तुम अपने ब्रोगले को वहां भेजकर प्रीतमसिंह को सावधान नहीं कर सकती ?"

"बट ह्वाट विल वी गेन्ड बाय दिस एक्ट "इससे क्या लाभ होगा ?"

"दैट यू लीव इट फार मी···इसे छोड़ो मेरे लिए।"

"दैन इट विल बी डन···बट आय विल अकम्पनी यू इन द नाइट···यह हो जाएगा पर मैं रात में तुम्हारे साथ चलूंगी।"

"श्योर, ह्वाय नॉट ? आलसो इट विल बी रिस्की···जरूर, यों यह खतरनाक हो सकता है।"

"आय एन्ज्वाय डैन्जर विद यू माय डियर घोस्ट···तुम्हारे साथ मैं खतरे का रोमांच लूंगी।"

"एण्ड रोजी ? विल शी परमिट—और रोजी, वह मान जाएगी ?"

"दैट इज अप टु यू टू सैटिल···यह तुम जानो।"

दोनों होटल चले। दोनों ने दर्पण में देखा कि एक टैक्सी जो उनकी टैक्सी का पीछा करती आ रही थी, पीछे से आकर वहीं रुक गई। उसमें एक भयंकर सूरत का सरदार बैठा हुआ था। वह इधर-उधर देखता रहा और जब मैरी और भूतनाथ होटल की लिफ्ट में घुस गए तो वह टैक्सी से उतर कर उधर को ही आया और लिफ्ट का

इंतजार करने लगा। भूतनाथ जानता था कि उसका पीछा हो रहा है। उसने मैरी का हाथ पकड़ा और जिस मंजिल मे वह ठहरा था, उस पर न उतरकर उसके पहले की मंजिल पर उतर गया ताकि वे दोनों लिफ्ट के दड़वे पर निगाह रख सकें, ऐसी जगह जाकर आट मे खड़े हो गए। पीछा करने वाला सरदार लिफ्ट के नीचे जाने के बाद ऊपर आया और उसी मंजिल पर चला गया जहां फिल्मपार्टी ठहरी थी। भूतनाथ और मैरी इंतजार करते रहे।

कोई घंटे भर बाद वह भीषण सरदार लिफ्ट से नीचे आया और लिफ्ट से उतरकर अपनी टैक्सी में जा बैठा, चला गया। भूतनाथ और मरी ने ऊपर से ताका कि वह ऊपरी मंजिल पर खड़े मिस्टर शेफ की तरफ हाथ हिला रहा है। दोनों को ताज्जुब हुआ—"यह मिस्टर शेफ कहीं हम दोनों पर शक तो नहीं करता ? मैं समझता हूं कि अब ग्रोगले को प्रीतमसिंह के यहां भेजना ठीक न होगा।" भूतनाथ ने अंग्रेजी में कहा।

"गोस्ट ! मेरी एक दोस्त लड़की है यहां। मैं उसके यहां जाकर उसे प्रीतमसिंह के यहां भेज सकती हूं।"

"दैट विल बी बटर। तुम यही करो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूं। लेकिन हमें कपड़े बदलने होंगे।"

अपने कमरे में आकर दोनों ने वस्त्र बदले। भूतनाथ ने तो अरबों जैसा वेष बनाया और मैरी को बुरका पहना दिया। सौभाग्यवश रोजी, रॉबर्ट आदि बाजार गए हुए थे। दोनों नीचे आकर एक टैक्सी में बैठकर मैरी की सखी के घर गए। किसी ने उनका पीछा नहीं किया। सखी ने बात मान ली और दोनों वापस हो लिए। सखी ने बाद मे मैरी को फोन कर दिया कि सरदार से कह दिया कि वह आज रात सपरिवार बाहर चल जाए। सखी को धन्यवाद दिया गया और यह बता दिया गया कि वह यह बात गोपनीय रखे।

मैरी को विदा कर, भूतनाथ ने अपना कमरा बन्द कर लिया और उसने प्रीतमसिंह के बंगले को उड़ाने के लिए एक टायमबम पर काम किया। कई घंटे काम करके वह खा-पीकर सो गया। रोजी बीच में आई थी पर खिड़की से भूतनाथ ने होंठों पर अंगुली रखकर उसे खामोश रहने और कल मिलने का वादा किया।

···रात के लगभग बारह बजे होंगे। वैनकुवर शहर जगमगा रहा था। गर्मी की शुरुआत के कारण अब शीत सहने योग्य हो गया था तथापि सर्दी थी। टैक्सी में भूतनाथ और मैरी एक-दूसरे के हाथ में हाथ डाले तनाव और चिन्ता मे रोमांचित हो रहे थे। बिजली से चमकती भव्य इमारतों के बीच वे यों महसूस कर रहे थे, जैसे वे किसी दुःस्वप्न में चल रहे हों और दहशत हो कि आगे क्या होगा ?

प्रीतमसिंह के बंगले की गली के कुछ पूर्व ही उन्होंने टैक्सी छोड़ दी ताकि इन्क्वायरी होने पर ड्राइवर ठीक-ठाक कुछ बता न सके। वे पैदल, टायम बम झोले में लिए प्रीतमसिंह के बंगले पर पहुंचे। बंगला औंघ-सा रहा था। सामने बरामदे में कोई सोया जान पड़ा। शायद प्रीतमसिंह पहरेदार को छोड़ गए हों। उसकी उपेक्षा कर वे दोनों चक्कर काट कर पीछे गए और प्रीतमसिंह के शयनकक्ष की खिड़की काटकर वे उसमें उतर गए। अच्छी तरह से टायमबम फिट किया और आराम से बाहर आ गए। लेन से बाहर आकर दोनों ने लबादे उतारे और अपनी स्वाभाविक वेषभूषा में होटल आ गए।

मैरी इस हादसे से गुजर तो गई लेकिन वह खौफ से पीली पड़ गई। वह बराबर

भूतनाथ से चिपकी रही, और वह मन ही मन जीसस क्राइस्ट मे कुशल मनाती रही। भूतनाथ ने चुपचाप अपना कमरा खोला और मेरी को शुभ रात्रि का चुम्बन देकर विदा करने लगा। मरी ने करुण दृष्टि से भूतनाथ को ओर देखा। वह उस नजर से पिघल गया और मेरी को कमरे मे आने का सकेत किया। कमरा हल्के से बन्द कर वह मेरी पर जैसे ही प्यार के लिए झुका रोजी ने क्रोध मे कहकहा लगाया—"सो यू ब्लफर यू डेविल, यू रोग. आर डिसीविंग मी एण्ड एन्ज्वॉयिंग एट माय कास्ट—तुम शैतान, धोखेबाज़, धूर्त्त मुझे ठग रहे हो और मेरी कीमत पर मजा ले रहे हो।"

भूतनाथ और मेरी के चेहरे गिर गए और वे हतप्रभ खड़े रह गए।

"आय विल टीच यू अ लेसन टु बोथ आफ यू।—मैं तुम दोनों को सबक सिखाऊगी।"

"ओ रोजी, लैट मी एक्सप्लेन'''।"

'यू शट अप एण्ड मेरी। यू आर अ बिच, यू गेट आउट आफ माय रूम, चक आफ'''तुम चुप रहो और मेरी तुम कुतिया हो, मेरे कमरे से बाहर निकल जाओ।"

"मेरी ने घायल दृष्टि से भूतनाथ की ओर देखा। भूतनाथ ने कुछ कहने की कोशिश की मगर रोजी ने उसको तकिया फैंककर मारा। फिर किताबें, स्टूल, लैम्प, कपड़े, जूते, स्लीपर फेंक-फेंक कर मारती रही। भूतनाथ झुकाई देकर बचता रहा। मेरी कब चली गई, उसने इस तावड़-तोड़ हमले मे नही जाना। वह जितना ही रोजी को शान्त करने के लिए माफी मांगता वह और भी बिगड़ कर हमले करती, गालियां बकती और अन्त मे उसने रिवाल्वर निकालकर अपनी कनपटी की ओर उसका रुख किया। भूतनाथ अब चिंतित हो गया। उसने उछल कर रोजी के गन वाले हाथ पर हथेली से वार किया। गन छूट कर दूर जा पड़ी। रोज़ी गन उठाने के लिए दौड़ी मगर भूतनाथ ने उसको जकड़ लिया। गुस्से और बेबसी मे रोजी ने भूतनाथ का हाथ चबा लिया। वह चिल्लाया दर्द से। रोजी छूट गई और गन पर गिर गई। वह ट्रिगर दबाने को ही थी कि भूतनाथ ने और कोई उपाय न देखकर उसे पैर से चोट की। रोजी उलट गई और गन छूटकर पुनः गिर पड़ी। गैर घायल हाथ से भूतनाथ ने गन उठाकर उसके कारतूस निकालकर उसे जेब मे रखा और वह रोजी को उठाने झुका।

रोजी ने भूतनाथ को मुक्कों से मारना शुरू किया, जिसे भूतनाथ ने नही रोका। मारते-मारते रोजी थक गई। वह आहत-अभिमान रोती, चीखती, मारती, बकती हुई अन्त मे अचेत होकर भूतनाथ के अक में गिर गई।

"ओ रोजी। व्हाट हैव यू डन, रोजी, तुम नही जानती, तुमने क्या कर डाला।"

भूतनाथ ने कोमलता से रोजी के कपड़े ठीक किए और उसे शैय्या पर लिटाया। उसकी खरोंचो मे दवा लगाई और रोजी को लखलखा (कपूर) सुघाया। रोजी कुनमुनाई किन्तु भूतनाथ ने उसे बच्चे की तरह लिटाकर बत्ती बन्द कर दी।

34

सरदार प्रीतमसिंह का शयन कक्ष और उसके आसपास का भाग ध्वस्त हो गया था, यह खबर सरदार नरिन्दरसिंह को बड़े सवेरे मिल गई थी। भूतनाथ अलसुबह

उनसे मिला और कनाडा में सिख खालिस्तानियों की सूची प्राप्त कर ली। उसे पश्चिमी योरोप और अमरीका में उन सरदारों के नाम और पते मिल गए जो पंजाब में हिंसा के लिए हथियारों की सप्लाई करते थे और कत्ल करवाते थे, उन विदेशी सरदारों के भी जो पाकिस्तान की तरफ से पंजाब में जाते, वारदातें और अफीम-हशहिश-चरस गांजा की तस्करी करते तथा वापस आ जाते थे।

भूतनाथ होटल आया और मैरी को सारा हाल बताया। मैरी ने उससे कहा कि मिस्टर शेफ को कुछ ऐसे सबूत मिल गए हैं, जिनसे भूतनाथ पर शक होता है कि वह भारत सरकार का एजेन्ट है। इसलिए उस डरावने सरदार को भूतनाथ के पीछे लगाया गया है। उससे प्राण बचाने के लिए उसके प्राण लेने होंगे लेकिन सिख उग्रवादियों के कई गिरोह हैं। उनमें कुछ नरिन्दरसिंह के भी दुश्मन हैं। उनसे भेद पा जाने से उसे भी मारा जा सकता है और भूतनाथ को भी। इसलिए हमें यहां से चल देना होगा। मैरी ने कहा कि उसपर भी मिस्टर शेफ को शक है और कल की घटना से शक पक्का हो जाएगा। मैरी मिस्टर शेफ पर गुस्सा थी और दांत किटकिटा रही थी।

"दिस डैमन्ड ओल्ड फाक्स। हि मस्ट बी किल्ड फार दिस ऑर हि विल किल अज इस अभिशप्त बुड्ढे लोमड़ को मार देना चाहिए अन्यथा वह हमें मार देगा'''।"

"नॉट नाऊ मैरी, नॉट नाउ'''अभी नहीं मैरी।"

"तो कब? हमारे पास समय कहां है? हम बिना उसे बताए चुपचाप न्यूयार्क भाग चलें?"—मैरी ने पूछा।

"नो, तब तो वह सी० आई० ए० के एजेन्टों को पीछे लगा देगा या शायद लगा भी चुका हो पर अभी ऊपर से तो यही स्वांग करेगा कि उसे हम पर शक नहीं है।"

"तो क्या करें?"

"हम उसे बनाए और छुट्टी मांग कर न्यूयार्क और बेहतर है, कैलीफोर्निया चलें। वहां हमें यह प्रशिक्षण-केन्द्र देखना है जहां तोड़-फोड़ की शिक्षा दी जाती है'' वहां से हम भारत चले जायेंगे''—मान लो, रोजी बीमार हो जाए और वह न्यूयार्क अपने घर लौटने की जिद करे तो हम निकल सकेंगे'''तुम्हें उसकी देखभाल के लिए चलना ही होगा।"

"गुड, यू आर अ जीनियस गोस्ट। वैरी गुड, दिस विल बी द बैस्ट कवर—ठीक तुम प्रतिभाशाली हो भूत। यह श्रेष्ठ बहाना रहेगा।"

रोजी ने जब प्रातः अपने को भूतनाथ के साथ पाया और यह देखा कि उसने उसको कितना सहा है, कितनी देखभाल की है तो वह अभिभूत हो गई। उसने कमरे की हालत देखकर अपने गुस्से पर लानत भेजी। जब भूतनाथ ने उसे मैरी के रात के विस्फोट में सहयोग का किस्सा सुनाया और बताया कि मैरी अपरिहार्य है, उसके बिना उसका मिशन पूरा नहीं होगा और यह कि वह रोजी से विवाह, भारत जाने से पूर्व करेगा और दोनों साथ-साथ भारत जायेंगे, यह भी कि भूतनाथ मैरी को कार्यसाथी और मित्र मानता है, इससे अधिक और कोई चक्कर नहीं है, मैरी रोजी के साथ भूतनाथ के विवाह का समर्पन करती है, वह ईर्ष्यालु नहीं है। रोजी को भी उसे मित्र मान लेना चाहिए। बाद में भारत जाने पर मैरी तो बाधक बनने वाली है नहीं। वह तो यहीं रह जायेगी। वह सी० आई० ए० का काम करती है, स्वेच्छा से, शायद इसीलिए कि वह भूतनाथ को भेद दे सके। इतना खतरा वह भूतनाथ पर अपना प्रभाव रखने के लिए ही तो उठा रही

है और वह सचमुच मैत्री निभाने के लिए जान पर खेल रही है। तब उसे दुत्कारना अनैतिक होगा। यह दोस्त है, दुलहिन नहीं।

रोज़ी को अपने उत्पात पर अफसोस हुआ। वह तो ईर्ष्या में अपने को शूट ही कर लेती यदि भूतनाथ उसे न बचा लेता। एक तरह से उसका पुनर्जन्म हुआ है। रोज़ी पश्चाताप मे रोती रही। स्वस्थ होने पर उसने कमरा व्यवस्थित किया और भूतनाथ का इन्तज़ार करने लगी। अब वह पछतावे के कारण, प्रेम की पराकाष्ठा वाले मूड में थी।

जब भूतनाथ ने आकर बीमारी का बहाना बनाने का प्रस्ताव रखा तो वह चटपट मान गई और मैरी के समसाथ पर भी उसने आपत्ति न की। वह एकदम चीखी और बीमार बनकर गिर पड़ी, रोने लगी, हाहाकार मचाने लगी। मिस्टर शेफ को बुलाया गया। रोज़ी ने कहा कि उसका जी घबरा रहा है और वह उसके सामने उठकर वमन करने बाथरूम मे गई। वहां मुह मे अंगुलियां ठूस कर कै करती रही। लौटकर सिर पटकने लगी। उसने अविलम्ब न्यूयार्क लौटने की जिद की। मिस्टर शेफ ने कंधे उचकाए और भूतनाथ तथा मैरी के साथ उसे जाने की अनुमति दे दी।

न्यूयार्क सकुशल पहुंच कर भूतनाथ ने चैन की सास ली। न्यूयार्क में इमारतो की परस्पर होड को देखकर उसे लगा कि यह नगर भव्य बहुमंजिली भवनो की प्रदर्शिनी है। वह महानगर के दृश्यो मे खोया हुआ होटल मे आया और रोज़ी को उसके घर भेज दिया गया। भूतनाथ ने जब केलीफोनिया यात्रा का प्रस्ताव किया तो उसने वहां साथ चलने का आग्रह किया। लेकिन जब उसने कहा कि वह घर रहकर विवाह की तैयारी करे, वह यात्रा से लौटकर विवाह करेगा तो उसका उल्लास वापस आ गया। मैरी ने कहा कि वह रोज़ी के घर वालों को यह समाचार स्वयं देगी और उसने ऐसा ही किया भी। घर वाले उस लम्बे सरदार कर्नैलसिंह के वेष मे भूतनाथ को देखकर चकित हुए कि रोज़ी ने सरदार के साथ विवाह करना क्यों पसन्द किया पर वे क्या कर सकते थे? राज़ी हो गए और शादी के सरन्जाम मे लग गए। मैरी को, रोज़ी की सखी—मेड इन वेटिंग—बनाया गया। अब रोज़ी, मैरी के बिना एक क्षण नहीं रह पाती थी। उसने उसे भूतनाथ के साथ केलीफोनिया जाने पर रोक नहीं लगाई लेकिन एक-दो दिन के लिए उसे न्यूयार्क मे रोज़ी का साथ देना पड़ा।

हवाई जहाज़ से मैरी और भूतनाथ जब केलीफोर्निया पहुंचे तो वहा उस शहर मे बसन्त-ग्रीष्म का सुहावना मौसम था और उत्सवो का सिलसिला चल रहा था। एक कार्नीवाल में मैरी और भूतनाथ, मुखौटा लगाए निश्चिन्त मेले मे घूमते और हसते-खेलते रहे। उनका न कोई पीछा कर रहा था, न कोई अन्य झंझट था। हथियारों और तोड़-फोड की ट्रेनिंग देने वाले स्कूल के अधीक्षक से मैरी बात कर आई था और उन्हें कल वहा जाना था।

वह स्कूल चारों ओर से घिरी चारदीवारी के भीतर शहर से कुछ दूर वृक्षों के बीच मे बनाया गया था। इमारतों के आगे लम्बा मैदान था, जिसका एक अच्छाखासा भाग मडपनुमा था, छत से ढंका हुआ, ताकि कोई ऊपर से न देख सके कि वहा क्या हो रहा है। लगभग पचास-साठ एकड के इस सस्थान में फायरिंगरेंज या चादमारी का मैदान भी था। सारी व्यवस्था, सैनिक ढग की थी और वहा दसियों बार जाच-पड़ताल के बाद ही कोई भीतर जा पाता था। ऐसी ही जाच भीतर से बाहर आने पर होती थी। मैरी और भूतनाथ जब अधीक्षक के कार्यालय मे पहुचे तो उनसे खोजी सवाल दागे गए

लेकिन मैरी न्यूयार्क के एक बड़े आदमी की सिफारिश ले आई थी और यह कि कर्नैलसिंह सानेहवाल को प्रशिक्षण दिखाना जरूरी था क्योंकि वह पंजाब में गदर मचा सकता था जो अमरीकी जासूसी संस्थाएं चाहती थीं। मैरी स्वयं उसकी कार्यकर्मी थी, इससे अधीक्षक ने संतुष्ट होकर स्कूल का दर्शन कराना मान लिया।

स्कूल में कुछ सरदार भी प्रशिक्षण ले रहे थे। वहां विस्फोट करने, नदियों-रेलवे के पुल उड़ाने, कारखानों को ध्वस्त करने, जासूसी के हथकण्डे सिखाने, निशाना बांधने, तरह-तरह के हथियारों का प्रयोग करने, हवाई जहाजों का अपहरण करने आदि अनेक प्रकार के हमलों के प्रशिक्षण का प्रबन्ध था और यह स्कूल बिल्कुल व्यक्तिगत था। वहां भारी फीस लगती थी और एक बार प्रवेश तथा विश्वास प्राप्त कर लेने के बाद काफी आज़ादी थी।

भूतनाथ ने चाहा कि सरदारों से दोस्ती हो जाए। इसके लिए वह स्कूल के ब्यौरेवार निरीक्षण के बाद उनसे मिला। मरदानसिंह सरदार उनमें बहुत मुखर और निर्द्वन्द्व प्रकार का था। उसने कर्नैलसिंह से दिल खोल दिया क्योंकि मैरी ने उसके मिशन के विषय में यह बता दिया था कि वह भारत सरकार का तख्ता पलटना चाहता है और प्रधानमंत्री की हत्या के चक्कर में साथियों की खोज रहा है। मरदानसिंह खुश हो गया। उसने मैरी के दिए अधिकृत कागज़ों को ध्यान से पढ़ा और आश्वस्त हो गया कि कर्नैलसिंह सी० आई० ए० का एजेन्ट है। वह पाकिस्तान में हिन्दू पुलिस अफसर का हत्यारा है। अपने कनाडा में प्रीतमसिंह का घर बम से उड़ा दिया है और उसने अमृतसर में, जलंधर, लुधियाना और पटियाला में बैंक की कई डकैतियों, हत्याओं और हमलों में नेतृत्व किया है। उसने यह भी पढ़ा कि चण्डीगढ के प्रोफेसर तिवारी के कत्ल में भी उसका हाथ था। कर्नैलसिंह, इस तरह मरदानसिंह की नज़रों में चढ़ गया। वह उसे एकान्त में ले गया। वहां उसने अपने विश्वासपात्र दोस्त अर्जुनसिंह गुरुदासपुरवाले को भी बुला लिया और कर्नैलसिंह से परिचय कराया। मैरी को स्कूल में घूमने के लिए कह कर भूतनाथ उनसे सवाद में संलग्न हुआ, "सरदार कर्नैलसिंह। इधर कैसे आना हुआ जी?"

"वादशाहो! इन्दिरा, उस पंडित नेहरू की कुड़ी को हमने मारना है। उसकी पुलिस ने हमारे भाई को मरवा दिया और कह दिया कि वह अपराधी था, पुलिस के साथ, मुकाबले या एनकाउन्टर में मारा गया। मुझ पर खून सवार है और मुझे सिर्फ इन्दिरा गांधी की हत्या में दिलचस्पी रखने वाले बहादुरों की तलाश है "आप कुछ कर सकते हैं?"

होशियारपुर वाला मरदानसिंह इस तरह हंसा गोया, कर्नैल ने कोई बचकानी बात की हो। उसने अपने बैग से बोतल निकालकर व्हिस्की के तीन गिलास तैयार किए और 'इन्दिरा गांधी की हत्या' की एडवान्स खुशी में जाम टकराए। एक सांस में शराब पीकर वह मुस्कराया। मुंह के बाल साफ किए, मूछों पर ताव दिया और बोला, "कर्नैल-सिंह सानेहवाल। वो बच नहीं सकती, वह सिखों की दुश्मन, बच ही नहीं सकती।"

"लेकिन सरदार, कोई तरकीब तो करनी पड़ेगी न?"

"ओए अर्जुनसिंहा, बता दे यार, इस कर्नैलसिंहा को।"

नाम बिगाड़कर बोलने पर भूतनाथ के मन में आया कि इन दोनों जाहिलों के सिर टकरा दे लेकिन उसने जब्त किया। अर्जुनसिंह दबे स्वर में फुसफुसाया—"परधान मंतरी को खुले में, सभा और जलसों में नहीं मारा जा सकता क्योंकि अब बहुत सख्ती

सारे पत्ते एक बारगी क्यों दिखा दूं ?"

"क्योंकि मैं तुम्हारे अधीन हो गया हूं। ओह, मैरी, मैं तुम्हें कैसे धन्यवाद दूं

"ठीक है, ठीक है ...व्हाय दिस फारमैलिटी ? एम आय नॉट योर्स ...और रिकता क्यों ? क्या मैं आपकी नहीं हू ?"

"ओह, मैरी। मैं गुलाव और गुलवकावली के फूलों के बीच हूं। मुझे तो पसन्द हैं। मैं उनमे किसी को घट-बढ़ कर नही मान पाता, सच।"

"बट, यू कान्ट हैव वोथ—पर तुम दोनों को नही पा सकते।"

"मैं दोनो को पा रहा हू, एक पत्नी, एक मित्र, दोनों मुझ मे है, नही ?"

"हैं और नहीं भी यस एण्ड नो... यू माइट वी थिंकिंग दैट यू मस्ट वी अ आफ मैडीवल टायम्स सो दैट यू हैव वोथ आफ अज़। इजिन्ट इट ?"

"श्योर," भूतनाथ हंसा। "वाह ! मैं वादशाह होता तो फिर क्या बात थी ? चाह तो हो भी सकता था पर मुझे तो स्वतन्त्र और साहसिक होने में अस्तित्व साथकता लगी। मुझे वे वादशाह जो हरम रखते थे, मवेशीखाने के मालिक से लगते हैं आनन्द तो तब है, जब आकर्षण के कारण हम बधें। और कोई विचार न हो, कुछ ना न धन, न मान, न मर्यादा, न कुल, न शान, न स्वार्थ, सिर्फ शुद्ध व्यक्तित्व का आकर्षण वस वह फिर एक से हो या दो से। ज़ाहिर है कि वह असीमित नही होगा, ऐसे व्यक्ति मिलते कहा है, जिनमे न्यूनता न जान पड़ती हो, जो प्रिय और पूर्ण लगें ?"

भूतनाथ ने बताया कि हम सर्वत्र पूर्णता खोजते हैं और प्रेम की शक्ति यह है कि पूर्णता न होने पर भी हमे प्रिय मे पूर्णता दीखती है। जब तक प्यार है, तब तक कमी पर ध्यान ही नही जाता और जाता भी है तो वह दाल मे कंकड़-सा नहीं अखरता, दाल मे नमक-मिर्च-सा लगता है। मसाला-मिर्च-नमक ये तीखी चीजें हैं, कटु, कसैली और चरपरी लेकिन भोज्य पदार्थों के साथ इनके सयोग में ये स्वाद बढ़ाती हैं। इसी तरह व्यक्तियों मे यदि आकर्पण है, प्रवल और प्रगाढ़, तो उनकी न्यूनताएं मिर्च-मसाले की तरह सम्बन्ध को जायके बख़्शती है अन्यथा उन्हीं कमियों पर ध्यान जमा रहने से सम्बन्धों मे वेस्वादपन और टूट आ जाती है।

"मैरी। मैने बहुत सोचा है, मेरा ध्यान सिर्फ रोज़ी तक रहे पर वह नही रहता। कोई प्राकृतिक-प्रकार की खीच है, कोई कुदरती गुरुत्वाकर्पण—ग्रैवीटेशन है, शायद मेरी प्रकृति ही ऐसी है जो भी हो, वह है और मैं तुम्हारे प्रति जो कशिश महसूसता हू, उसे वयान नही कर सकता। रोज़ी का प्रेम तो भक्ति और अधिकार में बदल गया है, लेकिन तुम्हारा प्रेम भिन्न गुण रखता है। जो गुण तुम मे है, जो कौशल और करतब तुममे है वह अद्भुत है, मैरी। मैं उभयनिष्ठ व्यक्ति हूं, एकनिष्ठ नही और इसकी सज़ा भुगतने को प्रस्तुत हू।"

मैरी प्रभावित हुई। उसने भूतनाथ को मनोगति की सच्चाई को समझाया। उस पर अपनी अमिट छाप पाई। वह वोली—"मेरा अनुमान है कि यदि रोज़ी उन्माद की सीमा तक तुम्हें न चाहती, उसमे ठहराव होता, वह अधिक खुले दिमाग की होती तो...तो तुम उससे विवाह नही करते, उसे भी मित्र बनाकर रखते।"

"एक्जैक्टली। एकदम ठीक। वह प्रेम मे पागल है मैरी। वह जान दे देगी यदि मैंने उसको नही अपनाया, पत्नी के रूप मे। वह विवेक या ठहराव के भूगोल को छलांग कर तल्लीनता की तराई में पहुच चुकी है और उसमें महाभाव की जगह, वालभाव आ गया है। जैसे बच्चा उपेक्षा और अलगाव नही सह सकता, उसी तरह रोज़ी है...इससे,

विरोधी रंग के रूप में तुम हो, मैरी। जो तुम में है, उसमें नहीं है और जो उसमें है, तुममें है। उसकी शक्ति उसका मेरे प्रति पूर्ण समर्पण है, एक शिशु का निछावर हो जाना, अटच्ड हो जाना, इसलिए उसकी इच्छापूर्ति जरूरी है···मैरी, अभी मेरे दिमाग में एक योजना आई है। विवाह के बाद तुम भी भारत चलो, हम वहां प्राइवेट जासूस-एजेन्सी—भूतनाथ या मैरी-भूतनाथ के नाम से खोल सकते है, क्या विचार है?"

"विचार तो ठीक है, गुड सजेशन, मगर मैं भी किसी संस्था से बंधना नहीं चाहती, मैं भी तो एक कलाकार ही हूं न ··यह ऐयारी तो तुम्हारे लिए की है और इसमें मुझे डर है कि कहीं कुछ हो न जाए···न बाबा, मैं जासूसी का रोजगार नहीं करना चाहती···यों ही एडवेंचर—साहसिक काम के रूप में ठीक है। ठीक है न?"

दोनों हंसे और वेष बदलकर न्यूयार्क लौटे। भूतनाथ अपने मन में इतना मग्न रहा कि कब वहां से न्यूयार्क आए, कुछ अनुभव न हुआ। मैरी सतर्क रही कि कोई पीछा तो नहीं कर रहा है।

होटल आकर भूतनाथ ने कागजात व्यवस्थित किए। रोजी को फोन किया और मैरी को रोजी के घर भेजा। रोजी पक्षीवधू की तरह डाल पर बैठी जोड़े की प्रतीक्षा में बावली हो रही थी। अपने में उन्माद की वापसी पाकर वह पुनः उत्तेजित होने लगी। वह जानती थी कि अभी मैरी-भूतनाथ नहीं आए होंगे पर उसने होटल वालों को फोन पर फोन करके परेशान कर दिया। केलीफोर्निया में यदि उसे होटल का पता होता तो वहां भी वह यही करती। उसके मन में पुनः मैरी के प्रति ईर्ष्या उभरने लगी 'हाउ क्लैवर शि इज!' कितनी चालाक है। वह वहां जासूसी के बहाने आमोद-प्रमोद कर रही है और विवाह मेरे साथ हो रहा है। उसे अपनी मूर्खता पर क्रोध आया। वह अपनी हथेली पर मुक्कियां मारने लगी और उसका मन सिर को दीवाल पर पटकने का हुआ, तभी भूतनाथ का फोन आ गया।

"रोजी। डार्लिंग। वी आर हियर। मैरी इज कमिंग टू ड्रेस यू। नाउ यू कम एण्ड वी विल सैलेब्रेट द प्री-ईवनिंग आफ अवर यूनियन। आय किस यू माय डियर, कम···हम आ गए, मैरी तुम्हें सजाने आ रही है। अब आओ, हम विवाह की पूर्व संध्या मनायेंगे। मेरा प्यार लो और आ जाओ।"

उल्लास में रोजी का हृदय उछला, हाथ कांपे और आंखों में अश्रु उमडे। वह कुछ भी नहीं कह सकी। उसने सिर्फ "यः" "हां" कहा और फोन हाथ में पकड़े बैठी रह गई।

"आर यू ऑन लाइन, रोजी? व्हाय आर यू नॉट सेइंग एनीथिंग, स्टिल एंग्री?··· क्या तुम सुन रही हो रोजी? क्यों कुछ नहीं कह रही हो? क्रोध में हो क्या?"

रोजी का बदन थरथरा रहा था। उसने सिर्फ फोन पर चुम्बन की आवाज की और फोन रख दिया।

भूतनाथ समझ गया कि रोजी प्रेमदशा में है और वह खुशी से बोल नहीं पा रही है। वह मुस्कराया और उसने उस बहुमूल्य हार को निकाला जिसे उसने भारत में पाया था। वह इन्द्रधनुषी हार था और उसमें नौ रत्नों का ऐसा जड़ाव था कि वह बहुरंगी प्रभा बिखेरता था। वह जब उससे खेल रहा था, तरह-तरह से उसकी शोभा का आकलन कर रहा था तभी रोजी ने सन्ध्या की सुगंधित हवा के झोंके की तरह प्रवेश किया। भूतनाथ उसे देखता ही रह गया। उसके हाथों में जड़ाऊ हार था, और वह रोजी के सौन्दर्य और उसके मुख पर छाए अलौकिक भाव पर मुग्ध और विस्मित था। रोजी

आज सचमुच ताजा गुलाब थी। मैरी ने उसे भारतीय साड़ी और ब्लाउज़ पहनाया था जो गुलाबी था जिस पर सलमा सितारे थे जो बिजली की रोशनी में नक्षत्रों की तरह चमकते थे। रोज़ी के बाल कंधों पर पड़े थे और वे सुनहरी थे। सुनहरी रंग के घेरे में गुलाबी मुख और वस्त्र रोज़ी को अनोखी छवि दे रहे थे। उत्तम इत्र की गंध से रोज़ी महक रही थी और उसके स्वाभाविक रक्ताधर रह-रहकर हीरे की कनियों के सदृश दांतों को झलका रहे थे। वे अधर कुछ कहने को होते मगर भूतनाथ की तन्मयता देखकर फिर फड़क कर रह जाते।

भूतनाथ ने सौन्दर्य के जादू में बांधे हुए प्राणी की तरह रोज़ी के कंठ में हार पहनाया। हार के इन्द्रधनुषी रंगों ने रोज़ी को वस्तुतः अवर्णनीय बना दिया। रोज़ी को नज़र न लग जाए, इसलिए भूतनाथ ने नेत्र नीचे कर कहा—'रोज़ी। रोज़ी। ओह रोज़ी!"

दोनों दो तरह से आने वाली उग्र-व्यग्र नदी की धाराओं की तरह क्षणांश में एक दूसरे में समा गए। वाणी मूक हो गई। वे जादू के पुतलों से, देर तक, प्यार की तीव्रता में बहुरते रहे।

"रोज़ी। लैट अज़ गो नाउ फार अ राइड एण्ड सी द सिटी—हम अब घूमने चलें और शहर देखें।"

रोज़ी ने पलक झपकाए पर वह कुछ बोली नहीं। वह नारी-जीवन की चरम-भूमि में थी। उसे उसका मन-मित्र अततः मिल गया था और वह एक-एक क्षण को स्मृति में सहेज लेना चाहती थी। भूतनाथ ने उसे गुड़िया की तरह उठाया और लिफ्ट में ले आया। लिफ्ट में कोई नहीं था। इसलिए वहां भी वे दोनों एक-दूसरे से चिपके रहे। बाहर आकर भूतनाथ ने वातावरण को सूंघा। अपनी छठी इन्द्रिय को सुषुप्त पाकर भी उसने गौर से आसपास देखा और रोज़ी की कार का द्वार उसके लिए खोल दिया। रोज़ी, आज पता नहीं किस मूड में थी कि उसने धन्यवाद भी नहीं कहा। वह आगे की सीट पर भूतनाथ की बगल में बैठ गई। भूतनाथ ने कार को जगाया और मुख्य सड़क पर वह फर्राटे भरने लगा। रोज़ी कभी तो दृश्य निरखती और कभी भूतनाथ के कंधे पर झुक जाती।

भूतनाथ ने न्यूयार्क में इमारतों में ऊंचाई की स्पर्धा को अमरीकियों की महत्त्वाकांक्षाओं के प्रतीक की तरह समझा। क्या होड़ है, समृद्धि और शान की। सड़कों की चौड़ाई और स्वच्छता के साथ वह वाहनों की अनन्तता और गति की तीव्रता भी अमरीकी राष्ट्र के व्यक्तित्व की परिचायक सी प्रतीत हुई। रोज़ी इसी स्वतंत्र और समृद्ध समुद्र से ही तो लक्ष्मी की तरह उदित हुई है। उसने रोज़ी की तरफ दृष्टि डाली पर वह मुग्ध भाव में अपनी आत्मा के उच्चतम उल्लास को धीरे-धीरे अपने नयनों से विच्छुरित कर रही थी।

बहुत बार कहने पर रोज़ी प्रसिद्ध भवनों का नाम ले देती और पुनः अपने भीतर खिलने वाले बगीचों में विहार करने लगती। भूतनाथ समझ गया कि आज रोज़ी का भूमादिवस है, सब ओर से पूर्ण—फुलफिलमेन्ट, कहो कोई कसर नहीं। ऐसे में क्या कहने को रह जाता है सिवाय इसके कि व्यक्ति एक-एक आनन्दस्फुरण को आके और उसे अवचेतन के लॉकर में सुरक्षित करता चले। बोलने पर तो यह जो आनन्द की धरोहर रखने का कार्य है, स्थगित हो जाता है। वह मुस्कराया।

वे न जाने कब तक न्यूयार्क की प्रशस्त सड़कों पर घूमते रहे। भूतनाथ ने

रोशनियों के जितने विन्यास न्यूयार्क में बनते पाए उतने कहीं भी नहीं देखे थे। उस माया-नगरी में सब कुछ लोकोत्तर लगा। आखें शोभाओं को अंकित करते-करते थक जाएं और सौन्दर्य की चकाचौंध समाप्त न हो। वह एक खुशगवार ख्वाब था, जिसमें वह युगल विचरण कर रहा था और स्वयं भी स्वप्न की रचना में मग्न था।

सौन्दर्य और प्रेम की पराकाष्ठा में मनुष्य के प्राण विभोर होकर भी एक विचित्र वेदना का अनुभव करते हैं जैसे एक होकर भी दो अस्तित्व पृथक्-पृथक् होने की कसक महसूस करते हों। क्या किया जाए कि दो सत्ताएं अलग न रहें, शरीर शरीर में समाकर एक शरीरी बन जाएं और यह कि एक और अनुभूति होती है, ऐसे पलों में कि प्राण निकल जाएं तो शायद उस कसक से छुटकारा मिल जाए। यह जो सयोग में भी अस्तित्व की अलहदगी का एहसास है, वह प्राण देकर ही दूर हो सकता है। भूतनाथ ने रोजी को अपने पास खींचा और जानलेवा चुम्बन लिया, जिसमें प्राणों का अन्तिम आवेग भी उड़ेल दिया। ऐसा लगा जैसे देश, काल ठहर गया हो और मात्र यह परिज्ञान रह गया हो कि बस हम हैं, और सब जैसा है, वैसा ही है। इस तथता की भावना को भूतनाथ ने आज अनुभव किया, जिसमें अलग से किसी वस्तु या व्यक्ति की सत्ता आच्छादित नहीं करती, जो जैसा है, वह वैसा है, बस यही तथता या 'दैटनेस' का बोध चेतना में रह जाता है और सब गायब हो जाता है।

भूतनाथ तथता के बोध से जब जगा, तो अचानक उसकी छठी इन्द्रिय उत्तेजित हुई और उसे भय की उपस्थिति जान पड़ी। पहले तो वह यह समझा कि यह भी उसकी अनुचिंतना का परिणाम है लेकिन भूतनाथ को कभी धोखा न देने वाली उसकी अंतर्दृष्टि ने उसे बताया''''खतरा है'। उसने दर्पण में देखा कि उसके पीछे वही डरावना सरदार आ रहा है। अब वह तथता को परे ठेल कर सावधान हो गया और पूरी तरह पहचान के लिए उसने कार की गति बढ़ा दी। एक झटका लगा, रोजी ने आखें खोलीं। भूतनाथ मुस्कराया। रोजी ने कंधे पर सिर रखकर पुनः नेत्र बन्द कर लिए।

भूतनाथ ने कार को और गति दी। अब आगे सड़क अपेक्षाकृत वाहनहीन थी। उसने पाया कि पीछे की कार उसके पीछे ही लगी है और उसमें वही डरावना दानवनुमा सरदार डटा हुआ है। भूतनाथ ने सोचा कि शहर से बाहर जाने में तो खतरा है और रोजी साथ है। उसे सावधान कर देने पर उसका मनोराज्य मिट जाएगा अतः उसने सरदार की चुनौती को इस हालत में भी स्वीकार किया। आगे के चौराहे पर उसे रुकना पड़ा। तेज रोशनी में उसने पुनर्पुष्टि की कि वही कनाडावाला दैत्य है और हो न हो, इसे मिस्टर टोफ ने ही मेरी हत्या या अपहरण के लिए पीछे लगाया है।

भूतनाथ ने लाइन साफ होने पर दूसरी तरफ मुड़ने का इशारा किए बिना अचानक जिधर से वह आया था, दूसरी सड़क पर, उधर कार मोड़ ली और पूरी तेजी से कार चलाने लगा। जाहिर था कि सरदार को उसे पकड़ने में कुछ समय लगेगा। इसलिए यहीं एक अवसर था। भूतनाथ ने रोजी के सिर को प्रेम से थपथपाया और रिवाल्वर निकाल कर पास रख लिया। उसने कार को आगे चलकर एक उपमार्ग पर सहसा मोड़ लिया। भयकर सरदार मतिभ्रम में पड़ गया कि भूतनाथ किधर चला गया। मुख्य सड़क पर या तो ट्रैफिक में हाथ देकर मुड़ो या सीधे भागते रहो। मुख्य सड़क पर रुक कर सोच-विचार सम्भव नहीं, सो सरदार को आगे ही भागना पड़ा। भूतनाथ ने कार मोड़कर पुनः मुख्य मार्ग पर सरदार की कार के पीछे की दिशा में दौड़ा दी। वह अब इस दानव-सरदार का सामना करने का संकल्प कर चुका था।

कुछ समय बाद सरदार की कार दिखाई दी। वह गुस्से में था, यह साफ था क्योंकि वह बिना सिर को खिड़की के बाहर निकाले बार-बार पीछे और कभी शीशे में ताक-झांक कर रहा था। भूतनाथ को साहसिकता का रोमांच हुआ और उसने कुछ दूरी रहते हुए गति कायम रखी। भूतनाथ ने दर्पण में देखा कि एक और कार उसके पीछे लगी हुई है और उसमें भी एक पहलवान गैरसरदार बैठा हुआ है। अब भूतनाथ ने खतरे को चरम सीमा पर पहुंचता पाया। तभी पीछे से गन से सन्नाती हुई गोली निकली और भूतनाथ यदि सिर पीछे न कर लेता तो उसकी खोपड़ी में छेद हो जाता। भूतनाथ मुस्कराया। अब निश्चित हो गया कि खतरा दोनों तरफ से है। रोजी इस आक्रमण से घबरा गई। भूतनाथ ने जल्दी-जल्दी उसे स्थिति बता दी और सीट पर आराम से लेट जाने को कहा। यह भी कि वह भी अपनी गन निकाल ले और उसके संकेत पर वार करे।

अचानक डरावने सरदार ने गाड़ी की गति धीमी कर दी। भूतनाथ की कार पीछे ही थी। सरदार ने ब्रेक मारा तो रोकते-रोकते भी भूतनाथ की कार उससे टकरा गई। पीछे की कार ने ब्रेक नहीं मारा, इसलिए उसने भी भूतनाथ की कार को धक्का दिया। भूतनाथ के इशारे पर रोजी चैतन्य हो गई और वह खिड़की खोलकर कार के पास नीचे सरक गई। भूतनाथ भी कार को बन्द कर नीचे आ गया। उसने डरावने सरदार की कार के पहिए पर चोट की। उधर रोजी ने पीछे की कार को पंचर कर दिया। दोनों ओर से गोली चली मगर रोजी और भूतनाथ बच गए। वे सरदार और पीछे के पहलवान के कारों से उतरने का इन्तजार कर रहे थे। ट्रैफिक जाम हो गया था और किसी भी क्षण पीछे से दौड़ते-चीखते लोग आ सकते थे। यह बात भूतनाथ के पक्ष में थी और शत्रु के विपक्ष में अतः वे दोनों शूरवीर फुरती से खिड़की खोलकर उतरे और ओट लेने के लिए झुकते हुए सरके। तभी भूतनाथ का अचूक निशाना डरावने सरदार पर पड़ा। वह जोर से डकारा और ढेर हो गया किन्तु पीछे के पहलवान पर रोजी की गोली का कोई असर नहीं हुआ। तीनों अदृश्य, अपनी-अपनी कारों से चिपके हुए थे। भूतनाथ ने पीछे की कार की ओर सरकना शुरू किया किन्तु वह पहलवान जमीन पकड़ गया था और सिर नहीं उठा रहा था। जब तक पुलिस आए, फैसला होना था पर पहलवान कोई हरकत नहीं कर रहा था। इसी क्षण रोजी ने गलती कर दी। उसने जरा सा सिर निकाल कर पीछे देखा, फौरन गोली पड़ी और वह चीख कर धराशायी हो गई। भूतनाथ ने पहलवान की जगह भाप ली और फायर कर दिया। पहलवान दर्द से चीखा और गिर गया। भूतनाथ ने पास जाकर देखा कि पहलवान उठने की कोशिश में है। उसने उसे खत्म नहीं किया ताकि पुलिस पूछताछ कर सके, मगर उसके पैरों और हाथों को बेकार कर दिया। फिर वह दौड़कर घायल सरदार की ओर सरका। सरदार अजगर की तरह खून फेंकता हुआ भूतनाथ की कार की तरफ खिसक रहा था और उसके दायें हाथ में गन थी, बाएं से वह छाती के घाव को दाबे हुए था। सरदार दो-तीन गोलियां खाकर ठण्डा हो गया लेकिन यहां भी भूतनाथ ने ख्याल रखा कि वह मरे नहीं ताकि पता चल सके कि वह कौन है?

अब भूतनाथ रोजी की तरफ लपका। वह रक्त में लथपथ अचेत पड़ी थी और उसकी आंखें टंग गई थीं। भूतनाथ ने उसकी नब्ज देखी, वह ठण्डी थी और हृदय की धड़कन भी बन्द हो चुकी थी। पहलवान की गोली से रोजी का सिर फट गया था और रक्त से उसका शृंगार और अधिक गुलाबी हो गया था।

"रोज़ी, ओह रोज़ी ! यू कान्ट गो अवे लायक दिस, रोज़ी। रोज़ी। रोज़ी।"

लाश क्या जवाब देती ? भूतनाथ पराजित सा रोज़ी को गोद में लिए बैठा था और घाव पर कुछ बांधने के लिए झोला खोल रहा था। तभी पुलिस सायरन बजा, पीछे से लोग भी आ गए।

रोज़ी के शव तथा उन दोनों हत्यारों के घायल शरीरों को पुलिस ने कब्जे में लिया और कारों सहित पूरा काफिला पुलिस थाने पर पहुंचा। पहले तो पुलिस ने भूतनाथ को नहीं समझा पर कागज दिखाने पर उसे मरी को फोन करने की अनुमति मिली। उसके आ जाने के बाद मिस्टर शेफ भी आ गए। उसने भूतनाथ को सांत्वना भी दी पर भूतनाथ तो आपे में ही नहीं था। वह रिक्त आखों से रपट और पूछताछ की प्रक्रिया में से गुजरता रहा। उसमें न क्रोध था, न रुदन, एक वितृष्णा सी थी और एक सिसियाहट। मैरी ने सब सभाल लिया। उसने और मिस्टर शेफ ने भूतनाथ को अपनी जिम्मेदारी पर छुड़ाया और रोज़ी की लाश पोस्टमार्टम के लिए भेज दी गई। उसके घर वालों के चीत्कार और मैरी के विषाद में, भूतनाथ जड़वत् बैठा रहा।

पुलिस की कार्यवाही में भूतनाथ की कोई रुचि न थी। वह मैरी से एक ही सवाल पूछता था कि हत्यारों को किसने भेजा ?

कई दिन तक भूतनाथ का संताप किसी तरह कम नहीं हुआ। वह न्यायालय जाता मगर गुमसुम रहता और होटल आकर मैरी के पास बैठकर खामोशी और गम में गर्क रहता, न कुछ ढंग से खाता, न पहनता। उसके पागलपन को देखकर अन्त में मैरी ने रहस्य बता ही दिया कि मिस्टर शेफ के आदेश पर ही उस पर हमला हुआ है और रोज़ी तो गेहूं के साथ घुन की तरह पिस गई है।

यह खबर पाते ही भूतनाथ सहज हो गया और वह एक खोखली हंसी हंसा, हंसता रहा। मैरी को उसने रहस्य बताने के बाद स्नेह से देखा और पहली बार वह उसको बांहों में लेकर रोया भी। बाद में उसने उसी मूड में, एकदम स्वाभाविक होकर कहा कि वह अब यहां नहीं रह सकता और न यहां मैरी को रहने देगा। दोनों को सी० आई० ए० के एजेन्ट मार के मानेंगे। इसलिए मैरी को, जिद करके, अपनी सौगंध दिला कर, प्रेम का वास्ता देकर, उसने हवाई जहाज से, छद्मनामों से दो टिकट आरक्षित कराने भेजा और जब तक टिकट नहीं आ गए, वह कमरे में पागलों की तरह चक्कर काटता रहा। मैरी से उसकी दशा देखी नहीं जाती थी। उसे सुलाने के सौ-सौ उपाय मैरी ने किये पर उसे न नींद थी, न भूख। वह पत्थर की मूरत की तरह बस बैठा ताका करता और मैरी के आदेशों का दास बच्चे की तरह पालन कर देता तथा पुनः अपने चिन्तनगर्त्त में डूब जाता। लेकिन टिकट हाथ में आते ही उसके चेहरे की चमक वापस हो गई। मैरी उसकी हालत से संत्रस्त थी और किसी दुःखान्त घटना की आशंका से सिहर रही थी।

गुप्त यात्रा के सारे ब्योरे भूतनाथ ने बड़ी उत्सुकता और रुचि से निश्चित किये और सारे सामान ध्यान से दुरुस्त किये। उसकी एक-एक बात को बारीकी में जाकर यात्रा को धर्मक्रिया की तरह करने की प्रवृत्ति देखकर मैरी को डर सा लगता था कि इसकी वह मस्ती और लापरवाही कहां चली गई ?

बड़ी भोर, यात्रा के दिन मैरी को होटल छोड़ कर भूतनाथ मिस्टर शेफ से मिलने गया। शेफ ने उसके शोक के प्रति सहानुभूति प्रकट की और कहा कि भूतनाथ उसे गलत न समझे। जो हुआ, उसपर उसका कोई बस नहीं था। भूतनाथ ने प्रश्न किया—"अगर आपको मुझ पर शक था तो आपने मुझे अपनी सफाई का मौका क्यों

नही दिया ? आपने इन हत्यारों को मेरे पीछे लगा दिया सो भी उस दिन, जिसकी दूसरी भोर रोज़ी का विवाह होने वाला था। आप में क्या कोई मानवीय भावनाए नही हैं ? आप हमे एक-दो दिन के बाद भी मरवा सकते थे।"

मिस्टर शेफ काफी देर तक सोचता रहा। भूतनाथ की हालत देखकर वह पिघल गया। उसने बताया—"तुम डबल एजेन्ट हो मिस्टर गोस्ट, हो न ? तुम्हारा जिन्दा रहना अमरीका के हित में नही है ?"

"यानी, भारत के हित मे है, भारतीय जनक्रान्ति के हित मे भी ? तुम मुझे मार डालते तो यह जासूसी कृत्य होता पर तुम्हारे आदमी ने मेरी रूह को खत्म कर दिया। तुम जानते थे कि रोज़ी मुझसे प्रेम करती थी और उन्माद की सीमा तक मुझे चाहती थी। उसके खून का बदला मैं लूगा। तभी मै उसका ऋण अदा कर सकता हूं। तुम अपने ईश्वर को स्मरण करो बुड्ढे शैतान, मैं तुम्हें किसी और रोज़ी को बरबाद करने के लिए जीवित नही छोड़ूंगा।"

मिस्टर शेफ ने रिवाल्वर निकाला जिसे भूतनाथ ने झपटकर छीन लिया और एक सधा हुआ हाथ शेफ की गरदन पर मारा। उसकी गरदन की हड्डी टूट गई लेकिन भूतनाथ ने उसके कण्ठ को तब तक घोटा जब तक उसके मरने के विषय में वह निश्चित नही हो गया। उसने चिह्न मिटाए, हाथ धोए और शेफ की लाश को चारपाई पर डालकर उस पर एक चद्दर उढ़ाई और किवाड़ लगाकर, ताला जड़कर वह वापस होटल मे आया। अब वह सामान्य था। गोया उसने किसी काटते कीड़े को मसल दिया हो और तकलीफ से मुक्त हो गया हो।

उसने मैरी को कुछ नही बताया। वह मैरी को स्नेह की दृष्टि से देखता रहा। वह मैरी के साथ वेष बदल कर हवाई जहाज पर चढ़ा और सहज ढंग से सीट पर बैठ गया। मैरी ने देखा, कर्नलसिंह सानेहवाल की जगह अब भूतनाथ असली रूप में है। उसने केश कटवा दिए थे और वह अरबी लबादे में था जैसा उसने आरक्षण मे लिखवाया था। जब हवाई जहाज़ उड चला तो भूतनाथ हंसा। वह स्वाभाविक हो गया और उसने मैरी के कान मे कहा कि उसने रोज़ी के हत्यारे, मिस्टर शेफट्सबरी, उस बूढ़े लोमड़ का गला घोंट दिया है। मैरी चकित और भयभीत दृष्टि से भूतनाथ को देखती रह गई। फिर वह बेपनाह हंसी ताज्जुब से। जब भूतनाथ ने उसे हेरा तो उसने बताया कि लड़ाई तो अब छिड़ी है। अब सी० आई० ए० के एजेन्ट हमे छोड़ने वाले नही है। अब तक मिस्टर शेफ के कत्ल का भण्डाफोड़ हो चुका होगा और वह अमरीकी गुप्तचर एजेन्सी को धोखा देकर भूतनाथ को भेद दे चुकी है, इसलिए हमें अब वे नही छोड़ सकते। भूतनाथ ने ऐयारी मुद्रा मे उससे पूछा कि वह चलते-चलते कुछ और लाई है क्या ?

मुस्कराकर मैरी ने उसे एक लिफाफा दिया, जिसमें प्रधान मन्त्री की हत्या या मृत्यु के बाद क्या हालत होगी, इसका अध्ययन था। भूतनाथ ने एक राजनीतिक शास्त्री की इस रपट को पढा और एक व्यंग्यमय हास के साथ कहा—"अमरीका मे ऐसे बिके हुए बुद्धिजीवी कितने प्रतिशत होंगे ?"

"बहुत से है, ऐसी बिकाऊ बुद्धिया हर देश मे हैं।"

"तो मैरी, अब हम सिक्ख-फासिस्टो, पाकिस्तानियो तथा एक ग्रुप के क्रान्तिकारियो और सी० आई० ए० की हिटलिस्ट मे हैं ?"

"यः माय गोस्ट ! वट डोंट वरी···हा, भूत। पर चिन्ता मत करो।"

"डोन्ट लीव मी मैरी, लाइक रोज़ी, आय विल नॉट सरवायव विदाउट यू। यू,

आर माय लास्ट रिफ्यूज—मैरी, रोज़ी की तरह मुझे छोड़कर मत चली जाना। मैं अब तुम्हारे बिना बचूंगा नहीं, तुम मेरी अन्तिम शरण हो।"

मैरी ने भूतनाथ के हाथ पर थपकी दी और पलकें झपकाईं। रोज़ी की याद में भूतनाथ की आंखों में आंसू भर आए। उसने मैरी का हाथ कस कर पकड़ लिया।

हवाई जहाज़ की भनभन और भर्राहट के मध्य दोनों के हृदय भी गरम इंजिनों की तरह सनसना रहे थे।

35

1, सफदरगंज रोड पर, प्रधानमंत्री के बंगले के गोपनीय कक्ष में मिस्टर पीटर्सन, भूतनाथ और मैरी बैठे हुए हैं। शाम को लगभग साढ़े सात का समय है और मई माह की गर्मी रंग दिखाने लगी है। भूतनाथ अपने कागज़ों से फूले हुए झोले को बगल में दाबे चुपचाप बैठा है। थोड़ी देर के बाद प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सादा वस्त्रों में आईं और विलम्ब के लिए क्षमा मांग कर प्रसन्न भाव से बैठ गईं और आदर के लिए खड़े हो गए आगुंतकों को उन्होंने आसीन होने का संकेत किया।

भूतनाथ ने देखा कि प्रधानमंत्री पर वार्धक्य का असर हो चुका है, उनके काले बालों के बीच सफेद बालों की लकीर चौड़ी हो गई है, शरीर वैसा ही दुबला-पतला है, चेहरे पर झुर्रियों की छाप पड़ने लगी है तथापि उनके मुख पर तेज वही है। सत्ता और अधिकार के अहसास से, हमेशा औरों पर हुक्म चलाते रहने और साठ-सत्तर करोड़ लोगों के देश के दर्प और स्वाभिमान की रक्षा के लिए हर हालत में गर्वीले बने रहने के दायित्व के कारण प्रधानमंत्री के चेहरे पर सर्वोच्च शक्ति की अनुभूति से उपजा तेवर था। तो भी वह अपने को शालीन और सहज बनाए रखने में तत्पर रहती थीं किन्तु चुनौती देने और ज़रा सी भी बेअदबी करने पर वह अग्नि की तरह दहकने लगती थीं।

उनके चेहरे की छवि में, बनावट में पंडित नेहरू का प्रतिबिम्ब झलकता सा लगता गोया वह इतिहास और वर्तमान को एक साथ सहेजे हुए हों। वह जैसे देश, दुनिया, अपने परिवार और अपनी स्थिति और नियति की निगरानी कर रही थीं किन्तु अभी तक उनमें न थकावट थी, न वितृष्णा, न अनवधानता थी। वह अत्यन्त जागरूक और साथ ही सहज थीं।

भूतनाथ ने सोचा, यह वह व्यक्तित्व है, जो देश को एटलस की तरह ढो रहा है, पर साथ ही वह जनगण की दुरावस्था का भी कारण है। जो ढांचा बनाया गया है, गणतंत्र का, राष्ट्रवाद का, उसे उग्र विरोध के बावजूद चलाये जा रहा है लेकिन व्यक्तिवाद, भ्रष्टाचार, दमन और दुर्नीति का सैलाब भी विकास के साथ बढ़ा है। यह वही व्यक्तित्व है जो व्यवस्था और कानून की रक्षा के लिए, जनसमस्याओं का समाधान न होने पर वर्ग-वर्चस्व से जनगण के दबे रहने से उत्पन्न आक्रोश और विद्रोह को भयंकर निर्ममता से दबाता है और साथ ही 'समाजवाद' के नारे से हर बार वोट बटोर लेता है।

भूतनाथ के शरीर में कांटे से चुभने लगे।

भूतनाथ ने यह भी सोचा कि यह वही व्यक्तित्व है, जो जनगण को परस्पर

नही दिया ? आपने इन हत्यारों को मेरे पीछे लगा दिया सो भी उस दिन, जिसकी दूसरी ओर रोज़ी का विवाह होने वाला था। आप में क्या कोई मानवीय भावनाए नही हैं ? आप हमें एक-दो दिन के वाद भी मरवा सकते थे।"

मिस्टर शेफ काफी देर तक सोचता रहा। भूतनाथ की हालत देखकर वह पिघल गया। उसने बताया—"तुम डवल एजेन्ट हो मिस्टर गोस्ट, हो न ? तुम्हारा जिन्दा रहना अमरीका के हित मे नही है ?"

"यानी, भारत के हित मे है, भारतीय जनक्रान्ति के हित में भी ? तुम मुझे मार डालते तो यह जासूसी कृत्य होता पर तुम्हारे आदमी ने मेरी रूह को खत्म कर दिया। तुम जानते थे कि रोज़ी मुझसे प्रेम करती थी और उन्माद की सीमा तक मुझे चाहती थी। उसके खून का वदला मैं लूगा। तभी मैं उसका ऋण अदा कर सकता हूं। तुम अपने ईश्वर को स्मरण करो वुड्ढे शैतान, मैं तुम्हें किसी और रोज़ी को वरवाद करने के लिए जीवित नही छोड़ूंगा।"

मिस्टर शेफ ने रिवाल्वर निकाला जिसे भूतनाथ ने झपटकर छीन लिया और एक सधा हुआ हाथ शेफ की गरदन पर मारा। उसकी गरदन की हड्डी टूट गई लेकिन भूतनाथ ने उसके कण्ठ को तव तक घोंटा जव तक उसके मरने के विषय मे वह निश्चित नही हो गया। उसने चिह्न मिटाए, हाथ धोए और शेफ की लाश को चारपाई पर डालकर उस पर एक चद्दर उढ़ाई और किवाड़ लगाकर, ताला जडकर वह वापस होटल मे आया। अब वह सामान्य था। गोया उसने किसी काटते कीड़े को मसल दिया हो और तकलीफ से मुक्त हो गया हो।

उसने मैरी को कुछ नही वताया। वह मैरी को स्नेह की दृष्टि से देखता रहा। वह मैरी के साथ वेष बदल कर हवाई जहाज पर चढा और सहज ढंग से सीट पर वैठ गया। मैरी ने देखा, कर्नलसिंह सानेहवाल की जगह अब भूतनाथ असली रूप में है। उसने केश कटवा दिए थे और वह अरवी लवादे मे था जैसा उसने आरक्षण मे लिखवाया था। जब हवाई जहाज उड़ चला तो भूतनाथ हंसा। वह स्वाभाविक हो गया और उसने मैरी के कान मे कहा कि उसने रोज़ी के हत्यारे, मिस्टर शेफट्सवरी, उसे वूढ़े लोमड़ का गला घोट दिया है। मैरी चकित और भयभीत दृष्टि से भूतनाथ को देखती रह गई। फिर वह बेपनाह हंसी ताज्जुव से। जब भूतनाथ ने उसे हेरा तो उसने वताया कि लडाई तो अव छिड़ी है। अव सी० आई० ए० के एजेन्ट हमे छोड़ने वाले नही हैं। अव तक मिस्टर शेफ के कत्ल का भण्डाफोड़ हो चुका होगा और वह अमरीकी गुप्तचर एजेन्सी को धोखा देकर भूतनाथ को भेद दे चुकी है, इसलिए हमे अब वे नही छोड़ सकते। भूतनाथ ने ऐयारी मुद्रा मे उससे पूछा कि वह चलते-चलते कुछ और लाई है क्या ?

मुस्कराकर मैरी ने उसे एक लिफाफा दिया, जिसमे प्रधान मन्त्री की हत्या या मृत्यु के वाद क्या हालत होगी, इसका अध्ययन था। भूतनाथ ने एक राजनीतिक शास्त्री की इस रपट को पढा और एक व्यंग्यमय हास के साथ कहा—"अमरीका मे ऐसे बिके हुए बुद्धिजीवी कितने प्रतिशत होंगे ?"

"वहुत से है, ऐसी विकाऊ वुद्धियां हर देश में हैं।"

"तो मैरी, अब हम सिक्ख-फासिस्टों, पाकिस्तानियो तथा एक ग्रुप के क्रान्तिकारियों और सी० आई० ए० की हिटलिस्ट मे हैं ?"

"यः माय गोस्ट ! वट डोंट वरी···हां, भूत। पर चिन्ता मत करो।"

"डौन्ट लीव मी मैरी, लाइक रोज़ी, आय विल नॉट सरवायव विदाउट यू। यू,

आर माय लास्ट रिफ्यूज—मैरी, रोजी की तरह मुझे छोड़कर मत चली जाना। मैं अब तुम्हारे बिना बचूंगा नहीं, तुम मेरी अन्तिम शरण हो।"

मैरी ने भूतनाथ के हाथ पर थपकी दी और पलकें झपकाई। रोज़ी की याद में भूतनाथ की आंखों में आंसू भर आए। उसने मैरी का हाथ कस कर पकड़ लिया।

हवाई जहाज की भनभन और भर्राहट के मध्य दोनों के हृदय भी गरम इंजिनों की तरह सनसना रहे थे।

35

1, सफदरगंज रोड पर, प्रधानमंत्री के बंगले के गोपनीय कक्ष में मिस्टर पीटर्सन, भूतनाथ और मैरी बैठे हुए हैं। शाम को लगभग साढ़े सात का समय है और मई माह की गर्मी रंग दिखाने लगी है। भूतनाथ अपने कागजों से फूले हुए झोले को बगल में दाबे चुपचाप बैठा है। थोड़ी देर के बाद प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी सादा वस्त्रों में आईं और विलम्ब के लिए क्षमा मांग कर प्रसन्न भाव से बैठ गईं और आदर के लिए खड़े हो गए आगुंतकों को उन्होंने आसीन होने का संकेत किया।

भूतनाथ ने देखा कि प्रधानमंत्री पर वार्धक्य का असर हो चुका है, उनके काले बालों के बीच सफेद बालों की लकीर चौड़ी हो गई है, शरीर वैसा ही दुबला-पतला है, चेहरे पर झुर्रियों की छाप पड़ने लगी है तथापि उनके मुख पर तेज वही है। सत्ता और अधिकार के अहसास से, हमेशा औरों पर हुक्म चलाते रहने और साठ-सत्तर करोड़ लोगों के देश के दर्प और स्वाभिमान की रक्षा के लिए हर हालत में गर्वीले बने रहने के दायित्व के कारण प्रधानमंत्री के चेहरे पर सर्वोच्च शक्ति की अनुभूति से उपजा तेवर था। तो भी वह अपने को शालीन और सहज बनाए रखने में तत्पर रहती थीं किन्तु चुनौती देने और जरा सी भी बेअदबी करने पर वह अग्नि की तरह दहकने लगती थीं।

उनके चेहरे की छवि में, बनावट में पंडित नेहरू का प्रतिबिम्ब झांकता सा लगता गोया वह इतिहास और वर्तमान को एक साथ सहेजे हुए हों। वह जैसे देश, दुनिया, अपने परिवार और अपनी स्थिति और नियति की निगरानी कर रही थीं किन्तु अभी तक उनमें न थकावट थी, न वितृष्णा, न अनवधानता थी। वह अत्यन्त जागरूक और साथ ही सहज थीं।

भूतनाथ ने सोचा, यह वह व्यक्तित्व है, जो देश को एटलस की तरह ढो रहा है, पर साथ ही वह जनगण की दुरावस्था का भी कारण है। जो ढांचा बनाया गया है, सर्वंगीय जनतंत्र का, राष्ट्रवाद का, उसे उग्र विरोध के बावजूद चलाये जा रहा है लेकिन व्यक्तिवाद, भ्रष्टाचार, दमन और दुर्गति का सैलाब भी विकास के साथ बढ़ा है। यह वही व्यक्तित्व है जो व्यवस्था और कानून की रक्षा के लिए, जनसमस्याओं का समाधान न होने पर वर्ग-वर्चस्व से जनगण के दबे रहने से उत्पन्न आक्रोश और विद्रोह को भयंकर निर्ममता से दबाता है और साथ ही 'समाजवाद' के नारे से हर बार वोट बटोर लेता है।

भूतनाथ के शरीर में कांटे से चुभने लगे।

भूतनाथ ने यह भी सोचा कि यह वही व्यक्तित्व है, जो जनगण को परस्पर

भिडाता है, चुनाव में अकरणीय करता है, जनता की वफादारी और आर्थिक सहयोग न मिलने से बुर्ज्वा वर्ग से धन बटोरता है और जब क्षेत्र क्षेत्र से, धर्म धर्म से, दक्षिण उत्तर से, भाषा भाषा से तथा दल दल से टकरा जाते हैं, तो राष्ट्र की रक्षा के तर्क से चुनाव जीत जाता है और दमन का अधिकार झाड़ लेता है।

शायद, व्यवस्था और व्यवस्था के प्रेरक आदर्श और विचारधारा ही ऐसी है कि यह व्यक्तित्व उस व्यवस्था और विचारधारा—राष्ट्रवाद और पूंजीवाद का माध्यम है और ऐसा ही करने को विवश है। उसकी यही नियति है कि वह यही करे और देश का बहुसख्यक जन इसी दलदल मे फंसा रहे। जनराज्य की जगह मध्यवर्ग के अभिजनो का आधिपत्य बना रहे जो सर्ववर्ग समभाव और सर्व धर्म समभाव की नीति पर चलकर वैषम्य और मजहबी मानसिकता को बनाए रहे।

फिलहाल भूतनाथ को देश की सुरक्षा को प्राथमिकता देनी है अन्यथा वह इस दरबार मे नही आता पर लाचारी है। उसने अपने थैले को थपथपाया और संवाद शुरू करने के लिए भारतीय गुप्त संस्था, 'रा' के निदेशक पीटर की ओर देखा।

"मैडम। यह है भूतनाथ···आपने नाम तो सुना होगा?"

"ओह। तो आप हैं, मिस्टर गोस्ट, कर्नलसिंह सानेहवाल और न जाने क्या-क्या? भूतनाथ जी, आप सचमुच है या देवकीनन्दन खत्री के उपन्यासों से निकल कर यहा विचर रहे है?"

प्रधानमंत्री खूब हंसी। भूतनाथ ने कहा—"यथार्थ तिलिस्म से कम भेद भरा नही है। लोगो के चेहरों पर चेहरे हैं, मुखौटों पर मुखौटे, रहस्य मे रहस्य, चक्करो मे चक्कर, व्हील्स विदिन व्हील्स,···इसलिए मुझे तो अभी भी लगता है कि मैं एक तिलिस्म मे हूं और इसे तोड़ना है।"

प्रधानमंत्री ने बात के गाभीर्य को समझा। वह सोचती रही पर विनोद लाकर कहने लगी—"गदाधरसिंह जी। मैं आपसे सहमत हूं। पर परिस्थितियां ऐसी हैं कि यथार्थ सरलीकृत नही हो सकता और तिलिस्म के बिना तिलिस्म टूटता नही, फिलहाल तो हम आपकी ऐयारी समझना चाहते है। पीटर, भूतनाथ जी का जादुई थैला खोला जाए।"

भूतनाथ ने अनेक दस्तावेज, पत्र और रपटें निकाली।

"भूतनाथ जी। यह हम पढ़ेंगे। पीटर ने देखा ही होगा। हमारे पास समय कम है। विदेश के बड़े-बड़े लोगो के साथ डिनर पर जाना है। आप मुख्य निष्कर्ष बता दें और सलाह भी दें कि हम क्या करें?"

भूतनाथ ने सक्षेप मे सब बताया और कहा कि निष्कर्ष ये है कि देश को साम्राज्यवादी शक्तिया और सरकारें विघटित कराने के लिए सिक्ख-सिरफिरों को पाकिस्तान-लन्दन-कनाडा-अमरीका आदि मे प्रशिक्षित करा रही हैं। योजना यह है कि पजाब, कश्मीर और उत्तर-पूर्वी राज्य खुदमुख्तार हो जाएं···इस वक्त मुख्य खतरा आपको है।

"मुझे? पर मुझे मार कर वे देश को नही मार सकते।"

"मैं जानता हू पर आपके न रहने से गदर फैल सकता है, विदेशी हस्तक्षेप हो सकता है।"

"तो मैं क्या करूं?"

"आप सुरक्षा-प्रबन्ध मानें और किसी सिक्ख को गार्डों में न रहने दें···चाहे वह

कितना ही विश्वसनीय क्यों न हो। दूसरा यह कि आप किसी हालत में हरमंदिर साहब पर सैनिक अभियान न करें।"

"लेकिन गदाधरसिंह जी। आप जानते हैं कि स्वर्ण मंदिर को पृथक्‌तावादियों ने हथियारों से भर दिया है, कोई सरकार इसे कब तक अनदेखा करे?"

"आप कोई और तरकीब करें···यह आपका काम है···वैसे मैं यह कर सकता हूं, क्यों पीटर साहब?"

"हां, हो सकता है, स्वर्ण मंदिर में दो-चार हजार ही तो उग्रवादी होंगे···पर, यह काम सरकार का है, वही निर्णय लेगी।"

"ठीक है"—भूतनाथ बोला, "पर मेरे दो ही निष्कर्ष हैं और ये ही परामर्श हैं। तीसरा यह भी है कि आपके सचिवालय और पीटर साहब के चिराग तले देशद्रोही तत्व सक्रिय है।"

"व्हाट?" प्रधानमंत्री चौंकी।

"ये प्रमाण हैं"—भूतनाथ ने सहज होकर कहा और मैरी की ओर देखा।

पहली बार प्रधानमंत्री ने मैरी पर ध्यान केन्द्रित किया। मैरी ने उनकी सुई जैसी भीतर पैठने वाली नजर से संकुचित होते हुए वे दस्तावेज निकाले, जिनमें प्रधानमंत्री के सचिवालय और पीटर के अधीन अधिकारियों द्वारा विदेशों को गुप्त सूचना देने के सूत्र थे। प्रधानमंत्री ने कागज खुद लिए और उन्हें डिनर की बात भूलकर वह मनोयोग से पढ़ने लगी। वे कागज उन्होंने पीटर को भी नहीं दिए और उन्हें करीने से मोड़कर अपने पास रख लिया। स्पष्टतः वह प्रभावित हो गई थीं।

भूतनाथ ने मिस मैरी के विषय में बताया और कहा कि यह देश के काम आ सकती है और सी० आई० ए० की एजेण्ट तो नहीं थी पर मेरे लिए इसने जासूसी भी की और अपनी जान को खतरे में डाला। अब सी० आई० ए० के लोग हमारा शिकार करना चाहते हैं। पीटर को संकेत कर प्रधानमंत्री एक ओर ले गईं और वापस आकर बोलीं—"मिस मैरी। यू आर ब्यूटीफुल एण्ड है व करेज। दिस इज अ रेयर कम्बीनेशन ऑल दो ब्यूटी कन्टेन्स इन इटसैल्फ सम डैस्ट्रेक्टिव एलीमेंट, विल यू वर्क फार इंडिया··· तुम सुन्दर हो मैरी, साहसी भी यद्यपि सौन्दर्य में स्वयं एक विनाशक तत्व रहता है···क्या तुम भारत के लिए काम करोगी?"

मैरी ने भूतनाथ की तरफ देखा पर वह तटस्थ रहा। मैरी ने उससे कोई इशारा न पाकर स्वयं सोचकर कहा, "नो, एक्सक्यूज मी, मैडम प्रायम मिनिस्टर, नो, आय विल लाइक टु वर्क फार पीपुल वट इफ आय कैच एनीथिंग, आय विल इन्फौर्म यू आर मिस्टर पीटर्सन···नहीं, प्रधानमंत्री क्षमा करें, मैं जनता के लिए काम करना पसन्द करूंगी। परन्तु यदि देशहित में कोई चीज मिली, कोई सूचना, कोई रहस्य, तो आपको या मिस्टर पीटर को दे दूंगी।"

"वट मैरी। यू विल बी सेफ विद अज। दिस भूतनाथ कैन लुक आफ्टर हिमसैल्फ। ही इज अ मिथ, एण्ड मिथ्स आर इम्मोरटल—किंतु मैरी, तुम हमारे साथ सुरक्षित रहोगी। भूतनाथ अपनी देखभाल कर सकता है। यह तो मिथक है जो अमर और शाश्वत होता है"—और यह कहकर प्रधानमंत्री खूब हंसी। हंसी के क्षण में उनका मुख भोला लगने लगता है। उस पर राजनैतिक छल-बल का मकड़जाल साफ हो जाता है। भूतनाथ ने इस अंतर को पहचाना।

"मैडम! मेरा भी यही विचार है। मैरी, मिस्टर पीटर की देखरेख में काम

करे। जनता की सेवा में अपने को सुरक्षित नहीं समझा जा सकता। सी० आई० ए० के ऐयारों से मैरी को बचाना जरूरी है। मैरी, तुम प्रधानमंत्री महोदया का आदेश मान लो।"

"नाट एटवंस, प्लीज गिव मी सम टायम योर एक्सेलेंसी प्रायम मिनिस्टर—तुरन्त नहीं, कृपया मुझे कुछ समय दें, परमश्रेष्ठ प्रधानमंत्री जी।"

प्रधानमंत्री मैरी की स्वतंत्र बुद्धि, दृढ़ता, सूक्ष्मता और शिष्टता पर प्रसन्न हो गई—"यू कैन डिसाइड लेटर ऑन···इफ यू ज्वायन अज़। मिस्टर पीटर विल फिक्स यू समव्हेयर इन हिज एजेन्सी ऑर विल यू लाइक टु···वर्क इन्डिपेंडेंटली···तुम बाद में निर्णय कर बताना। यदि तुम भारतीय गुप्तचर संस्था में काम चाहोगी तो पीटर कहीं रख देंगे या तुम स्वतंत्र रूप से काम करना पसन्द करोगी?"

"आय एम एन अमेरिकन। आय बिलीव इन इन्डिपेंडेंस। आय विल लायक टु वर्क एज़ एन आर्टिस्ट, अ सोशल वर्कर, अ जर्नलिस्ट बट आय विल बी लुकिंग फार समथिंग यूजफुल टू इंडिया एण्ड यू कैन पे फार इट···सो दिस विल बी अ सौर्ट आफ कान्ट्रैक्चुअल वर्क, सो टु से··· आय डोंट वाट टु टाय मायसैल्फ इन इंडियन ब्यूरोक्रैटिक ट्रैपिंग्स···मैं अमरीकी हूं। स्वतन्त्रता में विश्वास रखती हूं। मैं कलाकार, समाजसेवक और पत्रकार के रूप में काम करना चाहूंगी और भारत के लिए उपयोगी सूत्रों की तलाश में रहूंगी। आप उस सूचना के लिए मुझे पारिश्रमिक दे सकते हैं अतः यह ठेके के काम जैसा होगा। इस तरह मैं भारतीय नौकरशाही के जाल से मुक्त रहूंगी।"

प्रधानमंत्री पुन: हंसी, प्रभावित हुईं। उन्होंने पीटर से कहा—"एनलिस्ट हर एण्ड एसायन वर्क व्हेन यू फील शी कैन डू। हैल्प हर, प्रोटैक्ट हर, गिव हर फैसी-लिटीज़। गिव हर अ लैटर सो दैट शी कैन एप्रोच पुलिस एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन एनी-व्हेयर एण्ड लीव हर टू हरसैल्फ—पीटर उसे अपनी सूची में लिखो, काम सौंपो, उसकी रक्षा करो, सुविधाएं दो। उसे एक पहचान का पत्र दे दो ताकि वह कहीं भी पुलिस और प्रशासन तक पहुंच सके और उसे आजाद छोड़ दो।"

प्रधानमंत्री हंसकर खड़ी हो गईं, सब उठ गए। उन्होंने मैरी से हाथ मिलाया और उसके कंधे थपथपाए। भूतनाथ की ओर कृतज्ञ दृष्टि से देखा और चलते-चलते कहा—"मिस्टर भूतनाथ! यू आर प्लेइंग विद फायर। आय एम ऑलसो अ रिवोल्यूशनरी बट रिवोल्यूशन आफ योर टायप विल नॉट सक्सीड इन इंडियन कंडीशंस···पीपुल वाट ग्रैजुअल चेंज। दे फायट फार रिफार्म्स, नॉट फार ए चेंज इन द सिस्टम। ऑय नो व्हाट यू आर डूइंग बट ऑय वार्न यू टु डिजिस्ट फ्राम आर्म्ड रिवोल्यूशन···फर्स्ट लैट दिस डैमोक्रैटिक सिस्टम स्टेबलाइज एण्ड डैवलैपमेंट वर्क सक्सीड ··दैन देयर विल बी नो नीड फार एनी ब्लडी चेंज···तुम आग से खेल रहे हो—भूतनाथ! मैं भी क्रांतिकारी हूं पर सशस्त्र क्रान्ति भारत में सफल नहीं होगी। यहां जनता धीमे-धीमे बदलाव चाहती है। लोग सुधार चाहते हैं, सुविधाएं, विकास पर वे व्यवस्था का आमूल चूल परिवर्तन नहीं चाहते। मैं जानती हूं, तुम क्या कर रहे हो पर मैं तुम्हें चेतावनी देती हूं कि क्रान्ति के चक्कर से बचो। पहले जनतंत्र को जम जाने दो, विकास होने दो फिर रक्तपाती परिवर्तन अप्रासंगिक हो जाएगा।"

भूतनाथ की भृकुटि कसी और ढीली हो गई। वह मुस्कराकर बोला—"द पीपुल विल डिसाइड देयर डैस्टिनी एण्ड द नेचर आफ चेंज। दे आर डैस्पेरेट, एक्स्प्लोयटिड, डिनीव्ड एण्ड चीटिड। वैल, इफ दे वान्ट टु रिमेन अण्डर द इलूज़न व्हाट कैन आय

डू यट आय डोंट थिंक दे विल टौलरेट फार लोंग द टिरैनी आफ अपर एण्ड मिडिल क्लासिस'''एनी वे, ऑनली टायम विल टैल थैंक यू फार योर वार्निंग एण्ड इम्प्लाइड थ्रेट—जनता अपनी नियति और तब्दीली का रूप तै करेगी। वह निराश, शोषित तथा प्रवंचित है। यदि वह इस तथाकथित जनतान्त्रिक भ्रम में रहना चाहती है तो मैं क्या कर सकता हूं पर मैं ऐसा नहीं सोचता। जनता अधिक समय तक उच्च और मध्य वर्ग के अत्याचार और तानाशाही को सहेगी नहीं ' आपकी चेतावनी और उसमें छिपी हुई धमकी के लिए मैं कृतज्ञ हूं।"

सबने प्रधानमंत्री को नमस्कार किया और प्रधानमंत्री हंसती हुई चलने लगीं। उन्हें भूतनाथ का वक्तव्य रुचा नहीं—"वी वील सी भूतनाथ, हू इज रायट एण्ड हू इज रोंग'''हम देखेंगे कि कौन सही और कौन गलत है?"

"यकीनन, हम देखेंगे'''यस मैडम, सरटेनली वी विल सी।"

सब हंसे और बैठक समाप्त हो गई।

पीटर से मैरी के लिए पत्र लेकर तथा देश की सुरक्षा के संदर्भ में गुप्तचर एजेन्सी से सूत्र जोड़े रखने का अनुरोध पाकर भूतनाथ और मैरी, दिल्ली में बिना अपने को अधिक अनावृत किए वेष और वाहन बदलते हुए इटावा लौट आए। भूतनाथ गुमसुम रहा यों मैरी की ओर उसके अवलोकन में अमृत था और वह मैरी को आंख से ओझल नहीं होने देता था। इटावा में आकर वह बदले वेष में, सीधा टिकिसी के महादेव मंदिर गया, जहां दीपा, चिरन्जीव, श्याम दीक्षित, तातिया, राजेन्द्र तिवारी और रहमतखां किसी बैठक में थे और विचार-विमर्श चल रहा था। भूतनाथ के हंसते ही उसे पहचान लिया गया। परिचय और चाय-नाश्ते के बाद भूतनाथ अपनी असली शक्ल में आ गया पर मैरी को कहा गया कि वह अपने चेहरे पर झिल्ली चढ़ाए रहे और भारतीय वेशभूषा में रहे, एवम् घूंघट का प्रयोग करे ताकि मुख छिपा रहे। भूतनाथ ने उसके शरीर पर रंग-रोगन मल दिया था, जिससे वह सांवले रंग की लगने लगी थी। तातिया भूतनाथ के मुंह लगा था। उसने पूछा—"दादा। यह कौन है?"

"यह मयूरी है, पुजारी जी की गोद ली हुई लड़की है जो अब तक योरोप में पढ़ती थी और सामाजिक सेवा की ट्रेनिंग ले रही थी। अब यह कुछ समय तक हमारा काम देखने आई है और कभी भी योरोप-अमरीका जा सकती है।"

जादू जैसा असर हुआ। सबने मयूरी को प्रणाम किया। कमाल यह था कि कोई भी बदले रंग की असलियत नहीं समझ सका। मैरी ने भारतीय विधि से हाथ जोड़कर 'नमस्ते' कहा और घूंघट की ओट कर मुस्कराने लगी। भूतनाथ के कहने पर तातिया ने पुजारी जी के कक्ष में भूतनाथ का और उससे सटे दूसरे कक्ष में मैरी का इन्तजाम कर कर दिया। मन्दिर के सभा भवन में बैठक जारी रही। भूतनाथ उस बैठक में बैठा। कहा क्या हो रहा है, इसका जायजा लिया। उसने ब्यौरे में जाकर आन्दोलन की गति और गहराई पर ध्यान दिया और अन्त में पूछा, "तातिया! मेरे योग्य कार्य क्या है, बताओ।"

"झगड़ा करना और झगड़ा निबटाना।" श्याम दीक्षित बीच में बोला। भूतनाथ ने प्रश्नाकूल दृष्टि से उन्हें देखा तो वह कहने लगे—"आपकी गैरहाजिरी में, पुजारी जी के न रहने से, गणसमिति के सदस्यों में ग्रुप बन गए हैं जो एक-दूसरे पर हावी होना चाहते हैं। कटुता और कर्कशता बाढ़ पर है, इतनी कि विरुद्ध ग्रुप कभी-कभी पुलिस को भेद देकर अपने प्रतिद्वन्द्वियों को गिरफ्तार करा देता है और झगड़ा करना इसलिए

जरूरी है क्योंकि कई जगह बड़े भूपतियों, और सेठों ने समानान्तर भूमि सेनाएं खड़ी कर ली हैं जिनमें छँटे बदमाश और डाकू हैं, भाड़े के सैनिक, रिटायर फौजी वगैरह। अब गाव-गाव मे तनातनी है···हमारे लोग पिट रहे हैं और कम हो रहे हैं। सरकार स्वभावतः बड़े किसानो, सेठो की पीठ पर रहती है।

"वेल सैड श्याम भाई। बहुत ढग से कहा आपने। अब हम मिलकर इसे देखेंगे··· और अच्छा क्या हो रहा है ?"

"गावों के करीब, भूमिहीन और छोटे किसानों के लड़कों में ज्यादा बेकारी है। वे गण-समितियो मे आ रहे हैं, उनमे जो साहसी है, रुद्रगण बन रहे हैं। कई तो जेलों मे हैं। उन्हें छुड़ाना है। भूमि सेनाओं और पुलिस के दमन के बावजूद हमारा आन्दोलन अधिक मुखर और मारक है·· जन-आतंक उन्होने माना, तभी तो वे अपने गुंडे खड़े कर रहे हैं। हम जनसमस्याओं के समाधान के लिए आन्दोलन-प्रदर्शन-घेराव करते हैं, वे नही कर सकते है, वे नहीं कर सकते, पर वे हमारी सभाएं नही होने देते और जिस अफसर के हम पीछे पड़ते हैं, उसकी वे तरफदारी करने लगते है।"

"यानी, एक ध्रुवीकरण हो रहा है, यह तो अच्छा है, नही ?"

"आमना-सामना होना अच्छा ही है, उससे पता चलता है कि कौन किस तरफ है लेकिन उनके पास साधन हैं, सम्बन्धो का बल है, सिफारिश की ताकत है। अतः हमें कई दफा दबना पड़ता है। बहुत कुछ करने की जरूरत है दादा भूतनाथ। आप यहां सेंटर पर रहें तो कार्यकर्त्ताओं का दिल रोशन रह सकता है। आखिर बिजली तो हैड-क्वार्टर से ही मिलती है।"

इस पर हंसी बिखरी और तनाव टूटा। भूतनाथ ने अधिक समय तक इस केन्द्र पर रहने का वादा किया और श्याम भाई से मयूरी को हिन्दी पढ़ाने के लिए एक साथी को लगाने के लिए कहा—

"हिन्दी का सघन शिक्षण चाहिए," भूतनाथ बोला। स्थानीय कालेज के हिन्दी विभाग के डाक्टर मंजुश्री नाथ श्रेष्ठ रहेंगे। वह लेफिटिस्ट भी हैं···तातिया ने सुझाया।

"वह योग्य हैं, विश्वसनीय और तातिया के जिगरी दोस्त भी है," श्याम दीक्षित ने रहस्य खोला।

सब हंसे और मंजुश्री नाथ को बुलवाया गया। तातिया बहुत प्रसन्न हुआ। भूतनाथ का ध्यान पलटा—"क्या प्रतिक्रियावादियों की भूमिसेनाओं की सूची मिल सकती है ?"

"क्यों नही ? स्थानीय स्तर पर गांव-गाव के लोग एक-एक को जानते हैं पर उसके लिए गाव-गाव जाना होगा और उनको सबक सिखाने के लिए वहां रहना भी होगा, भिड़ना भी होगा आपको," श्याम भाई ने कहा।

रहमत खा ने हाथ उठाया और बोले—

"हिन्दू-मुस्लिम दगे हो जाते हैं, उनका क्या किया जाए ? इससे गनो-गनेसों में भी मजहब के नाम पर बंटवारा होने लगता है।"

"वजह क्या है, कौन उकसाता है ?"

"मान लीजिए अलीगढ़ में हिन्दुओं के मुहल्ले मे मुसलमानो के घर हैं। अब जाहिर है कि उन्हें भगाकर हिन्दू सरमाएदार चाहेंगे कि उनके घर गिराकर, उस जमीन पर फ्लैट बनाकर माल काटा जाए···यही हाल मुरादाबाद में है, कानपुर, बनारस, इलाहाबाद और जौनपुर में भी यही है। झगड़ा जर-जमीन का है, साहेबआलम और

गरीब हिन्दू और मुसलमान मार खाता है। उसी के घर जलते हैं। वही बेघर होकर भागता है और काबिज होते हैं सरमाएदार, पैसे वाले, परभाववाले लोग। बहुत काम करने को पड़ा है। मुहल्ले-मुहल्ले जब गन-कमेटियां बन जाएं और आपकी सरपरस्ती और रहबरी में चलें, तब कुछ हो सकता है।"

"मैं साथी हूं, सरपरस्त नहीं और किसी एक या कुछ लोगों पर जनता निर्भर न रहे, वह जगह-जगह अपने नेता पैदा करे, तब होगा"—भूतनाथ ने बताया।

"दुरुस्त है जनाब। मगर इस मुल्क में आम खलकत का लेविल गिरा हुआ है। वह हजारों साल से बड़े लोगों का मुंह देखती रही है हिन्दू हुकूमत में भी और मुस्लिम हुकूमत में भी, बाद में भी। राजा-बादशाह-ठाकुर या नवाब कोई हो, वो करश्में में यकीन करने लगी है। कोई पीर, कोई पैगम्बर, कोई औलिया या औतार बधा ले, यह रुझान आम आदमी में बस गया है। चुनांचे, कोई करिश्में वाला फरिश्तानुमा अशरफुलमुल्क हो खलकत का सहारा बन जाता है। आपमें करिश्मा है, करतब और कमाल भी है, आपका दबदबा है साहबेआलम, आप फरिश्ते नहीं तो और क्या हैं? आप आगे चलें, मौके पर सलाह-मशविरा और जरूरत पड़ने पर जंग-ए-जहान के लिए साथ रहें तो हम, खुदा-कसम इन फिरकापरस्तों, बदमाशों और बुर्जुआओं को दोजख-रसीद कर सकते हैं, लानत है उन पे, थू है।"

रहमत खां की खुशबयानी और खासकर उनके अन्दाजेबया पर लोगों को बहुत विनोद मिला। तातिया ने उन्हें छेड़ा—"खां साहब, आप फारसी बहुत छांटते हैं। यह अशरफुलमुल्क क्या होता है?"

"अल्लाह अकल दे सब बन्दों को। इसका मतलब है, अशरफ याने अच्छों में सबसे अच्छा आदमी···और फारसी तो अपने पुरखों की जुबान है तातिए···ओह, तातिया टोपे साहब। जी हां, फारसी तो आरयों क्या कहते हैं, आर्यों की जुबान थी। अरबी जरूर विदेशी है पर वह हमारी कुरान शरीफ की भाषा है ताहम उर्दू में फारसी ज्यादा है, जो भारतीय भाषा है।"

"ओए तातिए। माफी मांगें खान साहब से, तमीज सीख।"

तातिया ने हाथ जोड़े मगर फिर छेड़ा—"खान साहब माफ करें मगर, आप आम खलकत की भाषा क्यों नहीं बोलना सीखते?"

"यह तो हिन्दवी ही है, यह उर्दू, इसमें नफासत है, शोखी है और तहजीब है, गजल है, गुल है, मस्ती और सूफियानापन है, क्या नहीं है? यह तो हमशीरा, बहिन है हिन्दी की···याने आपकी खाला है, मौसी।"

तातिया पर ठहाका पड़ा। वह खिसिया गया और रहमत खां को सलाम करने लगा। रहमत ने आंखें बन्द कर दुआ दी "या खुदा! इस अनाड़ी को उर्दू बख्श ताकि यह बिरहमन रोशन ख्याल हो जाए।"

घोर अतिहास हुआ। भूतनाथ महफिल का मजेदार रंग देखकर खुश हुआ। उसने कहा कि बैठक और नोंकझोंक चालू रहे लेकिन वह सफर का मारा हुआ है और मयूरी अकेली है। जाने के पहले उसने कहा कि वह श्याम भाई और रहमत खां की मदद से अपना प्रोग्राम कल बता देगा कि कहां कब क्या होना या चलना है। तब तक आप गणसमितियों के विषय में बहस जारी रखें। रात के दस बज रहे थे।

भूतनाथ उठ गया। उसने पाया कि मयूरी भारतीय वेशभूषा में घूंघट उठाए, तिरछी नजर से उसे आता देख रही है। भूतनाथ उस छवि को अपने में समोने लगा।

वह उस सौन्दर्य को देखकर ठिठका रह गया। मैरी के चेहरे पर भारतीय लज्जा भी आ गई थी, इससे उसकी मुद्रा और भी अधिक मनोरम हो गई थी। मैरी खिलखिलाई "प्लीज कम। आय कान्ट वेयर विद दिस लोनलीनैस—स्वागत है। मैं अकेलेपन को सह नहीं पा रही हूं।"

अचानक भूतनाथ की चेतना का गेयर बदल गया। उसको लगा कि वह रोज़ी के सामने खड़ा है और आज उसने पुनः भारतीयवेष धारण किया है। वह न्यूयार्क की रोजी की हत्यावाली रात में पहुच गया और मैरी को रोजी समझकर उसकी ओर व्याकुल होकर बढ़ा। वह मैरी के सामने बैठ गया। मैरी ने घूघट खीच लिया। भूतनाथ ने उसका घूघट उठाया और रोज़ी के ख्याल मे डूबा हुआ वह उस पर झुका—"नो, नॉट नाउ, माय गोस्ट ! माय कलर विल रिवील मी···अभी नहीं, मेरा रग मुझे ज़ाहिर कर देगा।"

"कलर ? व्हाट कलर ? डू यू मीन वाय योर कलर···आय एम इटॅरेस्टिड इन द कन्टेन्ट नॉट इन कलर्स।—रंग, कौन-सा रग ? मैं तत्व में रुचि रखता हूं, रग मे नहीं।"

"ओह। डार्लिंग। दिस इज इंडिया नॉट योरोप ऑर अमेरिका, व्हाय दिस हेस्ट ?···ओ, स्टाप इट···सी देयर···हूं इज़ देयर—ओह प्रिय। यह भारत है, योरोप या अमरीका नहीं, क्यों जल्दी मचा रहे हो ? रुको···देखो उधर कौन है ?"

भूतनाथ ने उठकर बाहर झाका, कोई भी तो नहीं था। उसे ताज्जुब हुआ··· कोई छाया तो थी किसी की···अब कहां गई वह ? भूतनाथ ने आगे ताका तो उसे लगा कि कोई रोज़ीनुमा छाया उसे बुला रही है···वह उसके पीछे लग गया और उसके पीछे टार्च और रिवाल्वर लेके मैरी चल पड़ी। वह समझ गई कि इसके दिमाग पर रोजी की मौत का गहरा असर हुआ है, और यह अदृश्य आकारों को अपनी चेतना मे साकार कर रहा है। उसने सोचा कि उसे प्यार करने से रोक देना अच्छा नहीं हुआ। वह प्यार तो करे, रोज़ी समझकर ही करे। मैरी को अपनी नियति पर पछतावा हुआ कि अभी भी रोजी उन दोनो के मध्य बाधक है। वह मर कर भी मौजूद है। वह प्यार की भूख मे, उन्माद मे मरी है। उसी के गोस्ट के पीछे मेरा गोस्ट जा रहा है, लार्ड जीसस क्रायस्ट ! सेव द सोल ऑफ रोज़ी एण्ड रिमूव हर शैडो। ओ माय लार्ड·· हे ईश्वर, रोज़ी की आत्मा को शांति दो और उसकी छाया हम दोनों के बीच से हटा दो।"

भूतनाथ अपनी सुध-बुध खोए उस छाया के पीछे चल रहा था गोया नींद मे जा रहा हो। सौभाग्यवश कोई रास्ते मे मिला नहीं। बैठक के लोग, भूतनाथ से बेखबर अपनी चर्चा मे व्यस्त रहे। बाहर पुलिस चौकी के सिपाही ने भी नहीं रोका, समझा कोई जोड़ा मंदिर मे पूजा कर घूमने निकला है।

मई का कृष्ण पक्ष था और काली रात चींटियां चुगाने वाली किसी महिला की तरह अपने बैग से निकाल-निकाल कर अंधेरा फेंक रही थी। हवा में पूर्ण ठहराव था और उमस बढ़ी हुई थी जिसे जब तब वायु की कोई लहर मिटा देती थी और फिर सड़ी गर्मी सताने लगती थी। आकाश के नक्षत्र, भूतनाथ के लिए रोज़ी की आख की पुतली की तरह चमक रहे थे और उसे लग रहा था कि वह आगे-आगे चलकर किसी गूढ़ संकेत-स्थल पर लिए जा रही थी। मराठों के किले की नींव में पहुंच कर भूतनाथ रुका। वह उसके भूगोल पर सोचता रहा। अचानक उसने देखा कि रोज़ी किले पर चढ़ रही है और मुड़-मुड़ कर बुला रही है। उसकी पायल बजी, रुनझुन सुनकर भूतनाथ को आश्चर्य

हुआ कि रोजी ने पायल कब पहनी...हो न हो वह भारतीय वेष के साथ भारतीय आभूषण भी पहने हो। भूतनाथ पागल-सा किले पर चढ़ने लगा। छम् छम् की मादक ध्वनि उसे खींच रही थी।

"रोजी। व्हेयर आर यू गोइंग, दिस इज अ डेंजरस प्लेस, वैरन एण्ड डिसोलेट...ऑनली गोस्ट्स लिव हियर...रोज-ई-ई-ई-ई...रोजी, तुम कहां जा रही हो? यह उजाड़, निर्जन स्थान है, यहां सिर्फ भूत रहते हैं, रोज-ई-ई-ई-ई।"

पायल की छमाछम नहीं रुकी। भूतनाथ पीछे लड़खड़ाता, गिरता-पड़ता, हांफता उस खण्डहर पर चढ़ता रहा। मेरी ने हस्तक्षेप नहीं किया। वह साथ लगी रही। बड़ी मेहनत और मुसीबत से भूतनाथ किले के खण्डहर पर चढ़ा। अब रोजी उस किले की छत पर चल रही थी। भूतनाथ दौड़ा, "रोजी। उधर मत जाओ। उधर बन्द कमरे हैं, उनमें आक्सीजन नहीं है, तुम्हारा दम घुट जाएगा। चलना ही है तो सुरंग वाले सभा भवन में चलो। रोजी, वहीं चलो, वहां बड़े-बड़े क्रान्तिकारियों से तुम्हें मिलवाता हूं...हां हां इधर से...गुड, तुम मेरी बात मान गई न। बेहतर है, मुझे आगे चलने दो...अरे भागने लगीं तुम तो...अच्छा बाबा, चलो, आगे ही चलो...च... लो!"

और भूतनाथ रोजी की कल्पित छाया के पीछे किले के सभा भवन में पहुंच गया। वहां घुप्प अंधेरा था लेकिन क्रान्तिकारियों की बैठक के लिए एक तरफ वहां टाट-पट्टी और उस पर बिछावन बिछी रहती थी। हॉल के बीच एक सिंहासननुमा छोटा-सा चबूतरा था। छम-छम करती उस पर रोजी बैठ गई। भूतनाथ प्रसन्न हुआ।

"रोजी, माय डियर, माय वायफ। यह अच्छी जगह चुन ली तुमने। गुड। यहीं बैठना अब, कहीं जाना मत। इधर-उधर गंदे और खण्डित सांप बिच्छुओं से भरे कमरे हैं, उधर मत बढ़ना। यहीं रहना। अब देखो, मैं तुम्हें कैसे-कैसे महापुरुषों से मिलवाता हूं, द ग्रेट संस ऑफ इण्डिया। भारत के महान पुत्र, तुम्हारा देश तो भोगियों का देश है रोजी। है न। लो तुम सहमत हो, यह कितना अच्छा है ..बस थोड़ा आराम कर लो तुम, मैं देखता हूं, कौन-कौन यहां बैठे हैं?" भूतनाथ उस अंधेरे हाल में वृत्ताकार घूमने लगा...."अरे रोजी। लो, देखो, यह है मिस्टर कानु सन्याल, वही चारु मजूमदार के शिष्य, अब ये ही प्रमुख हैं, इन्हीं को लोग सबसे ज्यादा जानते हैं। लो मिलो। कामरेड, सन्याल। यह रोजी है, मेरी जीवन साथिन, जी हां, वायफ, मेरी जोरू, दुलहिन, अर्धांगिनी।...विश्वास नहीं होता आपको? ओह रोजी, यह तो कह रहे हैं कि भूतनाथ भी कहीं शादी करता है। वह तो भूत है, मिथक, एक दन्तकथा का नायक, कल्पना का कमाल बस, यही भूतनाथ है...रोजी, इन्हें बताओ न, भूतनाथ भी मनुष्य है। एक साधारण इंसान, उसके भी दिल है, जज्बात हैं, क्या उसे यह जीवन धारण कर प्रेम का भी अधिकार नहीं? कामरेड सन्याल, क्रान्ति क्या रूखे-सूखे इंसान ही कर पाते हैं, हरे भरे, अहलेदिल, मस्त और ममता भरे लोगों में क्या मिशन के लिए मरने की प्रेरणा नहीं होती? रोजी, बोलो न?"

भूतनाथ इसी तरह अनेक साथियों के नाम ले-लेकर अपनी वेदना और व्यथा उगलता रहा। फिर वह रोजी की ओर बढ़ा, "ओ रोजी। मैं मरूंगा तो नहीं, मैं खुद छाया हूं, लेकिन भटकता रहूंगा। तुम बोलो तो यह भटकन भूले, कुछ लमहों के लिए। मेरे मन में जंगल की आग जल रही है। सब भरभरा रहा है रोजी। ओह। मैं जल रहा हूं डार्लिंग...रोजी, तुम फिर चल पड़ीं...मुझसे मिलना नहीं चाहतीं? पहले मैं अपने आदर्श के कारण तुमसे बचता रहा, कितना तरसाया तुम्हें, अन्त तक हम अलग ही रहे,

काश। एक वार भी हम मिल पाते, नदी में नमक की तरह घुल पाते, दूध-पानी से एक हो जाते···लेकिन अब क्या बाधा है ? ···देखो न, हमारे अभिसार के लिए क्या बढ़िया जगह है, यह पवित्र भूमि। यही जन-उद्धार का मशवारा हुआ है रोजी, यह तीर्थ है। यही हमारे अस्तित्व एक होंगे·· रोजी···ठहरो। आगे मत बढ़ना, आगे मत जा···ओ स्टाप !"

भूतनाथ ने इतनी जोर से 'स्टाप' कहा कि किले का हाल गूंज गया और चीखते-फड़फड़ाते हुए चमगादड़ उड़ने लगे। दूर कहीं उल्लू बोला और बहुत दूर एक तरफ वन से बाघ की दहाड़ सुनाई पड़ी। भूतनाथ दोनों हाथ फैलाए, उन्माद में छाया के पीछे खंडहर बने कमरों की तरफ बढ़ा। अब हस्तक्षेप आवश्यक था अन्यथा भूतनाथ टकरा कर गिर जाता और उसे सांप-बिच्छू डसने लगते। मैरी ने वहीं से टार्च की रोशनी फेंकी तो भूतनाथ के दिमाग को आघात लगा। उसने सामने देखा कि आगे कोई नहीं है और गन्दे बन्द कमरों में सिर्फ सांप और बिच्छू रेंग रहे हैं। वह झटके से वापस हुआ तो पाया कि रोजी टार्च जलाए खड़ी है। वह पुनः पूर्वमनोदशा में पहुंच गया···।

"ओ रोजी, तुम टार्च भी लिए हुए थी तो पहले क्यों नहीं जलाई, देखो, अंधेरे में किले पर चढ़ने से मेरी क्या दशा हो गई। अच्छा अब चौंध से आंखें मत फोड़ो, मैं आ रहा हूं। मैरी ने टार्च बन्द कर दी। छाया सामने थी। भूतनाथ इतनी जोर से उसकी तरफ दौड़ा जैसे कोई मरुस्थल का मुसाफिर मरु-उद्यान की ओर दौड़ता है, प्यास में होंठों पर जीभ फेरता और सूखे कंठ से 'आ आ' करता हुआ। वह झोंक में भागा हुआ आया और मैरी को उठाकर पैरों पर घूम गया। "ओह रोजी। कितना भगाया तुमने डालिंग। आज हम इस बलिदानियों की स्थली में द्वैत मिटा कर एक होंगे। आज दुनिया का कोई सकोच, भय, मर्यादा, संकट और वर्जन, हमें घुलने-मिलने से नहीं रोक सकता। ओह रोजी, तुम इतनी दूर, अपना लोक छोड़कर मुझसे मिलने चली आई।" "मिस्टर गोस्ट ! आय एम नॉट रोजी, ब्रिंग योर सेंसिज टुगेदर—मैं रोजी नहीं, मैरी हूं मिस्टर गोस्ट, होश में आओ प्रिय।"

पर होश में वह कैसे आता ? उसके कान में मैरी चीखी, चिकोटी काटी मगर भूतनाथ अतिकल्पना के आवेश में था। वह बड़बड़ा रहा था—"रोजी। यदि तुम प्रेत-योनि में भी हो तो भी आओ, आज प्रेम करें ··मैं भी तो भूत हूं ··मनुष्य भी, आओ आज प्रेम करें···आज···मनुष्य समाज ने मुझे मनुष्य रहने ही नहीं दिया···आओ।

न जाने कब तक वे उन्मादी सागरों से कल्लोलित होते रहे, न जाने कब तक अपने वजूद के दागों और द्वन्द्वों को अपनी चेतनाओं से धो-धो कर अपने को उजलाते रहे और न जाने कब तक वे अपने अनन्त शून्यों को उमड़ती भावनाओं के ज्वारों से भरते रहे···वे किस तरह पृथकता से उपजने वाली कचोट को काट सकें, इसके लिए स्नेह में सराबोर होते रहे···ऐसा लगा, जैसे प्रकृति ही उनके माध्यम से दीर्घ ग्रीष्म और शीत-काल की ठिठुरन के बाद वसन्तमयी हो रही हो जैसे अपरिमित अंकुरण होने लगा हो। उनके अणु परमाणुओं में पहले तो लास्य हुआ, फिर किसलय फूटे, फूल खिल गए, सुगंधों के अम्बार उमड़े और मन भ्रमर से गूंजने लगे, वे एक-दूसरे में समीरण से चलने लगे। उनकी दूरियां सिमिट गईं और अस्तित्व अनुरंजित हो गए।

एक भूकम्प-सा आया और गुजर गया। सब कुछ पूर्ववत् हो गया···भूतावेश उतर जाने से भूतनाथ देर तक बेसुध पड़ा रहा। फिर होश की वापसी में उसने सहसा समझा, अरे। यह तो मरी है। वह सकपकाया और टार्च की रोशनी में मैरी का मुख

हाथों में भर कर बोला "ओह् हनी ! हाउ इट हैपिण्ड—यह कैसे हुआ ?—मैं यहां कैसे आ गया ? क्या हुआ ?"

मैरी ने टार्च बन्द कर उसे शिशु की तरह थपकियां दी और ईश्वर को धन्यवाद दिया कि भूतनाथ उन्माद के तूफान से निकल आया—"डार्लिंग, डोंट से एनीथिंग, जस्ट स्टे एज यू आर, फारगैट एवरीथिंग एण्ड रैस्ट···यू आर सेव्ड फ्राम यौर फंटेसीज···थैंक गॉड·· कुछ मत कहो प्रिय, सब भूल जाओ, विश्राम करो, तुम अपने आभासों से बाहर आ गए, ईश्वर को धन्यवाद।"

चकपकाहट का कोई असर मैरी पर न पाकर और सब कुछ स्पष्ट हो जाने पर भूतनाथ संभ्रम और किंकर्त्तव्यमूढ़ता में पुनः मैरी को समेट कर उस पर न्योछावर होने लगा। फिर वह गहरे स्वर में बोला—"मैरी, माय लव। इट इज रोजी हूं हैज मेड अज डू इट। अदरवाइज हाउ कैन भूतनाथ लूज हिज माइण्ड सो कम्पलीटली ? आय रियलाइज नाउ मैरी। शी इज गाइडिंग अवर डैस्टिनी ओ रोजी दैट इज मैरी, मैरी दैट इज रोजी···रोजी ने हमारा द्वैध मिटा दिया। अन्यथा मैं अपना दिमाग पूर्णतः कैसे खो बैठता ? मैं मानता हूं, वह रोजी हमारी नियति का निर्धारण कर रही है, रोजी ही मैरी है और मैरी ही रोजी।"

"इट इज आल्मोस्ट मार्निंग ! लैट अज गो नाऊ डार्लिंग। सवेरा हो रहा है, अब हमें चलना चाहिए।" मैरी ने अलग होते हुए कहा।

"मैरी ! मैं तुम्हें रोजी कहा करूं तो तुम्हें कैसा लगेगा ?"

"ठीक है, ठीक है।" दोनों मुस्कराए और स्थिति के इस तरह के मोड़ ले लेने पर विस्मय करते रहे।

"देयर इज समथिंग इन्डीड माय मोस्ट दैट मेक्स अज अ प्लेथिंग इन द हैंड्स आफ नेचर ऑर गौड्स व्हाटएवर यू मे काल इट। देअर इज रियली सम···थिंग, बियोण्ड अवर अण्डरस्टैंडिंग···कहो कुछ है जरूर जो हमें प्रकृति के हाथों का खिलौना बनाता है, देवता कहो या उसे प्रकृति कहो।"

"आय डोंट नो, मैं जानता नहीं·· मैरी दैट इज रोजी···ओह्। आओ, तुम्हें एक चमत्कार दिखाता हूं। यह तुम्हारे गॉडफादर पुजारी जी का है, मिरेकल समझो इतिहास का···आओ।"

भूतनाथ ने सुरंग का पत्थर हटाया और भीतर उतर गया। मैरी झिझकी, डरी पर भूतनाथ ने उसे खींच लिया। दोनों चल पड़े। मैरी विस्मित थी। यह सचमुच उसके धर्मपिता पुजारी जी की चमत्कारक खोज थी। मैरी को स्पष्ट हो गया कि इसी के बल पर ये इन्कलाबी अब तक बचते रहे हैं···पर कब तक बचेंगे ? एक न एक दिन कोई विश्वासघाती पुलिस को खबर कर ही देगा···देखा जाएगा तब, यह अपना भूतनाथ तब कोई और सुरंग खोज लेगा, ओह् ! मैं कितनी खुशकिस्मत हूं,···हि इज अ सुपरमैन··· यह तो अति मानव है !

दोनों सुरंग के छोर पर, मंदिर के अहाते में सहसा प्रकट हो गए। मैरी ने कहा, "ओह् ! दिस इज रियली अ सरप्राइज—यह तो सचमुच एक विस्मय था।" भूतनाथ मुग्ध मैरी को, महाकवि देव के स्मारक पर ले गया। अब तक वहां स्मृतिस्तम्भ स्थापित हो गया था और उस पर महाकवि की छोटी सी सुन्दर मूर्ति भी थी। शिलास्तम्भ पर देव की रचनाएं कीलित थीं। भूतनाथ ने उसे बताया कि देव कवि जैसा राधा-कृष्ण के स्वकीय प्रेम की तन्मयता का कोई कवि हुआ ही नहीं। उनमें अनुपम संगीत, सौन्दर्य और

तल्लीनता है। ऐसी निमग्नता—सूर को छोड़कर अन्यत्र अलभ्य है। भूतनाथ ने मैरी को महाकवि की प्रेमवाणी के अनुवाद सुनाए।

मैरी ने कहा कि यह तो हमारे लिए कहा गया है। क्या कहा फिर से कहिए। भूतनाथ ने गुनगुनाया : "धार मे धाय धसी निरधार ह्वै जाय फसी उबरी न अबेरी, री अगराय गिरी गहिरी और फेरें फिरी औ घिरी नहिं घेरी। देव कछू अपनो बसु ना रस-लालच लाल चितै भईं चेरी। बेग ही बूड़ि गईं पंखियां, मधु की माखिया, अंखियां भईं मेरी। एक दूसरे के दर्शन में डूब का कैसा अनमोल बिम्ब है, और मैरी अन्त मे कवि देव ने प्रेम युगल की एकता को यों बताया है। मोहित मन मोहन भयो है आजु राधामय, राधा मन मोहि मोहि मोहन भई भयी।" अनुवाद सुनकर मैरी को महाकवि के प्रेममनो-विज्ञान की गहराई पर श्रद्धा उमडी'''ओह! माय किरिस्न, माय नाथ। दीज इडियन्स रियली न्यू द सीक्रिट्स एण्ड इकस्टैसी आफ ह्यूमन लव व्हिच विकम्स ट्रान्सैन्डेन्टल इन द प्रौसिस ''ओह, मेरे कृष्ण! मेरे नाथ! भारतीय कवि प्रेम के रहस्यों और प्रेमोन्माद को सर्वाधिक समझते थे, ऐसा मानव प्रेम जो स्वयं अपनी प्रक्रिया मे सर्वातीत हो जाता है, दिव्य, अलौकिक, अनिर्वचनीय। मैरी ने महसूस किया कि प्रेम कवि मानवहृदयों को जोडते हैं। उसने उस महान मानवप्रेमी कवि को प्रणाम किया "नमस्ते!'''कवि, मैं आपके प्रेमादर्श को निभाऊंगी, मैं मयूरी!"

भूतनाथ और मैरी राधाकृष्णा की मनोदशा मे महाकवि की प्रतिमा के आगे नतमस्तक, आनन्द में अश्रुपात कर रहे थे।

36

भूतनाथ ने गणसमितियों के काम मे रात-दिन एक कर दिया। मैरी ने हिन्दी सीख ली और वह भी जब तब भूतनाथ के साथ दौरे पर जाने लगी। उसे महिला गण-समितियों का समन्वयक बना दिया गया थो वह रुद्रगणो को शस्त्रचालन की शिक्षा भी दिया करती थी। भूतनाथ का नाम सुनते ही, भूमि सेनाओ और उनके सरक्षक भूमिपति, घासकदल के नेता, बेईमान व्यापारी और अधिकारी कापने लगे। भूतनाथ ने सैकड़ों गावों मे उस जमीन पर, जिसे जबरदस्त दादा भूपतियो ने गैर कानूनी ढंग से जुतवा लिया था, भूमिहीनो को कब्जा दिलाया और इस काम मे रैडीकल पार्टियों ने सहयोग दिया। उसके गण विकास अधिकारियों के सिर पर सवार होकर किसानों, मजदूरों को बीज, तकावी, सीमट और शकर आदि दिलवाते और सरकारी सहायता के वितरण मे जो बिकुन बिचौलिए पैदा हो गए थे, उन्हे हटा दिया। दलालो को दपट दिया गया।

किसानों को समय पर बिजली, पानी, ऋण और खाद मिले, इसका मजबूत प्रबन्ध किया गया। इसके बदले किसान स्वयं गणसमितियो को चन्दा देते और रुद्रगणों मे अपने किशोरो को शामिल करते। जो अधिकारी, शिक्षक, पटवारी, पुलिस अफसर या जमीन्दार गड़बड़ करता, उसे चेतावनी दी जाती और न मानने या दादागीरी पर उतरने पर उसे सजा दी जाती। इस सजा का रूप क्या हो, यह स्थानीय गणसमिति और गणेश निश्चित करते थे। पहले चेतावनी, फिर अखबारबाजी, पुनः प्रदर्शन, घिराव और अधिकारियों से मिल कर कार्यवाही की कोशिशें और जब सारे उपाय व्यर्थ हो जाते तो

रुद्रगण शारीरिक दण्ड देते और गवाहों के अभाव से न्यायालयों से साफ छूट जाते।

भूतनाथ ने मुहल्लों से लेकर ब्लाक तक और विकास केन्द्रों से जिला तक, फिर जिलो से कमिश्नरी और उसके बाद प्रान्तीय स्तर तक समितियों का पिरामिड खड़ा किया। सर्वोच्च परिषद, प्रान्तीय स्तर पर बनती, जहां गणो के आपसी विग्रह भी अन्तिम रूप से तै कर दिए जाते। प्रत्येक उपखण्ड समिति अपना अखबार निकालती या एक दीवाल को परचों, पोस्टरो, शिकायती पत्रों के लिए आरक्षित कर देती जहां लोग कष्टों और कटकों या कष्टदाताओ का वर्णन करते। रोज शाम को स्थानीय धरातल से प्रान्तीय स्तर तक इनका आकलन होता और कार्यवाही का प्रकार सुनिश्चित किया जाता।

गरीब गुरबा जो पहले रिरियाते थे, अब सिर उठाकर चलते और अपना काम निबटाकर, गणसमितियों के कार्यालयो पर पहुंच कर स्वेच्छा से सक्रिय हो जाते। पार्टीबन्दी, व्यर्थ-कलह, जमीन-जायदाद पर मतभेद, गृहयुद्ध आदि को हतोत्साहित किया जाता। पंचायत कराई जाती, समझाया-बुझाया जाता, कुछ समय तक कलही लोगों को सहा जाता और किसी तरह न मानने पर सामाजिक-बहिष्कार कर दिया जाता। यदि ऐसे व्यक्ति हिंसा पर उतर आते तो उनको जवाब दिया जाता।

जाहिर है कि इतने बड़े काम में गलतियां होती। गणसमितियो में ही ठन जाती। जाति, धर्म, वंश और घर के आधार पर पक्षपात होते लेकिन उनके निराकरण के लिए तुरन्त उपाय किए जाते और बात बिगड़ते-बिगड़ते बन जाती। भूतनाथ, श्याम दीक्षित, चिरंजीव और दूसरे साथियों के साथ राजधानियों की ओर दौड़ लगाता और सरकार को समझाबुझा कर लघु उद्योगो, सिंचाई के साधनों, सड़क निर्माण और दूसरे विकास के कार्यों को खुलवाने के लिए कोशिशें करता। उसने बेकार नवयुवकों की सूचियां बनवाकर, उन्हें योग्यता और शक्ति के अनुरूप काम दिलवाने का भी सरंजाम किया जिनकी नौकरी लग जाती या छोटा मोटा उद्योग खुल जाता, उसके घर के व्यक्ति गण-समितियो के तरफदार बन जाते।

निष्क्रिय 'किसान सभाओं' को भी सक्रिय होना पड़ा और पुराने कार्यकर्त्ता, जो दुःखी होकर घर बैठ गए थे, उन्हें कह-सुनकर बाहर लाया गया। जगह-जगह बैठकों, बहसों, सभाओं का सिलसिला चल पड़ा। भूतनाथ का वचन था कि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी संगठन में काम करे, यथाशक्ति सक्रियता दिखाए और अपने सिवा, दूसरे के हित की सोचे। हित तो परस्पर जुड़े हुए हैं। व्यक्तिवाद बीमारी है, उसका इलाज किसी सगठन में शामिल होना है।

मयूरी और दीपा ने भी क्रमशः नगरों और गांवों में महिलाओं के बीच काम करके उन्हें सगठित किया। घर-घर स्वच्छता, शिक्षा और विकास का वातावरण बनने लगा। सरकार के प्रौढ़ शिक्षा विभाग का काम सीमित और औपचारिक था। उसे सहयोग दिया गया। इसके सिवा, जनगण की अनौपचारिक शिक्षा के लिए हजारों-लाखों व्यक्ति, खाली समय में, अनपढ़ों को पढ़ाने लगे। विवाह, मृत्युभोज, धनप्रदर्शन-परक उत्सवों को कम खर्चीला बनाकर, सम्पन्नों से रुपया लेकर उसे जनकार्यों में लगाया जाने लगा। गलियों को पक्का करने, उनकी सफाई आदि कार्यों पर बल दिया गया। सामूहिक श्रमदानो का आयोजन करके मार्गों का आवागमन के योग्य बनाया जाने लगा। जहां सरकारी निर्माण कार्य होते वहां भ्रष्टाचार न हो, इसके लिए निगहबानी होती··· जनजागरण और जनसगठन का एक ढांचा बनता गया।

भूतनाथ और मैंरी की असलियत अधिक समय तक छुपी नहीं रह सकी

लेकिन यह बात मान ली गई कि मयूरी पुजारी की धर्म-पुत्री है। प्रसिद्धि यह हुई कि पुजारी जी जब क्रान्तिकारी कार्य करते थे तब किसी विदेशी महिला से उनके सम्बन्ध बन और मैरी को उन्होंने गोद ले लिया। वह विदेशी माता, मैरी को लेकर, पुजारी जी को कालापानी की सजा हो जाने के बाद अपने देश लौट गई। वहां मैरी पढ़ती रही और भूतनाथ के विदेश जाने पर वह उससे मिली क्योंकि पुजारी जी की दस्तावेजों में, जो मैरी की मा के पास थे, जिक्र था कि गदाधरसिंह का पिता उसका मित्र है। यह जानकर कि मैरी, पुजारी जी की लडकी है, भूतनाथ उसके प्रति आत्मीयता रखने लगा जो बाद में प्रेम मे बदल गयी। मैरी ने भूतनाथ को बहुत से भेद दिए और वह उसके साथ भारत आ गई। अब वह यही रहेगी और भारतीय जनता की सेवा में संलग्न रहेगी। वह भूतनाथ की प्रेमिका नही पत्नी है, कितनी सुन्दर, प्रिय और पतिव्रता है, सेवा मे सावित्री, संघर्ष मे महिषमर्दिनी'''मयूरी – महामाई।

भूतनाथ ने पत्रपत्रिकाओं में जनपक्षधर पत्रकारिता का मयार कायम किया। मैरी अगरेज़ी पत्रों में लिखती। मयूरी नाम से वह विदेशी पत्र-पत्रिकाओं की संवाददात्री बन गई और पत्रकारिता के पारिश्रमिक से उसका व्यय पूरा होने लगा यों मैरी चाहती तो अपने सम्पन्न घर से डालर मंगा सकती थी पर भेद खुल जाने के भय से भूतनाथ ने रोक दिया था कि मैरी ऐसा न करे अन्यथा उसके घर से टोह पाकर अमरीकी गुप्तचर उसके पीछे पड़ जाएगे।

'''भूतनाथ की सलाह के बावजूद प्रधानमंत्री ने दो जून को अमृतसर के स्वर्णमंदिर पर सेना भेज दी। विकट मारकाट हुई। सिक्ख सिरफिरे अकालतख्त में जम गए। भारी खूनखराबे के बाद, अकाल तख्त को ध्वस्त कर देने पर जर्नैलसिंह भिंडरावाले और उनके पागलपंथियों का सफाया किया जा सका। धर्मभीरु सिख जनता को गहरा धक्का लगा। उसने अपमानित महसूस किया और आतंकवादी गतिविधिया, सेना के बन्दोबस्त के होने पर भी बढ़ती गई। सिक्ख सिरफिरे खार खाए हुए थे और वे किसी भी कीमत पर बदला लेना चाहते थे। पाकिस्तानी, अमरीकी और चीनी ताकतें उन्हे उकसा रही थी और धन और शस्त्रों से उनको मजबूत कर रही थी। सेना मे भी हजारों सिक्ख सैनिकों ने विद्रोह कर दिया पर वे पकड़े गए और उनमे से बहुत से मारे गए या दण्डित हुए। इससे आतंकवादी सिक्खों मे प्रतिशोध की भावना बढ़कर आसमान छूने लगी। आम सिक्ख जनता दुःखी तो थी पर वह सिक्ख-सिरफिरों का साथ नही देती थी। यही एक शुभ लक्षण था। शेष तो सर्वत्र आतंक और हिंसा का माहौल था। सबसे दुःख देने वाली प्रवृत्ति यह थी कि शासक दल के विभिन्न ग्रुपलीडर, राजनैतिक सत्ता और सग्रह के लोभ मे, युवा-सिरफिरों का एक-दूसरे के खिलाफ इस्तेमाल करते थे। जिस तरह शुरू मे शासक दल ने जर्नैलसिंह को, अकालियों के खिलाफ खड़ा किया था, उसी तरह उसके दलपतियों ने, कई ऐतिहासिक नामों से आतककारियों के ग्रुप बनवाए और उनसे एक दूसरे को मारने, तस्करी करवाने, लूट मचाने और अपनी कुत्सित राजनीति जमाने की ऐसी हरकतें की कि पुलिस किसी के खिलाफ कुछ नही कर पाती करना भी नही चाहती, कौन हिटलिस्ट में अपना नाम लिखवाए?—यह डर हड्डियों मे समा गया था जो पंजाब मे सेना के आ जाने से दूर हुआ पर पूरी तरह यह डर न जनता से दूर हुआ, न पुलिस और न स्थानीय कर्मचारियों से।

पक्ष और विपक्ष, दोनों राजनैतिक धड़ों का पूर्ण व्यावसायीकरण हो गया था और महत्त्वाकाक्षा ने निष्ठुरता को नादिरशाही रूप दे दिया था।

काश, इतना खून, सर्वहारा और अल्पहारा के पक्ष मे, शोषकों, भ्रष्टाचारियों और शैतानों के पक्ष में बहता, धर्मयुद्ध की जगह वर्गयुद्ध होता'''जनता की मासूमियत-मज़हबपरस्ती और जनशत्रुओं द्वारा आयोजित राजनीति के बर्बरीकरण से सब कुछ, जो भद्र और भव्य था, तहस-नहस हो गया !

'''महीनों यही हालत रही। सरकार अतिवादियों की मनमानी और मारकता को कोसती, हिन्दुओं को यह दिखाती कि देखो, सिक्ख पृथक्तावादी हो रहे हैं, देश को खडित कर रहे हैं और अकाली उग्रवादी, केन्द्रीय सरकार को गरियाते कि यह सिक्खों का 'धर्मयुद्ध' है। सिक्खों ने जिस तरह मुगल केन्द्रीय सत्ता के विरुद्ध लड़ाई लड़ी, उसी तरह वे केन्द्रीय ज़ालिम हुकूमत के खिलाफ भिड़ेंगे और यदि भारत में उनकी 'कौम' को उचित सम्मान और स्वायत्तता नही मिलती तो वे 'खालिस्तान' बनाकर ही मानेंगे। वे गुरुद्वारो में सरकार से लड़ने के लिए एकता की अपील करते और अमृत प्रसाद चखा कर बलिदान की मनोदशा बनाते हुए दिलों में शहीद हो जाने की दीवानगी भर देते।

इस रस्साकशी का परिणाम यह हुआ कि प्रधानमंत्री के सुरक्षा सिपाहियों में वर्षों से सेवारत दो सरदारो ने प्रधानमंत्री को धोखे से मार डाला। भूतनाथ हाथ मल कर रह गया कि उसका परामर्श नही माना गया। सुना गया कि प्रधानमंत्री ने कहा कि वर्षों से विश्वसनीय सिक्ख सिपाहियो को सुरक्षा गार्डों की टोली से वे नही हटा सकती और यही गलती उनके प्राण ले बैठी। सारा देश शोक में डूब गया।

भूतनाथ यों शासकदल और उसके नेता को पूंजीवादी-जनतंत्र का प्रतिनिधि मानता था पर वह राष्ट्रप्रेमी और धर्मनिरपेक्ष तो थी ही। उन्होने पाकिस्तान के टुकड़े कराकर, बाग्ला देश बनवाया था। तब वह देवी दुर्गा की तरह देश में पूजी जाती थी। वे एक हद तक अमरीकी साम्राज्यवाद का विरोध करती थी और उन्होंने ही सोवियत रूस से सधि की थी। उन्होंने गुट निरपेक्ष राष्ट्रों के संगठन को भी मजबूत किया था और एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका की करोड़ों जनता की अस्मिता और स्वतंत्रता की वह आशा एव अवलम्ब थी। ऐसे चमत्कारक व्यक्तित्व को फिरकापरस्त प्रतिशोध में विक्षिप्त कुछ सिक्खों ने खत्म कर दिया और कुछ सिक्खो ने कहीं-कहीं विजय की खुशिया भी मनाईं।

हिन्दुओ में इसकी उग्र-प्रतिक्रिया हुई। जगह-जगह सिक्खों पर हमले हुए। प्रधान-मंत्री की हत्या से शासक दल तो क्रोध मे उन्मत्त हो गया। उसके कुछ नेताओं और अधिकारियों के इशारे पर दिल्ली में सिक्खो पर अत्याचार हुए। सैकडो सिक्ख मारे जलाए गए और स्त्रियों और बच्चो को भी नही बख्शा गया। तथापि भारतवर्ष की जनता की यह बुद्धिमत्ता थी कि यह नरसंहार कुछ स्थानो तक ही सीमित रहा अन्यथा देश पुनः विभाजित हो जाता।

भूतनाथ को *लगा कि इस हालत में चुपचाप बैठना कायरता है। मैरी और हम* बहुत कुछ कर सकते हैं। गृहयुद्ध की स्थिति बन रही है, जिसका रूप वर्गीय नही, जन-वादी नही, साम्प्रदायिक होगा। पाकिस्तान बनने के पूर्व जैसी हालत थी, वैसी ही दशा हो रही है। यदि पंजाब में हिन्दुओं का संहार शुरू हो गया, आम सिक्ख जनता, गांवो-गलियो, कस्बो और नगरों मे हिन्दुओं पर टूट पड़े तो सेना कहां तक रोकेगी ? '''और उस स्थिति में पाकिस्तान लड़ाई छेड सकता है, कुछ भी हो सकता है। भूतनाथ रात-दिन सोचता, उसे नीद नही आती। अनिद्रा अवस्था मे वह रात-रात टहलता रहता या काम में जुटा रहता। उसे अक्सर तन्द्रा में रोज़ी बुलाती—

"गोस्ट ! माय हस्बैंड, आय डायड अनफुलफिल्ड। आय एम अलोन, थस्टी एण्ड हंगरी फार लव। डार्लिंग, कम नाउ'' व्हाट इज़ देअर इन द रूथलेस वर्ल्ड आफ ह्यू मन वीग्स ? मैरी इज़ फुलफिल्ड एन्ज्वायिड हर लाइफ विद यू। शी कान्ट कम्प्लेन नाउ। शी कैन लिव इन योर स्वीट मेमोरीज़, विद हर चायल्ड, शी इज गोइंग टु हैव'''यू विल लिव देयर इन द फार्म आफ योर सन मैरी विल गिव वर्थ टू ए सन, द ट्रू कापी आफ माय गोस्ट · सो द मिथ आफ भूतनाथ विल नैवर डाय भूतनाथ इज़ इम्मोरटल, एजयू से। योर सन विल कम्पलीट योर रिमेनिंग वर्क आय देयरफोर वैग योर प्रजेन्स हियर इन दिस लायफ। आय एम अ गोस्ट एण्ड विदाउट यू आय वेल एण्ड वीप'''डोन्ट यू फील माय सैडनैस ? कम, कम, ओ मेरे भूतनाथ, मेरे पति, मैं तृप्त हुए विना ही मर गई। मैं अकेली हू, प्रेम के लिए तृषित, बुभुक्षित प्रिय आ जाओ अब वहां उस निर्दय मानस संसार मे क्या रखा है ? मैरी ने पूर्ण जीवन जिया है। उसने तुम्हारे साथ सुख भोग लिया। अब वह शिकायत नही कर सकती। वह तुम्हारी मधुर स्मृतियों में जीवित रह सकती है। वह गर्भवती है, उसके पुत्र होगा, तुम्हारा अंश, तुम्हारा रूप। तुम अपने पुत्र के रूप मे जीवित रहोगे, तुम्हारा प्रतिरूप होगा तुम्हारा आत्मज। इसलिए भूतनाथ का मिथक नष्ट नही होगा। उसकी क्या चलेगी। भूतनाथ या गदाधरसिंह कभी नही मर सकता। वह अमर है। तुम्हारा पुत्र, तृतीय भूतनाथ, तुम्हारा शेष कार्य पूरा करेगा। मैं यहा उपस्थित होने की तुमसे भिक्षा मागती हूं। मैं भूतयोनि मे हूं, भूतप्रिया हूं पर अपने भूतनाथ के बिना मैं रात-रात रोती-चीखती हूं। क्या तुम मेरी वेदना नही महसूसते ? अब आ जाओ प्रिय।"

भूतनाथ के दिल्ली जाने के प्रस्ताव पर मैरी ने ज़िद की कि वह दीपा को काम सौंप कर साथ चलेगी। भूतनाथ ने कहा—

"मैरी। क्या तुम भी मेरी तरह स्नायु-दुर्बलता की शिकार हो रही हो ? तुम इस हालत मे ऐयारी करोगी ? इसका मतलब है, तुम्हें मुझसे मोह है, मेरे अंश से नहीं जो तुम्हारे गर्भ मे पल रहा है, तीसरा भूतनाथ ! पहले भूतनाथ ने तिलिस्मों का भेद खोला, उन्हे तुड़वाया, दूसरे ने वास्तविकता के तिलिस्म को तोड़ने का सिलसिला बैठाया, तीसरा भूतनाथ उसे तोड़ेगा, नही तो चौथा, पाचवा, छटा, सातवा'''जब तक मनुष्य, अपने दुश्मनो के जाल को तोड़ेगा नही, तब तक भूतनाथ उपजते रहेंगे'''तुम इस अंधेरे मे ज्योति के प्रवाह को समाप्त करना चाहोगी क्या ?"

मैरी ने अपने अस्तित्व की महत्ता को समझा। किन्तु भूतनाथ के बिना उसके होने का क्या अर्थ रह जाएगा ? उसके नेत्रो की भीलें भर आईं। आसू पोछते हुए उसने कहा —"मेरा मन गवाही नही दे रहा है कि तुम जाओ। वहा दुश्मन तुम्हे छोड़ेंगे नहीं''' आश्चर्य यह है कि अभी तक उन्होने आघात क्यो नही किया ? तुम उनकी ताकत को कम करके आक रहे हो। तुम्हारी सरकार का एक भी भेद उनसे छिपा नहीं है। इस देश मे जो भी गदर मच रहा है, जहा भी, वह उन्ही के कारण'' तुम्हे अपने पर बहुत अधविश्वास है कि तुममे तिलिस्मी किस्सो का नायक सक्रिय है पर यह तुम्हारा भ्रम है। मिथक, भोलेभाले लोगो मे मकबूल बनने के लिए तो उपयोगी होते हैं, उनसे एक प्रभामण्डल बनता है, तुममें भारतीय एक गैबी शक्ति देखते हैं और प्रेरणा लेते हैं, सहारा मानते है, तुमने उन्हें निराश भी नही किया · लेकिन तुम भूत नहीं, एक मनुष्य हो'''रोज़ी ने तुम्हें एक बार बचा लिया था अब कौन बचाएगा ?"

"तुम। मैरी। यह विश्वास होते ही कि तुम, मेरे वियोग या विपत्ति में, सयोग

और सुख में इस विराट जनसमूह के साथ अपने को अभिन्न मानकर जो काम छिड़ा है, उसे जारी रखने में मदद करती रहोगी और तृतीय भूतनाथ को पालोगी, मैं निडर होकर काम कर सकूंगा···मैं इसीलिए विवाह के पक्ष में नहीं था लेकिन न रोज़ी मानी, न तुम···तुम मेरी कवच हो, रोज़ी मेरे साथ है ही ··मयूरी, मुझे मारना मुश्किल है, तुम्हारी सी० आई० ए० के लिए···मैं अमर सत्ता हूं, मैं भूतनाथ!"

"तो वचन दो कि तुम मेरे और भावी भूतनाथ के लिए लौट आओगे, प्राण संकट में नहीं डालोगे?"

"तुम जासूस होकर ऐसा वचन चाहती हो?···स्वभावतः मैं चाहूंगा कि सकुशल वापसी हो···मैरी। तुम मुझे दुर्बल बना रही हो, हंस कर विदा देना और पति न रहने पर कर्त्तव्य पर दृढ़ रहना तुम्हें शोभा देगा, अततः तुम गदाधरसिंह की प्राणप्रिय अर्धांगिनी हो। हो न?"

मैरी लाजवाब हो गई पर उसने भूतनाथ को खतरों से न खेलने की सौंगध दिलाई। उसने अपने फूले हुए उदर पर भूतनाथ का हाथ रखा "देखो। तृतीय भूतनाथ तुम्हारी तरह कितना व्यग्र और उग्र है!"

इसी क्षण दीपा, वेणीमाधव और चिरजीव यादव ने प्रवेश किया। मैरी आंसू पोंछ कर सुस्थिर होने लगी। भूतनाथ कलाकार से भुजभर भेंटने के बाद बोला—*"कलाकार जी। आप कहां थे?"*

"मैं बम्बई में हूं श्रीमान्! कराल दुदकरे का काम करता हूं ··आता रहता हूं, कभी दीपा आ जाती है·· पर आपसे मिलना तो भूत से मिलना है, सर्वदा अदृश्य, आज यहां, कल वहां। मयूरी भाभी को कई बार बासुरी सुना गया हूं सोचता हूं कि जब तक तृतीय भूतनाथ जन्म न ले, तब तक रोज एक बार संगीत सुनाऊं।"

"और मैं उसे आपकी वीरगाथा सुनाती हूं भाई।" दीपा ने गर्व से कहा।

"और मैं उसे व्यवस्था के चक्रव्यूह का भेद बताता हूं"—चिरजीव ने बताया।

मयूरी के मुख पर कृतकृत्य होने का भाव आया। भूतनाथ भी स्नेह से पुलकित हुआ किन्तु वह किसी और धुन में था। उसने कहा—"चिरन्जीव! तातिया, श्याम दीक्षित, खान रहमत, ज्वालामुख आदि को भी बुला लो।"

···सबके आ जाने पर भूतनाथ ने उन्हें काम पर मुस्तैद रहने के लिए कहा। तातिया रुद्रगणों को, श्याम दीक्षित गणेशों को, रहमत खां जनगणों को देखें और ज्वालामुख प्रचार का कार्य निष्ठा से करें।

"लेकिन आप पहले भी आए हैं, अबकी बार तो आप ऐसे कह रहे हैं गोया हमेशा के लिए···?"

तातिया ने रहमत के मुंह पर हाथ रख दिया।

"ऐयार या पत्रकार से चलते समय प्रश्न नहीं किये जाते कि वह कहां जा रहा है या कब आएगा, सब हालात और हादसे पर निर्भर है···दरअस्ल, मैं यह देखना चाहता हूं कि मैं अपरिहार्य हूं या मेरे बिना भी जनकार्य चलता रह सकता है?···मैं समझता हूं, काम रुकेगा नहीं···।"

"यह सब ठीक है, काम चलेगा···लेकिन मैं भी आपके साथ चलूंगा।"—तातिया तिवारी बोला।

"नो, नेवर, नहीं, तुम यहीं रहोगे।"

तिवारी हतप्रभ हो गया। समझ गया कि मामला गूढ़ और गंभीर है। नतशिर हुआ।

"दीपा। मेरी अनुपस्थिति में मयूरी तुम्हारे जिम्मे है। कुछ अघटित घटे तो तुम इसे अपने घर ले जाना नया घर पूरा हो गया न ?"

"हा भाई, तुम गृहप्रवेश के समारोह के बाद जाना। मयूरी भाभी की चिंता क्या है ? वह तो हम सबकी चिंता कर सकती है। भैया, गांव के अंधविश्वासी तुम्हें तो भूत मगर भाभी को महामाई—मयूरी देवी—समझते हैं, सच !"

"जनता इतनी परेशान है कि उसका ज़रा सा काम कर देने पर वह उपकारियों को देवी, देवता बना देती है। वह इस तरह अपनी कृतज्ञता प्रकट करती है। जन कभी कृतघ्न नही होता, महाजनों की आंखो मे ही सुअर का बाल होता है'''जन अब तलक अपने उपकारी राम, कृष्ण, जीसस क्रायस्ट, महादेव और मोहम्मद को पूज रहा है और प्रेरणा ले रहा है। उसने गांधी जी को भी अवतार माना था। प्रजा हमेशा पुराणकथा रचती है और उसी के बल पर मनुष्यता को नए-नए आयाम देती है।'''तो, साथियो। अलविदा !"

एकांत मे जाकर मैरी भूतनाथ के वक्ष से लग कर फफक कर रोई। बार-बार दिलासा देने पर भी उसे पता नही किसी अनिष्ट की आशका हो रही थी। भूतनाथ ने मैरी को प्यार किया और दृढ़ रहने की शपथ दिलाकर उसने बाहर आकर सब से विदा ली। रहमतखा ने, 'खुदा हाफिज़ कहा और सबने हाथ जोड़े। दीपा और तातिया का सिर सूंघ कर और उनके बहते आसुओ को पोछ कर उसने झोला उठाया और बिना पीछे देखे, लम्बे डग रखता हुआ चला गया। लपक कर पुजारी ने टिकिसी के देवाधिदेव के मदिर का घंटा बजाया और ऊपर से भूतनाथ की 'यात्रा शुभ हो' का आशीर्वाद दिया। वह लगातार रुद्रस्तोत्र बोलता चला गया।

'''कनाडा में नरम अकाली दल के समर्थक प्रीतमसिंह को बचाने, उग्रपंथियो के सारे भेद भारत सरकार तक पहुचाने, अमरीका मे कई शस्त्र-प्रशिक्षण केन्द्रो की जानकारी लेने, डरावने सरदार और पहलवान ऐजेण्ट को मारने तथा मिस्टर शेफ का गला घोंटने एवं समग्रतः अमरीकी गुप्तचर सस्था, सी० आई०ए०की भारत विरोधी जासूसी मे परदा उठाने के कारण अमरीकी भेदिये भूतनाथ को खत्म करने के लिए प्रतिबद्ध थे। प्रधानमत्री की हत्या, एक तरह से, उन्ही की साजिश से हुई थी। अब उन्हें डर था कि भूतनाथ प्रधानमंत्री-सचिवालय, भारतीय गुप्तचर ऐजेन्सी और दूसरे मत्रालयो में विराजमान उनके मुखबिरो को बेनकाब न करा दे। इसलिए उसका ज़िन्दा रहना हानिकर था। इसके सिवा, भूतनाथ इन्कलाबी राजनीति चला रहा था और भारतीय क्रान्तिकारी पश्चिमी देशो के आर्थिक साम्राज्यवाद और प्रभाव के घोर शत्रु थे। वे सोवियत रूस की भी आलोचना करते थे, चीन की भी किन्तु उनसे उनके विचार और मूल्य मिलते-जुलते थे, इससे उनमे कभी भी एकता हो सकती थी। वे आपस में लड़ते हुए भी, सरमाएदारी से जूझते थे और मध्यमार्गी भारत सरकार का पलड़ा समाजवाद की ओर झुकाए रहते थे। ये वामदिशा की ओर झुकाव और राष्ट्रीयकरण के निर्णय दुश्मनों को असह्य थे। भूतनाथ को मार डालने का मतलब इस वामोन्मुख प्रवृत्ति के एक स्तम्भ को गिरा देना भी था।

भूतनाथ जब बदले हुए वेष में दिल्ली जंक्शन पर उतरा तो थोड़ी ही देर मे उसे शक हुआ कि उसका पीछा किया जा रहा है। उसकी छटी इन्द्रिय जग गई। यद्यपि वह

परिवर्तित वेषभूषा में लंगड़ाता हुआ, अपाहिज की तरह चल रहा था लेकिन उसकी लम्बाई और उसकी दृढ़ ठोढ़ी छिप नहीं सकती थी। शायद अमरीकी और पाकिस्तानी जासूसों ने उसे पहचान लिया था। उसने झोले को बगल में कसकर दबाया और जेब के रिवाल्वर को थपथपाया। वह चाल बदल कर स्टेशन से पार हो गया। वह रिक्शे और टैक्सी से बाहर नहीं गया और भीड़ में मिल कर अदृश्य हो गया। शत्रु भेदिए हाथ मलते रह गए।

भूतनाथ ने नए प्रधानमंत्री के नेतृत्व में दिल्ली को हिन्दू-सिख दंगों के बाद, शान्त होते हुए पाया पर भीतर वही आतंक और अशांति थी, नए प्रधानमंत्री की हत्या का भय सर्वोपरि था। भूतनाथ ने गुस्से मे दांत भींचे।

एक रात भूतनाथ जीरो रोड पर, शालीमार बाग की ओर अपनी धुन में जा रहा था। उसे पता चल गया था कि अमरीकी गुप्तचरों के सरगनाओं ने सबसे ज्यादा हानिकर भूमिका मिस्टर होम्स ने अदा की थी। मिस्टर होम्स, मिस्टर शेफ्ट्सबरी के दोस्त और साथी थे और भूतनाथ द्वारा मिस्टर शेफ की हत्या के बाद वह भूतनाथ के लिए काल बने हुए गुस्से मे फ़ूंकर फूंक रहे थे। भूतनाथ ने मोटररिक्शा किया और शालीमार बाग की कालोनी के लिए चल पड़ा। दिन भर की दौड़धूप से वह थका हुआ था, इसलिए शालीमार बाग मे अपने एक समर्थक मित्र के घर जाकर विश्राम करना चाहता था। थकावट और सोचविचार की सघनता के कारण उसका स्नायुमण्डल उत्तेजित था और उसके दीप्त मस्तिष्क-केन्द्र आभासों को उत्पन्न कर रहे थे।

उसमें तीन चित्र, एक के बाद एक, उभरे। पहला रोज़ी का था जो उसे आगे उड़ती हुई, कभी अगल-बगल दौड़ती हुई बार-बार कह रही थी कि उसे अब यह दुष्ट दुनिया छोड़ देनी चाहिए और प्रेत योनि के छाया संसार मे आकर उसके साथ सहवास करना चाहिए। दुःख और चिन्ता से रोज़ी का मुख सफेद पड़ गया था और बहते हुए आंसू सूख सूख कर उसके गालों पर जम रहे थे। भूतनाथ को लगा, उसके भीतर बैठा कोई कसाई, उसके दिल और जिगर को काट-काट कर उसका कीमा बना रहा है और उससे दर्द की लहरें उठ-उठ कर उसे कंपा रही है। उसके मुख से एक उच्छ्वास निकला साथ ही स्वतः उच्चरित शब्द भी, "रोज़ी! मैं आ रहा हूं, अब तुम रोओ मत!"

मोटर रिक्शाचालक ने सुन लिया। वह चौंक कर भूतनाथ की ओर देखने लगा —"ए बाबू साहब। आप क्या बोल रहे हैं, होश मे तो हैं?···कोई तकलीफ है आपको?"

भूतनाथ सावधान हुआ और रोज़ी का बिम्ब अदृश्य हो गया। कुछ समय तक तिपहिया की धड़धड़ और धक्कों में कोई आभास नहीं आया पर कुछ क्षण पश्चात् पुनः एक नयी प्रतिमा उदित हुई। उसका ध्यानवृत्त फैलने लगा और उसमे करोड़ों दीन-दुखियों की दुर्गतियों के चलचित्र चलने लगे। उनके बीच नए प्रधानमंत्री का भव्य चेहरा उभरा और वह उन्हें पुराने घिसे-पिटे नारों को दुहराते देखकर जबड़े चलाने लगा जैसे किसी को दांतों मे रख कर पीस रहा हो ए बबुए तो सिर्फ फटे सुराखों में थिगड़े लगाएंगे और देश की रक्षा के नाम पर वोट बटोर कर राजसिंहासन पर शोभायमान हो जाएंगे। ये प्लास्टिक के बने हुए नेता हैं, इनमे जनदशा देखकर कोई गहरा संताप, अगाध क्रोध, बुरों और बदमाशों के विरुद्ध अथाह घृणा ही नहीं है ··ये परस्पर विरोधी हितों में संतुलन करके यथास्थिति बनाए रखने को राष्ट्र-हित समझते हैं और सेना, तथा पुलिस के बल पर शोषक और शोषित दोनों को विधि और व्यवस्था के नाम पर पालते

रहेंगे—भेड़िए भी रहें, भेड़ें भी, अंधविश्वास भी फलें फूलें, विज्ञान भी, मजहबी—जुनून पैदा करने वाले भी पनपें, विवेक और प्रकाश के पैरोकार भी सबको आज़ादी, चोर को भी, साहूकार को भी, कर्जदाता को भी, ऋणग्रस्त को भी···सचमुच, भारत में आदर्श मिश्रित-व्यवस्था है, सब चीजें गडमगड्ड, सबमे मिलावट, सब अशुद्ध और भ्रष्ट ·· पर क्या भव्यता है भाषणों और भावनाओं में···क्या प्रदर्शन है, क्या बढ़िया प्रपंच है ···हः ह हः ह हः।"

पुनः रिक्शाचालक चकित हुआ। उसने फिर टोका—"साहब! आप बहुत सोचते हैं·· पहले रोनी सूरत थी, अब हंस रहे हैं। कमाल है।"

भूतनाथ विद्रूप की हसी रोक कर उस चालक की तरफ यो देखने लगा गोया किसी और लोक से झांक रहा हो। उसके बाद वह पुनः शांत होकर बैठ गया और तिपहिए की भडभड मे उसके आभास अस्त हो गए।

किन्तु थोड़ी देर बाद भूतनाथ के मन मे पुनः अतिकल्पना जाग्रत हो गई। उसने देखा कि चारो तरफ लोग, एक दूसरे को निशाना बनाए हुए हैं। हर आदमी, दूसरे की घात मे दावपेंच लगा रहा है। बहाने अलग-अलग हैं लेकिन क्रिया एक ही है, 'मारो'। भूतनाथ ने सर्वत्र पाया कि अनेको की छाती मे छुरे चाकू घुसे हुए है, कोई गोली खाकर तडप रहे है, कही विस्फोट हो रहे हैं और मलवा आकाश में उड़ता हुआ नए बिम्ब बना रहा है, जगह-जगह आग लगी हुई है। बसें, बसो से, रेलें, रेलो से बडी उमगो से टकरा रही है और घायलो की कराहो-चीत्कारों का एक नया संगीत बज रहा है। जलते हुए मकान, दूकानें, प्रतिष्ठान जो धुआ छोड़ रहे हैं, वह मानो आसमान मे आधुनिक कला को प्रदर्शित कर रहा है···भूतनाथ ने अपने को एक विशाल श्मशान मे खड़ा पाया, जहा गिद्ध, कुत्ते और सियार मरों का मांस नोच रहे है और उनकी 'चपचप' की आवाजों के अलावा डाकिनी-शाकिनी घायलो का रक्त पीकर खुशी मे ई ई ई ई ई का नाद कर रही है—ई ई ई!

इस निरर्थक जिघांसा और बर्बरता को क्या इक्कीसवी शताब्दी का पूर्वाभास मान लेना चाहिए? क्या इसमे आगामी सदी के परमाणुयुद्ध से होने वाले सर्वनाश का अपशकुन सिद्ध होने जा रहा है? क्या यह प्रलय के पूर्व का रिहर्सल हो रहा है? क्या मानव सभ्यता, विकास के इस बिन्दु पर आकर अब अन्तोंमुख हो चुकी है, इसे कोई बचा सकता है? क्या यह रक्तप्रियता मनुष्य के पापो का परिणाम है···लेकिन किन लोगो के पापो का? क्या यह मानव-ससार रहने योग्य रह गया है · सुनते हैं, पाकिस्तान ने परमाणु बम बना लिया है भारत जब चाहे बना सकता है शायद बना भी रहा हो ·· तब बरबादी में कसर क्या है? आतक के सतुलन से ये जनशत्रु शांति बनाए रखना चाहते हैं·· लेकिन आतक का सतुलन कब तक कोई गलती कर बैठा, किसी को गुस्सा आ गया, कोई विक्षिप्त हो गया तो वैश्विक स्तर पर प्रलयकर-आतिशबाज़ी शुरू हो जाएगी और ज्ञानियो और कवियो के सपनो का यह सुन्दर विश्व नष्ट हो जाएगा···। भूतनाथ ने बड़ी ज़ोर से 'आह' कहा तो रिक्शाचालक ने पीछे हाथ बढ़ा कर भूतनाथ को हिलाया—

"साहब, आपका दिमाग तो ठीक है? आप यह क्या कह रहे हैं?"

"नही, तुम कहना चाहते थे कि मैं पागल हूं···तुम पागल नही हुए अब तक क्यो? क्या नाम है तुम्हारा भाई?"

"श्यामलाल" और रिक्शाचालक ने अट्टहास किया।

"हम पागल हो जाएं तो बालबच्चों को कैसे खिलाएंगे ? हमें पागल होने का हक कहां है ?" श्यामलाल ने कहा।

और दोनों ने एक साथ ठहाका लगाया।

रिक्शा पुनः अपनी धड़धड़ाहट से दोनों का ध्यान अपनी ओर खीचने लगा। मोटर रिक्शे ने सोचा होगा, इन इसानों से तो हमी बेहतर हैं, अपने रास्ते पर अनवरत बढ रहे हैं और इन्हें इनके गंतव्य तक पहुंचा रहे है। इनके कल-पुर्जे खराब हैं इनके इंजिन बिगड गए हैं और ब्रेक ढीले हो गए हैं।

···तभी एक कार विपरीत दिशा से मोटररिक्शे के पीछे नमूदार हुई। चालक ने दर्पण में देखा कि वह सीधे उसकी सीध मे चढी चली आ रही है। उसे ताज्जुब हुआ। वह डर गया और उसने बाएं किनारे की ओर रिक्शे को मोड़ा किन्तु कार ने भी वैसा ही किया। अब चालक ने भय से भूतनाथ की ओर देखा जो पहले ही समझ गया था कि खतरा है। उसने पाया कि बस्ती दूर है और आसपास सन्नाटा है।

भूतनाथ ने चालक को रिक्शा धीमे करने के लिए कहा। जब तक वह रोके तब तक वह झोले को बगल मे कसकर गेंद की तरह उछला और बाईं ओर फुटपाथ पर लुढकता हुआ सड़क के किनारे के नाले मे जाकर गिरा। उसने चालक से कह दिया कि उसे कोई डर नहीं है। वह रिक्शा रोक ले और जमीन पर लेट जाए। तब तक कार पास आकर रुकी और उससे चार आदमी हाथो मे गनें लिए उतर पड़े। ड्रायवर की सीट पर एक संभ्रान्त शानदार सूट-बूट पहने आदमी सिर झुकाए बैठा था। वे चारों इधर-उधर भूतनाथ को ढूढने लगे। जैसे ही वे मारने की रेंज मे आए, भूतनाथ ने अचूक निशाना लिया और दो भेदिए 'आह' कहकर गिर गए। भूतनाथ ने नाले को नमस्कार किया और उसके कीचड़ और पानी में सरकते हुए आगे खिसकने लगा।

शेष दो हत्यारो ने भूतनाथ की जगह देख ली थी। उन्होने अंधाधुध नाले में फायर झोंके लेकिन भूतनाथ तो नाले ही नाले आगे जा चुका था। वे दोनो नाले में उतरकर देखने लगे कि कहां चला गया ? भूतनाथ के लिए इतना अवसर काफी था। उसने फटाफट प्रहार किया। एक धराशायी हो गया लेकिन दूसरा झुकाई देकर बच गया। वह लेटकर भूतनाथ की ओर रेंगने लगा। गाड़ी का सजीला प्रौढ व्यक्ति दम साध कर गन हाथ में थामकर, नाले से दूरी रखते हुए आगे दौडा ताकि जिधर भूतनाथ भाग रहा है, उधर उसे घेरा जा सके। भूतनाथ यह चाल समझ गया। वह नाले से नीचे के मैदान मे लुढका और फुटपाथ पर सरकते हत्यारे की खोपडी को उसने एक गोली से खोल दिया। भूतनाथ ने विजय के उत्साह मे कहकहा मारा और वह नाले की नीचाई में घिसटता सड़क पर झुककर दौड़ते हुए साहब बहादुर की घात मे बढ़ा। साहब के बूट की आवाज और गति का अंदाज लगाकर उसने जरा-सा सिर उचकाया और फायर कर दिया। साहब बहादुर गोली खाकर लहराए, चीखे और धड़ाम से गिर गए।

भूतनाथ ने विद्रूपक अट्टहास किया, "मिस्टर होम्स, यू गो नाउ कम्फर्टेबिली इन द होम आफ हैविन ! होम्स ! अब स्वर्गगृह मे आराम से जाओ।"

भूतनाथ शांति देखकर तुरन्त नहीं आया, क्या पता कोई घायल उसे मार डाले। इसलिए वह कुछ समय वैसा ही पड़ा रहा और कृतज्ञता मे नाले को पुनः नमन कर होम्स साहब की ओर सड़क की ओर सरका।

मिस्टर होम्स की लाश को भूतनाथ ने पहचान लिया। मोटर रिक्शाचालक भी मैदान साफ देखकर निकट आया और भूतनाथ की तारीफ करने लगा। उसने ऐसी

वीरता, लक्ष्यवेध और कुशलता कभी देखी नही थी। भूतनाथ ने उसे मौन रहने का संकेत किया और पुनः सड़क पर सरक-सरक कर उन चारों हत्यारों की ओर बढ़ा जिनमें से एक अचेत नही हुआ था। भूतनाथ के निकट आने पर उसने प्रहार किया। गोली भूतनाथ के वक्ष में लगी। वह 'आह' कहकर गिरा लेकिन गिरते-गिरते उसने उस वाधिक का अन्त कर दिया।

मोटर ड्रायवर घबरा गया। उसने भूतनाथ को उठाया और किसी तरह रिक्शे में डाला और किसी अस्पताल के लिए रवाना हो गया। भूतनाथ पैर सिकोड़े घाव को पट्टी से कसकर मोटर रिक्शे मे लेट गया। रक्त बन्द नही हुआ। वह पट्टी को वेधकर टपकने लगा। धीरे-धीरे भूतनाथ अर्ध अचेत अवस्था में आ गया। स्मृति साफ हो गई। पूर्व देखे चित्राभासो की रील उसकी चेतना मे पुनः चलने लगी। पहले रोज़ी की रोती हुई तस्वीर आई। अब वह खुश थी लेकिन उसमे विषाद भी था। भूतनाथ ने पूछा—"रोज़ी! अब तो खुश हो न ? लो, मैं आ रहा हू ···अब तुम्हारा चेहरा क्यों लटका हुआ है, एक आख मे हर्ष एक मे दुःख · यह क्यों है ? उसने सुना, रोज़ी कह रही थी—

"तुम आ रहे हो, यह तो अच्छा है लेकिन गोस्ट। अब मरी का क्या होगा, क्या होगा तुम्हारे साथियो का ?"

"मैं हमेशा तो नही रह सकता था न। हज़ारो मर रहे हैं रोज़ ब रोज़, मुझमे खास क्या है ?"

"नही, तुम गन्दगी और गिलाज़त मे करोड़ों की आशा के दीप थे, भूतनाथ! तुम भविष्य बना रहे थे···मेरे कारण अब पुनः भूत बन गए, एक किस्सा, एक किंवदन्ती, एक मिथक !"

"नही, भविष्य अपने बनाने के माध्यम खुद पैदा कर लेता है। अब किसी और को वह अपना ज़रिया बना लेगा। भविष्य वर्तमान से बड़ा होता है, रोज़ी, वह खुद अपने साधन जुटाता है···लो, मैं आ रहा हूं।"

दृश्य पुनः बदल गया। अब उसने कोटि-कोटि नगे-भूखों-दलितो-दमितों को देखा जो बड़ी उम्मीद से उसकी तरफ ताक रहे थे और उसकी मैय्यत पर अश्रुपात कर रहे थे। उसने दुश्मन देशों पर लाखों लोगों को क्रोध में मुट्ठियां बाधते और नारे लगाते हुए पाया। और तीसरे दृश्य में उसने अपने को अनगिनत लाशों के मुल्क में चिता पर जलते राख होते पाया।

मोटर रिक्शा फड़ाफड़ भाग रहा था और उसकी कर्कश ध्वनि उसके अन्दरूनी दूरदर्शन की चित्रावली को साफ कर देती थी किन्तु स्कूटर की आवाज की लय बनते ही वह चित्रों मे पुनः खो जाता था। वह अपनी बेहोशी से लगातार लड़ रहा था, लेकिन गोली तो दिल पर लगी थी। बचना असंभव था। पूरी इच्छाशक्ति लगाकर उसने अपने को कुछ उचकाया और रिक्शे वाले को रोका। उसने तिपहिया बंद किया और भूतनाथ के हाथ से उसके दिए कागज़ का पुलिन्दा ले लिया। भूतनाथ ने उसे एक पता दिया और कहा कि वह इसे सुरक्षित पहुंचा दे। उसे इनाम मिलेगा।

"श्याम—मैं बच नही सकता। अस्पताल ले जाकर क्या करोगे ? मुझे तुम यमुना नदी में डाल दो।"

"साहब, मैं भी आदमी हूं। मैं आपको बचाऊंगा। आप परवाह न करें···बस आ गए···आप थोड़ा और बरदाश्त करें।"

"मैंने जो कहा है, करना, यमुना मे मुझे बहा देना·· मैं अपनी मृत्यु के बाद

जलसे और शोक सभाएं नहीं चाहता।"

लेकिन चालक ने मना भी नही किया और माना भी नही। नदी की ओर ले चलने का बहाना बनाकर वह अस्पताल की ओर ही बढ़ता रहा।

तभी दोनों ओर से दो कारों ने तिपहिए को घेर लिया। पुलिस होती तो चालक को प्रसन्नता होती पर वे तो विदेशी लोग थे, जिनके साथ गुण्डेनुमा कुछ भारतीय भी थे। गन की नोंक पर उन्होने मोटर रिक्शा रुकवाया और वे भूतनाथ को उसके झोले सहित एक कार में ले गए। भूतनाथ का रिवाल्वर तथा झोले को कब्जे मे ले लिया गया।

दोनों कारें अब एक ही दिशा में दौडने लगी। मोटररिक्शा वाला भूतनाथ के दिए कागजों का बंडल बगल में दबाए चित्रवत् देखता रह गया।

मुहम्मद तुगलक के किले के खण्डहरों के पास कारें रुकी। बेरहमी से भूतनाथ को निकाला गया और उन्होने खण्डहरों में ले जाकर उसे अंधे कुएं के पास पटक दिया और फिर सबों ने एक-एक गोली उसके शरीर पर दागी और उसके चिथड़े उड़ाकर भलीभांति जांच कर कि वह बिल्कुल मर चुका है, उसकी लाश को उस अंधकूप में फेंक दिया जहां सांपों, बिच्छुओं और ततैयों ने भी उसे डसा। जब वे चलने लगे तो उन्होंने विस्मित होकर देखा कि दो छायाए कुएं से निकली और वे गलबहियां डाले हुए खण्डहर से अजीब डरावनी ध्वनियां उठाने लगी जो तेज़ हवा के झोकों मे चारों तरफ गूजने लगी। हत्यारों के आसपास विकट आकार वाली छायाएं नाचने लगी और 'रक्त-रक्त' की नकसुरी मांगें होने लगी।

अमरीकी एजेण्ट, 'गोस्ट गोस्ट' चिल्लाते हुए कारों की ओर भागे। उनमें से एक-दो तो उखड़े दरख्तो से दब गए, एक-दो का भय से दिल बैठ गया और कुछ पत्थरों से टकराकर घायल हो गए। बचे हुए कारों के पास पहुंचकर भागे और जब वे गंतव्य पर पहुंचे तो वे 'गोस्ट गोस्ट' चीख रहे थे। उनके अचरज और डर से नेत्र फट रहे थे और दिल फड़फड़ा रहे थे।

○○●

यह पुस्तक आपको कसी लगी ? इसके सबध में अपने विचार भेजने के लिए आप आमंत्रित हैं। इसके अतिरिक्त भी संबंधित विषयों पर हमारे यहां से स्तरीय पुस्तकें प्रकाशित होती रहती हैं। उनका सम्पूर्ण सूचीपत्र अलग से उपलब्ध है—आप उसे मगवा सकते हैं। कुछ चुनी हुई पुस्तकों के नाम नीचे दिए जा रहे हैं। साहित्य परिवार के सदस्य बन कर आप रियायती मूल्य पर फ्री डाक-व्यय की सुविधा के साथ मनपसंद पुस्तकें मंगा सकते हैं।

उपन्यास

करवट : अमृतलाल नागर 60.00; अग्निगर्भा : अमृतलाल नागर 35.00; खंजन नयन : अमृतलाल नागर 36.00; मानस का हंस : अमृतलाल नागर 60.00 ; विवर्त्त : शिवानी 15.00 ; प्रोफ़ेसर : रांगेय राघव 8.00; वैशाली की नगरवधू : आचार्य चतुरसेन 50.00; सोना और ख़ून : भाग 1 : आचार्य चतुरसेन 35.00; सोना और ख़ून : भाग 2 : आचार्य चतुरसेन 20.00; सोना और ख़ून : भाग 3 : आचार्य चतुरसेन 30.00; सोना और ख़ून : भाग 4 : आचार्य चतुरसेन 40.00; अपने खिलौने : भगवतीचरण वर्मा 25.00; थके पांव : भगवतीचरण वर्मा 15.00; आख़िरी दांव : भगवतीचरण वर्मा 25.00 ; सुबह दोपहर शाम : कमलेश्वर 25.00; समुद्र में खोया हुआ आदमी : कमलेश्वर 15.00; एक सड़क सत्तावन गलियां : कमलेश्वर 15.00; तीसरा आदमी : कमलेश्वर 12.00; काली आंधी : कमलेश्वर 14.00; डाक बंगला : कमलेश्वर 18.00; महामंत्री : मोहनलाल महतो वियोगी 20.00; प्रियदर्शी : वीरेन्द्र कुमार गुप्त 30.00; न आने वाला कल : मोहन राकेश 30.00; एक इंच मुस्कान : राजेन्द्र यादव; मन्नू भंडारी 35.00; हरा दर्पण : कृष्ण भावुक 35.00

कहानी

लौटती पगडंडियां (सम्पूर्ण कहानियां : भाग-1) : अज्ञेय 35.00; छोड़ा हुआ रास्ता (सम्पूर्ण कहानियां : भाग-2) : अज्ञेय 35.00; ये तेरे प्रतिरूप : अज्ञेय 12.00; मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियां : मोहन राकेश 70.00; सुदर्शन की श्रेष्ठ कहानियां : सुदर्शन 20.00; पहली कहानी : सं० कमलेश्वर 50.00।

(गुजराती की श्रेष्ठ कहानियां) : अनु० गोपालदास नागर 18.00; बारह कहानियां सत्यजित राय 30.00; दुखवा मैं कासे कहूं : आचार्य चतुरसेन 30.00; ज्योतिर्मयी : शान्ता कुमार : सन्तोष कुमार शैलजा 20.00; खाक इतिहास · गोविन्द मिश्र 18.00; खुले आसमान के नीचे एक रात : चन्द्रगुप्त विद्यालंकार 8.00; धरती अब भी घूम रही है : विष्णु प्रभाकर 16.00; यथार्थ और कल्पना : विराज 8.00; ललक : कुलभूषण 5.00; शेक्सपियर की कहानियां : धर्मपाल शास्त्री 9.00; रवीन्द्र कथा : रवीन्द्रनाथ ठाकुर 9.00; हम फिदाए लखनऊ : अमृतलाल नागर 10.00; कृपया दाएं चलिए : अमृतलाल नागर 14.00; भारत पुत्र नौरंगीलाल; : अमृतलाल नागर 15.00; सिकन्दर हार गया · अमृतलाल नागर 16.00; ग्रासदियां : नरेन्द्र कोहली 20.00; अपनी-अपनी बीमारी : हरिशंकर परसाई (यन्त्रस्थ); तिलस्म : शरद जोशी (यन्त्रस्थ); मुसीबत है : बरसानेलाल चतुर्वेदी 15.00.

कविता

आत्मिका · महादेवी 30.00; नीलाम्बरा : महादेवी 30.00; दीपगीत : महादेवी 30 00; मेरी श्रेष्ठ कविताएं : बच्चन 80.00; नई से नई पुरानी से पुरानी : बच्चन 30.00; मधुशाला (स्वर्ण जयन्ती सस्करण) : बच्चन 16 00; मधुशाला : बच्चन 15.00; मधुबाला : बच्चन 15.00; सतरंगिनी : बच्चन 20.00; सोऽहं हंस: : बच्चन 7.00; निशा निमंत्रण : बच्चन 20.00; चार खेमे चौंसठ खूंटे . बच्चन 6.00; दो चट्टानें : बच्चन 25.00; जाल समेटा : बच्चन 10.00; बंगाल का काल : बच्चन 10.00; चौसठ रूसी कविताएं : बच्चन 6.00; ओथेलो : बच्चन 6.00; नदी की बाक पर छाया : अज्ञेय 20 00; महावृक्ष के नीचे : अज्ञेय 10.00; कुरुक्षेत्र (सजिल्द) : रामधारी सिंह 'दिनकर' 15 00; संजीवनी (खण्ड काव्य) : सोहनलाल द्विवेदी 15.00; वाणी की व्यथा : शिवमंगल सिंह 'सुमन' : 15.00; मालकौंस : अनन्त कुमार पाषाण 30.00; मुट्ठी बन्द रहस्य : नरेन्द्र शर्मा 12.00; सुबह के बाद : डॉ० देवराज 10.00; भटका मेघ : श्रीकांत वर्मा 20.00; दो घड़ी अपने साथ : इन्दिरा मिश्र 20 00; स्वाति-बूंद : डॉ० ओदेलेन स्मेकल 20.00.

राजपाल एण्ड सन्ज़ द्वारा प्रकाशित

मुद्रक : हरिकृष्ण प्रिण्टर्स, शाहदरा, दिल्ली-32 58122



लेखक-परिचय

डा० विश्वंभरनाथ उपाध्याय

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, के सेवा-मुक्त हिन्दी के जाने-माने कवि, उपन्यासकार तथा आलोचक हैं। प्रगतिवादी विचारधारा में पले और पनपे, आपकी रचनाएं निश्चित उद्देश्य तथा तज्जनित शक्ति से परिपूर्ण होती हैं।

आपके अब तक तीन उपन्यास, तीन कविता-संग्रह, दो नाटक तथा लगभग बीस आलोचना तथा शोध ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। उपन्यासों में 'जाग मच्छन्दर गोरख आया' को एक विशिष्ट स्थान तथा सम्मान प्राप्त हुआ है। आपने अनेक पत्रिकाओं का सम्पादन किया है तथा आपकी अनेक रचनाएँ पुरस्कृत और पाठ्-क्रमों में स्वीकृत हैं।

सम्प्रति आप राजस्थान विश्वविद्यालय में 'प्रेमचन्द तथा सुब्रह्मण्य भारती पीठ' के अवैतनिक पीठासीन प्रोफेसर हैं और 'समकालीन मार्क्सवाद और हिन्दी आलोचना' शोध-परियोजना पर कार्यरत है।